॥ श्रीः ॥

भारतभ्रमण.

(पाँचों खण्डोंमेंसे)

द्वितीय खण्ड ।

बाबू साधुचरणप्रसाद विरचित ।

जिसमें
भारतवर्ष अर्थात् हिन्दुस्तानके तीर्थ, शहर और अन्य प्रसिद्ध
स्थानोंके भूतकालिक और वर्तमान कालके वृत्तान्त
पूर्ण रीतिसे लिखे गये हैं।

वही
खेमराज श्रीकृष्णदासने
बम्बई
खेतवाड़ी ७ वीं गली खम्बाटा लेन,
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् मुद्रणयन्त्रालयमें
मुद्रितकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९६९, शक १८३४.

भारत-भ्रमणके द्वितीय खण्डका सूचीपत्र।

॥ श्रीः ॥

॥ ऋद्धिसिद्धीश्वराय नमः ॥

भारतभ्रमण ।

द्वितीय खण्ड ।

साधुचरनपरसाद निज,–हृदय शम्भु पद लाय ।
द्वितिय खण्ड 'भारतभ्रमण', आरम्भत हरषाय ॥

प्रथम अध्याय १.

(विहार में) रिविलगंज, छपरा, हरिहरक्षेत्र और हाजीपुर ।

रिविलगंज ।

मेरी द्वितीय यात्रा सन् १८९२ ई० (संवत १९४९) के मार्च (चैत्र) में मेरी जन्म भूमि 'चरजपुरा' से प्रारम्भ हुई ।

चरजपुरा से १२ मील पूर्वोत्तर सरयू नदी के दूसरे पार, अर्थात् उसके बाएं किनारे पर सारन जिले में गोदना के अन्तर्गत 'रिविलगंज नामक एक तिजारती कसबा है । 'बंगाल नौर्थवेष्ट रेलवे' की ६ मील की शाखा छपरे से रिविलगंज आई है ।

सन् १८९१ ई० की मनुष्य गणना के समय रिविलगंज में १३४७३ मनुष्य थे, अर्थात् ११५१६ हिन्दू, १९५१ मुसलमान और ६ क्रस्तान ।

हेनरीरिविल साहब ने, जो कष्टम के कलक्टर थे, सन् १७८८ ई० में 'इष्टइंडियन कम्पनी' की ओर से यहां आकर कष्टम (महसूल) की चौकी नियत की । इनके नामसे रिविलगंज कसबा बस गया । बहुत दिनोंतक रहकर यहां ही वह मरगये । रिविलगंज में इनकी कवर है, जिसकी पूजा अनेक जन अपनी मनोकामना सिद्धि होजाने पर करते हैं । रिविलगंजमें रिविल साहबकी कोठी बेतियाके महाराजके दखल में है ।

रिविलगंज सारन जिले में सबसे बड़ा सौदागरीका बाजार और शायद कुल हिन्दुस्तान में तेलके बीजोंका, खास कर तीसीके लिये सबसे बड़ा बाजार है। सन् १८७६–७७ में सारन जिले में २६५०००० रुपयेके तेलके बीजकी आमदनी और ३७००००० रुपयेकी रफ्तनी हुई थी। पर अब दिन पर दिन रिविलगञ्ज बाजारकी घटती हुई जाती है। मकई, मटर, व जव तेलके बीज, सारा और गेहूं रिविलगञ्जसे दूसरे देशोंमें जाते हैं। चावल लवण, और खुर्दा चीजें दूसरे देशोंसे आती हैं, बंगाल और पश्चिमोत्तरके बीचमें इससे होकर सौदागरी होती है। अस्पतालसे पश्चिम एक एडेड स्कूल है, जिसमें माइनर तककी शिक्षा दीजातीहै। प्रधान सड़क पर रातको रोशनी होती है।

महर्षि गौतमका मन्दिर गोदना बस्तीसे दक्षिण ओर रिविलगञ्जसे पूर्व सरयूके किनारे पर है, जो हालमें बढ़ाया गया है। मन्दिरसे उत्तर गौतम पाठशाला बनी है, जिसकी नेव बंगालके लेफ्टिनेंटगवर्नर टामसन साहबने सन् १८८४ ई० में दी थी। पाठशाला में संस्कृत शिक्षा दी जाती है।

पहले रिविलगंजसे पश्चिम गंगा और सरयूके संगम पर कार्तिकी पूर्णिमाका बड़ा मेला हुआ करता था। सन् १८०१ ई० में लार्ड मानिंगटनकी आज्ञासे यह बड़ा मेला हरिहरक्षेत्रके छोटे मेले में मिला दिया गया। (अब गंगा और सरयूका संगम रिविलगंजसे लगभग १४ मील पूर्व है) अब भी कार्तिकी पूर्णिमाको रिविलगंजमें मेला लगता है। पश्चिम भदपासे पूर्व गोदना तक ३ मील लम्बाई में सरयू स्नानका मेला रहता है। बैलका मेला भदपामें और अन्यान्य वस्तुओंका रिविलगंजमें होता है और एक सप्ताह रहता है। भदपासे गोदना तक सरयूके किनारे स्थान स्थान पर देवमन्दिर, साधु लोगोंके मठ और राजा और जिमींदारोंकी छावनियां हैं, जिनमें बेतियाके महाराजकी छावनी सबसे उत्तम बनी है। हथुआके महाराजकी छावनीके निकट एक मठमें 'सूरदास' नामसे प्रसिद्ध एक अंधे वृद्ध साधु हैं, जो वस्त्र नहीं छूते, वलकलकी लंगोटी पहनते हैं, जाड़ेके दिनोंमें अग्निके आधारसे रहते हैं और विदेशी साधुओंको एक रात्रि भोजन देते हैं।

छपरा।

रिविलगंजसे ६ मील पूर्व छपरेका रेलवे स्टेशन है। सूबे विहारके पटना विभागमें सारन जिलेका सदर स्थान और प्रधान कसबा (२५ अंश ४६ कला ४२ विकला उत्तर अक्षांश और ८४ अंश ४६ कला ४९ विकला पूर्व देशांतर में) सरयू नदीके बाएं किनारे पर ४ मील लम्बा और लगभग ½ मील चौड़ा 'छपरा' एक सुन्दर कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय छपरेमें ५७३५२ मनुष्य थे (२८७४३ पुरुष और २८६०९ स्त्रियां) अर्थात् ४४३५८ हिन्दू, १२८२८ मुसलमान, ९३ कृस्तान, ६७ जैन, ४ बौद्ध और १ दूसरा। मनुष्य–गणनाके अनुसार छपरा भारतवर्ष में ६५ वां और बंगाल में ९ वां शहर है।

१८ वीं शताब्दीके अन्त में छपरेमें फरासीसी, डच और पोर्चुगोजोंकी कोठियां थीं। उस समय सारन जिला सोराके लिये प्रसिद्ध था।

कसबेसे पश्चिम मैदानमें राय बाबू बनवारीलालकी बनवाई हुई एक उत्तम सराय है। बड़े आंगनके चारों बगलोंपर छतदार कोठरियां और उनके आगे ओसारे बने हैं। फाटक पर

घड़ीका ऊंचा बुर्ज है, जिसके पूर्व एक पक्का सरोवर है। सराफ निकट नित्य मध्याह्नमें तोपकी एक आवाज की जाती है बाबू बनवारीलालने गवर्नमेंटमें रुपया जमा कर दिया है, जिसके सूदसे सरायकी मरम्मत होती है। परदेशी मुसाफिरोंको एक रात्रि सीधा मिलता है और खैराती अस्पतालका खर्च चलता है। कसबेके उत्तर रेलवे स्टेशनकी ओर मुन्शी रामसहायका बनवाया हुआ बहुत सुन्दर पत्थर मन्दिर है, जिसके आगे लम्बा चौडा सुन्दर मण्डप और पांचों शिखरों के ऊपर चारोंओर मुलम्मेदार कलशियोंकी पंक्तियां हैं। कसबेके पश्चिम-दक्षिण छपरेके प्रधान देवता धर्मनाथजीका मन्दिर है। कसबेके मकानोंमें गुलटेनगंज वाले राय बहादुर बाबू महावीरप्रसादकी कोठी उत्तम है, जिसके पश्चिम धनी कोठीवालों और बजाज लोगोंकी दुकानें हैं। कसबेके पासही पूर्व जेलखानेके निकट गवर्नमेंट स्कूल है और लगभग १ मील पूर्व दीवानी और फौजदारी कचहरियोंकी उत्तम इमारतें हैं, जिससे दक्षिण हथुआके महाराजकी सुन्दर कोठी बनी है। कचहरीसे उत्तर एकेडमी स्कूल और दाहियावां में इन्स्टीटियुशन स्कूल है। छपरेकी प्रधान सड़कों पर रात्रिमें रोशनी होती है। छपरेसे सोनपुर, मुजफ्फरपुर मोतिहारी सिवान और बुटनी को सड़कें गई हैं।

सारन जिला—जिलेके पूर्वोत्तर गण्डकी नदी, जो चंपारन और मुजफ्फरपुर जिलोंसे इसको अलग करती है, दक्षिण सरयू नदी जिसके बाद बिहारके शाहाबाद जिले और पश्चिमोत्तर देशके बलिया जिले, और पश्चिम पश्चिमोत्तर प्रदेशका गोरखपुर जिला है। सारन जिले का क्षेत्रफल २६२२ वर्गमील है।

सन् १८९१ की मनुष्य—गणनाके समय सारन जिलेमें२४७१५१६ मनुष्य थे। बंगालके लेफ्टिनेंट गवर्नरके अधीनके जिलोंमें हवड़े जिलेको छोड़कर सारन जिलेके मनुष्योंके औसत घनापन सबसे अधिक हैं। निवासी हिंदू हैं। हिन्दुओंके आठवें भागसे कुछ अधिक मुसलमान हैं। हिन्दुओंमें राजपूत, ब्राह्मण, कोइरी, कांदू, कुर्मी और चमार अधिक हैं। इनके बाद भूमिहार, दुसाध, नोनियां और तेलीकी संख्या है।

सारन पहिले चंपारनके साथ एक जिला था, परन्तु सन् १८६७ ई० में दो मजिस्ट्रेटोंके अधिकार में अलग अलग दो जिले हो गए। अब तक सारन के जज मोतिहारी में जाकर के चंपारन जिले के सेशन का काम करते हैं। सन् १८४८ ई० में सिवान और सन् १८७५ में गोपालगंज सब डिवीजन हुए।

सारन जिले में नोनियां और गरीब लोग सोरा बनाते हैं। लाह के कीड़े पीपल के वृक्षों में होते हैं। सैकड़ों मन लाही दूसरे देशोंमें भेजी जाती है। सड़क पर बिछाने योग्य कंकड़ बहुत निकलता है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सारन जिलेके कसबे सिवान में १७७०९ रिविलगंजमें १३४७३ और पानापुर चगवन, रानीपुर टेंगरही, माझी और परसामें दश हज़ार से कम मनुष्य थे।

रेलवे—छपरेसे 'बंगाल नार्थ वेष्ट रेलवे' की लाइन तीन ओर गई है।

(१) छपरेसे पूर्वकी ओर—
मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
२३ बनवारचक, जिससे ६ मील दक्षिण-पूर्व पलेजाघाटका स्टेशन है।
२९ सोनपुर।
३३ हाजीपुर।
६४ मुजफ्फरपुर जंक्शन।
९६ समस्तीपुर जंक्शन।
११९ दरभंगा जंक्शन।
१६२ निर्मली।
१७२ भभटियाही।
१८६ प्रताप गंज।
१९४ कनवाघाट (कोशीके दहिने किनारे पर)॥

मुजफ्फरपुर जंक्शनसे पश्चिमोत्तर—
मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
४९ मोतीहारी।
६२ सिगौली।
७६ बेतिया॥

मुजफ्फरपुरसे दक्षिण-पूर्व—
मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
३२ समस्तीपुर जंक्शन।
९२ मुकामा जंक्शन॥

समस्तीपुर जंक्शनसे दक्षिण—
मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
३८ सेमरिया घाट।
५८ मुकामा घाट।

दरभंगा जंक्शनसे पश्चिमोत्तर—
मील प्रसिद्ध स्टेशन।
१४ कमतौल।
२६ जनकपुर रोड (पुपुड़ी)।
४२ सीतामढ़ी।
६१ बैरगिनियां॥

दरभंगा जंक्शनसे दक्षिण—
मील-प्रसिद्ध स्टेशन।
२३ समस्तीपुर जंक्शन।
८३ मुकामा जंक्शन।

(२) छपरेसे पश्चिम कुछ उत्तर—
मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
१७ एकमा।
३८ सिवान (अलीगंज)।
५१ मैरवा।
११२ गोरखपुर जंक्शन, जहांसे उत्तर ३९ मीलकी शाखा उस्का बाजारको गई है।
१२८ मगहर।
१५२ बस्ती।
१९० मनिकापुर जंक्शन।
२०७ गोंडा जंक्शन।
२४५ बहराइच।
२६६ नानपाड़ा।
२७८ नैपालगंज॥

मनिका पुर जंक्शनसे दक्षिण—
मील-प्रसिद्ध स्टेशन।
१४ नवाबगंज।
२० लकड़मंडी घाट॥

गोंडा जंक्शनसे पश्चिम—
मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
१८ कर्नइल गंज।
३२ घाघरा घाट॥

(३) छपरेसे पश्चिम—
मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
६ रिविलगंज।
७ रिविलगंजघाट।

हरिहरक्षेत्र।

छपरेसे २९ मील पूर्व सोनपुर का रेलवे स्टेशन है। सारन जिलेमें गंडकी नदीके दहिने, गंगा और गंडकीके संगमके निकट सोनपुर एक छोटी बस्ती है, जिसमें सन् १८८१ को मनुष्य गणना के समय केवल २९५ मनुष्य थे। सोनपुर में महीनामक एक छोटी नदी के निकट हरिहरनाथ महादेव का मंदिर है। यहां कार्त्तिकी पूर्णिमा को हरिहरक्षेत्र का प्रख्यात मेला होता है। उस दिन मन्दिर में जल चढ़ाने वाले मनुष्यों की बड़ी भीड़ होती है। बहुतेरे लोग कलसियों का जल शिवलिंग पर वा शिवके हौजमें चढ़ाते हैं और बहुतेरे पवित्र जलसे भरी मट्टीकी कलसियां हौजमें गिरा देते हैं। कलसियोंके टुकड़ोंका ढेर लग जाता है। लोग मंदिरके एक द्वारसे प्रवेश करके दूसरे द्वारसे निकलते हैं।

हरिहरक्षेत्रका मेला दो सप्ताह तक होता है, परंतु इसकी बढ़ती पूर्णिमाके दो दिन पहिलेसे दो दिन पीछे तक रहती है। यह मेला भारतवर्षके पुराने और सबसे बड़े मेलोंमेंसे एक है। मेलेका पड़ाव बड़े बागमें पड़ता है। सौदागरी की प्रधान वस्तु हाथी, घोड़े और खुर्दा चीजें हैं। आसाम और बंगालसे बहुतसे हाथी आते हैं और पश्चिम पंजाब तक खरीद होकर जाते हैं। घोड़े दूर दूरके प्रदेशोंसे यहां बिक्रीके लिये आते हैं।

यहां ऐसा प्रसिद्ध है कि श्रीरामचन्द्र और लक्ष्मणजी विश्वामित्रके सिद्धाश्रमसे जनकपुर जानेके समय विश्वामित्र आदि ऋषियोंके साथ सोन नदी पार होनेके उपरांत इस स्थानमें होते हुए जनकपुर गएथे।

वाराहपुराण की कथा देखनेसे जान पड़ता है कि, हिमालय पर्वत पर, जहां गंडकी नदीसे शालग्राम निकलते हैं और विष्णु भगवानने ग्राहसे गजका उद्धार किया था, उस स्थानका नाम हरिहरक्षेत्र है। गंडकी नदीके संबंध से पीछे यही स्थान हरिहरक्षेत्रके नामसे प्रसिद्ध हो गया। गंडकी नदी लग भग ४०० मील बहनेके उपरांत यहां गंगा में मिल गई है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा।–देवीभागवत (९ वां स्कंध-१७ वें अध्यायसे २४ वें अध्याय तक) और ब्रह्मवैवर्त (प्रकृतिखण्डके १५ वें अध्यायसे २१ वें अध्याय तक) लक्ष्मीजी शापके कारणसे धर्मध्वज की पुत्री हुई और उनका नाम तुलसी पड़ा। तुलसी का विवाह शंखचूड़से हुआ। जब विष्णुने ब्राह्मण रूप धर कर शंखचूड़का कवच मांग लिया और छलसे तुलसी सहित रमण किया, तब शंखचूड़ शिवके हाथसे मारा गया। तुलसीने विष्णुको शाप दिया कि तुम संसारमें पाषाण रूप होगे। विष्णु बोले कि तुलसीका शरीर भरतखण्डमें गंडकी नाम नदी होगा। तुलसी विष्णुलोकमें चली गई। उसका शरीर गंडकी नदी और उसके केशोंका समूह तुलसी वृक्ष हुआ। विष्णु शालग्राम शिला हुए।

वाराहपुराण–(१३८ वां अध्याय) जहां विष्णु भगवान तप कर रहे थे, वहां शिवजी प्रगट होकर उनसे बोले हे भगवन् तप करते समय आपके गंडस्थान अर्थात् कपोलसे स्वेद उत्पन्न हुआ है इस स्वेदरूपी जलसे गंडकी नाम नदी लोकमें प्रसिद्ध होगी और आप इस गंडकीके गर्भमें सदा निवास करेंगे। जो मनुष्य संपूर्ण कार्तिक मास नदी में स्नान करेंगे, वे मुक्ति फल पावेंगे।

गण्डकी नदीमें एक ग्राह रहता था। एक हाथी बहुत हाथियोंके साथ वहां जाकर जलक्रीड़ा करने लगा। ग्राहने पूर्व वैरसे उस हाथीके पैरको पकड़ लिया और दोनों युद्ध करने लगे। वरुणके निवेदन से विष्णु भगवानने वहां आकर सुदर्शन चक्रसे ग्राहका मुख फाड़ गजको जलसे बाहर किया। उस समय चक्रके वेगसे गण्डकीकी शिला बहुतही चिह्नित होगई। उन्हीं चिह्नोंसे भावी वश वज्रकीट नामक क्रिमि उत्पन्न हुए और गण्डकीमें चक्र उत्पन्न होते हैं। विष्णु बोले भक्तोंकी रक्षाके निमित्त हमारी आज्ञासे सुदर्शनने गण्डकी नदीमें जहां जहां भ्रमण किया, तहां तहां सब पाषाणोंमें सुदर्शन चक्रका चिह्न होगया, इसलिये पाषाणोंका गण्डकीचक्र नाम हुआ और वह स्थान चक्रतीर्थ कहलाया, जहां स्नान मात्र करने से मनुष्य अति तेजस्वी हो सूर्य लोकमें निवास करते हैं। जिस दिनसे शालंकायनके शिष्य नन्दी आमुख्यायनको गोधन सहित मथुरासे लाए. उस दिनसे उस स्थान का नाम हरिहरक्षेत्र हुआ।

शिवजीने जिस शालग्राम क्षेत्रमें निवास किया और विष्णु भगवानको वर दिया, उस क्षेत्रमें स्नान कर पितरोंके तर्पण करनेसे पितर तृप्त हो स्वर्गमें बास करते हैं। शालग्राम क्षेत्र चारों दिशाओंमें बारह बारह योजन है, जहां विष्णु शालग्राम रूप हो नित्य निवास करते हैं। (१३९ वां अध्याय) शालग्राम क्षेत्र हरिहरात्मक अर्थात् दोनोंका रूप है।

गण्डकी नदी जहां गंगाजीमें जाकर मिली है, वहांका पुण्य कौन वर्णन कर सकता है।

(वामनपुराणके ८५ वें अध्यायमें लिखा है कि पर्वतके ऊपर एक सरोवर में ग्राहने गजको पकड़ा था। और श्रीमद्भागवतके ८ वें स्कन्धके दूसरे अध्यायमें है कि क्षीरसागरसे घिरे हुए त्रिकूट पर्वतके वनके सरोवरमें ग्राहने गजको पकड़ा। विष्णुने ग्राहको मार गज का उद्धार किया)

पद्मपुराण–(पातालखण्ड–७९ वां अध्याय) गण्डकी नदी के एक देशमें शालग्रामका महास्थल है। उसमेंसे जो पाषाण उत्पन्न होते हैं, वे शालग्राम कहाते हैं।

हाजीपुर।

सोनपुरके रेलवे स्टेशनसे ४ मील पूर्व हाजीपुरका रेलवे स्टेशन है। सोनपुरके सन्मुख गण्डकी नदीके बाएं मुजफ्फरपुर जिले में सब डिवीजन हाजीपुर एक कसबा है। दोनोंके बीच में गण्डकी नदी पर लोहेका रेलवे पुल बना है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय हाजीपुरमें २१४८७ मनुष्य थे, अर्थात् १७८६४ हिन्दू, ३६१२ मुसलमान, ६ कृस्तान, और ५ दूसरे।

लगभग ५०० वर्ष हुए, हाजी इलियासने हाजीपुरको नियत किया। पुराने किलेमें इलियासकी पत्थरकी छोटी मसजिद है। हाजीपुरमें सब डिवीजनकी कचहरियां और पेवन्दी आमके, जो बम्बई आमके भांति होते हैं, बहुतेरे बाग हैं।

द्वितीय अध्याय २.

(बिहारमें) सिवान, (पश्चिमोत्तरमें) गोरखपुर, मगहर, वस्ती, (अवधमें) गोंडा, बलरामपुर, देवीपाटन, बहराइच, भींगा और नवाबगंज।

सिवान।

छपरेसे १७ मील पश्चिम एकमा में रेलवेका स्टेशन है, जिससे चार पांच मील दक्षिण–पश्चिम मेहन्दारमें एक बड़े सरोवरके निकट महेन्द्रनाथ शिवका मन्दिर है। तालावमें पुरइन बहुत होती है। लोग कहते हैं कि बहुत काल हुए, नैपालके राजा महेन्द्रसिंहने इस सरोवर और मन्दिरको बनवाया। बैशाख और फाल्गुनकी शिवरात्रिको यहां मेला होता है। चारों ओरसे बहुतेरे लोग जलकी कांवर लेजाकर शिवके ऊपर जल चढ़ाते हैं।

एकमासे २१ मील (छपरेसे ३८ मील) पश्चिम सिवानका रेलवे स्टेशन है। सारन जिलेका सबडिवीजन दाहा नदीके किनारे पर सिवान एक छोटा कसवा है, जिसको अलीगंज भी कहते हैं। सन् १८४८ ई० में सबडिवीजन सिवानमें नियत हुआ। सन् १८९१ की मनुष्य–गणना के समय सिवानमें १७७०९ मनुष्य थे, अर्थात् ११५१८ हिन्दू, ६१८५ मुसलमान और ६ कृस्तान। पीतल, फूल और मट्टीके वर्तन और छीटकी दस्तकारीके लिये सिवान प्रसिद्ध है।

हथुआ–सिवानसे ८ मील उत्तर हथुआं ग्राममें एक राजा हैं। राजवंश भूमिहार ब्राह्मण हैं। बाबू महेशदत्तशाहीके पुत्र बाबू छत्रधारीशाहीको अंगरेजी सरकारने महाराजकी पदवी दी। महाराज छत्रधारीशाहीके पुत्र महाराज रामसहायशाही, इनके पुत्र महाराज उग्रप्रताप शाही और उग्रप्रतापशाहीके पुत्र महाराज राजेन्द्रप्रतापशाही थे, जिनके पुत्र हथुओके वर्तमान राजा महाराज कृष्णप्रतापशाही बहादुर सी. ए. आई. हैं। हथुआमें महाराजका शीशमहल, पुष्पवाटिका और वर्तमान महाराजकी माताका बनवाया हुआ गोपालमन्दिर देखने योग्य है। एक पाठशालेमें संस्कृत विद्या पढाई जाती है। महाराजकी जिमीदारी जिलेमें फैली हुई है।

गोरखपुर।

सिवानसे ७४ मील (छपरेसे ११२ मील) पश्चिमोत्तर गोरखपुरका रेलवे स्टेशन है। गोरखपुर पश्चिमोत्तर प्रदेशके बनारस विभागमें जिलेका सदर स्थान, जिलेके मध्यमें (२६ अंश ४४ कला ८ विकला उत्तर अक्षांश और ८३ अंश २३ कला ४४ विकला पूर्व देशान्तरमें) रापती नदीके किनारे पर एक छोटा शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय गोरखपुरमें ६३६२० मनुष्य थे, (३२६७५ पुरुष और ३०९४५ स्त्रियां) अर्थात् ४१४०२ हिन्दू; २१७४८ मुसलमान, ३९९ कृस्तान, ४३ जैन, २० यहूदी और ८ पारसी। मनुष्य संख्याके अनुसार गोरखपुर भारतवर्षमें ५५ वां और पश्चिमोत्तर देशमें ११ वां शहर है।

यहां जिलेकी मामूली कचहरियोंके अतिरिक्त ज़िला जेल, खैराती अस्पताल, उर्दू बाजारका चौक और रेलवे स्टेशनसे ३ मील पश्चिम कीर्तिचंदकी बनाई हुई एक उत्तम धर्मशाला है, जिसमें मैं टिका था। गोरखपुरमें लकड़ी और गल्लेकी बड़ी तिजारत होती है,

रापतीके नीचे सरयू और गंगामें नौकाओं द्वारा माल भेजे जाते हैं। शहरके आस पास सखुएका घना जंगल है। शहरमें नैपाली मनुष्य और वन्दर बहुत देख पड़ते हैं।

गोरखनाथका मन्दिर-रेलवे स्टेशनसे २ मील पश्चिमोत्तर एक शिखरदार मन्दिरमें गोरखनाथका योगासन (गद्दी) है। मन्दिरके आगे अर्थात् पूर्व २ स्थानोंमें बहुतेरे त्रिशूल खड़े हैं, जो कालभैरवके त्रिशूल कहे जाते हैं। और छोटे बडे ९ मन्दिर हैं, जिनमेंसे दो तीनमें शिवलिंग और महावीरकी मूर्तियां हैं, शेष मन्दिरोंमें गोरखनाथके संप्रदायके साधु और महन्तोंकी समाधियां हैं। गोरखनाथके मन्दिरके पश्चिमोत्तर इस सम्प्रदायके लोगोंकी सैकरों समाधियाँ हैं, जिनमें कई एक पक्के और शेष सब मट्टीके चबूतरे हैं। मन्दिरोंके चारों ओर दूरसे दीवार है। एक मकानमें व्याघ्र, हरिन, नीलगाय और मोर पाले गए हैं। घेरेसे पश्चिम और दक्षिण बाटिका लगी है और पूर्व एक पक्का सरोवर बना है। (भारत भ्रमणके पहले खण्डमें उज्जैनके वृत्तान्तमें गोरखनाथके शिष्य भर्तृहरीकी कथा और धाड़के वृत्तान्तमें गोपीचन्दका जीवन-चरित्र देखो)।

गोरखपुर जिला-जिलेके पूर्व सूबे बिहारमें सारन और चंपारन जिले, दक्षिण सरयू नदी, पश्चिम वस्ती और फ़ैजाबाद जिले और उत्तर नैपाल राज्य है। जिलेका क्षेत्रफल ४५९८ वर्गमील है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय गोरखपुर जिलेमें २९९३७३२ मनुष्य थे, जिनमें १४९६२१८ पुरुष और १४९७५१४ स्त्रियां थीं। मनुष्य-गणनाके अनुसार पश्चिमोत्तर प्रदेशके सम्पूर्ण जिलोंसे यह जिला बड़ा है। निवासी हिन्दू हैं। मनुष्य-संख्यामें सैकड़े पीछे लगभग १० मुसलमान हैं। चमार सब जातियोंसे अधिक हैं। इनके बाद क्रमसे अहीर, ब्राह्मण, मल्लाह, काछिया, कुर्मी, कहार, तब राजपूतका नम्बर है।

इस जिलेके देउरिया तहसीलीमें गोरखपुर शहरसे ५३ मील पूर्वोत्तर, छोटी गण्डकी नदीके उत्तर किनारे पर मझौली और दक्षिण सलीमपुर बसे हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय दोनों बस्तियोंमें ५५९९ मनुष्य थे, अर्थात् ४४३७ हिन्दू और ११६२ मुसलमान। मझौलीमें हिन्दू और सलीमपुरमें मुसलमान वसते हैं मझौली में पुराने खांदानके राजपूत राजा रहते हैं और ४ शिवमन्दिर और १ परगनास्कूल है।

गोरखपुर जिलेमें ६ तहसील और १२ परगने हैं। जिलेका प्रधान बाजार बरहज है। गोरखपुर शहरसे एक सुंदर सड़क बरहज होकर बनारस तक और दूसरी वस्ती होकर फैजाबाद तक गई है। जिलेमें उत्तर और मध्य में सालके घने जङ्गल फैले हैं, परन्तु वृक्ष बहुत बडे नही हैं। उत्तरके जङ्गलमें बाघ होते हैं। जङ्गलकी खास पैदावार जङ्गली मधु है, जिसको बटोरनेका ठेका भर लोग लेते हैं और पडोसके कसबोमें बेंचते हैं। सीमासे पर्बत की बरफदार चोंटियां देख पडती हैं। जिले में रापती, सरयू, बडा गण्डक, छोटा गण्डक, कुअना, रोहिना, आमी और गुन्धी नदियां बहती हैं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेके कसबे बरहजमें ११४२१ मनुष्य, और रुद्रपुर, गोरा, लार, गोला, पनियां, बंसगांव, बादलगंज, मझौली और मदनपुर में दश हजारसे कम और पांच हजारसे अधिक मनुष्य थे।

इतिहास-पूर्व कालमें सरयू नदीके उत्तरका देश जो इस समय गोरखपुर और बस्ती जिलोंमें है, कोशल देशमें था, जिसकी राजधानी अयोध्या थी। बुद्धदेवने जिलेकी सीम

के बाहर (नैपालकी तराई में) कपिला में जन्म लिया और जिलेके भीतर कुसिया में शरीर त्याग किया, जहां अब तक बुद्धदेवकी एक प्रतिमा है।

प्रथम इस देश पर भर लोगोंका अधिकार था, पीछे वे लोग मगधके बौद्धोंकी प्रजाके तौर पर थे। उस खान्दान की घटतीके समय भर लोगोंने फिर अपनी स्वाधीनताको पाया लगभग ५५० ई०से एरियन लोग इस देशको लेनेका उद्योग करने लगे। सन् ६०० ई०में कन्नौजके राठौरोंने गोरखपुरके नए कसबे तक इस जिलेको जीता। लगभग ६३०ई०में चीनके हुएत्सङ्गने इस देशमें वहुतेरे मठ और बुर्जोंको देखाथा। लगभग ९०० ई०में लड़ाके ब्राह्मणोंने दूसरे हिन्दुओंके साथ दक्षिणसे राठौर प्रधानों को निकालना और बेदखल करना आरम्भ किया और उनको गोरखपुर कसबेसे निकाल बाहर किया। सन् ई० की ११ वीं शताब्दीमें बिसेन नगरका सेन इस देशका अगुआ हुआ, परन्तु भर लोगोंने पश्चिमी दृशों पर उस समय तक अधिकार रक्खा, जब अकबरके राज्यके समय जयपुरके राजाने उनको निकाल दिया। १४ वीं शताब्दीके आरम्भमें राजपूतोंने इस देशमें प्रवेश करना आरम्भ किया। धुरचंदने धुरियापारमें और चन्द्रसेनने सतासीमें अपना अधिकार नियत किया। चन्द्रसेनने डोमनगढ़ (गोरखपुरका किला) के डोम राजाको मार कर और किलेको छीन कर शहरको दखल कर लिया। संपूर्ण शताब्दीमें बुटवल और बांसीके राजाओंमें लड़ाई होती रही, जिससे सम्पूर्ण देश उजाड़ होगया। सन् १३५० से १४५० ई० तक सतासी और मझौलीके राजा लड़ते रहे। लगभग १४०० ई० में गोरखपुरका वर्त्तमान शहर नियत हुआ। एक शताब्दी पीछे मझौली खान्दानके लोग देशके दक्षिण-पूर्वमें और धुरचन्दके उत्तराधिकारी दक्षिण-पश्चिममें राज्य करते थे।

सन् १५७६ ई० में अकबरके जनरल फिदाई खांने कुल राजाओंको परास्त करके गोरखपुर पर अधिकार किया, लेकिन देशी राजाओं द्वारा इस पर हुकूमत होती रही सेयादतअलीके अवधके नवाब होनेके पश्चात् सन् १७५० ई० में अलीकासिमखांके आधीन एक बड़ी फौजने इस जिलेको अपने वशमें किया। सन् १८०१ ई० की सन्धिमें अवधके नवाबने यह देश अंगरेजोंको दिया, जो गोरखपुर आज़मगढ़ और बस्ती जिलोंमें विभक्त है।

सन् १८५७ के अगस्तमें महम्मद हसनके आधीन बागियोंने जिले पर अधिकार कर लिया, पीछे नैपाल राज्यके जंगबहादुरके आधीन गोरखोंने महम्मदहसनको निकाल बाहर किया सन् १८५८ की ६ ठी जनवरीको जिला अंगरेजी अधिकारमें फिर होगया।

मगहर।

गोरखपुरसे १६ मील (छपरेसे १२८ मील) पश्चिम मगहरका रेलवे स्टेशन है। मगहर गोरखपुर जिलेके खलीलाबाद तहसीलमें आमी नदीके निकट एक बस्ती है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय२६२३ मनुष्य थे। बस्तीसे पूर्व गोरखपुरसे फैजाबाद जानेवाली सड़क पुलको लांघती है। कबीरजीके समाधि-मंदिर होनेके कारण मगहर प्रसिद्ध है।

स्टेशनसे आध मील उत्तर और मगहर बस्तीसे पूर्व एक घेरेके भीतर कबीरजीका शिखरदार समाधि-मंदिर है, जिसके पूर्वोत्तर कोनके पास कबीरजीके कृत्रिम पुत्र कमालकी छोटी समाधि है। यहांके अधिकारी पुस्तहां पुस्तसे मुसलमान चले आते हैं और समाधि पर जो कुछ पूजा चढ़ती है, वह लेते हैं। वे लोग मुसलमानोंके मजहब पर चलते हैं, पर मद्य

मांस नहीं ग्रहण करते और कबीरजीको अपना इष्ट मानतेहैं। इस खान्दानके बहुतेरे मुसलमानोंकी कबरें समाधि-मंदिरके आस पास दी गई हैं। स्थानके खर्चके लिये जागीरमें एक गांव है और सरकारसे चन्दा मिलता है। जिस स्थान पर बिजुली खां पठानने कबीरजीके मृत शरीरको भूमि समर्पण कियाथा, उसी स्थान पर यह समाधि- मंदिर है।

इस घेरेसे लगा हुआ पूर्व दूसरा घेरा है, जिसके भीतर कबीरजी और कमालके अलग अलग समाधि-स्थान हैं। कबीरजीकी समाधि पर हिन्दू रीतिके अनुसार टोपी और माला रक्खे हुए हैं, और काशी वाले कबीर पंथी महंतकी ओरसे कई एक कबीरपंथी साधु रहते हैं। काशीके कबीरचौराके महंतने कबीरजीके समाधि- मंदिर और उसकी जागीर पर अपना अधिकार पानेके लिये अदालतमें नालिश कीथी, परंतु वह हार गए।

पहिले इस स्थान पर अगहनसे मकरकी संक्रांति तक बड़ा मेला होता था, पर अब धीरे धीरे मेला बहुत घट गया है। मेलेके दिनोंमें कबीरजी को खिचड़ी अर्थात् चावल दाल चढ़ाई जाती है।

कबीरजीके मगहरमें शरीर त्यागनेका सन् संवत् ठीक नहीं मालूम होता है। भारतवर्षके प्रसिद्ध इतिहास लिखने वाले डाक्टर हंटर साहिबने लिखा है कि, सन् १५२० ई० के लगभग कबीरजीका देहांत हुआ और एक शाखीमें यों लिखा है–

दोहा।

संवत पन्द्रहसौऔ पांचमों, मगहर कियो गवन। अगहन सुदी एकादशी, मिले पवनसों पवन॥

इसके अनुसार कबीरजीका देहांत सन् १४४८ ई० में हुआ था। दूसरी साखी यह है–

दोहा।

संवत पन्द्रह सौ पछत्तरा, कियो मगहरको गवन। माघ सुदी एकादशी, रलो पनवनमें पवन॥

कबीरपंथियोंके ग्रन्थ निर्भयज्ञानसागरमें लिखा है कि लोगोंने अंत समय में कबीर जीको उपदेश दिया कि आप काशीमें शरीर छोड कर मुक्ति प्राप्त कीजिए। श्री कबीर जीने कहा कि मैं मगहरमें शरीर त्याग कर मुक्ति लूँगा। इसके उपरांत कबीरजीने मगहरमें जाकर राजा वीरसिंहदेव बघेल और बिजुलीखां पठानको ज्ञान उपदेश दिया। अंतमें कबीरजीका देहांत होगया। बिजुली खांने उनके शरीरको लेजाकर मुसलमानी धर्मके अनुसार दफन कर दिया। यह सुनकर वीरसिंह देवने चाहा कि कबीरजीकी देहकी क्रिया हिंदूरीतिके अनुसार की जाय इसलिये उसने लड़ाई का सामान किया। लड़ाई आरंभ होने पर आकाशवाणी हुई कि लड़ो मत कबरमें देखो मुर्दा नहीं है। कबर खोदे जाने पर उसमें कबीरजीका शरीर नहीं था, क्योंकि वह मथुरामें चले गयेथे। कबरमें फूल मिला। (कबीर जीका जीवनचरित्र भारत-भ्रमणके प्रथम खण्डके तृतीय अध्यायमें देखो।

बस्ती।

मगहरसे २४ मील (छपरेसे।१५२ मील) पश्चिम बस्तीका स्टेशन है। बस्ती पश्चिमोत्तर देशके बनारस विभाग में जिलेका सदर स्थान (२६ अंश ४८ कला उत्तर अक्षांश और ८२ अंश ४८ कला पूर्व देशांतरमें) कुबना नदीके निकट एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बस्तीमें १३६३३० मनुष्यथे, अर्थात् ९८३२ हिंदू, ३७४४ मुसलमान, ५३ क्रस्तान और १ दूसरा।

वस्तीमें जेल अस्पताल तहसीली और स्कूल, हैं। कुवना नदी पर पुल बना है। जिलेकी कचहरियां ३ मील दूर हैं।

वस्ती जिला–वस्ती जिला नैपालकी पहाडियों और सरयू नदीके बीचमें २७५२ वर्गमीलमें है। इसके पूर्व गोरखपुर जिला, दक्षिण और पश्चिम अवधके फैजाबाद और गोंडा जिले और उत्तर नैपालका राज्य है। जिलेमें रापती और सरयू प्रधान नदी हैं। दक्षिण सीमा पर सरयू नदी इसको फैजाबाद जिलेसे अलग करती है। जिलेमें ५ मील लंबी और २ मील चौड़ी बखीरा झील और ३ मील लम्बी और २ मील चौड़ी पत्था झील है। सड़कके काम योग्य कंकड़ वहुत होता है। सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय इस जिलेके कसवे महड़ावलमें १०९९१ मनुष्य और उसकामें लगभग ५००० मनुष्य थे। उसका इस जिलेका प्रधान वाजार है, जिसमें नैपाल राज्यसे सौदागरी होती है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय बस्ती जिलेमें १७८९९६४ मनुष्य थे, अर्थात् ९०९१२५ पुरुष और ८८०८३९ स्त्रियां। निवासी हिन्दू हैं। मनुष्य–संख्याके छठें भाग मुसलमान हैं। जिलेमें चमार दूसरी संपूर्ण जातियोंसे अधिक हैं, वाद क्रमसे ब्राह्मण, अहीर और कुर्मीके नम्बर हैं।

इतिहास–सन् १८०१ तक यह अवधमें जंगल उपजा हुआ गोरखपुरके सरकारके बाहर का देश था, और सन् १८६५ तक गोरखपुरके अंगरेजी जिलेका हिस्सा रहा।

गोंडा।

वस्तीसे ५५ मील और मनिकापुर जंक्शनसे १७ मील (छपरा से २०७ मील) पश्चिमोत्तर गोंडा जंक्शनका रेलवे स्टेशन है। गोंडा अवध प्रदेशके फैजावाद विभागमें (२७ अंश ७ कला ३ विकला उत्तर अक्षांश और ८२ अंश पूर्व देशान्तरमें) फैजावादसे सड़क द्वारा २८ मील उत्तर जिलेका सदर स्थान एक कसवा है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय गोंडामें १७४२३ मनुष्य थे, अर्थात् ११६१३ हिन्दू, ५६७३ मुसलमान ११२ क्रुस्तान और २५ सिक्ख।

गोंडा अब किसी दस्तकारीके लिये प्रसिद्ध नहीं है। गोंडाके देशी कसवेमें २ सुन्दर ठाकुरद्वारे, १ छोटा किला, गोंडाके राजाओंका पुराना महल, एक सुन्दर सराय और राधाकुण्ड नामक एक पक्का सरोवर है। देशी कसवेके पश्चिमोत्तर और इसके और सिविल स्टेशनके बीचमें सिविल अस्पताल और जिला स्कूल हैं। इसके वाद वड़े वड़े आमके वृक्षोंसे घेरी हुई एक वड़ी झील है, जिसको राजा शिवप्रसादने वनवाया था झीलके वाद सिविल लाइन है। इसके पास एक बहुत सुन्दर गवर्नमेन्ट वाग है। परेडकी भूमिपर खूबसूरत कचहरीके मकान खड़े हैं, जिसके दक्षिण जेल है।

गोंडा जिला–इसके पूर्व वस्ती जिला, दक्षिण घाघरा नदी जो फैजावाद और बारावंकी जिलेसे इसको अलग करती है, पश्चिम बहराइच जिला और उत्तर हिमालयका निचला सिलसिला है, जो नैपाल राज्यसे इसको अलग करता है। जिलेका क्षेत्रफल २८७५ वर्गमील है।

गोंडा जिला वड़ा मैदान है। रापती, सरयू घाघरा इत्यादि नदियां जिलेमें पश्चिमोत्तरसे आकर पूर्व–दक्षिणमें बहती हैं। घाघरा नदीमें सर्वदा और रापतीमें केवल बरसातमें नाव

चलती हैं । वनोंमें साल, धाम, एवोनी इत्यादि बहुमूल्य वृक्ष है । चीता, भालू, भेडिया सूअर और बहुत भांतिके हरिन, और चिड़िया बहुत होती हैं ।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय गोंडा जिलेमें १४६०६७३ मनुष्य थे, अर्थात् ७४७००३ पुरुष और ७१३६७० स्त्रियां) । निवासी हिन्दू हैं. । मनुष्य संख्याके लगभग आठवें भाग मुसलमान हैं । ब्राह्मण दूसरी जातियोंसे वहुत अधिक हैं, जिनमें वहुत सरवारिया हैं । इनके बाद क्रमसे अहीर, कोरी और कुर्मी जातिके नम्वर हैं । जिलेमें वलरामपुर (मनुष्य-संख्या १४८४९) नवावगंज; कर्नैलगंज और अतरवला कसवे हैं ।

जिलेमें ३ प्रधान सड़क हैं, गोंडा कसवेसे फैजावाद तक २८ मील, नवावगंजसे अतर-वला तक ३६ मील और नवाबगंजसे कर्नैलगंज तक ३५ मील । और छोटी सड़क गोंड़ासे वेगमगंज तक १६ मील वहराइच तक ३६ मील, अतरवला तक ३६ मील कर्नैलगंज तक १५ मील और बलरामपुर तक २८ मील, कर्नैलगंजसे महाराजगंज तक२८मील, और वहराइच तक २८ मील; अतरवलासे तुलसीपुर तक १६ मील; खरगपुरसे चौधारीडीह तक २८ मील और वलरामपुरसे एकवना तक १४ मील ।

जिलेके देवोपाटनमें पटेश्वरी देवीका मन्दिर, छपियांमें वैष्णवोंका ठाकुरद्वारा, महादेवामें बालेश्वरनाथ महादेव, मछली गांवमें कर्णनाथ महादेव बलरामपुरमें विजलेश्वरी देवी, खरगपुर में पचरनाथ और पृथ्वीनाथके मन्दिर यात्राके स्थान हैं ।

इतिहास–सेहत महत पूर्व समयमें श्रावस्तीके नामसे प्रसिद्ध एक नगर था । गोंडा जिले में वलरामपुरसे १० मील और एकवनासे ६ मील दूर रापती नदीके दक्षिण किनारे पर सेहत महतमें श्रावस्तीकी तवाहियोंका ब्रड़ा विटोर है । श्रावस्ती श्रीरामचन्द्रके पुत्र लवकी राजधानी थी । लवके वंशके राजा लोग श्रावस्तीमें अथवा कपिलवस्तुमें हुकूमत करते रहे। वाल्मीकि रामायण-उत्तर-काण्डके १२० वें सर्गमें है कि श्रीरामचन्द्रने अपने पुत्र कुशको कोशल देशोंका राज्य और लवको उत्तर भागके देशोंका राज्य देदिया । और१२१वें सर्गमें है कि कुशके लिये कुशावती और लवके लिये श्रावस्ती नगरी बसाई गई । सन् ई०से ६ वीं सदीके पहले बुद्धदेवके शिष्योंमेंसे एक प्रसेनादित्य ने श्रावस्तीमें वुद्धको बुलाया । वृह १९ बर्ष श्रावस्तीमें रहे थे । श्रावस्ती ८ पुश्त तक वौद्धमतका केन्द्र रही । सन् ई० की दूसरी शताब्दी में यह राज्य अवधके राजा विक्रमादित्यके आधीनमें था । उसके मरनेसे ३० वर्षके भीतर राज्य गुप्त खान्दानके पास गया । वाद यह जिला जैन राज्यका बैठक था । मुसलनानोंके दूसरे विजयके समय एक डोम राजा जिसकी राजधानी गोरखपुरमें रापतीके निकट डोमनगढ़में थी, गोंडे पर हुकूमत करता था । इस जातिमें अधिक प्रसिद्ध हुकूमत करने वाला राजा उग्रसेन था, जिसका एक किला महादेव परगनेके डुमरियाडीहमें था । उसने इस जिलेके दक्षिण भागमें थारू, डोम, भर और पासी को बहुतेरे गांव दान दिए थे । १४ वीं शताब्दीके आरम्भमें कल्हासी जनवार और बिसेन क्षत्रियों ने डोमोंका राज्य विनाश कर दिया ।

अकबरके राज्यके समय अवध प्रदेशके इस विभागमें एकवना और अतरौलाके अतिरिक्त किसीकी ताक़तवर प्रधानता नहीं थी ।

सन् १८५७ के वलवेमें गोंडाके राजा लखनऊकी वेगममें जा मिला । लखनऊका छुट-कारा होने पर उसने एक बड़ी फौजके साथ चमनाई नदी पर अपना खीमा डाला, परन्तु अंगरे-

जोंने गोंडाके राजाको खदेड़ दिया और उसकी मिलकियत जब्त करके बलरामपुरके महाराज और शाहगंजके सरमानसिंहको बख्शिश देदी।

बलरामपुर।

गोंडा कसबेसे लगभग २८ मील उत्तर गोंडा जिलेमें रापती नदीसे लगभग २ मील दक्षिण सुवावन नदीके उत्तर किनारे पर बलरामपुर एक छोटा कसबा है। गोंडासे बलरामपुर तक सिकड़म चलता है। अवधके ताल्लुकेदारोंमें बलरामपुरके राजा सबसे धनी हैं।

सन् १८९१ की मनुष्यगणनाके समय बलरामपुरमें १४८४९ मनुष्यथे। अर्थात् ९८६९ हिन्दू, ४९४९ मुसलमान और ३१ कृस्तान।

महाराजका महल वडे कोटसे घेरा हुआ है, जिसके एक बगल पर रहनेके मकान और आफिस और दूसरे बगल पर अस्तबल और बाहरी के मकान हैं। बलरामपुरमें छोटे बड़े ४० देवमन्दिर, एक नवा विजलेश्वरी देवी का पत्थरका मन्दिर, १९ मसजिदें, १ बड़ा स्कूल और २ अस्पताल हैं। बाज़ारमें चारों ओरके देशसे चावलका व्यापार होता है और कपड़ा, कंवल छुरी इत्यादि वस्तु वनती हैं।

इतिहास-१४ वीं शताब्दीके मध्य में जनवार राजपूतोंने उस देशको जीत लिया। जनवार प्रधानोंमेंसे एकसे वलरामदासथे, जिन्होंने बलरामपुरको नियत किया। सन्१७७७ ई० में राजा नवलसिंह उस मिलकियत का मालिक हुआ। यद्यपि राजाकी सेनासे वह कई बार परास्त हुए, पर उन्होंने कभी उसकी हुकूमत स्वीकार नहीं की। राजा नवलसिंह के पोते सर दिग्विजयसिंहने सन् १८३६ ई० में मिलकियत का कब्जा हासिल किया। सन् १८५७ ई० के बलवे में रुहेलखण्डके सब प्रधानोंमेंसे वह अकेलेही अंगरेजी सरकारकी ओर रहे, जिससे उनकी बहराइच जिलेमें बड़ी मिलकियत, और तुलसीपुर परगना और महाराज और के सी. एस. आई की पदवी मिली।

देवीपाटन।

बलरामपुरसे १४ मील उत्तर गोंडा जिलेके देवीपाटन बस्तीमें पटेश्वरी देवीका प्रसिद्ध मन्दिर है, जहां चैत्रकी नवरात्रिमें देवीके दर्शन पूजनका बड़ा मेला होता है और लगभग १० दिन रहता है। मेलेमें लगभग १००००० मनुष्य और विशेष पहाड़ी लोग और पहाड़ी असवाब आते हैं। सौदागरीकी प्रधान वस्तु पहाड़ी टांगन, कपड़ा, लकड़ी, चटाई, घी, लोहा, दारचीनी इत्यादि हैं।

ऐसा प्रसिद्ध है कि जब द्रोणाचार्यने कुंतीके पुत्र कर्णको ब्रह्मास्त्र चलानेकी विद्या सिखलानी अस्वीकार की, तब कर्णने महेन्द्र पर्वत पर जाकर परशुरामजीकी सेवा कर उनसे ब्रह्मास्त्र चलानेकी विद्या सीखी और राजा दुर्योधनमें मिलकर कुछ राज्य पाया। उसके उपरान्त जरासंधने कर्णको मालिनी नगरी दी, जिस पर उसने दुर्योधनके आधीन राज्य किया। इसी स्थान पर मालिनी नगरी थी। एक समय पटेश्वरीके वर्तमान मन्दिरके स्थान पर पुराने किलेकी तवाहियां थीं। सन् ई० को दूसरी शताब्दीके मध्य भागमें बौद्ध लोगोंकी घटतीके समय विक्रमादित्य नामक राजा अयोध्यामें आया और पुराने किलेके स्थान पर उसने एक मन्दिर बनवाया। १४ वीं शताब्दीके अंतमें वा १५ वींके आरम्भमें रतननाथने उस जीर्ण मन्दिरको

फिरसे बनवाया। कईसौ वर्ष तक बहुत यात्री, खास कर गोरखपुर और नैपालसे आवागमन करते रहे। १७ वीं शताब्दीमें औरङ्गजेबके अफसरने मन्दिरका विनाश कर दिया, लेकिन पीछे शीघ्रही यह वर्तमान छोटा मन्दिर बनगया।

बहराइच।

गोंडेसे ३८ मील (छपरेसे २४५ मील) पश्चिमोत्तर बहराइचका रेलवे स्टेशन है। अवध प्रदेशके फैजाबाद विभागमें जिलेका सदर स्थान और प्रधान कसबा जिलेके मध्य भागमें बहराइच एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इसमें २४०४६ मनुष्य थे, अर्थात् १२३१० मुसलमान, ११५८२, हिन्दू, ७७ कृस्तान, ४६ जैन, २८ सिक्ख और ३ यहूदी।

कसबा बढ़ती पर है। प्रधान सड़क पर रातमें रोशनी होती है। घाघराके पुराने वेडेके ऊंचे किनारे पर युरोपियन अफ्सरोंके बंगले और सरकारी इमारतें हैं। सन् १८८१ ई० से मवेशियोंका एक सालाना मेला होता है। वहराइचमें सइयद सालारमसूदकी सुन्दर दरगाह है। वह एक प्रसिद्ध लड़ाका था। लगभग सन् १०३३ ई० के उसने वहराइच पर आक्रमण किया और कई एक विजय पानेके उपरान्त परास्त होकर हिन्दू राजाओं द्वारा मारा गया। दरगाहके पास ज्येष्ठमें मेला होता है, जिसमें लगभग १५०००० हिन्दू और मुसलमान यात्री आते हैं,। आसिफुद्दौलाका बनवाया हुआ दौलतखाना अब उजड़ रहा है।

बहराइच ज़िला—इसके पूर्व गोंडा दक्षिण गोंडा और बाराबंकी जिले,पश्चिम कौरियाला और घाघरा नदियां, जो खीरी और सीतापुर जिलोंसे इस जिलेको अलग करती हैं और उत्तर नैपाल राज्य है। जिलेका क्षेत्रफल २७४० वर्गमील है।

वर्त्तमान शताब्दीके पहले भागमें एक युरोपियन लकड़ीके सौदागरने लकड़ियोंको बहा लेजानेकी सुगमताके लिये सरयूकी धारको गोंड़ा जिलेमेंसे फेर कर वहराइच जिलेमें कौरिया-ला नदीमें मिला दिया। संगमसे नीचे नदीको कोई सरयू कोई घाघरा कहते हैं। जिलेके उत्तर भागमें बहुमूल्य लकड़ीका वन है, जो सन् १८८०-८१ ई० में २५७ वर्गमील था।

सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय वहराइच जिलेमें १००६०११ मनुष्य थे, अर्थात् ५२६३४५ पुरुष और ४७९६६६ स्त्रियां। निवासी हिन्दू हैं। मनुष्य-संख्यामें छठवें भागसे कुछ अधिक मुसलमान हैं। संपूर्ण जातियोंसे अहीर अधिक हैं। इसके बाद क्रमसे कुर्मी, चमार, ब्राह्मण जातियोंके नम्बर हैं, इस जिलेमें नानपाड़ा एक कसबा और जरावल भींगा और वहरामपुर बड़ी बस्ती है।

इतिहास—पूर्व समय में यह जिला अयोध्या राज्यके कोशल देशके उत्तरी भागमें था और रामचन्द्रके पुत्र लवने, जिसकी राजधानी श्रावस्ती में थी, जो अब गोंड़ा जिलेमें सेहतमहत करके प्रसिद्ध हैं, इस पर हुकूमत किया।

यह जिला भर लोगोंके अधिकारमें था; जिनके सन्तानोंको राजपूतोंने जीत लिया। सन् १०३३ ई० में सैयद सालार मसूदके आधीन मुसलमानोंने बहराइचमें आकर देशको लूटा, परन्तु राजपूतोंने परास्त करके सबको मारडाला। १४ वीं शताब्दीके अन्त तक कई परगनोंमें भर प्रधान हुकूमत करते थे। अकबरके राज्यके समय नैपाल तराईके हिस्सेके साथ बहराइच जिला एक डिवीजन बना, जो सरकार बहराइच कहलाता था उसमें ११ परगने थे।

भींगा।

बहराइच कसबेसे २४ मील पूर्वोत्तर बहराइच जिलेके भींगा परगनेका प्रधान स्थान रापती नदीके बाएं किनारे पर भींगा एक बस्ती है, जिसमें वहांके राजा रहते हैं सन् १८८१ में ४८६५ मनुष्य थे। भींगामें राजाका महल और राजाका एक स्कूल और एक अस्पताल है।

लगभग ३०० वर्ष हुए, एकबनाके राजाओंमेंसे एकने भींगाको बसाया। उसने लगभग १५० वर्ष पीछे बड़ी जिमींदारीके साथ परगना गोंडाके राजाके छोटे पुत्रको दिया गया, जिसके वंशधर भींगाके राजा हैं। वर्त्तमान राजा उदयप्रतापसिंह इंगलेण्ड हो आए हैं, जो इस समय भारत-वर्षके लेजिसलेटिव कौंसिलके एक मेम्बर हैं।

नवाबगंज।

मनिकापुर जंक्शन से १४ मील दक्षिण (छपरासे २०४ मील पश्चिम) नवाबगंजका रलवे स्टेशन है। नवाबगंज गोंडा जिलेमें सरयू नदीसे कई एक मील उत्तर गल्लेका प्रसिद्ध बाजार है, जिसको १८ वीं सदीमें अवधके नवाब सिराजुद्दौलाने बसाया। इसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय८३७३ मनुष्य थे। नवाबगंजमें बीस पचीस देव मन्दिर, ३ मसजिद और एक छोटी सराय है। चावल, तेलके बीज, गेहूँ, मकई, चमडा, इत्यादि वस्तुएं नवाबगंज से दूसरी जगह जाती हैं और लवण, कपडा और मट्टीके बर्तन आते हैं।

तृतीय अध्याय ३.

(अवध में) अयोध्या।

अयोध्या।

नवाबगंजसे ६ मील. और मनिकापुर जंक्शनसे २० मील दक्षिण (छपरेसे २१० मील पश्चिम, कुछ उत्तर) अयोध्याके सामने उत्तर सरयूके बाएं किनारे पर लकड़मण्डीका रेलवे स्टेशन है। जिसके निकट वह स्थान है, जहां त्रेतायुगमें राजा दशरथने अश्वमेध और पुत्रेष्टि यज्ञ किया था। लकड़मण्डी और अयोध्याके बीचमें सरयू दो धारोंसे बहती है। दोनों पर नाव के पुल बने हैं। पुलोंके बीच वालू पर तख्ते विछाये गये हैं। पुलोंका महसूल एक आदमीका एक पैसा लगता है। बरसातमें बोट चलता है।

अवध प्रदेशके फैजाबाद जिलेमें फैजाबाद कसबेसे ६ मील पूर्वोत्तर सरयू नदीके दहिने अर्थात् दक्षिण किनारे पर अयोध्या एक प्रसिद्ध तीर्थ और सप्त पुरियोंमेंसे एक पुरी है।

अयोध्यामें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय २५४५ मकान (जिनमें ८६४पक्के) और ११६४३ मनुष्य थे, अर्थात् ९४९९ हिन्दू, २१४१ मुसलमान और ३ दूसरे। ९६ देव-मन्दिर, जिनमेंसे ६३ वैष्णव-मन्दिर और ३३ शैव-मन्दिर, और ३६ मसजिदें थीं। लक्ष्मण-घाटसे थोड़ी दूर ९० फीट ऊंचे टीले पर जैनोंके आदिनाथका मन्दिर है। कनकभवन, राजा दर्शनसिंहका शिवमन्दिर और हनुमानगढ़ी यहांके मन्दिरोंमें उत्तम है। अयोध्यामें बैरागी वैष्णवोंके बहुत मठ हैं, जिनमें रघुनाथदासजी, मनीराम बाबा और माधोदासके मठ प्रधान

हैं। रघुनाथदास अब नहीं हैं, उनकी गद्दीपर पूजा चढ़ती है। मनीराम बावाके यहां सदावर्त जारी है, और साधुओंकी भीड़ रहती है। माधोदासजो नानकशाही थे, इनके मठ पर नानकशाहियोंका सदावर्त है। इनके अतिरिक्त दिगम्बरी अखाड़ा, रामप्रसादजीका अखाड़ा इत्यादि बहुतेरें मठ हैं। अयोध्याके मठोंमें कई एक धनवान मठ हैं।

अयोध्यामें थोड़ी सौदागरी होती है। दुकानों पर यात्रियोंके कामकी सब वस्तु मिलती हैं। सवारीके लिये इक्के और ठेलागाड़ी हैं। ठेलागाड़ीको कूली बैलके समान खींचते हैं। यहां इमिलीके वृक्ष और बन्दर बहुत हैं। अधिक यात्री अपने अपने पण्डोंके मकानोंमें टिकते हैं।

अयोध्या जानेके लिये ३ रेलवे स्टेशन हैं। एक सरयूके बाएं लकडमंडी घाट, दूसरा अयोध्यामें नावके पुलके पास रामघाटपर और तीसरा अयोध्यासे३मील दक्षिण राणोपालोमें।

अयोध्याका प्रधान मेला चैत्र रामनौमीको होता है, जिसमें लगभग ५००००० यात्री आते हैं। यात्रीगण सरयूके स्वर्गद्वार घाट पर रामनौमीके दिन स्नान दान करते हैं। सरयू नदीकी प्रधानता और इनका माहात्म्य सब स्थानोंसे अयोध्यामें अधिक है। यह नदी हिमालय पर्वतसे निकल कर लगभग ६०० मील बहनेके उपरांत छपरेसे १४ मील पूर्व गंगामें मिली है। सरयू और कौर कौरियाला नदियोंका संगम अयोध्यासे पश्चिम बहराइच जिलेमें है। संगमसे पूर्व उस नदीको कोई कोई घाघरा और कोइ कोई सरयू कहते हैं। बहरामघाटके निकट चौका नदी सरयूमें दहिनेसे आ मिली है,। रामनौमीके दिन अयोध्यामें हैजा फैल गया इस लिये यात्रियोंके स्नानकी अधिक भीड़ सरयूके बाएं किनारे पर रही। अयोध्यामें श्रावण शुक्ल ११ से १५ तक मन्दिरोंमें झूलनोत्सव होता है। उस समयके हिण्डोले देवमूर्तियोंके शृंगार फव्वारे आदि मनोहर सामग्री देखने और देवदर्शन करनेके लिये हजारों यात्री आते हैं।

अयोध्याके भीतरके देवमन्दिर और स्थान—(१) स्वर्गद्वार घाट—यह घाट रामघाटसे पश्चिम अयोध्यामें स्नानका मुख्य स्थान है।सीढियां पत्थरकी बनी हैं। स्वर्गद्वारघाट और इसके पूर्व और पश्चिमके घाटोंको राजा दर्शनसिंहने पत्थरसे बनवाया था।घाटसे ऊपर कई एक देवमन्दिर हैं। (२) नागेश्वरनाथका मन्दिर—स्वर्गद्वारघाटसे ऊपर सुन्दर शिखरदार मन्दिरमें अयोध्याके शिवलिंगोंमें प्रधान नागेश्वरनाथ शिवलिंग हैं। नागेश्वरनाथके मन्दिरको मुसलमानोंने कई बार तोड दिया और हिंदुओंने बनवाया। वर्तमान मन्दिरको नवाब सफदरगंजके दीवान नवलरायने बनवाया। रामघाटसे अयोध्याके राजाके महल तक सड़कके दोनों ओर बहुतेर मन्दिर हैं, जिनमें बाएं (३) सुरसरिकी रानीका मन्दिर (४) भींगाके राजाका मन्दिर और(५) बेतियाके राजाका मन्दिर और दहिने (६) टेकारीके राजाका मन्दिर (७) रूसीके बाबूका मन्दिर, और (८) नरहनकी रानीका मंदिर सुन्दर है। (९) अयोध्याके महाराजके महलके पास एक सुन्दर बाटिकामें अयोध्याके उत्तम मन्दिरोंमेंसे एक सुन्दर शिखरदार पंच मन्दिर है जिसको अयोध्याके राजा दर्शनसिंहने बनवाया था। मध्यके मन्दिर में दर्शनेश्वर शिवलिंग है, जिसके निकट मार्बुलकी नन्दीकी बड़ी मूर्ति है। दक्षिण-पश्चिमके मन्दिरमें गणेशजी, पश्चिमोत्तरके मन्दिरमें पार्वतीजी, पूर्वोत्तरके मंदिरमें एक शिवलिंग और दक्षिण—पूर्वके मन्दिरमें पूजाकी सामग्री है। मन्दिरमें श्वेत और नीले मार्बुलका फर्श है, दीवारोंमें बडे बडे दीवारगीर और आइने लगी हैं और ऊपरसे बडे बडे झाड़ लटके हैं। बाटिकाके दक्षिण पुराना राजमहल और उत्तर नया राजभवन है। नए राज भवनके

भीतर एक आंगनके चारों बगलोंके मंदिरोंमें राधा, कृष्ण, राम, जानकी, शिव, अन्नपूर्णा और योगमाया की मनोहर मूर्तियां हैं। अयोध्याके राजा दर्शनसिंह शाकद्वीपी ब्राह्मणथे। इनके पुत्रोंमें राजा मानसिंह वडे नामवर हुए, वडे भाईके रहने पर भी मानसिंहही राजासिंहासन पर वैठे। उनको कोई पुत्र नहीं था, इसलिए उनके मरने पर उनके नाती अर्थात् पुत्रीके पुत्र वर्त्तमान अयोध्या नरेश महाराज प्रतापनारायणसिंह उनके उत्तरा-धिकारी वने। (१०) हनुमानगढीके सम्मुख राजा मानसिंहकी रानीका वनवाया हुआ राजद्वार नामसे प्रसिद्ध अठपहला शिखरदार एक वडा मंदिर है, वहुत सीढियोंको लांघ कर मंदिरके द्वार पर जाना होता है। मंदिरका जगमोहन गोलाकार है। मंदिर में रामचंद्र आदिकी मूर्तियां हैं। (११) हनुमानगढी अयोध्याके प्रधान स्थानों और उत्तम इमारतों मेंसे एक है। इसके वाहरी की दीवार एक ओरसे २०० फीट और एक ओरसे १५० फीट लम्वी है। इसकी ऊंचाई वाहरसे ४५ फीट है। इस गढोमें ६० सीढियोंके ऊपर हनुमान-जीका शिखरदार मंदिर है, जिसमें हनुमानजीके निकट रामचन्द्र और इनके सम्बन्धी लोगों की पचीस तीस मूर्तियां हैं। हनुमानजीकी मूर्ति सर्वत्र खडी रहती है, केवल इसी मन्दिर में वैठी हुई देख पड़ती है। लोग कहते हैं कि इनकी पुरानी मूर्ति, जो ३ फीट ऊंची है,-फूलोंमें दवी रहती है। वड़ी मूर्ति, जो ३ फीट लंबी होगी, जिसका दर्शन होता है, पीछेकी स्थापित है। मन्दिरके आगे जगमोहन और आंगनके वगलों पर मकान हैं,जिनमें साधु लोग रहते हैं। हनुमानगढीके महन्त धनी हैं। गढीके निकट इमलीके वागमें वन्दर वहुत रहते हैं। (१२) अयोध्याके सव मन्दिरोंसे वड़ा और सुन्दर कनकभवन है। मन्दिर लगभग २ विगहे में है। वड़े आंगनके चारों वगलों पर दोमञ्जिले, तीन मंजिले मकान और महरावदार दालान वने हैं ऊपर सैकडोंसुनहरी कलशियां हैं। पश्चिम वगलके मकानोंमें सुनहरे सिंहासनों पर मनोहर मूर्तियां हैं, जो संवत् १९४७ में स्थापित हुई। इनमें उत्तर ओर राम जानकी की नई मूर्तियां और इससे दक्षिण दूसरे मकानमें लक्ष्मण जीकी एक नई मूर्ति है। मन्दिरके चौखटों और किवाड़ों में सोने चांदीका उत्तम काम है, आगेके जगमोहनमें सफेद मार्वुलके दोहरे खम्भे लगे हैं, मन्दिर और जगमोहनमें मार्वुलका फर्श है। जगमोहन के आगे वड़ा कमरा और आंगनमें पुराने स्थान पर एक चवूतरे पर चरण पादुका है। इस मन्दिर को वुंदेलखण्डके अन्तर्गत टीकमगढके महाराज महेन्द्र सवाई प्रतापसिंह वहादुर ने कई एक लाख रुपए खर्च करके वनवाया है। पहले चरण पादुकाके पास एक छोटे मन्दिर में राम जानकी की मूर्तियां थीं, जो अव नए मन्दिर में स्थापित हुई हैं। रामनवमीके समय महाराज मन्दिर में आए थे। (१३) राजमहल स्थान पर एक मन्दिर में राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, जानकीकी मूर्तियां गुरु वशिष्टकी चरण पादुका और विश्वामित्र का आसन है। (१४) रत्न सिंहासन स्थान पर एक मन्दिर में राम, लक्ष्मण, जानकी और वशिष्ठ मुनि की मूर्तियां हैं। (१५) आनन्द-भवन स्थान पर एक मन्दिर में कौशल्याके गोदमें रामचन्द्र कैकेई के गोदमें भरत, सुमित्राके गोदमें शत्रुघ्न और राजा दशरथके आगे लक्ष्मण हैं और ऋषि वशिष्ठ और काकभसुंडी की मूर्ति भी हैं। (१६) राम कचहरी स्थानपर एक मन्दिरमें राम, लक्ष्मण, जानकी, राधा, कृष्ण, वदरीनाथ, वालाजी जगन्नाथजी और ३६० सालग्राम हैं। (१७) कोप-भवन स्थानपर एक मन्दिरमें दशरथ

कैकेई, राम, लक्ष्मण, वसिष्ठ ऋषि और मंथरा है। दूसरे मन्दिरमें २४ अवतारोंकी २४ मूर्तियां हैं। यहांका पुजारी पैसा लेकर यात्रीको भीतर जाने देता है। (१८) सीताकी रसोई स्थानपर एक मन्दिरमें राम, जानकी, लक्ष्मण, भरत, भरतकी पत्नी, दूसरी कोठरीमें दशरथ, शत्रुघ्न कौशल्या, कैकेई, सुमित्रा, राम, लक्ष्मण, जानकी, जगन्नाथ, बलभद्र, और सुभद्रा हैं। १० सीढ़ियोंके नीचे एक तहखानेमें चूल्हा चकला और बेलना है, जिनके पास जानकी, लक्ष्मी और वशिष्ठ मुनिकी मूर्ति है। बिना पैसा दिये कोई तहखानेमें नहीं जाने पाता। (१९) कोपभवनसे आगे हनुमानगढ़ीसे ३/४ मील पश्चिम जन्मस्थान है, जहां रामचन्द्र का जन्म हुआ था। यहां उज्जैनके महाराज विक्रमादित्यका बनवाया हुआ, उत्तम मन्दिर था जिसको बाबरने तोड़ कर उस स्थान पर सन् १५२८ ई० में मसजिद बनाली। मन्दिरके दरवाजेपर पत्थरमें लिखा है, कि सन् ९३३ हिजरीमें मसजिद बनी। सन् १८५५ ई० में उस स्थानके अधिकारके लिए हिन्दू और मुसलमान परस्पर लड़ पड़े। उस समय ७५ मुसलमान मारे गए, जिनकी कबरगाह बाहरके दरवाजेके बाहर है। उसी समय बैरागी लोगोंने मसजिदके आगे एक पक्का चबूतरा बनाकर उस पर मूर्तियां स्थापितकीं अंगरेजी हुकूमत होने पर मसजिदके आंगनके बीचमें एक दीवार बनादीई, जिसके भीतर मुसलमान लोग एबादत करते हैं और बाहरके भागमें मसजिदके पूर्व हिन्दू लोग दर्शन और पूजन करते हैं। चबूतरे पर टीन और खससे छाए हुए, छोटे मन्दिरमें राम और लक्ष्मणकी बालमूर्तियां हैं, जिनके निकट लड़कोंके खिलौने रक्खे हुए हैं। मन्दिरके नीचे कोठरीमें भरतकी बड़ी और रामचन्द्र आदि सब भाइयोंकी छोटी मूर्तियाँ हैं। मसजिदसे उत्तर छट्ठीका चूल्हा है।

अयोध्याकी परिक्रमा। यह ६ मीलकी छोटी परिक्रमा है, जो रामघाटसे प्रारंभ होकर यहांही समाप्त होती है। परिक्रमामें इस क्रमसे स्थान और मंदिर मिलते हैं (१) रघुनाथदास की गद्दी (२) सीताकुंड (३) अग्निकुंड, (४) विद्याकुंड (यह तीनों पोखरी हैं), (५) मनीपर्वत–यह ६५ फीट ऊंचा एक टीला है, जिसके ऊपर छोटा मंदिर है। कच्ची सीढ़ियोंसे मंदिरके निकट जाना होता है। मंदिरमें एक पुजारी रहता है। टीलेके नीचे चारों ओर मुसलमानोंकी कबर हैं। श्रावणमें अयोध्याके मंदिरोंका झूलन इसी स्थानसे आरंभ होता है। (६) कुबेरपर्वत–यह मनीपर्वतसे लगभग २०० गज दक्षिण २८ फीट ऊंचा एक टीला है। (७) सुग्रीवपर्वत–कुबेरपर्वतसे थोड़ी दूर पर ५६० फीट लंबा और ३०० फीट चौड़ा सुग्रीवपर्वत नामक टीला है। (८) लक्ष्मणघाट-स्वर्गद्वारसे थोड़ी दूर दक्षिण-पश्चिम सरयूके किनारे लक्ष्मणघाट पर लक्ष्मण-कीला नामक टीला है, जिसके ऊपर एक मंदिर और कई देवस्थान बने हैं। किलेके नीचे सरयू किनारे पत्थरकी दीवार है। (९) स्वर्गद्वारघाट–(१०) नावके पुलके पास रामघाट।

इस परिक्रमाके अतिरिक्त ५ कोस, १४ कोस और ८४ कोसकी परिक्रमा हैं। १४ कोसकी सरयूकी परिक्रमा कार्तिक शुक्ल नवमीके दिनसे होती है।

सूर्यकुंड।–रामघाटसे५मील सूर्यकुंड तक एक्केकी सड़क है। यह सूर्यकुण्ड पांच छ बिगहेमें राजा दर्शनसिंहका बनवाया हुआ एक पक्का तालाब है। चारों ओर १२ घाट बने हैं, जिनमें एक गौघाट और एक जनानाघाट है। जनानाघाट पर स्त्रियोंके लिये आड़ बना है तालाबके पश्चिम किनारे पर एक मंदिरमें सूर्यनारायणकी मूर्ति है।

गुप्तारघाट।-इसका नाम पुराणोंमें गोप्रतारघाट लिखा है । यह अयोध्यासे ९ मील पश्चिम है। अयोध्यासे फैजावाद और फौजी छावनी होकर पक्की सड़क गई है। जबसे छावनी बनी, तबसे छावनी होकर यात्रियोंकी भीड़ गुप्तारघाट पर नहीं जाने पाती है। गुप्तारघाट पर सरयूकी छोड़ी हुई धारामें स्नान होता है। घाटके निकट एक छोटी गढ़ीमें राजा टिकैतरायका बनवाया हुआ गुप्तहरिजीका मंदिर है, जिससे उत्तर एक घेरेमें राजा दर्शनसिंह के पुत्र रघुवरदयालका बनवाया हुआ उत्तम मंदिर है। मंदिरके पास कई एक छोटे मंदिर और आगे सुंदर घाट है । गुप्तारघाटसे १ मील दक्षिण निर्मलीकुंडके पास निर्मलनाथ महादेव का मंदिर है।

नंदीग्राम-फैजावादसे १० मील और अयोध्यासे १६ मील दक्षिण नंदीग्राममें भरतकुंड नामक सरोवर और भरतजीका मंदिर है। भरतजी रामचंद्रके वनवासके समय इसी स्थान पर रहते थे।

अयोध्याके रामघाटसे ८ मील पूर्व सरयूके किनारे पर वह स्थान है, जहां राजा दशरथ दग्ध हुए थे।

इतिहास।-अयोध्या प्राचीन समयमें सूर्यवंशी राजाओंकी राजधानी थी। राजा दशरथके समय, जिनके पुत्र रामचंद्र हुए थे, कोशल-राजकी राजधांनी अयोध्या नगरीका विस्तार १२ योजन अर्थात् ४८कोस लिखा है।रामचंद्रके पीछे कोशलराज्यके दो भागहो गए उनके बड़े पुत्र कुश ने कुशावती और छोटे पुत्र लवने श्रावस्तीको(जो गौडा जिलेमें अब सेहत महत नामसे प्रसिद्ध है) अपनी राजधानी बनाई। उसके पीछे कुश कुशावतीको ब्राह्मणोंको देकर फिर अयोध्यामें आए।सूर्य वंशके पिछले राजा सुमित्रकी गिरतीके समय अयोध्या वीरान हुआ और राजवंश छितरा गए। सुमित्रके मरनेपर बौद्ध राजा हुए, जिनसे उज्जैनके राजा विक्रमादित्यने अयोध्याको छीन लिया। उन्होंने पुराने शहरके पवित्र स्थानोंका पता लगाया। विक्रमादित्यके पश्चात् अयोध्या और कोशलराज्य क्रमसे समुद्रपाल, श्रीवास्तभ और कन्नौज राजवंशके आधीन रहा। चीनके रहने वाल हुएत्संगने ७ वीं शताब्दीमें अयोध्यामें ब्राह्मणोंकी बड़ी आबादी, २० बौद्धमंदिर और ३००० फकीरोंको देखा था।

बाबरने जन्मस्थानके राममंदिरको तोड कर सन् १५२८ में उस स्थान पर मसजिद बनवा ली।

अकबरके समय हिंदू लोगोंने नागेश्वरनाथ, चंद्रहरि, आदि देवताओंके दश पांच मन्दिर बना लिये थे, जिनको औरंगजेबने तोड डाला। अवधके नवाब सफदरजंगके समय दीवान नवलरायने नागेश्वरनाथका मंदिर बनवाया। दिल्लीकी बादशाहीकी घटतीके समय अयोध्यामें मन्दिर बनने लगे। साधुओंके अनेक अखाड़े आ जमें। नवाब वाजिदअली शाहके राज्यके समय अयोध्यामें ३० मन्दिर बन गए थे। अब छोटे बडे सैकड़ों मन्दिर बन गये हैं। फैजावाद शहर भी प्राचीन अयोध्या नगरीके अंतर्गत है।

संक्षिप्त वाल्मीकी-रामायण-(बालकाण्ड, ५ वां सर्ग) सरयू नदीके तीर पर लोक विख्यात महाराज मनुकी बनाई हुई १२ योजन लंबी और ३ योजन चौड़ी अयोध्या नगरी है। (छठवां सर्ग) उसमें महाराज दशरथ प्रजाका पालन करते थे, (८ वां सर्ग) महाराज पुत्रके लिए यज्ञका विचार कर (११) ऋषि शृंगको अयोध्यामें ले आए। (१५) ऋषि

शृंगने पुत्रेष्टि यज्ञ प्रारंभ किया। उस समय भगवान विष्णु वहां आकर उपस्थित हुए। उन्होंने देवताओंकी प्रार्थना सुनकर अपने ४ भाग होकर दशरथके पुत्र होनेको अंगीकार किया। (१६) यज्ञकुंडसे एक पुरुषने निकस कर राजाको खीर दी। राजाने उस खीरमेंसे आधी कौशल्याको, चतुर्थांश कैकेकयीको, और अष्टमांश सुमित्राको दी, फिर उन्होंने कुछ विचार कर शेष जो अष्टमांश खीर थी, उसे सुमित्राको देदी। राजाकी स्त्रियोंने उस खीरको खाया और शीघ्रही गर्भोको धारण किया।

(१८) चैत्र मास और नवमी तिथि और पुनर्वसु नक्षत्रमें कौशल्यासे श्रीरामचन्द्र, जो विष्णुके अर्धभाग हैं, जन्मे। उनके पीछे कैकेयीसे भरतने, जो विष्णुके चतुर्थ भाग हैं। जन्म लिया। उनके अनन्तर सुमित्रासे लक्ष्मण और शत्रुघ्न, जो प्रत्येकविष्णुके अष्टमांश हैं, उत्पन्न हुए। पुष्य नक्षत्र मीन लग्नोदयमें भरतका और श्लेषा नक्षत्र कर्क लग्नमें सूर्योदयके समय लक्ष्मण और शत्रुघ्नका जन्म हुआ।

(१९) विश्वामित्रने अयोध्यामें आकर अपनी यज्ञरक्षाके लिये राजा दशरथसे रामचन्द्र को मांगा। (२३) राजाने पहले तो अस्वीकार किया, परन्तु वशिष्ठके समझाने पर लक्ष्मणके सहित रामचन्द्रको बुलाकर विश्वामित्रके साथ कर दिया। विश्वामित्रने राम लक्ष्मणके साथ अयोध्यासे ६ कोस चलकर सरयूके दक्षिण तटपर रात्रिको निवास किया। (२३) दूसरे दिन वे यात्रा कर गंगाकी ओर चले और सरयू नदीके संगम पर पहुंचे। वे बोले कि किसी समयमें जब मूर्तिमान कामदेवने यहां तपस्या करते हुए भगवान रुद्रको धर्पित किया था, तब शिवने क्रुद्ध हो तृतीय नेत्रकी अग्निसे उसको भस्म कर दिया, तब वह शरीर–रहित होकर अनंग नामसे विख्यात हुआ। जहां उसने भस्म हो अपना शरीर त्याग किया था, वह अंग–देश कहलाता है। यह आश्रय महाराज रुद्रका है और ये मुनि लोग उन्हींके शिष्य हैं। ऐसा कह कर उन्होंने राम लक्ष्मणके सहित गंगा और सरयू दोनों नदियोंके मध्य स्थानमें उस रात्रिमें निवास किया (२४) फिर वे प्रातःकाल गंगाके किनारे आकर नाव पर चढ़ पार उतरे और भयंकर वनमें होकर चले (२६) आगे जाकर रामचन्द्रने ताडका राक्षसीको मारा और वे लोग रात्रिमें ताड़का वनमें टिक गए। (२९) विश्वामित्र राम लक्ष्मणके साथ प्रातः काल उठकर चले और सिद्धाश्रममें पहुंचे। (३०) उनके यज्ञके विध्वंश करनेके लिये सुबाहु और मारीच आए, जिनमें से रामचंद्रने सुबाहु को मारा और मारीचको उडा कर यज्ञकी रक्षा की।

(३१) विश्वामित्रने राम और लक्ष्मणसे कहा कि मिथिलाके राजा जनकके यहां धनुर्यज्ञ और धनुष देखनेके लिये चलो। ऐसा कह उन्हों ने राम और लक्ष्मणको साथले जनकपुरको प्रस्थान किया। उनके चलतेही मुनियोंके सैकडों छकडे उनके पीछे चले। तदनन्तर इन्होंने कुछ दूर जाकर सूर्य्य डूबते डूबते शोण नदीके तीर पहुंच कर निवास किया। (३५) वे लोग प्रातः काल यात्रा कर मध्याह्नके समय गंगा नदीके किनारे पहुंचे (४[illegible]) और नाव पर चढ़ पार उतरे (४८) फिर वहांसे चल विशालापुरीमें राजा सुमतिके आतिथ्य सत्कारमें उस रात्रिको वहीं रह गए। फिर वे लोग प्रातःकाल उठ मिथिलाको चले और कुछ कालके उपरांत मिथिलामें पहुंच गए। मुनिगण उस पुरीको देख बहुत प्रशंसा करने लगे [illegible] ([illegible])

तदनन्तर रामचंद्रने मिथिलाके उपवनमें प्राचीन और निर्जन आश्रमको देख विश्वामित्र मुनिसे पूछा कि यह आश्रम किसका है? मुनि बोले कि यह आश्रम पहले गौतम ऋषिका था। इस आश्रममें अहिल्याके साथ वे तप करने लगे। किसी समयमें मुनि-रहित आश्रमको देख मुनिहीका वेष धारण कर इन्द्रने अहिल्यासे कहा कि मैं तेरे साथ संग करना चाहता हूं। अहिल्याने इन्द्रको जान करकेभी उसका मनोरथ पूर्ण किया। फिर गौतम मुनिके डरसे शीघ्रतासे ज्योंही इन्द्र उस कुटीसे निकला, त्योंही पर्णशालामें पैठते हुए ऋषि देख पडे। उन्होंने इन्द्रको मुनिवेषधारी और दुष्टकर्मकारी देख क्रोध कर कहा कि तू अंडकोष रहित हो जायगा। उनके मुखसे ऐसा वचन निकलतेही इन्द्रके दोनों अंडकोष गिर पडे। फिर उन्होंने अपनी स्त्रीको यह शाप दिया कि तू इसी स्थानमें अनेक सहस्र वर्ष पर्य्यंत वास करेगी। तेरा भोजन केवल वायु होगा और तू किसी प्राणीको न देख पड़ेगी। जब दशरथके पुत्र रामचंद्र इस वनमें आवेंगे, तब तू उनका सत्कार करेगी और इस शापसे मुक्तहो, अपने पूर्व शरीरको धारण कर मेरे पास आवेगी। ऐसा कह गौतम ऋषि हिमाचलके शिखर पर जाकर तप करने लगे। (४९) पितृदेव गणोंने मेषका अंडकोष काट कर इन्द्रको लगा दिया। विश्वामित्रके वचन सुन रामचंद्रने उनके संग उस आश्रममें प्रवेश किया और उस तपस्विनीको, जो तपस्याके तेजसे प्रकाशितहो रही थी और जिसको सुर असुर कोई नहीं देख सकते थे, देखा। उसी क्षणमें अहिल्याके पापका अन्त हुआ और इन लोगोंको वह देख पडी। तब राम और लक्ष्मणने हर्षसे उसके चरणोंको ग्रहण किया। अहिल्याने भी गौतमके वचनको स्मरण कर रामके चरणोंको ग्रहण किया और अतिथि सत्कारसे इनकी पूजाकी। वह शुद्ध होकर गौतम ऋषिको जो मिली और रामचंद्र मिथिलाको चले।

(५०) विश्वामित्र राम और लक्ष्मणके साथ ईशान्य कोणकी ओर चल कर राजा जनककी यज्ञशालामें पहुंचे। राजा जनकने विश्वामित्रका आगमन सुन आदर सत्कारसे मुनिको टिकाया। (६६) दूसरे दिन प्रातः काल राजा जनक से विश्वामित्र बोले कि ये दोनों राजा दशरथके पुत्र आपके श्रेष्ठ धनुषको देखना चाहते हैं। उस समय राजा जनक धनुषका वृत्तान्त कहने लगे कि राजा निमिके ज्येष्ठ पुत्र राजा देवरात थे, उनको यह धनुष धरोहरकी रीतिसे मिला था। पूर्व कालमें भगवान शिवने दक्षके यज्ञका विध्वंस कर यह धनुष देवताओंको देदिया और देवताओंने देवरातके हाथ में धनुषको समर्पण किया। यह वही धनुष है। मैंने अपनी पुत्री अयोनिजा सीताके लिये ऐसी प्रतिज्ञा की कि जिसका बल इस धनुषके चढाने योग्य होगा, उसके संग सीताका विवाह करूंगा। सब राजा इकट्ठे होकर अपने अपने वीर्यकी परीक्षा देनेके लिये मिथिलामें आए। मैंने शिवधनुषको उनके सामने रख दिया, परंतु उनमें से आज तक कोई राजा धनुषको नहीं उठा सका। जब मैंने उनका अल्पबल देख उनको कन्या नहीं दी, तब उन लोगोंने मिथिला नगरीको घेर लिया। वे लोग एकवर्ष तक हमारी नगरीको घेरे रहे। जब देवताओंने मुझको चतुरंगिनी, सेना दी, तब मैंने उन्हें मार भगाया हे मुनिश्रेष्ठ। कदाचित् रामचन्द्र इस धनुषको तोड़ेंगे तो मैं इन्हींको सीता दूंगा। (६७) विश्वामित्रने कहा कि हे राजन्! धनुष रामचन्द्रको दिखाओ। तब राजा जनककी आज्ञासे ५ सहस्र मनुष्य उस धनुष की संदूकको, जो लोहेसे बनी थी, और जिसमें ८ पहिए लगे थे

खींच लाए। विश्वामित्रकी आज्ञा पाकर रामचन्द्रने संदूकका ढपना खोल कर उसके भीतरसे धनुष निकाल उसे बीचमें थांमा और लीलासे उठाकर प्रतंचासे पूर्ण कर उसको दो टुकडे कर डाला। उसके पश्चात् राजा जनकने अपने मंत्रियोंको राजा दशरथके बुलानेके लिये अयोध्यामें भेजा। (६८) जनकके दूत ३ दिन मार्गमें टिककर चौथे दिन अयोध्यामें पहुंचे। उन्होंने जनकपुरका सब वृत्तांत राजा दशरथसे कह सुनाया। (६९) यह सुन राजा दशरथ चतुरंगिनी सेना और ऋषियोंके संग अयोध्यामें प्रस्थान कर ४ दिनमें विदेह नगर पहुंचे। (७०) रामचन्द्रके विवाहका समय निश्चय हुआ। महर्षि वसिष्टने रामचन्द्रके विवाहके समय राजा दशरथका गोत्रोच्चारण किया (क्रमिक वंशावली यह है)

नंबर—नाम—

१ ब्रह्मा।
२ मरीचि।
३ कश्यप।
४ सूर्य्य।
५ वैवस्वत मनु।
६ इक्ष्वाकु।
७ कुक्षि।
८ विकुक्षि।
९ वाण।
१० अनरण्य।
११ पृथु।
१२ त्रिशंकु।
१३ धुन्धुमार।
१४ युवनाश्व।
१५ मान्धाता।
१६ सुसन्धि।
१७ ध्रुवसन्धि। प्रसेनजित।
१८ भरत।
१९ असित।
२० सगर।
२१ असमंजस।
२२ अंशुमान।
२३ दिलीप।
२४ भगीरथ।
२५ ककुत्स्थ।
२६ रघु।
२७ कल्मापपाद।
२८ शंखण।

(७३) रामचन्द्रका विवाह सीतासे, लक्ष्मणका उर्मिलासे, भरतका मांडवीसे और शत्रुघ्नका श्रुतिकीर्तिसे हुआ। उस समय रामचन्द्रका वय १५ वर्षका और सीताका ६ वर्षका था। (७४) विवाह होनेके अनन्तर महाराज दशरथ अपने पुत्रोंको और सेनागणोंको साथ लेकर अयोध्याको चले। मार्गमें जटामण्डलको धारण किए हुए, कन्धेपर परशु और धनुषको और हाथमें बाणको लिये हुए परशुराम देख पडे (७५) वे बोले हे रामचन्द्र! तुम्हारा तो बडा अद्भुत पराक्रम सुनाई पडता है। क्योंकि तुमने उस धनुषको तोडा, जिसका तोडना अतिशय कठिन था। इसलिये यह वैसाही उत्तम दूसरा धनुष मैं लाया हूं। तुम इस धनुषको लो और चढ़ाकर बाणसे पूर्णकर अपना बल मुझे दिखाओ, तब मैं द्वन्द्वयुद्ध करूंगा। (७६) रामचन्द्र क्रुद्ध हो परशुराम के हाथसे धनुष और बाण लेकर उसपर बाण सन्धान करके बोले कि हे परशुराम! एक तो तुम ब्राह्मण मेरे पूज्य हो, और दूसरे विश्वामित्रकी भगिनीके पौत्र हो. इसलिये प्राण हरण करने वाले बाण मैं तुमपर नहीं छोड सकता, इसलिये मैं यातो तुम्हारी गतिका अथवा तुम्हारे लोकोंका; जिन्हें तुमने तपस्यासे पाया है, इस बाणसे नाश करदूंगा। परशुराम, जो रामचन्द्रके तेजसे पराक्रम हीन हो गए थे, धीरेसे बोले कि हे रामचन्द्र! जब मैंने सम्पूर्ण पृथ्वी कश्यप मुनिको दे डाली, तब उन्होंने मुझसे कहा कि अब तुम पृथ्वी पर निवास मत करो। ऐसा गुरुका वचन सुन और उसे मान मैं रात्रिमें पृथ्वी पर नहीं बसता। सो हे राघव! तुम मेरी गतिका नाश मत करो, मैं मनके सदृश वेगसे महेन्द्र पर्वत पर जाऊंगा, परन्तु मेरे जो लोक हैं, उनका नाश करो। इस धनुषके चढ़ानेसे मैं आपको देवताओंके स्वामी विष्णु जानता हूं। आप बाण छोडिए, इसके साथही मैं महेन्द्राचल पर चला जाऊंगा। ऐसा वचन सुन रामचन्द्रने बाणको चलाया, जिससे परशुरामके सब लोक नष्ट होगए। वे रामचन्द्रकी प्रदक्षिणा कर महेन्द्राचलको पधारे। (७७) उनके जाने पर श्रीरामचन्द्रने वह धनुष वरुणके हाथमें देकर वसिष्ठ आदि ऋषियोंको प्रणाम किया। राजा दशरथने परशुरामके जाने का समाचार पाकर अपना पुनर्जन्म माना। फिर वे संपूर्ण लोग, और सेनाके साथ प्रस्थान कर अयोध्या में पहुंचे।

(अयोध्या कांड, पहला सर्ग) भरत शत्रुघ्नके साथ अपने मामाके घर आनन्द पूर्वक रहने लगे। महाराज दशरथने मंत्रियोंके साथ विचार कर रामचन्द्रको यौवराज्य देना ठहराया और शीघ्रता कर नाना नगर और राष्ट्रके रहनेवाले प्रधान राजाओंको बुलवाकर इकट्ठा किया, परन्तु शीघ्रताके कारण केकैराज और राजा जनकको यह संदेश नहीं दिया गया। (३) राजा दशरथ वशिष्ठ आदि ब्राह्मणोंसे कहने लगे कि यह पवित्र चैत्र मास है इसमें रामचन्द्रके यौवराज्यके लिये सब तय्यारी करो। (४) फिर वे रामचन्द्रसे बोले कि जब तक मेरा चित्त मोहको न प्राप्त हो, तब तक तुमको अपना अभिषेक करवा लेना चाहिए। कल पुष्य नक्षत्रमें तुम अभिषिक्त होगे। जब तक भरत वहांसे नहीं आते, तब तक तुम्हारा अभिषेक होजाना चाहिए। यद्यपि भरत सज्जनोंकी रीति पर चलने वाले हैं,: तथापि सज्जन और धर्मात्मा मनुष्योंका भी चित्त चलायमान है। (७) कैकेयीकी मातृकुलकी मंथरा नाम दासी, जो कैकेयी हीके साथ जन्मसे रही थी, अटारी पर अकस्मात् चढ़ी और वहांसे पुरीकी शोभा देख रामचन्द्रकी धायसे पूछने लगी कि कौन उत्सव है। धात्री बोली कि कल राजा दशरथ रामचन्द्रका यौवराज्याभिषेक करेंगे। ऐसा सुन कुब्जा अत्यन्त डाहसे प्रासादसे उतर कैकेयीके पास जाकर बोली कि देख यह दुष्टात्मा राजा दशरथ भरतको तुम्हारे भाई बन्धुओंमें भेज, कल रामचन्द्रको अकंटक राज्य पर स्थापन करेगा, यह राजा तेरा पति नहीं, किन्तु शत्रु है। मन्थराका वचन सुन कैकेयीने हर्षसे पूर्ण हो कुब्जाको दिव्य भूषण निकाल दिए और उससे कहा कि राममें वा भरतमें मैं किसी बातका भेद नहीं देखती। इस राज्याभिषेकसे मैं प्रसन्न हूं। (८) जब मंथराने कैकेयीको फिर बहुत समझाया, (९) तब तो वह क्रोधसे ज्वलित होकर बोली कि आज ही मैं रामको वनमें भेजवाती हूं। ऐसा कह कर वह सब भूषणों को उतार भूमि पर सो रही। (१०) राजा दशरथ अपनी प्रियाको प्रिय संदेश देनेके लिये अंतःपुरमें प्रवेश कर कैकेयीके गृहमें गए। (११) पर वे कैकेयीको कोपभवनमें देख उससे बोले कि मैं रामचन्द्रकी शपथ खाता हूँ,जो तेरे मनका अभीष्ट हो,सो तू कह। मैं अपने सुकृतकी शपथ करता हूँ कि तेरी प्रीतिकी बात अवश्य करूंगा। यह सुन कैकेयी बोली कि देवासुर-संग्राममें जो तुमने मुझको २ वर दिए थे, उनको मैं तुमसे मांगती हूँ। उनमें पहला यह कि भरतका राज्याभिषेक किया जाय और दूसरा वर यह कि रामचन्द्र १४ वर्ष पर्य्यन्त दण्डक–वनमें तपस्वी होकर रहें। (१२) ऐसा सुन राजा दशरथ व्याकुल हो पश्चात्ताप करने और कैकेयीको धिक्कारने लगे। (१४) उनके विलाप करते २ जब सूर्य्योदयका समय प्राप्त हुआ, तब भगवान् वसिष्ठने महाराजके अन्तःपुरमें प्रवेश किया और भीतरसे निकलते हुए सुमन्त्र मन्त्रीको देख उससे कहा कि तुम शीघ्र जाकर मेरे आनेका संदेश महाराजको दो। सुमन्त्रने मुनिका संदेशा राजासे कह सुनाया, जिसे सुन वे बोले कि हे सुमन्त्र! रामको यहां शीघ्र लाओ। (१७) सुमन्त्र रामचन्द्रको बुला लाया। (१८) रामचन्द्रके आनेपर कैकेयीने वरका सब वृत्तान्त उनसे कह सुनाया।

(१९से ३३) जिसे सुन वे कैकेयीके वचनको अंगीकार करके कौशल्याके गृहमें गए। लक्ष्मण और सीता रामचन्द्रके संग वनमें जानेके लिये, तय्यार हुए। फिर रामचन्द्र ब्राह्मणोंको बहुत धनदे सीता और लक्ष्मणके साथ पिताको देखने चले। (३४) सुमन्त्रने राजाके पास जाकर कहा कि तुम्हारे पुत्र द्वार पर खड़े हैं। ये लोग महावनमें जायंगे, आप इनको देखिये। राज.

दशरथ बोले हे सुमन्त्र ! इस घरमें जितनी मेरी स्त्रियां हैं, उन सबको तुम बुलाओ, मैं उनके साथ रामको देखूंगा। पतिकी आज्ञा पाकर राजाकी ३५० स्त्रियां कौशल्याको घेर, राजाके पास आईं, तब राजाकी आज्ञासे सुमंत्र राम, लक्ष्मण और सीताको लिवा लाया। राजाने बहुत विलाप करनेके पश्चात् रामचन्द्रको वन जानेकी आज्ञा दी।

(४०) राम और लक्ष्मण सीताके साथ रथ पर चढ़े। सुमंत्रने वायुतुल्य वेग वाले घोडों-को चलाया। उस कालमें रामचन्द्रका वय २७ और सीताका १८ वर्षका था। (४२) जब तक रामके रथकी धूलि देख पड़ी, तब तक महाराज देखते रहे, पीछे पृथ्वी पर गिर पड़े। राजा-ज्ञा पाकर द्वारपालोंने महाराजको कौशल्याके गृहमें पहुँचाया। (४५) सुमन्त्रने तमसा नदी-के तीर पहुँच घोडोंको रथसे खोला। (४६) पहली रात्रिमें रामचन्द्र आदि तमसाके किनारे जलही पीकर रह गए और प्रातःकाल उठ कर नदी पार हो रथ पर चढ़ तपोवनके मार्गमें चले। (४७) पुरवासी गण अयोध्याको लौट आए। (४९) रामचन्द्र आदिक कौशल देशोंको लांघ कर श्रुति नामक महानदीके पार हो दक्षिण दिशामें चले और इसके पीछे गोमती नदी और स्यन्दिका नदी क्रमसे उतरे। उन्होंने उससे आगे जाकर गङ्गा नदीको देखा, (५०) जहां उन-का परम मित्र उस देशका गुह नामक निषादराज रहता था। वह इनके आगमन सुन इनसे आ मिला। वे लोग केवल जलपान कर रात्रिमें वहीं भूमि पर सो रहे। (५२) प्रातःकाल रामकी आज्ञासे गुहने वट क्षीर ला दिया, तब रामने अपनी और लक्ष्मणकी जटा उस दूधसे बनाई। वे लक्ष्मणके सहित वाणप्रस्थ मार्ग पर स्थित हुए। फिर वे सीता और लक्ष्मणके सहित गङ्गा पार हो वत्स्य नाम देशोंमें जा पहुँचे और सायंकालमें वृक्षके नीचे जा टिके। (५४) प्रातःकाल सूर्योदय होतेही वे वहांसे चले और सूर्य्यके लटकते २ गङ्गा-यमुनाके संगम पर भरद्वाज मुनिके आश्रममें प्राप्त हुए। रामचन्द्रके पूछने पर भरद्वाज मुनिने कहा कि यहांसे १० कोस पर तुम्हारे निवासक योग्य चित्रकूट पर्वत है। उस रात्रिमें उन्होंने मुनिके आश्रममें निवास किया। (५५) प्रातः-काल उठकर वे चित्रकूटको चले। राम और लक्ष्मणने काष्ठोंको इकट्ठा कर एक घरनई बनाई और उस पर सूखी २ लकड़ियां बिछा कर ऊपरसे खश बिछा दिया। लक्ष्मणने बेतकी और जामुनकी, शाखा लाकर उस पर सीताके बैठनेके लिये सुन्दर आसन बनाया। रामचन्द्रने सीताको उठा कर उस उडुप पर बैठा दिया, और उन्हींके पास उनके वस्त्र और आभूषण रख, खोदनेका शस्त्र और बांसकी पेटारीभी वहांही धर दी। फिर दोनों भाइयोंने उस घरनईको चलाया। इस भांति वे लोग यमुना नदी पार हो यमुनाके तीरके वनसे चले। राम, लक्ष्मण और सीताने कोस भर चल कर यमुनाके वनमें भोजन किया। इसके उपरान्त वे लोग उस वनमें विहार कर नदी किनारे निर्भय हो टिक रहे। (५६) रामचन्द्रने सीता और लक्ष्मण सहित प्रातःकाल प्रस्थान कर चित्रकूटमें पहुंच महर्षि वाल्मीकिको प्रणाम किया। ऋषिने उनको निवास करनेकी आज्ञा दी। इसके अनन्तर रामचन्द्रकी आज्ञासे लक्ष्मणने नाना प्रकारके वृक्षोंको काट कर पर्णशाला बनाई, जिसमें वे सब रहने लगे। रामचन्द्र, सीता और लक्ष्मण अयोध्यापुरीसे चलकर तीन दिन तक केवल जल पीकर और चौथे दिन फलाहार करके रहे। उन्होंने पांचवें दिन गङ्गा (मन्दाकिनी) पार हो, चित्रकूट पर्वत पर पर्णशाला बना उसमें निवास किया।

(५७) शृङ्गवेरपुरसे सुमन्त्र रथ लेकर लौटा और दूसरे दिन सन्ध्या समय अयोध्यामें पहुंचा। (६४) महाराज दशरथ विलाप और शोक करते करते प्राणोंको त्याग कर स्वर्गलोकको

गए । (६६) मंत्रियोंने तैलकी डोंगीम राजाके शरीरको रक्खा । (६८) वाशिष्ठ मुनिने भरत और शत्रुघ्नको बुलानेके लिये उनके मामाके घर दूतोंको भेजा। दूतगण अच्छे वेगवान घोडोंपर सवार हो कैकय राजधानीकी ओर चले और अपर नाल देशके पश्चिम मार्गसे प्रलम्ब देशके उत्तर भागकी ओर मालिनी नदीके मध्यसे यात्रा कर हस्तिनापुरमें गङ्गाके पार हो पश्चिम ओर चल निकले । वे पांचाल देशको पार कर कुरु-जांगल देशके मध्य मार्गसे चलते चलते आगे जाकर इक्षुमती नदीके पार हुए । फिर उन लोगोंने वाल्हीक देशोंके बीचोंबीचसे यात्रा कर सुदामा पर्वत पर विष्णुके चरण चिह्नका दर्शन किया । इसके पश्चात् वे लोग विपाशा और शाल्मली नदियोंको देखते हुए, कैकयराज्यके गिरिव्रज नामक पुरमें जा पहुंचे। (७०) दूतोंने भरतसे यह बात कही कि पुरोहित और मंत्रियोंने आपको शीघ्र बुलाया है, क्योंकि कोई कार्य्य वडा आवश्यक है । (७१) भरत अपने भाईके सहित कैकयराजसे विदा हो पूर्वाभिमुख चले और मार्गमें क्रमसे सुदामा नदी वडे पाटवाली और पश्चिम वाहिनी ह्लादिनी नदी और शतद्रू (सतलज) नदी के पार उतरे । इसके अनन्तर वे लोग ऐलधानी नदी के पार होने के उपरान्त अपरे पर्वत नामक राष्ट्रों में पहुंच, शिलवहा नदीको पार करके आगे बढे और चैत्ररथ नामक बनके पास महाशैला नदी पर पहुंचे । भरतने क्रमसे सरस्वती और गङ्गाके संगम वेगवती और कुलिङ्ग नामक नदीके पार उतर यमुनाके तीर पर पहुंच कर सेनाको विश्राम दिया । इसके अनन्तर वे भद्रजाति के हस्ति पर चढ़ कर निर्जन महावनके पार हो गए । तदनन्तर वे प्राग्वट नामक विख्यात पुरमें वडे उपायसे अंशुधान ग्रामके पास भागीरथी के पार उतरे और कुटिकोष्टिका नदी पर पहुंचे । वे विनत नगर में गोमती नदी को लांघ कलिंग नगरके सखुए के जंगलमें आए और वहां पर रात्रिमें टिक रहे । रात्रि बीतने पर उन्होंने यात्रा कर दूरसे अयोध्यापुरीको देखा । जिस दिन अयोध्या नगरी भरतको देख पडी वह यात्राका आठवां दिन था । (७२) भरत अपनी माताके मुखसे राजाकी मृत्यु और रामचन्द्रके बनवास का वृत्तान्त सुन कर महाशोकको प्राप्त हुए । (७६) उन्होंने वशिष्ठकी आज्ञानुसार राजाके प्रेतकर्मोंको आरम्भ किया । परिचारक लोग राजा दशरथको पालकी पर सुता कर ले चले । ऋत्विजोने नगरके बाहर चिता बनाकर उस पर राजाको सुता दिया । वे लोग चिता पर अग्निका हवन कर जप करने लगे । राजाकी स्त्रियां पालकियों पर और यथोचित सवारियों पर चढ़ २ चिताके पास जाकर राजाकी प्रदक्षिणा करने लगीं । इसके अनन्तर भरतके साथ स्त्रियोंने और मन्त्री और पुरोहितोंनेभी राजा को जलांजली देकर रोते हुए, पुरमें प्रवेश किया और दश दिवस तक भूमि पर सोकर दुःखसे अपना समय बिताया ।

(७९) भरतने राज्यको अंगीकार न करके रामके पास जानेके लिये मन्त्रियोंको आज्ञा दी । (८३) सेना भरतके संग चलकर शृङ्गवेरपुरके पास गङ्गाके तट पर पहुंची, जहां रामचन्द्रका मित्र गुह नामक निषाद सावधानीसे उस देशका पालन करता हुआ निवास करता था । भरतने सेनाको टिकाकर रात्रिमें वहां निवास किया । (८९) उनकी सेना प्रातःकाल गुहकी ५०० नौकाओं द्वारा गङ्गापार हो सूर्य्योदय से तृतीय मुहूर्त्त में प्रयाग के बनमें प्राप्त हुई । भरतने सेनाको टिका कर भरद्वाज मुनिके आश्रममें प्रवेश किया । (९०) उन्होंने पूछा कि हे महर्षि ! रामचन्द्र कहां निवास करते हैं ? मुनि ने कहा कि मैं जानता हूं

कि वे चित्रकूट पर्वत पर हैं (९१) फिर भरद्वाज मुनि ने दिव्य सामग्रियोंसे भरतकी सेना की पहुनाई की। (९२) प्रातः काल होतेही भरत मुनि से विदा होने गए। मुनि ने बताया कि यहांसे १० कोस पर निर्जन वनमें चित्रकूट पर्वत है, उस गिरिके उत्तर ओर मन्दाकिनी नदी वहती है, उस नदीके पार चित्रकूट पर्वत है, उसी पर पर्णकुटीमें दोनों भाई निवास करते हैं। तव भरत की आज्ञा पाकर सव सेना दक्षिण दिशाको आच्छादित करती हुई आगे वढी भरत पालकी पर चढ़ कर चले। (९३) उन्होंने चित्रकूटके समीप पहुंच, दूरसे धूंआ देख कर जाना कि वहां रामचन्द्र होंगे। (९७) भरत ने पर्वतके चारों ओर सेनाको ठहरा दिया। ६ कोसका घेरा डाल कर सेना टिक रही। (९८) भरतने जव एक साखू वृक्षके ऊपर चढ़ कर ऊंची ध्वजा देखी, तव वे उसी स्थान पर गुहके साथ शीघ्रतासे चले। (९९) और मुहूर्त्त मात्र अगाडी चलकर मन्दाकिनी नदी पर पहुँचे। आगे पर्णशालाके निकट जाकर भरत आदि रामचन्द्रसे मिले। (१०६) रामचन्द्रसे भरत वोले कि यहांही वशिष्ठ आदि ऋषिगण और मंत्रीलोग आपको अभिषेक देंगे और आप हमारे संग अयोध्यामें चल कर राज्य पर विराजिए, परन्तु रामचन्द्र पिताके वचन पर ऐसे दृढ थे कि कुछ भी चलायमान चित्त न हुए। (१०७) वे भरतसे वोले कि जव मेरे पिताने तुम्हारी मातासे विवाह किया, तव तुम्हारे मातामहसे यह प्रतिज्ञाकी थी कि तुम्हारी पुत्रीसे जो पुत्र उत्पन्न होगा, वही मेरे राज्यासनपर बैठेगा, और देवासुर संग्राममें भी किसी उपकारसे हर्षित हो पिताने तुम्हारी माताको दो वर दिए थे। इसलिये तुम्हारी माताने पितासे २ वरोंको मांगा। राजाने उन वरोंको देकर अपनी प्रतिज्ञा पूरीकी, इसलिये हम और तुम दोनोंको पिताके वचनका पालन करना उचित है। (१११) भरत कुशोंको विछाकर रामको अयोध्या लौटा ले जानेके लिये रामके सन्मुख धरना दे वैठे। (११२) जव रामचन्द्रके साथ ऋषियोंने भरतको वहुत समझाया, तव वे वोले कि हे आर्य! इन पादुकाओं पर आप अपने चरणोंको रखिए यही दोनों पादुका सर्व लोकके योग क्षेम करेंगीः। रामचन्द्रने पादुकाओंको अपने पैरोंमें पहन फिर भरतको दे दिया। (११३) इसके अनन्तर वे उन पादुकाओंको गज–मस्तक पर रखकर शत्रुघ्नके सहित रथ पर चढ़े और मन्दाकिनी नदी तथा चित्रकूटकी प्रदाक्षिणा करते हुए (११४) अपने पिताके निवास स्थानमें पहुंचे।

(११५) भरत और शत्रुघ्न दोनों भाई शीघ्र रथ पर चढ मंत्रियों और पुरोहितोंको साथ ले नन्दिग्राम में पहुंचे। वहीं भरत वल्कल और जटाको धारण कर मुनिवेष वनाए हुए सेनाके सहित निवास करने और रामपादुकाओंका राज्याभिषेक कर उसीके आधीन हो राज्य करने लगे।

(११७) रामचन्द्रने अनेक हेतुओंको विचार चित्रकूटका रहना उचित नहीं समझा तव वे सीता और लक्ष्मणको साथ ले वहांसे चल कर अत्रि मुनिके आश्रममें आए (११९) और रात्रिमें वहांही रहे। प्रातःकाल उन्होंने लक्ष्मण और सीताको साथ ले वहां से दुर्गम वनमें प्रवेश किया।

अरण्यकाण्ड—(पहला सर्ग) श्रीरामचंद्रने घोर दंडकारण्यमें प्रवेश कर तपस्वियोंके आश्रम–मंडलको देख रात्रिमें निवास किया (२) और सूर्योदयकालमें मुनियोंसे विदा हो फिर आगेके वनमें प्रवेश किया। तीनों आदमी वनके मध्यमें पहुंचे। वहां विराध राक्षस, देख

पड़ा, वह सीताको गोदीमें उठाकर कुछ दूर जाकर ललकारने लगा। (३) जब रामचन्द्रने चोखे चोखे ७ बाणोंको सन्धान कर राक्षसको मारा, तब वह वैदेहीको उतार दोनों भाइयोंके ऊपर दौड़ा। कुछ युद्धके अनन्तर वह राक्षस राम और लक्ष्मणको दोनों भुजाओंसे पकड़ कांधे पर चढ़ाकर ले चला। (४) तब दोनों भाइयोंने उस राक्षसकी एक एक भुजा तोड डाली। जब रामचन्द्रने उसके गाडनेके लिये गडहा खननेके लिये लक्ष्मणको आज्ञा दी, तब विराधने अपने शापकी कथा कहकर उनसे कहा कि यहांसे डेढ़ कोस पर शरभंग ऋषि रहते हैं, उनके पास आप शीघ्र गमन करिए। ऐसा कह वह अपना शरीर छोड़कर स्वर्गमें जा पहुंचा। लक्ष्मणने १ गड़हा खना और दोनों भाइयोंने गड़हेमें उसको गाड़ दिया।

(५) रामचन्द्रने शरभंगके आश्रममें जाकर सीता और लक्ष्मणके साथ मुनिके चरणों को ग्रहण किया मुनिने उनको यथोचित भोजन और वासस्थान दिया। रामचन्द्र बोले हे मुनि! मैं इस वनमें निवास करना चाहता हूं, आप मुझे स्थान बतला दीजिए। शरभंगने कहा कि इस अरण्यमें महातेजस्वी सुतीक्ष्ण ऋषि रहते हैं, वे तुम्हारा कल्याण करेंगे। मन्दाकिनी नदी, जो इधरकी ओर बह रही है, उसको देखते हुए, बराबर चले जाओ तो वहां पहुंच जाओगे। ऐसा कह शरभंग मुनि अग्निमें प्रवेश कर गए और ब्रह्मलोकमें जा पहुंचे। (७) रामचन्द्र सुतीक्ष्ण मुनिके आश्रम पर जाकर ऋषिसे मिले। (८) उन्होंने रात्रिमें उस आश्रममें निवास कर सूर्य्योदयके समय मुनिसे विदा मांगी। मुनिने कहा कि आप जाइए और फिर इस आश्रममें आगमन कीजिए। (११) यह सुन रामचंद्रने सीता और लक्ष्मणके साथ ऋषियोंके आश्रमोंमें यथाक्रमसे जा२कर कहीं१०महीने, कहीं१२,कहीं४,कहीं कहीं५, ६, कहीं, १२ महीनेसे अधिक और कहीं इससे भी अधिक महीने, कहीं डेढ़, कहीं ३ और कहीं ८ महीने पर्य्यन्त सुखसे निवास किया। इसी प्रकार वास करते करते उनको १० वर्ष बीत गए। इसके अनन्तर उन्होंने फिर सीता और लक्ष्मणके सहित सुतीक्ष्णके आश्रममें, आकर कुछ काल निवास किया। किसी समय रामचन्द्रने सुतीक्ष्ण मुनिसे अगस्त मुनिका आश्रम पूछा। मुनिने कहाकि यहांसे ४ योजन पर दक्षिण दिशामें अगस्तके भ्राताका आश्रम और वहां से १ योजन दक्षिण अगस्त मुनिका आश्रम है। ऐसा ऋषिका वचन सुन तीनों जन ऋषिको प्रणाम कर वहांसे चले और अगस्त ऋषिके भ्राताके आश्रममें पहुंचे। उन्होंने मुनिसे सत्कारपूर्वक फल मूलको पाकर उस रात्रिमें वहां निवास किया। (१२) प्रातः काल वे लोग चलकर अगस्तजीके आश्रममें पहुंचे। ऋषिने, प्रसन्नहो रामचन्द्रको दिव्य धनुष्य, बाण और दूसरे कई शस्त्र दिये। (१३) रामचन्द्रने अपने रहनेके लिये मुनिसे स्थान पूछा। मुनि बोले यहांसे योजन भर पर पंचवटी नामसे विख्यात स्थल है। आप आश्रम बना कर वहां रहिए। वह स्थान गोदावरी नदीके समीप है। ऐसा सुन वे पंचवटीकी ओर चले। (१४) और मार्गमें राजा दशरथके मित्र जटायूसे मित्रता कर पंचवटीमें पहुंचे। (१५) रामचन्द्रकी आज्ञासे लक्ष्मणने वहां काष्ठ और पत्रोंसे पर्णकुटी बनाई और तीनों जन उसमें निवास करने लगे। (१७) रावणकी बहिन शूर्पणखा राक्षसीने रामचन्द्रसे अपना विवाह करनेको कहा। (१८) इस पर लक्ष्मणने रामचन्द्रकी आज्ञासे शूर्पणखाकी नाक और कान काट लिए।

वनवासके साढ़े बारह वर्ष बीतने पर शूर्पणखाकी नाक काटी गई। (१९) खरने रामचन्द्रके मारनेके लिये शूर्पणखाके साथ १४ राक्षसोंको भेजा, (२०) जिनको रामचन्द्रने

मार डाला। (२२, २३) जब खर राक्षस शूर्पणखासे यह समाचार पाकर १४ सहस्र सेना ले रामचन्द्रके समीप पहुंचा, (२४) तब उन्होंने वैदेहीको लक्ष्मणके साथ पर्वतकी गुहामें भेज दिया। (२६) और अकेले क्षणमात्रमें १४ सहस्र राक्षसोंके साथ दूषण राक्षसको मार डाला। (२७) इसके अनन्तर त्रिशिरा सेनापति रामचन्द्रसे युद्ध कर मारा गया। (३०) अन्तमें खर राक्षसभी युद्ध करके रामचन्द्रके बाणसे मरा (३१) रावण अकम्पन राक्षससे यह वृत्तांत सुनकर सीताहरणमें सहायताके लिये मारीचके आश्रममें पहुंचा, परन्तु मारीचके समझाने पर वह लंकाको लौटे गया (३२) पीछे शूर्पणखा खरके बधसे व्याकुलहो लंकामें गई। (३५) उसके धिक्कारने पर रावण रथ पर चढ़ मारीचके पास फिर गया। (३६) और उससे बोला कि रामने मेरी बहिनको विरूप कर दिया, इसलिये मैं भी उसकी भार्य्या सीताको हर लाऊंगा; इस बातमें तू मेरा सहायक हो। (४०) पहिलेतो मारीचने रावणको बहुत समझाया, परन्तु जब उसने कहा कि यदि तुम मेरा कार्य्य नहीं करोगे तो मैं तुम्हें अभी मार डालूंगा। (४२) तब ताड़काका पुत्र मारीच रावणके साथ रथ पर चढ़ कर रामके आश्रममें पहुंचा। वहां पहुंच वह मनोहर मृगका रूप बन रामके आश्रममें चरने लगा। (४३) सीताने उस मृगको पकड़ लानेके लिये रामचन्द्रसे कहा, (४४) तब वे मृगके पीछे दौड़े और दूर जाकर उन्होंने मृगको मारा, मारीचने मरते समय ठीक रामचन्द्रके समान स्वरसे 'हा सीते! हा लक्ष्मण!' ऐसा पुकारा (४५) जिसे सुन सीताने लक्ष्मणको कटुवचन कह कर बरजोरी रामचन्द्रके पास भेजा। (४६) वे रामचन्द्रके पास गए, उसी समय सन्यासीका वेष धारण करके रावण सीताके पास पहुंचा। (४७) सीताने रावणको सन्यासी जानकर उसका सत्कार किया। (४९) फिर रावण अपना रूप धारण कर सीताको रथ पर बैठा वहांसे चल दिया। वनवासके तेरहवें वर्षमें माघ शुक्ल १४ के दिन वृन्द नाम मुहूर्त्तमें सीताहरण हुआ। (५१) मार्गमें रावण और जटायुसे बडा युद्ध हुआ। जटायुने रावणके रथको चूर चूर कर दिया। तदनन्तर रावणने खड्गसे जटायुके दोनों पक्षों, दोनों पैरों और अगलबगलके देहभागोंको काट डाला, तब उसका थोड़ा सांस रह गया। (५२) और रावण सीता को ले आकाश मार्गसे चला। (५४) सीताने मार्गमें पर्वतके शृङ्ग पर ५ वानरोंको देख अपनी पिछौरी और कुछ भूषणोंको गिरा दिया। रावणने सीताको लेजाकर लंकामें स्थापन कर पिशाचिनियोंको आज्ञा दी कि मेरी अनुमतिके बिना इसको कोई न देखने पावे। (५६) और सीतासे कहा कि यदि तू १२ महीने में मुझको अंगीकार न करेगी तो मारी जायगी। फिर उसने राक्षसियोंको आज्ञादी कि तुम लोग सीताको अशोक वाटिकामें लेजा कर इसका अवेक्षण करो और इसको धमका और समझा कर मेरे वशंगत करो।

(६०) रामचन्द्र लक्ष्मणके साथ आश्रममें आए और वहां सीताको न पाकर सर्वत्र खोजने और विलाप करने लगे। (६७) उन्होंने वनमें फिरते फिरते पक्षिराज जटायुको भूमि पर गिरा हुआ देखा। (६८) जटायु बोला कि हे राघव! राक्षसराज रावण माया करके सीताको हरले गया है। उसने मेरे दोनों पक्ष काट सीताको ले दक्षिणाभिमुख यात्रा की। वह विश्रवा मुनिका पुत्र और कुबेरका भ्राता है। ऐसा कह पक्षिराज ने अपने प्राणों को त्याग दिया। तब रामचन्द्र ने चिताको प्रज्वलित कर जटायुको जला दिया और उसके लिये पिंडदान और तर्पण किया। इसके नन्तर दोनों भाई सीताके अन्वेषणके लिये वनमें

प्रविष्ट हुए। (६९) और सीताको खोजते हुए पश्चिम दिशामें चले। फिर वे लोग दक्षिण दिशामें प्रवेश कर पगडंडी-रहित मार्ग में पहुंचे और उस वनको शीघ्र लांघ दक्षिणके मार्गमें एक भयंकर वनको लांघ गए। इस प्रकार राम और लक्ष्मण जनस्थानसे ३ कोस पर जाकर क्रौंच नाम दुर्गम अरण्यमें पहुंचे और इसके अनन्तर ३ कोस पूर्वको ओर चल क्रौंचारण्य समाप्त कर मतंगाश्रम वनमें गए। फिर वे लोग बड़े दुर्गम वनमें पैठ अपने पराक्रमसे वनको फाड़ते हुए चले इतनेमें बिना मस्तकका पर्वताकार कबन्ध नाम राक्षस, जिसका मुख पेटमें था, देख पडा। पास पहुंचते पहुंचते उसने भुजा पसार दोनों भाइयोंको पकड़ लिया। (७०) जब वह राक्षस मुख बाय कर इन दोनोंको भक्षण करनेका विचार करने लगा, तब रामचन्द्र ने उसकी दहिनी भुजाको और लक्ष्मणने बाईं भुजाको काट डाला। (७२) फिर कबन्ध ने जब अपने पूर्व जन्मका वृत्तान्त कहा. तब दोनों भाइयोंने उसका शरीर पर्वतके बड़े गड़हेमें डाल अग्नि लगादी। थोडे कालमें वह शीघ्र चिताको फाड दिव्य रूपहो विमान पर चढा और आकाशमें जाकर रामचन्द्रसे बोला कि जिस प्रकारसे तुम सीताको पाओगे वह सुनो! सुग्रीव नाम वानर, जो अपने भाई वालि द्वारा घरसे निकाला गया है, ऋष्यमूक पर्वतपर निवास करता है। वह सीताके खोजनेमें तुम्हारी सहायता करेगा। तुम जाकर शीघ्र उसे अपना मित्र बनाओ। वह इस समय सहायता चाहता है और तुम दोनों उसकी सहायता करने में समर्थ हो।

(७४) दोनों भाई कबन्धके वचनके अनुसार पंपाके पश्चिम तीरपर जा पहुंचे और वहां शबरीके आश्रममें गए। उस तपस्विनीने इन दोनोंको देख इनके चरणों को ग्रहण किया। रामचन्द्रने उसके दिए हुए पदार्थोंको अंगीकार किया। रामचन्द्रसे वार्तालाप करनेके पीछे जटाधारिणी और चीर तथा कृष्णमृगचर्मको धारण करने वाली शबरी अग्नि में कूद पडी और फिर उसमेंसे अग्नि तुल्य रूप होकर निकली। जहां ब्रह्मलोक में मतंग ऋषि आदि महात्मा लोग विहार करते थे, शबरीभी अपने समाधि बलसे वहां जापहुंची। (७५) राम और लक्ष्मण पंपाके तीर पर आए।

किष्किन्धाकाण्ड–(पहला सर्ग) रामचन्द्र लक्ष्मणके सहित वहांसे चले। सुग्रीव ने जो ऋष्यमूक पर निवास करताथा इन दोनोंको देख अत्यन्त त्रासको पाया। सब बानर आश्रमको छोड़ भाग गए (२) सुग्रीव वानरोंसे बोले कि हे भाइयो! ये दोनों अवश्य वालीके भेजे हुए हैं। हनूमान बोले हे राजन्! इस भयको तुम छोड़दो क्योंकि यह मलयाचल पर्वत है यहां वालीका कुछ भय नहीं है। सुग्रीव बोले हे हनुमान! तुम अपना प्राकृत वेष बनाकर उनके पास जाओ और चेष्टाओंसे, रूपसे और बात चीतसे उनके मनका भेद जान आओ (३) यह सुन हनूमान ऋष्यमूक पर्वतसे कूद राम लक्ष्मणके पास आए और भिक्षुकका रूप धारण कर प्रणाम करके उनसे बोले कि आप दोनों कौन हैं। सुनिए, सुग्रीवनामक धर्मात्मा और वीर बानरोंका राजा है, वह भाईके द्वारा पीड़ित हो पृथ्वी तलमें घूमता फिरता है; उसीका भेजा हुआ मैं आपके पास आया हूं। मेरा नाम हनूमान है। आपके साथ सुग्रीव मैत्री करना चाहता है। मैं उसीका मन्त्री और वायुका पुत्र हूं और ऋष्यमूक पर्वतसे आता हूं।

श्रीरामचन्द्र बोले हे लक्ष्मण! यह कपिराज महात्मा सुग्रीवके सचिव हैं, जिनको मैं चाहता हूं। (४) हनूमानने रामचन्द्रसे पंपाके घोर वनमें आनेका कारण पूछा, तब लक्ष्मणने

सब वृत्तान्त कह सुनाया । हनूमान बोले हे लक्ष्मण ! सुग्रीव भी राज्यसे च्युत हो वालिसे निकाला हुआ और स्त्रीहरणसे पीड़ित वनमें वास करता है । वह हम लोगोंके साथ सीताके खोजनेमें आपकी सहायता करेगा ।

इसके अनन्तर हनूमान भिक्षुकका रूप छोड़ वानर रूप होगए और दोनों भाइयोंको पीठ पर चढ़ाकर ऋष्यमूक-पर्वत पर ले आए । (५ सर्ग) पवनपुत्रने ऋष्यमूकसे मलय पर्वत पर जाकर सुग्रीवसे दोनों भाइयोंका सब वृत्तान्त कह सुनाया । रामचन्द्रने सुग्रीवका हाथ पकड़ा । हनूमानने दोनों मित्रोंके मध्यमें अग्नि स्थापन किया । रामचन्द्र और सुग्रीव अग्निकी प्रदक्षिणा करके पूरे मित्र बने ।

(६ सर्ग) सुग्रीव बोले हे रामचन्द्र ! मैंने एक स्त्री देखी, जिसको एक भयंकर राक्षस हरे लिए जाता था । वह राम राम और लक्ष्मण ऐसा पुकार रही थी । उस स्त्रीने हम पांच वानरोंको इस पर्वत पर देख वस्त्र और सुन्दर सुन्दर आभूषणोंको ऊपरसे गिरा दिया । मैं अनुमानसे जानता हूं कि वही सीता होंगी । रामचन्द्रके मांगने पर सुग्रीवने पर्वतकी कन्दरामें पैठ उन वस्तुओंको लाकर रामके समीप रख दिया, जिनको दोनों भाइयोंने पहचाना ।

(९ सर्ग) सुग्रीवने दुन्दुभीके पुत्र मायावी और वालीके युद्धकी कथा और अपने भाई वालीके साथ वैरका कारण रामचन्द्रसे वर्णन किया (१०) और कहा कि वालीके भयसे मैं सम्पूर्ण पृथ्वीपर घूमता फिरा, परन्तु इस ऋष्यमूक पर्वत पर सुखसे रहता हूं । (११सर्ग) एक समय भैंसा रूप दुन्दुभी असुर किष्किन्धाके द्वार पर आकर दुन्दुभीके सदृश शब्द करता हुआ, गर्जने लगा । वालीने दुन्दुभीको मार उसको अपनी दोनों भुजाओंसे उठा कर एक योजन पर मतंगके आश्रमके निकट फेंक दिया । वेगसे फेंकनेके कारण उसके मुखका रुधिर वायुवेगसे उड विन्दु विन्दु होकर मतंग ऋपिके आश्रममें जा गिरा मुनीश्वरने वाहर निकल कर देखा कि एक पर्वताकार भैंसा मरा पड़ा है । मुनिने अपने तपोवलसे वानरका कर्म जान कर ऐसा शाप दिया कि जिसने इस मृतकको मेरे आश्रममें फेंका है, वह यदि इस आश्रममें प्रवेश करेगा तो मर जायगा । हे रामचन्द्र ! उस शापसे वाली ऋष्यमूक पर्वतकी ओर आंख उठा कर देख भी नहीं सकता । देखिए यही दुन्दुभीकी हड्डियोंका समूह देख पड़ता है, ये सात साखूके वृक्ष, जो समीपमें देख पड़ते हैं, इनमेंसे एकको भी वाली अपने पराक्रमसे हिलाकर विना पत्तेका कर सकता है सो आप कैसे उसको मार सकेंगे । जव रामचन्द्रने खेलवाड़की नाई पैरके अँगूठेसे दुन्दुभीके सूखे शरीरको उठाकर दश योजन पर फेंक दिया (१२) और एक घोर वाण चलाया जो वाण साखूके सातों वृक्षोंको और पर्वतको फोड कर रामचन्द्रके तरकसमें आघुसा, तव सुग्रीव विस्मयको प्राप्त हो वोले कि हे प्रभो ! तुम अपने वाणोंसे सम्पूर्ण देवोंको मार सकते हो । वाली क्या पदार्थ है ।

रामचन्द्र, सुग्रीव आदि वानरोंके साथ किष्किन्धामें पहुंच वृक्षकी आड़में खड़े हुए । सुग्रीव वड़े वेगसे गर्जा, जिसको सुन वाली अत्यन्त क्रोध युक्त हो लपक कर आया । दोनों भाइयोंका घोर युद्ध होने लगा । रामचन्द्र हाथमें धनुप लिये दोनोंकी ओर देखने लगे परन्तु कौन सुग्रीव और कौन वाली है, यह भेद राघवको न समझ पड़ा, इसलिये उन्होंने अपने वाणको न छोडा । सुग्रीव जव वालीसे परास्त हो ऋष्यमूक पर भाग गया, तव रामचन्द्र लक्ष्मण और हनूमानको साथ ले सुग्रीवके पास गए । रामचन्द्रकी आज्ञासे लक्ष्मणने पुष्पित

गजपुष्पाको उखाड़ कर सुग्रीवके गलेमे मालाकी नाईं पहना दिया। (१४) रामचन्द्र सुग्रीव आदिके साथ किष्किन्धामें जाकर वृक्षोंकी आड़में ठहरे। सुग्रीवने ऊंचे स्वरसे नाद कर युद्धके लिये बालीको ललकारा। (१५) वाली क्रुद्ध हो शीघ्र दौड़ा। उस समय वालीकी स्त्री तारा बोली कि हे वीर मैंनें कुमार अंगदके मुखसे सुना है कि अयोध्याके राजाके दो पुत्र राम और लक्ष्मण करके विख्यात सुग्रीवकी प्रिय कामनासे प्राप्त हुए हैं। ऐसे महात्माके साथ तुमको विरोध करना अनुचित है। (१६) बाली ताराके वचनका निरादर कर नगरसे बाहर निकल सुग्रीवसे लड़ने लगा। जब रामचन्द्रने देखा कि सुग्रीव क्षीणपराक्रम होगाया, तब वाली की छातीमें बाण मारा, जिससे वह भूमि पर गिरपड़ा। (रामचन्द्र और सुग्रीवसे बहुत वार्तालाप करनेके पीछे) (२२ सर्ग) बालीने अपने प्राणोंको छोड़ दिया। (२५) श्रीरामचन्द्रने विलाप करते हुए सुग्रीव, तारा और अंगदको समाश्वासन दिया। सुग्रीव और अंगदने नाना प्रकारके भूषण, पुष्प और वस्त्रोंसे वालीके मृत शरीरको भूषित कर पालकी पर चढ़ाया। बानरोंने नदीके तीर पर चिता बनाई। अंगदने सुग्रीवके साथ वालीको उठाकर चिता पर स्थापन किया और विधिपूर्वक चितामें अग्नि देकर उलटी प्रदाक्षिणादी। इसके अनन्तर रामचन्द्रने जो सुग्रीवहीके तुल्य दीन और शौकयुक्त होगए थे, सम्पूर्ण प्रेतक्रिया करवाई।

(२६ सर्ग) रामचन्द्र सुग्रीवसे बोलेकि अंगदको योवराज्य पर स्थापन करो। यह वर्षाऋतुका पहिला महीना श्रावण है। यह उद्योगका समय नहीं है, इसलिये तुम पुरीमें प्रवेश करो। मैं लक्ष्मणके सहित इस पर्वत पर निवास करूंगा। जब कार्तिक लगे, तब तुम रावण के वधके लिये उद्योग करना। रामचन्द्रकी आज्ञासे सुग्रीवने किष्किन्धामें प्रवेश किया। वहां सुग्रीवका अभिषेक हुआ। सुग्रीवने अंगदको यौवराज्यके आसन पर अभिषेक कराया।

(२७ सर्ग) रामचन्द्र लक्ष्मणके सहित प्रस्रवणगिरि पर आए। उस पर्वतके शृङ्ग पर एक बड़ी लम्बी चौड़ी कन्दरा देखकर दोनों भाइयोंने वहां निवास किया। (२८) रामचन्द्र ने माल्यवान पर्वत पर निवास करते हुए लक्ष्मणसे वर्षाऋतुकी शोभा वर्णनकी।

(२९ सर्ग) सुग्रीवने नील नामक वानरको सब दिशाओंसे सेनाओंको इकट्ठी करनेकी आज्ञादी, और यहभी कहाकि पन्द्रहदिनके भीतर सब वानरोंकोआकरइकट्ठा होजाना चाहिए।

(३० सर्ग) शरत् कालके लगतेही रामचन्द्र लक्ष्मणसे बोलेकि देखो सुग्रीव सीताके खोजनेके लिये समयका नियम करकेभी चेत नहीं करता। वर्षाकालके चारों महीने वीत गए। तुम किष्किन्धामें जाकर मेरे क्रोधका रूप उससे कह सुनाओ।

(३१ सर्ग) लक्ष्मण पर्वतकी संधिमें बसी हुई, दुर्गम किष्किन्धा पुरीके निकट पहुंचे। श्रेष्ठ वानरोंने सुग्रीवके घर जाकर क्रोधयुक्त लक्ष्मणका आगमन कह सुनाया, परन्तु वह तारा के साथ कामासक्तहो रहा था, सो उसने इनके वचनोंकी ओर ध्यान नहीं दिया। सचिवोंकी आज्ञा पाकर बड़े बड़े वानर हाथोंमें वृक्षोंको लिए खड़े होगये। सम्पूर्ण किष्किन्धा वानरोंसे भरगई। उस कालमें अङ्गद प्रज्वलित कालाग्निके सदृश लक्ष्मणको देख अत्यन्त त्रासको प्राप्त हुए। लक्ष्मणने अङ्गदको सुग्रीवके पास भेजा, परन्तु वह निद्रासे ऐसा प्रमत्त था, कि कुछभी न समझ सका। तब वानर लोग लक्ष्मणको क्रुद्ध देख बड़े ऊंचे स्वरसे किलकिला शब्द करने लगे, जिससे सुग्रीव जागा। (३३) लक्ष्मण अंगदसे सन्देश पाकर किष्किन्धामें चले। सुग्रीव

चापके शब्दसे लक्ष्मणका आगमन जान त्रास पाकर अपने आसनसे विचलित हुआ। उसने ताराको लक्ष्मणके पास भेजा। तारा लक्ष्मणको प्रबोध करके उनको सुग्रीवके पास लाई। (३६) सुग्रीवकी प्रार्थनासे लक्ष्मण प्रसन्न हुए। (३७) सुग्रीवकी आज्ञासे हनूमानने सब वानरोंको सब दिशाओंमें भेजा। उन्होंने शीघ्र जाकर नाना समुद्र, पर्व्वत, वन और सरोवरोंके रहने वाले वानरोंको राजाकी आज्ञा कह सुनाई। प्रधान वानर पृथ्वीके सब वानरोंको सन्देशदे, सुग्रीवके पास उपस्थित होकर बोले कि सब वानर आ पहुंचते हैं।

(३८ सर्ग) सुग्रीव लक्ष्मणके सहित सुवर्णकी पालकी पर चढ़ रामचन्द्रके निवास स्थान पर पहुंचे। (३९) श्रीरामचन्द्र सुग्रीवसे बात कर रहे थे, उसी समय महाबली असंख्य वानरोंसे सम्पूर्ण भूमि आच्छादित होगई।

(४० सर्ग) सुग्रीवने विनत नामक यूथपतिको लक्ष वानरोंके साथ पूर्व्व दिशामें, (४१) नील, हनूमान, जाम्बवान, सुहोत्र, गज, गवाक्ष, गवय, सुषेण, वृषभ, मैन्द, दूसरे सुषेण, द्विविद, गन्धमादन, इत्यादि वीरोंको अंगदका अनुगामी कर दक्षिण दिशामें, (४२) ताराके पिता सुषेणको २ लाख वानरोंके साथ पश्चिम दिशामें (४३) और शतवली वानरको लक्ष वानरोंके साथ उत्तर दिशामें रावण और सीताके पता लगानेके लिये भेजा। (४४) रामचन्द्रने देखा कि हनूमानपर सुग्रीवका बड़ा निश्चय है और हमको भी निश्चय होता है कि हनूमान कार्य्य साधन करैंगे इसलिये अपने नामाक्षरसे चिह्नित अंगूठी जानकीकी प्रतीतिके लिये हनूमानको दी।

(४५ सर्ग) राजा सुग्रीवकी आज्ञा पाकर वानर गण सम्पूर्ण पृथ्वीमें छाकर टिड्डियोंकी भांति चले। (४७) पूर्व्व, उत्तर और पश्चिम इन तीन दिशाओंसे वानरोंने आकर सीताके पता न लगनेका समाचार सुग्रीवसे कह सुनाया।

(५० सर्ग) अंगद आदि वानरोंने सीताको खोजते खोजते एक बड़े भारी ऋक्ष नामक बिलको देखा। प्यासे हुए वानर सब उस अन्धियारे बिलमें घुस गए। उसके भीतर निर्मल जलसे पूर्ण अनेक सरोवर थे। वहां वानरोंने सातखन वाले मुख्य गृहोंको, जो कांचन और चांदीसे बने थे, देखा। वहां एक स्त्री चीर और काले मृगचर्मको धारण किए हुई, तपस्या करती देख पड़ी। (५१) हनूमानके पूछने पर तपस्विनी बोली की मयदानवने इस सुवर्णके सम्पूर्ण जंगलको और इन गृहोंको अपनी मायासे रचा है। इसी बिलमें उसने अपनी विद्या प्रकाश कीथी। मैं मेरु सावर्णि की पुत्री हूं, स्वयंप्रभा मेरा नाम है, मैं इस भवनकी रक्षा करती हूं। वानर लोग खा पीकर स्वस्थ चित्त हुए। हनुमान उस तापसीसे बोले कि सुग्रीवने जो हमारे लिये समय नियत किया था, वह इस बिलमें बीत गया। अब तू हम लोगोंको इस बिलसे बाहर निकाल दे। जब स्वयंप्रभाके कहने से सबोंने अपने अपने हाथोंसे अपने अपने नेत्रोंको ढांक लिया, तब उसने अपने प्रभावसे एक निमेषमें सबको बाहर कर दिया।

(५३ सर्ग) वानरोंने समुद्रको देखा। वे एक पहाड़ी पर बैठ कर चिन्ता करने लगे। अंगद बोले कि देखो हम लोग कार्तिकके महीनेमें भेजे गए, एक मासकी अवधि बीत गई परन्तु कार्य्य सिद्ध न हुआ। (५५) इसके उपरांत सब वानर परस्पर प्रायोपवेशके विचारसे दाक्षिणाग्र कुशको बिछाकर समुद्रके तीर पर बैठ गए। इतनेमें एक महा भय ऐसा आया कि वे सब इधर उधर भागने और कन्दराओंमें घुसने लगे।

(५६ सर्ग) जटायु का भाई संपाती नामक गृध्र बानरोंको देख कन्दरासे निकल कर बोला कि आज बहुत काल पर यह भोजन मुझे मिला है। पक्षीकी बात सुन अंगद हनूमानसे जानकीहरण, जटायुमरण आदि की कथा कहने लगे। यह सुन गृध्रराज चकित होकर बोले कि तुम लोग जटायुके विनाशकी कथा मुझसे कहो। (५७) अंगदने जानकीहरण और रावणके हाथसे जटायुके मरणकी कथा कह सुनाई। (५८) सम्पाति (अपना सब वृत्तान्त कहकर) बोला कि एक रूपवती और तरुणी स्त्रीको रावण हरे लिये जाता था, यह मैंने देखा। वह स्त्री राम राम और लक्ष्मण ऐसा पुकारती थी. सो राम नाम लेनेसे मैं जानता हूं कि वह सीताही होगी। रावण विश्रवा मुनि का पुत्र और कुबेरका भाई है। वह लंकापुरीमें निवास करता है। यहांसे ४०० कोस पर एक द्वीप है, उसमें विश्वकर्मा की बनाई हुई लंका नाम-नगरी है। उसीमें सीता राक्षसियोंसे रक्षित होकर रहती है। मैं यहांसे रावण और जानकीको देख रहा हूं, क्योंकि मेरेभी चक्षु गरुड़के चक्षुके सदृश दिव्य हैं। तुम लोग समुद्र लांघनेका उपाय करो। (६३) सम्पातिके जले हुए दोनों पक्ष फिरसे नए निकल आए। वह अपनी आकाश गतिकी परीक्षा लेनेके लिये वहांसे उड़ा।

(६५ सर्ग) सब यूथपतियोंने अपनी अपनी शक्ति वर्णन की, परन्तु किसीने १०० योजन जाकर लंकासे लौट आनेका निश्चय नहीं किया। (६६) जाम्बवान हनूमानसे बोले कि हे बानरश्रेष्ठ! तुम एकान्तमें चुप मार क्यों बैठे हो। इस कार्य्यमें क्यों नहीं उद्यत होते।

देखो पुंजिकस्थला नामक अप्सरा (अंजना) किसी शापके कारणसे कुंजर नामक वानरेन्द्रकी कन्या और केशरी नामक वानरकी स्त्री हुई। वह एक समय वानरी रूप छोड़ करके रूप यौवनसे सुशोभित मनुष्यरूप धारण कर पर्वतके अग्र भागमें घूम रही थी। वायुने उसके रूपसे मोहितहो दोनों भुजाओंको बढाकर बलात्कारसे उसका आलिङ्गन किया। अंजना बोली कि कौन मेरे एक पत्नीव्रतको नाश करना चाहता है। वायु बोला कि तू मत डर, मैं तुझसे संभोग न करूंगा। मैंने आलिंगन मात्र करके मनके द्वारा जो तेरे साथ संभोग किया, इसलिये महा पराक्रमी पुत्र को तू जनेगी। ऐसा वायुका वचन सुन तुम्हारी माता प्रसन्न हुई और गुहामें उसने तुमको जना। उस समय तुम सूर्य्यको आकाशमें उदय होते देख फल जान कर लेनेकी इच्छासे आकाशमें उडे। उस घडी इन्द्रने तुमको वज्रसे मारा, जिससे तुम पर्वतके शिखर पर गिर पडे। तुम्हारा वायां हनु अर्थात् ठुड्डीके बाए ओरका भाग टेढ़ा होगया, इसी लिये तुम्हारा नाम हनूमान पड़ा। तुम्हारी यह दशा देखकर वायुने क्रुद्ध हो तीनों लोकसे अपनी गति रोक ली, जिससे तीनों लोक खड़बड़ा उठे। देवता लोग घबडाए और वायुको प्रसन्न करने लगे। वायुके प्रसन्न होने पर ब्रह्माने तुमको बर दिया कि संग्राममें किसी शत्रुसे तुम्हारा घात न होगा और इन्द्रने कहा कि तुम्हारा इच्छामरण होगा।

इतना कह जाम्बवान बोले कि हे महाबीर तुम वायुके पुत्रहो और गति वेगमें भी उन्हींके समानहो। तुम उठो और इस समुद्रको लांघो। (६७ सर्ग) हनूमान उस महेन्द्र पर्वत पर चढकर घूमने लगे।

सुन्दर-काण्ड–(पहला सर्ग) हनूमान आकाशमें उड लंकाको चले । समुद्रके कहनेसे हिरण्य (मैनाक) नामक पर्वत ने जलके ऊपर प्रगट हो हनूमानसे अपने ऊपर श्रम दूर करने को कहा, परन्तु वह उस पर्वतको केवल हाथसे स्पर्श करके फिर आकाशमें उडे । इसके अनन्तर वह नागमाता सुरसाको जीत और सिंहिका नामक राक्षसीको मार, अपने शरीरको पूर्ववत् छोटा करके लंकाके पर्वत पर उतर पडे ।

(२ सर्ग) हनूमान विड़ालके सदृश छोटा रूप धारण कर प्रदोष कालमें लंकामें पैठे । (३) लंका नगरीने राक्षसी रूप धारण कर हनूमानको रोका, जिसको कपिने जीत लिया । (४) हनूमान प्राकार को लांघ कर लंका में पहुंचे । (६) उन्होंने प्रहस्त, महापार्श्व,कुम्भकर्ण, विभीषण, महोदर, विरूपाक्ष, मेघनाद, जम्बुमाली, आदि राक्षसोंके भवनोंको देखा । (९ सर्ग) फिर अर्ध योजन चौड़े और एक योजन लम्बे रावणके विशाल गृहका निरीक्षण किया । इसके पश्चात् कपि ने पुष्पक विमानको (१०) और बहुत पत्नियोंके साथ सोते हुए, रावणको देखा, (११) परन्तु श्रीजानकीको न पाया । (१४) हनूमान अशोकबाटिकाके प्राकार (बाहरकी दीवार) पर कूद गए और वाटिकाकी शोभा देख कर शिंशुपा (सीसों) के वृक्ष पर चढ गए ।

(१५ सर्ग) उद्यानकी अशोकवाटिकामें पासही एक गोल गृह था, जिसके मध्यमें सहस्र खम्भेलगे हुए थे और सुवर्णकी वेदियोंसे संयुक्त था । हनूमानने वहां राक्षसियों से घिरी हुई सीताको देखा । रामचन्द्रने सीताके शरीरके जिन भूषणोंको वतलाया था, हनूमान ने उनको पहचान कर निश्चय किया कि यही वैदेही हैं । (१८) जब थोडी सी रात रह गई, तब रावण जाग कर सैकडों स्त्रियोंके साथ अशोकवाटिकामें गया । हनूमानने सोचा कि यही रावण है । तब वह कूद कर गझिन वृक्षकी शाखामें जा छिपे । (१९) रावणको देख सीता कांपने और रोदन करने लगी । (२२) रावण बोला हे सीते ! यदि दो महीने वीतने पर भी तुम मुझे अपना पति करना न चाहोगी, तो मारी जाओगी । रावण सीताको वहुत धमका कर अपने मन्दिरमें चला गया । (२४) रावणकी आज्ञानुसार राक्षसियां नाना कठोर वचनोंसे सीताको दपटने लगीं । हनुमान सीसोंकी शाखामें छिपे हुए सब सुन रहे थे । सीता उस सीसों वृक्षके पास चली गई, और अशोककी एक पुष्पित शाखाको थाम रामचन्द्रका ध्यान करने लगी । (३१) जब हनूमान सीताको सुनाकर रामचन्द्रकी कथा कहने लगे तब सीता आश्चर्य्य युक्त हो, नीचे ऊपर देखने लगी । (३२) सीता सीसोंकी शाखाके बीच भयंकर वानरका रूप देख अत्यन्त डर कर मूर्छा खागई, फिर सचेत हो, सोचने लगी । (३३)हनूमान वृक्षसे उतर सीताके समीप गए । जानकीने हनूमानके पूछने पर अपना वृत्तान्त कहा । (३४) हनूमानने सीताको समाश्वासन दे, रामचन्द्रका वृत्तान्त कह सुनाया । जब हनूमान समीप चले गए,तब सीता उनको रावण जान कर डर गई, क्योंकि उसे निश्चय था, कि राक्षस लोग काम रूपी होते हैं । जब हनूमान मधुर वाणीसे रामकी कथा वर्णन करने लगे, तब जानकीने राम और लक्ष्मणका चिह्न पूछा । (३५) हनूमानने रामचन्द्रके सर्वांगका विस्तारसे वर्णन किया और सुग्रीवसे मित्रताकी कथा कही, तब सीताने ठीक जाना कि हनूमान मायावी नहीं है । (३६) हनूमानने राम नामसे अंकित अंगूठी सीताको दी, जिससे उनको दृढ विश्वास हुआ कि यह रामका दूत है ।

(३७) जानकी बोली हे कपे ! तुम जाकर रामचन्द्रसे कहो कि जबतक वर्ष पूरा न हो तबतक हमें ले चलें क्योंकि तभी तक मेरा जीवन है। रावणने मेरे लिये यही ठहरा रक्खा है। यह दशवां महीना है शेष दोही रह गए हैं। हनूमान बोले हे जानकी ! अब तुम मेरे पीठ पर चढ़ो। मैं तुम्हें रामचन्द्रके पास पहुंचाता हूं। सीताने अनेक कारणोंको बिचार भय खाकर कपिके पीठ पर जाना स्वीकार नहीं किया (३८) हनूमान बोले यदि मेरे साथ चलनेमें तुमको उत्साह नहीं है,तो मुझे कुछ चिन्हानी दो सीताने जयन्तकी कथा विस्तारसे चिन्हानी रूप कह सुनाई। (देखो पहले खण्डके चित्रकूटके वृत्तान्तमें) और दिव्य चूडामणि रामचन्द्रको देनेके लिये हनूमानको दिया, जिसको कपिने अंगुलीमें पहन लिया।

(४१ सर्ग) हनूमान सीतासे विदा हो प्रमदावनमें जाकर बड़े बेगसे वृक्षोंको उखाड़ने लगे। उन्होंने गृह आदि सब तोड़ फोड़ नष्ट कर दिया। (४२) प्रमदावनके पक्षियोंके नाद और वृक्षोंके टूटनेके शब्दसे सब लंकाबासी त्राससे व्याकुल होगए। जो राक्षसियां पिछली रातको सो गई थीं, जाग उठीं और वनका विनाश और कपिका पर्वताकार रूप देख जानकीसे पूछने लगीं कि हे सीते ! यह कौन, कहांसे और किस लिये यहां आया है और किस प्रकारसे इसने तुमसे बात चीतकी। सीताने उत्तर दिया कि कामरूपी राक्षसोंके कुतूहल जानने की मुझमें क्या शक्ति है। तुम्हीं लोग जान सक्ती हो कि यह कौन है। कई राक्षसियां, रावणके समीप जाकर बोलीं कि अशोकबाटिकामें एक पराक्रमी वानर आया है। उसने सीताके साथ कुछ बात चीत भी की थी। हमने सीतासे उस विषयमें बहुत पूछा परन्तु वह उसको बतलाना नहीं चाहती। वानरने प्रमदावनको ध्वस्त कर डाला, परंतु शिंशुपावृक्षको,जिसके नीचे सीता बैठी है, बचाया है। रावणने क्रोधकर८० सहस्र राक्षसोंको भेजा,जिनको हनूमानने मार गिराया। (४४) जम्बुमाली राक्षस गया और हनूमान द्वारा मारा गया। (४५) रावणके मन्त्रियोंके ७ पुत्र जाकर हनूमानके हाथसे मारे गए। (४६) सेनाके ५ मुख्य नायक मारे गए। (४७) रावणका पुत्र अक्ष गया और बड़े युद्धके अन्तमें हनूमानने उसको मार डाला। (४८) रावणके पुत्र इन्द्रजीतने जाकर कपिको ब्रह्मास्त्रसे बांधा। राक्षसोंने कपिको चेष्टारहित देख सुनके रस्सों और वृक्षकी छालोंसे कस कर बान्धा। मेघनादने हनूमानको लेजाकर रावणके पास उपस्थित कर दिया।

(५१ सर्ग) हनूमानने रावणसे बहुत बात चीतकी और सीताके दे देनेके लिये कहा रावणने कपिका अप्रिय वचन सुन, क्रोध कर उसके घात करनेकी आज्ञा दी, (५२) परन्तु इस बातमें विभीषणकी सम्मति न हुई, क्योंकि हनूमानने कई बार कहा था कि मैं दूत हूं। विभीषणने रावणको बहुत समझाया और कहा कि दूतके लिये बहुत प्रकारके दण्ड कहे गए हैं, परन्तु दूतका वध मैंने नहीं सुना है। (५३) विभीषणके वचनको मानकर रावण बोला कि कपियोंकी पोंछ इनका बड़ा प्यारा भूषण है, यही जलाई जाय। तब राक्षसोंने हनूमानकी पोंछमें कपड़ा लपेट और तेलसे उसको भिगोय उसको जला दिया। राक्षस लोग शंख नगाडा बजाते और वानरका अपराध लोगोंको सुनाते हुए हनूमानको पुरीमें घुमा रहे थे। हनूमान बन्धनोंको काट नगरके फाटक पर कूद कर चढ़ गए। उसी जगह एक लोहेका परिघ मिला कपिने उसीसे सब राक्षसोंको मार गिराया।

(५४ सर्ग) हनूमानने क्रमसे सब गृहोंको जलाया पर एक विभीषणका घर छोड़ दिया। उसने सम्पूर्ण लंकाको जलाकर समुद्रमें अपनी पोंछको बुझाया। (५५) हनूमानने सोचा कि लंका जलनेके साथ जानकी भस्म होगई होगी। इतनेमें बड़े बड़े चारणोंका शब्द सुन पड़ा, कि बड़ा आश्चर्य्य है कि सम्पूर्ण लंका भस्म होगई, पर जानकी न जली। (५६) हनूमानने फिर उस शिंशुपा वृक्षके पास आकर जानकीको देखा। वह उनको समाश्वासन देकर अरिष्ट नाम पर्वत पर कूद चढे और वहांसे वायुकी नाईं उत्तरकी ओर उड़े।

(५७ सर्ग) हनूमानने समुद्रके इस पार महेन्द्राचल पर पहुंच कर वानरोंसे सीताका समाचार कह सुनाया। (६१) वानर लोग महेन्द्राचलसे कूद कर आकाशमें उड़ चले और सुग्रीवके मधुवनमें आकर अंगदकी आज्ञाले मूल फल खाने लगे। दधिमुख आदि रखवालोंके रोकने पर उन्होंने उनको मारा और बनको उजाड़ डाला। (६३) दधिमुखने बन उजाड़नेका समाचार सुग्रीवसे जा कहा। सुग्रीव बोले कि बिना कार्य्य किए ये लोग कभी ऐसी ढिठाई नहीं कर सकते। अवश्य इन्होंने कार्य्य सिद्ध किया है। (६५) वानरोंने प्रस्रवण पर्वत पर जाकर राम और लक्ष्मणको प्रणाम किया। हनूमानने सीताका समाचार रामचन्द्रसे कहा और सीता का दिया हुआ मणि उनको दिया।

युद्धकाण्ड।—(चौथा सर्ग) श्रीरामचन्द्रने प्रस्रवणके पर्वतसे दक्षिण दिशामें प्रस्थान किया। उनके पीछे सुग्रीवसे अभिरक्षित होकर बड़ी भारी वानरी सेना चली। सब वीर जाते जाते सह्य नामक पर्वतके पास पहुंचे। हनूमानके पीठ पर रामचन्द्र और अंगदके पीठपर लक्ष्मण बड़ी शोभा पाते थे। वानरी सेना रात्रि दिन चली जाती थी। रामचन्द्र अपनी सेनाके साथ सह्याचल और मलयाचल पर्वतोंके पार हो महेन्द्राचल पर्वत पर चढ़े। वहांसे भयंकर शब्दसे गर्जता हुआ समुद्र देख पड़ता था। इसके अनन्तर वे लोग समुद्रके तीर आए। रामचन्द्रने सेनाको टिकनेकी आज्ञा दी।

(१३ सर्ग) रावणने अपनी सभामें कहा कि बहुत काल बीते मैंने पुंजिकस्थली अप्सरासे जो ब्रह्मलोकमें जाती थी, बलात्कारसे भोग किया। यद्यपि उसने मेरे दोषको ब्रह्मासे नहीं कहा, तथापि ब्रह्माने उसकी आकृतिसे इस बातको जान लिया और क्रुद्ध होकर कहा कि हे रावण आजसे यदि तू अन्य स्त्रीको बलात्कारसे उपभोग करेगा तो तेरे मस्तक सौ टुकड़े हो जायंगे। इस शापके भयसे मैं सीताको अपने पर्य्यङ्क पर बलात्कारसे नहीं ले जाता।

(१४ सर्ग) विभीषणने रावणको बहुत समझाया कि सीताको रामचन्द्रके अर्पण कर दो। (१६) रावणने कहा कि ऐसी बातें जो दूसरा कोई कहता तो इसी घड़ी मारा जाता। विभीषण रावणके अनेक कठोर वचनोंसे उदास हो ४ राक्षसोंके साथ लंकासे आकाशमें उड़े।

(१७ सर्ग) विभीषण क्षणमात्रमें सागरके उत्तर तीर पर रामचन्द्रके समीप पहुंचे, और आकाशहीमें स्थितहो बोले कि मैं दुराचारी रावणका छोटा भ्राताहूं, विभीषण मेरा नाम है, मैंने उसको समझाया कि सीता रामचन्द्रको दे डालो। इसपर उसने मुझे बहुत कठोर वचन कहे, इसलिये मैंने रामचन्द्रके शरण होना अंगीकार किया है। (१९) रामचन्द्रसे अभय पाकर विभीषण रामचन्द्रके चरणों पर गिर पडे। रामचन्द्रने विभीषणसे लंका के बलाबलका हाल पूछा। उसने सब कह सुनाया। रामचन्द्रकी आज्ञासे लक्ष्मणने वानरोंके मध्यमें विभीषण

का राज्याभिषेक कर दिया। इसके अनन्तर हनूमान और सुग्रीव विभीषणसे बोले कि हम लोग समुद्रके पार किस प्रकारसे जायं। विभीषण बोले कि रामचन्द्र समुद्रके शरण जायं यही उपाय है। यह बात रामचन्द्रको रुची।

(२० सर्ग) रावणके दूत शार्दूल राक्षसने समुद्रके पार जाकर वानरी सेनाको देखा और रावणके पास जाकर सब समाचार कह सुनाया। रावणने शुक नाम राक्षससे कहा कि तुम राजा सुग्रीवसे मेरी ओरसे कहो, कि इस सेना–समारम्भसे तुम्हारा कुछ अर्थ साधन नहीं देख पडता, फिर तुम हमारे भाईके तुल्य हो तुम अपनी राजधानी किष्किन्धामें चले जाओ। तुम किसी प्रकारसे बानरोंके द्वारा लंका प्रप्त नहीं कर सकोगे। शुकने पक्षी रूप धारण कर समुद्रके पार आकर, सुग्रीवसे रावणका सन्देश कह सुनाया। इतनेमें वानर लोग कूद कर मुष्टिकाओंसे मारते हुए उसको भूमि पर उतार लाए। उसका पुकार सुन जब रामचन्द्रने उसको छोडा दिया, तब वह आकाशमें जाकर बोला कि हे सुग्रीव मैं जाकर रावणसे क्या कहूं। सुग्रीव बोले कि रावणसे कह देना कि न तुम मेरे मित्र हो, न दयापात्र हो किन्तु रामचन्द्रके शत्रु हो, इसलिये सपरिवार वालीके तुल्य वधके योग्य हो। सुग्रीवकी आज्ञासे वानर लोग फिर शुकको पकड कर मारने लगे। शुकका विलाप सुन रामचन्द्र बोले: कि दूत को मारना ठीक नहीं है, उसको छोड दो।

(२१ सर्ग) श्रीरामचन्द्र समुद्रके तीर कुशोंको बिछा कर अपने बाहुको तकिया बना मौन हो लेट गए, इस प्रकारसे नियम पालते हुए उनको तीन रात बीत गईं, परन्तु सागरने अपना रूप न दिखाया। तब रामचन्द्र अति क्रुद्ध हो इन्द्र बज्रकी नाईं, बाणोंको छोडने लगे। उस कालमें जब वायुके शब्दसे युक्त समुद्रके जलका महावेग उत्पन्न हुआ, (२२) तब मूर्तिमान सागर जलसे स्वयं निकल कर खडा हुआ और हाथ जोड कर राघवसे बोला कि हे महाराज मैं वानरोंके उतरनेके लिये स्थलके तुल्य मार्ग बना दूँगा। रामचन्द्र बोले कि यह अमोघ बाण कहां फेंका जाय। समुद्र बोला यहांसे उत्तरकी ओर एक अति पवित्र मेरा स्थल है। उसका नाम द्रुमकुल्य लोकमें प्रसिद्ध है। वहां पर भयंकर काम करने वाले पापशील आभीर इत्यादि चीर मेरे जलको पीते हैं। आप इस बाणको वहांही सफल कीजिए। रामचन्द्रने उस प्रदीप्त बाणको उसी देशमें फेंक दिया। उस बाणने वहां की पृथ्वीका जल सोख लिया। तबसे वह मरु कान्तार अर्थात् मारवाड़ नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसके अनन्तर फिर समुद्र बोला कि यह नल वानर विश्वकर्माका पुत्र है। इसने अपने पितासे बर पाया है। यह मेरे जलके ऊपर सेतु बनावे।

रामचन्द्रकी आज्ञासे सैकड़ों और सहस्रों बानर महावनमें घुस गए, और वृक्षोंको उखाड़ उखाड़ समुद्रके तीर पर डालने लगे। उन्होंने साकू, ताड़, बेल, आम, अशोक, आदि वृक्षोंसे समुद्रको भर दिया। फिर वे बड़े बड़े पत्थरके ढोकों और पर्वतोंको उखाड़ उखाड़ यन्त्रोंद्वारा ढोकर लाने लगे। नल सेतु बनातेथे। बहुत वानर वृक्षोंको बिछाते थे।

पहले दिनमें १४ योजन, दूसरे दिन २०, तीसरे दिन २१, चौथे दिन २२ और पांचवें दिन २३ योजन सेतु बानरों ने बनाया। इस प्रकारसे यह सेतु १० योजन चौड़ा और १०० योजना लम्बा बना। सेतु द्वारा सेना समुद्रके पार गई। सुग्रीव ने उसको टिकाया।

(२४ सर्ग) समुद्र पार होंने पर सुग्रीव ने रामचन्द्रकी आज्ञासे रावणके दूतको छोड दिया। शुक ने रावणसे सब समाचार जा सुनाया। (२५) रावणने शुक और सारण दोनों मन्त्रियों को रामचन्द्रकी सेनाका परिमाण और बल समझ आनेको भेजा। वे वानरका रूप धर कर वानरकी सेनामें घुस गए। विभीषण ने उनको पहचान लिया और रामचन्द्रके समीप लेजा कर खड़ा किया। रामचन्द्र ने उन दोनों को छोड़वा दिया। (२६) शुक और सारणने रावणके पास जाकर सब वृत्तान्त कह सुनाया। रावण उन दोनों को साथ ले एक ऊंची अटारी पर चढ़ गया और वानरोंकी सेनाको देख देख सारणसे पूछने लगा। सारण वानरोंका वर्णन करने लगा।

(३१ सर्ग) रावण विद्युज्जिह्व नाम मायावी राक्षस को साथले सीताके पास पहुंचा विद्युज्जिह्व ने रामचन्द्रका सिर, धनुष और वाण मायासे बना कर रावणको दिखलाया। रावण सीतासे बोला कि हे भद्रे तेरा पति संग्राममें मारा गया, अब तुम मेरी भार्य्याओंकी स्वामिनी हो। प्रहस्त ने सोते हुए, रामका शिर काट लिया और लक्ष्मण बहुत वानरोंके साथ भाग गया। (३२) सीता उस मस्तक और धनुष को देख भूमि पर गिर पड़ी और उस शिरको लेकर विलाप करने लगी। इतनेमें रावणकी सेनाके एक पुरुषने आकर एक कार्य्य की आवश्यकता कही। रावण अशोकवाटिका से सभामें चला गया। उसी समय में वह मस्तक और धनुष न जाने क्या होगए। (३३) विभीषणकी पत्नी शर्मा नाम राक्षसीने, जिसको रावण ने सीताकी रक्षाके लिये बैठाया था, सीताको समझाया कि श्रीरामचन्द्र लक्ष्मणके साथ कुशलसेहैं। रावण ने तुम्हारे ऊपर यह माया की है।

(३५ सर्ग) रावणके मातामह माल्यवान राक्षस ने रावणसे कहा कि तुम रामसे सन्धि करलो। (३६) माल्यवानका वचन जब रावणके मनमें न भाया तब वह क्रुद्धयुक्त वचन बोलता हुआ, अपने घरको चला गया।

रावणने पूर्व द्वार पर प्रहस्त राक्षसको, उत्तर द्वार पर शुक और सारणको, मध्य गुल्म पर विरूपाक्षको दक्षिण द्वार पर महापार्श्व और महोदरको और पश्चिम द्वार पर मेघनादको रहनेकी आज्ञादी। और कहा कि उत्तर द्वार पर मैं भी आऊंगा।

(३७ सर्ग) विभीषण रामचन्द्रसे बोले कि अनल, पनस, सम्पाति, और प्रमति मेरे चारों साथी लङ्कामें जाकर शत्रुकी सेनाका प्रबन्ध देख आए हैं। यह सुन रामचन्द्रने भी अपनी सेनाका प्रबन्ध और विधान कर लिया। वह बोलेकि हम दोनों भाई और ४ सचिवोंके साथ विभीषण यही सात इस सेनामें मनुष्य रूपसे रहेंगे नहीं तो युद्धमें गड़बड़ होगी।

(३८ सर्ग) वानरोंके साथ रामचन्द्र, लक्ष्मण और विभीषण सुवेल पर्वत पर चढ़ा कर समतल भूमि पर बैठ गए और वहांसे लङ्कापुरीको देखने लगे। पूर्ण चन्द्रसे सुशोभित रात्रिका प्रादुर्भाव हुआ। (३९) त्रिकूटाचल पर्वतके एक ऊंचे शिखर पर, जो सौ योजन विस्तीर्ण था, १० योजन विस्तीर्ण और २० योजन लम्बी लङ्कापुरी बसाई गई थी। सहस्र खम्भोंसे बना हुआ अति ऊंचा रावणका राजभवन था। (४०) लङ्काके फाटकके शिखर पर श्वेत चामर और विजय छत्रसे सुशोभित रावण देख पड़ा उसको देख सुग्रीवसे न रहा गया। उसने कूद कर रावणके पास पहुंच, उसका मुकुट भूमि पर गिरा दिया। दोनोंका युद्ध होने लगा। सुग्रीव युद्ध द्वारा रावणको छकाकर रामके पास आ पहुंचे।

(४१ सर्ग) सुग्रीवके सहित श्रीरामचन्द्रने वानरी सेनाको कवच इत्यादिसे सन्नद्ध कर युद्धके लिये आज्ञादी। श्रीरामचन्द्र लक्ष्मणके सहित लंकाके उत्तर द्वारका आक्रमण करके, जहां रावण युद्धके लिये उद्यत था, अपनी सेनाकी रक्षा करने लगे। नील नामक सेनापति महेन्द्र और द्विविदको साथले पूर्व द्वार पर खड़े हुए। अंगदने दक्षिण द्वारको ग्रहण किया। इनके सहायक ऋषभ, गवाक्ष, गज और गवय वानर थे। हनूमानने प्रजंघ तरस और दूसरे वीरोंको साथले पश्चिम द्वारको लिया। और मध्य भागमें सुग्रीव खड़े हुए।

रामचन्द्रने विभीषणकी अनुमतिसे और राजधर्मका स्मरण कर अङ्गदको दूत बना कर रावणके पास भेजा। अङ्गद आकाश मार्गसे उड़कर रावणके मन्दिरमें जा पहुंचे। उन्होंने रावणसे रामचन्द्रके वचनको ठीक ठीक कह सुनाया और कहा कि यदि तू सत्कारपूर्वक बैदेही को मुझे न दे देगा, तो आजमैं तुझे उखाड़ फेकूँगा, और तेरे मारे जाने पर लंकाका ऐश्वर्य विभीषणको दे दिया जायगा। ऐसा सुन रावण अत्यन्त क्रुद्ध हुआ। उसकी आज्ञासे ४ राक्षसों ने अङ्गदको पकड़ लिया। इतनेमें अङ्गद झटक कर एक ऊंची अटारीके शृङ्ग पर चढ़ गए, और आकाशमें उड़कर रामचन्द्रके पास आ पहुंचे।

(४२ सर्ग) देवासुर संग्रामके समान वानरों और राक्षसोंका महाघोर संग्राम आरम्भ हुआ।

(४४ सर्ग) इन्द्रजीत अङ्गदसे अपनी हार देख अन्तर्द्धान होकर चोखे चोखे बाणोंको चलाने और घोर सर्पमय बाणोंसे रामचन्द्र और लक्ष्मणको छेदने लगा। वह दोनों भाइयोंको नागपाशसे बान्ध, इनको मरा हुआ जान कर अपनी सेनाको साथ ले लंकामें चला गया।

(४७ सर्ग) रावणकी आज्ञासे त्रिजटा आदि राक्षसियां सीताको अशोकवाटिकासे पुष्पक बिमान पर चढ़ाकर रण-भूमिमें ले आई। सीताने देखा कि सम्पूर्ण सेना छिन्न भिन्न हुई है और दोनों भाई शर-शय्या पर शयन किए हैं। (४८) सीता राम और लक्ष्मणकी मृत्यु देख बिलाप करने लगी। त्रिजटा बोली कि हे देवी तुम बिषाद मत करो तुम्हारे पति जीते हैं। उसका वचन सुन सीता बोली कि ऐसाही होय। इसके अनन्तर त्रिजटा बिमानको लौटा कर सीताको लंकामें फेर लाई। सीता फिर अशोकवाटिकामें पहुंचाई गई।

(५० सर्ग) सुषेण बानर औषधि लानेका प्रयत्न सुग्रीवसे बता रहा था उसी समय बिनताका पुत्र गरुड़ देख पड़ा। गरुड़को आते देख, वे सर्प जिन्होंने बाण रूपसे दोनों वीरोंको बान्ध लिया था, भाग गए। गरुड़ने दोनों भाइयोंको हाथसे स्पर्श किया, जिससे उनके बाणों के घाव भर आए, और शरीरोंके रंग पूर्ववत होगए।

(५२ सर्ग) हनूमानने धूम्राक्ष राक्षसको (५४ सर्ग) अंगदने वज्रदंष्ट्रको (५६) हनूमानने अकम्पन राक्षसको (५८) और नील बानरने प्रहस्त सेनापतिको, असंख्य राक्षसोंके साथ मारा।

(५९ सर्ग) प्रहस्तका मारा जाना सुनकर स्वयं रावण रथारूढ़ हो रणक्षेत्रमें आया। लक्ष्मणने जब रावणका धनुष काट डाला, तब रावणने स्वयंभूकी दी हुई शक्ति लक्ष्मण पर चलाई, जो उनकी छातीमें घुस गई। लक्ष्मणको विह्वल और अचेत होते देख रावणने चाहा कि इनको उठा ले जाऊं। परन्तु जब वे न उठे तब उसने दोनों हाथोंसे बल पूर्वक दाब कर इनको छोड दिया। हनूमान लक्ष्मणको रामचन्द्रके पास ले आए। लक्ष्मण घाव की पीड़ासे

रहित हुए। जब रामचन्द्रने हनूमानकी पीठपर चढ़कर रावणको अपने बाणोंके प्रहारसें पीड़ित किया, तब वह घोड़े, और सारथीसे रहित हो लंकामें घुस गया।

(६० सर्ग) रावणने अपना पराजय और प्रहस्तका घात देखकर राक्षसी सेनाको आज्ञा दी कि कुंभकर्णके जगानेका प्रयत्न करो, क्योंकि वह नव, सात, दश और आठ महीने तक भी सोता है। उसको सोये हुए, आज ९ दिन हुए हैं। ऐसी राजाज्ञा पाकर राक्षस-गण शीघ्र जाकर १०० योजन लम्बी और बड़े भारी मुख वाली कुम्भकर्णकी गुहामें पैठ गए और कुम्भकर्णके पास जाकर ऊंचे शब्दसे गर्जने और शंखोंको बजाकर घोर नादसे चिल्लाने लगे। जब वह नहीं जागा, तब वे भुशुण्डीं, मूसल, और गदाओंसे उसकी छातीमें प्रहार करने लगे। अनेक यत्नोंसे भी वह नहीं जागा। जब राक्षसोंने सहस्रों हाथियोंको उसकी देहपर दौड़ाया, तब वह उठ बैठा और राजाज्ञा सुन राजभवनकी ओर चला।

(६१ सर्ग) रामचन्द्र पर्वताकार कुम्भकर्णको देख अति विस्मित हो, बिभीषणसे पूछने लगे, कि यह कौन है? आज तक मैंने ऐसा प्राणी नहीं देखा। विभीषण बोले कि हे राघव! जिसने युद्धमें यमराज और इन्द्रको जीत लिया, वही यह विश्रवा मुनिका पुत्र कुम्भकर्ण है। इन्द्रने कुम्भकर्णसे पीड़ित हो प्रजाओंको साथ ले ब्रह्मलोकमें जाकर कुम्भकर्णकी दुष्टता ब्रह्मासे कह सुनाई और यह भी कहा कि इसी प्रकारसे जो यह नित्य भोजन करेगा, तो थोड़ेही दिनोंमें लोक शून्य हो जायगा। ब्रह्माने कुम्भकर्णको बुलाकर कहा कि आजसे तू मृतकोंकी भांति सोवेगा। जब रावणने ब्रह्मासे (विनय करके) कहा कि आप इसके सोने और जागनेका काल नियत कर दीजिए, तब ब्रह्मा बोले कि यह ६ महीना सूतेगा और एक दिन जागता रहेगा।

(६५ सर्ग) कुम्भकर्ण राक्षसोंके साथ मिलकर युद्ध स्थलमें चला। उसके शरीरकी चौड़ाई १०० धनुष (४०० हाथ) और ऊंचाई ६०० धनुष (२४०० हाथ) थी।

(६७सर्ग) कुम्भकर्ण अपनी गदा उठा कर चारों ओरसे वानरोंको मारने लगा। इसके प्रहारसे ७००-८०० और-१००० वानर चूर हो भूमिपर सो गए। तदनन्तर वह १६-८-१०-२०-और ३० वानरोंको उठा उठा कर खाने लगा और दोनों भुजाओंसे वानरोंको पकड़ पकड़ फंका मारने लगा। वानर लोग उसकी नासिकाओं और कर्णोंके द्वारा निकल आए। कुम्भकर्ण सुग्रीवको लेकर लंकामें पैठ गया। सुग्रीवने सचेत होनेपर जब अपनेको कुम्भकर्णके बगलमें देखा, तब अपने चोखे चोखे नखोंसे उसके कानोंको और दांतोंसे उसकी नाकको काट कर गिरा दिया। जब कुम्भकर्णने सुग्रीवको हाथसे पकडा, तब वह छटक कर रामके पास आगए। कुम्भकर्ण क्रोध करके संग्राममें आकर वानरोंको भक्षण करने लगा। वह केवल वानरोंहीको नहीं खाता था, किन्तु राक्षसोंको और पिशाचोंको भी पकड़ पकड़ मुखमें डाल लेता था। लक्ष्मण युद्ध करने लगे। पीछे कुम्भकर्ण लक्ष्मणका सामना छोड़कर रामचन्द्रके ऊपर दौड़ा। बड़े संग्रामके पीछे रामचन्द्रने अपने बाणसे कुम्भकर्णका मस्तक काट गिराया।

(७० सर्ग) त्रिशिरा, देवान्तक, नरान्तक, महोदर, महापार्श्व (७१) और अतिकाय राक्षस मारे गए।

(७३ सर्ग) इन्द्रजीत रथपर चढ़ युद्धभूमिमें जा पहुंचा और वहां अग्निको प्रदीप्तकर श्रेष्ठ मन्त्रोंसे आहुति देने लगा। अन्तमें वह आहुतिसे अग्निको तृप्तकर रथ आयुधके सहित

आकाशमें अंतर्द्धान होगया। राक्षसी सेना वानरोंसे लड़ने लगी। इन्द्रजीत अपने अस्त्र समूहोंसे रामचन्द्र और लक्ष्मणको मूर्च्छित कर ऊंचे स्वरसे गर्जा।(७४)राम और लक्ष्मणको मूर्छित देख वानरोंकी सेना अति खेदको प्राप्ति हुई ।

जाम्बवान हनूमानसे बोले कि हे वानरसिंह तुम हिमालय पर्वत पर चले जाओ, वहांसे ऋषभ पर्वत पर जाना; वहां कैलासको भी देखोगे । दोनों पर्वतोंके मध्यमें सब औषधियोंसे भरे औषधि पर्वतको पाओगे। उस पर्वतके मस्तक पर मृत्यु–सञ्जीवनी,विशल्य–करणी, सुवर्ण-करणी और सन्धान–करणी ये ४ औषधियां हैं, तुम चारोंको लेकर शीघ्र चले आओ । हनूमान सूर्य्यका मार्ग पकड़ कर हिमालय पर पहुंचे । उन्होंने वहां वृष नामक सुवर्ण पर्वतको, जो उन औषधियोंसे प्रकाशित हो रहा था, देखा । हनूमान कूद कर उस पर चढ औषधियोंको खोजने लगे। जब औषधियां अदृश्य होगईं, तब हनूमान अति क्रोध कर उस पर्वतके शिखर को उखाड़ लंकामें ले आए। औषधी पर्वतके आतेही वायु द्वारा औषधियोंका गन्ध फैल चला। उसके सूँघतेही दोनों भाई और सब वानर आरोग्य होगए, जो प्राणहीन होगए थे । फिर हनूमान पर्वतको ले जहांका तहां पहुंचा आए ।

(७७ सर्ग) कुम्भकर्णके पुत्र कुम्भ और निकुम्भ (७९) और मकराक्ष राक्षस युद्धमें मारे गए (८०) रावणने क्रोध करके युद्धके लिये इन्द्रजीतको भेजा । वह यज्ञभूमिमें आकर विधिपूर्वक यज्ञ करने लगा । अग्निने स्वयं उठकर इसका हवि ग्रहण कर अन्तर्द्धान होने वाला रथ इन्द्रजीतको दिया। तब वह उस रथ पर चढ़ गुप्त होकर वानरी सेनामें जा दोनों भाइयोंको लक्षित कर बाणोंकी वृष्टि करने लगा ।

(८१ सर्ग) जब इन्द्रजीतने जाना कि अब रामचन्द्र मेरे मारनेके लिये कोई प्रबल अस्त्र छोड़ना चाहते हैं, तब संग्रामसे निवृत्त हो लंका में घुस गया । इसके अनन्तर वह मायाकी सीताको रथ पर बैठाकर वानरोंके समीप होकर चला। उसने जब देखा कि वानर लोग मेरे ऊपर दौड़े आते हैं, तब मायारूपी सीताको खड्गसे काट डाला। (८२) इसके पश्चात् वह निकुंभिलाके मन्दिरमें जाकर यज्ञ करने लगा । (८३) हनूमानने रामचन्द्रके पास आकर कहा कि महाराज इन्द्रजीतने संग्राममें हम लोगोंके देखते ही सीताको मार डाला। (८४) विभीषण बोले कि इन्द्रजीत वानरोंको मोहित कर चला गया है। वह सीता मायाकी थी । अब वह निकुंभिला देवालयमें जाकर होम करेगा । यदि होम करके वह आवेगा, तो संग्राममें दुराधर्ष हो जायगा ।

(८५ सर्ग) लक्ष्मण विभीषणके साथ हो इन्द्रजीतके मारनेकी इच्छासे चले । वानरों और राक्षसोंका महायुद्ध प्रारम्भ हुआ । इन्द्रजीत होमको विना पूरा किए ही उठकर युद्ध करने लगा। (९०) विभीषण अपने चारों अनुचरोंके साथ राक्षसोंसे युद्ध करने लगे । मेघनाद अपने पितृव्य विभीषणके साथ कुछ काल तक तुमुल युद्ध कर फिर लक्ष्मणकी ओर दौड़ा। (९१) युद्धके अन्तमें लक्ष्मणने दु:सह बाणसे मेघनादके मस्तकको काट गिराया (९२) रामचन्द्रकी आज्ञासे वानर सुषेणने लक्ष्मण विभीषण और वानरोंको चिकित्सा कर आरोग्य किया ।

(९६ सर्ग) रावण आठ घोडोंके रथपर चढ़ संग्राममें चला । इसके साथ महापार्श्व, महोदर, विरूपाक्ष और दुर्द्धर्ष अपने अपने रथों पर चढ़कर चले। (९७) विरूपाक्ष (९८) महोदर और (९९) महापार्श्व मारे गए । (१००) रावण क्रोध कर रामचन्द्रके सन्मुख गया

और वानरी सेनाको भगाकर रामचन्द्रसे लड़ने लगा। (१०१) विभीषणने कूद कर अपनी गदासे रावणके आठों घोड़ोंको मार गिराया।

रावणने मयकी रची हुई शक्तिको लक्ष्मणके ऊपर फेंका। वह शक्ति लक्ष्मणके हृदयमें धंस गई। लक्ष्मण भूमि पर गिर पड़े। रामचन्द्रने दोनों हाथोंसे उस शक्तिको निकाल कर तोड डाला। (१०२) जब वह लक्ष्मणको प्रहारसे पीड़ित देख विलाप करने लगे तब सुषेण वानर रामचन्द्रको आश्वासन देकर हनूमानसे बोले कि जाम्ववानने जिस पर्वतके लानेके लिये तुमसे कहा था, उस महोदय पर्वतके दक्षिण शृंग पर विशल्य-करणी, सावर्ण्य-करणी, सञ्जीव-करणी और सन्धानी चार प्रकारकी औषधी हैं। तुम शीघ्र उनको ले आवो। हनूमान वायुकी भांति उड कर वहां जा पहुंचे परन्तु औषधीको विना जाने किस प्रकारसे लावें, इसलिये उन्होंने पर्वतके शृङ्गको लाकर रामचन्द्रके पास रख दिया। सुषेणने उस परसे औषधियोंको पहचान कर ले लिया और उसको कूटकर लक्ष्मण को सुंघाया। सूंघतेही लक्ष्मण उठ खड़े होगए।

(१०३ सर्ग) रामचन्द्र फिर हाथमें धनुष लेकर भयंकर वाण चलाने लगे। रावणभी दूसरे रथ पर सवार हो रामचन्द्रके सन्मुख आया। इन्द्रकी आज्ञासे मातली सारथी इन्द्रका रथ, धनुष, वाण, शक्ति और कवच लेकर स्वर्गसे रामचन्द्रके पास आया। रामचन्द्र उस रथ पर चढ़े। राम और रावणका भयङ्कर युद्ध प्रारम्भ हुआ। (१०४ सर्ग) जब वानरोंकी शिलावृष्टि और रामकी वाण वृष्टिसे रावण मृत्यु-तुल्य होगया, तब उसके सारथी ने उसके रथको संग्रामसे हटा लिया। (१०५) रावण सचेत होने पर सारथीको खीझने लगा। सारथीने फिर रथको रामचन्द्रके पास लेजाकर खड़ा किया।

(१०६ सर्ग) अगस्त्य मुनि, जो देवताओंके साथ युद्ध देखने आए थे, राघवसे बोले कि हे राम! तुम आदित्य-हृदय स्तोत्रका जप करो, तब शत्रुओं पर विजय लाभ करोगे। तुम श्रीसूर्य्यका आराधन और पूजन करो। रामचन्द्रने सावधानीसे उसको धारण किया और भगवान सूर्य्यकी ओर देख कर इस स्तोत्रको जपा।

(१०९ सर्ग) वड़े युद्धके पीछे रामचन्द्रके वाणसे रावणके मस्तक कट कर गिर पडे परन्तु फिर उसके मस्तक वैसेही उत्पन्न होगए। उनको भी रामचन्द्रने शीघ्र काट गिराया परन्तु वे फिर ज्योंके त्यों निकल आए। ऐसा चमत्कार १०० बार हुआ, परन्तु रावणका अन्त न हुआ। फिर दोनों का वडा युद्ध प्रारम्भ हुआ। ७ रात्रि बीत गईं, युद्ध समाप्त न हुआ। (११०) इन्द्रके सारथी मातली ने जब कहा कि हे रामचन्द्र! ब्रह्मास्त्र इसके ऊपर चलाइए, तब रामचन्द्रने उस वाणको जिसको भगवान अगस्त्य ने उनको दिया था और अगस्त्य को ब्रह्माने दिया था, रावण पर छोडा। वह वाण रावणके हृदयको विदीर्ण और उसके प्राणोंका हरण कर राघवके तूणीर में घुस गया। शेष निशाचर लङ्का में भाग गए।

(१११ सर्ग) रावणको प्राणरहित देख विभीषण ने शोकसे व्याकुलहो, वडा विलाप किया। रामचन्द्र ने उसको समझाया। (११२) विभीषणने रामचन्द्रकी आज्ञा से माल्यवानके साथ रावण का अग्नि-संस्कार किया। (११४) लक्ष्मण ने रामचन्द्र की आज्ञासे विभीषणको सिंहासन पर बैठाकर विधिपूर्वक लङ्का राज्यका अभिषेक दिया।

(११५ सर्ग) हनूमानने जानकी से जाकर रामचन्द्रके विजयका सन्देसा कहा (११६) और रामचन्द्रके पास लौट कर जानकीका संदेस कह सुनाया । रामचन्द्रकी आज्ञासे विभीषण दिव्य भूषणोंको पहना, दिव्य वस्त्रोंसे सुशोभित कर और पालकी पर बैठा सीताको प्रभुके पास ले आए। (११८) रामचन्द्रके सन्देह दूर करनेके लिये सीता प्रज्वलित अग्नि में निःशंक पैठ गई। (११९) कुबेर, यम, इन्द्र, वरुण, महादेव, और ब्रह्मा विमानों पर चढ़े हुए, श्रीरामचन्द्रके समीप उपस्थित हुए। देवता लोग अपनी भुजाओंको उठाकर बोले कि हे राघव! आपने सीताको क्यों अग्नि में जलने दिया, आप अपनेको नहीं जानते। भूतोंके आदि और अन्त में-आपही देख पड़तेहैं। इसके अनन्तर ब्रह्मा ने रामचन्द्रकी स्तुति की। (१२०) अग्नि ने वैदेही को गोदमें लेकर अपने रूपसे प्रकट हो रामचन्द्रको समर्पण कर दिया और कहा कि सीता निष्पाप है।

(१२१ सर्ग) रामचन्द्र और लक्ष्मण ने स्वर्गसे आए हुए राजा दशरथको प्रणाम किया। राजा अपने पुत्रोंसे मिलकर इनसे बातें कर स्वर्गको गए। (१२२) इन्द्रको प्रसन्न देख रामचन्द्र बोले कि हे देवराज मेरे लिये पराक्रम कर जो वानर मर गए हैं तुम उनको जिला दो। इन्द्रके वर देतेही सब वानर और भालू जी कर उठ खड़े होगए । (१२४) रामचन्द्रकी आज्ञासे विभीषणने रत्न और अर्थोंसे वानर-यूथ–पतियोंको यथोचित सन्तुष्ट किया।

रामचन्द्र, लक्ष्मण, जानकी, विभीषण और वानरोंके सहित पुष्पक विमान पर चढ़े। विमान आकाशमें उडा। (१२५) रामचन्द्रने सीताको युद्धस्थलोंको और समुद्रको दिखाया और कहा कि देखो यह सेना टिकनेका स्थान है। यहां पर सेतु बाँधनेके पहिले शिवने मेरे ऊपर प्रसाद किया। देखो समुद्रका घाट सेतुबन्ध नामसे प्रसिद्ध और त्रैलोक्यसे पूजित हुआ। यह पवित्र और महा पातकके नाश करने वालाहै। विमान किष्किन्धाके सामने खडा हुआ। जब तारा आदि वानरोंकी स्त्रियां विमान पर चढीं तब विमान आगे चला। (२६) चतुर्दश वर्ष पूर्ण होने पर पंचमीके दिन रामचन्द्र प्रयाग में भरद्वाज मुनिके आश्रम पर-पहुंचे। मुनिने अयोध्याका समाचार रामचन्द्रसे कह सुनाया।

(१२७) रामचन्द्रकी आज्ञासे हनूमान मनुष्य रूप धारणकर वेगसे अयोध्याकी ओर चले और नन्दिग्राममें भरतके समीप जाकर बोले कि श्रीरामचन्द्र रावणको मार लक्ष्मण और वैदेहीके साथ चले आते हैं। (१२९) भरत अयोध्याको साज कर-सचिवोंके साथ अगवानीको चले। हनूमान भरतके समाचार रामचन्द्रको सुना कर फिर भरतके पास पहुंच गए। इसके अनन्तर हंसभूषित विमान अयोध्याके पास भूमि पर उतर पडा। प्रभुने भरतको उस पर बैठा लिया। सब लोग परस्पर मिलने लगे। तदनन्तर रामचन्द्र सेनासहित विमान पर चढ भरतके आश्रममें उतरे। उन्होंने विमान कुबेरके घर भेज दिया। (१३०) शत्रुघ्नकी आज्ञासे सुमन्त्र मनोहर रथ लाया, जिस पर सवार हो रामचन्द्र अयोध्यापुरीमें पहुंच पिताके मन्दिरमें जा विराजे।

इसके अनन्तर वृद्ध वशिष्ठ मुनिने ब्राह्मणोंको साथ ले रामचन्द्रको सीतासहित रत्ननिर्मित चौकी पर बैठाया। पहले ऋत्विक ब्राह्मणोंने, फिर कन्याओंने, तब मन्त्रियोंने, तदन्तर बडे बडे पुरवासी महाजनोंने, महाराजका अभिषेक किया। सुग्रीव आदि वानरोंने रामचन्द्रका अभिषेक

देख किश्किन्धाका मार्ग लिया। विभीषण राक्षसोंके साथ लंकामें जाकर राज्य करने लगे। रामचन्द्रने युवराज होनेके लिये लक्ष्मणसे बहुत कहा, जब उन्होंने अंगीकार न किया तब भरत युवराज बनाए गए।

उत्तरकाण्ड—(पहला सर्ग) रामचन्द्रके राज्य पाने पर अगस्त्य, धौम्य, वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि, विश्वामित्र, गौतम, यमदग्नि, भरद्वाज, आदि मुनि राक्षसोंके वधके विषयमें अनुमोदन करनेके लिये आए।

(२ सर्ग) अगस्त्य मुनि रामचन्द्रसे रावणके जन्मका वृत्तान्त कहने लगे कि सत्ययुगमें ब्रह्माके पुत्र पुलस्त्य नाम महर्षि थे. जिनका पुत्र विश्रवा हुआ। (३) भरद्वाज मुनिने अपनी कन्यासे विश्रवा मुनिका व्याह कर दिया, जिससे धनेशका जन्म हुआ। वह मुनिकी आज्ञासे लंकामें रहने लगा। (५)३०योजन चौडी और१०० योजन लम्बी विश्वकर्मा की बनाई हुई लंका नाम पुरी है। सुमाली राक्षस कैकसी नामक अपनी पुत्रीसे बोला कि तू विश्रवा मुनिको स्वयं जाकर वर। वह कन्या विश्रवा मुनिके आश्रममें गई। मुनि बोले कि हे भद्रे! मैंने तेरे मनकी बात जानली कि तू मुझसे पुत्रको अभिलाषा रखतीहै, परन्तु इस दारुण वेलामें तू मेरे पास आई इसलिये महाक्रूरकर्म वाले राक्षसोंको जनेगी। कैकसी प्रणाम कर बोली कि हे भगवन्! ऐसे दुराचार पुत्रोंको म नहीं चाहती। तब मुनि बोले कि अच्छा तेरा पिछला पुत्र धर्मात्मा होगा।

कुछ काल बीतने पर कैकसीको दश मस्तक और बीस भुजा वाला पुत्र जन्मा। विश्रवा मुनिने इसका नाम दशग्रीव रक्खा। उसके पीछे कुम्भकर्ण पुत्र, शूर्पणखा कन्या और विभीषण पुत्र क्रमसे जन्मे।

(१० सर्ग) रावण आदि तीनों भाई गोकर्णमें जाकर तपस्यामें तत्पर हुए रावण ९ सहस्र वर्षमें अपना ९ मस्तक काट कर अग्निमें होम कर दिया और दशवें सहस्र वर्षमें जब वह अपना दशवां मस्तक काटनेको उद्यत हुआ, तब ब्रह्मा देवताओं साथ वहां आकर बोले कि शीघ्र वर मांगो। दशग्रीव बोला कि मैं अमरत्व चाहताहूं। ब्रह्माने कहा कि तुम्हारे लिये अमरत्व नहीं होसकता, तुम दूसरा वर मांगो। रावण बोला कि गरुड, नाग, यक्ष, दैत्य, दानव, राक्षस और देव इनसे अवध्य होऊं, अन्य प्राणियोंके विषयमें मुझे चिन्ता नहीं है। ब्रह्माने कहा कि ऐसाही होगा। ब्रह्माके वरदानसे रावणके मस्तक फिर जहांके तहां उत्पन्न हो आए। ब्रह्मा विभीषणके पास आकर बोले कि वर मांगो। वह बोला कि परम विपत्तिमें भी मेरी बुद्धि धर्महीं पर रहे। ब्रह्मा विभीषणको वर और अमरत्व देकर कुम्भकर्णके पास गए। उस कालमें देवता लोग बोले कि यह वर पावेगा तो तीनों भुवनको खा डालेगा। तब ब्रह्माने सरस्वतीको स्मरण कर उनसे कहा कि तुम इस राक्षसके मुखमें प्रवेश करके जो मैं चाहता हूं, सो इससे कहवा दो। सरस्वती जब उसके मुखमें घुस गई, तब ब्रह्मा कुम्भकर्णसे बोले कि जो चाहते हो सो वर मांगो। कुम्भकर्ण बोला कि मैं अनेक वर्ष पर्यन्त सोया करूं। ऐसाही होय, यों कह ब्रह्मा अपने लोकमें चले गए।

(११ सर्ग) सुमाली राक्षस रसातलसे निकल कर मारीच, प्रहस्त, विरूपाक्ष और महोदर अपने सचिवोंको साथ ले रावणसे आ मिला। सुमालीके समझाने पर रावण ने धनेशके पास दूत भेजा कि तुम लंका छोड़ दो। तब धनेश अपने पिताकी आज्ञासे कैलाशमें जा बसा। दशग्रीवने अपने भाइयोंके साथ लंकामें प्रवेश किया। वह निशाचरोंसे राज्याभिषेक पाकर उस पुरीमें रहने लगा।

(१२ सर्ग) दशग्रीवने अपनी बहन शूर्पणखाका विवाह विद्युज्जिह्वसे कर दिया, मय दैत्यकी मन्दोदरी नाम कन्यासे अपना विवाह किया और बलिकी पुत्रीकी पुत्री जिसका नाम वज्रज्वाला था, कुम्भकर्णके लिये और गन्धर्वराज सैलूषकी कन्या, जिसका नाम सर्मा था, बिभीषणके लिये ला दी। (१३) शिल्पियोंने एक योजन चौड़ा और दो योजन लम्बा सुन्दर गृह कुम्भकर्णके लिये बनाया। वहां जाकर कुम्भकर्ण सूता और कई सहस्र वर्षों तक सूता हुआ पड़ा रहा। (१५) दशग्रीवने कुबेरको जीत कर पुष्पक विमान हरण कर लिया।

(१६ सर्ग) दशग्रीव अपने भाई धनदको जीत स्वामिकार्तिकके उत्पत्तिस्थान सुवर्णकी सरहरीके जंगलमें घुसा वह पर्वत पर चढ़कर अद्भुत जंगल देखही रहा था कि पुष्पक विमान चलनेसे रुक गया। शिवके गण नन्दीश्वर जब दशग्रीवके पास आकर बोले कि तू यहांसे चला जा इस पर्वत पर शंकर क्रीडा कर रहे हैं। तब दशग्रीव विमानसे उतर क्रोधकर बोला कि शङ्कर कौन है ? और फिर वह नन्दीश्वरका मुख बानरके सदृश देख ठट्ठा मार कर हँसा। तब नन्दीश्वरने क्रोध करके शाप दिया कि अरे दशानन मेरे तुल्य पराक्रम वाले और मेरे तुल्य रूप और तेज धारण करने वाले बानर लोग तेरे कुलके नाशके लिये उत्पन्न होंगे। इसके अनन्तर दशानन क्रोध कर अपनी भुजाओंको पर्वतके नीचे घुसेड उसको उठा कर तौलने लगा। जब पर्वत हिलने पर पार्वती चकितहो शिवके शरीरमें लपट गई तब भगवान शङ्करने खेलवाडके सदृश उस पर्वतको अंगूठेसे दबाया, जिससे पर्वतके नीचे खंभोंके सदृश जो दशाननकी भुजाएं लगीथीं वे मडमडा उठीं। भुजाओंके दबनेसे उसने ऐसा भयङ्कर नाद किया, जिससे तीनों लोक कांपने लगे। दशानन सामवेदके स्तोत्रोंसे शिवकी स्तुति करने लगा, और रोते रोते उसको जब सहस्र बर्ष बीत गए, तब भगवान शिवने संतुष्टहो उसकी भुजाओं को छोड़ दिया और उससे कहा कि हे दशानन! तेरे सामर्थ्यसे मैं प्रसन्न हुआ, शैलके दाबसे जो तैने महानाद किया, जिससे तीनों लोक भयभीत होगए इसलिये आजसे तेरा नाम रावण हुआ, क्योंकि तूने लोगोंको रोवाया। ऐसा कह शिवने चन्द्रहास नामसे विख्यात खड्ग रावणको दिया। रावण पुष्पक बिमान पर चढ़ कर चला।

(१७ सर्ग) रावण ने हिमालयके वनमें तप करती हुई बृहस्पतिके पुत्र कुशध्वजकी पुत्री वेदवतीको देखा और बिमानसे उतर वेदवतीके पास जाकर उसके माथेके केशों पर हाथ लगाया। वेदवतीने क्रुद्ध हो, अपने केशोंको हाथसे काट डाला और अग्निको प्रज्वलित कर रावणसे कहा कि हे नीच! जो तूने मेरी धर्षनाकी तो मैं अग्निमें प्रवेश करूंगी और तेरे बधके लिये फिर जन्म लेऊंगी। ऐसा कह उसने अग्निमें प्रवेश किया। वही वेदवती जनक राजके घरमें अयोनिजा सीता रूप उत्पन्न हुई।

(१९ सर्ग) रावण अयोध्या पुरीमें जाकर वहांके राजा अनरण्यसे लडने लगा। जब राजाकी सेना राक्षसी सेनासे नष्ट हो गई, तब राजा आप लडने लगा। अन्तमें रावणने राजाके मस्तक पर एक थपेडा मारा, जिससे राजा रथसे भूमि पर गिर पडे तब रावण हंसा। राजा अनरण्य बोले कि इक्ष्वाकु कुलमें दशरथके पुत्र रामचन्द्र उत्पन्न होंगे, वे तुझको मारेंगे। ऐसा कह राजा स्वर्ग लोकमें गए।

(२१ सर्ग) यमपुरीमें रावण और यमराजका घोर युद्ध हुआ। (२२) अन्तमें ब्रह्माके बचनसे यमराज अन्तर्द्धान हो गए। (२३) रावणने रसातलमें जाकर नाग वरुण आदि को जीता।

(२४ सर्ग) रावण वलिके घरमें गया। वलि रावणको देखतेही ठठाकर हंसे और रावणको पकड़ गोदमें बैठा कर बोले कि हे दशग्रीव यहां तुम्हारे आनेका क्या काम है? रावण बोला कि मैंने सुना है कि विष्णुने तुमको बान्ध रक्खा है, सो मैं तुम्हें वन्धनसे छुडा सकता हूं। वलिने कहा कि जो यह श्यामवर्ण पुरुष सदा हमारे द्वारही पर खडे रहते हैं, इन्हींने मुझे बान्ध रक्खा है। हे राक्षसाधिप! जो यह कुण्डल चमकता हुआ देख पडता है उसको मेरे पास उठा लाओ, तव मैं अपने वन्धनसे छुटनेके विषयमें तुमसे कारण कहूंगा। दशाननने वड़े प्रयत्न और वलसे उस कुंडलको उठाया, परन्तु उठातेही मूर्छा खाकर वह गिर पडा और उसके मुखसे रुधिरकी धारा वह चली। तव वलि बोले कि हे रावण! देखो मेरे प्रपितामह हिरण्यकशिपुके एक कानका यह कुण्डल है, जिसको भगवान नृसिंहने दोनों भुजाओंसे उठा कर नखोंसे फाड डाला, वही वासुदेव द्वार पर खड़े हैं, तुम किस तरहसे इनसे लड़ोगे। ऐसा वचन सुन रावण क्रोध कर अपने शस्त्रको सुधारने लगा। तव भगवान ब्रह्माके हितको विचार वहीं अन्तर्द्धान होगए। रावण वहांसे चल निकला।

(२९ सर्ग) रावण दिग्विजय करके जव लंकामें पहुंचा, तव रावणकी वहन शूर्पणखा रावणके समीप गिर पड़ी और उससे बोली कि तुमने १४ सहस्र कालकेय दैत्योंके मारनेके समय मेरे पतिको भी मार डाला। मुझको विधवापन भोगना पड़ा। रावण बोला कि अव तो अनजानते जो कुछ हुआ सो हुआ, अव तू खरके पास जाकर निवास कर, खर तेरी मोसीका लडका है। अव यह दंडकारण्यकी रक्षाके लिये जायगा। दूषण इसका सेनापति होगा। ऐसा कहकर रावण ने १४ सहस्र राक्षसों की सेना खरके अधिकारमें दी। वह सेना सहित दंडकारण्यमें जाकर राज्य करने लगा।

(३१ सर्ग) एक समय रावण कैलास पर अपनी सेनाके साथ रात्रिमें टिका था। रंभा अप्सरा सेनाके वीचहींसे चली जाती थी। रावणने उठकर उसका हाथ पकड़ लिया। रंभा बोली कि हे राक्षस श्रेष्ठ! तुम हमारे श्वसुर हो, तुम्हारे भ्राता-कुवेरके पुत्र नलकूवरसे हमारा संकेत और उसीके लिये मेरे अलंकार हैं। रावणने उसका कहना न मानकर उससे संभोग किया। रंभाने नलकूवरके पास जाकर सव वृत्तान्त कहा। तव नलकुवरने शापदिया कि रावण फिर यदि अकामा स्त्री पर इस प्रकार व्यवहार करेगा तो उसका मस्तक सात टुकड़े होकर चूर होजायगा। जव रावणने इस शापको सुना, तवसे अकामा स्त्रियोंपर वलात्कार करना छोड दिया।

(३२ वां सर्ग) रावण अपनी सेना सहित स्वर्ग लोकमें पहुंचा। देवता और राक्षसोंका भयंकर संग्राम हुआ। (३४) अन्तमें मेघनाद मायासे इन्द्रको जीत कर लंकामें लेगया। (३५) ब्रह्माने देवताओंके साथ लंकामें जाकर रावणसे कहा कि तेरा पुत्र आजसे इन्द्रजीत नामसे जगतमें पुकारा जायगा और दुर्जय होगा, अव तू इन्द्रको छोड़दे। मेघनादने ब्रह्मासे कई एक वर पाकर इन्द्रको छोड़ दिया।

(३६ सर्ग) एक समय रावण माहिष्मती पुरीमें जा पहुंचा, उस दिन अर्जुन नामक वहांका राजा स्त्रियोंके सहित नर्मदा नदीमें जलक्रीडा करने गया था। रावण नर्मदाके दर्शनसे हर्षित हो, बोला कि मैं इस तीर पर पुष्पोंसे शिवका पूजन करूंगा। राक्षसोंने पुष्पोंकी ढेर कर दी। रावण नदीमें स्नान कर हाथ जोड़ कर चला। जहां जहां रावण जाता, वहां वहां सुवर्णका शिवलिंग पहुंचाया जाता था। रावण वालुकाकी वेदी पर उस लिंगको स्थापन कर

गंध और पुष्पोंसे पूजने लगा। (३७) वहांसे थोड़ीही दूर पर राजा अर्जुन जलक्रीड़ा कर रहा था। राजाने अपनी सहस्रों भुजाओंका बल जाननेके लिये नर्मदाके वेगको रोका और जब छोडा तो उसमें ऐसी तरंग उठी कि रावणने जो पुष्पोपहार किया था, वह सब वह चला तब उसने शुक और सारनको आज्ञा दी कि जलका वेग कहांसे हुआ, तब उन्होंने दो कोस पश्चिम जाकर देखा कि एक पुरुष जलक्रीडा कर रहा है। रावण उनके मुखसे यह वृत्तान्त सुनराजा अर्जुनके पास गया। रावण और राजाका घोर युद्ध प्रारंभ हुआ। अन्तमें जब अर्जुन की गदा की चोटसे रावण विह्वल होगया, तब उसने रावणको अपने नगरमें लेजा कर उसको कारागृहमें रक्खा। (३८) पुलस्ति मुनिने रावणका वन्धन सुनकर स्नेहसे व्याकुल हो माहिष्मती पुरीमें जाकर रावणको छोड़ा दिया।

(३९ सर्ग) रावणने दक्षिण समुद्रके तीरपर सन्ध्योपासनमें तत्पर वालीको देखा। वह पुष्पक विमानसे उतर वालीको पकड़नेके लिये चला। वालीने रावणको देख लिया। वह झपट कर उसको पकड़ और कांखमें दाब आकाशमें उड़ा और उसको कक्षमें लिए हुए, क्रमसे चारों ओरके समुद्रोंमें जाकर सन्ध्यावन्दन करके अपनी नगरी किष्किन्धामें पहुंचा। रावण बोला कि हे वानरेन्द्र मैं युद्धकी इच्छासे यहां आया था, सो तुम्हारे हाथसे पकड़ा गया। मैंने तुम्हारा बल देखा अब मैं तुम्हारे साथ मैत्री करना चाहता हूं। वाली और रावण अग्निको प्रज्वलित कर भाई पनेको प्राप्त हो, गले २ मिले। रावण १ मास वहां रहा, तदनन्तर रावणके मन्त्री उसको लिवा गए।

(४० सर्ग) अगस्त्य मुनिने रामचन्द्रसे हनूमानके जन्मकी कथा कही। (४१) इसके पश्चात् मुनि बोले कि जब हनूमान अनेक वरोंसे बल प्राप्त कर निर्भय हो ऋषियोंके आश्रमोंमें जाकर उपद्रव करने लगे, तब भृगु आदि महर्षियोंने उनको शाप दिया कि हे वानर! तुम्हारा बल तुमको बहुत कालपर स्मरण होगा और जब कोई तुम्हें स्मरण करावेगा और तुम्हारी कीर्तिका वर्णन करेगा तब तुम्हारा बल वृद्धिको प्राप्त होगा।

(४३ सर्ग) अगस्त्य मुनि वाली और सुग्रीवकी उत्पत्तिकी कथा कहने लगे कि सुमेरु पर्वतपर ब्रह्माकी सभा है। किसी समय उस सभा में ब्रह्मा योगाभ्यास: कर रहे थे कि उनके नेत्रोंसे जल बहा। उन्होंने हाथसे पोंछ कर उसको भूमिपर फेंक दिया, उससे एक वानर उत्पन्न हुआ। वह ब्रह्माकी आज्ञासे सुमेरुके जंगलमें रहने लगा। किसी समय वह वानर मेरुके उत्तर शिखरपर एक सरोवरके जलमें अपना प्रतिविम्ब देख उसको अपना शत्रुजान उछलकर पानीमें जा रहा और फिर वहांसे कूदकर ऊपर आया। उसी क्षण वह वानर सुन्दर स्त्री हो गया। इतनेमें ब्रह्माके चरणोंकी उपासना कर इन्द्र उसी मार्गसे लौटे चले आते थे और उसी क्षणमें सूर्य्यकी भी दृष्टि उस स्त्री पर जा पड़ी। दोनों देवता उस नारीको देखकर काम वस हो गए। इन्द्र तो उस नारीतक पहुंचते २ बीचहीमें स्खलित हो गए और इनका वीर्य उस स्त्रीके वालों-पर गिरा, उससे जो बालक उत्पन्न हुआ उसका नाम वाली हुआ। और सूर्य्यका वीर्य उस सुन्दरीके गलेपर स्खलित हुआ, जिससे सुग्रीव नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। इन्द्रने वालीको सुवर्णकी माला देकर स्वर्गका मार्ग लिया और सूर्य्य अपने पुत्रके कार्योंमें हनूमानको अग्रगण्य कर आकाशमें उड़ गए। रात्रि बीतने पर फिर वह स्त्री ज्योंकी त्यों वानर रूप हो गई। ऋक्ष राज वानर अपना रूप पाकर अपने दोनों पुत्रोंको लिए हुए ब्रह्माके पास आया। ब्रह्माकी

आज्ञासे देवदूतने ऋक्षराजका साथ ले किष्किन्धामें प्रवेश किया और गुहामें प्रवेश कर इसको राजतिलक दिया।

(५२ सर्ग) किसी समय सीताने रामचन्द्रसे कहा कि मैं तपोवनको देखना चाहती हूं। और गंगातटके निवासी ऋषियोंके चरणमूलोंमें रहनेकी इच्छा करती हूं। प्रभु बोले कि वैदेही मैं अवश्य तपोवनमें तुझे भेजूंगा। (५३) एक दिन रामचन्द्रने अपनी सभामें भद्र नामक दूतसे पूछा कि आज कल पुरवासी लोग हम लोगोंके विषयमें क्या कहते हैं। भद्र बोला कि सर्वत्र यही बात फैल रही है कि श्रीराघव रावणको मार जो सीताको फिर अपने घर लाए यह बात अच्छी नहीं है।

(५५ सर्ग) रामचन्द्रने लक्ष्मणसे कहा कि कल तुम प्रातःकाल सीताको रथ पर चढ़ा कर गंगाके उसपार महर्षि वाल्मीकिके आश्रमपर छोड़ आओ। (५६) रात वीतनेपर लक्ष्मण सीताको रथपर चढ़ाकर चले। सुमन्त्रने रथ चलाया। दूसरे दिन मध्याह्नमें भागिरथीके तीर पर रथ पहुंचा। लक्ष्मण रथ और सुमन्त्रको इसीपार रख सीता सहित नावपर चढ़ गंगाके उस पार पहुँचे। उन्होंने अत्यन्त दीन होकर कहा कि हे वैदेही! पुरवासियोंके अपवादके डरसे रामचन्द्रने आपका त्याग कर दिया। यहां वाल्मीकि मुनिका तपोवन है। आप इन्हीकी चरण छाया में रह कर निवास करिए। (५८) लक्ष्मण सीताको छोड गङ्गा पार हो रथ पर चढ अयोध्याको चले।

(५९ सर्ग) मुनियोंके वालकोंसे यह समाचार सुनकर वाल्मीकि मुनि सीताके पास गए। मुनिने सीताको अपने आश्रम पर लाकर मुनियोंकी पत्नियोंके हाथमें सौंप दिया। (६२) लक्ष्मण दूसरे दिन मध्याह्न कालमें अयोध्या पहुंच गए।

(७३ सर्गसे ८३ सर्ग तक) एक दिन यमुना तीरके निवासी ऋषिगण आकर रामचन्द्रसे वोले कि मधुका पुत्र लवण भगवान रुद्रके शूलके प्रभावसे और अपने दुराचारसे तीनों लोकोंको विशेष करके तपास्वियोंको सन्ताप दे रहा है। उसका निवास मधुवनमें है। रामचन्द्रने शत्रुघ्नको युद्धमें तत्पर देख उनको मधुपुरका अभिषेक कर दिया। शत्रुघ्न सेनाको यात्रा करवा कर एक महीना अयोध्यामें रहे, तदनन्तर अकेले चले और तीसरे दिन वाल्मीकिके आश्रममें पहुँच गए। उसी श्रावण मासकी रात्रिमें सीताको लव और कुश दो पुत्र उत्पन्न हुए। उस समाचारको पाकर शत्रुघ्न सीताकी पर्णशालामें गए और वोले कि हे मातः! यह वडे ही आनन्दकी बात हुई। प्रातःकाल शत्रुघ्न पश्चिमाभिमुख चल निकले और सप्त रात्रि मार्गमें निवास कर यमुनाके तीर पर पहुंचे। दूसरे दिन शत्रुघ्नने लवणासुरको मारा और उसी श्रावण मासमें उस पुरीके वसानेका काम आरम्भ किया। जब वारहवें वर्षमें पुरी अच्छी भांतिसे वस गई, तव शत्रुघ्नकी वुद्धिमें ऐसा आया कि अव चलकर रामचन्द्रके चरणोंको देखूं। (यह कथा पहले खण्डमें मथुराके प्रकरणमें विस्तारसे लिखी गई है)

(८४ सर्ग) शत्रुघ्न थोडे से मनुष्यों और १०० रथोंको साथ ले अयोध्याको चले और मार्गमें सात आठ टिकान टिककर वाल्मीकि मुनिके आश्रममें पहुंचे। (८५) वह प्रातःकाल प्रस्थान कर अयोध्यामें आए और सात दिन अयोध्यामें रहकर रामचन्द्रसे विदा हो, अपनी पुरीको गए।

(९६ सर्ग) रामचन्द्रने लक्ष्मण और भरतसे कहा कि मैं राजसूय यज्ञ करना चाहता हूं भरत बोले कि यह यज्ञ करनेसे पृथ्वीके राजाओंका विनाश होगा, ऐसा करना आपको उचित

नहीं है। यह सुन रामचन्द्रने अति प्रसन्न हो, इस अभिप्रायसे अपने मनको हटा लिया। (९७) लक्ष्मण बोले कि हे रघुनन्दन अश्वमेध यज्ञ सब पापोंका नाश करने वाला है यदि आप करना चाहे तो करिए। (१०४) रामचन्द्रने लक्ष्मणसे कहा कि हे भद्र गोमती के तीर नैमिष वनमें यह यज्ञ होगा। वहां स्थानके प्रवन्धके लिये भृत्योंको कहो। सबको निमन्त्रण दिया जाय। भरत आगे चले और दीक्षाके लिये सुवर्णकी सीता बनवाकर लेते चले। इसके उपरांत जब शत्रुघ्न भी आगए, तब भरत और शत्रुघ्न दोनों सब सामग्रियोंको लेकर चले। सुग्रीव और विभीषणभी आ पहुंचे। (१०५) लक्ष्मणकी रक्षामें काला घोडा छोडा गया। रामचन्द्र सेना सहित नैमिष क्षेत्रमें पहुच अद्भुत मण्डपको देख अति प्रसन्न हुए। बड़े धूमधाम के साथ यज्ञ प्रारम्भ हुआ।

(१०६ सर्ग) यज्ञमें महर्षि वाल्मीकि शिष्योंके सहित प्राप्त हुए कुश और लव अपने शिष्योंसे बोले कि तुम यज्ञमें जाकर सम्पूर्ण रामायण सुनाओ, यदि रामचन्द्र तुमको बुलावें और सुनना चाहें, तो तुम जाना और एक दिनमें मधुर वाणीसे २० सर्ग गान करना। (१०७) मैथिलीके दोनों पुत्र ऋषिके वचनानुसार गान करने लगे। इस बातको सुन रामचन्द्रको बडा कौतूहल उत्पन्न हुआ। उन्होंने यज्ञके कर्मोंसे अवकाश पाकर दोनों लडकोंको बुलाया। वे दोनों गाने लगे। उन्होंने मध्याह्न पर्यन्त वीस सर्ग गाकर समाप्त किया। रामचन्द्रकी आज्ञासे भरत १८ सहस्र सुवर्ण मुद्रा लाकर पृथक् पृथक् दोनोंको देने लगे। वे बोले कि हम वनवासी हैं, हमको इससे क्या प्रयोजन। रामचन्द्रके पूछने पर लव और कुश बोले कि इस काव्यके कर्ता भगवान वाल्मीकि आपके यज्ञके पासही हैं। इस ग्रन्थमें २४ सहस्र श्लोक हैं और इसमें सब आपहीका चरित्र है। यदि आप सुना चाहें तो कर्मोंसे जब जब अवकाश हो, तब तब सुनिए। रामचन्द्र बोले बहुत अच्छा। (१०८) संगीत सुनते सुनते जब रामचन्द्रने जाना कि ये दोनों सीताहीके पुत्र हैं। तब दूतोंको बुलाकर आज्ञा दी, कि तुम महामुनि वाल्मीकिके पास जाकर कहो कि यदि सीता शुद्ध चरित्र हो तो कल प्रातःकाल सभाके मध्यमें अपनी शुद्धिके निमित्त शपथ करे। दूतोंके वचन सुन मुनि बोले कि बहुत अच्छा, सीता वैसाही करेगी।

(१०९ सर्ग) रात बीतनेपर भगवान् वाल्मीकि सीताको साथ ले सभामें आ पहुँचे और रघुनन्दनसे बोले कि सीता अपनी शुद्धताका परिचय देना चाहती है और ये दोनों बालक सीताहीके हैं। हे रामचन्द्र मैं शपथपूर्वक कहता हूँ कि सीता पापरहित हैं। वैदेही उस मण्डलीके बीचमें काषाय वस्त्र पहने हुई, हाथ जोड़ नीचा मुख करके बोली कि यदि मैं राघवसे अन्य पुरुषको मनसे भी चिन्तन न करती होऊं, तो पृथ्वी! मुझे अपने भीतर पैठनेके लिये बिबर दे। इतनेमें पृथ्वी फटगई, उसमेंसे एक अद्भुत सिंहासन प्रकट हुआ, उसपर मूर्त्तिमान पृथ्वी देवी बैठी थी, उन्होंने दोनों भुजाओंसे सीताको थाम्ह सिंहासनपर बैठा लिया, और सिंहासन पातालमें घुस चला।

(११२ सर्ग) जब सीता भूतलमें प्रवेश करगई, तब यज्ञकी समाप्तिमें महाराज अत्यन्त उदास होगए और सबको विदा देकर अयोध्या चले गए। महाराजने दूसरी भार्य्या न की। उनके किये हुए, सम्पूर्ण यज्ञोंमें सुवर्णकी जानकी बनाई गई थी। बहुत कालके अनन्तर रामचन्द्रकी माता कालधर्मको प्राप्त हुई। उसके पीछे सुमित्रा और कैकेयी भी स्वर्ग-वासिनी हुई और सबके सब महाराज दशरथसे जा मिलीं।

(११३ सर्ग) भरतके मातुल युधाजितने अपने गुरुद्वारा रामचन्द्रके पास सन्देशा भेज कि सिन्धु नदीके दोनों तटपर गन्धर्व लोगोंका देश है, मैं चाहता हूँ कि आप इनको जीतकर वह देश अपने अधिकारमें लाइए, क्यों कि यह देश मेरे देशके पासही है। ऐसा सुन रामचन्द्रने भरतको सेना सहित जानेकी आज्ञा दी और भरतके दोनों पुत्र तक्ष और पुष्कल-को वहांके लिये राज्याभिषेक कर दिया। भरत यात्रा करके पन्द्रह टिकानके पीछे कैकय नरेशकी राजधानीमें पहुँचे।

(११४ सर्ग) कैकयनरेश और भरत दोनोंकी सेना गन्धर्वोंपर चढ दौडी। भयंकर युद्धके पीछे भरतने गन्धर्वोंको जीतकर उस गान्धार देशमें तक्षशिला और पुष्कलावती नामक दो पुरीको बसाया और तक्षशिलामें अपने पुत्र तक्षको और पुष्कलावतीमें पुष्कलको स्थापन किया भरत ५ वर्षतक वहां निवास कर अयोध्यामें चले आए।

(११५ सर्ग) रामचन्द्रने लक्ष्मणके पुत्र अंगदके लिये कारूपथ देशमें अंगदपुरी और चन्द्रकेतुके लिये मल्लभूमिमें चन्द्रकान्तापुरी बसाकर दोनोंका अभिषेक कर दिया और अंगदको पश्चिम भूमिमें और चन्द्रकेतुको उत्तर भूमिमें प्रस्थान करवा दिया। राज्यशासन करते महा-राजको दश सहस्र वर्ष बीत गए।

(११६ सर्ग) कुछ काल बीतनेपर काल तपस्वी रूप धारण करके रामचन्द्रके पास आया और बोला कि मैं एक सन्देशको एकान्तमें कहनाचाहता हूं पर हम दोनोंके बातमें यदि तीसरा सुने वा देखेगा, तो वह आपका वध्य होगा। महाराजने इस बातको अंगीकार कर लक्ष्मणसे कहा कि तुम द्वारपर खडे रहो हम दोनोंको बतियाते कोई देखने वा सुनने न पावे। लक्ष्मण द्वारपर खडे हुए।

(११७ सर्ग) काल बोला कि मैं ब्रह्माका भेजा हुआ हूं। काल मेरा नाम है। ब्रह्माने कहा है कि ग्यारह सहस्र वर्ष पर्यन्त भूतलपर रहनेका आपका संकल्प पूर्ण होचुका। इस बातकी सूचनाके लिये मैं यह दूत भेजता हूं। रामचन्द्र बोले बहुत अच्छा।

(११८ सर्ग) तापस और रामचन्द्रकी बातचीत होही रही थी कि दुर्वासा ऋषि आकर द्वारपर उपस्थित हुए और लक्ष्मणसे बोले कि इसी क्षणमें रामचन्द्रको मुझे देखलाओ, नहीं तो मैं तुम्हारे देश, पुर और राम आदिको भी शाप देऊंगा। लक्ष्मणने झटपट जाकर महाराजसे मुनिका आगमन जनाया। महाराजने कालको बिदाकर शीघ्र बाहर आकर मुनिका सत्कार किया। मुनिने भोजन कर अपने आश्रमको प्रस्थान किया।

(११९ सर्ग) रामचन्द्रने मन्त्री और पुरोहितोंको इकट्ठा कर लक्ष्मणके विषयकी सब बातें सुनाईं। वशिष्ठ मुनि बोले अब लक्ष्मणसे आपका वियोग होगा, आप इनका त्याग कर दीजिए रामचन्द्र लक्ष्मणसे बोले कि हे सौमित्रे! मैं तुम्हे इसलिये बिदा कराता हूं कि जिसमें धर्मकी बाधा न हो। साधु लोगोंने त्याग और वध दोनोंको तुल्यही कहा है। लक्ष्मणने सरयू तट-पर जाकर सब इन्द्रियोंको रोक श्वास बन्ध कर दिया। इन्द्र वहां आकर मनुष्य शरीरके सहित लक्ष्मणको उठाकर अमरावतीमें ले गए।

(१२० सर्ग) भरतके अनुमतीके अनुसार रामचन्द्रने अपने पुत्र कुशको कोशल देशोंका राज्य और लवको उत्तर भागके देशोंका राज्य दे दिया और शत्रुघ्नके पास दूतोंको भेजा।

(१२१ सर्ग) दूत मथुरा नगरीको चले और मार्गमें कहीं न टिक कर तीन रात्रि दिनमें वहां जा पहुंचे। दूतोंने रामचन्द्रकी प्रतिज्ञा, पुत्रोंका अभिषेक, पुर वासियोंका महाराजके

साथ जानेका विचार, कुशके लिये विंध्य पर्वतके तट पर कुशावती और लवके लिये श्रावस्ती नगरियोंका बसाना, रामचन्द्र और भरतका अयोध्या नगरीको निर्जन कर स्वर्ग जानेके लिये उद्योग करना, यह सब समाचार शत्रुघ्नसे कह सुनाया और कहा कि अब शीघ्रता कीजिए। शत्रुघ्नने सुबाहु और शत्रुघाती अपने दोनों पुत्रोंको सेना और धनका दो विभाग करके बांट दिया और एक रथ पर चढ़ अयोध्यामें आकर महाराजका दर्शन किया।

इतनेमें सुग्रीवको आगे किए हुए वानर, भालु और राक्षसोंके झूंडके झूंड आ पहुंचे। सुग्रीव बोले कि हे वीर मैं अंगदको राज्य दे आपके अनुगामी होनेको आया हूं। तदनन्तर रामचन्द्रने विभीषणसे कहा कि हे राक्षसेन्द्र! जब तक यह प्रजा गण है, तब तक तुम लंकामें राज्य करो, और यह इक्ष्वाकुवंशके इष्टदेव श्रीजगन्नाथ जो सर्वदा आराधनीय और इन्द्रादि देवोंके पूज्य हैं, इनका आराधना करते रहो। विभीषणने इस बचनका अंगीकार किया। तदनन्तर महाराज हनूमानसे बोले कि जब तक लोकमें मेरी कथाका प्रचार है, तब तक तुम आनन्द करो, और जाम्बवान, मयन्द और द्विविदसे बोले कि कलि तक तुम जीते रहो।

(१२२ सर्ग) श्रीरामचन्द्र भरत, शत्रुघ्न और पुरबासी आदि सब लोगोंके साथ सरयूकी ओर चले। (१२३) और २ कोस चलकर सरयू तीर पहुंचे। रामचन्द्र अपने पैरोहीसे सरयूके जलमें चले। उस समय ब्रह्मा आकाशसे बोले कि हे विष्णु! आप अपने भाइयोंके साथ आइए और अपने शरीरमें प्रवेश कीजिए। ऐसी पितामहकी स्तुति सुन महाराजने सशरीर अपने दोनो भाइयोंको लिए हुए, वैष्णव तेजमें प्रवेश किया। वानर और भालू जिन जिन देवतोंसे निकले थे, उन उनमें लीन हो गए। सुग्रीव सूर्य्य मण्डलमें प्रवेश कर गए। रामचन्द्रके अनुगामी लोग गोप्रतार तीर्थमें पहुंच सरयू नदीमें पैठ गए और मनुष्य देह त्याग दिव्य शरीर धारण कर विमानों पर जा चढ़े। स्थावर जंगम जितने जीव थे, वे सब सरयू-जलके स्पर्शसे स्वर्ग गामी हुए। ऋक्ष, वानर और राक्षस ये लोग स्वर्गमें घुस गए, इनके शरीर सरयूमें रह गए।

संक्षिप्त अध्यात्म रामायण—(ब्रह्माण्डपुराण—आदि काण्ड) (दूसरा अध्याय) पूर्व समय ब्रह्माने पृथ्वी और देवताओंके सहित क्षीर समुद्रके निकट जाकर विष्णु भगवान्से निवेदन किया कि हे प्रभो! रावणके अत्याचारसे जगत पीड़ित हो रहा है, तुम मनुष्य शरीर धारण करके उसका बिनाश करो। भगवानने कहा कि कश्यप अयोध्यामें राजा दशरथ हुआ है, मैं चार अंशसे उनका पुत्र होऊंगा। देवता लोग अपने अपने अंशसे भूतलमें जाकर वानरका शरीर धारण करें।

(तीसरा अध्याय) सूर्यवंशी राजा दिलीपका पौत्र और राजा अजका पुत्र दशरथ अयोध्यामें राज्य करता था। राजाने पुत्रेष्टि यज्ञ किया। अग्निने प्रकट होकर उसको पायस दिया। दशरथने पायसका आधा भाग अपनी स्त्री कौशल्याको और आधा भाग कैकेयीको दे दिया। सुमित्राके मांगने पर दोनों रानियोंने अपने अपने भागोंमेंसे आधा आधा भाग उसको दिया। तीनों रानियोंने पायस भोजन करके गर्भ धारण किया। दश मास पूर्ण होनेपर चैत्र मास शुक्ल पक्ष—नौमी तिथि पुनर्वसु नक्षत्र मध्याह्न कालमें कौशल्याके गर्भसे रामचन्द्रका जन्म हुआ। इधर कैकेयीके गर्भसे भरत और सुमित्रासे लक्ष्मण और शत्रुघ्नका जन्म हुआ।

(चौथा अध्याय) महर्षि विश्वामित्रने अयोध्यामें आकर अपनी यज्ञरक्षाके लिये राजा दशरथसे राम और लक्ष्मणको मांगा राजाने वशिष्ठ मुनिके समझानेपर अपने दोनों पुत्र विश्वा

मित्रको दे दिए। विश्वामित्र राम और लक्ष्मण सहित गंगापार होकर ताड़का-वनमें उपस्थित हुए। रामचन्द्रने ताड़का राक्षसीको मारा। (५ वां अध्याय) विश्वामित्र कामाश्रम वनमें एक रात्रि निवास करके प्रातःकाल प्रस्थान कर अपने सिद्धाश्रममें पहुंचे। विश्वामित्रके यज्ञ विध्वंस करनेके लिये मारीच और सुवाहु राक्षस आए। रामचन्द्रने एक वाणसे मारीचको शत योजन दूर समुद्र तीर फेंक दिया और दूसरे वाणसे सुवाहुको मारडाला। महर्षि विश्वामित्रने तीन रात्रि अपने आश्रममें निवास कर चौथे दिन विदेह नगरमें जनकके यज्ञ देखनेके लिये प्रस्थान किया। वे राम लक्ष्मण और मुनिगणोंके सहित अपने आश्रमको छोड़ गङ्गाके समीपवर्त्ती गौतमके आश्रममें पहुंचे, जहां गौतमकी पत्नी अहिल्या सहस्रों वर्षसे अपने पतिके शापसे अदृश्य शिलारूप होकर वायुभक्षण करके रहती थी। रामचन्द्रके चरण स्पर्शसे उसका शाप मोचन होगया। (६ वां अध्याय) इसके पश्चात् विश्वामित्र राम और लक्ष्मणके सहित नौका द्वारा गङ्गापार हुए। प्रातःकाल वे लोग विदेहनगरमें पहुंचे। राजा जनक विश्वामित्रसे आ मिले। विश्वामित्र वोले हे राजन्! तुम रामचन्द्रको माहेश्वर धनुप दिखाओ। राजा की आज्ञा पाकर पञ्चसहस्र वलवान् वाहकोंने शिव धनुपको लाकर सभामें उपस्थित कर दिया। रामचन्द्रने धनुपको वाम हाथसे उठाकर तोड़डाला। सीताने रामके गलेमें स्वर्णमाला पहिनाया। राजा जनकके दूत अयोध्यामें गए। राजा दशरथ शुभ समाचार पाकर चतुरंगिनी सेना सहित जनकपुरमें आए। जहां रामचन्द्रका विवाह सीतासे लक्ष्मणका विवाह जनककी पुत्री उर्मिलासे भरतका विवाह जनकके भ्राताकी पुत्री माण्डवीसे और शत्रुघ्नका विवाह माण्डवीकी वहिन श्रुतिकीर्तिसे हुआ। राजा दशरथ वरातके सहित जनकपुरसे विदा हुए। (७ वां अध्याय) जव वह जनकपुरसे तीन योजनपर आए, तव परशुराम आकर रामचन्द्रसे मिले और परास्त होकर अपने आश्रमको चले गए। वरात अयोध्यामें पहुंची।

कुछ काल वीतनेपर भरतके मामा युधाजित् अयोध्यामें आकर भरत और शत्रुघ्नको अपने घर ले गए।

(अयोध्याकाण्ड दूसरा अध्याय) राजा दशरथ रामचन्द्रके अभिषेकका विधान करने लगे। देवताओंने रामाभिषेकमें विघ्न डालनेके लिये सरस्वतीको भेजा। सरस्वतीने अयोध्यामें जाकर मंथरा और कैकेयीकी मतिको फेर दिया। मंथराकी प्रेरणासे कैकेयी कोपभवनमें जा पड़ी। (३) जव रात्रिके समय राजा दशरथ कैकेयीके गृहमें गए, तव उसने उनसे दो वरदान मांगे एक तो यह कि भरतका राज्याभिषेक हो और दूसरा यह कि रामचन्द्र मुनिवेष धारण करके १४ वर्ष पर्यन्त दण्डकारण्यमें निवास करें। ऐसा सुन राजा शोकाकुल होगए। रामचन्द्रके आनेपर कैकेयीने उनसे वरदानका वृत्तान्त कह सुनाया। (४) लक्ष्मण और सीता रामचन्द्रके सहित वनमें जानेके लिये तय्यार हुए। (५) राजाकी आज्ञासे मंत्री सुमन्त्र रथ ले आया।

रामचन्द्रने लक्ष्मण और सीताके सहित कैकेयीके दिए हुए, मुनि वस्त्रोंको पहन कर रथारूढ हो अयोध्यासे प्रस्थान किया। वे लोग पहली रात तमसानदीके तीर और दूसरी रात शृंगवेरपुरमें गंगा तीर निवास किया। (६) वहां रामचन्द्रका मित्र गुह नामक निपाद-राज आ मिला। प्रातःकाल होनेपर गुहने तीनोंको पार उतारा। वे लोग भरद्वाजके आश्रममें गए और रात्रिमें वहां निवास कर प्रातःकाल मुनि-कुमार कृत भेलक द्वारा यमुना पार हुए। रामचन्द्र

लक्ष्मण और सीताके सहित चित्रकूटके निकट महर्षि वाल्मीकके आश्रममें पहुंचे। महर्षिने पर्वत और मन्दाकिनी नदीके मध्यमें इनके रहनेका स्थान बतलाया। जानकी और लक्ष्मणके सहित श्रीरामचन्द्र वहां २ शाला बनाकर निवास करने लगे।

(७ वां अध्याय) इधर सुमन्त्र शृंगवेरपुरसे अयोध्या लौट आया। राजा दशरथने रामचन्द्रके वियोगसे प्राण त्याग कर स्वर्गको प्रस्थान किया। दूतगण भरत और शत्रुघ्नको उनके मामाके गृहसे अयोध्यामें लिवा लाए। भरतने यथा विधि पितृ- कार्यका निर्वाह किया (८) इसके पश्चात् वह अपनी सेना, मन्त्री और मातृगणोंके सहित रामचन्द्रके पास वनको चले और गङ्गाके निकट शृङ्गवेरपुरमें पहुंचे। गुहने प्रातःकाल होने पर ५०० नौकाओं द्वारा भरतकी सेनाको पार उतारा। भरत वहांसे प्रस्थान कर भरद्वाजके आश्रममें पहुंचे। महर्षिने कामधेनुके प्रभावसे भरतकी सेनाका अलौकिक अतिथि सत्कार किया। प्रातःकाल होने पर भरत वहांसे प्रस्थान कर चित्रकूट पहुंचे, वहांके मुनियोंने दिखाया कि पर्वतके पश्चात् भागमें मन्दाकिनीके उत्तर तीर पर रामचन्द्रका आश्रम देखपडता है। (९) भरत रामचन्द्रसे जा मिले। श्रीरामचन्द्र राजा दशरथकी मृत्यु सुनकर शोकाकुल हुए। जब रामचन्द्र राज्याभिषेक करानेमें सम्मत नहीं हुए तब भरत उनकी पादुकाओंको लेकर अयोध्या लौट आए, और नन्दी ग्राममें दोनों पादुकाओंको सिंहासन पर स्थापित कर शत्रुघ्न सहित फल मूल भोजन करके मुनिवेषसे निवास करने लगे।

रामचन्द्र कुछ काल चित्रकूट पर्वत पर निवास करके सीता और लक्ष्मणके सहित अत्रि मुनिके आश्रममें आए। मुनिकी पत्नी अनसूयाने सीताको अपने दो कुण्डल और दो वस्त्र दिए।

(अरण्यकाण्ड—प्रथम अध्याय) प्रातःकाल होने पर श्रीरामचन्द्र सीता और लक्ष्मणके सहित महर्षि अत्रिके आश्रमसे चल कर एक कोस दूर महतीनदीके तीर पहुंचे। अत्रि मुनिके शिष्योंने इनको नौका द्वारा पार उतारा। वे लोग राक्षसोंकी लीला भूमि लोमहर्षण अरण्य में उपस्थित हुए। इसके उपरांत रामचन्द्रने विराध राक्षसको मारा। (२ अध्याय) महर्षि शरभंग रामचन्द्रको अपने आश्रममें लेगए, और इनके दर्शनसे कृतार्थ होकर अपने शरीरको चितामें भस्म कर परधामको प्राप्त हुए। रामचन्द्रने सीता और लक्ष्मण सहित कई एक वर्ष वहां निवास किया। इसी प्रकारसे वह क्रम क्रमसे ऋषियोंके आश्रममें भ्रमण करते हुए, अगस्त्यके शिष्य सुतीक्ष्ण मुनिके आश्रममें गए। (३) और प्रभात होने पर सुतीक्ष्ण, सीता और लक्ष्मणके सहित प्रस्थान करके अगस्त्यके भ्राताके आश्रममें पहुंचे। वे लोग दूसरे दिन वहांसे चलकर महर्षि अगस्त्यके आश्रममें गए। महर्षिने रामचन्द्रको अक्षय धनुष, तूणीर, बाण और खड्ग दिए। मुनि बोले कि हे राम ! यहांसे दो योजन दूर गोदावरीके तट पर पंचवटी स्थान है, तुम वहां जाकर निवास करो।

(४) रामचन्द्र पंचवटीमें गए। मार्गमें गृध्र जटायुसे मित्रता हुई। लक्ष्मणने गोदावरी नदीके उत्तर तटमें निवास गृह बनाया, उसमें वे लोग रहने लगे। (५) लक्ष्मणने कामातुर शूर्पणखा राक्षसीके दोनों नाक और कानोंको खड्गसे काटडाला। शूर्पणखाकी प्रेरणासे खर नामक राक्षस १४ सहस्र सेना सहित रामचन्द्रके पास आया। लक्ष्मण सीताके सहित पर्वतकी गुहामें चले गए, और रामचन्द्रने आधे प्रहरमें सपूर्ण राक्षसोंको मारडाला। शूर्पणखाने रावणके-

पास लंकामें जाकर सब वृत्तांत कह सुनाया। (६) रावण मारीचको जनस्थानमें ले आया। मारीच सुवर्णमय विचित्र मृग बनकर सीताके सन्मुख दौड़ने लगा। (७) रामचन्द्रकी आज्ञासे सीताने अपनी छाया कुटीमें छोड़कर अग्निमें प्रवेश किया। मायाकी सीता रामचन्द्रसे बोली कि हे प्रभो! तुम इस मृगको मुझे ला दो। रामचन्द्र मृगके पीछे दौड़े, मृग उनको बहुत दूर ले गया। रामने मृगको बाणसे मारा। मारीच मरनेके समय रामके सदृश शब्दसे बोला कि हे लक्ष्मण! शीघ्र हमारी रक्षा करो। जब सीताने लक्ष्मणको अनेक दुर्वचन कहे, तब वह आश्रममें सीताको छोड़कर रामके समीप गए। रावण भिक्षुक वेषसे सीताके समीप गया, और उनको रथमें बैठाकर ले चला। सीताका रोदन सुन पक्षीराज जटायु आया, उसने रावणका रथ चूर्ण कर डाला। रावण खड्गसे जटायुके दोनों चरण काट सीताको लेकर चल दिया। सीताने मार्गमें पर्वतके ऊपर ५ वानरोंको देखकर अपना आभरण गिरा दिया। रावणने लंकामें जाकर अपने अन्तःपुर-वर्त्ती अशोक-वाटिकामें सीताको रक्खा, राक्षसियां उनकी रक्षा करने लगीं।

(८ वां अध्याय) रामचन्द्रने जब लक्ष्मणके सहित निज आश्रममें आकर सीताको नहीं पाया, तब वह विलाप करते हुए, सीताको ढूँढने लगे। उन्होंने कुछ दूर जाकर जटायुको देखा, उसने कहा कि हे रामचन्द्र। रावण मुझको परास्त कर सीताको दक्षिण दिशामें ले गया है। पक्षीराज ऐसा कह शरीर छोड़ वैकुंठको गया। (९) रामचन्द्र सीताको खोजते हुए, वनान्तरमें लक्ष्मण सहित गमन करने लगे उनको भयंकर वनमें कबन्ध राक्षस मिला। दोनों भाइयोंने उसकी एक एक भुजाको काट डाला। (१०) कबन्धने कहा कि हे रघुनन्दन। सन्मुखवर्त्ती आश्रममें शबरी तपस्विनी निवास करती है, तुम उसके समीप जाओ, वह तुमसे सीताके मिलनेका उपाय बतलावेगी। कबन्ध, जो पूर्व जन्ममें गन्धर्व था, वैकुंठको गया। लक्ष्मणके सहित रामचन्द्र शबरीके आश्रममें गए। शबरीने उनका अतिथिसत्कार किया। रामके पूछने पर शबरीने कहा कि हे भगवन्! रावण सीताको लंकामें लेगया है। यहांसे थोड़ी दूर पंपासरोवर है, जिसके निकट ऋष्यमूक पर्वत पर ४ मन्त्रियोंके सहित सुग्रीव निवास करता है, तुम वहां जाकर सुग्रीवसे मित्रता करो, वह आपका कार्य पूर्ण करेगा। ऐसा कह शबरीने अग्निमें प्रवेश करके मुक्ति लाभकी।

किष्किन्धाकाण्ड—(प्रथम अध्याय) रामचन्द्र धीरे धीरे पंपासरोवरके समीप गए, वह एक कोस विस्तीर्ण था। राम और लक्ष्मण वनकी शोभा देखते हुए, ऋष्यमूकके निकट गए। सुग्रीवने उनको देख भयभीत होकर हनूमान्को उनके समीप भेजा हनूमान बटुरूप धारण कर उनसे अनेक वार्त्ता करनेके पश्चात् दोनोंको अपने कन्धो पर चढ़ा कर सुग्रीवके निकट ले आए। सुग्रीवने जानकीके आभरणोंको, जो उनको मिले थे, गुहासे लाकर रामचन्द्रको दिया और प्रतिज्ञाकी कि मैं रावणको मार कर सीताका उद्धार करूंगा। रामचन्द्र और सुग्रीवने अग्निकी साक्षी देकर परस्पर मित्रताकी। सुग्रीवने कहा कि हे रामचन्द्र! दुन्दुभी दैत्यका यह पर्वताकार मस्तक पड़ा है, जिसको वालीने मारा था। यदि इसको तुम तोड़ दो तो मुझको विश्वास होगा कि तुम वालीको मारोगे। रामचन्द्रने शीघ्र अपने अंगूठेसे मार उसको दश योजन दूर फेंक दिया। फिर सुग्रीव बोला कि हे रघुवर! यह तालके ७ वृक्ष हैं, बाली एक एक करके इनको हिला कर बिना पत्तेका कर देता था, तुम यदि एक बाणसे इनको बिद्ध करो तब मुझको निश्चय

होगा कि तुम वालीको मारोगे। रामचन्द्रने एक बाणसे सातों वृक्षोंको विद्ध किया, तब सुग्रीवको निश्चय विश्वास हुआ कि यह बालीका वध करेंगे।

(दूसरा अध्याय) रामकी आज्ञासे सुग्रीव किष्किन्धाके उपवनमें जाकर गर्जा। बाली आकर उससे युद्ध करने लगा। रामचन्द्रने दोनों वानरोंका एकही समान रूप देख कर सुग्रीवके वधकी शंकासे बाली पर बाण नहीं छोड़ा। सुग्रीव रक्त बमन करता हुआ, भयाकुल हो भाग गया। लक्ष्मणने चिन्हानीके लिये सुग्रीवके गलेमें पुष्पमाला पहना दी। सुग्रीवने फिर जाकर बालीको ललकारा। बाली आकर फिर लड़ने लगा। रामचन्द्रने वृक्षकी ओटमें बैठ कर बालीके हृदयमें बाण मारा। बालीने रामचन्द्रसे अनेक बातें करके अपना शरीर छोड़ परमपदको पाया। (३) सुग्रीवने विधिवत बालीका प्रेतकर्म समाप्त किया। लक्ष्मणने रामकी आज्ञासे किष्किन्धामें जाकर सुग्रीवको राज्य दिया। बालीका पुत्र अंगद युवराज बनाया गया। लक्ष्मणके सहित श्रीरामचन्द्र प्रवर्षण पर्वतके अति विस्तृत शिखर पर जाकर एक सरोवरके निकट गुहामें निवास करने लगे।

(चौथा अध्याय) हनूमानने सुग्रीवकी आज्ञासे सातों द्वीपोंके वानरोंको लानेके लिये १० सहस्र वानरोंको भेजा। (५) कुछ समय बीतने पर राम लक्ष्मणसे बोले कि देखो शरद् काल उपस्थित हुआ, सुग्रीव सीताके खोजनेका उद्योग नहीं करता है सो तुम जाकर भय दिखलाके उसको ले आओ। लक्ष्मण किष्किन्धामें जाकर सुग्रीवको ले आए। (६) सुग्रीवने सब दिशाओंमें बिविध वानर गणोंको भेज कर दक्षिण दिशामें अंगद जाम्बवान, हनूमान, नल, सुषेण, शरभ, मयंद और द्विविदको भेजा। रामचन्द्रने सीताकी चिन्हानीके लिये हनूमानको अपने नामाक्षरसे युक्त अंगूठी दी। वानरोंने वहांसे प्रस्थान कर महावनमें भ्रमण करते हुए, एक अँधेरी गुहा देखी उन्होंने जल पीनेके लिये उसमें प्रवेश किया। गुहाके भीतर बहुतेरे गृह, सुन्दर वाटिका, सरोवर और गन्धर्व पुत्री स्वयंप्रभा नामक तपस्विनी देखी। वे लोग पानी पीकर स्वयंप्रभाके प्रभावसे गुहाके बाहर निकले। उसी समय सीताके खोजनेके लिये जो एक मासकी अवधि थी, वह बीत गई। वानरगण सीताको ढूंढते हुए, दक्षिणसमुद्रके तीर महेन्द्र पर्वतके पादमूलमें उपस्थित हुए। वहां वे लोग मरनेके लिये संकल्प करके कुशोंके आसनपर बैठे। उसी समय सम्पाति नामक गृध्र वानरोंको देख गुहासे निकलकर बोला कि आज हमको पूरा आहार मिला। वानरगण बोले कि हम लोगोंका निरर्थक प्राण गया। जटायु धन्य था, जिसने रामके कार्यके लिये अपना प्राण दिया। सम्पातिने हर्षित हो वानरोंसे अपने भ्राता जटायुका वृत्तान्त पूछा, तब अंगदने सब कथा कह सुनाई। सम्पातिने कहा कि त्रिकूटगिरिके शिखरपर लंका नामक नगरी है। वहीं अशोकवाटिकामें राक्षसी गण सीताकी रक्षा करती हैं। यहांसे १०० योजन दूर समुद्रमें लंका है। (८) सम्पातिका नया पक्ष जम गया। (९) वह आकाश मार्गमें चला गया। जाम्बवानने लंका जानेके लिये हनुमानको सचेत किया।

सुन्दरकाण्ड–(प्रथम अध्याय) हनुमान उड़चले और मार्गमें देव-प्रेरित सुरसाको परास्त कर, मैनाक पर्वतको स्पर्श कर, और सिंघिका राक्षसीको मार समुद्र पार हो त्रिकूट गिरि शिखरपर स्थित हुए। जब कपिराज सूक्ष्म रूप धारण कर लंकामें प्रवेश करने लगे, तब लंकाकी अधिष्ठात्री देवीने राक्षसी वेष धारण कर उनको रोका। जब हनुमानने उसको परास्त किया, तब उसने प्रसन्न होकर हनुमानसे कहा कि अन्तःपुरके प्रमोद वनमें अशोक-

वाटिका है, उसके मध्यमें शिंशपा (सीसो) वृक्षके नीचे सीता रहती है। तुम लंकामें प्रवेश कर रामचन्द्रका कार्य करो।

(२ रा अध्याय) हनुमान निशाभागमें क्षुद्र वानर रूप धारण कर लंकाकी अशोक वाटिकामें गए। वह वहां जानकीको देखकर शिंशपावृक्षके सघन पल्लवमें लीन होकर बैठ रहे। उसी समय रावणने वहां आकर राक्षसियोंसे कहा कि दो मासके भीतर यदि सीता मुझे स्वीकार नहीं करेगी तो तुमलोग इसको मारकर हमारे भोजनके लिये पाक बना देना। जब रावण चला गया, (३) तब हनुमान धीरे २ रामचन्द्रकी कथा वर्णन करने लगे। सीता बोली कि प्रियभाषी व्यक्ति हमारे सन्मुख क्यों नहीं प्रगट होता है, तब हनुमानने आकर सीताको प्रणाम किया और रामचन्द्रसे वानरोंकी सङ्गतिकी कथा कह सुनाई। इसके पश्चात् उसने रामनामांकित मुद्रिका सीताको दी और उनसे अनेक वार्त्ता कर अपने जानेके लिये आज्ञा मांगी। सीताने चिन्हानीके लिये हनुमानको अपनी चूडामणि दी और जयन्तकी कथा कह सुनाई। हनुमानने सीतासे विदा हो, सीताके निकटके शिंशपा वृक्षको छोडकर अशोक वाटिकाका विनाश करडाला। राक्षसीगण रावणके निकट जाकर बोलीं कि एक प्राणीने वानर रूपसे सीतासे वार्त्ता करके अशोकवाटिकाको उजाड डाला और रक्षकोंको मार डाला। रावणने प्रथम वार दश कोटी राक्षस, दूसरी वार ५ सेनापति, तीसरी वार ७ मन्त्रिपुत्र चौथी वार अपने पुत्र अक्षको भेजा, हनुमान्ने सबोंको क्रम क्रमसे मारडाला, तब उसने बहुत राक्षसोंके सहित इन्द्रजीतको पठाया। वह हनूमानको ब्रह्मास्त्रसे मूर्च्छित करके बांधकर रावणके समीप लाया। रावणने एक राक्षससे कहा कि खण्ड खण्ड करके वानरको मार डालो। विभीषण बोला कि हे राजन्! दूतको मारना उचित नहीं है, इसको दूसरा दण्ड दो। तब रावणने राक्षसोंसे कहा कि तुमलोग इसकी पूंछमें वस्त्र लपेटकर आग लगा दो और सम्पूर्ण नगरमें फिराकर छोड दो। राक्षसगण इसीके अनुसार हनूमानको नगरमें घुमाने लगे। कपिराज जब पश्चिम द्वारपर गए, तब छोटा रूप धारण कर बन्धनसे मुक्त हुए। इसके उपरान्त उन्होंने क्रम क्रमसे समस्त लंका नगरीको भस्म कर दिया।

(५ वां अध्याय) हनूमान सीतासे आज्ञा लेकर समुद्र पार हो अङ्गदादि वानरोंसे आ मिले। सब वानर प्रस्रवण पर्वतकी ओर चले। वे सुग्रीवके मधुवनमें आकर रक्षकोंको मुष्टिकासे प्रहार कर फल खाने लगे। सुग्रीवके मामा दधिमुखने कपिराजके पास आकर वानरोंके उपद्रवकी वार्त्ता कह सुनाई। सुग्रीव बोले कि बिना सीताकी सुधि पाएहुए वानर लोग मधुवनके फल नहीं खाते उसी समय वानर गण आ गए। हनूमानने रामचन्द्रसे सीताका समाचार कह सुनाया।

लंकाकाण्ड–(प्रथम अध्याय) रामचन्द्रकी सेना विजय–मुहूर्तमें यात्रा करके दिन रात्रि चलने लगी और सह्याचल तथा मलयगिरिको अतिक्रम करके समुद्रके किनारे पहुंची रामचन्द्र हनूमानकी पीठसे उतरे। सेना विश्राम करने लगी।

(दूसरा अध्याय) लंकामें रावणने मन्त्रियोंसे पूछा कि अब क्या करना चाहिये? कुम्भकर्णने कहा कि हे राजन्! रामचन्द्र साक्षात् नारायण हैं तुमने अपने विनाशके लिये सीता हरण किया है। इन्द्रजीत बोला कि हे देव! तुम आज्ञा दो तो मैं राम लक्ष्मण और सुग्रीव आदि वानरोंको मारकर चला आऊं। विभीषणने कहा कि हे राजन्! इन्द्रजीत आदि कोई राक्षस–रण–भूमिमें रामके सन्मुख नहीं ठहर सकेंगे, सो तुम सीताको शीघ्र रामके सन्मुख

उपस्थित कर दो। रावण बोला कि यदि दूसरा कोई ऐसा कहता तो हम इसीक्षण उसका वध करते, तुम राक्षस कुलमें अधम हो, तुमको धिक्कार है।

(३ रा अध्याय) बिभीषण रावणको त्यागकर अपने ४ मन्त्रियोंके सहित समुद्र पार हो, रामचन्द्रके समीप आया। रामचन्द्रने बिभीषणको लंकाके राज्यपर अभिषिक्त किया। रामचन्द्रके क्रुद्ध होनेपर समुद्र प्रकट हुआ, और बोला कि हे रघुवर! विश्वकर्माके पुत्र नल वानरको वरदान मिला है, सो उसके बांधनेसे सेतु बनेगा। रामकी आज्ञासे नल वानर सेना-पतियों सहित पर्वत और वृक्षोंको लाकर सेतु बांधने लगा। (४) रामचन्द्रने सेतु आरम्भके समय लोक-हितके लिये रामेश्वर शिवको स्थापित किया। प्रथम दिन १४ योजन दूसरे दिन २० योजन तीसरे दिन २१ योजन चौथे दिन २२ योजन और पांचवें दिन २३ योजन. इस प्रकारसे १०० योजन सेतु बांधा गया। वानरी सेना सेतु द्वारा समुद्र पार हो, सुवेल पर्वतके पास पहुंची।

(५ वां अध्याय) रामचन्द्रकी सेनाने लंकापर आक्रमण किया। वानर और राक्षसोंका अद्भुत युद्ध होने लगा। जब राक्षसी सेना युद्धमें निहत होकर चतुर्थांश भाग शेष रह गई, तब मेघनादने आकाशमें अदृश्यहो ब्रह्मास्त्रसे असंख्य वानरोंका विनाश कर दिया। रामकी आज्ञासे हनूमान औषधि सहित द्रोण पर्वतको उठा लाए! औषधिसे वानर जीवित हुए। फिर हनुमान उस पर्वतको जहांसे लाए थे, वहां रख आए। (६) रावणने स्वयं संग्राममें आकर बहुतेरे वानरोंको निहतकर सुग्रीव आदि सेनापतियोंको मूर्छित कर दिया। इसके पश्चात् उसने बिभीषण पर शक्ति छोडी। लक्ष्मण बिभीषणके सन्मुख खडे हो गए, जब वह शक्तिकी चोटसे पृथ्वीमें गिर पड़े, तब रावण उनको उठाने लगा, परन्तु वह नहीं उठ सके। हनूमान अपनी मुष्टिका घातसे रावणको मूर्छित करके लक्ष्मणको रामके निकट उठा लाए। रामचन्द्रने कहा कि हे हनूमान! तुम पूर्वहीके समान फिर औषधि लाकर लक्ष्मण और वानरोंको जिला दो। यह समाचार पाकर रावणने कालनेमि राक्षसको भेजा। (७) राक्षसने हिमालयके निकट मायाका तपोवन बनाकर निवास किया। हनूमान अपने मार्गमें पिपासा युक्त हो, उसके आश्रममें गए। कालनेमि बोला कि हे हनूमान! मैं त्रिकालज्ञ हूँ, तुम सरोवरसे जल पीकर आवो तो मैं तुमको मन्त्र दूँगा. जिसके प्रभावसे तुम औषधिको शीघ्र पहचान सकोगे। जब हनुमान मायाके सरोवरमें जाकर जल पीने लगे तब महामायाविनी मकरी उनको ग्रास करने लगी। कपिने उसका मुख पकड़ उसके दो खण्ड कर डाले धान्यमालिनी नामक अप्सरा शापके कारण मकरी हुई थी, वह अप्सरा होकर बोली कि हे कपि! तुमने जिस मुनिको देखा है, वह रावणका भेजा हुआ कालनेमि राक्षस है, तुम इसको शीघ्र मारो। हनुमानने जाकर मुष्टिकाके प्रहारोंसे कालनेमिको मारडाला। इसके उपरांत वह क्षीर समुद्रमें जाकर औषधि न पहचाननेके कारण द्रोण पर्वतको उखाड़ रामके समीप ले आए सुषेणने पर्वतसे औषधि लेकर लक्ष्मणको दिया, जिससे वह उठ बैठे।

रावणकी आज्ञासे राक्षसगण कुंभकर्णको जगा लाए। (८) कुंभकर्णको देख वानर भागने लगे। अंतमें रामचन्द्रने उसका शिर काटडाला। उसका मस्तक लंका द्वारपर और शरीर समुद्रमें जा गिरा इन्द्रजीत अग्निसे अजेय रथादि पानेके लिये निकुंभिला यज्ञशालामें जाकर होम करने लगा। विभीषणने रामसे कहा कि मेघनाद यह होम समाप्त करने पर सबसे अजेय होजायगा। ब्रह्मा ने ऐसा स्थिर कियाहै, कि जो व्यक्ति १२ वर्ष पर्यंत आहार और निद्रासे वर्जित रहेगा, उसके हाथसे मेघनाद मरेगा। लक्ष्मणने ऐसा कियाहै, इसलिये आप उनको आज्ञा दीजिए कि वह

उसको मारै। (९) लक्ष्मण रामकी आज्ञा पाकर विभीषण और हनूमान आदि वानरोंके सहित निकुंभिलामें पहुंचे। मेघनादने होम परित्याग कर रथारूढ हो, लक्ष्मणको ललकारा। भयंकर संग्रामके पश्चात् लक्ष्मणने मेघनादका सिर काटडाला। रावण शोक वस होकर खड्गसे सीताको मारने दौडा जब सुपार्श्व नामक मन्त्रीने कहा कि हे राजन्! आप स्त्रीका बध करके अपने यशमें कलंक मत लगाइए, आप हमारे सहित चल कर राम और लक्ष्मणका विनाश कर सीताको प्राप्त कीजिए, तब रावणने सीताको छोड दिया।

(१० वां अध्याय) रावण शुक्राचार्यके उपदेशसे निर्जन गुहामें जाकर होम करने लगा। विभीषणने रामचन्द्रसे कहा कि यदि रावण होम समाप्त करेगा, तो अजेय होजायगा। तब रामकी आज्ञासे १० कोटि वानरोंने जाकर होम कार्य विध्वंश किया। रावण १६ चक्र वाले रथ पर चढ रण भूमिमें आया। इन्द्रने मातालिके साथ रामचन्द्रके पास अपना रथ भेजा। रामचन्द्र रथारूढ हो. रणस्थलमें आए। राम और रावणका रोमहर्षण भीषण युद्ध हुआ। रामने इन्द्रके अस्त्रसे रावणके मस्तकोंको काटडाला, किन्तु जितने बार वह मस्तकोंको काटते थे, उतनेही बार वह फिर उत्पन्न होजाते थे। रामचन्द्रने रावणके मस्तकोंको १०१ बार काटा, किन्तु वह नहीं मरा। तब विभीषणके आदेशानुसार उन्होंने प्रथम अग्नि-अस्त्रसे रावणकी नाभीके अमृत कुण्डको सुखा दिया और पीछे उसके सम्पूर्ण मस्तक और बाहुको काटडाला, किन्तु तब भी जीता रहा, इसके पश्चात् रामचन्द्रने मातलीके कथनानुसार ब्रह्मास्त्रसे रावणके हृदयमें मारा, जिससे वह मर गया। उसके शरीरसे ज्योति निकल कर रामकी देहमें प्रविष्ट हो गई। (१२) विभीषणने रावणकी मृत्युसे शोक युक्त हो उसको विधिवत् प्रेत संस्कार किया। लक्ष्मणने रामचन्द्रकी आज्ञासे लंकामें जाकर विभीषणका अभिषेक किया।

विभीषण सीताको रामके समीप ले आया। (१३) अग्नि परीक्षा देनेके समय माया की सीता अग्निमें प्रवेश कर गई। अग्निने सीताको लाकर रामको समर्पण किया। रामचन्द्रकी आज्ञासे इन्द्रने अमृत वृष्टि करके रणमें मरेहुए, सम्पूर्ण वानरोंको जिला दिया। राक्षसगण अमृत स्पर्श होने पर भी जीवित नहीं हुए।

रामचन्द्रके साथ मन्त्रियों सहित विभीषण और सेनाओं सहित सुग्रीव पुष्पक विमान पर चढे। विमान महर्षि वाल्मीकिके आश्रममें पहुंचा, (१४) उसी दिन पंचमी तिथिको रामचन्द्रके वनवासके १४ वर्ष पूर्ण हो गए। हनूमानने अयोध्यासे एक कोस दूर नन्दीग्राममें जाकर भरतसे रामका संदेशा कह सुनाया। पश्चात् पुष्पक विमान रामचन्द्रको सेना सहित नन्दीग्राममें उतार कर कुबेरके गृह चला गया। (१५) श्रीरामचन्द्रका अभिषेक अयोध्यामें हुआ। (१६) विभीषण अपने मन्त्रियों सहित लंकामें और सुग्रीव वानरों सहित किष्किन्धामें गए। रामचन्द्रने लक्ष्मणको युवराज बनाया और १० सहस्र वर्ष राज्य शासन किया।

उत्तरकाण्ड—(तीसरा अध्याय तक) अगस्त्य ऋषिने अयोध्यामें आकर रामचन्द्रसे रावण, कुम्भकर्ण और विभीषणकी उत्पत्तिकी और वाली तथा सुग्रीवके जन्मकी कथा कह सुनाई।

(चौथा अध्याय) रामचन्द्रने एकान्तमें सीतासे कहा कि हम लोकापवादके छलसे तुमको वनमें भेजेंगे। वाल्मीकि ऋषिके आश्रममें तुमको दो पुत्र उत्पन्न होंगे। इसके पश्चात् रामचन्द्रने एक दिन अपनी सभामें विजय नामक दूतसे पूछा कि पुरवासी गण हम लोगोंके विषयमें क्या कहते हैं। उसने कहा कि हे देव! सब कहते हैं, कि रामचन्द्रने दुरात्मा रावणके गृहसे सीताको लाकर अपने घर रक्खा, यह कार्य उन्होंने अच्छा नहीं किया।

रामचन्द्रने दूसरे लोगोंसे पूछा, उन लोगोंने भी कहा कि हां ऐसाही है। तब रामचन्द्रकी आज्ञानुसार लक्ष्मणने सीताको लेजा कर महर्षि वाल्मीकिके आश्रमके निकट छोड़ दिया, और उनसे कहा कि तुम महर्षिके आश्रममें चली जाओ। लक्ष्मण लौट आए और महर्षि सीताको अपने आश्रममें ले गए। सीता मुनि पत्नियोंके सहित रहने लगी। (६) शत्रुघ्नने, रामकी आज्ञासे मधुवनमें जाकर लवणासुरको मार, वहां मथुरापुरी बसाई। वाल्मीकिके आश्रममें सीताको २ पुत्र हुए। मुनिने ज्येष्ठ पुत्रका नाम कुश और छोटेका नाम लव रक्खा और दोनोंको रामायण काव्यकी शिक्षा दी। (७) ऋषिकी आज्ञासे कुश और लव रामायण गान करते हुए, विचरने लगे। राममन्द्रने इनके गानकी प्रशंसा सुनकर इनको अपनी सभामें बुलाया। इनका गाना सुनकर सब लोग विस्मित होगए, और परस्पर कहने लगे कि दोनों बालकोंकी आकृति रामके तुल्य है। रामचन्द्रने भरतसे कहा कि इनको अयुत धन प्रदान करो। भरत सुवर्ण देने लगे, तो दोनों बालक ऐसा कह कि 'मुझ तपस्वीको धनसे क्या प्रयोजन है?' चले गए। रामचन्द्रने इनको अपना पुत्र जाना और सीता सहित वाल्मीकि ऋषिको बुलाया। दूसरे दिन महर्षि वाल्मीकि सीताके सहित यज्ञशालामें आए। महर्षि बोले कि हे रामचन्द्र! यह तुम्हारी धर्मचारिणी सीता और ये दोनों आपके औरस पुत्र हैं। सीता कौषेय वस्त्र पहन कर बोली कि जो मैं रामचन्द्रके अतिरिक्त किसी दूसरे पुरुषकी चिंतना न करती होऊं तो पृथ्वी देवी मुझको विवर देवें। उसी समय रसातलसे सिंहासन प्रकट हुआ, पृथ्वी देवीने सीताको उठाकर सिंहासन पर बैठाया और सिंहासन रसातलमें प्रवेश कर गया। रामचन्द्र कुश और लवको लेकर यज्ञस्थानसे अयोध्यामें आए। कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा शरीर छोड़ कर स्वर्गमें राजा दशरथसे जा मिलीं।

(८ वां अध्याय) कुछ समय बीतने पर भरतने अपने मातुल युधाजितकी प्रेरणासे सेनाओं के सहित जाकर ३ कोटि गन्धर्वोंको मारा और गंधर्वराज्यमें दो नगरीको बसाया। उन्होंने उनमेंसे पुष्कलावती नगरीमें अपने पुत्र पुष्कलका और तक्षशिलामें तक्षका राज्यतिलक कर दिया। लक्ष्मणने रामचन्द्रकी अज्ञानुसार अपनी सेना और दोनों पुत्रोंके सहित पश्चिम दिशामें गमन किया और वहां दुष्ट भीलगणोंका विनाश करके दो नगर बसाया। वह उनमेंसे एक नगरमें अपने पुत्र अंगदको और दूसरेमें चित्रकेतुको राज्यतिलक देकर अयोध्या लौट आए।

काल मुनिवेष धारण करके अयोध्यामें आया और रामचन्द्रसे बोला कि एकांतमें मैं आपसे वार्ता करूंगा.परन्तु वार्ताके समय जो कोई आवेगा, वह बध्य होगा। रामचन्द्रने यह वचन स्वीकार करके लक्ष्मणको द्वार पर रक्खा। कालने कहा कि हे रामचन्द्र! तुमको पृथ्वीमें आए हुए, ११००० वर्ष पूर्ण हो गए, सो ब्रह्माने हमको भेजा है, अब जैसी तुम्हारी इच्छा हो सो करो। उसी समय दुर्वासा ऋषि द्वार पर आकर लक्ष्मणसे बोले कि तुम शीघ्र मुझको रामसे भेंट कराओ, यदि ऐसा नहीं करोगे तो राज्यके सहित रामको और इस कुलको मैं भस्म कर दूंगा। लक्ष्मणने रामचन्द्रके निकट जाकर ऋषिके आनेका संवाद कहा। रामचन्द्रने ऋषिके समीप आकर उनके कथनानुसार भोजन दिया। रामचन्द्र कालकी प्रतिज्ञा स्मरण कर शोकाकुल हुए। वशिष्ठने कहा कि लक्ष्मणको परित्याग कर दिया जाय क्योंकि परित्याग और वध दोनों तुल्य हैं। लक्ष्मण सरयू तीर जाकर नव द्वारका संयम करके प्राणको मस्तकमें लेगए। इन्द्र देवताओंके सहित वहां आकर सशरीर लक्ष्मणको लेगया।

(९ वां अध्याय) रामचन्द्रने कुशको कोशल देशके राज्य पर और लवको उत्तर देशके राज्य पर अभिषिक्त कर दिया और प्रत्येकको बहुत: रत्न और धनके सहित

८ सहस्र रथ, १ सहस्र हस्ती और ६० सहस्र घोडे दिए । रामकी आज्ञासे शत्रुघ्नको लानेके लिये दूत मथुरामें गया । शत्रुघ्नने अपने पुत्र सुवाहुको मथुरा नगर और यूपकेतुको विदिशा नगरका राज्य दिया और दूतके सहित वह अयोध्यामें आए. वानर, भालू, राक्षस इत्यादि सब अयोध्यामें आए । रामचन्द्रके साथ चारों वर्णकी प्रजा चली, नगरी प्राणीसे रहित होगई । रामचन्द्र नगरीसे दूर सरयू नदीके तीरपर आए । ब्रह्मा देवताओंके सहित वहां उपस्थित हुए । आकाशमें कोटि कोटि विमान दिखाई देने लगे । रामचन्द्र महाज्योतिमय होकर चक्रादि आयुधोंके सहित चतुर्भुज मूर्त्ति होगए, लक्ष्मण शेष रूप होगए थे, भरत और शत्रुघ्न चक्र और शंख हुए, सीता प्रथमहीं लक्ष्मी होगई थीं । सब वानरों और राक्षसोंने सरयूके जलका स्पर्श करके शरीर त्याग किया । वानर और भालू जिन जिन देवताओंके अंशसे हुए थे, उनमें लीन होगए । त्रिजग योनि सब सरयू-जलमें प्रवेश कर स्वर्गमें गए ।

(हिन्दी भाषाके सुप्रसिद्ध कवि तुलसीदासने संवत् १६३१ (सन् १५७४ ई०) में अध्यात्मरामायणहींके आधारपर मानसरामायणको बनाया, जो उत्तरीय भारतमें सम्पूर्ण भाषा काव्योंसे अधिक प्रचलित है)

संक्षिप्त प्राचीन कथा—पद्मपुराण—(पातालखण्ड ३६ अध्याय) श्रीरामचन्द्रने १५ वर्षकी अवस्थामें ६ वर्षकी अवस्था की जानकीसे अपना विवाह किया । २७ वर्षकी अवस्थामें उनको युवराजकी पदवी मिलनेका सामान हुआ । रामचन्द्रके वन जानेके ५ दिन पीछे राजा दशरथका देहांत हुआ । उसी दिन श्रीरामचन्द्र चित्रकूटमें पहुंचे । वनवासके तेरहवें वर्ष लक्ष्मणने पञ्चवटीमें शूर्पणखा राक्षसीकी नाक आर कान काट डाले ।

माघ शुक्ल ८ को रावण सीताको हर लेगया और माघ शुक्ल ९ को जानकीको लंकामें ले जाकर रक्खा । उसके दशवें मास सम्पाति गृध्रने वानरोंसे सीताका पता बताया । एकादशी तिथिमें हनूमानजी समुद्र लांघ गए, और उसी रात्रिको लंकामें पहुंचे । चौदसको लंका दहन हुआ । पूर्णिमासीको हनूमानजी महेन्द्राचलपर लौट आए । पौषकृष्ण ७ को हनूमानने रामचन्द्रसे लंकाका वृत्तान्त कहा । अष्टमी तिथि, उत्तरी फाल्गुनी नक्षत्र विजय मुहूर्त और मध्याह्न समयमें श्रीरामचन्द्रका प्रस्थान हुआ । ७ दिनोंमें सेना समुद्रके किनारे पहुँची । पौष शुक्ल १ से ३ तक समुद्रका उपस्थान हुआ । चौथको विभीषण रामचन्द्रसे आ मिले । सेतु बाँधनेका काम दशमीसे आरम्भ होकर त्रयोदशीको समाप्त हुआ । पौषकी पूर्णिमासे माघ कृष्ण २ तक ३ दिनोंमें सेना समुद्र पार उतरी । ८ दिन लंकामें सेना निवास करनेके पश्चात् एकादशीके दिन रावणके दूत शुक और सारन रामके पास आए। माघ कृष्ण १२ को सेना की गिनती हुई । तेरससे अमावास्या तक ३ दिनोंमें लंकामें रावणकी सेनाकी गणना हुई । माघ शुक्ल १ को अंगद दूत बनकर लंकामें गया । दूजसे अष्टमी तक ७ दिन राक्षसों और वानरोंका घोर युद्ध हुआ । माघ शुक्ल ९ की रात्रिमें मेघनादने रामचन्द्र और लक्ष्मणको नाग पाशसे बांधा । दशमीको गरुडने नाग पाश काटा । एकादशी और द्वादशीको धूम्राक्ष और तेरसको अकम्पन राक्षस मारे गए । माघशुक्ल १४ से फाल्गुण कृष्ण १ तक नीलने प्रहस्तको मारा रामचन्द्रने चौथ तक ३ दिन पर्यंत घोर युद्ध करके रावणको रण भूमिसे भगा दिया । पंचमीसे अष्टमी तक रावणने कुंभकर्णको जगाया । नौमीसे चौदस तक कुंभकर्णने रामचन्द्रसे युद्ध किया, और वह उनके हाथसे मारा गया । अमावास्याके दिन राक्षसोंने कुंभकर्णके शोकसे युद्धहीं नहीं किया । फाल्गुण शुक्ल १ से ४ तक इन्द्रजीतके समान ५ बडे भारी राक्षस मारे गए । पञ्चमीसे सप्तमी तक अतिकायका वध हुआ । अष्टमीसे द्वादशी तक बहुत राक्षसोंको रामचन्द्रने मारा । निकुंभ, कुंभ और मकराक्ष क्रमसे ३ दिनोंमें मारे गए । चैत्र कृष्ण २ को इन्द्रजीतने फिर जीता। औषधादि ले आनेमें इधरके लोगोंके व्यग्र होनेके कारण तीजसे सप्तमी

तक ५ दिन युद्ध बन्द रहा। अष्टमीसे चौदस तक मेघनादने युद्ध किया, आर वह मारा गया। अमावास्याको रावण युद्ध करनेको आया। चैत्र शुक्ल१से ५ दिनों तक रावणसे युद्ध होता रहा। उसमें बहुतसे राक्षस मारे गए। षष्ठीसे अष्टमी तक महापार्श्वादि राक्षस मारे गए चैत्र शुक्ल नौमीको लक्ष्मणजीको शक्ति लगी, हनूमानजी द्रोणाचल लाए। दशमीकी रात्रिमें युद्ध बन्द रहा। एकादशीको इन्द्रका सारथी मातली रथ लाया। द्वादशीसे दूसरी चतुर्दशी पर्य्यन्त १८ दिनोंमें रामचन्द्रजीने इन्द्रके रथ पर चढ युद्ध करके रावणको मारा।

माघके शुक्ल पक्षकी २ से बैशाखके कृष्ण पक्षकी १४ पर्य्यन्त ८७ दिन युद्ध हुआ। बीच बीचमें १५ दिन युद्ध बन्द रहा। ७२ दिन रात्रि संग्राम होता रहा। बैशाखकी अमावास्याको रावणकी प्रेत क्रिया हुई। बैशाख शुक्ल१ को रामचन्द्रजी रण भूमहीमें रह गए। उन्होंने द्वितीयाको लंकाके राज्यपर विभीषणका अभिषेक किया। उसी दिन सीताजी रामचन्द्रके पास आई। बैशाख शुक्ल ४ को श्रीरामचन्द्र पुष्पक विमान पर चढे और आकाश मार्ग होकर अयोध्यापुरीको लौटे। वह १४ वर्ष पूर्ण होने पर बैशाख शुक्ल ५ को भरद्वाज मुनिके आश्रम पर पहुंचे, षष्ठीको नन्दिग्राममें भरतजीसे मिले और सप्तमीको अयोध्यामें राजगद्दी पर बैठे। उस समय रामचन्द्रके वयका ४२ वां और जानकीके वयका ३३ वां वर्ष था।

श्रीमद्भागवत—(नवमस्कन्धके प्रथम अध्यायसे दशम अध्याय तक सूर्यवंशी राजाओंके नाम इस क्रमसे लिखे गए हैं)

विश्वसह	वलस्थल	प्रसेनजित्	पुष्कर
खट्वांग	वज्रनाभ	तक्षक	अंतरिक्ष
दीर्घबाहु	सगुण	युत	सुतपा
रघु	विधृति	बृहद्बल	अमित्रजित्
अज	हिरण्यमेरु	बृहद्रण	बृहद्राज
दशरथ	पुष्प	वत्सवृद्ध	वरही
रामचन्द्र	ध्रुवसन्धि	प्रतिव्योम	कृतञ्जय
कुश	सुदर्शन	भानु	रणञ्जय
अतिथि	अग्निवर्ण	दिवाकर	सञ्जय
निषध	शीघ्र	सहदेव	शाक्य
नभ	मरु	बृहदश्व	शुद्धोद
पुण्डरीक	प्रसुश्रुत	भानुमान	लांगल
क्षेमधन्वा	सन्तानसंधि	प्रतिकाश्व	प्रसेनजित्
देवानीक	अमर्षण	सुप्रतीक	क्षुद्रक
अनीह	सहस्वान	मरुदेव	कनक
पारिजात	विश्वबाहु	सुनक्षत	सुरथ
			सुमन्त्र

शिवपुराण—(एकादशस्कन्धके २० वें अध्यायसे २३ वें तक सूर्यवंशी राजाओंके नाम इस क्रमसे लिखे गए हैं)

१	वैवस्वतमनु	२८	रोहित	५५	रामचन्द्र	८२	बृहदारण्य
२	इक्ष्वाकु	२९	हरित	५६	कुश	८३	उरुकक्षांषि
३	शशाद	३०	चम्पक	५७	अतिथि	८४	वत्सवृद्ध
४	रिपुंजय	३१	विजय	५८	निषध	८५	प्रतिव्योम
५	कौस्तुभ	३२	भरुक	५९	पुंडरीक	८६	दिवाकर
६	हरिवाह	३३	वृक	६०	क्षेमधन्वा	८७	सहदेव
७	अर्णाभ	३४	वाहु	६१	दिवानीक	८८	बृहदश्व
८	वशिष्टाश्व	३५	सगर	६२	अहिक	८९	भानुमान्
९	पृथु	३६	असमंजस	६३	पारिजात	९०	प्रतिकाश्व
१०	चन्द्र	३७	अंशुमान	६४	वलि	९१	सुप्रतीक
११	युवनाश्व	३८	दिलीप	६५	अस्थल	९२	मरुदेव
१२	शावस्त	३९	भगीरथ	६६	वज्रनाभ	९३	सुनक्षत्र
१३	वृहदश्व	४०	श्रुत	६७	सगुण	९४	पुष्कर
१४	कपिल	४१	नाभि	६८	कंकनाभ	९५	अन्तरिक्ष
१५	दृढ़ाश्व	४२	सिंधुदीप	६९	पुष्प	९६	सुतपा
१६	हर्यश्व	४३	अयुतायु	७०	ध्रुवसंधि	९७	अमित्रजित्
१७	निकुंभ	४४	ऋतुपर्ण	७१	सुदर्शन	९८	बृहद्राज
१८	संहताश्व	४५	अनुपर्ण	७२	आग्निवर्ण	९९	वरही
१९	कृशाश्व	४६	कल्माषपाद	७३	शीघ्र	१००	कृतंजय
२०	प्रसेनजित्	४७	सर्वकर्मा	७४	मरु	१०१	रणञ्जय
२१	युवनाश्व	४८	अनरण्य	७५	कृतसंधि	१०२	शाक्य
२२	मान्धाता	४९	मण्डिद्रुम	७६	अमर्षण	१०३	शुद्धोद
२३	मुचकुंद	५०	निषध	७७	सहस्वान	१०४	लांगल
२४	पुरुकुत्स	५१	दिलीप	७८	विश्ववाह	१०५	प्रसेनजित्
२५	त्र्य्यारुणि	५२	रघु	७९	प्रसेनजित्	१०६	क्षुद्रक
२६	त्रिशंकु	५३	अज	८०	तक्षक	१०७	रङ्क्याम
२७	हरिश्चन्द्र	५४	दशरथ	८१	बृहद्बल	१०८	सुरथ
						१०९	सुमंत्र

(श्रीमद्भागवत और शिवपुराण दोनोंमें लिखा है कि इक्ष्वाकु-वंश सुमन्त्र तक रहेगा।)

शंखस्मृति–(१४ वां अध्याय) अयोध्याका दान अनन्त फल देता है।

महाभारत–(बनपर्व्व–८४ अध्याय) पुलस्ति बोले कि सरयूके उत्तम तीर्थ गोप्रतार (गुप्तार) को जाना चाहिए, जहांसे राम अपने नौकर, सेना और वाहनोंके सहित स्वर्गको गए थे। मनुष्य उस तीर्थमें स्नान करनेसे सब पापोंसे शुद्ध होकर स्वर्गमें जाते हैं।

(सभा पर्व्व-३० वां अध्याय) भीमसेनने अयोध्यामें राजा दीर्घयज्ञको स्वल्प युद्धमें परास्त किया। (द्रोणपर्व्व ४६ वां अध्याय) कोशलराज वृहद्वल कुरुक्षेत्रके संग्राममें बड़ा पराक्रम दिखलानेके उपरांत अभिमन्युके हाथसे मारा गया।

(शान्ति पर्व्व-२९ वां अध्याय) रामचन्द्रने ११००० वर्ष अयोध्यामें राज्य किया। (द्रोण पर्व्व-५७ वां अध्याय) उन्होंने अन्तमें अपना राज्य ८ भागोंमें विभक्त करके अपने दो पुत्रों और अपने तीनों भाइयोंके दो दो अर्थात् ६ पुत्रोंको दे दिया, और चारों प्रकारकी प्रजाओं सहित वह स्वर्गको चले गए।

गरुडपुराण-(पूर्वार्द्ध ८१ वां अध्याय) अयोध्या एक उत्तम स्थान है। (प्रेतकल्प २७ वां अध्याय) अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवन्तिका और द्वारिका ये सातों पुरियां मोक्ष देने वाली हैं।

अग्निपुराण-(१०८ वां अध्याय) अयोध्या तीर्थ पाप नाशनेवाला और भुक्ति-मुक्ति देने वाला है।

स्कन्दपुराण-(काशीखंड-७ वां अध्याय) अयोध्यामें जाकर प्रथम सरयूमें स्नान करना चाहिए। तदनन्तर वहांके तीर्थोंमें पितरोंकी तृप्तिके लिये तर्पण, पिण्डदान और ब्राह्मण-भोजन करा कर वहां पंचरात्रि निवास करना उचित है।

चौथा अध्याय।

(अवधमें) फैजाबाद, सुलतांपुर, प्रतापगढ़, नवावगञ्ज और लखनऊ।

फैजाबाद।

अयोध्याके रामघाट रेलवे स्टेशनसे ६ मील पश्चिम-दक्षिण फैजावादका रेलवे जंक्शन है और अयोध्यासे फैजाबादको पक्की सड़क गई है। अवध प्रदेशके फैजावाद विभागमें किस्मत और जिलेका सदर स्थान (२६ अंश ४६ कला ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ८२ अंश ११ कला ४४ विकला पूर्व देशान्तरमें) सरयू नदीके दहिने फैजावाद एक छोटा सा शंहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फैजावादमें फौजी छावनी और अयोध्याके सहित, जो एक म्युनिसिपलिटीमें है, ७८९२१ मनुष्य थे, (४३७२० पुरुष और ३५२०१ स्त्रियां) अर्थात् ५८८८१ हिन्दू, १८८३१ मुसलमान, ११८९ कृस्तान, १७१ सिक्ख और १४९ जैन। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें ३८ वां और अवधमें दूसरा शहर है।

छावनीमें शाही अरटिलरीका एक वैटरी, एक युरोपियन और एक देशी पैदलकी रेजीमेण्टें हैं।

फैजावादमें २ वडे मकवरे, १ इमामवाडा और वहुतेरी मसजिदें हैं। शहरके पश्चिमोत्तर छावनी, सुजाउद्दौलाके मकवरेसे २ मील पश्चिमोत्तर डिविजन जेल और डाकवंगलेसे१ मील पश्चिमोत्तर गिर्जा है। यहां सौदागरी वहुत होती है। गेहूं और चावल वहुत विकते हैं।

बहू बेगमका मकबरा–बहू बेगम अवधके नवाब सुजाउद्दौलाकी स्त्री थी। बहू बेगमका मकबरा अवधमें सबसे उत्तम इमारत है। यह लगभग १७५ फीट लम्बा और इतनाही चौडा और १४० फीट ऊंचा चौमञ्जिला और गुम्बजदार है। ऊपरकी मञ्जिलमें नकली कबरपर मार्बुलमें बहुमूल्य पत्थरोंके जडावका काम बना है। मकबरेके शिरोभागपर चढ़नेसे देशका सुन्दर दृश्य देखनेमें आता है। मकबरेके चारों ओर ऊंची दीवारके भीतर बडा उद्यान है; जिससे उत्तर बडे मैदानमें जगह जगह उत्तम सडकें बनी हैं। मैदानके बगलोंपर मकान और कई ऊंचे फाटक बने हुए हैं।

शुजाउद्दौलाका मकबरा–बहू बेगमके मकबरेसे दूर शुजाउद्दौलाका मकबरा है। यह बेगमके मकबरेसे छोटा है। मध्यमें ३ कबर हैं, बीचमें शुजाउद्दौलाकी, पश्चिम उसकी माता की और पूर्व उसके पुत्र मनसूरअलीकी। इसके चारों कोनेके पास एक एक लम्बा और एक एक मोरबा हौज है। घेरेके पश्चिम बगलमें उत्तर अखीरके पास एक मसजिद और दक्षिण एक इमामबाड़ा है।

फैजाबाद जिला–इसके पूर्व गोरखपुर, दक्षिण आजमगढ़ और सुलतांपुर, पश्चिम बाराबंकी जिले और उत्तर घाघरा (सरयू) नदी है, जो गोंडा और बस्ती जिलोंसे इसको अलग करती है। जिलेका क्षेत्रफल १६८९ वर्गमील है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय फैजाबाद जिलेमें १२१६३८७ मनुष्य थे, अर्थात् ६११२५६ पुरुष और ६०५१३१ स्त्रियां। निवासी प्राय: सब हिंदू हैं। मनुष्यसंख्याके लगभग आठवें भाग मुसलमान हैं। जिलेमें ब्राह्मण दूसरी सम्पूर्ण जातियोंसे अधिक बसते हैं। इनके पश्चात् चमार और अहीर, तब राजपूत और कूर्मीके नम्बर हैं। इस जिलेमें तांडा (जनसंख्या सन् १८९१ में १९७२४), अयोध्या, जलालपुर और रुनाही कसबे हैं।

जिलेमें कोई पहाडी व जङ्गल नहीं है। समुद्रके जलसे औसत ३५० फीट ऊपर इसका मैदान बडा उपजाऊ है। प्रधान नदी सरयू जिलेके उत्तरी सीमापर ९५ मील बहती है। जिलेमें टोंस, मझोई इत्यादि अन्य नदियां और बहुतेरे सरोवर हैं।

इतिहास–फैजाबादके पूर्वकालका इतिहास अयोध्याके इतिहासमें है। १८ वीं शताब्दीमें फैजाबाद अवधकी राजधानी हुआ। अवधका पहला नवाब सयादतअली खां और उसका उत्तराधिकारी सफ़दर जंग कभी कभी फैजाबादमें रहता था, शुजाउद्दौला फैजाबादमें सर्वदा रहने लगा। उसने सन् १७६० ई० में इसको अवधकी राजधानी बनाया। उसके मरनेके पश्चात् उसके पुत्र आसिफुद्दौलाने सन् १७८० में लखनऊको राजधानी बनाया, परंतु शुजाउद्दौलाकी विधवा बहू बेगम फैजाबादमें रहती थी, जिसके मरनेके समय सन् १८१६ ई० से शहर मुरझाने लगा।

सन् १८५७ ई० के आरंभमें फैजाबादकी छावनीमें २२ वीं बंगाल देशी पैदल, ६ वीं इरेंगुलर अवध सवार, ७ वीं बङ्गाल आरटिलरीकी एक कंपनी और एक बैटरी थी। ८ वीं जूनकी रातमें फौज बागी हुई, परंतु उन्होंने युरोपियन अफसरोंको उनके लड़के और स्त्रियोंके साथ भाग जानेकी आज्ञा देदी। यद्यपि दूसरे रेजीमेंटके बागियोंने उनमेंसे कई एक पर आक्रमण किया, परंतु वे सब थोड़े बहुत क्लेश उठानेके बाद बचावकी जगहमें पहुंचा गए।

रेलवे-फैजाबादसे 'अवध रुहेलखण्ड रेलवे' की लाईन ३ ओर गई है, जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रतिमील अढ़ाई पाई है।

(१) फैजाबादसे पश्चिम ओर-
मील-प्रसिद्ध स्टेशन-
२४ रुदौली।
६२ बारावंकी जंक्शन, जिसकी पूर्वोत्तर शाखा पर २१ मील बहराम घाट है।
७९ लखनऊ जंक्शन।
११३ उन्नाव।
१२५ कानपुर जंक्शन।

(२) फैजाबादसे अधिक दक्षिण, कम पूर्व-
मील-प्रसिद्ध स्टेशन-
४ अयोध्या (रानोपाली)।
८४ जौनपुर।
१०२ फूलपुर।
१२० बनारस-छावनी।
१२३ बनारस-राजघाट।
१३० मुग़लसराय जंक्शन।

(३) पूर्वोत्तर-शाखा-
मील-प्रसिद्ध स्टेशन-
६ अयोध्या रामघाट।

सुलतांपुर।

शाही सड़क फैजाबादसे दक्षिण सुलतांपुर कसबे होकर इलाहाबाद गई है। इसी सड़क पर फैजाबादसे लगभग ३० मील दक्षिण, गोमती नदीके दहिने किनारे पर अवधप्रदेशके रायबरैली विभागमें जिलेका सदर स्थान सुलतांपुर एक कसबा है।

सन् १८८१ की मनुष्य गणनाके समय सुलतांपुर कसबेमें ९३७४ मनुष्य थे, अर्थात् ६१५६ हिंदू ३१४८ मुसलमान, ५५ कृस्तान और १५ दूसरे।

वर्तमान कसबा और सिविल स्टेशन पुरानी छावनीके स्थान पर हैं। पबलिक इमारतोंमें जिलेकी कचहरियां, जेलखाना, गवर्नमेंट स्कूल, खैराती अस्पताल और गिर्जा प्रधान हैं। हाल में १० एकड़से अधिक विस्तारसें एक उत्तम बाग लगाया गया है। एक सड़क सुलतांपुर कसबे से पश्चिम रायबरैलीको गई है।

सीताकुण्ड-(सुलतांपुर कसबेमें गोमतीके दहिने किनारे प्रसिद्ध सीताकुंड है। ऐसा प्रसिद्ध है कि श्रीजानकीजीने श्रीरामचंद्रके सहित वनमें जानेके समय मार्गमें इस स्थान पर स्नान किया था। ज्येष्ठ और कार्तिक महीनोंमें यहां स्नानका मेला होता है। १५ या २० हजार मनुष्य आते हैं। यात्रीगण गोमती नदीके सीताकुंडमें स्नान करते हैं। मेलेमें मिठाईकी बिक्रीके अतिरिक्त कोई दूसरी सौदागरी नहीं होती है)

सुलतांपुर जिला-इसके उत्तर फैजाबाद, पूर्व जौनपुर, दक्षिण प्रतापगढ़ और पश्चिम रायबरैली जिले हैं। जिलेका क्षेत्रफल १७०७ वर्ग मील है।

जिलेकी प्रधान नदी गोमती है, जो बारावंकी जिलेसे इस जिलेके पश्चिमोत्तर कोनमें प्रवेश करके जिलेके मध्य होकर जौनपुर जिलेमें जाती है। ग्रीष्मऋतुओंमें गोमतीकी चौड़ाई लगभग २०० फीट और गहराई बारह तेरह फीट रहती है।

इस जिलेके राजापति गांवमें गोमती नदीके धौतपाप घाटपर सीता कुण्डके मेलेके समान मेले होते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय इस जिलेमें १०७५३७८ मनुष्य थे अर्थात् ५२९०८४ पुरुष और ५४६२९४ स्त्रियां । निवासी हिन्दू हैं । मनुष्य–संख्याके लगभग दशवें भाग मुसलमान हैं । हिन्दुओंमें ब्राह्मण दूसरी जातियोंसे अधिक हैं । इनके बाद चमार, अहीर और राजपूतके क्रमसे नंबर हैं ।

इतिहास–ऐसा प्रसिद्ध है कि श्रीरामचन्द्रके पुत्र कुशने गोमतीके बाएं किनारे पर कुश-पुर वा कुशभवनपुर कसवा वसाया, जो पीछे भरोंके हस्तगत हुआ । भरोंसे बारहवीं शताब्दीमें मुसलमानोंने ले लिया । ऐसी कहावत है कि सैयद महम्मद और सैयद अलाउद्दीन दोनों भाई बेंचनेके लिये कई एक घोडोंको लेकर कुशभवनपुरमें भर प्रधानोंके पास आए । भरोंने दोनों भाइयोंको मारकर घोड़े छीन लिए बादशाह अलाउद्दीन गोरीने ऐसा समाचार पाकर भारी सेना लेकर कुशभवनपुर पर आक्रमण किया । वह एक वर्षतक नदीके दूसरे पार घने जंगलमें खीमा डालकर महासरा करके रहा, पश्चात् उसने छलसे भरोंको जीतकर कुशभवन पुरका विनाश करके सुलतांपुर नामक नया कसवा बसाया ।

सन् १८५७ के बलवेके समय सुलतांपुर छावनीकी फौज बागी हुई । तारीख ७ जूनको युरोपियन स्त्री और लड़के इलाहाबाद भेज दिए गए । फौजमें देशी सवारकी १ और पैदलकी २ रेजीमेंट थीं जो ९ जूनको बागी हुईं । उन्होंने कई एक अफसरोंको मार डाला । बगावत दूर होनेके पश्चात् सुलतांपुरकी छावनी अंगरेजी सेनाओंसे दृढकी गई थी, परन्तु सन १८६१ में वहांसे फौज उठा ली गई ।

प्रतापगढ़ ।

फैजाबादसे दक्षिण सुलतांपुर होकर शाही सड़क इलाहाबाद गई है उसी पर सुलतांपुर कसबेसे २४ मील दक्षिण, अवध प्रदेशके रायबरैली विभागमें जिलेका सदर प्रतापगढ़ है जिससे ४ मील दूर बेलामें जिलेकी कचहरियां हैं, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय ५८५१ मनुष्य थे, अर्थात ३८७० हिंदू, १९४४ मुसलमान, ४६ कृस्तान और १ दूसरा । यहां १ गवर्नमेंट हाईस्कूल, ४ देव मन्दिर और ६ मसजिद हैं और उत्तम चीनी बनती है ।

प्रतापगढ़ जिला–इसके उत्तर रायबरैली और सुलतांपुर जिले, पूर्व, दक्षिण और पश्चिम पश्चिमोत्तर देशमें जौनपुर और इलाहाबाद जिले हैं । जिलेका क्षेत्रफल १४३६ वर्गमील है । गंगा पश्चिमकी सीमापर दक्षिण पश्चिमसे दक्षिण–पूर्वको बहती है । गोमती पूर्व सीमापर कई एक मील दौड़ती है । सई नदी हरदोई जिलेमें निकलकर रायबरैली जिलेके पार होनेके पश्चात् प्रतापगढ़ जिलेमें दक्षिण–पूर्वको बहती हुई जौनपुर जिलेमें जाकर गोमतीमें मिली है । वर्षा-कालमें इसमें नाव चलती है । इस जिलेमें निमक, सौरा और कंकड निकलते हैं ।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय प्रतापगढ़ जिलेमें ९१०८६६ मनुष्य थे, अर्थात् ४४५९६६ पुरुष और ४६४९०० स्त्रियां निवासी प्रायः सब हिंदू हैं । मनुष्य–संख्याके दशवें भाग मुसलमान हैं । हिन्दुओंमें ब्राह्मण और अहीर अधिक हैं । इनके पश्चात् कुर्मी, चमार तब राजपूतोंका नंबर है जिलेमें बेलाके अतिरिक्त ५ हजारसे अधिक निवासीका कोई कसबा नहीं है ।

इतिहास–सन् १६१७–१८ में राजा प्रतापसिंहने प्रतापगढ़ कसबेको नियत किया, जिसका बनाया हुआ किला वर्त्तमान है । लगभग ९० वर्ष पीछे देशी गवर्नमेंटने इसको छीन

लिया था, परन्तु अंगरेजी अधिकार होनेपर अंगरेजी गवर्नमेंटने पुराने मालिकके रिश्तेदार अजितसिंहके हाथ इसको वेंच दिया। किला पहिले बड़ा था परन्तु बलवेके पीछे इसके बाहरकी दीवार और बगलके सब काम नष्ट कर दिए गए।

नवाबगंज।

फैजाबादसे ६२ मील पश्चिम कुछ उत्तर रेलवेका बारावंकी जंक्शन है, जहांसे पूर्वोत्तर २१ मीलकी शाखा सरयूके दहिने किनारे बहरामघाटको गई है, जिसके सामने सरयूके दूसरे किनारेपर घाघराघाटका रेलवे स्टेशन है।

बारावंकीसे लगभग १ मील दक्षिण अवध प्रदेशके लखनऊ विभागमें बारावंकी जिलेका प्रधान कसबा नवाबगञ्ज है। बारावंकी और नवाबगञ्ज दोनों मिलकर जिलेका सदर स्थान बनता है। कसबेसे १ मील पश्चिम ऊंची भूमिपर सिविल स्टेशन और जिलेकी कचहरियां हैं। देशी कसबेमें गवर्नमेंट अस्पताल और स्कूल हैं। सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय नवाबगञ्जमें १४४३२ मनुष्य थे, अर्थात् ८८१६ हिन्दू ५२१७ मुसलमान, ३२९ जैन, ५८ कृस्तान, ९ सिक्ख और ३ दूसरे।

नवाबगञ्ज बारावंकी जिलेमें प्रधान तिजारती स्थान है। इसकी प्रधान सड़क चौड़ी है, जिसके दोनों ओर सुन्दर मकान बने हैं।

बारावंकी जिला—इसके उत्तर और पश्चिन सीतापुर और लखनऊ जिले, दक्षिण रायबरैली और सुलतांपुर जिले, पूर्व फैजाबाद जिला और पूर्वोत्तर चौका और घाघरा (सरयू) नदियां हैं। जिलेका क्षेत्रफल १७६८ वर्गमील है। चौका नदी बहरामघाटके पास सरयूके साथ मिलगई है। कल्यानी और गोमती नदियोंके बीचमें बारावंकी जिलेका हिस्सा अधिक उपजाऊ है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बारावंकी जिलेमें ११२८५९८ मनुष्य थे, अर्थात् ५७४१४२ पुरुष और ५५४४५६ स्त्रियां। निवासी अधिक हिन्दू हैं। मनुष्यसंख्यामें पांचवें भाग मुसलमान हैं। जिलेमें कुर्मी और अहीर दूसरी हिंदू जातियोंसे अधिक हैं। इनके पश्चात् क्रमसे पासी, ब्राह्मण और चमारकी संख्या है। जिलेमें नवाबगञ्ज (जनसंख्या सन १८९१ में १४४३२), रुदवली (जनसंख्या ११७६७), जेदपुर, फतहपुर, रामनगर और दरियाबाद कसबे हैं।

इतिहास—सन १८५६ ई० में अवधके अन्य जिलोंके साथ यह जिला अङ्गरेजी अधिकारमें आया। सन१८५७-५८ के बलवेमें इस जिलेके सम्पूर्ण तालुकेदार बागियोंमें मिले थे। सन १८५९ में जिलेका सदर स्थान दरियाबादसे नवाबगञ्जमें आया।

लखनऊ

बारावंकीसे १७ मील और फैजाबादसे ७९ मील पश्चिम लखनऊका स्टेशन है लखनऊ अवध प्रदेशमें किस्मत और जिलेका सदर स्थान और अवधकी राजधानी, (२६ अंश ५१कला ४० विकला उत्तर अक्षांस और ८० अंश ५८ कला १० विकला पूर्व देशान्तरमें) समुद्रके जलसे ४०३ फीट ऊपर गोमती नदीके दोनों किनारोंपर खास करके दहिने एक सुन्दर शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय लखनऊ और छावनीमें २७३०२८ मनुष्य थे, (१४५८४८ पुरुष और १२७१८० स्त्रियां) अर्थात् १६१८९६ हिंदू, १०४१९८ मुसलमान, ५७१५ कृस्तान, ७५२ जैन, ३५३ सिक्ख, ६६ पारसी ४७ बौद्ध और १ दूसरे (मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ५ वां और अवधमें पहला शहर है।

शहरके गनेसगंजके पास राजा मानसिंहकी धर्मशाला, चौकसे आगे बाबा हजाराकी एक छोटी धर्मशाला और स्टेशनसे एक मील दूर पक्की सराय है (जिसमें मैं टिका था) इसके अलावे लखनऊमें अन्य कई सराय हैं। शहरके उत्तर भागमें गोमतीके दोनों किनारों पर पक्के घाट बने हैं। गोमतीके बाएं आटा पीसनेकी धुंआकी कल है। गोमतीके ऊपर आसिफुद्दौलाका बनाया हुआ पत्थरका पुल है। लोहेके पुलसे डेढ़ मील पूर्व गोमतीके दहिने किनारे पर नासिरुद्दीन हैदरका बनवाया हुआ अवज़रवेटरी है। बलवेके समय इसके यंत्र नुक्सान होगए, अब इसमें बंक है। शहरसे दक्षिण-पूर्व ११ या १२ वर्गमीलमें फौजी छावनी फैलती है। शहर और छावनीके बीचमें एक नहर है। सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय फौजी छावनीमें २१५३० मनुष्य थे।

लखनऊमें प्रधान शिल्पकारीकी इमारत, एक इमामबाड़ा, ४ मक़बरे (सेयादतअलीखां का, मुसिद जादीका, महम्मदअली शाहका और गाजीउद्दीन हैदरका), और २ बड़े महल (छत्रमंजिल और केसरवाग) हैं। इनके अतिरिक्त शाही बागके मकान और कसबेके अनेक मकान, मन्दिर और मसजिदें हैं। पहले नवाब घरानेके लोगोंके अतिरिक्त लखनऊके दूसरे लोग उमदे मकान बनानेमें डरते थे। अङ्गरेजी अधिकार होने पर लखनऊके लोगोंके बहुतेरे उमदे मकान बने और चौड़ी सड़कें बनाई गई।

लखनऊमें सुईकार बूटेदार मखमल और कपड़ों पर रंगदार रेशमोंके साथ सोनेके काम बहुत बनते हैं। शीशेका काम और शालकी दस्तकारी होती है। केनिंगरोड़के दक्षिण अखीरके पास फतहगंज और दिग्विजयगंज, दक्षिण–पश्चिम सयादतगंज, जिसमें दूसरे देशसे आए हुए कपड़े और निमक रक्खे जाते हैं और नये विक्टोरिया रोडके पास गल्लेका बाजार शाहगंज है।

लखनऊसे प्रायः ४ मील दूर अलीगंजमें महावीरजीका प्रसिद्ध मंदिर है। वहां जेठके प्रथम मंगलवारको महावीरजीके दर्शनका बड़ा मेला होता है। इस प्रांतमें ऐसा मेला नहीं लगता है। उस मेलेमें दूर दूरसे आए हुए यात्रियोंकी बड़ी भीड़ होती है। बहुतेरे लोग घरसे साष्टाङ्ग प्रणाम करते हुए मंदिर तक जाते हैं। लखनऊमें सीतलाकालीके दर्शनका मेला चैत्रमें होता है।

मच्छीभवन–रेजीडेंसीके पश्चिमोत्तर मच्छीभवन किला है, जिसको २ शताब्दी पहले लखनऊके शाहजादे शेखोंने बनाया था। उनकी इमारतके अब केवल मट्टीके गोलाकार कई एक पार सड़कके दहिने बचे हैं। सन् १८५७ ई० के बलवेके समय तारीख ३० जूनकी रातको रेजीडेंसीके महासराके आरंभमें यह उड़ा दिया गया था, परन्तु पीछे सुधारा और फैलाया गया।

मच्छीभवनकी दीवारके भीतर लक्ष्मणटीला नामक ऊंची भूमि है, जिसके सिरे पर एक मसजिद है। कहा जाता है कि श्रीरामचन्द्रके भ्राता लखन अर्थात् लक्ष्मणने यहां गांव बसाया था, उन्हींके नामसे उस गांवका नाम लखनऊ पड़ा। शहरके लोग पहले इसी जगह बसे थे।

१७ वीं शताब्दीमें औरंगजेबने यहांके पवित्र स्थानको तोड़ कर इसी स्थान पर एक मसजिद बनादी।

इमामवाड़ा—मच्छीभवनके निकट लखनऊमें शिल्पकारी में सबसे उत्तम इमारत एक सुन्दर इमामवाड़ा है। बड़े आंगनके उत्तर बगल पर एक सुन्दर मेहराबी फाटक, पूर्व बगल पर बड़ी बावली, पश्चिम बगल पर एक बड़ी मसजिद, जिसमें सन् १२५० हिजरी (१८६४ ई०) लिखी हुई है, और दक्षिण बगल पर१६३ फीट लंबा और ५३ फीट चौड़ा इमामवाड़ा है। कई सीढियोंके ऊपर खंभोंकी ३ पंक्तियां हैं। इमामवाड़ेमें उत्तम ताजिया रक्खा हुआ है। अवधके नवाब आसिफुद्दौलाने सन १७८४ ई० के अकालके समय, दीन दुखियोंके पालनेके लिये, इमामवाड़ेको बनवाया, जो सन १७९७ इ० में मरा और इमामवाड़ेके कमरेमें, जिसकी छत्त संवारी हुई है, दफन किया गया।

रेजीडेंसी—यह बेगमकी कोठीके पश्चिमोत्तर लखनऊकी सबसे उत्तम इमारतोंमेंसे एक है। इसमें नीचे तहखाना है. जिसमें सन १८५७ के बलवेके समय ३२ वीं पलटनकी स्त्रियां रहती थीं। रेजीडेंसीमें ५५ फीट ऊंचा एक टावर है, जिसके नीचे कबरगाह फैला हुआ है जिसमें सन् १८५७ के बलवेम मरे हुए २००० पुरुष और स्त्रियां गाडी गई हैं। रेजीडेंसीके अन्दर बेलीगार्ड, बरक, अस्पताल आदि है।

महम्मदअली शाहका मकबरा—इमामवाड़ेसे ½ मील पश्चिम उससे छोटा यह मकबरा है, जिसको अवधके नवाब महम्मदअली शाहने, सन१८३७ ई० में बनवाया। वह सन १८४४ में इसमें दफन किया गया। इमामवाड़ा झाड़, बैठकी, आईने इत्यादि सामानसे सजा हुआ है। इसमें चांदीसे जड़ा हुआ बादशाहका तख्त उसकी स्त्रीकी बैठक और एक सुन्दर ताजिया रक्खा हुआ है। बड़े आंगनमें फूलके पौधे लगे हैं और पत्थरकी अनेक सड़कें बनी हैं। आंगनके मध्यमें एक लंबा हौज और उत्तर बगल पर एक बड़ा फाटक है।

केसरबाग—केसरबागकी इमारत विस्तारमें बहुत बड़ी है। इसको अवधके पिछले नवाब वाजिदअली शाहने सन१८४८से १८५५ई०तक,लगभग ८००००००रुपएके खर्चसे बनवाया। आवजरवेटरीके आगेके मैदानकी ओर इसके पूर्वोत्तरका फाटक है, जिसके निकट दूसरे सयादतअली खांकी कबर है। केसरबागके बडे आंगन होकर चानी बागके आर पार हजरतबाग को सड़क गई ह। दहिनी ओर चांदी वाली बारहदरी (जिसमें पहले चांदी लगी थी) खास मकाम और बादशाह-मञ्जिल हैं, जो पहले नवाबके खास रहनेका स्थान था। बाएं चौलक्खी महल ह, जिसको नवाबके हजाम अजिमुल्लाखांने बनाकर ४०००००० रुपएपर नवाबके हाथ बेंच दिया। यहां नवाबकी बेगम और प्रधान रखेलिनियां रहती थीं। पूर्व लक्खी फाटक है, जिससे खास केसरबागके मैदानमें जाना होता है, जिसके चारों ओर इमारतें हैं, जिसमें महलकी स्त्रियां रहती थीं।

मोतीमहल—इसमें ३ इमारतें हैं। घेरेके उत्तर सयादतअलीखांका बनवाया हुआ खास मोती महल है।

शाह नजफ—मोतीमहलसे ३५० गज पूर्व और गोमती नदीके दहिने किनारेसे १७५ गज दक्षिण शाह नजफ नामक इमारत है, जिसको अवधके नवाब गाजिउद्दीन हैदरने सन १८१४ ई० में बनवाया, जिसमें उसकी कबर है। इमारतके भीतर ताजिए और भिन्न भिन्न

नवाबों और उनकी स्त्रियोंकी छोटी २ तसवीरें हैं। मोतीमहलके पीछे खुरशिद मञ्जिल नामक एक सादा मकान है, जो अब लड़कियोंका स्कूल बना है।

सिकन्दराबाग–शाह नजफसे ¾ मील पूर्व कुछ दक्षिण, १२० गज लम्बा और इतनाही चौड़ा ऊंची दीवारसे घेरा हुआ सिकन्दरा बाग है,जिसको वाजिदअलीने सिकन्दरमहल नामक अपनी स्त्रीके लिये बनवाया। बगावतके समय सिपाहियोंका एक दल इसमें छिपा था। बागकी दीवारमें तोपोंसे दरार होगई है। अब इसमें बागबानी स्कूल है, जिसमें बागबानी विद्या सिखलाई जाती है।

अजायबघर–यह दो मञ्जिला मकान है। नीचेके मकानमें पत्थरकी पुरानी मूर्तियां और पत्थरपर खोदे हुए बहुतेरे लेख और ऊपरके मकानमें विविध प्रकारके मरे हुए पशु पक्षी इत्यादि जानवर और उनकी हड्डियां, धातु, पत्थर और बिसातीकी अनेक प्रकारकी चीजें जङ्गली मनुष्योंकी मूर्तियां, अनेक प्रकारके हथियार और कपड़े हैं। दो लड़कोंकी लाश एकहीमें हैं, इनके सिर दो तरफ और चूतड़ मिले हुए हैं और भैंसके बच्चेके एकही धड़के ऊपर दो सिर अलग अलग हैं, दोनों सिरमें कान नाक और आंख दो दो हैं।

बिंगफील्ड पार्क–विंगफील्ड कमिश्नरके नामसे इस पार्कका यह नाम है। दिलकुशाके पश्चिम ८० एकड भूमि और फूलबाग है। बागमें उजले मार्बुलके बहुतेरे सायवान और प्रतिमा और मध्यमें एक बंगला है।

आलमबाग–अवध रुहेलखण्ड रेलवे स्टेशनके १ ¼ मील दक्षिण पश्चिम,५०० वर्ग गजमें दीवारसे घेरा हुआ एक बाग है, जिसको अवधके नवाब वाजिदअली शाहने अपनी एक स्त्रीके रहनेके लिये बनवाया था।

लखनऊ जिला–इस जिलेके उत्तर हरदोई और सीतापुर जिले, पूर्व बाराबङ्की, दक्षिण रायबरेली और पश्चिम उन्नाव जिले हैं। जिलेका क्षेत्रफल ९८९ वर्गमील है। जिलेमें गोमती और सई प्रधान नदियां हैं। गोमती उत्तरसे जिलेमें प्रवेश करके लखनऊ शहर होकर पूर्व बाराबंकी जिलेमें गई है आर सई नदी गोमतीकी समानान्तर रेखामें जिलेकी दक्षिण-पश्चिम सीमापर दौड़ती है। सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय लखनऊ जिलेमें ७७३५४०मनुष्य थे, अर्थात् ४०६७७३ पुरुष और ३६६७६७ स्त्रियां।

जिलेमें हिन्दू बहुत हैं। मुसलमान, मनुष्य-संख्याके चौथाई भागसे कम हैं। हिन्दुओंमें अहीर, पासी और चमार अधिक हैं, इनके पश्चात् लोधी और ब्राह्मण जातियोंके नम्बर हैं। जिलेमें ४ कसबे हैं. लखनऊ, काकोरी, मलीहाबाद और अमेठी।

अवध प्रदेश–सन्१८७७ई०में अवधकी चीफ कमिश्नरी तोड़कर पश्चिमोत्तर देशमें मिला दीगई। दोनोंके मुख्य हाकिमको पश्चिमोत्तर देशका लेफ्टिनंट गवर्नर और अवधका चीफ कमिश्नर कहते हैं। वह कुछ दिनोंतक इलाहाबादमें और कुछ दिन लखनऊमें रहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय अवध प्रदेशका क्षेत्रफल २४२१७ वर्गमील और मनुष्य–संख्या १२६५०८३१ थी, जिनमें ११०१६२०९ हिन्दू, १६२०९३० मुसलमान, ९३१२ क्रस्तान, २४६७ जैन, १६९३ सिक्ख, १०६ बौद्ध, ७४ पारसी, २५ यहूदी और १५ दूसरे थे।

अवध प्रदेशमें १२ जिले इस प्रकार हैं। लखनऊ विभागमें,-उन्नाव, वारावंकी और लखनऊ; सीतापुर विभागमें,-सीतापुर, हरदोई और खेरी; फैजावाद विभागमें,-फैजावाद, गोंडा और वहराइच; रायवरैली विभागमें,-रायवरैली, सुलतांपुर और प्रतापगढ़।

अवधके २० कसवोंमें सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १०००० से अधिक मनुष्य थे।

नं०	कसवा	जिला	जन-संख्या	नं०	कसवा	जिला	जन-संख्या
१	लखनऊ	लखनऊ	२७३०२८	११	नवावगंज	वारावंकी	१४४३२
२	फैजावाद	फैजावाद	७८९२१	१२	खैरावाद	सीतापुर	१३७७३
३	वहराइच	वहराइच	२४०४६	१३	उन्नाव	उन्नाव	१२८३१
४	सीतापुर	सीतापुर	२१३८०	१४	जैस	रायवरैली	११९२६
५	शाहावाद	हरदोई	२०१५३	१५	मालावां	हरदोई	११८९४
६	टांडा	फैजावाद	१९७२४	१६	रुदवली	वारावंकी	११७६७
७	रायवरैली	रायवरैली	१८७९८	१७	विलग्राम	हरदोई	११४५७
८	गोंडा	गोंडा	१७४२३	१८	लाहरपुर	सीतापुर	११४५२
९	सण्डीला	हरदोई	१६८१३	१९	हरदोई	हरदोई	१११५२
१०	वलरामपुर	गोंडा	१४८४९	२०	पुरवा	उन्नाव	१०४५३

इतिहास-ऐसा प्रसिद्ध है कि अयोध्याके राजा रामचन्द्रके भाई लक्ष्मणने जागीरमें एक वड़ा देश पाकर लक्ष्मणपुर नामक एक नगर वसाया था। उस स्थानपर लक्ष्मण टीलेके चारों ओर एक छोटा गांव था। औरंगजेवने लक्ष्मण टीले पवित्र स्थानपर मसजिद वनवा दी, जो अव मच्छीभवन किलेके भीतर है। लक्ष्मणपुरका अपभ्रंश लखनऊ है। अकवर सयादत अलीखां और असिफुद्दौला इन तीनोंके अधिकारके समय लखनऊ शहरकी वढ़ती हुई।

दिल्लीके राज्यकी घटतीके समय, सन् १८२१ ई० में सयादत अलीखां नामक एक ईरानी अवधका सूवेदार हुआ, जिसने सन १७३२ में अवधको दिल्लीसे अलग कर लिया। वह सन् १७३९ ई०में जहर खाकर मर गया। सयादत अलीखांका दामाद और उत्तराधिकारी सफदर जंग (सन् १७४३)में वजीर होकर दिल्लीमें रहता था। उसने शहरसे ३ मील दक्षिण जलालावादके किलेको वनवाया और लक्ष्मणपुरके पुराने किलेको भी फिरसे सुधारा, जो उस समयसे मच्छीभवन कहाने लगा। सन १७५३ में सफदर जंगका पुत्र सुजाउद्दौला उत्तराधिकारी हुआ, जो वक्सरकी लड़ाईके वादसे फैजावादमें रहता था। सन् १७७५ ई० में सुजाउद्दौलाके मरनेपर उसका पुत्र आसिफुद्दौला अवधका नवाव हुआ, जो फैजावादसे आकर लखनऊमें रहने लगा। उसने मच्छीभवनके निकट रूमी दरवाजा नामक एक उत्तम फाटक और सन् १७८४ के वड़े अकालमें भूखे लोगोंकी रक्षाके लिये लखनऊमें प्रसिद्ध इमामवाडा वनवाया। शहरके वाहर नदीके पार वीजापुरका महल भी उसीका वनवाया हुआ है। सन् १७९७ में आसिफुद्दौलाके मरनेपर वजीर अली लखनऊका नवाव वना, परन्तु जव सन् १७९८ में अङ्गरेजी गवर्नमेंटको जान पड़ा कि यह असिफुद्दौलाका असली पुत्र नहीं है, तव गवर्नमेंटने वजीर अलीको गद्दीसे उतारकर, आसिफुद्दौलाके सौतेले भाई सयादतअलीखांको गद्दीपर वैठाया। लखनऊमें १०००० फौज रहनेके लिये ७६००००० रुपया वार्षिक कर लेनेका उससे संधिपत्र लिखवा लिया और इलाहावादके किलेको भी उससे ले लिया। गवर्नमेंटने

सन् १८०३ ई०में इस रुपयेके वदलेमें मुरादाबाद, बरैली, इटावा, फर्रूखाबाद इलाहाबाद और कानपुर लेकर अपने राज्यमें मिला लिया और लखनऊमें एक रेजीडेंट रख दिया। सन् १८१४में सयादत अलीखांके मरनेपर उसके पुत्र गाजीउद्दीनहैदरने सरकारकी आज्ञासे बादशाहकी पदवी प्राप्त की। सन १८२७में गाजिउद्दीन हैदरके मरने पर उसके पुत्र नासिरुद्दीन हैदर; सन १८३७ में नासिरुद्दीनके मरने पर सयादतअलीखांका छोटा पुत्र महम्मदअली, सन १८४४ में महम्मद अलीके मरने पर उसका पुत्र अमजदअली शाह और सन १८४७ में अमजदअलीके मरने पर उसका पुत्र वाजिदअलीशाह लखनऊकी गद्दी पर बैठा, जिसकी ३६० रखेलिनियां थीं। इसके राज्यके समय लाखों आदमियों पर बड़ा अन्याय होने लगा, इसलिये अंगरेजी सरकारने सन १८५६ ई० में सूबे अवधको अंगरेजी राज्यमें मिला लिया और वाजिदअलीशाहको १२००००० रुपये वार्षिक पेंशन नियत करदी। वह कलकत्तेके पास मटियाबुर्जमें रहने लगा, जो सन १८८७ में मर गया।

सन १८५७ के बलवेके समय, तारीख ७ मईको रेजीडेंसीसे ४ १/२ मील पर, मूसाबाग महलके निकट, ७ वें अवध इर्रेगुलर पैदलने बलवा किया। ४ था इर्रेगुलर घोड़सवारोंका कमांडर खतरेकी खबर मिलने पर अपनी सेनाके साथ पड़ोसमें शीघ्र पहुंच गया। उसके पीछे अवधका चीफ़ कमिश्नर सरहेनरी लारेंस युरोपियन और देशी सेनाओंके साथ जब पहुंचा, तब बागी लोग भागे। उनमेंसे कई एक कैदी बनाए गए और दूसरोंने अपने हथियारों को देदिया। चीफ़ कमिश्नरने कई दिन पश्चात् छावनीके रेज़ीडेंसीमें दरबार किया, २ देशी अफ़सर जिन्होंने बलवेके इरादेकी खबरदी थी, तरकी किए गए। कई एक सप्ताह तक शहर स्थिर रहा। १७ वीं मईको ३२ वें पैदलका एक भाग तोपोंके साथ छावनीसे रेजीडेंसीमें लाया गया उसके साथ युरोपियन स्त्री और लड़के बहुत आए। खजानेमें६०००००० रुपएसे अधिक थे। देशी गार्डके स्थान पर युरोपियन गार्ड नियत किया गया। तारीख ३० वीं मईको छावनी में बलवा आरंभ हुआ और तुरतही सर्वत्र फैल गया। २ अंगरेजी अफसर मारे गए। बागियोंने आरटिलरीकी भूमिके निकट चीफ़ कमिश्नर पर आक्रमण किया, परंतु वे भगाए गए और उनमेंसे बहुतेरे मारे गए। ३१ वीं मईको शहरमें अपने मकान पर एक अंगरेज मारा गया और जंगी आईनका इश्तहार दिया गया ११ जूनको फौजी पुलिसके घोड़सवार बागी हुए और पैदल उन्हींके समान होगए, परंतु एक सूबेदार, एक जमादार ६ हौलदार और २६ सिपाही जेलखानेकी रक्षा करते रहे। उस समय बागियोंकी बड़ी सेना लखनऊकी ओर आरही थी। तारीख ३० जूनको सर हेनरी लारेंस उनको भगानेके लिये मिली हुई छोटी फौजके साथ चला, परंतु चंद तोपें और ११९ अंगरेजी सिपाही खोकर परास्त हुआ। बागियोंने रेजीडेंसीका, जो मोरचाबंदीकी गई थी, महासरा किया। तारीख २ जुलाईको चीफ कमिश्नर सर हेनरी लारेंस अपने कमरेमें कौच पर आराम करता हुआ घायल हुआ और चीफ कमिश्नरीका आफिस मेजर बैंक्स और प्रधान फौजी कमांडर कर्नल इंगलिसको सौंप कर तारीख ४ थी जुलाईको मर गया। हिफाजतके काम करने वाले कूली भागगए और बहुतेरे नौकर उनके साथ चले गए। रेजीडेंसीमें लगभग १००० आदमी पुरुष, स्त्री और लड़के रह सकते थे। सर हेनरी लारेंसके घायल होनेके दिन बागियोंने बेली गारदके फाटक पर हमला किया। प्रतिदिन औसत १५ आदमीसे २० आदमी तक मरने लगे। तारीख ८ वीं को लगभग ४० बागी मारे गए। अंगरेजोंकी ओर ३ आदमी घायल हुए। तारीख १० वीं को जब बागियोंकी तोपका सामान चुक-

गया, तब वे लोग लकड़ीके टुकड़े, तांबे के सीकांचे लोहे और बैलके सींग तोपोंमें भर कर फ़ाएर करने लगे। बागी लोग बराबर हमले करते रहे। दोनों ओरके बहुतेरे लोग मारे गए। तारीख २५ वीं सितंबरको सहायताके लिये उटराम और हेवलाकके अधीन अंगरेजी सेना आई। तारीख १७ वीं नवंबरको सर कालिन केमल लड़ भिड़ कर उटराम और हेवलाकसे आमिले। उसके आने पर अंगरेजी सेनाको घेरेसे छुटकारा मिला। ४६७ अंगरेजी आदमी हत और आहत हुए थे, जिसमें १० अफसर मरे और ३३ घायल हुए थे। उस दिन शामको सर कालिनने बीमार और घायल स्त्री और लड़कोंको रेजीडेंसीसे दिलकसको हटानेका हुक्म दिया, जो २५ वीं को तामील हुआ। उसी दिन जनरल हवलाक मरगया। उसके पीछे सरकारी सेना जहां उनकी अधिक आवश्यकता थी, भेजी गई। सन १८५८ ई० के मार्च तक लखनऊको अंगरेजोंने पक्की तौरसे नहीं लिया।

रेलवे-लखनऊ रेलवेका केंद्र है। वहांसे रेलवे लाइन ५ ओर गई है।

(१) लखनऊसे दक्षिण-पूर्व-
मील-प्रसिद्ध स्टेशन-
४९ रायबरैली।

(२) लखनऊसे उत्तर, कुछ पश्चिम 'रुहेलखंड कमाऊं रेलवे' जिसके तीसरे दरजेका महसूल प्रति मील २ पाई है-
मील-प्रसिद्ध स्टेशन-
५१ खैराबाद।
५५ सीतापुर।
८० खेरी, जिससे आगे लाइन पश्चिमोत्तर घूमी है।
८३ लखीमपुर।
१६३ पीली भीत, जिससे आगे लाइन दक्षिण-पश्चिम घूमी है।
१७१ जहानाबाद।
१८७ भोजपुरा जंक्शन।
भोजपुरासे दक्षिण-
मील-प्रसिद्ध स्टेशन-
१० बरैली शहर।
१२ बरैली जंक्शन।
भोजपुरासे उत्तर-
मील-प्रसिद्ध स्टेशन-
५० हलद्वानी।
५४ काठगोदाम।

(३) लखनऊसे पश्चिमोत्तर 'अवध रुहेलखंड रेलवे' जिसके तीसरे दरजेका महसूल प्रति मील ढाई पाई है-
मील-प्रसिद्ध स्टेशन-
१५ मलीहाबाद।
३१ संडीला।
४९ बघौली।
६४ हरदोई।
१०२ शाहजहांपुर।
११४ तिलहर।
१२४ फतहगंज।
१३४ फरीदपुर।
१४६ बरैली जंक्शन।
१९० चंदौसी जंक्शन, जिसके दक्षिण-पश्चिमकी लाइन पर ३१ मील राजघाट, ४३ मील अंतरौली रोड और ६१ मील अलीगढ़ जंक्शन-है।
२०२ मुरादाबाद।
२४० धामपुर।
२५० नगीना।
२६४ नजीबाबाद।

२८९ लक्सर जंक्शन जिसकी पूर्वोत्तर शाखा पर १६ मील हरिद्वार है।
२९६ लंधोरा।
३०१ रुड़की।
३२२ सहारनपुरजंक्शन।

(४) दक्षिण-पश्चिम 'अवध रुहेलखंड रेलवे'—
मील-प्रसिद्ध स्टेशन—
३४ उन्नाव।
४५ कानपुर गंगा ब्रेंच।
४६ कानपुर 'इष्टइन्डियन रेलवे' से जंक्शन।

(५) लखनऊसे दक्षिण-पूर्वकी ओर 'अवध रुहेलखंड रेलवे'—
मील-प्रसिद्ध स्टेशन—
१७ बारावंकी जंक्शन जिसके पूर्वोत्तर-शाखा पर २१ मील बहरामघाट है।
७९ फैजावाद जंक्शन, जिस की पूर्वोत्तर-शाखा पर ६ मील अयोध्याका रामघाट स्टेशन है।
८३ अयोध्या (रानोपाली)।
१६३ जौनपुर।
१८१ फूलपुर।
१९९ बनारस छावनी।
२०२ बनारस राजघाट।
२०९ मुगलसराय जंक्शन।

पांचवां अध्याय।

(अवधमें) रायबरैली, उन्नाव, खैराबाद, सीतापुर, लाहरपुर, खीरी, लखीमपुर और गोला गोकर्णनाथ।

रायबरैली।

लखनऊसे ४९ मील दक्षिण-पूर्व रायबरैलीका रेलवे स्टेशन है। रायबरैली अवध प्रदेशके एक किस्मत और जिलेका सदर स्थान (२६ अंश १३ कला ५० विकला उत्तर अक्षांश और ८१ अंश १६ कला २५ विकला पूर्व देशान्तरमें) सई नदीके किनारेपर एक कसबा है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय रायबरैलीमें१८७९८मनुष्य थे, अर्थात् ११३२१ हिंदू, ७२७५ मुसलमान ११५ कृस्तान, ८५ सिक्ख और २ जैन।

सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इस कसबेमें ४५७ ईटेके और १८९९ दूसरे मकान थे।

रायबरैलीमें इब्राहिम सार्कीका बनवाया हुआ बड़े बड़े ईटोंसे बनाहुआ किला है, जिसके मध्यमें १०८ गजके घेरेमें हीन दशामें एक बडी बावली है, जिसमें पानीके सतहमें कमरे बने हैं। किलेके फाटकके बगलमें ' मखदूम सैयद जाफरी, नामक फकीरकी कबर है। दूसरी पुरानी इमारतें ये हैं, खूबसूरत महल, औरंगजेबके समयके गवर्नर नवाब जहांखांका मकवरा और ४ मसजिद हैं। सई नदीके ऊपर सन १८६४ ई० का बनाहुआ एक सुन्दर पुल है मामूली गवर्नमेण्ट कचहरियां और दूसरी इमारतोंके अतिरिक्त रायबरैलीमें दो तीन स्कूल, एक सराय और एक खैराती अस्पताल है।

रायबरैली जिला-इसके पूर्व सुलतांपुर, दक्षिण प्रतापगढ़, पश्चिम उन्नाव और उत्तर लखनऊ जिले, और दक्षिण पश्चिम गंगा नदी है,जो पश्चिमोत्तर देशके फ़तहपुर जिलेसे इसको अलग करती है। ज़िलेका क्षेत्रफल १७३८ वर्गमील है।

जिलेकी प्रधान नदियां गंगा और सई हैं। सई जिलेके मध्य होकर वहती है,वर्षाकालमें इसमें नाव चलती है। जिलेमें मूँगताल नामक झील १५०० एकडमें फैली है।

सन १८९१. की मनुष्य-गणनाके समय रायबरैली जिलेमें १०३५२०५ मनुष्य थे, अर्थात् ५११९८४ पुरुष और ५२३२२१ स्त्रियां।

निवासी हिन्दू हैं। मनुष्य-संख्याके लगभग वारहवें भाग मुसलमान हैं। हिन्दुओंमें ब्राह्मण और अहीर वहुत हैं। इनके पश्चात् क्रमसे पासी, चमार और राजपूतके नम्बर हैं। इस जिलेमें ३ कसवे हैं,-रायबरैली (जनसंख्या सन १८९१ में १८७९८), जैस (जन-संख्या ११९२६) और डलमऊ।

इतिहास-भर लोगोंने रायबरैली कसवेको वसाया। इसलिये यह भरौली कहलाता था। पीछे भरौलीका अपभ्रंश बरैली होगया। कसबेके निकटके राही नामक गांवके नामका अपभ्रंश राय नाम उस नामके पहले जुड कर रायबरैली कहलाने लगा। सन ई० की १५ वीं शताब्दीके आरंभमें जौनपुरके इब्राहिम सार्कीने यहांसे भरोंको निकाल बाहर किया। कसवा मुसलमानोंके अधीन हुआ।

उन्नाव।

लखनऊसे ३४ मील दक्षिण-पश्चिम और कानपुरके रेलवे जंकशनसे १२ मील पूर्वोत्तर, उन्नावका रेलवे स्टेशन है। अवध प्रदेशके लखनऊ विभागमें जिलेका सदर स्थान उन्नाव एक कसबा है। एक सड़क लखनऊसे उन्नाव होकर कानपुर गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय उन्नावमें १२८३१ मनुष्य थे, अर्थात् ८२२८ हिन्दू ४५०३ मुसलमान, ७९ कृस्तान और २१ सिक्ख।

उन्नाव उन्नति करती हुई मशहूर जगह है। इसमें नित्य वाजार लगता है। १४ देवमन्दिर और १० मसजिदें वनी हुई हैं और सिविल कचहरियां आदि सरकारी इमारतें हैं।

उन्नाव जिला-इसके उत्तर हरदोई, पूर्व लखनऊ आर दक्षिण-पूर्व रायबरैली जिला और पश्चिम तथा दक्षिण-पश्चिम गंगा नदी है, जिसके बाद पश्चिमोत्तर देशमें फ़तहपुर और कानपुर जिले हैं। उन्नाव जिलेका क्षेत्रफल १७४६ वर्गमील है। सई नदी हरदोई जिलेमेंसे निकलकर उन्नाव जिलेके बांगरमऊ परगनेमें प्रवेश करती है और रामपुरके निकट इस जिलेको छोडकर रायबरैली जिलेमें जाती है।वर्षाकालके अतिरिक्त नदीमें हिलजाने योग्य पानी रहता है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय उन्नाव जिलेमें ९४९०१३ मनुष्य थे, अर्थात् ४८५८५० पुरुष और ४६३१६३ स्त्रियां। निवासी हिंदू हैं। मनुष्य-संख्याके तेरहवें भाग मुसलमान हैं।: हिन्दुओंमें ब्राह्मण सब जातियोंसे अधिक हैं। इनके पश्चात् चमार, अहीर, लोधी, राजपूत और पासीके क्रमसे नंवर पडते हैं। जिलेमें ७ कसबे है, उन्नाव (जन-संख्या सन १८९१ में १२८३१), पुरवा (जन-संख्या १०४५३), मुरांवां, सफीपुर बांगरमऊ, मोहन और कुरसत।

इतिहास–लगभग ११०० वर्ष हुए कि एक फौजी अफसर गोडासिंह नामक चौहान राजपूतने जंगलको साफ करके एक कसवा बसाया और उसका नाम सरायगोडो रक्खा, परन्तु तुरतही पीछे उसने उस जगहको छोड दिया। वह जगह कन्नौजके चंद्रवंशी राजा अजयपाल-के हाथमें आई। खांडोसिंह गवर्नर बनाया गया। उसका लेफ्टिनेंट उनवंतसिंह नामक बिसेन राजपूत उसको मार कर स्वाधीन बन गया। उसने वहां एक किला बनाया और कसबेका नाम उन्नाव रक्खा। लगभग १४५० ई० में उनवंतसिंहके वंशज राजा जगदेवसिंहका पुत्र राजा उमरावंतसिंह एक पक्षपाती हिंदू था। वह मुसलमानोंको अजानकी आवाज नहीं करने देता था। मुसलमानोंने एक तवाजेके समय धोखेसे किलेमें प्रवेश करके राजाको मारकर उसकी मिलकियत ले ली, जिनके मुखियाका वंशधर वर्तमान तालुकेदार है।

खैराबाद।

लखनऊसे ५१ मील उत्तर कुछ पश्चिम खैराबादका रेलवे स्टेशन है। खैराबाद सीता-पुरसे ४ मील दक्षिण सीतापुर जिलेमें एक प्रसिद्ध कसबा है।

सन १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय खैराबादमें १३७७३ मनुष्य थे, अर्थात् ७६३९ मुसलमान, ६१२१ हिंदू, १२ कृस्तान, और १ जैन।

खैराबादमें लगभग ३० देवमन्दिर, ४० मसजिद, कई एक मुसलमानी पवित्र स्थान, स्कूल, पुलिस स्टेशन, सराय इत्यादि हैं नित्य बाजार लगता है।

माघ मासके मेलेमें लगभग ६०००० मनुष्य आते हैं। मेला १० दिन रहता है। दशहरेके मेलेमें लगभग १५००० मनुष्य आते हैं।

इतिहास–कहा जाता है कि खैरा पासीने इसको बसाया। ग्यारहवीं शताब्दीमें एक काय-स्थने इसपर अधिकार किया। पीछे इसका हिस्सा मुसलमानोंको दान मिला। बाबर और अकबरके राज्यके समय इसमें मुसलमान बहुत बढ़े। सन १८१० में अवधके नवाबने उस दानकी भूमिको छीन लिया।

सीतापुर।

खैराबादसे ४ मील (लखनऊसे ५५ मील) उत्तर कुछ पश्चिम सीतापुरका रेलवे स्टेशन है। सीतापुर अवध प्रदेशमें किस्मत और जिलेका सदर स्थान (२७ अंश ३४ कला ५ विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश ४२ कला ५५ विकला पूर्व देशान्तरमें) एक छोटी नदीके किना-रे पर एक कसवा है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय थामसनगंज और छावनी सहित सीतापुरमें २१३८० मनुष्य थे, अर्थात् १३२५० हिंदू, ७३८४ मुसलमान, ६७९ कृस्तान ४१ सिक्ख, २२ जैन, ३ पारसी और १ बौद्ध। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह अवधमें चौथा कसवा है।

सीतापुर जिला–इसके उत्तर खीरी जिला, पूर्व घाघरा नदी, जो बहराइच जिलेसे इस जिलेको अलग करती है, दक्षिण और पश्चिम गोमती नदी, जो बाराबंकी, लखनऊ और हरदोई जिलोंसे इसको जुदा करती है। जिलेका क्षेत्रफल २२५१ वर्गमील है।

घाघरा नदी सीतापुर जिलेकी पूर्वी सीमा पर बहती है और चौका नदी इससे ८ मील पश्चिम इसके करीबन समानांतर रेखामें दौडती है और बाराबंकी जिलेमें बहरामघाटके निकट

घाघरा (सरयू) में मिल गई है। जिलेके दक्षिण और पश्चिमकी सीमापर गोमती वहती है। चौका और गोमती सूखी ऋतुओंमें हेलने योग्य हो जाती हैं। सीतापुर जिलेके जंगलोंसे गोंद वहुत निकाले जाते हैं।

सन १८९१ की मनुष्य गणनाके समय सीतापुर जिलेमें १०७३४४५ मनुष्य थे, अर्थात् ५६६१३५ पुरुष और ५०७३१० स्त्रियां। निवासी वहुत हिन्दू है। मनुष्य-संख्याके सातवें भाग मुसलमान हैं। जिलेमें चमार सव जातियोंसे अधिक हैं। इनके पश्चात्, क्रमसे ब्राह्मण, पासी, अहीर, कुर्मी तव लोधी, राजपूत और काछीके नंवर हैं। जिलेमें ६ कसवे हैं, सीतापुर (आलमनगर, थामसनगंज और छावनी सहित जनसंख्या २१३८०), खैरावाद (मनुष्य-संख्या १३७७३), लाहरपुर (जनसंख्या ११४५२); विसवन, महम्मदावाद, और पेंतापुर।

इतिहास–सन् १८५७ ई० की तीसरी जूनको सीतापुरकी फौज वागी हुई। छावनीमें ३ रेजीमेंट देशी पैदलके और १ रेजीमेंट फौजी पुलिसके थे। वलवाइयोंने अपनें वहुतेरे अफसरोंको मारडाला। अन्तमें भागने वाले वहुतेरे युरोपियन लखनऊमें पहुंचे गए। सन् १८५८ की तारीख १३ अप्रैलको सरकारी सेनाने 'विसवन' के निकट वागियोंको परास्त किया। वर्षके अन्तसे पहिले अङ्गरेजी सिलसिला पूर्णरीतिसे कायम होगया और कचहरियां और ऑफिस खुल गए। सन १८५९ में भितवलीका राजा लोनसिंह वागी होनेके अपराधमें निकाल दिया गया और उसकी मिलकियत जव्त कर ली गई।

लाहरपुर।

सीतापुर कसवेसे १७ मील उत्तर, सीतापुर जिलेके लाहरपुर परगनेमें लाहरपुर एक कसवा है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय लाहरपुरमें ११४५२ मनुष्य थे, अर्थात् ६२४५ मुसलमान, ५१९४ हिन्दू और १३ जैन।

लाहरपुर अकवरके खजानची प्रसिद्ध राजा टोड़रमलकी जन्मभूमि है। कसवेमें सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय १०४ पक्के मकान और १५९० मट्टीकी झोंपड़ियां थीं। लाहरपुरमें १ सराय, ४ देवमन्दिर, २ सिक्खमन्दिर, लगभग ३० मसजिदें, ४ मकवरे, पुलिस स्टेशन, पोस्टआफिस और स्कूल हैं। इसमें नित्यका वाजार है, कोई प्रसिद्ध दस्तकारी नहीं होती। रविउस्सानीके महीनेमें मेला होता है और मोहर्रमके मेलेकी वड़ी तय्यारी होती है।

इतिहास सन १३७० ई० में वादशाह फिरोजतुगलकने इस कसवेको वसाया। उसके ३० वर्ष पीछे लाहोरी नामक एक पासीने इसपर अधिकार करके इसका नाम लाहरपुर वदल दिया। सन १४१८ में मुसलमानी सेनाने कन्नौजसे आकर पासी प्रधानको नष्ट किया। सन १७०७में गौर राजपूतोंने मुसलमानोंको निकाल दिया, जो अव तक इस परगनेमें अधिक भूमिके मालिक हैं।

खीरी।

सीतापुरसे २५ मील (लखनऊसे ८० मील) उत्तर कुछ पश्चिम खीरीका रेलवे स्टेशन है। अवध प्रदेशके सीतापुर विभागके खीरी जिलेमें खीरी एक छोटा कसवा है, जो सन ई० की १६ वीं शताव्दीमें वसा। इसमें १४ देवमन्दिर, १२ मसजिदें और ३ इमामवाडे हैं।

सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय खीरीमें ५९९६ मनुष्य थे, अर्थात् ३५२४ मुसलमान और २४७२ हिन्दू।

खीरी जिला-खीरी जिला अवधके संपूर्ण जिलोंसे बड़ा है। इसके उत्तर मोहन नदी जो नैपाल राज्यसे इसको अलग करती है, पूर्व कौरियाला नदी, जो बहराइच जिलेसे इसको जुदा करती है, दक्षिण सीतापुर जिला और पश्चिम पश्चिमोत्तर देशका शाहजहांपुर जिला है। जिलेका क्षेत्रफल २९९२ मील है।

जिलेमें कौरियाला, चौका, गोमती, आदि नदियां बहती हैं। जिलेकी कचहरियां लखीमपुरमें हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय खीरी जिलेमें ९१६१६२ मनुष्य थे, अर्थात् ४८८९१३पुरुष और४२७२४९ स्त्रियां। अधिक निवासी हिंदू हैं। मनुष्य-संख्याके सातवें भाग मुसलमान हैं। चमार सब जातियोंसे अधिक हैं। इनके पश्चात् क्रमसे कुर्मी, अहीर, ब्राह्मण, पासी, काछी, और लोधी इत्यादिके नम्बर हैं। जिलेमें ५ कसबे हैं, लखीमपुर, मुहम्मदी, ओलधकवा, खीरी और धौरहरा।

लखीमपुर।

खीरीसे ३ मील लखीमपुरका रेलवे स्टेशन है। लखीमपुर खीरी जिलेका प्रधान कसबा और सदर स्थान युल नदीसे १ मील दक्षिण है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय लखीमपुरमें ७५२६ मनुष्य थे।

कसबेमें मामूली पबलिक आफिस और कचहरीके मकानोंके अतिरिक्त हाई स्कूल और अस्पताल हैं। इसमें पक्के मकानोंकी संख्या बढ रही है और सौदागरी उन्नति पर है। एक १८ मीलकी सड़क सीतापुरसे ओएल होकर लखीमपुरको गई है।

गोलागोकर्णनाथ।

लखीमपुरसे २० मील गोलागोकर्णनाथको सड़क गई है। वर्षमें २ बार गोलागोकर्णनाथमें मेला होता है। इनमेंसे फाल्गुनकी शिवरात्रिके मेलेमें लगभग ५०००० मनुष्य आते हैं और चैत्रके मेलेमें, जो दो सप्ताह रहता है, लगभग १ २ लाख मनुष्य इकट्ठे होते हैं। यह मेला उन्नति पर है, इसमें हिन्दुस्तानके अनेक विभागोंसे सौदागर आते हैं आर लाखों रुपयेकी वस्तु बिकती है।

गोलागोकर्णनाथ एक तीर्थ स्थान है, जिसको उत्तरका गोकर्णक्षेत्र कहते हैं। यहां एक बड़े तालावके निकट गोकर्णनाथ महादेवका सुन्दर मन्दिर बना है। शिवलिंगके ऊपर गहरा है। मेलेके दिनोंमें दर्शनकी वड़ी भीड़ होती है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—वाराहपुराण-(उत्तरार्द्ध २०७ वां अध्याय) एक समय महर्षि सनत्कुमारने ब्रह्मासे पूछा कि शिवजीका नाम उत्तरगोकर्ण, दक्षिणगोकर्ण और शृंगेश्वर किस भांति हुआ? जहां इनका निवास है, वह कौन कौन तीर्थ है? ब्रह्माजीने कहा कि एक समय शिवजी मंदराचलके उत्तर किनारेके मुंजवान पर्वतसे श्लेष्मातक वनमें चले गए और नन्दीश्वरसे कह गए कि किसीके पूछने पर तुम हमारे जानेक स्थान मत कहना। (२०८) इसके पश्चात् इन्द्रने ब्रह्मा और विष्णुको साथ ले मुंजवान पर्वत पर आकर नन्दीश्वरसे पूछा कि भगवान्

शङ्कर कहां हैं। (२०९) जब नन्दीश्वरने शिवजीका पता नहीं बतलाया, तब देवतागण शिवजीको खोजने चले और ढूँढते ढूँढते श्लेष्मातक वनमें पहुँचे। शिवजीने मृगरूप धारण किया था, देवताओंने उनको पहचान लिया, सब देवता उनको पकड़नेके लिये चारों ओरसे दौड़े। इन्द्रने मृगके शृंगका अग्रभाग जा पकडा, ब्रह्माने बिचला भाग पकड़ लिया और शृंगका मूल भाग विष्णुके हाथमें आया। जब वह शृंग तीन टुकड़े होकर तीनोंके हाथोंमें रह गया और मृग अन्तर्द्धान होगया। तब आकाशवाणी हुई कि हे देवताओ! तुम लोग हमको नहीं पासकोगे। अब शृंगमात्रके लाभसे संतुष्ट हो जाओ।

(२१० वां अध्याय) इन्द्रने शृंगके निज खण्डको स्वर्गमें स्थापित किया और ब्रह्माने अपने हाथके शृंग-खण्डको उसी-भूमिमें स्थापित कर दिया। दोनों खण्डोंका गोकर्ण-नाम प्रसिद्ध हुआ। विष्णुने भी शृङ्गके खण्डको लोकके हितके लिये स्थापित किया, जिसका नाम शृङ्गेश्वर हुआ। जिन स्थानोंपर शृङ्गके खण्ड स्थापित हुए, उन स्थानोंमें शिवजी निज अंश कलासे स्थित होगए। रावण इन्द्रको जीतकर अमरावती पुरीसे गोकर्णेश्वरको उखाड़कर लङ्काको ले चला और कुछ दूर जाकर शिवलिंगको भूमिमें रखकर सन्ध्योपासन करने लगा। जब चलनेके समय वह शिवलिंग रावणके उठानेपर नहीं उठा, तब रावण उसको वहां छोड़ कर लङ्का चला गया। उसी लिंगका नाम दक्षिण-गोकर्ण प्रसिद्ध हुआ और ब्रह्माके स्थापित शृंगके खण्डका नाम उत्तर-गोकर्ण है।

कूर्मपुराण-(उपरिभाग, ३४ वां अध्याय) उत्तरके गोकर्णक्षेत्रमें शिवके पूजन और दर्शन करनेसे सम्पूर्ण कामना सिद्ध होती हैं और अन्तमें शिवलोक प्राप्त होता है। वहां स्थाणु नामक शिव हैं, जिनके दर्शन करनेसे समस्त किल्बिषका नाश होता है।

छठवां अध्याय।

(अवधमें) सण्डीला, नैमिषारण्य, हरदोई, (रुहेलखण्डमें) शाहजहांपुर, तिलहर, बरैली और पीलीभीत।

सण्डीला।

लखनऊसे ३१ मील पश्चिमोत्तर सण्डीलाका रेलवे स्टेशन है। सण्डीला हरदोई जिलेमें तहसीली और परगनेका सदर स्थान एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सण्डीलामें १६८१३ मनुष्य थे, अर्थात् ८४८० मुसलमान, ८३१८ हिन्दू और कृस्तान।

कसबेमें मामूली दीवानी और फौजदारी कचहरियां और अस्पताल हैं और सप्ताहमें २ दिन बाजार लगता है। पूर्व समयमें हिन्दी भाषाके प्रसिद्ध कवि सूरदास सण्डीलामें रहते थे। बहुत यात्री सण्डीलामें रेलगाड़ीसे उतरकर नैमिषारण्य, मिश्रिक और हत्याहरणतीर्थमें जाते हैं। स्टेशनके पास सवारीके लिये बैलगाड़ी मिलती हैं।

नैमिषारण्य।

सण्डीलासे नैमिषारण्य जानेके लिये एक्केकी सडक नहीं है। इस लिये मैं सण्डीलासे १८ मील पश्चिमोत्तर बघौली स्टेशनपर उतरा और बघौलीसे १३ मील उत्तर गोमती नदी पार हो नदीसे १ मील आगे नैमिषारण्यमें पहुंचा। बघौलीमें सवारीके लिये एक्के मिलते हैं।

अवध प्रदेशके सीतापुर जिलेमें गोमती नदीके बांये किनारेपर (२७ अंश २० कला ५५ विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश ३१ कला ४० विकला पूर्व देशान्तरमें) सीतापुर कसबेसे २० मील पश्चिम भारतवर्षके अतिप्राचीन और पवित्र तीर्थोंमेंसे एक नैमिषारण्य है। पूर्व समयमें नैमिषारण्य भारतवर्षमें तपस्वियोंका प्रधान स्थान था, परन्तु इस समय यहां वड़े तीर्थोंके समान बहुत यात्री नहीं आते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय नैमिषारण्य बस्तीमें २३३६ मनुष्य थे, खास करके ब्राह्मण (पण्डा) और उनके अधीन मनुष्य। इसमें नित्य छोटा वाजार लगता है, प्राय: सबही मकान मट्टीसे पाटे हुए हैं। आस पासकी पृथ्वी ऊंची नीची है, जिसपर कुछ कुछ जंगल और आमके बहुतेरे बाग हैं। आस पासकी भूमि उपजाऊ नहीं है। यहां वहुतेरे भैंसे लादे जाते हैं। अस्सी रुपएके सेरसे १६ सेरका मन होता है। मार्गमें लुटेरोंका कुछ भय रहता है।

नैमिषारण्यहीमें पूर्वकालमें महाभारत और पुराणोंकी कथा हुई थी। यहां प्रति अमावास्याको सामान्य और सोमवती अमावास्याको विशेष स्नान दर्शनका मेला हुआ करता है। नैमिषारण्यकी वड़ी परिक्रमा ८४ कोसकी है। प्रतिवर्ष फाल्गुनकी अमावास्याको नैमिषारण्यसे परिक्रमा आरम्भ होकर पूर्णिमाको इसी स्थान पर समाप्त होती है। यात्रियोंके साथ बाजार चलता है।

देवमन्दिर और देवस्थान–खास नैमिषारण्यकी १ ½ कोसकी परिक्रमामें इस क्रमसे स्थान और देवता मिलते हैं,–

(१) चक्रतीर्थ–यह पहलदार गोलाकार लगभग १२० गज घेरेका पक्का कुंड है। इसमें चारों ओर ऊपरसे नीचे तक पत्थरकी सीढ़ियां और मध्यमें गोलाकार जालीदार दीवार है, जिसके बाहर चारों ओर यात्रीगण स्नान करते हैं और भीतर अथाह जल है। जव एक मेलेके समय इस कुंडमें वहुतेरे यात्री डूबगए, तव सरकारने कुण्डके मध्यमें गोलाकार दीवार बनवादी। कुण्डका जल उमड़ कर दक्षिणके नालेसे पत्थरसे बांधी हुई एक पोखरीमें सर्वदा गिरा करता है और पोखरीसे एक खालमें चला जाता है। खालको लोग गोदावरी नर्मदा कहते हैं। कुण्डके किनारों पर कई एक देवमन्दिर हैं, जिनमें भूतनाथ महादेव प्रधान हैं। चक्रतीर्थ नैमिषारण्यमें मुख्य स्थान है। (२) पंचप्रयाग–यह पक्का सरोवर है। इसके किनारे पर अक्षयवट नामक वटवृक्ष है। (३) ललितादेवी यह यहांके देवदेवियोंमें प्रधान हैं। इनका दर्शन मंदिरके द्वारके बाहरसे होता है। (४) गोवर्द्धन महादेव। (५) क्षेमकाया देवी। (६) जानकीकुण्ड। (७) हनूमान्‌जी। (८) काशी–एक पक्के सरोवरके किनारेपर एक मंदिरमें विश्वनाथ और अन्नपूर्णा और मंदिरके पास लोलार्क नामक कूप है। (९) एक छोटे मंदिरमें धर्मराजकी मूर्ति है। (१०) एक मंदिरमें शुकदेवजीकी गद्दी, बाहर व्यासजी का स्थान और मैदानमें मनु और शतरूपाके अलग अलग २ चबूतरे हैं। (११) व्यासगंगा नामक सरोवर जो बालूसे भरगया है। (१२) वालूसे भराहुआ ब्रह्मावर्त नामक पक्का सरोवर। (१३) बालूसे भरा हुआ गंगोत्री नामक पक्का सरोवर। (१४) पुष्कर नामक सरोवर। (१५) गोमती नदी, जो हिमालय पर्वतसे निकलकर लखनऊ और जौनपुर होती हुई लगभग ५०० मील वहनेके उपरांत बनारससे नीचे गंगामें मिली है। (१६) दशाश्वमेध नामक टीला–टीलेके ऊपर एक मंदिरमें राम लक्ष्मण आदि देवताओंकी मूर्तियां हैं। त्रेता-

युगमें रामचन्द्रजीने अयोध्यासे यहां आकर अश्वमेधयज्ञ कियाथा। (१७) पांडवकिला-एक लंबे टीलेके ऊपर एक मंदिरमें श्रीकृष्ण भगवान् और पांडवोंकी मूर्तियां हैं। एक स्थानपर वाराह कूप नामक कूंआ और स्थान स्थानपर टीलेमें वहुतेरी छोटी गुफाएं हैं। कई एक गुफाओं में महावीरकी मट्टीकी मूर्तियां और कई एकमें समय समयपर साधुलोक रहते हैं (१८) जगन्नाथजीका मन्दिर। (१९) एक मन्दिरमें वड़े सिंहासनपर सूतजीकी गद्दी, जिसके निकट राधा, कृष्ण और वलदेवजीकी मूर्तियां हैं। (२०) एक मन्दिरमें त्रेताके रामचन्द्र आदिकी मूर्तियां हैं। मन्दिरके पास पुजारियोंके रहनेके मकान वने हैं।

मिश्रिक-नैमिपारण्यसे लगभग ५ मील दूर, सीतापुरसे हरदोई जानेवाली सड़कके निकट, सीतापुर कसवेसे १३ मील दक्षिण मिश्रिक एक पवित्र तीर्थ है। सीतापुर जिलेमें तहसीली और परगनेका सदर स्थान और अवधके पुराने कसवोंमेंसे एक मिश्रिक कसवा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय मिश्रिक कसवेमें २०३७ मनुष्य थे, अर्थात् १७६७ हिंदू (खासकर ब्राह्मण), २६३ मुसलमान और ७ दूसरे। मामूली सव डिविजनल कचहरीके ऑफिसोंके अतिरिक्त मिश्रिकमें एक पुलिस स्टेशन, पोष्टआफिस और कई स्कूल और कसवेके वाहर पड़ावकी भूमि है।

मिश्रिकमें दधीचि-कुण्ड नामक सुन्दर पुरानी वनावटका एक वड़ा सरोवर है। ऐसा प्रसिद्ध है कि उज्जैनके राजा विक्रमादित्यकी वनवाई हुई दीवारसे यह पवित्र कुण्ड घेरा हुआ था। लगभग १३० वर्ष हुए कि एक महाराष्ट्र रानीने इसके घाट और सीढ़ियोंकी मरम्मत करवाई। सरोवरके किनारेपर दधीचिका पुराना मंदिर खड़ा है। सरोवरके निकट पवित्र तिह्वारके समय वड़ा मेला होता है, जिसमें पचास साठ हजारकी वस्तु क्रय विक्रय होती है।

ऐसा प्रसिद्ध है कि एक समय देवगण एक वडे संग्राममें दैत्योंसे परास्त हुए। उन्होंने ब्रह्माकी आज्ञानुसार तपस्वी दधीचिके समीप जाकर अपना अस्त्र वनानेके लिये उनसे उनकी हड्डियां मांगी। दधीचिने कहा कि मैं अपनी प्रतिज्ञानुसार सम्पूर्ण तीर्थोंमें स्नान करके तव अपनी हड्डियां दूंगा। देवताओंने सम्पूर्ण तीर्थोंका जल लाकर वहांही एक कुण्डमें प्रस्तुत कर दिया। दधीचिने उस कुण्डमें स्नान कर अपना शरीर छोड़ दिया। देवताओंने उनकी हड्डियोंसे अस्त्र वनाकर उससे दैत्योंको जीतलिया। सम्पूर्ण तीर्थोंके जलमिश्रित होनेके कारण इस स्थानका नाम मिश्रिक हुआ। जिस कुण्डमें दधीचिने स्नान किया था, उसका नाम दधीचि कुण्ड है।

वामनपुराणमें लिखा है कि व्यासजीने मिश्रिक तीर्थमें दधीचि ऋषिके लिये वहुत तीर्थ मिलादिए हैं।

हत्याहरण-मिश्रकसे आठ दश मील दूर, हरदोई जिलेमें नैमिपारण्य तीर्थके अन्तर्गत 'हत्याहरण' नामक तीर्थ है। यहां भादोंमें महीनेभरका मेला होता है। हत्याहरण नामक वड़े सरोवरमें लोग स्नान करते हैं। लगभग १००००० यात्री आते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा-शंखस्मृति-(१४ वां अध्याय) नैमिपारण्यमें पितरोंके निमित्त जो कुछ दिया जाता है, उसका फल अक्षय होता है।

व्यासस्मृति-(४ था अध्याय) मनुष्य नैमिप तीर्थमें जानेसे सव पापोंसे छूटजाता है।

महाभारत-(आदिपर्व, प्रथम अध्याय,) सूतवंशीय लोमहर्पणजीके पुत्र उग्रश्रवाजी नैमिपारण्यमें शौनकजीके यज्ञमें जा पहुंचे और व्यासकृत महाभारतकी कथा कहने लगे। (१९८ वां अध्याय) देवताओंने नैमिपारण्यमें महायज्ञ आरम्भ किया था।

(वनपर्व, ८४ वां अध्याय) नैमिषारण्यमें ऋषिगण और देवताओंके साथ ब्रह्माजी सदा निवास करते हैं। उसके ढूँढ़नेसे आधा पाप और उसमें जानेसे सम्पूर्ण पाप नष्ट होजाता है। तीर्थसेवी पुरुषको नैमिषारण्यमें १ मास रहना चाहिये, क्योंकि पृथ्वीमें जितने तीर्थ हैं वे सब नैमिषारण्यमें रहते हैं। वहां नियम धारण करके स्नान करनेसे गोमेध यज्ञका फल मिलता है। जो पुरुष निराहार होकर नैमिषारण्यमें मरता है; उसके ७ कुलका उद्धार होजाता है। (८७ वां अध्याय) पूर्व दिशामें नैमिषारण्य तीर्थ है जहां पवित्र गोमती नदी बहती है। वहीं देवताओंके यज्ञका स्थान है।

(९५ वां अध्याय) पाण्डवोंने नैमिषारण्यमें जाकर गोमतीमें स्नान किया। (२९१ वां अध्याय) रामचन्द्रने गोमतीके तटपर देव–ऋषियोंके सहित १० अश्वमेध यज्ञ किए।

(शल्यपर्व, ३७ वां अध्याय) बलरामजी नैमिषारण्यमें गए, जहां सरस्वती नदी बहनेसे बन्द होगई है। वह वहां सरस्वतीकी निवृत्ति देखकर विस्मित होगए।

पहले सत्ययुगमें नैमिष नामक ऋषियोंने १२ वर्षका यज्ञारम्भ किया था। उस यज्ञमें इतने मुनि आए कि सरस्वतीके तीर्थ नगरके समान दिखाने लगे। तटमें कुछ भी अवकाश नहीं रहा, तब ऋषियोंने अपने यज्ञोपवीतोंसे तीर्थ बनाकर अग्निहोत्र करना आरम्भ किया। जब सरस्वतीने उन ऋषियोंको चिंतासे व्याकुल और निराश देखा, तब अपनी मायासे अनेक मुनि-योंको अनेक कुंज दिखलाए। उसी दिनसे इस स्थानका नाम नैमिषकुंज है। (३८ वां अध्याय) जब नैमिषारण्यमें अनेक मुनि इकट्ठे हुए, तब वेदके विषयमें अनेक प्रकारके शास्त्रार्थ होने लगे। वहां थोड़ेसे मुनि आकर सरस्वतीका ध्यान करने लगे। यज्ञ करनेवाले मुनियोंके ध्यान करनेसे विदेशी मुनियोंकी सहायताके लिये कांचनाक्षी नामक सरस्वती नैमिषारण्यमें आई।

(शांतिपर्व ३५५ वां अध्याय) पूर्व समयमें जिस स्थानमें धर्मचक्र प्रवर्तित हुआ था, उस नैमिष तीर्थमें गोमती नदी है।

वाल्मीकिरामायण–(उत्तरकाण्ड, १०४ सर्गसे ११० सर्ग तक) महाराज रामचन्द्रने अयोध्यासे नैमिषारण्यमें आकर अश्वमेध यज्ञ किया। उसी समय उनके पुत्र लव और कुश वाल्मीकि मुनिके साथ आकर उनसे मिले और महारानी सीताको पृथ्वी देवी सिंहासनपर बैठाकर रसातलमें ले गई।

कूर्मपुराण–(ब्राह्मीसंहिता–उत्तरार्द्ध—४१ वां अध्याय) ऋषियोंने ब्रह्मासे पूछा, कि पृथ्वीपर तपस्याके लिये सबसे पवित्र स्थान कौन है? ब्रह्माजी बोले कि हम यह चक्र छोडते हैं, तुम लोग इसके साथ जाओ, जिस स्थान पर चक्रकी नेमि अर्थात् पहिया गिरेगी, वही देश तपस्याके लिये उत्तम है। ऐसा कह ब्रह्माने चक्र छोड़ा। ऋषि लोग शीघ्रतासे उसके पीछे चले जिस स्थानपर चक्रकी नेमि गिरी, वहांही पवित्र और सर्व पूजित नैमिष नामक क्षेत्र हुआ। शिवजी पार्वती सहित नैमिषारण्यमें बिहार करते हैं। वहां मृत्यु होनेसे ब्रह्मलोक मिलता है और यज्ञ, दान, श्राद्धादिक कर्म करनेसे संपूर्ण पापका नाश हो जाता है।

देवीभागवत–(पहला स्कंद—दूसरा अध्याय) शौनकजीने सूतजीसे कहा कि कलिकाल से डरेहुए हम लोग ब्रह्माजीकी आज्ञासे नैमिषारण्यमें आए हैं। पूर्व समयमें उन्होंने हमें एक चक्र देकर कहा कि जहां इसकी नेमि (पहिया) गिरे, वह देश अति पावन जानना। वहां कलियुगका प्रवेश कभी नहीं होगा। यह सुनकर हम उस चक्रको चलाते हुए चले आए।

जब चक्र यहां पहुंचा तो उसकी नेमि टूट गई और वह इस भूमिमें प्रवेश कर गया । इसीसे इस क्षेत्रका नाम नैमिष हुआ । यहां कलिप्रवेश नहीं करता. इससे मुनि, सिद्ध और महात्माओंके संग हम यहां बसते हैं ।

पद्मपुराण—(सृष्टिखण्ड—प्रथम अध्याय) व्यासजीके शिष्य लोमहर्षणजीने, अपने पुत्र उग्रश्रवासे कहा कि जब प्रयागजीमें उत्तम ब्राह्मणोंने वेदव्यासजीसे पूछा था कि कोई पुण्यदायक स्थान सदाके लिये हम लोगोंको बताइए, जहां हम लोग पुराणोंको सुना करैं । यह सुनकर नारायणरूपी व्यासजीने अपना सुदर्शनचक्र चलाया और कहा कि इसके पीछे पीछे तुम लोग जाओ । पहिया टूट जानेसे जहां यह गिर पड़े, उस देशको पुण्यभूमि समझना । वह चक्र जाकर गोमतीके उत्तर, जिस स्थानपर गिरा, वह स्थान नैमिषारण्य कहलाता है । वहीं सब ऋषि लोग यज्ञ करने और कथा सुननेके लिये जा बैठे ।

लोमहर्षणजी बोले कि हे पुत्र! तुम नैमिषारण्यमें जाकर ऋषियोंके धर्मविषयक संशयको निवारण करो । उग्रश्रवाजी नैमिषारण्यमें ऋषियोंके पास गए । ऋषियोंने उग्रश्रवाजीसे पुराणकी कथा पूछी । उग्रश्रवाजी बोले कि आप लोगोंने जो हमसे पुराणही पूछा, इससे हम बहुत प्रसन्न हुए । सूतका यही धर्म है कि देवता, ऋषि और तेजस्वी राजाओंकी उत्पत्ति, यश, वंश आदिका वर्णन करे; उन लोगोंकी प्रशंसा करता रहै और इतिहास पुराण बांचे । वेद पढ़ने पढ़ानेमें सूतका अधिकार नहीं होता । राजा पृथुके यज्ञमें मागध और सूत दोनोंने जब उनकी बड़ी स्तुति की, तब राजाने प्रसन्न होकर सूतको सूतका अधिकार और मागधको मागधका अधिकार दिया ।

(मनुस्मृति—१० वां अध्याय, याज्ञवल्क्यस्मृति प्रथम अध्याय, औशनसस्मृति और महाभारत–अनुशासन पर्वके ४९ वें अध्यायमें लिखा है कि क्षत्रियके द्वारा ब्राह्मणीके गर्भसे जो पुत्र उत्पन्न हुआ, वह सूतजाति है । औशनसस्मृतिमें यह भी लिखा है कि सूतजाति प्रतिलोम विधिका द्विज होता है, जो वेदका अधिकारी नहीं है । वह केवल धर्मका उपदेशक होता है ।

(पातालखण्ड–९१ वां अध्याय) सिंहके बृहस्पति होने पर गोमतीके जलमें स्नान करना मोक्षदायक होता है ।

वाराहपुराण–(१७० वां अध्याय) त्रयोदशीके दिन नैमिषारण्यके चक्रतीर्थमें स्नान करनेसे उत्तम गति प्राप्त होती है ।

स्कन्दपुराण–(सेतुबंधखंड–१९ वां अध्याय) महाभारतके युद्धके आरंभके समय बलदेवजी द्वारकासे प्रभास, बिंदुसर आदि तीर्थोंमें भ्रमते हुए नैमिषारण्यमें पहुंचे । उनको देखकर नैमिषारण्यके संपूर्ण तपस्वी आसनोंसे उठे । उन्होंने बडे आदरसे उनको आसनपर बैठाया, परन्तु व्यासजीके शिष्य सूतजीने जो ऊंचे आसन पर बैठे थे, बलदेवजीको उत्थान नहीं दिया यह देख बलदेवजीको बड़ा क्रोध उत्पन्न हुआ । उन्होंने कुशके अग्रभागसे सूतका शिर काट लिया । यह देख मुनियोंने हाहाकार किया और बलदेवजीसे कहा कि आपको ब्रह्महत्या लगी । आप इसका प्रायश्चित्त कीजिए । अंतमें बलदेवजीने मुनियोंकी आज्ञानुसार जब दक्षिण–समुद्रके बीच गंधमादन पर्वतपर जाकर लक्ष्मणतीर्थमें स्नान और लक्ष्मणेश्वर शिवका पूजन किया, तब उनकी ब्रह्महत्या नष्ट हुई ।

(श्रीमद्भागवत, दशमस्कंधके ७८ वें अध्यायमें भी है कि बलरामजीने नैमिषारण्यमें सूतको मार दिया इत्यादि ।)

वामनपुराण–(७ वां अध्याय) पृथ्वीमें नैमिषतीर्थ, आकाशमें पुष्करतीर्थ और पातालमें चक्रतीर्थ उत्तम हैं।

(३६ वां अध्याय) वेदव्यासजीने दधीचि ऋषिके लिये मिश्रिक तीर्थमें बहुत तीर्थ मिला दिए हैं। जिसने मिश्रिक तीर्थमें स्नान किया है, वह सब तीर्थोंमें स्नान कर चुका।

शिवपुराण–(८ वां खंड–५ वां अध्याय) श्रीरामचन्द्रजी ब्राह्मण रावणके वध करनेसे बहुत समय तक पश्चात्ताप करते रहे। निदान उन्होंने नैमिषारण्यके हत्याहरण तीर्थमें अपने भाई सहित जाकर अपना पाप दूर किया और लक्ष्मण सहित स्नान करके शिवलिंगकी स्थापना की जिससे वह पवित्र होगए।

(१४ वां अध्याय) नैमिषक्षेत्रमें ललितेश्वर शिवलिंग है, जिसको ललिता जगदंबाने स्थापित किया था। उसी स्थानपर ललिताने कठिन तप किया था। वहां एक दधीचीश्वर शिवलिंग है, जिसको दधीचि मुनिने स्थापित किया।

गरुडपुराण–(पूर्वार्द्ध–६६ वां अध्याय) नैमिषारण्य तीर्थ संपूर्ण पापोंका नाश करने वाला और भुक्ति–मुक्ति देने वाला है।

अग्निपुराण–(१०८ वां अध्याय) नैमिषारण्य तीर्थ भुक्ति मुक्तिका देने वाला है।

हरदोई।

संडीलासे ३३ मील (लखनऊसे ६४ मील) पश्चिमोत्तर हरदोईका रेलवे स्टेशन है। हरदोई अवध प्रदेशके सीतापुर विभागमें जिलेका सदर स्थान एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय हरदोई कसबेमें ११९५२ मनुष्य थे, अर्थात् ८३१९ हिंदू, २७४८ मुसलमान, ७१ कृस्तान, १३ सिक्ख और १ जैन।

यहां गवर्नमेंटकी इमारतोंमें; मामूली जिलेकी कचहरियां, जेल, स्कूल, अस्पताल, इत्यादि हैं और सप्ताहमें २ दिन बाजार लगता है।

हरदोई जिला–इस जिलेके पूर्व गोमती नदी, बाद सीतापुर जिला, दक्षिण लखनऊ और उन्नाव जिले, पश्चिम गंगा नदी, बाद फर्रुखाबाद जिला और उत्तर शाहजहांपुर और खीरी जिलेका क्षेत्रफल २३११ वर्गमील है।

हरदोई जिलेमें गंगा, रामगंगा, गारा, सुखेता, सई, बैटा और गोमती नदी बहती हैं। गंगा, रामगंगा और गारामें सर्वदा नांव चलती है। गोमती यहां छोटी नदी है। सई भी यहां प्रसिद्ध धारा नहीं है। गारा नदीके किनारे सांडी बाजार है, जिसके निकट ३ मील लंबी और १ मीलसे २ मील तक चौड़ी एक झील है। जिलेमें नीचे लिखेहुए मजहबी मेले होते हैं। आश्विनकी रामलीलाके समय बिलग्राममें, जो १० दिन रहता है, और उसमें लगभग ४०००० मनुष्य आते हैं, भादोंमें हत्याहरणमें, जो एक मास तक रहता है और उसमें लगभग १००००० मनुष्य आते हैं और वैशाख और कार्तिकमें बरसूआमें, जो एक दिन रहता है और उनमें १५००० से २०००० हजार तक मनुष्य आते हैं। इन मेलोंमें कोई प्रसिद्ध व्यापार नहीं होता।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय हरदोई जिलेमें १०९४८११ मनुष्य थे, अर्थात् ५८६३११ पुरुष और ५०८५०० स्त्रियां।

निवासी हिन्दू हैं। मनुष्य–संख्याके लगभग १० वें भाग मुसलमान हैं। जिलेमें चमार अधिक हैं। इनके बाद ब्राह्मण, तब क्रमसे काछी, राजपूत, पासी, अहीरके नंबर हैं। इस

जिलेमें ९ कसबे हैं.-शाहाबाद (मनुष्य-संख्या सन १८९१ में २०१५३) संडीला (मनुष्य-संख्या १६८१३), मल्लावा (मनुष्य-संख्या ११८९४), विलग्राम (११४५७), हरदोई (१११५२), सांडी, पिहानी, गोपामऊ और माधोगंज।

इतिहास-७०० वर्षसे अधिक हुए कि इंदौरके निकटके नरकंजारीके रहनेवाले चमार गौरोंके एक दलने इस कसबेको वसाया। जिन्होंने यहांके ठठेरोंको खदेरकर उनके किलोंको नष्ट किया, जिसकी निशानी अब तक बड़े टीलोंकी शकलमें है। वर्तमान कसबेका अधिक भाग ठठेरों की पुरानी गढ़ियोंसे ईंटे निकाल कर बना हुआ है। सन् १८५७ के बलवेके पश्चात् हरदोई जिलेका सदर स्थान बनाया गया।

शाहजहांपुर।

हरदोईसे ३८ मील (लखनऊसे १०२ मील) पश्चिमोत्तर शाहजहांपुरका रेलवे स्टेशन है। शाहजहांपुर पश्चिमोत्तर प्रदेशके रुहेलखंड विभागमें जिलेका सदर स्थान (२७ अंश ५३ कला ४१ विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश ५७ कला ३० विकला पूर्व देशांतरमें) देवहा या गारा नदीके वाएं किनारेपर गारा और खनौतके संगमसे ऊपर एक छोटा शहर है। संगम पर एक पुराना किला और खनौत नदीपर मेंहदी अलीका बनवाया हुआ एक बड़ा पुल है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय शाहजहांपुर कसबे और फौजी छावनीमें ७८५२२ मनुष्य थे, (३९१६९ पुरुष और ३९३५३ स्त्रियां) अर्थात् ४००२८ मुसलमान, ३७७२५ हिंदू, ६६२ कृस्तान, ९१ सिक्ख १५ जैन और १ पारसी। मनुष्य-संख्याके अनुसार शाहजहांपुर भारतवर्षमें ३९ वां और पश्चिमोत्तर प्रदेशमें ८ वां शहर है।

शहरकी सबसे अधिक लम्बाई उत्तरसे दक्षिण तक ४ मीलसे अधिक और चौडाई लगभग १ मील है। शहरके मध्य भागमें प्रधान सड़कपर तहसीली-कचहरी, पुलिस स्टेशन और अस्पताल, शहरके किनारेपर जेल हाईस्कूल और पुलिसकी लाइने और अधिक उत्तर जिलेकी दीवानी, फौजदारी और मालकी कचहरियां और फौजी बारके हैं। इनके अतिरिक्त शाहजहांपुरमें ४ गिर्जे, कई एक स्कूल और ३ बाजार हैं। पहला बाजार सिविल स्टेशनके निकट, दूसरा दक्षिणी अखीरके पास आर तीसरा शहरके मध्यमें तरकारीका बाजार है, जिसको सन् १८७८-७९ में म्युनिसिपालिटीने बनवाया।

शाहजहांपुर व्यापारके लिये प्रसिद्ध नहीं है। यहां चीनी बहुत तय्यार होती है और दूसरे देशोंमें जाती है।

शाहजहांपुरसे २ मील दूर देवहा नदीपर रेलवेका पुल है। शहरसे सुन्दर सड़कें लखनऊ, बरैली, फर्रुखाबाद, पीलीभीत, मुहम्मदी और हरदोई गई हैं।

शाहजहांपुर जिला-यह रुहेलखंड डिविजनका पूर्वी जिला है। इसके पश्चिमोत्तर और उत्तर पीलीभीत और बरैली जिले, पूर्व खीरी जिला, दक्षिण हरदोई जिला और पश्चिम बदाऊं और बरैली जिले हैं जिलेका क्षेत्रफल १७४५ वर्गमील है।

जिलेमें रामगंगा और देवहा (गारा) नदी वहती हैं। रामगंगामें जलालावादके निकट कोलघाट तक सर्वदा नाव चलती है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय शाहजहांपुर जिलेमें ९१८४१९ मनुष्य थे, अर्थात् ४९४९४४ पुरुष और ४२३४७५ स्त्रियां। जिलेमें हिंदू अधिक हैं। मनुष्य-संख्यामें सातवें भाग मुसलमान बसते हैं।

हिन्दुओंमें कुर्मी सब जातियोंसे अधिक हैं। इनके पश्चात् क्रमसे चमार, अहीर, राजपूत, ब्राह्मण और काछीके नम्बर हैं। जिलेमें ६ कसबे हैं,—शाहजहांपुर (मनुष्य-संख्या ७८५२२), तिलहर (मनुष्य-संख्या १७२६५), जलालाबाद, खोदागञ्ज, मीरनपुर-कटरा, और पुवांया।

इतिहास—सन् १६४७ ई० में बादशाह शाहजहांके राज्यके समय नवाब बहादुरखां पठानने बादशाहके नामसे इस शहरको बसाया।

सन १७७४ ई० से रुहेलखण्ड अवधके नवाबके अधिकारमें था। सन् १८०१ में लखनऊकी सन्धिके अनुसार अङ्गरेजोंने रुहेलखण्डके जिलोंके साथ शाहजहांपुर जिलेको ले लिया।

सन् १८५७ की तारीख १५ वीं मईको मेरठकी बगावतकी खबर शाहजहांपुरमें पहुंची। ता० ३१ वीं मईको जब बहुतेरे सिविल और फौजी अफ्सर गिर्जेमें थे, बहुतेरे सिपाहियोंने उसमें घुसकर उनपर आक्रमण किया। ३ यूरोपियन मारेगए, शेष लोगोंने फाटक बंद कर दिया और अपने नौकर और १०० इमान्दार सिपाहियोंकी सहायतासे गिर्जे पर अधिकार रक्खा। पश्चात् दूसरे अफसरोंके वहां पहुंच जाने पर संपूर्ण बागी वहांसे भागे। बलवाइयोंने स्टेशनको जलादिया और खजानेको लूटा, पीछे यूरोपियन लोग बरैली चलेगए। शाहजहांपुर बगावतका स्थान हुआ।

सन् १८५८ के ३० अप्रेलको जब लार्ड क्लाइडके अधीन अङ्गरेजी सेना शाहजहांपुरमें पहुंची, तब बागियोंका सरदार मुहम्मदी भागगया। ता० २ मईको जब अंगरेजी अफ्सर केवल थोड़ी सेना छोड़कर बरैली चलेगए, तब फिर एकबार शाहजहांपुरमें बागी इकट्ठे हुए और ९ दिनों तक महासरा किए रहे, परन्तु १२वीं मईको अंगरेजी सेनाके आनेपर वे भागगए।

तिलहर।

शाहजहांपुरसे १२ मील (लखनऊसे ११४ मील) पश्चिमोत्तर तिलहरका रेलवे स्टेशन है शाहजहांपुर जिलेमें तहसीलीका सदर स्थान तिलहर एक कसबा है।

सन १८९१ की मनुष्य—गणनाके समय तिलहर म्युनिसिपलिटीके भीतर, जिसमें आस पासकी कई बस्ती भी शामिल हैं, १७२६५ मनुष्य थे, अर्थात् ८८२६ हिंदू, ८४१३ मुसलमान २४ क्रस्तान और २ सिक्ख।

कसबा टूटी हुई दीवारसे घेरा हुआ है। इसके पूर्व और पश्चिम फाटक हैं। सन् १८८१ में म्युनिसिपलिटीकी ओरसे एक बड़ा बाजार बना, परन्तु उसमें कम व्यापार होता है। एक पक्की सड़क शाहजहांपुरसे तिलहर होकर बरैली गई है।

सन् १८५७ के बलवेके समय तिलहरके मुसलमान जमींदार बागियोंमें मिले थे, इसलिये उनकी मिलकियत जप्त कर ली गई।

बरैली।

तिलहरसे ३२ मील और (लखनऊसे १४६ मील) पश्चिमोत्तर बरैली रेलवेका जंक्शन है। पश्चिमोत्तर प्रदेशके रुहेलखण्ड विभाग और बरैली जिलेका सदर स्थान (२८ अंश २२ कला ९ विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश २६ कला ३८ विकला पूर्व देशांतरमें) समुद्रके जलसे ५५० फीट ऊपर राम गंगा नदीसे कई मील दूर बरैली एक शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बरैली और छावनीमें १२१०३९ मनुष्य थे, (६४४३५ पुरुष और ५६६०४ स्त्रियां) अर्थात् ६५८२१ हिन्दू, ५९७८९ मुसलमान, ३२५० क्रस्तान, १७१ सिक्ख, ६ पारसी, १ जैन और १ बौद्ध। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें २० वां और पश्चिमोत्तर देशमें ५ वां शहर है।

रेलवे स्टेशनके निकट एक सुन्दर पक्की सराय है, जिसमें मैं टिका था। थोडी दूर आगे बड़ा जेल और एक कल कारखाना और स्टेशनसे १ मील शहर है। प्रधान सड़कके दोनों किनारों पर २ मीलकी लंबाईमें सुन्दर दुकानोंकी पंक्तियां हैं। सड़कके पश्चिम छोरपर दो मंजिले फाटकमें मोदियोंकी कई दुकानें हैं, जिससे पूर्व सड़कके किनारों पर बाजारका चौक, कोतवाली, तहसीली, कुतुबखाना और घड़ीका बुर्ज क्रमसे मिलते हैं। चौकसे उत्तर एक ठाकुरद्वारेमें महावीरकी प्राचीन मूर्ति है। वहां हिंदू यात्री सुखसे टिक सकते हैं। बरैलीके खानगी मकानोंमेंसे अधिक मकान मट्टीके हैं। लगभग २३००० मकानोंमेंसे केवल ६९०० पक्के हैं। नये बाजारोंमेंसे इंगलिशगंज साफ और अच्छा बाजार है। बरैलीमें कपड़े गल्ले और चीनीकी बड़ी तिजारत होती है और मेज, कुर्सियां, साज आदि घरऊ सामग्री सुन्दर बनती हैं और सस्ते दाममें मिलती हैं। बरैली शहरसे पक्की सड़क एक ओर मुरादाबादको ५५ मील और दूसरी ओर काठगोदामको ६३ मील गई हैं।

बरैलीका सिविल स्टेशन और फौजी छावनी खुले हुए मैदानमें हैं। छावनियोंमें आरटिलरीका एक बैटरी और सिवाय देशी सवारोंके युरोपियन और देशी पैदलके रेजीमेंट हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय छावनीमें ६३३९ हिंदू २२७२ मुसलमान, १४३० क्रस्तान और २१६ दूसरे थे।

बरैलीमें कैदी लड़कोंके पढ़ानेके लिये जेलखानेका एक स्कूल है, जिसमें लगभग १२५ कैदी लड़के हैं, जिनसे ६ घंटे मेहनतका काम और ४ घंटे पढ़नेका काम लिया जाता है और बीच बीचमें ४ घंटे आराम, खेल और खानेकी छुट्टी मिलती है।

पुराने कसबेमें बैरलदेवका उजड़ा पुजड़ा पुराना किला है। छावनीके भीतर मजबूत नया किला है। मसजिदोंमें प्रधान (लगभग १६०० ई० की बनी हुई) मिरजा मसजिद और मकरंदरायकी (सन् १६५७ में) बनवाई हुई जुमा मसजिद है। शहरके निकट रामपुरके नवाबका एक महल है। बरैलीमें एक गिर्जा, दो जेल, एक पागलखाना, एक गवर्नमेंट कालिज और जिलेकी कचहरियां हैं।

रामगंगा नदी शहरसे ६ मील दूर है। शहरसे नदी तक पक्की सड़क है। नदीकी धारके ऊपरकी ओर रेलवे पुल बना है। नदीके किनारे पर मढ़ी बांध कर कई एक घाटियाँ ब्राह्मण रहते हैं। यहां कार्तिक पूर्णिमा और जेष्ठके दशहेरको रामगंगा स्नानके मेले होते हैं और दो दो दिनों तक रहते हैं। रामगंगा नदी हिमालयके लोहवा पहाड़से निकल कर बरैली और मुरादाबाद होती हुई, लगभग ३०० मील बहनेके उपरांत फर्रुखाबादसे नीचे गंगामें मिल गई है।

बरैली जिला—जिलेके पूर्व पीलीभीत जिला, दक्षिण शाहजहांपुर और बदाऊं जिले, पश्चिम बदाऊं जिला और रामपुरका राज्य और उत्तर तराई जिला है। जिलेका क्षेत्रफल १६१४ वर्गमील है।

जिलेमें पहाडियां नहीं हैं। रामगंगा और बैगुल प्रधान नदियां हैं। जिलेमें दूसरी अनेक छोटी धारा बहती हैं। जिलेकी बस्तियोंके मकानोंकी छत मट्टीकी हैं, परंतु बड़े कसबोंमें सा-

धारण तरहसे वे खपड़ेके हैं, जिनमें बहुधा दो मंजिले बने हैं । उत्तर तराईके निकट अनेक मकान स्तंभों पर बने हैं, क्योंकि उधर जमीनसे थोड़ेही नीचे पानी है

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बरैली जिलेमें १०४१३६८ मनुष्य थे, अर्थात् ५५५७७९ पुरुष और ४८५५८९ स्त्रियां । निवासी अधिक हिंदू हैं । मनुष्य संख्यामें चौथाई भागसे कम मुसलमान और लगभग २५०० क्रस्तान हैं । हिंदुओंमें कुर्मी बहुत अधिक हैं । बाद क्रमसे चमार, काछी, ब्राह्मण, कहार, अहीर तब राजपूतके नंबर हैं । जिलेमें ४ कसबे हैं, बरैली (जनसंख्या १२१०३९), आंबोला (जनसंख्या १३५५९), सरौली पियास और फरीदपुर।

इतिहास–ऐसी कहावत है कि लगभग सन् १५३७ ई० में वासुदेव और बैरलदेवने शहरको बसाया । बैरलदेवके नामसे शहरका नाम बरैली पड़ा ।

मोगल बादशाहोंने अपने राज्यकी पूर्वी सीमा पर बरैलीमें फौजको रक्खा । पड़ावके चारों ओर शीघ्रही एक नगर बसा, जो बहुत दिनों तक केवल फौजी स्टेशन था । सन् १६५७ में हिंदू गवर्नर राजा मकरंदरायने बरैलीके नए शहरको कायम किया, पुराने कसबेके पश्चिमके जंगलको काट डाला और कैथेरियोंको पड़ोससे निकाल दिया । सन् १६६० से शाही गवर्नर बरैलीमें बराबर रहते थे, परंतु सन् १७०७ में औरंगजेबके मरने पर हिंदुओंने झगड़ोंका सिलसिला आरंभ किया । इसके पश्चात् लगभग ५० वर्ष तक बरैली रुहेलोंकी राजधानी रही । उसके बाद अंगरेजोंने इसको जीतकर अवधके वजीरको दिया और सन् १८०१ में वजीरसे इसको ले लिया । तबसे बरैली रुहेलखंड डिविजन और बरैली जिलेका सदर हुई ।

सन् १८१६ में एक नया 'कर' जारी होने पर बलवा हुआ । एक मुसलमान महम्मद एवेजके आधीन ५००० हथियारबंद आदमियोंने अंगरेजी फौजों पर आक्रमण किया । एक बड़ी लड़ाईके पीछे वे भगाए गए और उनमेंसे कई एक मारे गए और घायल हुए । इसके पीछे शहरके दक्षिण रेलवे स्टेशनके निकट गवर्नमेंटने एक छोटा किला बनवाया था ।

सन् १८५७ ई० की तारीख ३१ मईको बरैलीमें बगावत हुई । छावनीमें केवल देशी सेना थी । वहां बहुत सिविलियन और लड़के और स्त्रियोंके अतिरिक्त लगभग १०० अंगरेज थे । ६८वीं पलटनके बागियोंके यूथोंने अंगरेजी मकानोंमें आग लगादी और वे लोग युरोपियनोंको गोली मारने लगे । १८ वीं पलटनके ५ अंगरेज भागे, जिनको गांव वालोंने मार डाला । कमिश्नर, कलक्टर और २ जंट मजिष्टर नैनीतालको भाग गए । २ जज और २ डाक्टर मारेगए । बलवाइयोंने अनेक ऊंचे दर्जेके सिविलियनोंको उनके मातहतियोंके साथ और बहुतेरे तिजारती और सौदागर युरोपियन लोगोंको उनके लड़के और स्त्रियोंके सहित मारडाला । प्रसिद्ध रोहिला प्रधान हाफिज रहमतखांके वंशका एक आदमी गवर्नर बनाया गया । उसने सब क्रस्तानोंको मार देनेका हुक्म दिया। सन् १८५८ की तारीख ५वीं मईको अंग्रेजी सेना बरैली शहरके निकट पहुंची । दो दिनोंके पश्चात् बागी अवधमें भाग गए । अंगरेजोंने बरैलीपर अधिकार कर लिया ।

पीलीभीत ।

बरैलीसे १२ मील उत्तर भोजपुरा जंक्शन और भोजपुरासे २४ मील पूर्वोत्तर 'पीलीभीत' का रेलवे स्टेशन है । पीलीभीत पश्चिमोत्तर प्रदेशके रुहेलखंड विभागमें जिलेका सदर स्थान देवहा नदीके बाएं किनारे पर एक कसबा है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पीलीभीतमें ३३७९९ मनुष्य थे, (१७२३५ पुरुष और १६५६४ स्त्रियां) अर्थात् १९८८१ हिंदू, १३८४७ मुसलमान और ७१ क्रस्तान ।

कसवेके पश्चिम रोहिला-प्रधानोंके महल और रोहिला-प्रधान हाफिज रहमतखांकी बनवाई हुई दिल्लीकी जामा मसजिदके नकलकी एक जामा मसजिद और एक हमाम, जिसको लोगोंने सुधारा है, हीन दशामें खड़े हैं। पबलिक इमारतोंमें गवर्नमेंटकी कचहरियां आफिसें और सराय हैं । पीलीभीतके देवमंदिरोंमें सेठ ललिताप्रसादका, सेठ जगन्नाथजीका, लाला श्याम सुन्दरलालका और लाला खूबचंदका मन्दिर मुख्य है ।

पीलीभीतमें २ बड़े वाजार हैं, तराईसे चावल, नैपाल और कुमाऊंसे मिरच और सोहागा और दूसरे स्थानोंसे मधु, मोम, ऊन इत्यादि वस्तु लाई जाती हैं और गल्ला, निमक और कपड़े दूसरे देशोंसे आते हैं । चीनी पीलीभीतसे दूसरे देशोंमें जाती है और धातुके वर्तन और गाडी इत्यादि लकड़ीकी वस्तु यहां बहुत बनती है ।

पीलीभीत जिला-इसके पूर्व नैपालका स्वाधीन राज्य और शाहजहांपुर जिला, दक्षिण शाहजहांपुर, पश्चिम वरैली और उत्तर तराई जिले हैं । जिलेका क्षेत्रफल १३७१ वर्गमील है । सारदा और देवहा जिलेकी प्रधान नदियां हैं सारदा नदी कुमाऊं पहाड़ियोंमें १५० मील बहनेके उपरांत अंगरेजी और नैपाल राज्योंकी सीमा बनती है और खीरी जिलेमें जाकर कौरियाला नदीसे मिल जाती है । कौरियाला नदी सरयूके संगमके पश्चात् घाघरा वा सरयू कही जाती है । 'देवहा', जिसको नंदा भी कहते हैं, कुमाऊंके भावरसे निकलकर उत्तरसे इस जिलेमें प्रवेश करती है और दक्षिण वरैली जिलेमें जाकर शाहजहांपुर और हरदोई जिलाम जाती ह ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पीलीभीत जिलेमें ४८६२४० मनुष्य थे, अर्थात् २५८७२५ पुरुष और २२७५१५ स्त्रियां । निवासी हिंदू बहुत हैं । मनुष्य-संख्याके छठवें भाग मुसलमान हैं । हिंदुओंमें राजपूत वहुत अधिक हैं । बाद क्रमसे कुर्मी, लोधी, चमार, ब्राह्मण और काछीके नम्वर हैं । जिलेमें २ कसवे हैं, पीलीभीत (जन-संख्या ३३७९९) और विंसलपुर ।

इतिहास-सन् १७४० ई० में रोहिला-प्रधान हाफिज रहमत खांने पीलीभीत कसवे और परगनेपर अपना अधिकार करलिया और पीलीभीतको अपनी राजधानी बनाया । सन् १७५४ में पीलीभीत रुहेलखंडकी राजधानी हुई । हाफिज रहमत खांने पीलीभीत कसवेको ईंटेकी दीवारसे घेरा, जो उसके मरनेके पश्चात् गिरा दी गई । सन १७७४ की लडाईमें अवध-के नवावने हाफिज रहमतखांको मारकर पीलीभीत पर अधिकार कर लिया । सन् १८०१ में वकीए रुहेलखंडके साथ अंगरेजोंने इसको ले लिया ।

सन् १८५७ के वलवेके समय पीलीभीत वरैली जिलेमें एक सब डिविजन थी । तारीख पहिली जूनको वरैलीकी फौजके वागी होनेकी खबर पीलीभीतमें पहुंची । नगरमें एक वारगी बलवा टूट पडा, लूटपाट और मारकाट होने लगी । ज्वाएंट मजिष्ट्रेट नैनीतालमें भाग गया । सन् १८५८ में फिर अंगरेजी अधिकार हो गया । सन् १८७९ में वरैली जिलेकी पीलीभीत, पूरनपुर और वहेरी ये तीन तहसीलें बरैलीसे निकालकर पीलीभीत जिला बनाया गया । सन् १८८० में वहेरी फिर वरैलीमें गई और विंसलपुर तहसीली पीलीभीत जिलेमें जोडी गई ।

सातवां अध्याय ७.

(रुहेलखंडमें) चंदौसी, मुरादाबाद, संभल, रामपुर, धामपुर, बिजनौर, नगीना और नजीबाबाद।

चंदौसी।

बरैलीसे ४४ मील पश्चिम कुछ उत्तर और लखनऊसे १९० मील पश्चिमोत्तर चंदौसीका रेलवे जंक्शन है। चंदौसी पश्चिमोत्तर प्रदेशके मुरादाबाद जिलेमें सोत नदीसे ४ मील पश्चिम एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय चंदौसीमें २८१११ मनुष्य थे, (१५०४८ पुरुष और १३०६३ स्त्रियां) अर्थात् २०१४४ हिन्दू, ७७४९ मुसलमान, १८१ क्रस्तान, ३२ जैन ४ सिक्ख और १ पारसी।

चंदौसीमें एक अस्पताल और एक मिल (कल कारखाना) है। रुहेलखंडके चारों ओरके देशके लिये यह प्रधान बाजार है। यहांसे दूसरे देशोंमें चीनी बहुत जाती है।

रेलवे-चंदौसीसे 'अवध रुहेलखंड रेलवे' लाइन ३ ओर गई है, जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रतिमील २ १/२ पाई है।

(१) चंदौसीसे पश्चिमोत्तर-

मील प्रसिद्ध स्टेशन-

१२ मुरादाबाद।
५० धामपुर।
६० नगीना।
७४ नजीबाबाद।
९९ लक्शर जंक्शन।
१०६ लंधौरा
१११ रुड़की।
१३२ सहारनपुर जंक्शन।

लक्सर जंक्शनसे पूर्वोत्तर-

मील-प्रसिद्ध स्टेशन-

१४ ज्वालापुर।
१६ हरिद्वार।

(२) चंदौसीसे दक्षिण पश्चिम-

मील-प्रसिद्ध स्टेशन-

३१ राजघाट।
४३ अंतरौली रोड़।
६१ अलीगढ़ जंक्शन।

अलीगढ़से 'इष्टइंडियन रेलवे' पर एक ओर ६६ मील-गाजियाबाद जंक्शन और ७९ मील दिल्ली जंक्शन और दूसरी ओर १८ मील-हाथरस जंक्शन और ४७ मील मथुरा छावनीका स्टेशन है।

(३) चंदौसीसे दक्षिण पूर्व

मील-प्रसिद्ध स्टेशन-

४४ बरैली।
५६ फरीदपुर।
६६ फतहगंज।
७६ तिलहर।
८८ शाहजहांपुर।
१२६ हरदोई।
१४१ बघौली।
१५९ संडीला।
१९० लखनऊ जंक्शन।

मुरादाबाद ।

चंदौसीसे १२ मील पश्चिमोत्तर मुरादाबादका रेलवे स्टेशन है। मुरादावाद पश्चिमोत्तर प्रदेशके रुहेलखंड विभागमें (२८ अंश ४९ कला ५५ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश ४९ कला ३० विकला पूर्व देशांतरमें) जिलेका सदर स्थान रामगंगाके दहिने किनारे पर एक छोटा शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मुरादाबाद शहर और छावनीमें ७२९२१ मनुष्य थे, (३७२४९ पुरुष और ३५६७२ स्त्रियां) अर्थात् ३९४८३ मुसलमान, ३२२७२ हिंदू, ८९० कृस्तान, २५८ जैन, १६ सिक्ख और २ पारसी। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ४६ वां और पश्चिमोत्तर देशमें १० वां शहर है।

मुरादाबादमें जामा मसजिद (सन १६३४ ई० की बनी हुई), मुरादाबादके गवर्नर नवाब आजमतुल्लाखांका मकबरा, म्युनिसिपल हाल, तहसीली, मिशन चर्च हाई स्कूल, अस्पताल, पोष्टआफिस और जेल प्रधान इमारतें हैं। जेलके पश्चिमोत्तर फौजी छावनी और सिविल स्टेशन हैं। देशी महल्ले और छावनीके बीचमें कलक्टरके आफिस और सिविल कचहरियां हैं। छावनीके दक्षिण रेलवे स्टेशन है। छावनीमें एक पूरी देशी पैदल रेजीमेंट और युरोपियन रेजिमेंटका एक भाग है। रेलवे स्टेशनसे २ मील दूर स्कूलके उत्तर रामगंगाके किनारे पर मुरादाबादके बसानेवाले रुस्तमखांके किलेकी निशानी ४ फीटसे ६ फीट तक ऊंची ईटेकी एक दीवार है। यहां एक बड़ा कूँवा है, जिससे रुस्तमखांके टकशालमें पानी जाता था। रामगंगाके किनारे पांच सात पक्के घाट बने हैं। थोड़ी दूर पर रामगंगाके ऊपर ११ पायोंका पुल है। किनारेकी ओर छोटे छोटे मन्दिरोंके सहित अनेक वाटिकाएं लगी हैं।

मुरादाबाद कसवा देशके पैदावारकी सौदागरीका बड़ा केन्द्र है। गल्ला, चीनी, घी, तेल और तेलके अनेक प्रकारके बीज, कपड़े, धातु, इत्यादि वस्तु बहुत आती हैं। यहां पारेकी कलईका काम अच्छा होता है और भरतके बरतन अच्छे बनते हैं, इस काममें हजारों आदमी लगे हैं।

मुरादाबाद जिला–इसके पूर्व रामपुरका राज्य, दक्षिण बदाऊं जिला, पश्चिम गंगा नदी जो बुलन्दशहर और मेरठ जिलोंसे इसको अलग करती है और उत्तर बिजनौर और तराई जिले हैं। जिलेका क्षेत्रफल २२८१ वर्गमील है। जिलेमें गंगा, रामगंगा और सोत ये ३ प्रधान नदियां हैं। गंगा और सोत इन दो नदियोंमें सर्वदा नाव चलती हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मुरादाबाद जिलेमें ११७८३०० मनुष्य थे, अर्थात् ६२४२९० पुरुष और ५५४०१० स्त्रियां। इस जिलेमें दो तिहाई हिन्दू और एक तिहाई मुसलमान और लगभग २००० कृस्तान हैं। चमार सब जातियोंसे अधिक अर्थात् लगभग दो लाख हैं। इनके बाद क्रमसे माली, जाट, ब्राह्मण, अहर (अहीर नहीं) राजपूत, कहार, बनियां इत्यादि जातियोंके नंबर हैं। इस जिलेमें १३ कसबे हैं,–मुरादाबाद (जन संख्या ७२-९२१), संभल (जन-संख्या ३७२२६); अमरोहा (मुरादाबाद शहरसे २३ मील पश्चिमोत्तर, जन-संख्या ३५२३०), चंदौसी (२८१११), सोलासराय (१०३०४), हसनपुर, बछरांव, मऊनगर, सिरसा, ठाकुरद्वारा, धनौरा, मोगलपुर और नरवली।

इतिहास-सन् १६२५ ई० में रुस्तमखांने मुरादाबाद शहरको बसाया और बादशाह शाहजहांके पुत्र शाहजादे मुरादके नामसे इसका नाम मुरादाबाद रक्खा। रुस्तमखांके गढ़की निशानी अबतक रामगंगाके किनारे पर देखी जाती है।

सन् १७७४ में मुरादाबाद जिला रुहेलखंडके दूसरे जिलोंके सहित अवधके नवावके हाथमें आया। १८०१ में अंगरेजोंने उसको लेलिया।

सन् १८५७ ई० की तारीख १८ मईको मेरठसे एक रेजीमेंट बागी होकर मुरादाबादमें आई और गंगन पुलके पास पहुंची। बागी लोग मुजफ्फरनगरसे बहुत खजाने लाए थे। मिस्टर विलसन २९ वें पलटनके एक दलके साथ उनके पास पहुंचा। बागियोंमेंसे८वा १०पकड़े गए और एक गोलीसे मारा गया और उनसे खजाना छीन लिया गया। दूसरे दिन बागियोंने मुरादाबादमें प्रवेश किया। उनमेंसे एक गोलीसे मारागया और ४ कैदी बनाए गए, परन्तु जब बरैलीसे बगावतकी खबर पहुंची, तब सेनाको अख्तियारमें रखना असंभव हुआ। विलसन साहब खजाना छोडकर सिविलियनों और उनकी स्त्रियोंके सहित मेरठको भाग गया। कुछ दिनोंके पश्चात् मुरादाबाद पर फिर अंगरेजी अधिकार होगया।

संभल।

मुरादाबाद शहरसे २३ मील दक्षिण-पश्चिम सोत नदीसे ४ मील पश्चिम मुरादाबाद जिलेमें संभल-तहसीलीका सदर स्थान एक टीले पर संभल कसवा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय संभल में ३७२२६ मनुष्य थे, (१८७१९ पुरुष और १८५०७ स्त्रियां) अर्थात् २३४७६ मुसलमान, १३५९४ हिंदू, ८८ जैन आर ६८ कृस्तान।

संभलका वर्तमान कसवा पीछेका है। पुराने कसबेके स्थानमें भालेश्वर और विकटेश्वर की तबाहियोंके २ ढेर हैं। संभल सुन्दर कसबा है। इसमें अधिक मकान ईटेके बने हैं और मुनसफी, तहसीली, पुलिसस्टेशन, अस्पताल, गिर्जा, सराय, और कई एक स्कूल हैं। यहां चीनी और कपड़े तय्यार होते हैं। गेहूँ इत्यादि गल्ले और घी यहांसे दूसरे स्थानोंमें जाते हैं।

संभलमें रेल नहीं गई है। कसबे और उसके आस पास पक्की सड़कें हैं। कच्ची सड़कें यहांसे मुरादाबाद, बिलारी, अमरोहा, चंदौसी, बहजोई और हसनपुर गई हैं।

इतिहास-रुहेलखंड पूर्वकालमें पंचालाके अहर राज्यका हिस्सा था। अब तक अहर लोग मुरादाबाद जिलेके दक्षिण पूर्वके परगनों पर कबजा रखते हैं। जान पडता है कि उनकी राजधानी बरैली जिलेमें अहिच्छत्रा थी। यद्यपि प्रथमहीसे संभल प्रसिद्ध हुआ था, परन्तु चीन के रहने वाले हुएत्संगने ७ वीं शताब्दीमें काशीपुर और अहिच्छत्राको देखा था परन्तु उसने संभलका हाल नहीं लिखा है।

मुसलमानी अधिकारके आरंभ हीसे संभल कसवा स्थानीय गवर्नमेंटका सदर स्थान था। अकबरके राज्यके समय यह एक सरकारकी राजधानी थी। बादशाह शाहजहांने रुस्तमखांको कठारका गवर्नर नियत किया, जिसने लगभग १६२५ ई० में मुरादाबादको वसाया।

संक्षिप्त प्राचीन कथा-महाभारत-(वनपर्व-१९० वां अध्याय) संभल गांवके विष्णुयश नामक ब्राह्मणके गृहमें विष्णुका कल्कि अवतार होगा। (यह कथा देवी भागवत, मत्स्य पुराण, विष्णुपुराण और श्रीमद्भागवतमें भी है)

गरुड़पुराण-(पूर्वार्द्ध ८१ वां अध्याय) संभलग्राम एक उत्तम स्थान है।

अग्निपुराण (१६ वां अध्याय) विष्णुयशके पुत्र कल्कि भगवान होंगे। वह अस्त्र-शस्त्र धारण करके म्लेच्छोंका विनाश और ब्राह्मण आदि चारों वर्णोंकी यथोचित मर्य्यादा और ब्रह्मचर्य आदि चारों आश्रमोंके सतमार्गको स्थापन करेंगे। इसके उपरांत वह स्वर्गमें चले जांयगे, सत्ययुग प्राप्त होगा, और संपूर्ण जीव अपने अपने धर्म्ममें तत्पर होजायंगे।

कल्किपुराण-(पहला अंश, दूसरा अध्यायं) जब कलियुगके दोषोंसे धर्म्मकी बड़ी हानी होने लगी, तब इन्द्रादि दैवता ब्रह्माजीके साथ गोलोक निवासी विष्णुके पास गये। ब्रह्माने देवताओंके हृदयकी अभिलाषा विष्णुसे कह सुनाई विष्णु भगवानने संभलग्राममें विष्णु-यश ब्राह्मणकी सुमती नामक स्त्रीके गर्भसे वैशाख शुक्ल द्वादशीके दिन औतार लिया। कल्कि भगवानसे पहिले कवि, प्राज्ञ और सुमंत नामक उनके तीन भ्राता उत्पन्न हुए थे।

(३ अध्याय) कल्कि भगवानने बिल्वोदकेश्वर शिवकी बड़ी स्तुतिकी, जिससे शिव प्रकट हुए। भगवान शंकरने कल्कि भगवानको कई वरदानोंके अतिरिक्त एक घोड़ा जो गरुडके अंशसे था, एक सर्वज्ञ शुक (तोता) और एक विकराल तलवार दी।

(४ अध्याय) एक समय शुकने आकर कल्कि भगववानसे कहा कि महाराज! सिंहलद्वीपमें राजा बृहद्रथकी पद्मावती नामक कन्या है, उसको शिवजीने वर दिया है कि नारायण तुम्हारे पति होंगे, दूसरे जो पुरुष काम वासनासे युक्त होकर तुमको देखेंगे, वे तत्का-लही स्त्री होजायँगे। (५ वां अध्याय) बृहद्रथने कन्याके स्वयम्वरमें बहुत बली राजाओंको बुलवाया। जब कन्या स्वयम्वरकी सभामें प्राप्त हुई, तब राजागण उसके अपूर्व रूपका देख कामातुर हो उसकी ओर देखने लगे, वे लोग कन्याको देखतेही स्त्री रूप होगए, और अपनेको स्त्री रूप देखकर पद्मावतीकी सखी बन गए।

(६ वां अध्याय) भगवानने पद्मावतीके लिये शुकको सिंहलद्वीपमें भेजा।

(दूसरा अंश, पहला अध्याय) शुकने पद्मावतीके पास जाकर कल्किजीका वृत्तांत कहा। पद्मावतीने उनको लानेके लिये यत्नपूर्वक शुकको भेजा। शुकसे पद्मावतीका वृत्तांत सुन कल्किजी सिंहलद्वीपमें गए।

(तीसरा अध्याय) राजा बृहद्रथने भगवानको अपने महलमें लेजाकर कन्यादान कर दिया। जो राजागण स्त्री रूप हो जानेपर पद्मावतीकी सखी हो गए थे, वे कल्कि भगवानकी आज्ञानुसार रेवानदीमें स्नान करनेके उपरान्त फिर पुरुष होगए।

(५ वां अध्याय) विश्वकर्म्माने इन्द्रकी आज्ञासे संभलग्राममें आकर महल आदि सब उत्तम राजसी सामान तय्यार कर दिए। संभलग्राम ७ योजन चौड़ा था। कल्कि भगवान पद्मावती सहित संभलमें आए। कुछ दिनोंके उपरान्त पद्मावतीसे जय और विजय नामक कल्किजीके २ पुत्र उत्पन्न हुए।

जब भगवानके पिता विष्णुयश अश्वमेधयज्ञ करनेको उद्यत हुए, तब कल्कि भगवान दिग्विजयको निकले। पहले वह कीकटपुरको चले, जो अत्यन्त विस्तार युक्त बौद्धोंका प्रधान स्थान था। वहां वैदिक धर्म्मका अनुष्ठान नहीं होता। कीकटपुरके राजाका नाम जिन था। वह कल्किजीके आगमनको सुन दो अक्षौहिणी सेना ले युद्धके लिए नगरसे बाहर आया।

(सातवां अध्याय) बड़े युद्धके अनन्तर कल्किजीकी सेनाओंने करोड़ों बौद्धोंका नाश कर दिया। जब कल्किजीने बौद्धोंके राजा जिनको मार डाला, तब राजा जिनका भाई शुद्धो-

दन लड़नेको आया । बड़े भयंकर युद्धके उपरान्त शुद्धोदन रथपर बैठा कर मायादेवीको ले आया। जब त्रिगुणरूपा मायादेवीको सन्मुख देख एक एक करके प्रायः सब लोग गिर गए, कितने तेज हीन होकर काठके पुतलीकी समान खड़े रह गए, तव सर्वव्यापी कल्कि भगवान मायादेवीके आगे स्थित हुए, उसी समय वह मायादेवी उनके शरीरमें प्रवेश करके लीन हो गई। बौद्ध सेना परास्त हुई ।

(तीसरा अंश ५ वां अध्याय) जब सत्ययुग सन्यासी वेषसे कल्कि भगवानके समीप आया, तब कल्किजीने कलियुगके नगरपर आक्रमण करनेकी इच्छा की।

(६ वां अध्याय) मरु (सूर्य्यवंशी) और देवापि (चन्द्रवंशी) दोनों राजा कल्किजीके पास आए। भगवानने उनको विवाह करनेकी आज्ञा दी। दोनों राजा अपना २ विवाह कर असंख्य सेना लेकर भगवानके सन्मुख उपस्थित हुए। विशाषयूप राजा भी भारी सेना लेकर आए कल्कि भगवानको १० अक्षौहिणी सेना होगई । भगवानने कलिपर चढ़ाईकी। कलि अपनी सेना लेकर युद्धके निमित्त अपनी राजधानी विशसन नगरसे बाहर निकला।

(७ वां अध्याय) अनंतर धर्म्म और सत्ययुगके भयंकर बाणोंसे तिरस्कारको प्राप्त हो कलियुग अपनी नगरीमें भाग गया। भगवानकी सेना कलिकी सेनाका विनाश करने लगी। धर्म्मने सत्ययुगको साथ ले कलिकी राजधानी विशसन नगरमें प्रवेश किया । और बाणोंकी अग्निसे नगरीको भस्म कर दिया। जब कलिके सम्पूर्ण अंग जल गए, तब वह अकेलाही रोता हुआ गुप्त रीतिसे भारतवर्षसे अन्यत्र चला गया। इधर मरुने शक और काम्बोजोंका नाश कर दिया और देवापि राजाने शवर चोल तथा वर्वरोंको छिन्न भिन्न कर दिया। कल्कि भगवानने कोक और विकोक दोनों असुरोंको मार डाला। इस प्रकार भगवान धर्मद्वेषी शत्रुओंको जीतकर भल्लाट नगरको चले ।

(८ वां अध्याय) यद्यपि भल्लाट देशका राजा शशिध्वज भगवानका भक्त था, परन्तु वह अपना धर्म्म समुझकर युद्धमें प्रवृत्त हुआ। (९ वां अध्याय) युद्धके उपरांत शशिध्वजने कल्कि भगवानको परास्त कर धर्म्म और सत्ययुगको अपने बगलोंमें दाबकर अपने गृह चला गया।

(१० वां अध्याय) इसके पश्चात् शशिध्वजने रमा नामक अपनी पुत्री कल्कि भगवान को व्याहदी।

(१४ वां अध्याय) कल्कि भगवानने मरुको अयोध्यापुरीका राज्य, सूर्यकेतुको मनुष्य पुरीका राज्य और देवापिको वारणावतमें अरिस्थल, वृकस्थल, माकन्द, हस्तिनापुर और वारणावत इन पांच देशोंका राज्य दिया, और आप संभलको चले आए। त्रिलोकीमें सत्ययुग छा गया।

(१७ वां अध्याय) कल्कि भगवान अखण्ड भूमण्डल भोगने लगे। भगवानकी रमा नामक स्त्रीके गर्भसे मेघमाल और बलाहक दो पुत्र उत्पन्न हुए। (१८ वां अध्याय) कल्किजीने १००० वर्ष सम्भलमें निवास किया। संभलमें ६८ तीर्थोंका निवास हुआ। (१९ वां अध्याय) कल्कि भगवान अपने चारों पुत्रोंको राज्य देकर दोनों स्त्रियों समेत हिमालयमें जाकर अपने विष्णु रूपमें प्रवेश कर गए। दोनों स्त्रियां सती होगई देवापि और मरु दोनों राजा प्रजा पालन और भूमण्डलकी रक्षा करने लगे।

रामपुर।

मुरादाबाद शहरसे १८ मील पूर्व कोशिला नदीके बाएं किनारे पर पश्चिमोत्तर देशमें एक देशी राज्यकी राजधानी रामपुर एक छोटा शहर है। मुरादाबादसे रामपुरको पक्की सड़क गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय रामपुर और छावनीमें ७६७३३ मनुष्य थे, अर्थात् ४०६६० पुरुष और ३६०७३ स्त्रियां। इनमें ५३५५२ मुसलमान, २३०४४ हिंदू ९२ जैन और ४५ क्रस्तान थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ४१ वां शहर है।

शहरके चारों ओर शहरपनाहकी जगह पर ८ मीलसे १० मील तकके घेरेमें करीबन गोलाकार चौड़ी और घनी बांसकी झाड़ियां लगी हैं। आने जानेके लिये फाटकके स्थानोंपर ८ जगह रास्ते हैं। जहां फौजी सिपाही तैनात रहते हैं। शहर सुन्दर है, बहुतेरी अच्छी सड़कें हैं। बाजारमें सुन्दर दूकानोंकी पंक्तियां हैं। घेरेके मध्यमें जामा मसजिद और सफदर जंग स्केयर, पश्चिमोत्तर दीवाने आम, खुरसिद मंजिल, (जहां मेहमान युरोपियन टिकाए जाते हैं) मच्छीभवन (नवाबका खानगी महल) और जनाना है। और शहरसे उत्तर फैजुल्लाखांका मकबरा है। रामपुरमें सुन्दर मट्टीके बरतन, तलवार और जेवर बहुत बनते हैं।

रामपुर राज्य–यह पश्चिमोत्तर देशके गवर्नमेण्टके पोलिटिकल सुपरिटेंडेंटके अधीन रुहेलखण्डमें देशी राज्य है। इसके उत्तर और पश्चिम अंगरेजी राज्यमें मुरादाबाद जिला, पूर्वोत्तर और पूर्व-दक्षिण बरैली जिला है। राज्यका क्षेत्रफल १०९९ वर्गमील है।

राज्यके दक्षिणी भागमें रामगंगा, उत्तरी भागमें कोशिला और नहाल नदियां बहती हैं। और उत्तरी सीमा पर जंगलमें बहुधा बाघ मारे जाते हैं। देश समतल और उपजाऊ है। खेती करनेवालोंमें पठान अधिक हैं। चीनी, धान, चमड़ा और कपड़े दूसरे देशोंमें भेजे जाते हैं। राज्यमें ५ अस्पताल और १० स्कूल हैं। मजहबी शिक्षाके लिए रामपुर प्रसिद्ध है; बहुतेरे विद्यार्थी बङ्गाल, अफगानिस्तान और बोखारेसे यहां आते हैं।

सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय रामपुरराज्यमें ५५८२७६ मनुष्य थे। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय रामपुर राज्यमें ३ कसबें, १०७० गांव, १०३१७९ मकान, ५४१-९१४ मनुष्य थे, अर्थात् २८५३५९ पुरुष और २५९५५५ स्त्रियां। इनमें ३०२९८९ हिन्दू और २३८९२५ मुसलमान थे। हिन्दुओंमें ४७४६२ चमार, ४०१२५ लोधी, ३५३१९ कुर्मी, २०८१९ माली, १७९५१ काछी, १६०६५ कहार, १६०२९ ब्राह्मण, १५१९३ अहीर थे। मुसलमानोंमें केवल ५२८ सीया थे। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय राज्यके ३ कसबोंमें ५००० से अधिक मनुष्य थे। रामपुरमें ७६७३३, तांडामें ८०७२ और शाहाबादमें ७५-९६। सन् १८८०-८१ ई० में १५८६५७० रुपए राज्यसे आमदनी हुई थी।

मामूली तरहसे राज्यका सैनिक बल २८ तोपें, ३०० गोलन्दाज, ५७० सवार, ३०० फौजी पैदलपुलिस और ७३० अनेक प्रकारकी पैदल हैं।

इतिहास–शाह आलम और हुसेनखां दो भाई पहिला रोहिला अफगान और १७ वीं शताब्दीके पिछले भागमें मोगल बादशाहके पास नौकरीके लिए आए और हिन्दुस्तानके इस भागमें बसे। शाह आलमके पुत्र दाऊदखांने महाराष्ट्रोंकी लड़ाईमें वीरता दिखाकर बदाऊंके निकट इनाममें जमीन पाई। उसके गोद लिए हुए पुत्र अलीमहम्मदने सन् १७१९ई० में नवाबकी पदवी और रुहेलखंडका एक बड़ा भाग पाया। उसकी मृत्यु होनेके पश्चात् वह मिलकियत

बटगई । रामपुरकी जागीर उसके छोटेपुत्र फैजुल्लाखांको मिली । सन् १७९३में फैजुल्लाखांके मरने पर खानदानमें झगड़ा उठा । छोटे पुत्रने जागीर छीन ली । वडा पुत्र मारागया । अंगरेजोंने छोटे पुत्रको निकाल देने और वड़े पुत्रके लड़के अहमद अलीखांको पदस्थ करनेके लिये अवधके नवाव की सहायता की सन् १८०१ ई० में अंगरेजी सरकारने रुहेलखंड अंगरेजी राज्यमें मिला लेनेके समय रामपुरके खानदानका कवजा मजबूत किया । सन् १८५७ के वलवेकी खैरख्वाहीमें रामपुरके नवाव महम्मदमूसुफ अलीखांको १२८५२० रुपये खिराजकी भूमि मिली । सन् १८६४ में उसके पुत्र महम्मद कलवअलीखां जी० सी० एस० आई०सी० आई०, ई० उत्तराधिकारी हुए, जिनको दिल्ली दरबारमें पहिलेसे २ तोप वढ़ाकर १५ तोपोंकी सलामी मिलनेका हुकुम हुआ । रामपुरके वर्तमान नवाव हमीदअलीखां बहादुर १६ वर्षकी अवस्थाके पठान हैं ।

धामपुर ।

मुरादावादसे ३८ मील (चंदौसीके जंक्शनसे ५० मील) पश्चिमोत्तर धामपुरका रेलवे स्टेशन है । धामपुर पश्चिमोत्तर देशके विजनोर जिलेमें तहसीलीका सदर स्थान एक छोटा कसवा है । चौड़ी सड़कके किनारोंपर सुन्दर दूकानें बनी हैं । उत्तर ओर तहसीलीकी इमारतें और दक्षिण एक सराय है । धामपुरमें लोहे और पीतलकी वस्तु अच्छी बनती हैं, महीनेमें एक वार मेला होता है, और सप्ताहमें दोबार बाजार लगता है ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय धामपुरमें ५७०८ मनुष्य थे, अर्थात् ३४५७ हिंदू, २१२१ मुसलमान और १३० जैन ।

बिजनोर ।

धामपुरसे २४ मील पश्चिम (२९ अंश २२ कला ३६ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश १० कला ३२ विकला पूर्व देशांतरमें) पश्चिमोत्तर देशके रुहेलखंड विभागमें जिलेका सदर स्थान गंगाके ३ मील वाएं विजनोर एक छोटा कसवा है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय विजनौरमें १६२३६ मनुष्य थे, अर्थात् ८००७ हिंदू, ७९४८, मुसलमान, २१० कृस्तान, ६१ जैन और १० सिक्ख ।

चौड़ी सड़क कसबेके मध्य होकर गई है । कसबेमें मामूली से अधिक ईंटेके मकान हैं । यहां कारोबार वहुत होता है । कसवेसे चारों तरफके देशमें ९ सड़क गई हैं, चीनीकी तिजारत के लिये विजनोर प्रसिद्ध है । जनेऊ छुडी और कपड़े वहां वहुत वनते हैं ।

कसबेसे ६ मील दक्षिण दारा नगरमें कार्तिकी पूर्णिमाको गंगा स्नानका मेला होता है, जो ५ दिन रहता है । मेलेमें लगभग ४०००० यात्री आते हैं ।

विजनोर जिला-इसके पूर्वोत्तर कमाऊं और गढ़वालकी पहाड़ियां, पश्चिम गंगा नदी, जो देहरादून सहारनपुर मुजफ्फरनगर और मेरठ जिलोंसे इसको अलग करती हैं, दक्षिण और दक्षिण पूर्व मुरादावाद, तराई और कमाऊं जिले हैं । जिलेका क्षेत्रफल १८६८ वर्गमील है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय विजनोर जिलेमें ७९३६६१ मनुष्य थे, अर्थात् ४१७६२७ पुरुष और ३७६०३४ स्त्रियां । इस जिलेमें लगभग दो तिहाई हिन्दू और एक तिहाई मुसलमान हैं । हिन्दुओंमें एक लाखसे अधिक चमार, ३०हजारसे कम ब्राह्मण और ब्राह्मणोंसे कम राजपूत और बनिया हैं । बिजनोर जिलेमें १३ कसबे हैं, नगीना (मनुष्य-संख्या सन्

१८९१ के अनुसार २२१५०) नजीबावाद (१९४१०) बिजनोर (१६२३६) शेरकोट (१५५८९) कीरतपुर (१४८२३) चांदपुर (१२२५६) निहटोर (१०८११) सेहरा अफ़जलगढ़, मण्डावर, सहीसपुर, धामपुर, और जहालू।

इतिहास–सन् १४०० ई० में तैमूरने बिजनोरमें आकर बहुतसे निवासियोंको कतल किया। अकबरके राज्यके समय संभलके सरकारका यह एक हिस्सा बना। सन् १८०१ में पड़ोसके दक्षिणी देशके साथ बिजनोर जिला अंगरेजोंके अधीन हुआ। पहिले यह मुरादाबाद जिलेका एक भाग था। सन् १८१७ में बिजनोर एक अलग जिला बनाया गया। नगीनेमें जिलाका सदर हुआ। सन् १८२४ में बिजनोर कसबा जिलेका सदर स्थान बना।

सन् १८५७ की तारीख १३ वीं मईको बिजनोरमें मेरठके बलवेका समाचार पहुंचा। तारीख १ जूनको नजीबावादका नवाब २०० हथियार बंद पठानोंके साहित बिजनोरमें आया। तारीख ८ को मुरादाबाद और बरेलीमें बलवा होनेके पश्चात् युरोपियन अफ़सरोंने बिजनोरको छोड़ दिया। वे लोग तारीख ११ को रुड़कीमें पहुंचे। नवाब हुकूमत करने वाला बना। तारीख ६ अगस्तको बिजनोर जिलेके हिंदुओंने नवाबको परास्त किया, परन्तु तारीख २४ को मुसलमानोंने हिंदुओंको खदेरा। सन् १८५८ की तारीख २१ अप्रैलको अंगरेजी फौजोंने गङ्गापार हो नगीनामें आकर बागियोंको परास्त किया। अंगरेजी अधिकार फिर नियत हुआ।

नगीना।

धामपुरसे १० मील (चंदौसीसे ६० मील) पश्चिमोत्तर नगीनाका रेलवे स्टेशन है। नगीना पश्चिमोत्तर देशके बिजनोर जिलेमें तहसीलीका सदर स्थान एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय नगीनामें २२१५० मनुष्य थे, अर्थात् १४८०८ मुसलमान, ८१७० हिंदू, ७४ जैन, ६० कृस्तान और ३८ सिक्ख।

पठानोंने सन् १७४८–१७७४ के बीचमें नगीनाको बसाया, जिन्होंने यहां एक किला बनाया, जिसमें अब तहसीलीका काम होता है। सन् १८१७ से १८२४ तक नगीना मुरादाबादके नए जिलेका सदर स्थान रहा। अब यह कपड़ा, कलमदान, आवनूसके कंघे, रस्सी, शीशेके बरतनके लिये प्रसिद्ध है। यहांकी प्रधान सौदागरी चीनीकी रफतनी हैं।

नजीबाबाद।

नगीनासे १४ मील (चंदौसी जंक्शनसे ७४ मील) पश्चिमोत्तर नजीबाबादका रेलवे स्टेशन है। नजीवावाद पश्चिमोत्तर देशके बिजनोर जिलेमें मालिनी नदीकी धाराके किनारे पर एक कसबा और तहसीलीका सदर स्थान है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय नजीबावादमें १९४१० मनुष्य थे, अर्थात् ९६४१ हिंदू, ९५२० मुसलमान, १८० जैन, ३८ सिक्ख और ३१ कृस्तान।

४ सड़कोंके मेलके निकट कारोबारकी प्रधान जगह है। पब्लिकमें मामूली सबडिविजनल कचहरियां, अस्पताल और गवर्नमेंट स्कूल हैं।

यहां पीतल, तांबे और लोहेका काम, तोड़ेदार बंदूक, कंवल, कपड़े और जूते बनते हैं, फूलके बरतन सुन्दर तैयार होते हैं, और सप्ताहमें दो दिन बाजार लगता है।

बदरीनाथके कुछ यात्री नजीबावादसे कोटद्वार, बांगघाट, पौड़ी और श्रीनगर होकर बदरीक्षेत्र जाते हैं। यहांसे पहाड़ी रास्तेसे श्रीनगर ६८ मील है।

नजीबुद्दौलाने नजीबाबद्को बसाया, जिसने सन् १७५५ ई० में कसबेसे एक मील पूर्व पत्थरगढ नामक पत्थरकी सुन्दर गढ़ी बनाई। कई एक कमरोंसे घेरा हुआ उसका सुन्दर मकबरा और एक कोठी (जो अब सरायके काममें आती है) कसबेके भीतर उसका स्मारक चिह्न है, उत्तर उसके भाई जहांगीरखांका मकबरा है।

आठवां अध्याय।

(पश्चिमोत्तरमें) हरिद्वार।

हरिद्वार।

नजीबाबादसे २५ मील और (चंदौसी जंक्शनसे ९९ मील) पश्चिमोत्तर लक्सर रेलवेका जंक्शन है, जिससे १६ मील पूर्वोत्तर हरिद्वारको रेलवे शाखा गई है। नजीबाबाद और लक्सरके बीचमें नजीबाबादसे १६ मील पश्चिमोत्तर गंगापर रेलवेका पुल है।

रेलवे स्टेशनसे $\frac{3}{4}$ मील दूर पश्चिमोत्तर देशके सहारनपुर जिलेमें सिवालिक पर्वतके सिलसिलेके दक्षिणी पादमूलमें समुद्रके जलसे १०२४ फीट ऊपर गंगा नदीके दहिने किनारे पर (२९ अंश ५७ कला ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश १२ कला ५२ विकला पूर्व देशांतरमें हरिद्वार एक प्राचीन और प्रसिद्ध तीर्थ है, जो पूर्व कालमें गंगाद्वार नामसे प्रख्यात था। अतिप्राचीन ग्रंथ महाभारत और स्मृतियोंमें हरिद्वारका नाम गंगाद्वार लिखा है।

ज्वालापुर, कनखल और हरिद्वार तीनों मिलकर एक म्युनिसिपलिटी बनी है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इनमें २९१२५ मनुष्य थे, अर्थात् १७८८६ पुरुष और ११२३९ स्त्रियां। इनमें २२४७७ हिंदू ६५५९ मुसलमान, ४५ जैन, ३८ कृस्तान और ६ सिक्ख थे। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय तीनों कसबोंमें २४६४८ मनुष्य थे, अर्थात् १५१९६ ज्वालापुरमें, ५८३८ कनखलमें और ३६१४ हरिद्वारमें।

हरिद्वारमें झुनझुनू वाले रायबहादुर सूर्यमलकी, कश्मीरके महाराजकी, विलासपुरके राजाकी और अन्य कई एक धर्मशाला हैं। इनमें सूर्यमलकी धर्मशाला उत्तम है, जिसमें मैं टिका था। यह धर्मशाला संवत् १९४७ (सन् १८८० ई०) में खुली। इसमें ३ किते हैं मध्य किते में बड़े आंगनके चारों बगलों पर दोहरे मकान और दालान बने हैं, पूर्वके कितेमें रसोई बनाने की कोठरियां और पश्चिमके कितेमें कुछ मकान और पायखाने हैं। हरिद्वारमें बहुतेरे देव मंदिर और ईंटे और पत्थरसे बने हुए मुंडेरेदार मकान हैं। यहांके पवन पानी ठंढे हैं। यहां तीसरे दर्जेका पुलिसस्टेशन और एक पोस्टआफिस है, और बंदर बहुत रहते हैं। यहांके पंडे और बहुतसे दूकानदारोंके घर ज्वालापुर और कनखलमें हैं। यहांके बहुतेरे चौपायोंके गलेमें चरनेके समय घंटियां बांधी हुई देख पड़ती हैं। (भविष्यपुराणके ११ वें अध्याय) में लिखा है कि गौके गलेमें अवश्य घंटा बांधना चाहिये। इससे उनकी शोभा होती है, कोई जीव उनके पास नहीं आते, और भुला जाने पर घंटेके शब्दसे गौ मिल जाती हैं)। कसबे के उत्तरकी पहाड़ीके शिरपर एक छोटा मंदिर और सूर्यकुंड नामक कुंड है।

यात्रीगण हरिद्वारसे गढ़वाल जिलेमें केदारनाथ और बदरीनाथके दर्शनके लिये जाते हैं।

यहां हरिपैड़ी, कुशावर्त, बिल्वक, नीलपर्वत और कनखल ये ५ तीर्थ मुख्य हैं

हरिपैड़ी–हरिद्वारके प्रधान घाटका नाम हरिपैड़ी है। घाटपर उत्तर ओर दीवारके नीचे हरि अर्थात् विष्णुका चरणचिह्न है, जिसके निकट गंगेश्वर और शाकेश्वर २ शिव-लिंग हैं। यहां गंगा उत्तरसे आई हैं। हरिपैड़ी घाटकी सीढियोंसे पूर्व गंगाके बीच धारमें पानीसे थोड़ी ऊंची पत्थरकी मनोहर चट्टान है। घाट और चट्टानके बीचकी गंगा ब्रह्मकुंड कहलाती है ब्रह्मकुंडमें मछली बहुत रहती हैं, जो आदमीसे नहीं डरतीं। अनेक लोग इनको भोजन देते हैं। घाटसे ऊपर पत्थरके अनेक सुंदर मकान और देवमंदिर बने हैं।

मेलेके समय हरिपैड़ी घाटपर स्नानकी बड़ी भीड़ होती है। पहिले घाट छोटा था। सन् १८१९ ई० में कई एक सिपाहियोंके साथ ४३० आदमी स्नानके समय घाटपर धक्केसे मरगए। इसके पीछे अंगरेजी सरकारने घाटको बढ़ाकर १०० फीट चौडा और ६० सीढ़ियों का कर दिया, जो अब तक है।

घाटसे ऊपर इसके आसपास छोटे छोटे मन्दिर और कोठरियोंमें बहुतेरे देवता हैं, जिनमें अधिक गंगाकी मूर्तियां और शेष शिवलिंग, महावीर, राम; लक्ष्मण और जानकी की मूर्तियां हैं। मंगनलोग स्थान स्थानपर देवमूर्तियां आगे रखकर पैसे मांगते हैं, और राम लक्ष्मण और जानकी तथा केवल रामका स्वरूप बनाकर बैठते हैं। गंगाके किनारों और सड़कोंपर मेलेके समय भिक्षुक बहुत रहते हैं।

कुशावर्त–हरिपैड़ीसे दक्षिण गंगाका घाट पत्थरसे बँधाहुआ है। इस स्थानको कुशावर्त कहते हैं। अनेक वर्ष हुए इन्दौरके महाराजने घाटसे ऊपर पत्थरका लंबा मकान बना दिया, जिसमें अब यात्री लोग पिंडदान करते हैं। मेषकी संक्रांतिके समय यहां पिंडदानकी बड़ी भीड़ रहती है। हरिपैड़ीके कुशावर्त तक कई एक पक्के घाट बने हैं। मेलेके दिनोंमें गंगाके दोनों किनारों पर विशेप हरिद्वारकी ओर यात्री टिकते हैं। और गंगापर नावका पुल बनता है।

श्रवणनाथका मन्दिर–हरिपैड़ीसे लगभग ६०० गज दक्षिण पश्चिम हरिद्वारके संपूर्ण मंदिरोंसे सुन्दर श्रवणनाथ संन्यासीका बनवाया हुआ शिवमन्दिर है। पत्थरसे बनेहुए शिखरदार मन्दिरके मध्यमें शिवकी पंचमुखी मूर्ति है। मन्दिरके पश्चिम बड़ा और पूर्व छोटा जगमोहन है। बडे जगमोहनके खंभेमें पुतलियां बनी हैं। और मध्यमें ५ फीट लंबा और ४ फीट ऊंचा मार्बुलका नंदी (बैल) बैठा है, जिसके बैठकके पत्थरपर संवत् १८८६ खोदा हुआ है। मंदिरके चारों ओर कई एक छोटे मन्दिर और ऊंचे मकान हैं, एक मन्दिरमें शिवलिंग और दूसरोंमें कालभैरव, गंगाजी, महावीरजी श्रीकृष्णचन्द्र आदि देवता, और एक कोठरीमें मन्दिरके बनाने वाले श्रवणनाथकी मार्बुलकी मूर्ति है। मन्दिरके खर्चके लिये कई एक गांव लगे हुए हैं।

श्रवणनाथके मन्दिरसे पूर्व बीकानेरके महाराजका बनवाया हुआ गंगाजीका शिखरदार बड़ा मन्दिर है, जहां महाराजकी ओरसे सदावर्त जारी है।

बिल्वकतीर्थ–हरिपैड़ीसे १ मील पश्चिमोत्तर पहाडीके नीचे बिल्वकतीर्थ है। यहां एक चबूतरेपर नींवके वृक्षके निकट (जहां पहिले बेलका वृक्ष था) बिल्वकेश्वर शिवलिंग है, जिसके समीप छोटे मन्दिरमें पीछेके स्थापित बिल्वकेश्वर शिवलिंग, एक गुफामें विश्वेश्वर शिवलिंग, दुर्गादेवी और गणेशकी मूर्तियां हैं, और दूसरी ओर पहाड़ीके नीचे गौरीकुंड नामक कूप है, जिसका जल लोटे डोरीसे निकालकर यात्री लोग आचमन करते हैं।

गंगा—गंगानदी हरिद्वारमें पर्वतसे बाहर निकली है, इस लिये हरिद्वार पहिले गंगाद्वार करके प्रसिद्ध था। गंगा भारतवर्षकी सब नदियोंमें प्रधान और सबसे अधिक पवित्र हैं। यहां हिमालयमें गंगोत्तरी पहाड़से निकल कर दक्षिण और पूर्वके लगभग १५०० मील बहनेके उपरांत अनेक प्रवाहोंसे बंगालेकी खाढ़ीमें गिरती है। राजमहलसे आगे इसकी दो धारा होगई हैं, उनमें जो चंदरनगर, हुगली और कलकत्ता होकर दक्षिणको बहती है, वह हुगली और भागीरथी कहलाती है, और जो फरीदपुर और ग्वालनदी होकर पूर्वको गई है वह पद्मा या पद्दा कहलाती है। हरिद्वार, फर्रुखावाद, कन्नौज, कानपुर, इलाहावाद, मिर्जापुर, चुनार, बनारस, गाजीपुर, बेक्सर, दानापुर, पटना, मुंगेर, भागलपुर, राजमहल इत्यादि शहर और कसबे गंगाके तट पर हैं। ८ बड़ी नदियां इस क्रमसे गंगामें मिली हैं। (१) रामगंगा (लंबान में ३०० मील) फर्रुखाबादके नीचे, (२) यमुना (लंबानमें ८६० मील) इलाहाबादके पूर्व, (३) गोमती (लंबानमें ५०० मील) बनारससे नीचे, (४) सरयू (लंबानमें ६०० मील) छपरासे ७ मील पूर्व, (५) सोन (लंबानमें ४६४ मील) गंगा और सरयूके संगमसे पूर्व, (६) गंडकी (लंबानमें ४०० मील) पटनासे उत्तर हरिहरक्षेत्रके निकट, (७) कोशी (लंबानमें २२५ मील) भागलपुरसे नीचे, और (८) ब्रह्मपुत्र (लंबानमें १७०० मील) फरीदपुरके पास। इन नदियोंमेंसे सोन दक्षिणकी ओर विंध्य पहाड़से और ७ नदियां हिमालयसे निकलकर उत्तरकी ओरसे आकर गंगामें मिली हैं। हरिद्वार प्रयाग और गंगासागरमें सब जगहोंसे गंगा स्नानका माहात्म्य अधिक है। (गंगाकी उत्पत्ति और माहात्म्यका वृत्तान्त आगे की प्राचीन कथामें देखो)

हरिद्वारका मेला—मेपकी संक्रांतिको गंगा प्रथम प्रकट हुई थी, इस लिये उस तिथिमें प्रतिवर्ष हरिद्वारमें गंगा स्नानका वड़ा मेला होता है, जिसमें घोड़ोंकी खरीद बिक्री बहुत होती है, मेलेमें देशी सवारोंके लिए सरकार बहुत घोड़े खरीदती है, युरोपियन और देशी बहुत प्रकार की वस्तु बिकती है और लगभग १००००० आदमी एकत्र होते। हैं। प्रति अमावास्या को विशेप करके सोमवती अमावास्या और महावारुणी आदि पर्वोंमें हरिद्वारमें गंगा स्नानकी भीड़ होती है। १२ वर्षपर जब कुम्भ राशिके बृहस्पति होते हैं, तब हरिद्वारमें कुंभ योगका बड़ा मेला होता है। उस समय नागा, संन्यासी, वैष्णव, उदासीन, ब्रह्मचारी, दंडी, परमहंस, राजा, जिमींदार, गृहस्थ इत्यादि लगभग ३००००० यात्री एकत्र होते हैं। कुंभ योगका मेला संवत् १९४८ (सन् १८९१) में मेषकी संक्रांतिको था।

पहिले कुंभ योगके समय प्रत्येक संप्रदायके यात्रियोंमें प्रथम स्नान करनेके लिये बड़ा झगड़ा होता था। सन् १७६० ई० से स्नानके अंतिम दिन तारीख १० वीं अप्रैलको संन्यासी और वैरागियोंमें लड़ाई हुई, जिसमें लगभग १८०० आदमी मारे गए। सन् १७९५ में सिक्ख यात्रियोंने ५०० संन्यासियोंको मारडाला।

मायापुर—हरिद्वारसे १ मील दक्षिण–पश्चिम गंगाके दहिने, पवित्र सप्तपुरियोंमेंसे एक, और हरिद्वारकी पुरानी बस्ती मायापुर हीन दशामें है। इसमें बहुत पुराने ३ मंदिर हैं, पहिला पूर्वोत्तर ज्वालापुर जानेवाली सड़कके पास मायादेवीका दूसरा भैरवका और तीसरा दक्षिण–पश्चिम नारायण शिलाका। मायादेवीका मंदिर, जो १० वीं वा ११ वीं शताब्दीका बना हुआ होगा, पत्थरका है। मायादेवीके ३ शिर और ४ बांह हैं, जिसके निकट ८ भुजा वाले शिवकी

मूर्ति और बाहर नंदी बैल है। नारायण शिलाका छोटा मन्दिर ईंटेसे बना हुआ है, जिसके दक्षिण-पश्चिम राजा वेणुकी उजड़ी पुजड़ी गढ़ी है। मायापुरमें टूटेहुए ईंटोंके सहित कईएक ऊंचे टीले हैं, जिनमें सबसे बड़ा नहरके पुलके पास है। यह स्थान पुराना है। अनेक प्रकारके पुराने सिक्के समय समय पर यहां पाए जाते हैं।

गंगाकी नहर-मायापुर और कनखलके बीचमें मायापुरके निकट सन् १८५५ ई० में गंगासे नहर निकाली गई, जो यहांसे ६३५ मीलपर कानपुरमें जाकर फिर गंगामें मिली है। यहां गंगाके दहिने नहरके पुलमें १० फाटक और गंगाके पुलमें ७ फाटक बने हैं। सूखी ऋतुओंमें नहरके कुल फाटक और गंगाके दो तीन फाटक खुले रहते हैं। नहरके कामसे जो अधिक पानी होता है, वह गंगा पुलके फाटकसे कनखलकी ओर बहता है।

नील पर्वत-मायापुरसे दक्षिण गंगापर लकड़ीका पुल है, जिसको लांघकर नीलपर्वतको जाना होता है। मेलेके दिनोंमें हरिपैडीके निकट नावोंका पुल बनता है। यात्रीगण गंगा पारहो नीलपर्वतपर जाते हैं। लकड़ोके पुलसे नीलपर्वतके पास तक १ ½ मील गंगाके विस्तारमें पत्थरके टुकड़ों और ढोकोंपर चलना होता है। विविध प्रकार और विविध रंगके छोटे छोटे गोलाकार पत्थर देख पड़ते हैं, कनखलके सामने दक्षिण गंगाके बाएं नीलपर्वत नामक एक पहाड़ी है, जिसके नीचेकी गंगाकी एक धाराको नीलधारा कहते हैं, जो कभी कभी, सूख-जाती है। पहाड़ीके नीचे गौरीकुंडके पास एक नए मन्दिरमें गौरीशंकर शिवलिंग और ऊपर एक छोटे मन्दिरमें नीलेश्वर शिवलिंग है। गौरीकुंडका जल कभी कभी सूख जाता है।

नीलेश्वरसे २ मील दूर चंडी पहाड़ीकी चोटीपर चंडीका मन्दिर है। मार्ग चढ़ाईका है। रास्तेमें पानी नहीं मिलता। मन्दिर दूरसे देख पड़ता है।

कनखल-हरिद्वारकी हरिपैड़ीसे ३ मील दक्षिण गंगाके दहिने, अर्थात् पश्चिम किनारेपर कनखल एक कसबा है। कनखल नामका भावार्थ यह है कि कौन ऐसा खल है कि यहां स्नान करनेसे उसकी मुक्ति न होगी।

सन् १८८१की मनुष्य-गणनाके समय कनखलमें ५८३८ मनुष्य थे, अर्थात् ५५०२हिंदू २८४ मुसलमान, ४१ जैन और ११ दूसरे,हिन्दुओंमें खासकर ब्राह्मण और हरिद्वारके पंडेहैं जो केवल ज्वालापुरके ब्राह्मणोंसे विवाहका संबध करते हैं। हरिद्वार-म्युनिसिपलिटीका एक हिस्सा कनखल है। यहांके प्राय: सब मकान ईंटेसे बने हैं। यहां पुलिसकी एक चौकी, बाजार और कई एक सदावर्त हैं। और बंदर बहुत रहते हैं। कनखल संन्यासियोंका प्रधान स्थान है। यहां इन लोगोंके बहुत मठ हैं।

कनखलके मंदिरोंमें इस क्रमसे दर्शन होता है। (१) गंगाके तीर सती घाटके निकट पूर्व समयकी सतियोंके छोटे छोटे अनेक स्थान और एक मन्दिरमें मोटेश्वर शिवलिंग, (२) एक रानीके बनवाए हुए सुन्दर शिखरदार मन्दिरमें राम, जानकी, राधा कृष्ण, गंगा आदिकी मूर्तियां और दूसरे मंदिरमें शिवलिंग, (३) एक मन्दिरमें राम जानकीकी मूर्तियां. (४) एक बड़ा शिव मन्दिर. (५) एक शिव मन्दिर और, (६) वेदव्यासका मन्दिर है।

दक्षेश्वर शिवका मन्दिर कसबेके दक्षिण है, जहां सती जलगई, और महादेवजीने दक्षके यज्ञका नाशकिया। यह मन्दिर कनखलके मन्दिरोंमें प्रधानहै। मन्दिर छोटा बिना शिखरकाहै इसके पश्चिम प्रधान द्वार और पूर्व भुएबरा ऐसी खिड़की है। मेलेंके समय यात्रीगण खिडकीसे

मन्दिरमें प्रवेश करते हैं, और पश्चिमके द्वारसे निकलते हैं, दक्षेश्वर शिवलिंगके ऊपर कुछ गहिरा है। मन्दिरके दहिने अर्थात् उत्तर बीरभद्र और भद्रकालीकी छोटी मूर्तियां और पीछे सतीकुंड है, जिससे यात्रीलोग बिभूति अपने घर लाते हैं । कुंडके ऊपर ४ पायोंपर छोटा गुंबज है । मन्दिर और कुंडके मध्यमें नंदीकी ५पुरानी मूर्तियां हैं । मन्दिरके आस पास तीन चार छोटे मन्दिरोंमें शिवलिंग और एक दालानमें ५ हाथसे अधिक बडे महाबीर हैं ।

ज्वालापुर–हरिद्वारसे ४ मील पश्चिम गंगानहरके उत्तर सहारनपुर जिलेमें ज्वालापुर एक कसबा है, जो हरिद्वार–म्युंनिसिपलिटीका एक भाग बनता है । हरिद्वारके रेलवे स्टेशनसे ज्वालापुरका रेलवे स्टेशन २ मील है ।

सन् १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय ज्वालापुरमें १५१९६ मनुष्य थे, अर्थात् ९८७४ हिंदू, ५३१४ मुसलमान और ८ कृस्तान । हिंदुओंमें बहुतेरे ब्राह्मण हरिद्वारके पंडे हैं। ज्वालापुर कनखल और हरिद्वारसे बड़ा है, इसमें प्रायः सब मकान पत्थर और ईंटेसे बने हैं, और पुलिसस्टेशन, पोष्टआफिस, स्कूल और अस्पताल हैं ।

रानीपुरका पुल–ज्वालापुरसे २ मील रानीपुरसे आगे पुलतक बालूकी सड़क है, यहां एक नदीके नीचे गंगाकी नहर बहती है । पुलके नीचे १० मेहराबी होकर, जो लगभग ८० गजमें बनी है, नहरका पानी पूर्वसे पश्चिम जोर शोरसे गिरता है । पुलके ऊपर उत्तरसे दक्षिण नदी बहती है, जिसका जल गरमीके दिनोंमें सूखजाताहै । नदीके पानीके रुकावके लिये नहरके ऊपर नदीके बगलोंमें लगभग ६० गज फासिलेपर पूर्व और पश्चिम ऊंची दीवार बनी है, जिन पर आदमी चलते हैं और दोनों छोरों पर चढ़ने उतरनेके लिये सीढ़ियां हैं ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–व्यासस्मृति (चौथा अध्याय) मनुष्य गङ्गाद्वार तीर्थ करके सब पापोंसे छूट जाता है ।

महाभारत–(आदि पर्व्व–१३१ अध्याय) गंगाद्वारमें गंगाके किनारे घृताची अप्सराको दखने पर महर्षि भरद्वाजका वीर्य्य गिर पड़ा, जिससे द्रोणका जन्म हुआ (२१५ अध्याय) अर्जुन एक दिन गंगाद्वारमें गंगा स्नान कर रहे थे, उस समय पातालकी रहनेवाली नागराज पुत्री उलूपी उनको जलमें खैंच लेगई । अर्जुनने नाग पुत्रीके घरमें एक रात्री रहकर उससे विहार किया (जिससे पीछे एक पुत्र जन्मा) ।

(वनपर्व ८४ वां अध्याय) गंगाद्वारके कोटि तीर्थमें स्नान करनेसे पुण्डरीक यज्ञका फल मिलता है । आगे सप्तगंगा, त्रिगंगा, और शक्रावर्त तीर्थोंमें जाकर विधिवत् पितर और देवताओंकी पूजा करनेसे उत्तम लोक मिलते हैं । वहांसे चलकर कनखलमें स्नान करे, जहां तीन दिन रहनेसे पुरुषको अश्वमेधयज्ञका फल और स्वर्ग लोक मिलता है। (८५ वां अध्याय) गंगामें जहां स्नान करे वहांही कुरुक्षेत्र स्नानके समान फल होता है, परन्तु कनखलमें स्नान करनेसे विशेष फल मिलता है । (९० अध्याय) उत्तर दिशामें वेगसे पहाड़को तोड़ कर गंगा निकली है । उस स्थानका नाम गंगाद्वार है । उसी देशमें ब्रह्मर्षियोंसे सेवित सनत्कुमारका स्थान पवित्र कनखल तीर्थ है । (१३५ अध्याय) सब ऋषियोंके प्यारे कनखल तीर्थ में महानदी गंगा बहरही है । पूर्व समयमें भगवान् सनत्कुमार वहां सिद्ध हुए थे । (शल्य पर्व्व ३८ अध्याय) दक्षप्रजापतिने जब गंगाद्वारमें यज्ञ किया था, तब सुरेणुनामक सरस्वती वहां आई थी, जो शीघ्रतासे बह रही है ।

(शान्ति पर्व्व-२८२ अध्याय) दक्षप्रजापतिने गंगाद्वारमें यज्ञ आरंभ किया। इन्द्रादि देवताओंने गंगाद्वारमें गमन किया। शैल-राजपुत्री देवताओंको जातेहुए देखकर पशुपतिसे बोली, कि हे भगवन्! ये इन्द्रादि देवता कहां जा रहे हैं। महादेव बोले कि दक्ष प्रजापतिने अश्वमेध यज्ञ आरंभ किया है। देवता लोग उसी यज्ञमें गए हैं। पार्वती बोली आपने किस लिये उस यज्ञमें गमन नहीं किया। महादेव बोले पहले समयमें देवताओंने जो अनुष्ठान किया था, उनमें से किसी यज्ञमेंही मेरा भाग कल्पित नहीं हुआ। पूर्व अनुष्ठान पद्धतिके कर्मसे देवता लोग धर्म के अनुसार मुझे यज्ञ भाग-प्रदान नहीं करते। भवानी बोली कि हे भगवन्! आप सब भूतोंके बीच अत्यन्त प्रभावसे युक्त हैं, और तेज, यश, श्री, सम्पत्ति, सबमेंही पूर्ण और अजेय हैं, इस लिये आपके यज्ञ भागके प्रतिषेधसे मुझे बहुतही दुःख उत्पन्न हुआ है, और सब शरीर शिथिल होरहा है। देवीने पशुपतिसे ऐसा कहकर मौनावलम्बन किया।

अनन्तर महा तेजस्वी महादेव देवीके हृदयके चिकीर्षित विषयको जानकर, योगबल अवलम्बन करके भयंकर अनुचरोंके सहारे उस यज्ञको विध्वंस करनेके लिये उद्यत हुए। भूतोंके बीच किसी किसीने अत्यन्त दारुण शब्द करना आरंभ किया, कोई विकटरूपसे हँसने लगे, किसीने उस यज्ञस्थलमें रुधिर प्रवाहसे हव्यवाहको पूरित कर दिया, कोई कोई प्रमथगण यज्ञके यूपोंको उखाड़कर घूमने लगे, और किसी किसीने अपने मुखसे परिचारकोंको ग्रास कर लिया अनन्तर यज्ञने हरिण रूप धर कर आकाशकी ओर गमन किया। शूलपाणिने धनुषबाण ग्रहण करके उसका पीछा किया। उसके अनन्तर क्रोधके कारण महादेवके ललाटसे महाघोर पसीने की बूँद प्रकट हुई। बूँदके पृथ्वी पर गिरतेही महाअग्नि प्रकट होगई, उस अग्निसे एक भयंकर पुरुष उत्पन्न हुआ। वह यज्ञको इस प्रकार जलाने लगा, जैसे अग्नि तृण समूहको भस्म करती है। उसने सब भांतिसे देवताओं और ऋषियोंकी ओर दौड़कर उपद्रव मचाना आरंभ किया। देवता लोग डर कर दशों दिशाओंमें भागगए। उस समय उस पुरुषके भ्रमण करनेसे पृथ्वी अत्यन्तही विचलित हुई, और सारा जगत् हाहाकार करने लगा। ऐसा देखकर ब्रह्मा महादेवके निकट उपस्थित हुए ब्रह्मा बोले कि, हे प्रभो! सब देवता तुम्हें यज्ञका भाग प्रदान करेंगे, तुम क्रोध परित्याग करो। जो पुरुष तुम्हारे स्वेद बिन्दुसे उत्पन्न हुआ है, वह लोकमें ज्वर नामसे विख्यात होगा। तुम्हारे ज्वरके तेजको धारण करनेमें सारी पृथ्वीभी समर्थ नहीं है, इस लिये इस ज्वरको कई प्रकार विभक्त करो। शिवने ब्रह्मासे कहा कि ऐसाही होगा। महादेव प्रजापतिके दिए हुए यथा उचित यज्ञ भागको पाकर उत्साह युक्त हुए। उन्होंने सब प्राणियोंकी शान्तिके निमित्त ज्वरको अनेक प्रकारसे विभक्त किया।

(२८३ अध्याय) जनमेजय बोले हे ब्रह्मन्! वैवस्वत मन्वन्तरमें प्रचेताके पुत्र दक्षप्रजापतिका अश्वमेध यज्ञ किसप्रकार विनष्ट हुआ था, और दक्षने शिवकी कृपासे पुनर्वार किस प्रकारसे यज्ञको पूर्ण किया था। वैशम्पायन मुनि बोले कि पूर्व समयमें दक्षप्रजापतिने गंगाद्वारमें यज्ञ किया। आदित्य वसु, रुद्र, साध्य आदि सब देवता इन्द्रके सहित वहांपर आए थे। ऋषिगणभी पितरों तथा ब्रह्माके सहित वहां इकट्ठे हुए थे। निमंत्रित देवतावृन्द निजनिज स्त्रियों के सहित विमानोंमें निवास करते हुए विराजते थे। उस समय दधीचि क्रुद्ध होकर बोले कि जिस यज्ञमें भगवान् रुद्र पूजित न हों, वह यज्ञ अथवा धर्म नहीं है; सबकाही सर्वनाश उपस्थित हुआ है। दधीचि ध्यान युक्त नेत्रसे भगवान् महादेव तथा देवीका दर्शन किया और योगबलसे यह सब देखकर विचारा कि इस यज्ञमें शंकर नहीं निमंत्रित हुए, इससे कुछ दूरपर मुझे निवास करना

उचित है वह ऐसा निश्चय कर वहांसे पृथक् हो बोले कि देखो यज्ञभोक्ता पशुपति आ रहे हैं। जब महादेव इस यज्ञमें निमंत्रित नहीं हुए तब मुझे बोध होता है कि सब देवताओंने आपसमें सलाह करके एकता की है। जो हो दक्षका यह बृहत् यज्ञ किसीप्रकार सिद्ध न होगा। दक्ष बोले मैंने सुवर्ण पात्रमें विधिसे हवि स्थापित करके यज्ञपति विष्णुके उद्देश्यसे समर्पण की है विष्णु यज्ञ भाग ग्रहण करनेके अधिकारी हैं, इसलिये उनके उद्देश्यसे आहुति देनी विहित है।

देवी बोली मैं किस प्रकार दान, नियम, वा तपस्या करूं, जिससे कि मेरे पति भगवान् शंकर इस समय आधा वा तीसरा भाग पावें। भगवान् शिवने निजपत्नीके ऐसे वचन सुन कर देवीको समझाया और क्रोधयुक्त हो निज मुखसे ज्वालमाला संयुक्त शरीरवाले अनेक प्रकारके शस्त्रधारी एक अद्भुत भूतको उत्पन्न किया। और उसको दक्षके यज्ञविध्वंस करनेकी आज्ञा दी। महाकाली महादेवकी आज्ञा लेकर उसकी अनुगामिनी हुई। भगवान् महेश्वरने क्रोध स्वरूप धारण करके वीरभद्र नामसे विख्यात हुए। उन्होंने निज रोम कूपोंसे रौम्य नामक गणेश्वरोंको उत्पन्न किया। वे सब रौद्रगण दक्षयज्ञको विध्वंस करनेके लिये यज्ञस्थलमें पहुंचे। उनके भयंकर शब्दसे देवता लोग भयभीत हुए और पृथ्वी कांपने लगी। रुद्रगण सबको जलाने तथा उनके ऊपर प्रहार करनेमें प्रवृत्त हुए। किसी किसीने यज्ञ यूपोंको उखाडा, कोई कोई यज्ञस्थलके सब लोगोंको मर्दन करने लगे, गणोंने दौडकर यज्ञपात्रों और सब सामानोंको छितर वितर कर दिया, और वीरभद्र यज्ञका सिर काटकर प्रसन्न हो भयंकर नाद करने लगे। अनन्तर ब्रह्मा आदि देवगण और दक्षने हाथ जोडकर कहा कि आप कौन हैं वीरभद्र बोले कि मैं रुद्रके कोपसे उत्पन्न होकर वीरभद्र नामसे विख्यात हूं। और ये देवीके क्रोधसे प्रगट होकर भद्रकाली नामसे विख्यात हुई हैं। हे विप्रेंद्र! अब तुम उमापतिकी शरणमें जाओ। महादेवका क्रोध भी उत्तम है।

(२८४ अध्याय) दक्षने शिवकी एक बहुत बडी स्तुति की; जिससे महादेव अत्यन्त प्रसन्न हुये और बोले कि, हे दक्ष! तुम हमारे निकटवर्ती होगे। तुम इस यज्ञमें विघ्न होनेसे दीनता अवलम्बन मत करो। मैंने पूर्व कल्पमें तुम्हारा यज्ञ विध्वंस किया था, इससे सब कल्पोंके ही समानरूपताके कारण इसबार भी तुम्हारे यज्ञका नाशक हुआ। तुम अपना मानसिक शोक परित्याग करो। महादेव ऐसा कहकर पत्नी और अनुचरोंके सहित अंतर्द्धान होगये।

(अनुशासन पर्व—२५ अध्याय) गंगाद्वार, कुशावर्त, विल्वक, नीलपर्वत और कनखल इन पांच तीर्थोंमें स्नान करनेसे मनुष्य पापरहित होकर सुरलोकमें गमन करता है।

(आदि ब्रह्मपुराणके ३८ वें और ३९ वें अध्यायमें गंगाद्वारके वैवस्वत मन्वंतरके दक्षयज्ञ विध्वंसकी कथा ऊपर लिखी हुई महाभारतकी कथाके समान है)।

आदि ब्रह्मपुराण—(३३ वां अध्याय) एक समय दक्षने अपने यज्ञमें सब कन्याओंको बुलाया, परन्तु सब कन्याओंमें बडी सतीको रुद्रके वैरसे नहीं निमंत्रण दिया। जमाई और श्वशुरके इस वैरको जान कर भी सती दक्षके यज्ञ स्थानमें गई। दक्षप्रजापतिने सब कन्याओंको अच्छी तरहसे सम्मान किया, परन्तु सतीसे बातभी नहीं पूछी। तब सती महादेवजीका ध्यान कर अपने शरीरसे अग्नि उत्पन्न करके भस्म होगई।

महादेवजी सतीकी मृत्यु सुनकर क्रोध युक्त हो दक्षसे बोले कि, हे दक्ष! तूने निरपराध सतीका अपमान किया, इसलिये तू सब महर्षियोंके सहित दूसरा जन्म पावेगा। चाक्षुष मन्व-

न्तर में सब ऋषि जन्म लेंगे और तू प्रचेताओंका पुत्र होगा। मैं वहां भी तेरे कर्मोंमें विघ्न करूंगा। दक्षने महादेवको शाप दिया, कि तुझको देवताओंके संग ब्राह्मण लोग यज्ञोंमें न पूजेंगे और स्वर्गवासी तेरे लिये होम भी न करेंगे। तब स्वर्गको त्याग कर बहुत युगों तक इसी लोकमें निवास करेगा।

लिंगपुराण—(९९ अध्याय) दक्षप्रजापति अपने यज्ञमें शिवकी निन्दा करने लगा। सतीने अपने पिताके मुखसे शिवकी निन्दा सुनकर योग मार्गसे अपना शरीर दग्ध कर दिया। (१०० अध्याय) हिमालयपर्वतमें हरिद्वारके समीप कनखल तीर्थमें दक्षका यज्ञ हो रहा था। वीरभद्रने वहां जाकर विष्णु आदि देवताओंको परास्त कर दक्षका शिर काट अग्निमें दग्ध कर दिया, इत्यादि।

शिवपुराण-(दूसरा खण्ड-२२वां अध्याय) दक्षप्रजापति यज्ञ करनेकी इच्छासे कनखल तीर्थमें गया। उसने सब मुनि और सब देवताओंको बुलाया। उस समय सतीजी गंधमादन पर्वतपर अपनी सखियों समेत लीला कर रहीं थीं। वह चन्द्रमाको रोहिणी समेत दक्षके यज्ञमें जाते हुए देखकर शिवके पास गईं (२३ वां अध्याय) और शिवसे बोलीं कि आप मुझे अपने साथ लेकर मेरे पिताकी यज्ञमें चलिए ब्रह्मा विष्णु आदि सब यज्ञमें पहुंचे हैं। शिव बोले कि' दक्षने हमको निमंत्रण नहीं भेजा और वैर रखकर हमारा अनादर किया, इस लिये वहां जाना उचित नहीं है। शिवने बहुत प्रकारसे सतीको समझाया पर जब सतीने न माना तब उन्होंने सतीको नन्दीपर सवार कराकर ६०००० गणोंके साथ विदा किया। सती बड़ी धूम धामसे दक्षके यज्ञमें जा पहुंची। (२४ वां अध्याय) सती यज्ञ शालामें पहुंची, पर किसीने बाततक न पूछी। जब सतीने देखा कि यज्ञमें सबका भाग है,पर शिवका नहीं, तब मनमें महा-क्रोध किया। वह विष्णु आदि देवता, भृगु आदि ऋषिगण और दक्षको धिक्कारने लगी। ऐसी बातें सती की सुनकर दक्षने शिवकी बहुत निन्दा की। सती दक्षकी बातोंका यथा योग्य उत्तर देकर उत्तर दिशामें बैठ गई। उसने योग धारण कर युक्तिपूर्वक आसन लगा. प्राणायाम किया और अग्नि और वायुको प्रकट करके अपने शरीरको जला दिया। (२५ वां अध्याय) शिवके २०००० गण उसी स्थान पर मरगए। जो गण शेष रह गए थे, उन्होंने जाकर शिवसे यह वृत्तान्त कह सुनाया। शिवने अपने शिरसे एक जटा उखाड कर पहाड पर मारी। उस जटासे टूट कर दो टुकडे अलग अलग हो गए। जटाकी जडसे वीरभद्र उपजा। जिसने अपने शरीरके रोमोंसे बहुत गण उपजाये और दूसरे टुकडे से महाकाली उपजी जिसके साथ करोडों भूत प्रेतादि प्रकट हुए। वीरभद्र शिवकी आज्ञा पाकर करोडों सेना और कालीको साथ लेकर चला (२६ वां अध्याय) यह बडी सेना कनखलके समीप जा पहुंची। (२८ वां अध्याय) इन्द्र वीरभद्रकी सेनासे परास्त हुआ। (२९ वां अध्याय) विष्णु सब देवताओंको साथले वीरभद्रसे लडने लगे। अन्तमें ब्रह्माके समझाने पर विष्णुजी अपने लोकको चले गए। (३० वां अध्याय) यज्ञ हरिण रूप धारण करके भाग चला, परंतु वीरभद्रने पकड कर उसका सिर काट यज्ञ कुण्डमें डाल दिया। इसके पश्चात् उसने दक्षका सिर तोडकर अग्निमें जला डाला और शिवके समीप जाकर यज्ञ विध्वंसका वृत्तान्त कह सुनाया। (३३ वां अध्याय) ब्रह्मा विष्णु आदि सब देवताओंने कैलास पर्वतपर जाकर शिवकी स्तुति की वे बोले कि आप यज्ञमें चल कर अपना भाग अंगीकार कीजिये। (३५) सब देवताओंके साथ शिवजी दक्षके

यज्ञमें गए। जब महादेवने दक्षके शरीरमें बकरेका सिर लगा दिया, तब वह उठकर बकरेको जिह्वासे शिवकी स्तुति करने लगा। (३६ वां अध्याय) शिवकी आज्ञासे एक बडी नवीन सभा बनाई गई। मुनीश्वरोंने दक्ष यज्ञ कराया।

(८ वां खण्ड—(१५ वां अध्याय) कनखल क्षेत्रमें, जहां शिवजीने दक्षयज्ञ विध्वंस कराया, उसी स्थानपर वह लिंगरूपेस स्थित हुए और दक्षेश्वर नामसे प्रसिद्ध हैं। उसके निकट सतीकुण्ड है।

(वामनपुराणके चौथे अध्यायमें बाराहपुराणके २१ वें अध्यायमें और पद्मपुराणके ५ वें अध्यायमें सतीके शरीर त्यागनेकी कथा भिन्न भिन्न कल्पकी अनेक प्रकारसे हैं)

बिल्वेश्वर लिंगकी पूजासे धर्मकी वृद्धि होती है । बिल्वपर्वत के ऊपर जो बेलका वृक्ष है, उसके नीचे बिल्वेश्वर शिवलिंग स्थित है, जिनके दर्शनसे मनुष्य शिव समान हो जाता है।

दक्षेश्वर के निकट नील शैलके ऊपर नीलेश्वर शिवलिंग है, जिसके देखनेसे पाप दूर हो जाताहै। उसी जगह भीमचण्डिकाका स्थानहै। उसके निकट उत्तमकुण्ड है, जिसमें स्नान कर-नेसे बडा आनन्द होताहै।

(९ नवां खण्ड चौथा अध्याय) उज्जैन नगरीका असमचित्त नामक ब्राह्मण बडा पापी था। वह एक समय चोरोंके साथ चोरीके लिये मायाक्षेत्रमें गया। वहां उसको शिवभक्त ब्राह्मणोंके सत्संगसे ज्ञान उपजा। वह उनके उपदेशसे गंगाजीके समीप महागिरि पर जाकर रात दिन महादेवका नाम रटने लगा ७ दिनोंके पीछे सदाशिवने उसको दर्शन दिया, और कहा कि, हे ब्राह्मण! तुम हमारे गण हो जाओ। तुम्हारा नाम नील होगा । हम नीलेश्वर होकर इस स्थान पर विराजमान होंगे। इस पर्वतका नाम भी नीलही होगा। हम अंश रूप होकर सर्वदा इस स्थानपर, तुम्हारे साथ रहेंगे। गंगाजीके तटपर जो हमारा कुण्ड है, उसमें स्नान करनेसे मनुष्य हमारा रूप होजायगा।

वामनपुराण–(८४ वां अध्याय) प्रह्लादने कनखलमें जाकर भद्रकाली और वीरभद्रका पूजन किया।

पद्मपुराण–(सृष्टि खंड–११ वां अध्याय) मायापुरीके निकट हरिद्वार है । (स्वर्ग खण्ड–३३ वां अध्याय) गंगा सब जगह तो सुलभ है परन्तु गंगाद्वार, प्रयाग और गंगासागर इन तीन जगहोंमें दुर्लभ है।

(उत्तर खण्ड २१ वां अध्याय) हरिद्वार तीर्थोंमें श्रेष्ठ और देवताओंको भी दुर्लभ है। जो मनुष्य इस तीर्थमें स्नान करके भगवान्का दर्शन और प्रदक्षिणा करता है, वह कभी दुःखी नहीं होता। यह तीर्थ चारों पदार्थोंका देनेवाला है।

गरुड़पुराण–(पूर्वार्द्ध ८१ वां अध्याय) मायापुरी उत्तम स्थान है। गंगाद्वार, कुशावर्त्त बिल्वक, नीलपर्वत और कनखल इन पांचों तीर्थोंमें स्नान करनेसे फिर गर्भमें वास नहीं होता है।

(प्रेतकल्प–२७ वां अध्याय) अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवंतिका और द्वारावती ये ७ पुरियां मोक्षके देनेवाली हैं।

मत्स्यपुराण–(१०५ वां अध्याय) गंगाजी सब स्थानोंमें सुगम हैं, परन्तु गंगाद्वार, प्रयाग और गंगासागर संगम इन तीन तीर्थों पर इनका प्राप्त होना दुर्लभ है।

अग्निपुराण–(१०८ वां अध्याय) गंगाद्वार और कनखल तीर्थ भुक्ति-मुक्तिको देने वाला है।

स्कन्दपुराण–(काशखिण्ड–११२ वां अध्याय) मायापुरीमें पापियोंका प्रवेश नहीं हो सकता और वहां वैष्णवी माया मनुष्योंके मायारूपी पासको काट देती है।

कूर्मपुराण–(उपरिभाग ३६ वां अध्याय) महापातकका नाश करने वाला कनखल तीर्थ है। उसी स्थान पर भगवान शंकरने दक्षका यज्ञ विध्वंश किया था। मनुष्य कनखलमें गंगाका जल स्पर्श करनेसे पापसे विमुक्त होकर ब्रह्मलोकमें निवास करता है। (३८ वां अध्याय) कनखलमें गंगा और कुरुक्षेत्रमें सरस्वती नदी अति पवित्र है।

गंगाकी संक्षिप्त प्राचीन कथा–वाल्मीकिरामायण–(बाल कांड–३५ वां सर्ग) हिमाचल पर्वतकी पहली कन्या गंगा और दूसरी उमा हैं। जब देवताओंने अपने कार्य सिद्धिके लिये हिमवानसे गंगाको मांगा तब उसने त्रैलोक्यके हितकी कामनासे गंगाको दे दिया। गंगा आकाशको गई। हिमवानने अपनी दूसरी कन्या उमाको भगवान रुद्रसे व्याह दिया।

(४२ वां सर्ग) अयोध्याके राजा दिलीपके पुत्र भगीरथने गोकर्ण क्षेत्रमें जाकर सहस्र वर्ष पर्यंत तपस्या की। ब्रह्मा प्रकट हुये। भगीरथने यह वर मांगा कि राजा सगरके पुत्रोंकी भस्म गंगाके जलसे बहाई जाय। ब्रह्माजीने कहा कि ऐसाही होगा, परन्तु हिमवानकी ज्येष्ठ पुत्री गंगाको धारण करनेके लिये तुम शिवकी प्रार्थना करो, क्योंकि गंगाका आकाशसे गिरना पृथ्वीसे नहीं सहा जायगा। (४३ वां सर्ग) जब भगीरथने एक वर्ष पर्यंत एक अंगूठेसे खडे हो शिवकी आराधना की, तब उमापति प्रकट होकर बोले कि हे राजन्! मैं अपने मस्तकसे गंगाको धारण करूंगा। उसके उपरांत गंगा विशाल रूपसे दुःसह बेग पूर्वक आकाशसे शिवके मस्तक पर गिरी। उसने यह बिचारा कि मैं अपनी धाराके बेगसे शिवको लिये हुए पाताल को चली जाऊंगी। गंगाके गर्वको जान शिवजीने उसको अपनी जटामें छिपानेकी इच्छा की गंगा शिवके मस्तकपर गिर कर अनेक उपाय करके भी भूमि पर न जासकी और अनेक वर्षों तक उसी जटा मंडल में घूमती रह गई। जब भगीरथने कठोर तप करके शिवजीको फिर प्रसन्न किया तब शिवजीने हिमालयके विन्दुसरोवरके निकट गंगाको छोडा। छोडतेही गंगाके ७ सोते होगये, जिनमंसे आह्लादिनी, पावनी और नलिनी ये तीन धारा पूर्वकी ओर और सुचक्षु सीता और सिंधु ये तीन धारा पश्चिम दिशामें गई और सातवी धारा भगीरथके रथके पीछे चली। जिस मार्गसे राजा गमन करतेथे, उसी मार्गसे गंगाकी धारा भी चली जाती थी, इसी प्रकारसे गंगा समुद्रमें पहुंची। राजा भगीरथ अपने पितामह लोगोंकी भस्मके निकट गंगाको ले गए जब गंगाने अपने जलसे उस भस्मराशिको बहाया, तब वे सब पापसे छूट पवित्र हो स्वर्गको गए। (४४ वां सर्ग) गंगाका नाम भगीरथके नामसे भागीरथी विख्यात हुआ।

महाभारत वनपर्व—(१०८ वां अध्याय) जब राजा भगीरथने सुना कि महात्मा कपिलने हमारे पितरोंको भस्म कर दिया था, उनको स्वर्ग नहीं मिला, तब राजाने अपना राज्य मंत्रीको दे हिमाचल पर जाकर एक सहस्र वर्ष पर्यंत घोर तप किया। जब गंगा प्रकट हुई तब भगीरथने कहा कि कपिलके क्रोधसे ६०००० सगरके पुत्रोंको, जो हमारे पुरुषे हैं, जल

गए हैं। आप उनको अपने जलसे स्नान कराकर स्वर्गमें पहुंचाइए। गंगाने कहा कि तुम शिवको प्रसन्न करो, वही स्वर्गसे गिरती हुई हमको अपने सिर पर धारण करेंगे। राजाने कैलाशमें जाकर घोर तपस्या करके शिवको प्रसन्न किया और यही (१०९वां अध्याय) वर माँगा कि आप अपने शिरपर गंगाको धारण कीजिये। जब भगवान शिवने राजाके वचनको स्वीकार किया, तब हिमाचल की पुत्री गंगा बडे वेगसे स्वर्गसे गिरी, जिसको शिवजीने अपने सिर पर भूषणके समान धारण किया। तीन धारा वाली गंगा शिवके सिर पर मोतीकी मालाके समान शोभित होने लगी। पृथ्वीमें आनेपर गंगाजीने राजासे कहा कि कहो अब मैं किस मार्गसे चलूं। भगीरथने जिधर राजा सगरके ६०००० पुत्र मरे थे, उधर प्रस्थान किया। शिवजी गंगाको धारण कर कैलाश को चले गए। राजा भगीरथने गंगाको समुद्र तक पहुंचा दिया। गंगाने समुद्रको (जिसको अगस्त्य मुनिने पी लिया था) अपने जलसे पूर्ण कर दिया। राजा भगीरथने अपने पुरुषोंको जल दान दिया।

लिंगपुराण—(६ वां अध्याय) हिमालयके मैनाक और क्रौंच दो पुत्र और उमा तथा गंगा दो कन्या हुई।

पद्मपुराण—(पाताल खंड—८२ वां अध्याय) बैशाख शुक्ला सप्तमीको जह्नु मुनिने गंगाजीको पी लिया था। और उसी दिन फिर अपने दहिने कानके छिद्रसे बाहर निकाल दिया, इसीसे इस तिथिका नाम गंगासप्तमी हुआ है।

(उत्तर खंड २२ वां अध्याय) जो मनुष्य सैकडों योजन दूर से गंगाजी २ कहताहै वह सब पापोंसे विमुक्त होकर विष्णुलोकमें जाता है। जैसे देवताओंमें विष्णु सर्वोपरि हैं, वैसे संपूर्ण नदियोंमें गंगा श्रेष्ठ हैं।

देवी भागवत–(९ वां स्कन्ध–६ वें अध्यायसे ८ वें अध्याय तक) और ब्रह्मवैवर्त पुराण (प्रकृति खंड–६ वें अध्यायसे ७ वें अध्याय तक) विष्णु भगवानकी ३ स्त्रियां थीं,–लक्ष्मी, सरस्वती और गंगा। एक समय गंगा पर विष्णुका अधिक प्रेम देख कर सरस्वतीने क्रोध किया जब वह गंगाके केश पकड़नेको तय्यार हुई, तब लक्ष्मीने दोनोंके बीचमें खड़ी होकर निवारण किया। सरस्वतीने लक्ष्मीको शाप दिया, कि तुम वृक्ष रूप और नदी रूप होगी, और गंगाको शाप दिया, कि तुम भी नदी होकर पृथ्वी तलमें जाओगी। गंगाने सरस्वतीको शाप दिया, कि तुम भी मृत्युलोकमें नदी रूप होगी। सरस्वती अपनी कलासे नदी रूप हुई, जो भरत खंडमें आनेसे भारती कहलाई और आप विष्णुके निकट स्थित रही। गंगाजी भगीरथके ले जानेसे भरत खंडमें आई। उसी समय शिवजीने गंगाको अपने सिरमें धारण कर लिया। और लक्ष्मीजी अपनी कलासे पद्मावती नामक नदी होकर भारतमें आई और आप पूर्ण अंशसे विष्णु भगवानके समीप रहीं। उसके उपरांत वह धर्मध्वजकी कन्या होकर तुलसी नामसे प्रसिद्ध हुई। वे सब कलियुगके ५ सहस्र वर्ष बीतने तक भरत खंडमें रहेंगी। पश्चात् वे नदी-रूप छोडकर विष्णु भगवानके स्थानमें प्राप्त होंगी।

कूर्म पुराण–(ब्राह्मी संहिता-उत्तरार्द्ध-३६ वां अध्याय) हिमवान पर्वत और गंगा नदी सर्वत्र पवित्र है। सत्ययुगमें नैमिषारण्य, त्रेतामें पुष्कर, द्वापरमें कुरुक्षेत्र और कलियुगमें गंगा-जी तीर्थोंमें प्रधान हैं।

गरुड़पुराण–(पूर्वार्द्ध-८१ वां अध्याय) गंगा संपूर्ण तीर्थोंमें उत्तम हैं। हरिद्वार, प्रयाग और गंगासागरमें इनका मिलना दुर्लभ है।

अग्निपुराण-(११० वां अध्याय) जिस छोरमें गंगाजी रहें, वह देश पवित्र है। गंगा सर्वदा सब जीवोंकी गति देनेवाली है। एक मास गंगासेवन करनेसे सर्व यज्ञका फल मिलता है। गंगाजी संपूर्ण पापका नाश करने वाली और स्वर्ग लोक देने वाली हैं। जब तक मनुष्यकी हड्डी गंगाजीमें रहती है, तब तक वह स्वर्ग निवास करता है। गंगाजलके स्पर्श, पान और दर्शन तथा गंगाशब्द उच्चारण करनेसे सौहजार पुश्तका उद्धार होजाता है। (१११वां अध्याय) गंगाद्वार, प्रयाग और गंगासागर इन तीन स्थानोंमें गंगाजीका मिलना दुर्लभ है।

नवां अध्याय।

(पश्चिमोत्तर देशमें) रुड़की, सहारनपुर, देहरा, मंसूरी, मुजफ्फरनगर, सरधना, मेरठ, और गढ़मुक्तेश्वर।

रुड़की।

लक्सर जंक्शनसे १२ मील (चंदौसीसे १११ मील) पश्चिमोत्तर और सहारनपुरसे २१ मील पूर्व रुड़कीका रेलवे स्टेशन है। पश्चिमोत्तर प्रदेशके सहारनपुर जिलेमें तहसीलका सदर स्थान और फौजी छावनीका मुकाम रुड़की एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय रुड़कीमें१७३६७ मनुष्य थे; अर्थात् १०५३४ पुरुष और ६८३३ स्त्रियां। इनमें १०३५० हिंदू, ५५५१ मुसलमान, १०५३ कृस्तान, ३०५ सिक्ख और १०८ जैन थे।

रुड़की सन् १८४५ ई० तक एक छोटी वस्ती थी। अब कसवा उन्नति पर है। इसमें चौड़ी सड़कें, सुंदर बाजार, एक छोटी सराय, कई छोटे देवमंदिर, अस्पताल, गिर्जा, एक मिशन स्कूल, तहसीली, इल्म संबंधी बाग, इत्यादि बन गए हैं। गंगाकी नहरके काम और लोहाके कारखानेका रुड़की सदर स्थान है।

कसबेके पूर्व गंगानहरके निकट आटा पीसनेकी कलका कारखाना है, जिससें पानीकी धारासे कलका एंजिन चलता है। इससे पूर्व लोहा गलानेका बहुत भारी कारखानाहै, जिसका काम सन् १८४५ में आरंभ हुआ और सन् १८५२ से अधिक फैलाया गया। इसमें हर एक प्रकारकी लोहेकी चीजें तय्यार होकर बिकती हैं। सन् १८८२ ई० में इस कारखानेमें ४२५ आदमी काम करते थे। रुड़कीमें थमसन सिविल एन्जिनियरींग कालिज सन् १८४७ ई० में नियत हुआ, जिसमें इस देशके जन्मे हुए अंगरेज, यूरेपियन और देशी पढ़ते हैं। सैनिक सिपाहियोंके पढनेके लिए इसमें खास दरजा है। सन् १८६० ई० में रुड़कीमें फौजी छावनी बनी।

रुड़कीका पुल-रुड़की कसबेसे उत्तर सोलानी नदीके पुलके ऊपर होकर गंगाकी नहर बहती है। १६ पायोंके ऊपर लगभग ३०० गज लंबा और ६० गज चौड़ा पुल बना है। पुलके नीचे पूर्वकी ओर नदी बहती है और ऊपर ३ चौड़ी सड़कोंके बीचमें नहरकी २ धारें दक्षिणको गिरती हैं, जिनकी गहराई ५ वा ६ हाथ है। इनमें होकर नाव चली जाती हैं। बीच वाली सड़क पर जानेका मार्ग नहीं है। सोलानी नदीका जल गर्मीके दिनोंमें सूख जाता है।

सहारनपुर।

रुड़कीसे २१ मील (चंदौसी जंक्शनसे १३२ मील) पश्चिमोत्तर सहारनपुरका रेलवे स्टेशन है। पश्चिमोत्तर प्रदेशके मेरठ विभागमें जिलाका सदर स्थान (२९ अंश ५८ कला कला १५ विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश ३५ कला १५ विकला पूर्व देशांतरमें) दमौला नदीके दोनों बगलों पर सहारनपुरके एक छोटा शहर है। 'अवध–रुहेलखंड रेलवे' मुगलसरायसे सहारनपुर तक ५३१ मील गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय सहारनपुरमें ६३१९४ मनुष्य थे, (३४२६६ पुरुष और २८९२८ स्त्रियां) अर्थात् ३४२४० मुसलमान, २६५४७ हिंदू, १४९४ जैन, ७७२ कृस्तान, १३३ सिक्ख, और ८ पारसी। मनुष्य–गणनाके अनुसार यह भारत वर्षमें ५६ वां और पश्चिमोत्तर देशमें १२ वां शहर है।

सहारनपुरमें लगभग आधे मकान पक्के हैं, गल्ले, चीनी, देशी कपड़े, इत्यादिकी बड़ी सौदागरी होती है, पुराना रोहिला किला अब कचहरीके काममें आता है, मुसलमानोंने दिल्ली की जुमा मसजिदके नकशेकी एक सुन्दर जुमा मसजिद बनवाई है, कृस्तानोंके २ गिर्जे और १ मिशन है, सर्कारी इमारतोंमें जिलेकी सिविल कचहरियां, जेल और अस्पताल हैं, लालगंगा नामक छोटी नदी पासके जंगलमें भूमिके दरारोंसे निकलकर बहती है।

सहारनपुरमें सबसे अधिक मनोहर सरकारी नबातीबाग है, जिसको कंपनीबाग कहते हैं यह सन् १८१७ ई० में नियत हुआ, जो १००० गज लंबा और ६६६ गज चौडा है। बागमें गाड़ीकी सड़कें बनी हैं और बहुतबेशकीमती वृक्ष लगे हैं उत्तर फाटकके दरवाजेके निकट खेतीका बाग, इसके बाद पूर्व दवा संबंधी बाग और इसके बाद दक्षिण लिनियन बाग है। यहां बागबानी मुहकमा है और दो आब नहरके वृक्षोंका बियडा और फलदार वृक्ष इत्यादि तय्यार होते हैं, इनके अतिरिक्त बागमें एक सरोवर, एक देवमन्दिर और कई एक कूप हैं। दक्षिण पूर्वके फाटकसे जाने पर सतियोंके कई स्थान और कई एक छतरी देख पडती है।

सहारनपुर जिला–इसके उत्तर शिवालिक पहाडियां, बाद देहरादून जिला, पूर्व गंगानदी, बाद बिजनोर जिला, दक्षिण मुजफ्फरनगर जिला और पश्चिम यमुना नदी, बाद पंजाबके कर्नाल और अंबाला जिले हैं। जिलेका क्षेत्र फल २२२१ वर्गमील है।

गंगा–नहर और पूर्वी यमुना–नहर जिलेकी संपूर्ण लंबाईमें उत्तरसे दक्षिण दौडती है। सीमा पर बहती हुई गंगा और यमुनाके अतिरिक्त इस जिलेमें हिंडन, पश्चिमी कालीनदी और सोलानी नदी भी हैं। जिलेके मध्य और दक्षिणभागमें कंकड बहुत होता है। शिवालिक पहाडियोंके पादमूलके निकट जंगलमें अब तक बाघ बहुत हैं, वर्षाकालमें शिवालिक पहाड़ियोंसे जंगली हाथी चरनेके लिये उतरते हैं और पहाड़ियोंके १० मील दक्षिण गंगाकी तराईमें आकर फसिलका बिनाश करते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय सहारनपुर जिलेमें १००१४५३ मनुष्य थे, अर्थात् ५४०३१३ पुरुष और ४६११४० स्त्रियां। हिंदुओंसे आधी मुसलमानोंकी संख्या है। लगभग ७ हजार जैन, २ हजार कृस्तान और ३ सौ सिक्ख हैं। हिंदुओंमें लगभग २ लाख चमार हैं दूसरी किसी जातिकी संख्या ३० हजारसे अधिक नहींहै। क्रमसे गूजर, ब्राह्मण, कहार,

बनियां, राजपूत इत्यादि के नंबर हैं। गूजर और राजेपूतोंमें स्त्रियोंकी संख्या बहुत कम है। सरकार जानतीहै कि इनमें बहुतेरे लोग अपनी पुत्रियोंको मारदेते हैं, इस लिए इसका प्रबंध रखतीहै। इस जिलेमें ९ कसबेहैं। सहारनपुर (मनुष्य-संख्या सन् १८९१ में ६३१९४) हरिद्वार (२९१२५), देव बंद (१९२५०), रुडकी (१७३६७), गंगोह (१२००७), मंगलोर (१००३७), रामपुर, अंबेहटा और लंधौर।

इतिहास—लगभग सन् १३४० ई० में महम्मदतुगलकके राज्यके समय सहारनपुर नगर कायम हुआ और शाह हारनचिश्तीके नामसे इसका नाम सहारनपुर पड़ा, जिसकी दरगाहमें अबतक बहुत मुसलमान जातेहैं। शाहजहांके राज्यके समय यहां बादशाह महल नामक एक शाही बैठक था।

रेलवे—सहारनपुरसे रेलवेकी लाइन ३ ओर गई हैं, जिनके तीसरे दर्जेका महसूल प्रतिमील २½ पाई है।

(१) सहारनपुरसे दक्षिण 'नर्थवेष्टर्न रेलवे'—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

३६ मुजफ्फरनगर।

५० खतौली।

६१ सरधना।

६८ मेरठ छावनी।

७१ मेरठ शहर।

९९ गाजियाबाद जंक्शन।

गाजियाबादसे 'ईष्टइंडियन रेलवे' पर १३ मील पश्चिमोत्तर दिल्ली जंक्शन और ६६ मील पूर्व-दक्षिण अलीगढ़ जंक्शनहै।

(२) सहारनपुरसे पश्चिमोत्तर 'नर्थवेष्टर्न रेलवे'—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

१८ जगाद्री।

५० अंबाला जंक्शन।

५५ अंबाला शहर।

६७ राजपुर जंक्शन।

८३ सरहिंद।

१२१ लुधियाना।

१२९ फिलौर।

१५३ जलंधर छावनी।

१५६ जलंधर शहर।

१६५ कर्त्तारपुर।

१७९ व्यास।

२०५ अमृतसर जंक्शन।

अंबाला जंक्शनसे दक्षिण, कुछ पूर्व, 'दिल्ली अंबाला कालका रेलवे' जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रतिमील ५ पाई है।

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

३६ थानेसर।

४७ कर्नाल।

६८ पानीपत्त।

१२३ दिल्ली जंक्शन।

अंबालेसे पूर्वोत्तर 'दिल्ली अंबाला कालका रेलवे' पर

३९ मील कालका।

राजपुर जंक्शनसे पश्चिम, थोडा दक्षिण—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

१६ पटियाला।

३२ नाभा।

६८ वर्नाला।

१०८ भतिंडा जंक्शन।

अमृतसर जंक्शनसे पूर्वोत्तर पठान कोट शाखा—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

२४ वटाला।

४४ गुरदासपुर।

५१ दीनानगर।

६६ पठानकोट।

अमृतसरसे ३२ मील पश्चिम लाहौर जंक्शन—

(३) सहारनपुरसे पूर्व-दक्षिण 'अवधरुहेलखंड रेलवे'—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

२१ रुडकी।

२६ लंधोरा।

३३ लुक्सर जंक्शन जिससे १६ मील पूर्वोत्तर हरिद्वार है।

५८ नजीवावाद।

७२ नगीना।

८२ धामपुर।

१२० मुरादावाद।

१३२ चंदौसी जंक्शन

देहरा।

सहारनपुर से पूर्वोत्तर देहरा तक गाडी की उत्तम सडक वनी है। १५ मील पर फतहपुर, २८ मील पर मोहन, ३५ मील पर असरोरी और ४२ मील पर देहरा मिलता है। सब स्थानों पर डाक वंगले बने हैं।

पश्चिमोत्तर देश के मेरठ विभाग के देहरादून जिले में शिवालिक पहाड की घाटी में समुद्र के जल से २३०० फीट ऊपर देहरादून जिले का सदर स्थान देहरा एक कसवा है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय देहरा कसवे और छावनी में २५६८४ मनुष्य थे, अर्थात् १६०१९ पुरुष और ९६६५ स्त्रियां। इन में १८४२६ हिंदू, ६०५७ मुसलमान, ७४७ क्रस्तान, ३१० सिक्ख, १२५ जैन और १ पासी थे।

कसवे के पश्चिम फौजी छावनी और उत्तर यूरोपियन वस्ती है। देशी कसवे में तहसीली, जेल, कई एक स्कूल, पुलिस्टेशन और इस कसवे के वसाने वाले गुरु रामराय का सुन्दर मंदिर है, जिस्को राजा फतहशाहने वनाया। यह मंदिर जहांगीर के मकवरे के ढांचेका सा वना है। इनके अतिरिक्त देहरे में एक गिर्जा और एक मिशन है।

देहरादून जिला—यह जिला मेरठ विभाग का उत्तरी भाग है। इस के उत्तर गढ़वाल, पश्चिम सिरमोर राज्य और अंबाला जिला; दक्षिण सहारनपुर जिला और पूर्व अंगरेजी और स्वाधीन गढ़वाल है। जिले का क्षेत्र फल ११९३ वर्ग मील है। जिला पहाडी और जंगली है। इस जिले और गढवाल के वीच में तेजी के साथ कई एक धाराओं से गंगा दौडती है। यमुना नदी जिले के दक्षिण पश्चिम की सीमा पर वहती हुई सहारनपुर जिले में गई है। शिवालिक शृंखले पर जंगली हाथी घूमते हैं और कभी कभी फसिल की वहुत हानि करते हैं। दूर के जंगलों में वाघ, तेंदुए और भालू वहुत हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय इस जिले में १६७९७० मनुष्य थे; अर्थात् १०० १४५ पुरुष और ६७८२५ स्त्रियां। निवासी हिंदू हैं। मनुष्य-संख्या में आठवें भाग मुसलमान और लगभग २ हजार क्रस्तान हैं। हिंदुओं में राजपूत सब जातियों से अधिक हैं। इन के वाद ब्राह्मण और चमार के नंवर हैं। यहां के ब्राह्मण मांस भक्षी होते हैं। इस जिले में मंसूरी और लंधौर स्वास्थ कर स्थान हैं, जहां गरमी की ऋतुओं में वहुतेरे शरीफ लोग रहते हैं।

इतिहास—ऐसी कहावत है कि देहरादून जिला केदारखंड का एक भाग है। प्रथम यह देश निर्जन था। लगभग सन् ११०० ई० में बनजारों का एक दल यहां आकर वसा।

१७ वीं शताब्दी के अंत में गुरु रामराय ने, जो दून में वसे थे, देहरा को नियत किया। लगभग सन् १७०० ई० में यह गढवाल राज्य का एक भाग वना। सन् १७५७ में सहारनपुर के गवर्नर नाजिवुद्दीनदौलाने दून पर अधिकार किया। सन् १७७० में उसके मरने पर कई एक आक्रमण करनेवालों ने इस देश को लूटा। सब से पीछे गोरखे आए, जिनसे सन् १८१५ ई० के अंत में अंगरेजों ने देशको लेलिया।

मंसूरी।

देहरासे ६ मील उत्तर राजपुरके निकट पहाडियोंके पादमूलतक गाडीकी सडक है। राजपुर समुद्रके जलसे लगभग ३००० फीट ऊपर एक वडी बस्ती है जहांसे झंपान, डंडी वा टट्टू पर लोग मंसूरी जाते हैं। ४ मीलकी चढाईपर मंसूरी मिलता है। आधे मार्गमें दुकान और पानी है।

मंसूरी एक पहाडी स्टेशन हिमालयके वाहरी सिलसिलोंमेंसे एकपर है। वहुतेरे मकान समुद्रके जलसे ६००० फीटसे ७२०० फीटतक उंचाई पर बने हैं, जो खासकर पहाडीके वगल पर हैं। मंसूरीके दक्षिण पूर्व लंधौरमें अंगरेजी फौजी छावनी है। मंसूरी और लंधौर दोनों मिलकर एक स्टेशन बनता है, जो सन् १८२७ ई० में नियत हुआ। सन् १८७६ ई० में मंसूरीमें सैनिकोंके लडकोंके लिये ग्रीष्मभवन वना। लंधौरमें अनेक कोठियां और वारकें वनी हैं। मंसूरीमें एक पवलिक लाइब्रेरी, क्लब और खैराती अस्पताल और दोनों जगह कई एक गिर्जे हैं। वहुतेरे शरीफ लोग खासकरके यूरोपियन लोग गरमीकी ऋतुओंमें मंसूरीमें जाकर रहते हैं। यहांका पानी पवन स्वास्थ्य कर है। नवम्वरके अंतमें यहां वर्फ गिरता है।

जाडेके दिनोंकी मनुष्य-गणनाके समय मंसूरी और लंधौरमें ३१०६ मनुष्य थे, अर्थात् २०१९ हिंदू ६४४ मुसलमान, ४४० क्रस्तान, १ जैन और २ दूसरे। सन् १८८० के सितंवरमें खास मनुष्य-गणना हुई, उस समय १२०८० मनुष्य थे, अर्थात् ७६५२ मंसूरीमें

और ४४२८ लंधौरमें इनमें ६४०६ हिंदू, ३०८२ मुसलमान, २३५५ यूरोपियन, १८२ यूरेसियन, ४३ देशी क्रस्तान और १२ दूसरे थे।

चक्रता—मंसूरीसे पश्चिमोत्तर शिमला तक १५७ मील पहाडी घुमावका रास्ता है, जिसपर मंसूरीसे ४८ मील दूर चक्रतातक सुंदर मार्ग बना है। सहारनपुर शहरसे चक्रतातक बैलगाडी की सडक बनीहै। चक्रता समुद्रके जलसे ७००० फीट ऊपर देहरादून जिलेमें एक फौजी छावनी है, जो सन् १८६६ में नियत हुई। यहां एक यूरोपियन रेजीमेंटके लिये लाइन बनी है। छावनीके चारों ओर देशी बस्ती है।

मुजफ्फर नगर।

सहारनपुरसे ३६ मील दक्षिण मुजफ्फर नगरका रेलवे स्टेशन है। पश्चिमोत्तर देशके मेरठ विभागमें जिलेका सदरस्थान मुजफ्फर नगर एक कसवा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मुजफ्फरनगरमें १८१६६ मनुष्य थे; अर्थात् १०३७७ हिंदू, ७१९३ मुसलमान, ४७५ जैन, ८० क्रस्तान. और ४१ सिक्ख।

यहां छोटी तंग गलियां जिलेकी, कचहरियां, जेल, अस्पताल और कई एक स्कूल हैं। मेरठमें मुजफ्फरनगर होकर एक फौजी सड़क लंधौर को गईहै।

मुजफ्फर नगर जिला—इसके उत्तर सहारनपुर जिला; पूर्व गंगा नदी, बाद विजनौर जिला, दक्षिण मेरठ जिला और पश्चिम यमुना नदी, वाद पंजाबमें कर्नाल जिला है। जिलेका क्षेत्रफल १६५६ बर्ग मील है। जिलेमें हिंडन नदी, काली नदी, गंगाकी नहर और पूर्वी यमुनाकी नहर बहती है। जंगलोंमें अच्छी लकडियां और जंगली जानवर बहुत होते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेमें ७७३२०४ मनुष्य थे; अर्थात् ४१८२५५ पुरुष और ३५४९४९ स्त्रियां। निवासी हिंदू अधिक हैं। सैकड़े पीछे लगभग ४० मुसलमान हैं। लगभग १० हजार जैन हैं। हिंदुओंमें चमार सब जातियोंसे अधिक हैं। इनके बाद जाट, कहार, तब बनियां, भंगी, गूजर, काछी, ब्राह्मण और राजपूतके क्रमसे नंबर हैं।

जिलेमें कैराना बड़ा कसवां है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १८४२० मनुष्य थे। इसके अतिरिक्त खंडाला, थानाभवन, खतोली; शामली, मीरमपुर, जलालाबाद, जनसत, बुधाना, मुकेरेरी, पूरा, झंझना, सिसबली, चरथावल और गंजरू बडी बस्तियां हैं।

इतिहास—मुजफ्फर नगर जिला अकबरके राज्यके समय सहारनपुरके सरकारमें मिलाया गया। सन् १६३३ ई० में शाहजहांके राज्यके समय खांजहांके पुत्र मुजफ्फरखांने मुजफ्फर नगरको बसाया। १८ वीं शताब्दीमें सिक्ख और गूजरोंने लूटपाट करके जिलेका विनाश किया। सन् १७८८ में यह जिला महाराष्ट्रोंके हस्तगत हुआ। सन् १८०३ में अलीगढ की गिरती होनेके पश्चात् उत्तर शिवालिक पहाड़ियोंतक सम्पूर्ण दोआव अंगरेजी अधिकारमें आया।

सन् १८५७ ई० के बलवेके समय लोगोंने मुजफ्फर नगरमें लूट पाट करना और आग लगाना आरंभ किया। ता० २१ जूनको चौथा इरेंगुलर बागी हुआ। उसने अपने अफसरों और दूसरे यूरोपियनोंको मार डाला। पीछे जब सहारनपुर और मेरठसे अंगरेजी सेना आई, तब मुजफ्फरनगरमें अंगरेजी अमलदारी नियत हुई।

सरधना ।

मुजफ्फरनगरसे २५ मील (सहारनपुरसे ६१ मील) दक्षिण सरधनाका रेलवे स्टेशन है। पश्चिमोत्तर देशके मेरठ जिलेमें सरधना एक कसवा है ।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय इसमें १२०५९ मनुष्य थे, अर्थात् ५४३७ हिंदू, ५२८३ मुसलमान, ८९९ जैन, ४३९ कृस्तान और १ सिक्ख ।

कसवेके पूर्व ५० एकड़के वागमें सन् १८३४ ई० की वनी हुई दिलकसकोठी नामक एक अंगरेजी इमारत है, जिसके भीतर दो लेखोंमें यहांके हर हाईनेस शमरूकी वेगमकी शखावतें लिखी हैं और वेगम और उसके दोस्तोंकी तसवीरें हैं । सरधनासे दक्षिण मार्वुलसे वना हुआ वेगमका स्मरणार्थक चिह्न है, जो रूममें वना था । शमरू एक फिरंगी था, जिसने नाजिफ-खांसे सरधनाका परगना पाया । वह सन् १७७८ में मरगया । उसकी वेगम जो शुरूमें कश्मीरकी वेश्या थी, उसकी वारिस हुई । सन् १७८४ में वह रोमन कैथलिक हुई । सन् १७९२ में उसने एक फ्रेंचके साथ विवाह करलिया । और सन् १८३६ में वह मरगई ।

मेरठ ।

सरधनासे १० मील (सहारनपुरसे ७१ मील) दक्षिण मेरठ शहरका रेलवे स्टेशन है । पश्चिमोत्तर देशमें किस्मत और जिलेका सदर स्थान गंगासे २५ मील पश्चिम और यमुनासे २९ मील पूर्व मेरठ जिलेके मध्य भागमें मेरठ एक शहर है ।

सन् १८९१ की मनुष्य गणनाके समय शहर और छावनीमें ११९३९० मनुष्य थे, अर्थात् ६८०१६ पुरुष और ५१३७४ स्त्रियां । इनमें ६३८९२ हिंदू ४८८४४ मुसलमान, ४४९५ कृस्तान, १२५५ जैन, ९०३ सिक्ख और १ फारसी थे । मनुष्य–गणनाके अनुसार मेरठ भारतवर्षमें २१ वां और पश्चिमोत्तर प्रदेशमें ६ वां शहर है ।

शहरसे उत्तर फौजी छावनी है । शहरके रेलवे स्टेशनसे ३ मील उत्तर छावनीका रेलवे स्टेशन है । छावनीमें सन १८२१ का वना हुआ मशहूर मेरठ चर्च, एक रोमन कैथलिक चर्च और मिशन चैपेल हैं सन् १८८३ ई० में छावनीमें सवार आर्टिलरी, की ३ वेटरी, मैदान आर्टिलरीकी २ वेटरी, यूरोपियन सवारका एक रेजीमेंट, यूरोपियन पैदलका एक रेजीमेंट, देशी सवारका एक रेजीमेंट और देशी पैदलका एक रेजीमेंट था । छावनीमें ५ वाजार हैं ।

मेरठके सेंट्रल जेलमें, जो सन् १८१९ ई० में वना, ४६०० कैदी रह सकते हैं । इसे पूर्व जिलेका जेलखाना है । मेरठमें वडी सौदागरी होतीहै, प्रति वर्ष चैत्रमें होलीसे एक सप्ताह पीछे नौचंदीका प्रसिद्ध मेला होताहै । जो कई दिनों तक रहता है । मेलेके समय आतशबाजी, नुमायश और घुडदौड बहुत होते हैं ।

जेलखानेसे पश्चिम सूर्य्यकुंड नामक तालाब है जिसको सन् १७१४ ई में जवाहिरमल नामक एक धनी सौदागरने वनवाया । इसके किनारोंपर अनेक छोटे मंदिर, धर्मशाला, और सतीस्तंभ वने हैं ।

विलेश्वरनाथका मंदिर मेरठमें बहुत पुराना है ।

मेरठमें बहुतेरी मसजिदें और दरगाह हैं। शाहपीरकी दरगाह लाल पत्थरसे बनी हुई सुन्दर बनावट की है, जिसको लगभग सन् १६२० ई० में जहांगीरकी स्त्री नूरजहांने शाह-पीर फकीरके स्मरणार्थ बनवाया। जामेमसजिदको सन् १०१९ में गजनीके महमूदके वजीर सहनमेहदीने बनवाया और हुमायूंने सुधारा। सन् १६५८ ई० का बनाहुआ अबूम-हम्मद कमोहका मकबरा, सन् ११९४ का बनाहुआ सालार मसूद गाजीका मकबरा, सन् १५७७ का बनाहुआ आबूयारखांका मकबरा है। एक इमामबाडा कमोली फाटकके निकट, दूसरा जबीदी महल्लेमें और एक ईदगाह दिल्लीरोड पर है। इनके अतिरिक्त मेरठमें लगभग ६० अप्रसिद्ध मसजिदें हैं।

मेरठ जिला—इसके उत्तर मुजफ्फरनगर जिला, पश्चिम यमुना नदी; दक्षिण बुलंदशहर जिला और पूर्व गंगा नदी, बाद बिजनौर और मुरादाबाद ज़िले हैं। जिलेका क्षेत्रफल २३७९ वर्ग मील है। जिलेकी सीमाओंपर गंगा और यमुना और इसके भीतर हिंडन नदी है, जिसमें केवल वर्षाकालमें नाव चलती है। जिलेकी संपूर्ण लंबाईमें पूर्वी यमुना नहर बहती है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेमें १३८७४०९ मनुष्य थे; अर्थात् ७४४३६६ पुरुष और ६४३०४३ स्त्रियां सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेमें ९९७८११ हिन्दू, २९४६५६ मुसलमान, १६४५३ जैन, ४०६४ कृस्तान, १५२ सिक्ख और १ पारसी थे। चमार सब जातियोंसे अधिक हैं इनके बाद क्रमसे जाट, ब्राह्मण, गूजर बनियाँ इत्यादिके नंबर हैं। ब्राह्मणोंमें गौड ब्राह्मण अधिक हैं। मेरठ जिलेमें हापड (जन-संख्या सन् १८९१ में १४९६७) सरधना (जन-संख्या १२०५९) खेकरा जन-संख्या १०३१५) गाजियाबाद (जन संख्या १०१९३), बरौत, गढमुक्तेश्वर, भुवाना, बागपत, शाहडेरा, टिकरी, छपरवली, बावोली, पिलकुंआं, किरथल, निरपाडा, सरूरपुर लावर, परि-क्षितगढ, और फलदा कसबेहैं।

इतिहास—महाभारत बननेसे प्रथमही मेरठ जिलेका हस्तिनापुर कौरव और पांडवोंकी राजधानी था। मेरठ शहरके निकट ईसाके जन्मसे पहिले अशोकके राज्यके समय एक स्तंभ बनाया गया, जो अब दिल्लीमें रक्खा है। ११ वीं शताब्दी तक यह जिला खासकरके जाट और डोर लोगोंके हस्तगत था। सन् ११९१ में महम्मदगोरीके जनरल कुतुबुद्दीनने मेरठ शहर को ले लिया। लगभग सन् १३९८ में तैमूर के आक्रमण के समय हिंदुओंने बहुत रोकावट की। अंतमें राजपूतों में से बहुतेरों ने लोनी के किले में अपने लड़के और स्त्रियोंके साथ निज गृहों को जला दिया और आप बाहर निकल शत्रुओं से लड कर मारे गये। तैमूर ने लगभग १ लाख कैदी हिंदुओं को मरवा डाला। १६ वीं शताब्दी में मेरठ और आस पास के देश में मुगल खान्दान का अधिकार हुआ। उसकी घटतीके समय यह महा-राष्ट्रों के हस्तगत हुआ। सन् १८०३ में सिंधिया ने गंगा और यमुना के मध्य का देश अंगरेजों को दे दिया। सन् १८०६ में मेरठ शहर में फौजी छावनी बनी। तबसे शहर उन्नति पर होने लगा। सन् १८१८ में मेरठ एक अलग जिला हुआ।

सन् १८५७ के आरंभ में देशी फौजों में ऐसी गप्प उडी, कि नए टोटों में गाय औ सूअर की चर्बी चुपडी हुई है। अपरैल में ब्रजमोहन नामक एक सैनिक ने अपने साथियों को जनाया, कि मुझको नए टोटे मिले हैं और सब लोगों को शीघ्रही टोटे मिलेंगे। तारीख ९ वीं मई को ३ री बंगाल घोडसवार फौज के कई एक आदमी, जिन्होंने टोटे को काम में लाना अस्वीकार किया, दस दस वर्ष कैद के दोषी ठहराए गए। तारीख १० वीं मईको मेरठके सिपाहियों ने खुला खुली बगावत की। उन्होंने जेलखाना तोड डाला और जो यूरोपियन मिले, उनको मार डाला। इसके उपरांत बागी सब दिल्ली को चले गए। छावनी अंगरेजों के हाथ में रही। मरेठ में सब से पहले बलवा हुआ था। बलवे के आदि से अंत तक कईएक अंगरेजी सेना मेरठमें थीं, जिनसे चारों ओर जिलेमें बलवा नहीं बढने पाया

गढमुक्तेश्वर।

मेरठ शहर से २६ मील दक्षिण पूर्व इसी जिले में गंगा के दहिने किनारे ऊंचे टीले पर गढमुक्तेश्वर एक पुराना कसबा है, जो प्राचीनकालमें हस्तिनापुर का एक महल्ला था। पुराना गढ और मुक्तेश्वर शिव इन दोनों के नामों से इसका नाम गढमुक्तेश्वर पडा है। मेरठ से गढमुक्तेश्वर तक घोडे की डाक गाडी जाती है। मेले के समय हजारों गाडियां पहुंचती हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय गढमुक्तेश्वरमें ७३०५ मनुष्य थे; अर्थात् ४९३४ हिंदू और २३७१ मुसलमान। हिंदुओं में खास करके ब्राह्मणहैं।

गढमुक्तेश्वर में गढमुक्तेश्वर शिव का बडा मन्दिर है। २ तीर्थ स्थान टीलेके ऊपर और २ इसके नीचे हैं। समीपहीमें ८० सत्ती स्तंभ खडे हैं। गढमुक्तेश्वर में ४ सराय, खैराती अस्पताल, पुलिस स्टेशन और एक बंगला है।

गढमुक्तेश्वरमें कार्तिककी पूर्णिमाको बडा मेला होताहै, जो आठ नौदिनों तक रहता है। मेलेमें लगभग २ लाख यात्री आते हैं। चैत्र पूर्णिमा का मेला छोटा होता है। गढमुक्तेश्वर से ४ मील उत्तर गंगा और बूढीगंगा का संगम है। गढमुक्तेश्वर के पास बरसात में घाट चलता है और दूसरे दिनों में नाव का पुल रहता है।

दशवां अध्याय।
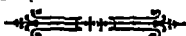
हस्तिनापुर और संक्षिप्त महाभारत।

हस्तिनापुर।

मेरठ शहर से २२ मील पूर्वोत्तर गंगा के प्रथम बेड़ बूढी गंगा के किनारे पर, पश्चिमोत्तर देश के मेरठ जिले में हस्तिनापुर है। मेरठ शहर से २१ मील उत्तर खतौली का रेलवे स्टेशन है, जहांसे सीधा पूर्व हस्तिनापुर का एक मार्ग है। हस्तिनापुर एक समय जगत विख्यात कौरव और पांडवों की राजधानी एक प्रसिद्ध नगरथा, परंतु सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय इसमें केवल २८ मनुष्य थे, अर्थात् २७ हिंदू और एक मुसलमान। पुराणों में लिखा है कि जब हस्तिनापुर गंगा की बाढ से बह जायगा, तब कौशांबी नगरी पांडुवंशियों की राजधानी होगी। हस्तिनापुर में एक शिव मंदिर है और साधु लोग रहते हैं। पुराने शहर की निशानियां अबतक देखने में आती हैं।

संक्षिप्त महाभारत–आदि पर्व (९५ वां अध्याय)

पुरुवंश

कश्यप
|
सूर्य
|
वैवस्वतमनु
|
इला
|
पुरूरवा
|
आयु
|
नहुष
|
ययाति
|
पूरु
|
जनमेजय
|
प्राचीन्वान
|
संयाति
|
अहंयाति
|
सार्व भौम
|
जैत्सेन
|
अर्वाचीन
|
अरिह
|
महाभीम
|
अयुतनायी
|
अक्रोधन

देवातिथि
|
अरिह
|
ऋक्ष
|
मतिनार
|
तंसु
|
ईलिन
|
दुष्यंत
|
भरत
|
भुमन्यु
|
सुहोत्र
|
हस्ती
|
विकुंठन
|
अजमीढ
|
संवरण
|
कुरु
|
बिदूरथ
|
अनश्वा
|
परीक्षित
|
भीमसेन
|
प्रतिश्रवा

राजा भरतके प्रपौत्र और राजा सुहोत्रके पुत्र हस्तीनामक राजा हुए, जिन्होंने निज नामसे हस्तिनापुर स्थापन किया। राजा हस्तीके ११ वीं पीढीमें राजा प्रतीपका जन्म हुआ।

(९७ वां अध्याय) हस्तिनापुरके राजा प्रतीप गंगाद्वारमें जप करते थे। स्त्री रूपिणी गंगाने जलसे निकलकर राजाके दहिनी ऊरुका स्पर्श किया। राजा बोले कि हे कल्याणि! मैं तुम्हारा कौन प्रिय कार्य करूं। नारी बोली कि हे राजन्! तुम मुझे भजो। राजा बोले कि तुमने दक्षिण ऊरुका आश्रय कर मुझे आलिंगन किया है। पुरुष की दाहिनी ऊरु पुत्र कन्या और पुत्रवधू का आसन है और बाई ऊरु प्रणयिनी के भोगने के योग्य है। इसलिये तू मेरी पुत्रवधू हो। गंगा यह वचन स्वीकार करके उसी स्थान में अंतर्द्धान हुई। उसी समय से राजा प्रतीप अपनी स्त्री के सहित पुत्र के लिये तप करने लगे। उसके अनंतर दंपतिके बुढापे में पुत्र ने जन्म लिया। वृद्धराजाके शांत चित्त होने पर संतानका जन्म

हुआ, इस कारण पुत्र का नाम शंतनु पडा। राजा प्रतीप शंतनु को युवा देखकर उनसे बोले कि हे पुत्र! पूर्वकाल में एक सुन्दर स्त्री मेरे पास आई थी, यदि वह पुत्रकी कामना से एकान्त में तुम्हारे पास आवे तो तुम उससे ऐसा मत पूछना कि तुम कौन वा किसकी पुत्री हो और वह कामिनी जो कर्म करेगी, वहभी तुम उससे मतपूछना। राजा प्रतीप ऐसी आज्ञा देने के पश्चात् शंतनु को निज राज्य पर अभिषिक्त करके वनको चले गए।

एक समय राजा शंतनु मृगया करते हुए गंगाके सामने अकेले घूमरहे थे।(९८वां अध्याय) इतने में गंगा देवी परम सुंदरी नारी का वेष धारण करके राजा से बोली कि हे महीपाल! मैं तुम्हारी रानी हूंगी, पर मैं यदि शुभ वा अशुभ कार्य करूं तो तुम रोकने वा अप्रिय बात कहने नहीं पावोगे, यदि ऐसा करोगे तो मैं निश्चय तुमको त्याग दूंगी। यह वचन राजा के स्वीकार करने पर गंगा मानवी स्वरूप धर कर शंतनु की प्यारी पत्नी हुई। अनंतर गंगा के ८ पुत्र उत्पन्न हुए। जब जो पुत्र जन्म लेता था, तभी वह अपने पुत्र को जल में डाल देती थी। इस प्रकार ७ पुत्रों को उस ने जल में डाल दिया। आठ वें पुत्रके जन्म लेने पर जब गंगा हँस रही थी, तब राजा अतिदुःखी होकर उससे बोले कि पुत्रको मतमारो तुम कौन वा किसकी पुत्री हो कि पुत्रों को मारडालती हो। स्त्री बोली कि मैं तुम्हारे इस पुत्रको न मारूंगी, पर मैंने जो नियम बांधा था, उसके अनुसार मेरा तुम्हारे पास रहने का काल बीत गया। मैं जह्नु का कन्या जाह्नवी हूं। देवताओं के कार्य साधने के लिये मैंने तुमसे सहवास किया था। तुम्हारे पुत्र अष्ट वसु वशिष्ठजी के शापसे मनुष्य होकर जन्मे थे। मैंने वसुओं की माता होने के लिये मानवी शरीर का आश्रय किया था। वसुओं से मेरा यह नियम था, कि जन्म लेतेही मैं उनको मानवी जन्म से मुक्त करूंगी। वे ऋषिशाप से मुक्त हुए। मैंने तुम्हारे लिये वसुओंसे एक पुत्र मांगा था, इससे प्रत्येक वसुके आठवें भाग से इस पुत्र का जन्म हुआ है। (९९ वां अध्याय) ऐसा कह गंगा उस कुमार को लेकर मनमाने स्थान में पधारीं। वसु शंतनु की संतान होकर देवव्रत और गांगेय नामसे प्रसिद्ध हुए। शंतनु ने शोक युक्त होकर निजपुर में प्रवेश किया।

(१०० वां अध्याय) राजा शंतनु कुरुवंशियों की कुल–परंपरागत राजधानी हस्तिनापुर में बस कर राज्य का शासन करने लगे।

एक समय शंतनु ने मृग को विद्धकर उसके पीछे जाते हुए गंगा में देखा, कि एक सुन्दर कुमार बाँणजाल से गंगा के सोतों का रोककर दिव्यास्त्र चला रहा है। कुमार पिता को देखकर माया से उनको मुग्ध कर के जब अंतर्हित हुआ, तब शंतनु गंगा से बोले कि उस कुमार को तुम मुझे दिखाओ। गंगा ने उत्तम रूप धर कुमार कोलेकर राजा को दिखाया और उनसे कहा कि हे नृपते! पहिले तुमने मेरे गर्भसे जो आठवां पुत्र जन्माया था, यह वही है तुम इसको लेजाओ। शंतनु ने अपने पुत्र देवव्रत (भीष्म) को हस्तिनापुर में लाकर यौवराज्य में अभिषिक्त किया और पुत्र सहित आनंद में ४ वर्ष बिताया।

किसी समय शंतनुने यमुनातट के वन में देवरूपिणी एक दासी को देखा और उस से पूछा कि तुम कौन हो? उसने कहा कि मैं दासी हूं और नाव चलाती हूं। राजा ने उसकन्या के रूप से मोहित होकर उसके पिता के पास जाकर उससे उसको मांगा। दाशराज ने कहा कि यदि आप इस कन्या के पुत्र को अपने पीछे राज्य देना अंगीकार करें, तो मैं कन्या को

दूंगा । राजा दाशराज का वचन अस्वीकार करके कन्या की चिंता करते हुए हस्तिनापुर लौट आए। देवव्रत ने वृद्धमंत्री से राजा के शोकयुक्त होने का कारण पूछा तो मंत्री ने सब कारण कह सुनाया । देवव्रत ने स्वयं दाशराज के पास जाकर पिताके लिये वह कन्या मांगी और दाशराजसे कहाकि इस कन्याके गर्भसे जो पुत्र उत्पन्न होगा वह हमारे राज्यका अधिकारी वनेगा । तब दाशराज बोले कि आपकी जो संतानें होगी, उससे मुझे वडा संशय होता है। देवव्रतने कहा कि मैं आजसे ब्रह्मचर्य्य अवलंबन कर लेताहूं । देवव्रतने योजनगंधा कन्याको हस्तिनापुरमें लाकर शंतनुसे सब हाल कह सुनाया । सब लोग उनके उस दुष्कर कार्यकी प्रशंसा करने लगे और बोले कि इनके भयंकर कार्य करनेसे इनका नाम भीष्म हुआ है । शंतनुने वह दुःसाध्य कार्य्य सुनकर भीष्मको इच्छामृत्युका वर दिया ।

(१०१ वां अध्याय) राजा शंतनुका विवाह उस सत्यवतीनामक कन्यासे हुआ। उनके वीर्य्य और सत्यवतीके गर्भसे चित्रांगद और विचित्रवीर्य्य दो पुत्र उत्पन्न हुए। विचित्रवीर्य्यके वयः प्राप्त होनेपर शंतनुकी मृत्यु हुई। भीष्मने चित्रांगदको राज्यपर अभिषिक्त किया, परंतु गंधर्वराज चित्रांगदने कुरुक्षेत्रमें सरस्वतीके तटपर (३ वर्षोंतक युद्ध होनेके उपरांत) राजा चित्रांगदको मारडाला । उसके पश्चात् भीष्मने युवा विचित्रवीर्य्यको कुरु राज्यमें अभिषिक्त किया ।

(१०२ रा अध्याय) भीष्म काशीमें जाकर काशिराजकी ३ पुत्रियोंको स्वयंवरसे हर लाए। उन्होंने वहांके भूपगणोंको घोर युद्धमें अकेलेही परास्त किया था । सबसे वडी कन्या अंवाने जब कहा कि मैं पहिलेही सोम राज्यके अधीश शाल्वको मनही मनमें पति वना चुकी थी, तब भीष्मने उसको जानेकी आज्ञा दे दी और अम्बिका और अंबालिका नाम्नी दो कन्याओंसे विचित्रवीर्य्यका विवाह कर दिया। विचित्रवीर्य्य उनके साथ सात वर्ष विहारकर यौवन कालहीमें क्षयरोगसे जकडकर कालवश होगए ।

(१०३ रा अध्याय) सत्यवतीने भीष्मसे कहा कि हे महाभुज ! हमारे वंशपरंपराकी रक्षाके लिये तुम मेरी दोनों पुत्रवधुओंसे पुत्रोत्पादन करो । भीष्म बोले कि हे माता ! संतानके लिये जो दाशराजसे मेरा सत्यप्रण हुआ था, उसको मैं किसी प्रकार छोड नहीं सकता । (१०४ अध्याय पूर्वकालमें यमदग्निके पुत्र रामने जब २१ वार क्षत्रियकुलका नाश कर दिया, तब क्षत्रियोंकी स्त्रियोंने वेदपारग ब्राह्मणोंसे संतान उत्पन्न कराई । वेदमें यह निश्चित है कि जो पुरुष विवाह करता है, उसके क्षेत्रमें संतान होनेसे उसीकी होती है। धर्म जान करकेही क्षत्रियपत्नियोंने ब्राह्मणोंसे संसर्ग किया था । (१०५ वां अध्याय) तुम भरतवंशकी संतान वढानेके लिये किसी गुणवंत ब्राह्मणको धन देकर बुलाओ । वह विचित्रवीर्य्यके क्षेत्रमें पुत्रोत्पादन करेंगे ।

सत्यवतीने कहा कि एक समय मैं अपने पिताकी नावको चलाती थी कि महर्षि पराशर यमुनापार उतरनेके लिये मेरी नावपर चढे । उस समय वह कामवश होकर मीठी बातोंसे मुझको लुभाने लगे । मैं ऋषीके शापके भयसे उनकी बात पलट नहीं सकी । यमुनाके द्वीप पर मेरे गर्भसे पराशरके पुत्र जन्म लेकर महर्षि द्वैपायन नामसे प्रसिद्ध हुए जो तपके प्रभावसे चारों वेदोंके व्यास अर्थात् विभाग करके व्यास नामसे प्रख्यात हुए हैं और कृष्णवर्ण होनेके

कारण उनका नाम कृष्ण हुआ है। वह जन्म लेकर उसी क्षण पिताके सहित चले गए थे। अब वह तुम्हारे भ्राताके क्षेत्रमें उत्तम पुत्र उत्पन्न कर सकते हैं। हे भीष्म ! यदि तुम्हारी सम्मति हो तो मैं उनको स्मरण करूं। सत्यवतीने भीष्मके सम्मत होनेपर कृष्ण द्वैपायनका स्मरण किया। वह माताके सन्मुख प्रकट हुए। सत्यवती बोली कि हे ब्रह्मर्षे ! एक माताके गर्भसे उत्पन्न होनेके कारण तुम विचित्रवीर्य्यके भ्राता हुए हो। तुम्हारे कनिष्ठ भ्राताकी दो भार्या हैं। तुम उनसे पुत्रोत्पादन करो। विना राजाके राज्यकी रक्षा नहीं हो सकती, इसलिये तुम आजही गर्भाधान करो। यह सुन वेदव्यासने माताका वचन स्वीकार किया।

(१०६ वां अध्याय) सत्यवतीने वधूके ऋतु स्नान करने पर उससे कहा कि हे अंबिका ! तुम्हारे एक देवर हैं, वह आज रात्रिमें तुम्हारे पास आवेंगे, तुम एक मन होकर उनकी बाट जोहती रहो। अंबिका अपनी सासके आज्ञानुसार भीष्म और दूसरे कुलश्रेष्ठोंकी चिंता करने लगी। अनन्तर वेदव्यासने अंबिकाके गृहमें प्रवेश किया। अंबिकाने उस कृष्णवर्ण पुरुषकी पिंगल जटा, बडी भारी दाढी और जलते हुए नेत्रोंको देखकर आंखें मूंद लीं। वेदव्यासने उसके साथ सहवास किया। व्यासजीके घरसे निकलनेपर माताने पूछा कि क्यों? बेटा ! इस बधूसे गुणवान पुत्र जन्म लेगा। व्यासजी बोले कि माताके दोषसे वह पुत्र अन्धा होगा। सत्यवती बोली कि हे तपोधन ! अन्धा पुरुष कुरुवंशके योग्य भूप नहीं होसकता, अतएव कुरुवंशके राजा होने योग्य तुमको एक पुत्र उत्पन्न करना होगा। आगे समय आने पर अंबिकाने एक अन्धा पुत्र प्रसव किया। सत्यवतीने फिर ऋषिको बुलाया। वेदव्यास पूर्ववत् विधिके अनुसार अम्बालिकाके पास आकर उपस्थित हुए। अम्बालिका ऋषिको देख कर पीली होगई,तब व्यासजीने उस स्त्रीसे कहा कि तुम मुझको कुरूप देखकर पीली हुई हो, इस लिये तुम्हारा पुत्र भी पीला होकर पांडु नामसे प्रख्यात होगा। व्यासने गृहसे निकलने पर पुत्रके पीले होनेका विषय मातासे कह सुनाया। सत्यवतीने फिर उनसे और एक पुत्रकी प्रार्थना की। महर्षिने वह भी स्वीकार किया। अनंतर समय आनेपर अंबालिकाने सुंदर पांडुवर्ण एक कुमार प्रसव किया। सत्यवतीने बडी बधूके ऋतुकाल आनेपर उसको व्यासजीके निकट नियुक्त किया, परंतु उसने अपने समान एक दासीको अपने आभूषणोंसे अलंकृत कर व्यासजीके निकट नियोग करादिया। वह दासी ऋषिके आनेपर उठकर नमस्कार पूर्वक ऋषिकी आज्ञानुसार उनको उपचारित और सत्कृत कर विस्तरपर जा बैठी। महर्षि काम भोगकर उसपर अति प्रसन्न हुए और उससे बोले कि तुम्हारा दासीपन मुक्त होगा और तुम्हारी संतान धर्मात्मा, मंगलभाजन और बुद्धिमानजनोंमें श्रेष्ठ होगी। समय आनेपर व्यासके वीर्य और दासीके गर्भसे विदुरने जन्म लिया। व्यासजीने माताके निकट आकर मांडव्यके शापसे धर्मको विदुरके स्वरूपमें जन्म लेनेका वृत्तांत कह सुनाया।

(१०९ वां अध्याय) तीनों कुमारोंके जन्म लेनेपर कौरवगण, कुरु, जांगल देश और कुरुक्षेत्र इन तीनोंकी पूरी उन्नति हुई। धृतराष्ट्र, पांडु और बिदुर भीष्मसे पुत्रकी भांति प्रतिपालित होकर युवा हुए। धृतराष्ट्रको जन्मांध होने और बिदुरको शूद्रानीके गर्भसे जन्म लेनेके कारण राज्य नहीं मिला। पांडु राज्याधिपति हुए।

(११० वां अध्याय) भीष्मने ब्राह्मणोंके मुखसे जब सुना कि सुबलपुत्री गांधारीने महादेवकी आराधना करके १०० पुत्र पानेका वर लाभ किया है, तब धृतराष्ट्रके निमित्त

उस कन्याके लिये गांधारराजके निकट दूत भेजा। गांधारराजने कन्यादान करनेका निश्चय किया। गांधारीने सुना कि धृतराष्ट्र अंधे हैं, तब उन्होंने वस्त्रसे कई फेरा लगाकर अपने नेत्रोंको बांध दिया। गांधारराजकुमार शकुनी अपनी बहिनको लेकर कौरवोंके निकट आया गांधारीसे धृतराष्ट्रका विवाह हुआ। (१११ वां अध्याय) वसुदेवके पिता शूर यदुकुलमें श्रेष्ठ थे, उनकी पृथानामक प्रथम कन्या थी। शूरने उस कन्याको अपने मित्र कुंतिभोजको देदिया। पृथाने सेवा करके महर्षि दुर्वासाको प्रसन्न किया। दुर्वासाने पृथाको अभिचारयुक्त एक मंत्र दिया और उससे कहा कि तुम इस मंत्रसे जिन जिन देवताओंको बुलाओगी, उन देवताओंके प्रभावसे तुम्हारे पुत्र उत्पन्न होगा। पृथाने अचरज मानकर कन्यावस्थाहीमें सूर्य देवको बुलाया। सूर्यदेव उसके निकट आए। पृथा बोली किसी ब्राह्मणके वरकी परीक्षाके लिये मैंने तुमको बुलाया है। सूर्यने कहा कि तुम मुझसे संगम करो। तुमने जिस कारणसे मुझको बुलाया है यदि वह व्यर्थ होगा तो हानि होगी। इसके अनंतर सूर्य पृथासे जा मिले। फिर कवचकुंडलोंके सहित कर्ण नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। आदित्य आकाशको चलेगए। पृथाने उस बुरी लीलाको छिपानेके लिये कुमारको जलमें बहा दिया। सूतपुत्र राधापतिने जलमें डाले हुए बालकको उठाकर पुत्रका प्रतिनिधि बनाया। (११२ वां अध्याय) कुंतिभोजने राजाओंको बुलाकर स्वयंवरमें कन्याको नियुक्त किया। पृथा अर्थात् कुंतीने पांडुके गलेमें माला देदी। कुंतिभोजने यथाविधि उनका विवाह कर दिया। पांडु अपनी सेनाओंके सहित हस्तिनापुरमें आए। (११३ वां अध्याय) भीष्म चतुरंगिनी सेनाओंके सहित मुद्रेश्वरके नगरमें गए। उन्होंने अपरिमित सुवर्ण, विचित्र रथ, गज, रत्न, अश्व, वस्त्र, आभूषण, अच्छी मणि, मोती और लाल मद्रराज शल्यको दिए। शल्यने यह सब धन लेकर नाना अलंकारों से सजीहुई कन्या भीष्म को दी। भीष्म माद्री को लेकर हस्तिनापुर आए। पांडु ने शुभ दिन में विधि पूर्वक माद्री से विवाह किया। (११४ वां अध्याघ) भीष्म ने सुना कि शूद्रानी के गर्भ से जन्मी हुई राजा देवक की यौवन युक्त कन्या है, तब वे देवक से वह कन्या मांग लाए और उससे विदुर का विवाह करदिया। विदुर ने उस कन्या से अपने समान गुण और नम्रता युक्त अनेक पुत्र उत्पन्न किए।

(११५ वां अध्याय) गांधारी गर्भवती हुई, परंतु दो वर्ष बीतने पर भी उसके संतान न हुई, तब उसने दुःखी होकर बडे यत्न पूर्वक अपने पेट में आघात किया। जिससे वह गर्भ फटी हुई लोहे की गेंद के समान मांसपेशी स्वरूप में भूमि पर गिरा। यह समाचार पाकर द्वैपायन वहां आए और गांधारी से बोले कि घृत से १०८ घडे भर कर निरालय में यत्न से रक्खो और ठंढे जल से मांसपेशी को नहलाओ। अनंतर ऋषि के कथनानुसार नहलाते नहलाते मांसपेशी बहुत भागों में बंटगई। समय पूर्ण होने पर उनकी संख्या १०० हुई। प्रत्येक भाग अंगूठे के पीर के समान हुआ। सब मांसपेशी घृत के घडों में रक्षित होकर गुप्त स्थान में रक्खी गई। व्यासदेवने गांधारी से कहा कि दो वर्ष पीछे इन घडों को खोलना होगा।

अनंतर योग्य समय में उन टुकडों में से पहिले राजा दुर्योधन का जन्म हुआ, पर राजा युधिष्ठिर पहिले जन्म ले चुके थे। जिस दिन दुर्योधन का जन्म हुआ, उसी दिन पांडु पुत्र भीमसेन ने भी जन्म लिया था। एक मास में धृतराष्ट्र के १०० पुत्र और एक कन्या उत्पन्न

हुई। गांधारी जब बढते हुए गर्भ की पीडा से कातर थी, उसी वर्ष वैश्या के गर्भ से धृतराष्ट्र के युयुत्सु नामक पुत्र जनमा।

(११८ वां अध्याय) एक समय राजा पांडु ने एक बडे बन में घूमते हुए मैथुन धर्म में आसक्त एक मृग को देखा और पांच बाणों से उस मृग और मृगी को विद्ध किया। कोई तेजस्वी ऋषि कुमार मृग का स्वरूप धारण कर के मृगी से मिला था, वह पांडु से बोला कि हे राजन्। तुमने विना दोष मैथुन में आसक्त मुझे मारा, इस लिये मैं तुम्हें शाप देता हूं कि जब तुम काम युक्त हो अपनी प्यारी से मिलोगे, तब मृत्यु को प्राप्त होगे। ऐसा कह मृग ने अपना प्राण छोडा। (११९ वां अध्याय) राजा पांडु ने अपना और अपनी स्त्रियोंके सब मूल्यवान वस्त्र और आभूषण ब्राह्मणों को देदिये और सारथियों और नौकरों को हस्तिनापुर में भेज दिया। इसके पश्चात् वह फलमूल खाते हुए दोनों स्त्रियों के सहित शतशृंग पर्वत पर जा कर कठोर तप करने लगे।

(१२० वां अध्याय) कुछ दिनों के उपरांत राजा पांडु ने तपस्वियों से पूछा कि हे तपोधन! जिस प्रकार पिता विचित्रवीर्य्य के क्षेत्र में महर्षि व्यास से मैंने जन्म लिया है, क्या? वैसेही मेरे क्षेत्र में संतान उत्पन्न हो सकेगी। ऋषिगण बोले कि हे धार्मिक नरेश? तुम सन्तान उत्पन्न होने का प्रयत्न करो। तब पांडु ने कुंती से निराले में कहा कि इस विपत्तिकाल में तुम पुत्र उत्पन्न करने का प्रयत्न करो। स्वायंभुव मनु ने कहा है कि मनुष्यगण अन्य जन से भी श्रेष्ठ पुत्र प्राप्त कर सकते हैं। तुम श्रेष्ठ जन से पुत्र प्रसव करो। (१२३ वां अध्याय) जिस समय गांधारी ने वर्षभर गर्भ धारण किया था, उसी समय कुंती गर्भ के निमित्त धर्म को आनेके लिये दुर्वासा का दिया हुआ मंत्र यथाविधि जपने लगी। मंत्रके प्रभाव से विमान में आरूढ हो कर धर्म आपहुंचे। कुंती ने धर्म से मिल कर युधिष्ठिरनामक पुत्र प्राप्त किया। उसके उपरांत पति की आज्ञा से उसने पवनदेव को बुलाया। पवनदेव मृग पर चढ कर कुंती के निकट आए जिससे भीमसेन का जन्म हुआ। जिस दिन भीमसेन ने जन्म लिया, उसी दिन गांधारी के गर्भ से दुर्योधन का जन्म हुआ। उसके पश्चात् राजा पांडुने कुंती के सहित इंद्र का तप किया। वहुत काल वीतने पर देवराज आकर पांडु से बोले कि मैं तुमको तीनों लोकों में प्रसिद्ध एक श्रेष्ठ पुत्र दूँगा। पति की आज्ञा से कुंती ने इंद्र को बुलाया, उससे अर्जुन का जन्म हुआ। (१२४ वां अध्याय) पांडु की दूसरी पत्नी माद्री ने पांडु से कहा कि मुझे बडा दुःख है कि मुझको संतान नहीं हुई यदि कुंती मेरी संतान होने का उपाय कर दें तो मुझ पर बडी दया होगी। पति की आज्ञासे कुंती ने माद्री से कहा कि तुम एक वार किसी देव का स्मरण करो, उनसे उनके सदृश तुम्हारा पुत्र होगा। माद्री ने दोनों अश्विनीकुमारों को स्मरण किया। दोनों ने वहां आकर नकुल और सहदेव नामक दो यमल पुत्रों का जन्म दिया। शतशृंग पर रहने वाले ब्राह्मणों ने इस प्रकार कुमारों का नाम रक्खा कुंती के पुत्रों में वडे का नाम युधिष्ठिर मझले का भीम, छोटे का अर्जुन और माद्री के पुत्रों में पहिले जन्म लिए हुए पुत्र का नाम नकुल और दूसरे का सहदेव।

(१२५ वां अध्याय) पांडु अपने भुज वल के आश्रय से उस पर्वत पर भारी वनमें सुख से काल काटने लगे। एक समय वसंत ऋतु में माद्री को देख कर पांडुके हृदय में मदन की आग सुलग उठी। वह माद्री के रोकने पर भी शाप की बात भूल कर बल से माद्री क

पकड कर मैथुन धर्म में प्रवृत्त हुए। उसी समय पांडु का देहांत हो गया। माद्री उनके संग गई।

(१२६ वां अध्याय) तपस्वी महार्षिगण पांडु की स्त्री, पुत्र और दोनों मुर्दों को लेकर हस्तिनापुर आए! उन्हों ने पांडु के पुत्रों के जन्म और पांडु की मृत्यु का संपूर्ण वृत्तांत कौरवों से कह सुनाया और यह भी कहा कि सात दिन हुए कि पांडु पितृलोक को गए, पतिव्रता माद्री उनके संग पति लोक में गई। (१२७ वां अध्याय) कौरवगण माद्री सहित पांडुके मृत शरीर को पालकी में चढा कर गंगा तट में ले गए। वहां सुगंधि पदार्थों से मिली हुई चदन की लकडी से पांडु और माद्री की देह जलाई गई। पांडवों के साथ भीष्म; विदुर, धृतराष्ट्र और संपूर्ण स्त्रियों ने पांडु की जल क्रिया की।

(१२८ वां अध्याय) महर्षि व्यास के उपदेश से सत्यवती ने अपनी दोनों पुत्रबधुओंके सहित वन में प्रवेश किया और वहां कठोर तपस्या करने के उपरांत शरीर छोड कर मन-मानी सुगति प्राप्त की।

पांडवगण धृतराष्ट्रके पुत्रों के साथ प्रसन्न चित्त से खेलते कूदते थे। जव धृतराष्ट्रके लडके आनन्द से खेलते थे, तव पांडवगण उनको पकड कर एक से दूसरे को अलग कर देते थे और उनके सिरों को थांभ थांभ कर एक को दूसरे से लडाते थे। धृतराष्ट्र के १०१ कुमारों को भीमसेन अकेले ही दिक्क किया करते थे। वह वल से उनके केश पकड कर मारते पीटते थे और जल में खेलते हुए अपनी दोनों भुजाओं से १० लडकों को पकड कर कुछ काल तक जलमें डुवाए रहते थे। जव धृतराष्ट्र के पुत्र फल तोडने के लिये वृक्षों पर चढते थे, तव भीम उन पेडों में लात मार कर हिलाते थे, जिससे लडके पेडों से नीचे गिर जाते थे। धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन ने भीमसेन का अतिप्रख्यात वल देख कर विचार किया कि इसको कौशल से मार डालना चाहिये। जव यह नगर की फुलवाडी में सो रहेगा, तव मैं इसको गंगा में डाल दूँगा, पश्चात् इसके भाइयों को वांध कर एकही राजा हूँगा।

दुर्योधन ने गंगा के तट पर प्रमाणकोटि नामक स्थान में जल क्रीडा के लिये जल और स्थल पर वस्त्र और कंवल का वडा भवन वनवाया। जव रसोई वालों ने उसमें चारों प्रकार के भोजन वनाकर रक्खे, तव दुर्योधन पांडवों के सहित वगीचे में जा पहुंचा। जव पांडव और कौरव नाना स्थानों से मँगाए हुए पदार्थों का स्वाद लेने लगे और एक दूसरे के मुख में खाने की वस्तु देने लगा, तव दुर्योधन ने स्वयं उठकर विपैली वस्तु का एक वडा भाग भीम के मुख में डाल दिया। जव भीम विप के वर्ताव से अचेत होगए तव दुर्योधन ने उनको लताजाल से वांध कर जल में गिरा दिया। भीम डूव कर नागोंके घरमें सर्पोंके बच्चों पर जागिरे। सर्पोंके काटने से उनके शरीर का स्थाई विप चलते हुए सर्पविष से दूर होगया। उस समय कुंती के पिता के मातामह आर्यकनामक नागराज ने भीम को देखकर गले से लगा लिया। (१२९ वां अध्याय) युधिष्ठिर आदि पांडवगण ऐसा विचार कर कि, भीमसेन हस्तिनापुर चले गए, कौरवोंके सहित हस्तिनापुर लौट आए। राजायुधिष्ठिर हस्तिनापुर में भीम को न देखकर व्याकुल होगए। इधर भीमसेन नागों के गृह में आठवें दिन जागे। नागों ने उनको जल से उठाकर उसी वनखंड में छोड दिया। भीमसेन ने हस्तिनापुर

में आकर दुर्योधन के कार्यों को अपने भाइयों से कह सुनाया । राजा युधिष्ठिर ने अपने भाइयों से कहा कि यह वृत्तांत कभी प्रकाश मत करो । इसके उपरांत दुर्योधन ने भीम के भोजन के पदार्थ में फिर विष मिलाया, पर भीमसेन ने उसको खाकर पचा लिया।

(१३३ वां अध्याय) द्रोणाचार्य हस्तिनापुरमें अपने साले कृपाचार्यके गृहमें कुछ कालसे रहते थे। एक समय युधिष्ठिरआदि लड़के हस्तिनापुरसे निकल कर गेंदका खेल खेलते हुए घूमने लगे। उनकी गेंद कूपमें गिरगई। लड़कोंके बहुत प्रयत्न करने पर भी गेंद नहीं निकली। उस समय द्रोणाचार्य हँस कर बोले. कि तुम्हारे क्षत्रियबल पर धिक्कार है। तुम भरतकुलमें जन्म लेकर भी इस गेंदको उठा नहीं सके। ऐसा कह द्रोणने जलसे खाली उस कूपमें अपनी मुदरी डालदी और अपने शरासनके प्रभावसे गेंद और मुदरी दोनोंको कूपसे निकाल दिया। लड़कोंने भीष्मके समीप जाकर ब्राह्मणके आश्चर्य कार्यकी बात कह सुनाई। भीष्म स्वयं जाकर आदर पूर्वक द्रोणाचार्यको लिवालाए और कुमारोंको अस्त्रविद्या सिखलानेके लिए उनको नियुक्त किया। (१३४ वां अध्याय) भीष्मने बहुतसा धन देकर उनके रहनेके लिये धन धान्यसे भरा एक गृह ठहरा दिया। द्रोणने प्रसन्न चित्तसे पांडव और धृतराष्ट्रके पुत्र तथा अन्य कुरुवंशियोंको शिष्य बनाया। वृष्णिवंशी, अन्धकवंशी और अनेकदेशोंके भूपाल तथा सूतपुत्र कर्ण द्रोणाचार्यके निकट आकर उनके शिष्य बने।

(१३५ वां अध्याय) जब पांडव और धृतराष्ट्रके पुत्रगण अस्त्रशिक्षामें निपुण हुए, तब कुमारोंकी शिक्षाकी परीक्षाके लिए एक सुन्दर अखाड़ा बनाया गया। निश्चय किए हुए दिनमें हस्तिनापुरके संपूर्ण राजपुरुष और साधारण लोग अखाड़ेके निकट एकत्रित हुए। युधिष्ठिर आदि कुरुवंशी कुमार धनुषबाण धारण करके वहां आए और अति आश्चर्य्यमय अस्त्र विद्या प्रकट करने लगे। (१३६ वां अध्याय) जब अर्जुन अखाडेमें आकर अस्त्र शस्त्र चलानेकी आश्चर्य दक्षता दिखाने लगे, (१३७ वां अध्याय) तब कर्णने अखाड़ेमें प्रवेश करके, अर्जुनने जो जो काम किये थे, वह सब कर दिखाया। दुर्योधनने अपने भाइयोंके सहित कर्णको गलेसे लगाया और उनसे कहा कि हे महाभुज ! मैं आपके अधीनहूं। आप इस कुरु राज्यको मनमाना भोगिए कर्ण बोले कि मैं केवल आपसे मित्रता और अर्जुनसे एक बार द्वंदयुद्ध किया चाहताहूं। इसके उपरांत अर्जुन और कर्ण दोनों युद्धके लिए खड़े हो गये। कर्णकी ओर धृतराष्ट्रके पुत्रगण और अर्जुनकी ओर द्रोण, कृप और भीष्म खड़े रहे। अखाड़ा दो भागोंमें बंट-गया। उस समय कृपाचार्य बोले कि हे कर्ण ! तुम अपने कुल और माता पिताका नाम कहो। अर्जुन राजा पांडुके पुत्र हैं। राजकुमारगण छोटे कुलमें जन्म हुए जनोंसे युद्ध नहीं करते। जब यह सुन कर कर्णका मुख लज्जासे नीचा होकर मलीन होगया, तब दुर्योधनने कर्णको उसी क्षण मन्त्रज्ञब्राह्मणों द्वारा अंग देशका राजा बना दिया। (१३८ वां अध्याय) भीमसेन बोले कि हे कर्ण ! तुम रणभूमिमें अर्जुनसे मारे जाने योग्य नहीं हो। तुम सूतपुत्र हो। तुम घोड़ा चलानेके अर्थ शीघ्र पैनेको थांभो। तुम अंगराज्यके भोगने. योग्य नहीं हो। यह सुन कर्णके होठ कांपने लगे। दुर्योधन भीमसे कर्णके पक्षकी अनेक बातें कहने लगे। उसी समय सूर्य अस्ताचलको

गए। कौरव और पांडव दोनों दलके लोग अपने अपने गृह चले गए। कर्णको पाकर दुर्योधनके मनसे अर्जुनका भय जाता रहा।

(१४० वां अध्याय) कुछ कालके पश्चात् धृतराष्ट्रने युधिष्ठिरको युवराजके पद पर नियुक्त किया। पांडवोंने राजाओंको परास्त करके निज राज्यको बढ़ाया। पांडवोंके बल वीर्यके बहुत प्रसिद्धहो जाने पर धृतराष्ट्रका भाव उनपर एकाएक बिगड गया। वह शोचके समुद्रमें डूबने लगे।

(१४२ वां अध्याय) दुर्योधन भीमको अति बलवंत और युधिष्ठिरको पण्डित देखकर अपार संतापसे जलने लगा। उस समय संपूर्ण मनुष्य युधिष्ठिरको राज्य पानेकी योग्यताके विषयमें कोलाहल मचाने लगे। प्रजाओंकी ऐसी बात सुनकर दुर्योधन बड़ा संतापित हुआ। वह निरालेमें धृतराष्ट्रके पास जाकर कहने लगा कि हे पिता! यदि पांडुके पुत्र उत्तराधिकारी होकर राज्यको पावेंगे, तो भविष्यतमें क्रमसे उनके वंशवाले राजा हुआ करेंगे और हम सबोंको पीढ़ीके क्रमसे अनादरके सहित जीना पडेगा। आप ऐसी कोई अच्छी नीति ठहराइए, जिससे हम लोगोंको पराई कृपा पर पेट पालना न पड़ै। (१४३ वां अध्याय) राजा धृतराष्ट्र ऐसी बातें सुनकर चित्तमें दुविधा करके शोकयुक्त हुए।

(१४४ वां अध्याय) राजा दुर्योधनने सन्मान और धन देकर प्रजा वर्गको क्रमशः वसमें किया। कई एक मन्त्री कहने लगे कि वारणावतनगर बहुत सुन्दर है और वहां पशुपतिका महोत्सव होगा। ऐसा सुन वहां जानेके लिए पांडवोंका मन दौड़ा। राजा धृतराष्ट्रने पांडवोंकी रुचि जानकर उनको वारणावतमें जानेकी आज्ञा दी। (१४५ वां अध्याय) दुर्योधनने पुरोचननामक मन्त्रीसे कहा कि तुम आजही जाकर वारणावत नगरके छोरमें सन, धूप, आदि जितनी आग बालनेवाली वस्तु हैं, उनसे भले प्रकारसे घेरा हुआ एक चौपाल गृह बनवाओ; घृत, तेल चरवी और अधिक लाहके साथ कुछ मट्टी मिलाकर उसकी भीतोंको पोतवा रक्खो; सन, तेल, घृत, लाह और लकडी गृहके प्रत्येक स्थानमें रखदो और ठीक समय आनेपर उस गृहके द्वारमें आग लगादो। उसमें पांडव जल मरेंगे। पुरोचन दुर्योधनकी आज्ञानुसार वारणावतमें जाकर सब काम पूरा करने लगा। (१४६ वां अध्याय) जब पांडव लोग वारणावत नगरको चले और पुरवासी वृंद उनको पहुंचाकर मार्गसे लौटे, तब विदुरने युधिष्ठिरको सावधान किया कि गृहमें आग जल उठेगी, तुम पहिलेसे सावधान रहना।

(१४७ वां अध्याय) पांडव लोग वारणावतमें पहुंचकर पुरोचनकी सेवा और पुरवासियोंकी उपासना प्राप्तकर वहां बसने लगे। १० दिन बीतनेपर पुरोचनने उनको शिवनामक गृहकी बात सुनाई। पांडव लोग उस गृहमें प्रविष्ट हुए। युधिष्ठिरने गृहको देखकर भीमसेनसे कहा कि घृत और लाहसे मिली हुई चरवीकी गन्धको सूंघनेसे प्रकाश होताहै कि यह गृह आग लगने वाली वस्तुओंसे बनाहै। हम यत्नसे यहांही रहकर बाहर निकलनेका पथ ढूँढ़ेंगे। हम जलनेके भयसे भाग जायंतो राज्यलोभी दुर्योधन दूतोंके द्वारा हम सबोंको मरवा सकताहै। हम दुर्योधन और पुरोचनको ठगकर अनेक स्थानोंमें छिपकर वास करेंगे। (१४८ वां अध्याय) विदुरका भेजाहुआ एक मनुष्य जो मट्टी खोदनेमें दक्ष था, आकर पांडवोंसे बोला कि पुरोचन इस गृहके द्वारपर कृष्णपक्षकी चतुर्दशीकी रात्रिमें आग लगा

देगा। युधिष्ठिरने कहा कि अब तुम यत्नपूर्वक हमको इस अग्नि गृहसे बचाओ। खनितने उस गृहके भीतर एक बड़ा बिल खोदकर उसमें ऐसा द्वार लगाया कि वह भूमिके समान होगया और बिलका मुँह ढांप दिया। (१४९ वां अध्याय) वर्ष दिन वहां रहनेके पश्चात् कुन्तीने ब्राह्मणोंको भोजन करायाँ। दैववश एक बहेलिन पांचपुत्रोंके सहित खानेकी इच्छासे उस भोजमें आई थी। वह अपने पुत्रों सहित मदिरा पीकर नशेसे विह्वल हो उस घरहीमें सो गई। रात्रिको बड़ी हवा बह रही थी। ऐसे समयमें भीमसेनने उस गृहमें, जहां पुरोचन सोता था, आग लगादी। फिर पांडवलोग माताके सहित बिलमें जाघुसे और बिलसे निकल लोगोंसे छिप कर शीघ्र चलने लगे। जब वे सब निद्राके झोकोंसे और भयके कारण शीघ्र नहीं चल सके, तब भीमसेन माताको कंधे पर, नकुल और सहदेवको गोदमें और युधिष्ठिर तथा अर्जुनके हाथ पकड़कर छातीसे पेड़ोंको तोड़ते हुए चलने लगे।

(१५१ वां अध्याय) इधर रात्रि बीतने पर वारणावत नगरके वासियोंने आग बुझाकर मन्त्री पुरोचनको जतुगृहके साथ जला हुआ पाया और पांचों पुत्रोंके सहित जली हुई बहेलिनको देखा। तब उन्होंने धृतराष्ट्रके निकट जाकर कहा कि पांडवगण मंत्रि पुरोचनके सहित जलमरे हैं। यह सुनकर धृतराष्ट्र आदि कौरव और पुरवासीगण बिलाप करने लगे। धृतराष्ट्रने ज्ञातियोंके संहित पांडवोंकी जलक्रिया की।

इधर पांडवगण माताके सहित बारणावतसे निकल बडे शीघ्र नावद्वारा गंगाके दूसरे पार जा पहुंचे और रात्रिमें तारोंके सहारेसे पथ जानकर दक्षिण ओर चलने लगे। (१५२ वां अध्याय) भीमसेनने निर्जन घोर वनमें प्रवेश कर एक बडे वटवृक्षके नीचे सभोंको उतारा। इसके पश्चात् वह अपने भाइयोंके लिये दो कोससे डुपट्टेमें जलले आए और सबको धरतीपर सोये हुए देखकर आप जागने लगे।

(१५३ वां अध्याय) वटवृक्षसे थोडी दूर एक शालवृक्षके ऊपर हिडंब नामक राक्षस था। वह इनको सोते हुए देखकर अपनी बहिन हिडिंबासे बोला, कि तुम उन मनुष्योंको मारकर मेरे पास लाओ। हिडंबा पांडवोंके समीप जानेपर सुंदर पुरुष भीमको देखतेही कामवश होगई। वह सुंदर मानवी रूप धरकर भीमसे बोली कि मैं आपको इस राक्षससे बचाऊंगी आप मेरे पति होइए। (१५४ वां अध्याय) हिडिंब वहां आकर भीमसे लडने लगा। पांडवगण माताके साथ जाग उठे। (१५५ वां अध्याय) भीमने हिडिंबको मार-डाला। पांडवगण वहांसे चलने लगे। (१५६ वां अध्याय) हिडिंबाने पांडवोंके साथ यह प्रतिज्ञा की कि मैं तुम लोगोंको मनमाने स्थानमें लेजाऊंगी और विपदसे बचाऊंगी। मैं काम पीडासे सताई जातीहूं। भीमसेन मेरे पति हों। मैं दिनको भीमसेनको लेकर जहां मनमानेगा चलीजाऊंगी और नित्य रात्रिको इन्हें लादूंगी। पांडवोंकी संमति होने पर हिडंबा भीमको लेकर आकाश मार्गको चली गई और नाना स्थानोंमें उनके साथ बिहार करने लगी। पश्चात् उस राक्षसीने अति बीर्यवंत बडी माया रचनेवाला एक पुत्र प्रसव किया। वह बालक बाल अवस्थाहीमें यौबनको प्राप्त हुआ। बालकके घटके समान उत्कच अर्थात् खडे केश थे। इसलिये भीमने उसका नाम घटोत्कच रक्खा। हिडंबाने अपना राक्षसी रूप धारण करलिया। घटोत्कच पांडवोंसे ऐसा कहकर काम पडनेपर आपहुंचूंगा उत्तर ओर चलागया।

(१५७ वां अध्याय) पांडवगण जटाधारी होकर और मृगचर्म तथा वल्कल पहिनकर माता कुंतीके सहित वनांतरमें गमन करने लगे। पथमें मत्स्य, त्रिगर्त, पांचाल और कीचक देशोंके सुंदर वनखंड, और नाना प्रकारके ताल उनको मिले। जब व्यासजीकी पांडवोंसे भेंट हुई, तब उन्होंने उनको एक चक्रानगरीमें एक ब्राह्मणके गृहमें बसा दिया। (१५८ वां अध्याय) पांडवगण एक चक्रानगरीमें कुछ काल बसे। वे दिनको, जो भिक्षा पाते वह अपनी माताको देदेते थे। कुंती भिक्षाकी वस्तुको अलग अलग बांट देती थी। भिक्षाका आधा भाग युधिष्ठिर, अर्जुन, नकुल, सहदेव तथा कुंती यह सब मिलकर भोजन करते थे और आधा भीमसेन खा लेते थे। (१६९ वां अध्याय) कुछ दिनोंके पीछे कुंतीने पुत्रोंको अनमन देखकर युधिष्ठिरसे कहा कि हमको यहां रहे बहुत दिन बीत गए, एक स्थानमें रहनेसे भिक्षा मिलनेकी संभावना बनी नहीं रहती, सो यदि तुम्हारा मत हो तो हम लोग पांचाल देशको चलें; वह देश अन्नसे भरा है। युधिष्ठिर बोले कि ऐसाही हम करेंगे।

(१७० वां अध्याय) एक दिन महर्षि व्यास पांडवोंके निकट आकर कहने लगे कि कृष्णा नाम्नी द्रौपदी तुम्हारी पत्नी बननेकी बाट जोह रही है, तुम लोग पांचाल नगरमें जाकर टिके रहो; निःसंदेह कृष्णाको पाकर सुख पाओगे। व्यासदेव यह कहकर चले गए। तब पांडवगण सीधे उत्तर चलकर सोमाश्रयण नामक तीर्थमें पहुंचे। संध्या होनेपर अर्जुन पथ दिखाने और रक्षाके लिये एक जलती हुई लकडी लेकर आगे आगे चलने लगे। पांडवगण गंगा तटपर जा पहुंचे। (१८४ वां अध्याय) वनके भीतर 'उत्कोचक' तीर्थमें देवलके छोटे भाई धौम्य ऋषि तप करते थे। पांडवोंने वहां जाकर धौम्यको अपना पुरोहित बनाया। (१८६ वां अध्याय) इसके उपरांत वे लोग दक्षिणीय पांचालके पांचाल नगरमें पहुंचकर एक कुंभारके गृहमें टिके और वहां ब्राह्मणकी चाल लेकर भीख मांग मांग पेट पालते हुए बसे रहे।

द्रुपदपुरीके राजा यज्ञसेनकी यह कामना थी कि अर्जुनहीको कन्यादान करें। उन्होंने ऐसा एक दृढ चाप बनवाया था कि जिसको अर्जुनके विना कोई दूसरा नहीं नवा सके और आकाशमें स्थित एक कृत्रिमयंत्र बनवाकर उसमें एक लक्ष जोडवाया था। राजा बोले कि जो राजा शरासनमें गुण चढाकर उस सजे हुए सायकसे यंत्रको पारकर लक्षको बिद्ध करसकेंगे वही मेरी कन्या को पावेंगे। राजा द्रुपदके ऐसे स्वयंवरकी सूचना देने पर राजालोग वहां आने लगे। नाना देशोंसे महर्षिगण और कर्ण तथा दुर्योधन आदि कौरवगण स्वयंवर देखनेके लिये आ पहुंचे। भूपगण अच्छे प्रकारसे अलंकृत होकर भांति भांति के सात तल्ले भवनोंमें जा बैठे। पांडवलोग ब्राह्मण समाज के सहित बैठ कर महत् ऐश्वर्य देखने लगे। इस प्रकार से सभा बढने लगी। १६ वें दिन द्रौपदी बन ठन कर रंगभूमि में जा पहुँची। (१८८ वां अध्याय) बलराम, कृष्ण और प्रधान प्रधान वृष्णिगण, अंधकगण और यादवगण भी आए थे। कृष्णने पांडवोंको देखकर बलदेवजी से कहा कि मुझको जान पडता है कि येही पांचों पांडव हैं। संपूर्ण राजा ज्योंहीं धन्वा नवाने और उसपर गुण चढाने लगे त्योंहीं धन्वाकी कोटिसे फेंके जाकर धरती पर लोट गए, तब उन्होंने उस चेष्टासे मनको हटा लिया। (१८९ वां अध्याय) अर्जुनने ब्राह्मणसमाज से उठकर देखतेही देखते धन्वा पर गुण चढाया और ५ बाण लेकर लक्षको भेद दिया। लक्ष बहुत बिद्ध होकर यंत्रके छेदसे धरता पर गिरगया। जब भारी कोलाहल आरंभ हुआ, तब

युधिष्ठिर नकुल और सहदेवको लेकर डेरेपर चले गए। द्रौपदी अर्जुनके पास जा पहुंची। (१९० वां अध्याय) राजागण अस्त्र लेकर राजा द्रुपदको मारने दौडे। (१९१ वां अध्याय) भीम और अर्जुन कर्णादि राजाओं को रणोन्मत्त देखकर उनकी ओर दौडे। कर्ण अर्जुनसे जा भिडे। शल्य भीमसेन की ओर दौडे। दुर्योधन आदि सबों ने वहां के ब्राह्मणों पर चढाई की। वे लोग द्विजों के साथ विना यत्न धीमी लडाई लडने लगे। अर्जुन और कर्ण एक दूसरे पर क्रुद्ध होकर फुर्ती से लडने लगे। अंत में कर्ण अर्जुन का भुजवीर्य देख कर प्रसन्न हुए और ब्रह्मतेज को जीतने के अयोग्य समझ कर युद्ध से निवृत्त हुए। उधर भीम ने शल्य को ऊपर उठा कर भूमि पर पटक दिया। श्रीकृष्ण ने भीम का यह अलौकिक कार्य देख कर भीम और अर्जुनको कुंतीके पुत्र जाना और संपूर्ण राजाओंको विनय करके युद्धसे निवृत्त किया। राजा लोग अपने अपने गृह को चले गए।

(१९२ वां अध्याय) भीम और अर्जुन द्रौपदी को साथ लेकर कुम्हारके गृह में गए। उन्होंने कुंती से कहा कि हे माता! आज यह भिक्षा मिली है। कुंती कुटी के भीतर ही से विना देखे हुए बोली कि तुम सब मिल कर भोगो, परंतु पीछे द्रौपदी को देख कर पछताने लगी कि हाय मैंने कैसी अनुचित बात कही। राजा युधिष्ठिर ने अर्जुन से कहा कि तुम द्रौपदी से विवाह करो। अर्जुन बोले कि बडे भाइयों के रहते छोटे भाई का पहिले विवाह होना उचित नहीं है। तब युधिष्ठिरने व्यासदेव की बातें स्मरण करके ऐसा कहा कि यह द्रौपदी हम सबों की स्त्री होगी। श्रीकृष्णजी बलदेवजी के सहित पांडवोंके समीप आए और उनसे अनेक बातें कर के शीघ्र वहां से चले गए। (१९३ वां अध्याय) द्रुपद कुमार धृष्टद्युम्न भीम और अर्जुन के पीछे पीछे जाकर किसी स्थान में छिपा था। रात्रि में पांडवों ने जैसी बात चीत की थी और वहां जो कुछ हुआ था, उसे देख कर वह चला गया। (१९४ वां अध्याय) धृष्टद्युम्नने राजा द्रुपद से कहा कि मैं सुन चुका हूं कि पांडव अग्नि के जलनेसे बचे हैं। मुझको जान पडता है कि येही पांचोंपांडव हैं। (१९५ वां अध्याय) राजा द्रुपद का दूत कुँभार के घर जाकर पांडवों से बोला कि महाराज! द्रुपद ने बराती लोगों के लिये अच्छा अन्न बनवाया है। आप शीघ्र वहां आवें। वहीं कृष्ण का विवाह होगा। पांडवगण द्रौपदी और कुंती के सहित विविध यानों पर चढकर द्रुपदराज के घर गए और मनमाने भोजन करके तृप्त हुए।

(१९६ वां अध्याय) राजा द्रुपद के पूछने पर युधिष्ठिर ने कहा कि महाराज! आपका मनोरथ सफल हुआ है, हम लोग राजा पांडु के पुत्र हैं; राजा द्रुपद पांडवों का परिचय पाकर अति हर्षित हुए। उन्होंने युधिष्ठिर को राज्य में बैठाने की प्रतिज्ञा की। राजा द्रुपद ने युधिष्ठिर से कहा कि आज शुभ दिन है। अर्जुन कृष्णा से विवाह करें। युधिष्ठिर बोले कि द्रौपदी हमसबोंकी रानी होगी। द्रुपद ने कहा कि एक नारी के बहुत पति होना मैंने कभी नहीं सुना, तुम धर्म के जानकार होकर क्यों लोक और वेद के विरोधी कर्म में हाथ डाला चाहते हो। युधिष्ठिर बोले कि प्रचेता आदि पहिले के महात्मा जिस पथ से चले हैं। हम उसी पथ से चलेंगे। मेरी माता ने वह आज्ञा दी है, यह अवश्यही सनातन धर्म है और इस पर अधिक विचार करने का प्रयोजन नहीं है।

उसी समय व्यासजी आ पहुंचे । (१९८ वां अध्याय) उन्होंने राजा द्रुपदसे कहा कि पहिलेही यह निश्चय हुआ है कि कृष्णा इन सवोंकी पत्नी वनेगी । एक तपोवनमें किसी ऋषिकी एक कन्या थी । उसने कठिन तप करके शंकरको प्रसन्न किया । भगवान् शंकरने कन्यासे वर मांगनेको कहा । कन्या हड़वड़ीसे पांच वार वोली कि मैं सर्वगुणयुक्त पतिको मांगतीहूँ । शंकरने कहा कि हे भद्रे! तुमने मुझसे ५ वार कहा कि पति दो, इसलिये तुम्हारे दूसरे जन्ममें ५ पति होंगे, मेरी वात दूसरी न होगी । (१९९ वां अध्याय) व्यासदेवके ऐसा कहने पर द्रुपदराज यज्ञसेन कन्याके व्याहका प्रयत्न करने लगे । युधिष्ठिर आदि पांचों पांडवोंने एक एक दिन उस सुन्दरीका पाणिग्रहण किया । राजा द्रुपदने पांडवोंको नाना धन यौतुकमें दिये । पांडवगण द्रुपदपुरीमें इन्द्रके समान विहार करने लगे । (२०० अध्याय) राजा द्रुपदसे मित्रता हो जाने पर पांडवगण एकवारही निर्भय हो गए ।

(२०१ अध्याय) राजा दुर्योधन उदास होकर अश्वत्थामा, शकुनि, कर्ण, कृप और भाइयोंके सहित द्रुपदपुरीसे अपने पुरको लौटा । विदुरने यह संवाद सुनकर राजा धृतराष्ट्रसे कह सुनाया । धृतराष्ट्र वहुत प्रसन्न हुए । दुर्योधन और कर्ण धृतराष्ट्रसे वोले कि क्या आप विदुरसे विपक्षियोंकी प्रशंसा कररहे थे । अव सदा यह चेष्टा करनी चाहिए जिससे पांडवोंका वल घटे । (२०३ अध्याय) कर्णने कहा कि हे पिता! इस समय हमारा यही कर्तव्य है कि जवतक पांडवोंका पक्ष लघुहै, तवतक युद्ध प्रारंभकर उनको मारना आरंभ करें । धृतराष्ट्र बोले कि हे कर्ण! भीष्म, द्रोण, विदुर, तुम और दुर्योधन मिलकर युक्तिसे यह निश्चय करो कि जिससे हमारा मंगल हो । ऐसा कह धृतराष्ट्र भीष्म आदि संपूर्ण मंत्रियोंको वुलवाकर विचारने लगे । (२०४ अध्याय) भीष्मने कहा कि हे धृतराष्ट्र! पांडवोंके साथ युद्ध करना किसी प्रकारमेरा अभीष्ट नहींहै । उन वीरोंसे सन्धि करके उनको आधा राज्य देदो । (२०५ अध्याय) द्रोण वोले कि हे धृतराष्ट्र! महात्मा भीष्मकी वात मुझको पसंदहै । (२०६ अध्याय) विदुर वोले कि हे महाराज! भीष्म और द्रोणका वचन ध्यानमें लाकर करो । (२०७ वां अध्याय) धृतराष्ट्रने कहा कि हे विदुर! पण्डित भीष्म और ऋषि द्रोणने जो कहा और तुम जो कहते हो, वह परमहितकारी और सत्य है । तुम जाओ और माता सहित पांडव और कृष्णाको लिवालाओ । अनंतर धृतराष्ट्रकी आज्ञासे विदुर द्रुपदपुरीमें गए । (२०८ वां अध्याय) पांडव, कृष्ण और विदुर द्रुपदकी आज्ञा पाकर कुन्ती और द्रौपदीके सहित हस्तिनापुरको चले । धृतराष्ट्रने उनको आगेसे लिवा लानेके लिये विकर्ण, चित्रसेन, द्रोण और कृपको भेजा । पांडवगण हस्तिनापुरमें आए और यथायोग्य सवसे मिलकर धृतराष्ट्रकी आज्ञासे राजमंदिरमें वसने लगे धृतराष्ट्रने युधिष्ठिरसे कहा कि तुम भाइयोंके साथ खांडवप्रस्थमें जा वसो, जिसमें तुमसे हमारा फिर विगाड न हो ।

पांडवगण राज्यके आधेभागको पाकर कृष्णको सहित खांडवप्रस्थमें गए । उन्होंने वहां शुभ पुण्यस्थानमें भले प्रकारसे नगर वसाया, जो भांति भांतिके सुन्दर भवनोंकी पंक्तियोंसे देदीप्यमान होकर इंद्रपुरीके समान शोभायमान होनेके कारण इंद्रप्रस्थ कहलाया ।

(२१४ वां अध्याय) अर्जुनने ब्राह्मणकी रक्षाके लिये अस्त्र लानेको युधिष्ठिरके भवनमें प्रवेश किया । उस समय युधिष्ठिर द्रौपदीके साथ विराज रहे थे । उस भवनमें जानेके

कारण नियमित नियमके अनुसार अर्जुनको १२ वर्ष बनवासके लिये जाना पड़ा। (२१५ वां अध्याय) जिस समय अर्जुन गङ्गाद्वारमें जाकर भागीरथीमें स्नानकर रहे थे, उस समय पातालके रहनेवाली नागराज पुत्री उलूपी उनको जलमें घसीट लेआई। अर्जुन सर्पराजके भवनमें उलूपीके साथ उस रातको गवांकर सूर्योदयके समय गंगाद्वारमें आए। (२१६ वां अध्याय) और वहांसे चलकर देशाटन करते हुए मणिपुरमें पहुंचे। वहां उसने चित्रवाहन राजाकी पुत्री चित्रांगदासे विवाह किया और उस नगरमें ३ वर्ष गँवाया। वहां अर्जुनको चित्रांगदाके गर्भसे बभ्रुवाहन नामक एक पुत्र जन्मा। (२१९ वाँ अध्याय) अर्जुन अनेक पुण्यस्थान और तीर्थोंमें भ्रमण करते हुए द्वारिकामें गए। (२२१ वाँ अध्याय) वसुदेव की पुत्री सुभद्रा रैवतपर्वतको पूजकर द्वारिका की ओर जारही थी, ऐसे समय में कृष्णचंद्र की अनुमति से अर्जुन ने उसको रथपर चढालिया। जब वह अपने नगर की ओर जाने लगे, तब द्वारिकावासी क्षत्रियों ने युद्ध का सामान किया(२२२ वां अध्याय) पर कृष्ण के समझाने पर वे लोग युद्ध से निवृत्त हुए। अर्जुन द्वारिका में लौट कर सुभद्रा से विवाह करने के उपरांत वर्षभर वहां रहे, पीछे पुष्कर तीर्थ में जाकर शेषकाल काटने लगे और १२ वर्ष पूर्ण होनेपर खांडवप्रस्थ में लौट आए। अनंतर कृष्ण की बहिन सुभद्रा ने अभिमन्यु को प्रसव किया। द्रौपदी ने पांच पतियों से ५ पुत्र प्राप्त किए। युधिष्ठिर से प्रतिविंध, भीम से सुतसोम, अर्जुन से श्रुतकर्मा, नकुल से शतानीक और सहदेव से श्रुतसेन।

(२२५ वां अध्याय) जब अग्नि ने खांडववन को जलाया तब इंद्रने प्रसन्न होकर कृष्ण और अर्जुन को वर प्रदान किया।

(२) सभापर्व-(३ रा अध्याय)

मयदानव ने राजा युधिष्ठिर के लिये १४ महीने में चारों ओर ५ सहस्र हाथ फैली हुई एक सभा बनाई। उसने मणि रत्नों से सुशोभित एक बडा सरोवर खोदवाया। सभा के चारों ओर ठंढी छांह वाले अनेक भांति के वृक्ष और सरोवर बनें।

(१२ वां अध्याय) नारद ऋषि ने राजा युधिष्ठिर को राजसूययज्ञ करने का उपदेश दिया। (१३ वां अध्याय) राजा ने श्रीकृष्णचंद्र को द्वारिका से बुलाकर उनसे अपना प्रयोजन कह सुनाया। (१४ वां अध्याय) श्रीकृष्ण बोले कि हे महाराज ! आप राजसूययज्ञ करने के अधिकारी हैं, परंतु जरासंधने सब राजाओं का सौभाग्य पाय पृथ्वीनाथ बनकर अपने तेज से सबों पर बडाई लाभ की है; आप अतिपराक्रमी जरासंध के जीते रहते कदापि राजसूययज्ञ पूरा नहीं करसकेंगे। (१५ वां अध्याय) जरासंध ने सैकडे पीछे ८६ भूपों को कैद कर रक्खा है। सौ में केवल १४ शेष बचे हैं। (२० वां अध्याय) जरासंध के मित्र डिंभक ने जल में डूबकर प्राण छोडा है। और कंस भी मारा गया, सो जरासन्ध के वध का यही औसर है। संपूर्ण सुरासुर भी खुलाखुली लडाई में उसको परास्त नहीं कर सकते इसलिये उसको भुजयुद्ध से ही जय करना उचित है। राजा युधिष्ठिर के साथ एक मत होने पर श्रीकृष्णचंद्र भीम और अर्जुन ब्राह्मणों के वस्त्र पहिनकर मगधनाथ की राजधानी की ओर चले और कुरु जांगल, पद्मसरोवर, गंडकी, सदानीरा, सरयू, पूर्वकोशल, मिथिला, गा और साननदी को क्रम से पार हो, मगधराज के छोर में पहुंचे।

(२१ वां अध्याय) श्रीकृष्ण, अर्जुन और भीमसेन स्नातकव्रत धारण किए हुए नगरमें पहुंचे और ३ कक्षाओं को लांघ राजा जरासंध के निकट उपस्थित हुये। राजा ने विधिपूर्वक उनका सत्कार किया। उस समय अर्जुन और भीम मौन साधे थे। श्रीकृष्ण बोले कि हे नरनाथ! ये लोग नियम युक्त हैं, आधी रात्रि बीतने पर तुम से बार्तालाप करेंगे। अर्धरात्रि होने पर जरासंध उनके पास आए। जरासंध बोले कि स्नातकव्रतधारी ब्राह्मण मालादि नहीं धारण करते, पर तुम फूल लगाए हो और तुम्हारे हथेलियोंमें धनुषमें गुण चढानेके चिह्न बने हैं। कहो तुम कौन हो और मेरे पास आनेका प्रयोजन क्या है। (२२ वां अध्याय) अनेक बातचीत होनेके उपरांत श्रीकृष्ण ने कहा कि मैं कृष्ण हूं और यह दोनों पांडु के पुत्र हैं; तुम स्थिर होकर लडो, या सब भूपों को छोड दो। जरासंधने कहा कि जो तुम युद्धकी बात कहते हो तो व्यूहयुक्त सेनाओंसे अथवा अकेले एकसे, दोसे वा तीनोंसे एक बारही वा अलग अलग चाहे जैसे हो, लडनेको मैं तय्यारहूं। (२३ वां अध्याय) अंतमें जरासंधने भीमसे लडने को कहा, तब जरासंध और भीम एक दूसरेसे भिडगए। दोनोंकी लडाई कार्तिक मास की प्रथमतिथिसे आरंभ होकर त्रयोदशी तक रात्रि दिन विना भोजन किये होती रही। चतुर्दशीकी रातको जरासंधने थककर कुस्ती त्यागदी। (२४ वां अध्याय) भीमसेनने ऊंचे उठाकर १०० फेरा घुमानेके उपरांत अपनी जंघासे उसकी पीठ नवा कर तोड डाली। कृष्ण आदि तीनों भाई रात्रि के समय मरे हुए जरासंधको राजद्वार पर छोड कर वहांसे निकले। उन्होंने संपूर्ण राजाओंको कारागारसे छुड़ाया। श्रीकृष्णजीने भूपगणोंसे कहा कि राजा युधिष्ठिर राजसूययज्ञ करेंगे सो तुम लोग उनकी सहायता करो। इसके उपरांत श्रीकृष्ण जरासंधके पुत्र सहदेवको राजतिलक देकर बहुत रत्नोंके सहित इन्द्रप्रस्थमें आए।

(२५ वां अध्याय) अर्जुनने उत्तर दिशा, भीमने पूर्व, सहदेवने दक्षिण और नकुलने पश्चिम दिशामें दिग्विजय किया। (३३ वां अध्याय) शीघ्रगामी दूतोंने सबको निमंत्रण दिया। (३४ वां अध्याय) नकुलने हस्तिनापुरमें जाकर भीष्म, धृतराष्ट्र, द्रोणाचार्य इत्यादिको निमंत्रित किया। चारों दिशाओंसे सब प्रदेशोंके राजे यज्ञसभामें आए। (३६ वां अध्याय) सहदेवने भीष्मके आज्ञानुसार श्रीकृष्णको प्रधान. अर्घ दिया। चेदिनाथ शिशुपालसे कृष्णकी यह पूजा सही नहीं गई, तब वह उनकी निंदा करने लगा। (४५ वां अध्याय) शिशुपालने जब कृष्णको १०० अनुचित बातें कहीं, तब श्रीकृष्णने सुदर्शनचक्रसे उसका शिर काट डाला और उसके शरीरकी तेजोराशि कृष्णके शरीरमें मिलगई। युधिष्ठिरने शिशुपालके पुत्रको चेदिराजके अधिकारमें अभिषिक्तकर दिया। अनंतर राजा युधिष्ठिरका राजसूययज्ञ निर्विघ्न समाप्त हुआ। संपूर्ण निमंत्रित राजागण अपने अपने गृहको और श्रीकृष्ण द्वारिकापुरीको गए केवल राजा दुर्योधन और शकुनि कुछ काल उस दिव्यसभामें टिके रहे।

(४६ वां अध्याय) दुर्योधनने उस सभामें टिककर धीरे धीरे उसके सब भागोंको देखा। एक दिन उसने स्फटिकके बने हुए स्थलभागके निकट जा उसे जल जानकर अपना चीर उतारा। पीछे वह उसको स्थल जानकर उदास हो सभामें फिरने लगा और स्फटिकके समान जलसे पूर्ण (स्फटिकसे बने हुए) एक तालावको स्थल जानकर वस्त्र सहित उसके जलमें जा गिरा। यह देख भीम, अर्जुन नकुल और सहदेव सब हंसने लगे। दुर्योधन

चीर बदल कर स्थलपर आया तिसपर भी सब कोई फिर हंस उठे। दुर्योधन एक वन्द स्फटिकके द्वारको निहारकर उसको खुला जान ज्यों प्रवेश करने लगा, त्योंहीं शिरमें चोट खाकर अचेत हो गया और एक खुले द्वारके निकट जाकर उसको वन्द जान उसके पासमें लौट आया। तव पीछे वह लज्जित हो युधिष्ठिरकी आज्ञालेकर अप्रसन्नचित्तसे हस्तिनापुरमें आया।

(४७ वां अध्याय) दुर्योधनने शकुनीसे कहा कि हे मामा ! विना लड़ाईके जय करनेका कोई उपाय हो तो मुझको वताओ। शकुनी वोला कि युधिष्ठिर खेल नहीं जानता है, पर वह चौसरका वड़ा प्रेमी है, सो चौसर खेलनेके लिये तुम उसको वुलाओ। मैं विना संदेह उसका राज्य और लक्ष्मी जीतलूंगा। (५५ वाँ अध्याय) राजाज्ञा पाकर सहस्रों शिल्पियोंने हस्तिनापुरमें सहस्र स्तंभ वाली, जिसमें वैदूर्य आदि रत्नोंसे १०० द्वार वने थे, लंवाई चौडाईमें सौ सौ कोस फैली हुई, एक सभा वनाई और उसमें संपूर्ण वस्तु रखदी। (५६ वाँ अध्याय) धृतराष्ट्रकी आज्ञासे विदुर इंद्रप्रस्थमें जाकर भाइयों सहित राजा युधिष्टिरको हस्तिनापुरमें लिवा लाए। (५७ वां अध्याय) जव राजा युधिष्टिर सभामण्डपमें जाकर आसनपर विराजे, तव शकुनीने पुकारकर कहा कि हे महाराज ! चौसर खेलने और तुमको देखनेके लिये आए हुए भूपोंसे सभा भर गई है, सो आप चौसर खेलिए। जूआ आरंभ होनेकी वात ठहर जाने पर सव उपस्थित राजागण धृतराष्ट्रका सामने वैठाकर सभामंडपमें वैठे। (५८ वां अध्याय) युधिष्ठिरने कहा कि मेरे सहस्रों सुवर्णमुद्रासे भरे अनेक संदूक, कोश, अक्षयधन और अनेक सुवर्ण चांदीकी धातु हैं, मैं उन सवोंकी वाजी रखताहूं। शकुनीने कहा कि इसे मैंने जीता। (६१ वां अध्याय) युधिष्ठिरने क्रमसे संपूर्ण राज्य, कोश, धन और राजसामानकी वाजी रक्खी, शकुनीने छल पूर्वक उन सवकोभी जीत लिया। जव उन्होंने अपने भाई नकुल, सहदेव, अर्जुन और भीमकी भी क्रमसे वाजी रक्खी और शकुनीने छल पूर्वक पासा फेंककर सवको जीत लिया, तव राजाने अपनेको वाजीमें रक्खा। शकुनी छल पूर्वक पासा फेंककर वोला कि यह भी मैं जीता। इसके पश्चात् उसने युधिष्ठिरसे कहा कि महाराज ! अव तुम अपनी प्यारी स्त्री कृष्णाकी वाजी रक्खो। युधिष्ठिरने द्रौपदीकी वाजी रक्खी। उस समय सभामें वैठे हुए वुड्ढोंके मुखसे "धिक्कार" है ऐसे शव्द निकलने लगे। भीष्म, द्रोण, कृप, आदि के रोम कूपोंसे पसीने निकलने लगे। शकुनीने यह कहा कि 'मैंने जीता' पासोंको उठा लिया। (६३ वां अध्याय) दुर्योधनने अहंकारसे उन्मत्त होकर दुःशासन को द्रौपदी के लेआने के लिये भेजा। दुःशासन पांडवोंके वास गृहमें प्रवेश करके द्रौपदीसे वोला कि तुम हारी गई हो, अव लज्जा तज कर दुर्योधनको निहारो, कुरुओंका सेवा करो और सभामें चलो। द्रौपदी कातर होकर उठी और जिधर राजा धृतराष्ट्रकी नारीगण थीं उसी ओर चली। तव दुःशासनने उसके लंवे वालोंको पकड कर उसको सभाके पास लाकर खींचने लगा। द्रौपदी वोली कि सभामें सव शास्त्रज्ञ दयावान इंद्रके समान मेरे वडे लोग वैठे हैं। इनके आगे मैं ऐसे नहीं खडी रह सकतीहूं। रे दुष्ट ! सभामें मुझे वस्त्रहीन मत कर। दुःशासनने द्रौपदीको वलसे खींच और हँसकर कहा कि तू तो दासी है। कर्ण और शकुनी यह वचन सुन कर हँसते हुए दुःशासन की प्रशंसा करने लगे। (६४ वां

अध्याय) कर्ण बोले कि हे दुःशासन ! द्रौपदी चाहे एक वस्त्रा, वा नंगी हो इसको सभा में लाना कोई अयोग्य नहीं है, क्योंकि पांडवोंके धनमें यह भी तो है और शकुनीने इसको धर्मसेही जीता है, अतएव तुम पांडवगण और द्रौपदीका वस्त्र उतारलो। पांडव लोग यह बात सुन कर अपना वस्त्र उतार कर सभामें बैठगए। जब दुःशासन सभाके बीचमें द्रौपदीका वस्त्र बलसे खींचने लगा तब उसने श्रीकृष्णका स्मरण किया। श्रीकृष्ण करुणासे आर्द्र हो अपनी सभा छोड़ कर पैरहीसे दौडे। उन्होंने उसके वस्त्रमें वास किया। इसलिये जब उसका वस्त्र खींचा गया, तो वस्त्रके भीतरसे वस्त्रोंमेंसे वस्त्र निकलने लगे। सभाके बीचमें द्रौपदीके वस्त्रोंके ढेर हो गये। तब दुःशासन थक कर और लज्जित हो बैठ रहा। (६७ वां अध्याय) धृतराष्ट्र क्रोध करके बोले कि हे द्रौपदी ! जो तुम्हारी इच्छा हो, वह हमसे वर मांगो। द्रौपदी बोली कि युधिष्ठिर दास भावसे छूटें और मेरे पुत्र प्रतिविंध्यको कोई दास पुत्र न कहे। धृतराष्ट्रने यह वरदान देकर द्रौपदीसे दूसरा वर मांगने को कहा। द्रौपदी बोली कि हे राजन् ! भीम अर्जुन; नकुल और सहदेव को धनुष और रथके समेत मैं मांगतीहूं धृतराष्ट्रने यह वर भी दान देकर तीसरा वर मांगनेको उससे कहा तब वह बोली कि स्त्रीको तीसरा वर मांगनेका अधिकार नहीं है, सो अब मैं नहीं लूंगी। (६९ वां अध्याय) युधिष्ठिरने राजा धृतराष्ट्रकी आज्ञा लेकर द्रौपदी और अपने भाइयों सहित रथोंमें बैठकर इन्द्रप्रस्थको प्रस्थान किया।

(७२ वां अध्याय) दूतने मार्गमें जाकर राजा युधिष्ठिरसे कहा कि राजा ने कहा है कि सभामें आकर फिर जुआ खेलो। यह सुन युधिष्ठिर भाइयों सहित फिर जुएके स्थानमें पहुंचे। शकुनी बोला कि हे पांडवो ! गाय, घोडा बैल, अनंत बकरी, भैंसे, हाथी, कोष, सुवर्ण, दासी; दास, यह सब हम एकही दावं पर वनवासार्थ लगाते हैं, तुम या हम जो हारे वह १२ वर्ष वनमें वास करे और १३ वें वर्ष मनुष्यमय स्थानमें छिप कर रहे। जब युधिष्ठिरने यह बात स्वीकारकी, तब शकुनीने पाशा उठाया और कह दिया कि युधिष्ठिर हार गए। (७७ वां अध्याय) सभाविसर्जन होनेके उपरांत राजा धृतराष्ट्रने संजयसे कहा कि द्रौपदीके दुःखार्त होनेसेही पृथ्वी भस्म होजा सकती है। मेरे पुत्रोंका अब नाश होगया। द्रौपदीको सभामें आते देखकर कुरुकुलकी सब स्त्रियां गांधारी सहित और प्रजाओंकी स्त्रियोंके संग सोचती हैं।

(३) वनपर्व—(१ ला अध्याय) पांडव लोग धृतराष्ट्रके पुत्रोंसे जुएमें हारकर नगर के द्वारसे निकल उत्तर दिशाको चलने लगे और रथोंमें बैठ गंगा तटपर पहुंचकर बटवृक्षके पास रात्रिमें टिकरहे। (३ रा अध्याय) सूर्य भगवानने युधिष्ठिरको एक तांबेकी बटलोही दी और उनसे कहा, कि अन्न, फल, मूल, साग वा मांस जो कुछ इसमें बनेगा; उसको जब तक द्रौपदी इस पात्रसे परोसेगी, तबतक खाने और पीनेके योग्य सब प्रकारके अन्नादि इसमें भरे रहेंगे। जिस अन्नसे भोजन बनता था, वह यदि थोडाभी हो, तौभी चारों प्रकारके भोजन अक्षय हो जाते थे। पांडवगण उसी अन्नसे ब्राह्मणोंको भोजन कराकर आप भोजन करते थे और द्रौपदीके भोजन करनेके पश्चात् वह पात्र खाली होजाता था।

(५ वां अध्याय) पांडवों ने गंगातीर से कुरुक्षेत्र को प्रस्थान किया। वे लोग वहां से सरस्वती दृषद्वती और यमुना के तट पर एक वन से दूसरे वन को, ऐसे बराबर पश्चिम दिशा को चले जाते थे। उन्होंने मारवाड़ और जांगल देश की समभूमि में सरस्वती के

तटपर काम्यक वनको देख कर वहां निवास किया। (२३ वां अध्याय) पुरवासी लोग पांडवोंसे विदा होकर अपने अपने गृहको चले गए। (२४ वां अध्याय) इसके पश्चात् ब्राह्मणों सहित पांडवगण पवित्र जलसे भरे हुए उस वनके द्वैतवन तड़ागके समीप चलेगए। (२५ वां अध्याय) और उस वनमें निवास करते हुए सरस्वतीके तटपर शालवनमें विहार करने लगे। उनके आश्रममें मार्कण्डेय मुनि आए। (३५ वां अध्याय) जब पांडवोंके १३ मास वनमें व्यतीत हुए, (३६) तब वे लोग अपने मंत्री और दल बल सहित वहांसे चलकर काम्यक वनमें सरस्वतीके निकट जाकर निवास करने लगे।

(३७ वां अध्याय) अर्जुन राजा युधिष्ठिरकी आज्ञा लेकर उस वनसे चले और हिमाचल और गंधमादन पार होकर इंद्रकील नामक स्थानमें पहुंचे। (४३ वां अध्याय) वह वहांसे इंद्र लोकमें गए (४४) और वहां ५ वर्ष निवासकर शस्त्रविद्यामें निपुण हुए। उन्होंने वहां चित्रसेनगंधर्वसे नाचने गाने और बजानेकी विद्या भी प्राप्त की (४६ वाँ अध्याय) जब अर्जुनने कामार्त उर्वशीका मनोरथ पूर्ण नहीं किया, तब उसने अर्जुनको शाप दिया, कि तुम स्त्रियोंके मध्यमें नपुंसकके समान नचानेवाले बनोगे। (९३ वां अध्याय) इधर युधिष्ठिर, भीम, नकुल और सहदेव चारों भ्राताओंने धौम्यमुनि और लोमशऋषि सहित काम्यक वनसे तीर्थ यात्रा की। (१४५ वां अध्याय) वे तीर्थ भ्रमण करते हुए नर नारायणके निवास स्थान बदरिकाश्रममें आए (१५५ वां अध्याय) और अर्जुनका मार्ग देखते हुए कुबेरकी संमति से थोडे दिन गंधमादन पर्वत पर रहे। (१६४ वां अध्याय) अर्जुन ५ वर्ष इंद्रलोकमें निवासकर गंधमादन पर आए और युधिष्ठिर आदि भाइयोंसे मिले। (१७६ वां अध्याय) पांडव लोग कुबेरके स्थान पर ४ वर्ष पर्यंत रहे। प्रथम ६ वर्ष व्यतीत हुए थे। इस भांति वनवासके १० वर्ष बीतकर ११ वां वर्ष आरंभ होगया। (१७७) पांडवगण यहाँसे लौटे और कैलाश पार होनेके अनंतर राजर्षि वृषपर्वाके आश्रममें पहुंचे। वे लोग वहां एक रात्रि निवासकर बदरिकाश्रममें आए और वहांसे सुख सहित चलते चलते १ मासमें किरातराज सुबाहुके राज्यमें पहुंचे। पांडवोंने वहांसे घटोत्कच दैत्यको जो इनको अपने कंधे पर ले चलता था, विदा किया और रथोंपर चढ़कर यामुन पर्वत पर गमन करनेके पश्चात् विशाख रूप पर्वत पर निवास किया। वे उस वनमें एक वर्ष रहकर काम्यक वनमें आए। (२३६ वां अध्याय) उन्होंने पवित्र तालावके निकट पहुंचकर अपने संगके सब लोगोंको विदा करदिया (२३९ वें अध्यायसे २४६ वें तक) दुर्योधनने अपनी सेना और सहस्रों स्त्रियों सहित द्वैतवनमें आकर अपनी गोशालाके निकट डेरा डाला। चित्रसेन आदिक गंधर्वोंने दुर्योधनकी सेनाको परास्त किया। जब गंधर्वगण दुर्योधनादिकोंको पकड सब राज स्त्रियोंको बांधकर लेचले, तब दुर्योधनके मंत्रीगण राजा युधिष्ठिरकी शरणमें प्राप्त हुए। पांडवोंने गंधर्वोंको परास्त करके दुर्योधनादिको छुड़ा लिया। दुर्योधन लज्जा युक्त हो अपने नगरको गया।

(२५४ वेंसे २५६ वें अध्यायतक) कर्ण सेना सहित दिग्विजयको निकले और थोडेहीं समयमें पृथ्वीके संपूर्ण देशोंको जीत कर लौट आए। दुर्योधनने बड़े धूमधामसे विष्णुयज्ञ किया।

(२६२ वेंसे २६३ वें अध्यायतक) दुर्वासामुनि अपने शिष्यों सहित दुर्योधनके गृह आए दुर्योधनने कुछ दिनोंतक मुनिका बड़ा सत्कार किया। जब ऋषि प्रसन्न हुए, तब उसने

यह वर मांगा कि हे ब्रह्मन्! जब द्रौपदी ब्राह्मण और पांडवोंको भोजन कराकर आप भी खा चुकी हो, तब आप अतिथि होकर युधिष्ठिरके पास जाइए। दुर्वासा मुनि दस सहस्र शिष्यों सहित पांडवोंके निकट आए। उस समय द्रौपदी भी खा चुकी थी। मुनि शिष्यों सहित स्नानको चले गए। द्रौपदी अन्नका सोच करने लगी। उसने जब कहीं अन्नका ठिकाना नहीं देखा, तब कृष्ण भगवानका ध्यान किया। श्रीकृष्णजी द्वारिकासे दौड कर शीघ्र द्रौपदीके निकट आगये। उन्होंने भोजन मांगा। द्रौपदीने सूर्यकी दी हुई बटुई कृष्णको दिखा दी। उन्होंने उसमें एक चावल लगा हुआ देखकर उसको खा लिया और द्रौपदीसे कहा कि इस चावलसे जगतके आत्मा परमेश्वर तृप्त हों। श्रीकृष्णकी आज्ञासे सहदेव मुनिको बुलाने गए। दुर्वासा ऋषि अपने शिष्यों सहित अत्यन्त तृप्त हो गए थे। वे बोले कि वृथाही हम लोगोंने युधिष्ठिरके यहां भोजन बनवाया। ऐसा न हो कि वे लोग अपने क्रोध भरे नेत्रोंसे हम लोगोंका भस्म करदें। दुर्वासाके ऐसे वचन सुन सब मुनि दशों दिशाओंमें भाग गए।

(२६४ वें अध्यायसे २७२ वें अध्याय तक) एक दिन पांडव लोग चारों ओर शिकार खेलने गएथे और द्रौपदी आश्रममें थी सिंधुदेशके राजा वृद्धक्षत्रके पुत्र विवाह करनेकी इच्छासे शाल्वदेश में जाते थे। वे काम्यक वनमें ठहर गए। वृद्धक्षत्रके पुत्र जयद्रथ द्रौपदीकी सुन्दरता देख विस्मित हो गए। उन्होंने उसको खींच कर अपने रथमें बैठा लिया। इतने में पांडवोंने शिकारसे आकर जयद्रथकी सेनाको परास्त किया। भीमसेनने भागते हुए जयद्रथके बाल पकड कर उसको पृथ्वीमें पटक दिया और पश्चात् उसके सिरके बाल मुडवा कर सिरपर पांच चोटी रख दी। पीछे युधिष्ठिरने जयद्रथको छुडवा दिया। इसके पश्चात् वह गंगाद्वारमें जाकर शिवका तप करने लगे। शिवजीने जयद्रथको ऐसा बरदान दिया कि तुम अर्जुनको छोडकर युद्धमें सब पांडवोंको वारण कर सकोगे।

(३१५ वां अध्याय) पांडवोंके वनवासके १२ वर्ष बीत गए। ब्राह्मण लोग और मुनिगण पांडवोंसे आज्ञा लेकर अपने अपने गृहको चले गए।

(४) विराट पर्व—(पहला अध्याय) राजा युधिष्ठिरने कहा कि मत्स्यदेशके राजा विराट धार्मिक, पंडित और सदासे पांडवोंके भक्त हैं, इस लिये हम लोग एक वर्ष उन्हीके गृहमें निवास करेंगे।

(५ वां अध्याय) पांडव लोग पर्वत, गुफा और वनोंमें निवास करते हुए राजा विराटके नगरके निकट पहुंचे। नकुलने युधिष्ठिरके आज्ञानुसार नगरके समीप समीके वृक्षपर धनुषोंको रख दिया और उनको दृढ बंधनोंसे बांधा। पांडवोंने उस वृक्ष पर एक मृतक पुरुषको बांध दिया जिससे कोई पुरुष उस वृक्षके निकट न जाय और अपना गुप्त नाम जय, जयंत, विजय, जयत्सेन, और जयद्बल रक्खा।

(७ वां अध्याय) राजा युधिष्ठिरने सुवर्णके पासोंको अपनी बगलमें दबा कर राजा विराटकी सभामें प्रवेश किया और विराटसे कहा कि मैं राजा युधिष्ठिरका मित्र था, मेरा नाम कंक है, मैं ब्राह्मण हूं और जुआ खेलने और खेलाने में प्रवीण हूं। ऐसा सुन राजा विराटने उनको अपना सभासद बनाया। (८ वां अध्याय) इसके पश्चात् भीमसेन रसोइयाका वेष बना कर विराटकी सभामें पहुंचे और बोले कि मेरा नाम बल्लव है, मैं उत्तम रसोई बनाना जानता हूं। राजाने भीमको केवल रसोईहीका काम नहीं दिया, किंतु अपना प्यारा

मित्र भी समझ लिया। (९ वां अध्याय) द्रौपदी एक मैली धोती पहन कर दासी वेषसे गलियोंमें रोदन करती हुई फिरने लगी। विराटकी बडी स्त्री कैकेयी ने अपने झरोखेसे द्रौपदीको देख अपनी दासियोंसे उसको बुला लिया। द्रौपदीने कहा कि मैं दासी हूँ। मैंने बहुत दिनों तक कृष्णकी पटरानी सत्यभामाकी सेवा की है और मैं पांडवोंकी स्त्री द्रौपदीके संग रही हूं। उसने मेरा नाम मालिनी रक्खा था। गंधर्वराजके ५ पुत्र मेरे पति हैं, जो गुप्त रूपसे सदा मेरी रक्षा करते हैं। रानीकी आज्ञासे द्रौपदी उसके गृहमें रहने लगी। (१० वाँ अध्याय) सहदेव ग्वालका वेष बना कर राजा विराटके पास गए और उनसे बोले कि मैं अरिष्टनेमि नामक वैश्य हूँ और प्रथम राजा युधिष्ठिरके यहाँ गौओंका स्वामी था। विराटने अपने संपूर्ण पशुओंका स्वामी उनको बनाया। (११ वां अध्याय) उसी समय स्त्रियोंके समान वस्त्र और आभूषण धारण किए हुए अर्जुन देख पडे, उन्होंने राजासे कहा कि मैं नाचना, गाना और बजाना जानता हूं। मैं राजपुत्री उत्तराको नाचना, गाना, सिखलाऊंगा। मेरा नाम बृहन्नला है। राजाने बृहन्नलाकी परीक्षा स्त्रियोंसे करवा कर जब जाना कि यह नपुंसक है, तब राजपुत्रीके गृहमें जानेकी उसको आज्ञा दी। उसी दिनसे अर्जुन विराटपुत्री उत्तराको नाचना, गाना और बजाना सिखलाने लगे। (१२ वां अध्याय) इसके उपरांत नकुलने आकर कहा कि मैं घोडोंकी सब विद्या जानता हूं और रथ हांकनेमें परम निपुण हूं। राजा युधिष्ठिरने मुझे अपने घोडोंका स्वामी बनाया था मुझको सब लोग ग्रंथिक नामसे पुकारते थे। यह सुन कर राजा विराटने घोडे आदि वाहनोंका स्वामी नकुलको बनाया।

(१४ वां अध्याय) वर्ष समाप्त होनेसे थोडेही दिन पहिले विराटका सेनापति कीचक द्रौपदीको देख कामातुर हो गया (१६ वां अध्याय) उसने जब बलसे द्रौपदीको पकड लिया, तब द्रौपदी झटकेसे वस्त्र छुडा कर सभाकी शरण गई। कीचकने राजा युधिष्ठिरके सामनेही द्रौपदीके बाल पकड़ कर पृथ्वीमें गिरा दिया और उसको लात मारी। उस समय सूर्यके भेजे हुए राक्षसने कीचकको उठा कर दूर फेंक दिया। और द्रौपदी सुदेष्ण रानीके गृहमें चली गई। (२२ वां अध्याय) भीमने द्रौपदीसे कहा कि विराटके बनाए हुए नाचनेके स्थानोंमें एक शयन गृह है। वहांही मैं कीचकको मारूंगा, तुम किसी प्रकारसे उस स्थानमें उसको भेज दो। कीचक प्रातःकाल होतेही राजभवनमें पहुंचा और द्रौपदीसे बोला कि तुम मेरी सेवा करो। द्रौपदीने कहा कि राजा विराटने जो नाचनेका स्थान बनाया है, तुम अंधेरेमें अर्द्धरात्रिके समय वहां जाना। मैं तुमसे वहीं मिलूंगी। द्रौपदीने भीमसेनसे यह वृत्तांत कह सुनाया। भीम आधीरातको नाचघरमें जाकर छिप कर बैठे। उसी समय कीचक भी वहां पहुंचा। उसने द्रौपदीको ढूँढ़ते ढूँढ़ते एकांतमें पलंग पर सोते हुए भीमको पाया और उनका हाथ पकड़ लिया। वह कामातुर आनन्दके वश होकर भीमके पास सो गया। भीमने अनेक वार्तालाप करनेके पश्चात् उठ कर कीचकका बाल पकड़ लिया। दोनोंका परस्पर बाहु युद्ध होने लगा। अंतमें भीमने कीचकके हाथ पांव और सिरको तोडकर उसके पेटमें घुसेड़ दिया। इसके उपरांत वह कीचककी लोथको फेंककर चौकेमें आकर सो गए। द्रौपदीने पहरेवालोंसे कहा कि मेरे गंधर्वपतियोंने कीचकको मार डाला। पहरेवाले हाथ पांवसे रहित कीचकको देखकर बहुत डरे और कहने लगे कि इसको अवश्य गंधर्वोंने मारा है। (२३ वां अध्याय) कीचकके बांधवगण अरथीमें कीचकके संग द्रौपदीको बांधकर श्मशानमें ले चले। भीम वेष बदल कर

दूसरे मार्गसे श्मशानमें पहुँच कर एक वृक्ष लेकर दौड़े। उन्होंने भागते हुए १०५ सूतोंको मारकर द्रौपदीको खोल दिया। इसके पश्चात् वह एक मार्गसे द्रौपदीको नगरमें भेजकर दूसरे मार्गसे राजाके रसोई गृहमें चले गए। सब लोगोंने कहा कि गंधर्वोंने कीचकके बांधवोंको मार डाला।

(२९ वाँ अध्याय) दुर्योधनके भेजे हुए दूतगण सर्वत्र पांडवोंको ढूँढ़कर हस्तिनापुरमें लौट आए और राजसभामें बोले कि हम लोगोंने सर्वत्र ढूँढ़ा; परन्तु पांडवोंका पता किसी स्थानमें नहीं लगा! एक सुन्दर समाचार यह है कि मत्स्यदेशनिवासी कीचकनामक सूतको जिसने त्रिगर्त्तोंका विनाश किया था, रातमें गंधर्वोंने मार डाला। कीचकके साथही उसके सब भाई भी मारे गए। (३० वाँ अध्याय) दुर्योधनने कहा कि राजा विराटने पहले समय में हमारे राज्यमें बहुत उपद्रव किया था, सो कीचककी मृत्यु होनेसे वह निरुत्साह हो गया होगा। उस राज्यमें बहुत अन्न उत्पन्न होता है, अतएव वह देश लेनेके योग्य है। हम लोग त्रिगर्त और कौरवोंके संग जाकर उनकी गौवोंको छीन लावेंगे। इसके उपरांत दुर्योधनकी आज्ञानुसार राजाकी सेना हस्तिनापुरसे चली। इसके सेनापति त्रिगर्त देशके राजा सुशर्मा हुए। दूसरे दिन सेनाका दूसरा भाग संपूर्ण कौरवोंके सहित हस्तिनापुरसे चला।

(३१ वाँ अध्याय) जिस दिन पांडवोंके वनवासका तेरहवाँ वर्ष पूर्ण हो गया, उसी दिन कौरवोंकी सेनाका प्रथम भाग विराट नगरमें पहुंचा। राजा सुशर्माने विराटके अहीरोंसे सब गऊएं छीन लीं! यह खबर नगरमें पहुँचने पर विराटकी सब सेना तैयार हुई। राजाकी आज्ञासे अर्जुनके अतिरिक्त चारों पांडव रथारूढ़ हो राजाके संग चले। (३२ वाँ अध्याय) त्रिगर्त देश और मत्स्यदेशकी सेना उन्मत्त होकर परस्पर लडने लगी। (३३ वाँ अध्याय) विराटकी सेना सुशर्माकी सेनासे परास्त हुई। जब सुशर्मा विराटको बांधकर अपने रथमें डाल चल दिया, तब युधिष्ठिरकी आज्ञासे भीमने सहस्रों वीरोंको गदासे मारकर गिरा दिया। इसके अनंतर चारों पांडव लडने लगे। विराट बंधनसे छूट गए। भीमने सुशर्माको पकड लिया। पांडवोंने अपनी सब गौओंको छीनकर कौरवोंके संपूर्ण धन लूट लिए।

(३५ वां अध्याय) जिस दिन राजा सुशर्मा पराजित होकर मत्स्यदेशसे चले गए, उसी दिन कौरव-सेनाका दूसरा भाग अर्थात् भीष्म, द्रोण, कर्ण, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, शकुनि, दुःशासन आदि महारथियोंको संग ले राजा दुर्योधन विराट नगरमें पहुंचा। जब उन्होंने नगरके दूसरे द्वारपर जाकर ६०००० गौओंको छीन लिया, तब ग्वालोंके स्वामीने विराटपुत्र उत्तरको यह खबर दी। (३७ वां अध्याय) उत्तरने अर्जुनसे कहा, कि हे वृहन्नला! मैंने सुना है कि अर्जुनने तुमहींको सारथी बनाकर खांडव वनको जलाया था और तुम्हारीही सहायतासे सब पृथ्वीको जीता था, इस लिये तुम हमारे घोड़ोंको हांको हम कौरवोंसे युद्ध करेंगे। ऐसा सुन वृहन्नलाने उत्तरके रथको कौरव सेनाकी ओर चलाया। (३८ वाँ अध्याय) कौरवसेनाको देखतेही भयके मारे उत्तरके रोंवे खड़े होगए। वह कहने लगा कि हे सारथी! मैं कौरवोंकी सेनासे युद्ध नहीं करसकूंगा। वृहन्नलाने उत्तरको बहुत समझाया, परंतु वह नहीं माना। जब वह रथसे उतरकर भाग चला, तब वृहन्नला रथसे उतर उसके पीछे दौड़े। उस समय वृहन्नलाकी बेणी हिलने लगी और लालवस्त्र उड़ने लगे। उसको ऐसी दशामें देख कौरवगण कहने लगे कि इस नपुंसकका रूप अर्जुन ऐसा दिखाता है। यह निश्चय अर्जुनहीं

है। इधर बृहन्नला अर्थात् अर्जुनने दौडकर उत्तरके बाल पकड लिए और रोते हुए उत्तरको उठाकर रथमें डाल दिया। (४० वाँ अध्याय) इसके उपरांत अर्जुन शमीवृक्षके समीप गए। उनकी आज्ञासे उत्तरने शमीवृक्षपर चढकर पांडवोंके धनुष आदि हथियारोंको उतारा। (४४ वाँ अध्याय) बृहन्नलाने उत्तरसे कहा कि मैंही अर्जुन हूं, कंकनामक सभासद राजा युधिष्ठिर, बल्लव नामक रसोया भीमसेन, अश्वगंधक नकुल, तुम्हारा गोरक्षक सहदेव और सैरन्ध्री द्रौपदी हैं। ऐसा सुन उत्तरका मन उत्साह युक्त होगया। (४६ वाँ अध्याय) अर्जुनने उत्तरको सारथी बनाकर शमीवृक्षकी प्रदक्षिणा करके शस्त्रोंको रथमें रख संग्राममें प्रस्थान किया। (५३ वाँ अध्याय) उनके रणभूमिमें पहुंचने पर घोर युद्ध होने लगा। (५४ वाँ अध्याय) कर्ण अर्जुनके वाणोंसे व्याकुल हो, रणक्षेत्रसे विमुख हुए। (५७ वाँ अध्याय) कृपाचार्य जव विरथ होगए, तव योद्धाओंने रथपर बैठाकर उनको हटा दिया। (५८ वाँ अध्याय) अर्जुनके बाणोंसे द्रोणाचार्यके व्यथित होने पर अश्वत्थामा लड़ने लगे। द्रोणाचार्य युद्धसे हट गए। अश्वत्थामाके बाण समाप्त होजानेपर कर्ण युद्ध करने लगे। (६० वाँ अध्याय) कर्णके मूर्च्छित होजाने पर (६१ वाँ अध्याय) भीष्म और अर्जुनका संग्राम होने लगा। (६४ वाँ अध्याय) अंतमें जव भीष्म मूर्च्छित होगए, तव सारथीने रथको हटा लिया (६६ वाँ अध्याय) जव दुर्योधनको अर्जुनने विकल करदिया, तव भीष्म, कृप, द्रोण, दुःशासन आदि वीर पहुँचकर युद्ध करने लगे। अंतमें अर्जुनने संमोहननामक बाण चलाया, जिससे कौरव मोहित हो अपने अपने धनुषको रखकर बैठ गए। अर्जुनकी आज्ञासे उत्तरने रथसे उतरकर सब वीरोंके वस्त्र उतार लिए। जव कौरव लोग सचेत होनेके उपरांत अपने पुरकी ओर चले, तव अर्जुनने नम्र होकर सब वृद्धोंको प्रणाम किया। और फिर सबको एक एक बाण मारा। सब कौरव हस्तिनापुर लौटगए।

(६७ वाँ अध्याय) अर्जुन कौरवोंको जीतकर शमीवृक्षके पास आए। उत्तरने फिर शमीवृक्षपर पाण्डवोंके शस्त्रोंको रखदिया और अर्जुनको सारथी बनाकर नगरको प्रस्थान किया। अर्जुनने फिर नपुंसकका वेष बना लिया।

(७० वाँ अध्याय) तीसरे दिन पाण्डवगण (अपने समयको बीता हुआ जानकर) सज कर राजा विराटकी सभामें आए। महाराज युधिष्ठिर राज्यसिंहासन पर बैठगए, शेष चारों पाण्डव यथायोग्य आसन पर बैठे। जब राजा विराट सभामें आए। तब अर्जुनने माहाराज युधिष्ठिरका परिचय दिया। (७१ वाँ अध्याय) राजकुमार उत्तरने भी राजा विराटसे पांडवोंका वृत्तांत कह सुनाया। विराटने अपना राज्य युधिष्ठिरको समर्पण किया और उनसे कहा अर्जुन मेरी पुत्री उत्तरासे विवाह करें। अर्जुनने कहा कि मैं आपकी पुत्रीका शिक्षक अर्थात् गुरु हूँ, इस लिए विवाह नहीं करूँगा। इसका विवाह मेरे पुत्र अभिमन्युसे होगा। (७२ वाँ अध्याय) उसी समय युधिष्ठिर और विराटने अपने अपने संबंधियोंके समीप दूत भेजे। पांडव लोग विराटनगरके समीपवर्ती उपप्लवनगरमें रहने लगे। उन्होंने अभिमन्युके सहित कृष्ण आदि यादवोंको द्वारिकासे बुलाभेजा। वे लोग विराटनगरमें पहुँच गए। काशीके राजा शैब और राजा शैव्य एक एक अक्षौहिणी सेना लेकर और द्रुपदके पुत्र धृष्टद्युम्न एक अक्षौहिणी सेना और द्रौपदीके पांचों पुत्रोंको लेकर आए। कृष्णचंद्रके संग १० सहस्र हाथी, १ लाख घोड़ा, १० सहस्र रथ और एक खर्व पैदल सेना थी। विराटपुत्री उत्तरासे अभिमन्युका विवाह हुआ।

(५) उद्योगपर्व—(५ वाँ अध्याय) जब श्रीकृष्णजी द्वारिकाको चलेगए, तब राजायुधिष्ठिरने युद्धका सामान इकट्ठा करनेका कार्य आरंभ किया। राजा विराट और राजा द्रुपदने युद्धकी सहायताके लिये सब राजाओंको निमंत्रित किया ऐसा सुन दुर्योधनने भी माननीय राजाओंको बुलानेका काम प्रारंभ किया। (६ ठा अध्याय) पांडवोंकी अनुमतिसे राजा द्रुपदने अपने वृद्धपुरोहितको संधिके लिये हस्तिनापुर भेजा। अर्जुन कृष्णको बुलानेके लिये द्वारिका गए। उसी दिन अपनी सेनाओंके सहित दुर्योधन भी द्वारिकामें गए थे। वह प्रथम जाकर कृष्णके सिरकी ओर सुन्दर आसन पर बैठगए। पश्चात् अर्जुन जाकर कृष्णके चरण की ओर हाथ जोडकर खडे हुएं। कृष्णने निद्रासे जागकर प्रथम अर्जुनको पश्चात् दुर्योधनको देखा और दोनोंका उचित सत्कार करके उनसे आनेका कारण पूँछा। दुर्योधनने कहा कि मैं प्रथम आया हूँ, आप मेरी सहायता कीजिये। कृष्णने कहा कि, तुम प्रथम आए हो और मैंने प्रथम अर्जुनहीको देखा है, इसलिए मैं दोनोंकी सहायता करूंगा। एक अर्बुद महायोद्धा ग्वालिये हमारे यहां रहते हैं, जो नारायणी सेना भी कहलाते हैं। मैं एकओर उनको करता हूँ और एक ओर आप होता हूँ। वे लोग युद्ध करेंगे और मैं युद्धमें शस्त्र भी नहीं ग्रहण करूंगा। दोनोंमेंसे जिसकी जिसे लेनेकी इच्छा हो वह उसे ले, परंतु पहिले मांगनेका अधिकार अर्जुनका है। अर्जुनने श्रीकृष्ण भगवानको माँगा। दुर्योधन नारायणी सेनाको लेकर बलदेवजीके निकट गए। बलदेवजीने कहा कि दुर्योधन और युधिष्ठिरसे तुल्य संबंध है, मैं दोनोंमेंसे किसीकी सहायता न करूँगा। तब दुर्योधन कृतवर्माके पास गए। उसने दुर्योधनको एक अक्षौहिणी सेनादी। इन सेनाओंको लेकर राजा दुर्योधन हस्तिनापुरमें आए।

(८ वाँ अध्याय) नकुलका मामा राजा शल्य एक अक्षौहिणी सेनाके सहित पांडवोंकी ओर चले, परंतु दुर्योधनने मार्गहीमें प्रसन्न करके उनको अपनी ओर करालिया। शल्यने पांडवोंके निकट जाकर यह वृत्तांत कह सुनाया। युधिष्ठिरने राजा शल्यसे कहा, कि आपसे हम एक वरदान माँगते हैं कि जिस समय कर्ण और अर्जुनका युद्ध होगा, उस समय आप कर्णके सारथी बनेंगे, तब आप अर्जुनकी रक्षा कीजिएगा और कर्णके बलको घटाइयेगा, इससे हमारा विजय होगा। शल्यने युधिष्ठिरको यह वरदान दे दिया। (१८ वाँ अध्याय) इसके पश्चात् वह हस्तिनापुर चले गए।

(१९ वाँ अध्याय) यदुवंशियोंमें श्रेष्ठ सात्यकी १ अक्षौहिणी सेना सहित युधिष्ठिरके पास आए। इसके पश्चात् चेदिदेशके राजा धृष्टकेतु एक अक्षौहिणी सेना सहित और मगधदेशके राजा जरासंधके पुत्र जयत्सेन एक अक्षौहिणी सेना सहित राजा युधिष्ठिरके पास पहुँचे। इस प्रकारसे विराट द्रुपद आदि राजाओंकी सेना सहित राजा युधिष्ठिरकी ७ अक्षौहिणी सेना इकट्ठी हो गई। (महाभारत आदिपर्वके दूसरे अध्यायमें २१८७० रथ, २१८७० हाथी, ६५६१० घोडा और १०९३५० प्यादेको एक अक्षौहिणी लिखा है।

राजा दुर्योधनके पास १ अक्षौहिणी सेना लेकर राजा भगदत्त, जिसके साथ चीन और किरातदेशकी सेना भी थी, १ अक्षौहिणी सेना लेकर हार्दिक्य और कृतवर्मा, जिनके संग भोज, अंधक और कुक्कुर वंशी क्षत्री थे और तीनों क्षत्रियोंके साथ १ अक्षौहिणी सेना थी, १ अक्षौहिणी सेना लेकर सिंधु और सौवीरके राजा जयद्रथ आदि और १ अक्षौहिणी सेना लेकर शक और यवनोंके सहित कांबोजदेशके राजा सुदक्षिण आए, इसके पश्चात् माहिष्मतीके

राजा नील राजा दुर्योधनके पास आए, अनंतर अनेक दक्षिणी राजाओंके सहित उज्जैनके राजा विन्द और अनुविन्द, जिनके साथ २ अक्षौहिणी सेना थी और १ अक्षौहिणी सेना सहित कैकदेशके पांचों राजा हस्तिनापुरमें आए । दुर्योधनकी सेना ३ अक्षौहिणी थी। इस प्रकार ११ अक्षौहिणी सेना कौरवोंकी होगई । दुर्योधनके सेनापतियोंने अपनी अपनी सेनाओंको समस्त पञ्जाव, कुरुदेश, रोहितकारण्य, मारवाड़, अहिक्षत्र, कालकूट, वारणावत, वाटधान और यामुन पर्वत पर ठहराया ।

(२० वाँ अध्याय) इधर राजा द्रुपदका पुरोहित हस्तिनापुरमें पहुँचा और सव सेनापतियोंके बीचमें कहने लगा कि धृतराष्ट्र अव पांडवोंके भागको क्यों नहीं देते । आप लोग धर्मके अनुसार पांडवोंका राज्य लौटा दीजिये । पुरोहितकी वात दुर्योधन और कर्णको पसंद नहीं हुई । (२१ वाँ अध्याय) वहुत वार्तालाप होनेके पश्चात् राजा धृतराष्ट्रने ऐसा कहकर ब्राह्मणको विदा किया, कि हम शीघ्रही पाण्डवोंके पास संजयको भेजेंगे ।

(२५ वाँ अध्याय) संजयने राजा युधिष्ठिरके पास जाकर ऐसा कहा कि राजा धृतराष्ट्रने कहा कि राजा द्रुपद और कृष्णको ऐसा काम करना चाहिए, जिससे कुरुकुलका कल्याण हो । यदि कृष्ण और अर्जुन इस वातको नहीं मानेंगे, तव युद्धमें किसीका भी प्राण नहीं वचेगा । हम शांति चाहते हैं । (२७ वाँ अध्याय) ऐसा कह संजय वोले कि हे राजा युधिष्ठिर ! आप धृतराष्ट्रके पुत्रोंका नाश मत कीजिए । कदाचित् कौरव लोग विना युद्ध किए हुए आपको राज्य न दें, तो आप अंधक और वृष्णिदेशमें भिक्षा मांगकर रहिए, अथवा दूसरी जीविकाका कोई उपाय करलीजिए । युद्धमें किसीका कल्याण नहीं होता । (२८ वाँ अध्याय) युधिष्ठिरने कहा कि हे संजय ! भिक्षावृत्ति ब्राह्मणोंकी है । सव वर्णोंको अच्छी अवस्थामें अपना अपना धर्म करना ही उचित है । जो कर्म हमारे पिता पितामहने किया है, वही कर्म हमको करना चाहिए । मैं संधि तोड कर युद्धकी इच्छा नहीं करता । (२९ वाँ अध्याय) कृष्णचन्द्र वोले कि वेदमें लिखा है, कि क्षत्री अपने धर्मके अनुसार प्रजापालन करें राजा युधिष्ठिर अपने धर्मका पालन करते हैं । ऐसा उपाय करना चाहिये, जिसमें राजा युधिष्ठिरका राज्य मिले और युद्ध भी न हो । पाण्डव संधि करना चाहते हैं और युद्ध करनेको भी समर्थ हुए हैं । (३१ वाँ अध्याय) राजा युधिष्ठिर वोले, हे संजय ! तुम राजा धृतराष्ट्रसे एसा कहना कि तुम हमारा राज्य दे दो अथवा राज्यका एकही भाग दो वा हम लोग पांचों भाइयोंको पांचही गांव दे दो (१) अरिस्थल (२) वृकस्थल (३) माकन्दी (४) वारणावत और (५) एक गांव अपनी इच्छाके अनुसार ।

(३२ वाँ अध्याय) संजयने हस्तिनापुरमें लौटकर राजा धृतराष्ट्रसे कहा कि पाण्डव लोग आपसे संधि चाहते हैं । राजाने प्रातःकाल सभामें आनेको संजयसे कहा । (४७ वाँ अध्याय) प्रातःकाल होने पर संजय कौरवोंकी सभामें गए । (४९ अध्याय) भीष्म और द्रोणने धृतराष्ट्रसे पाण्डवोंके सहित संधि करलेनेकी वातें कहीं । (५८ वाँ अध्याय) धृतराष्ट्रने दुर्योधनसे कहा कि तुम यथोचित पाण्डवोंका आधा भाग दे दो । किसीकी इच्छा युद्ध करनेकी नहीं है । कर्ण, दुःशासन और शकुनी यही सब मिलके तुमको युद्धमें प्रवृत्त करते हैं । दुर्योधनने कहा कि भीष्म, द्रोण, कृप आदि किसी सम्बन्धी लोगोंके आसरे पर मैं युद्ध करनेकी इच्छा नहीं करता हूं । मैं केवल कर्णहीके साथ युधिष्ठिरको परास्त करूंगा । या तो पाण्डवोंके

मारकर मैंही पृथ्वीका राज्य करूंगा, अथवा मुझको मारकर पाण्डवही संपूर्ण पृथ्वीका राज्य लेंगे। तीक्ष्ण सुईकी नोकसे जितनी भूमि विद्ध होसकती है, मैं उतनी भूमि भी पाण्डवोंको नहीं दूंगा। (६२ वाँ अध्याय) कर्णने कहा कि भीष्म, द्रोण तथा और भी मुख्य मुख्य लोग बैठे रहें, मैं अकेलेही रणस्थलमें पांडवोंको मारकर सब राज्य ले लूँगा। भीष्म बोले कि हे कर्ण! कालके वशमें होकर तुम्हारी बुद्धि नष्ट हो गई है। तुम व्यर्थ अपनी बड़ाई क्यों करते हो। कर्णने क्रोध करके कहा कि हे पितामह! तुम्हारे कठोर वचन सुनकर मैंने अपने संपूर्ण शस्त्रोंको त्याग दिया। अब रणभूमिमें तुम कभी नहीं मुझको देखोगे। तुम्हारे मरनेके पश्चात् सब राजा लोग मेरे प्रभाव और पराक्रमको देखेंगे। ऐसा कह कर्ण सभासे उठ अपने गृहको चले गए।

(७२ वाँ अध्याय) इधर राजा युधिष्ठिरने कृष्णचंद्रसे कहा कि मेरी समुझमें राजा धृतराष्ट्र पाप और लोभसे युक्त होकर हम लोगोंको विना राज्य दियेही शांति स्थापन करनेकी इच्छा करते हैं। वह पुत्रस्नेहमें पडकर अपने धर्मकी ओर दृष्टि नहीं देते। मेरे माँगे हुए पाँच गांव देनेमें भी दुर्योधनकी संमति नहीं होती है। जिस उपायसे युद्ध करना न पडे, वैसाही यत्न करना चाहिये। कृष्णचंद्र संधिके लिये कौरवोंकी सभामें जानेको उद्यत हुए। (८३ वाँ अध्याय) कृष्णचंद्रने सात्यकीके सहित रथारूढ हो हस्तिनापुरकी यात्रा की। (८४) उनके साथ १० महारथी १ सहस्र सवार और बहुतसी पैदल सेना चली। (८५) कृष्णके आगमन सुन धृतराष्ट्रकी आज्ञासे दुर्योधनने अनेक सभा बनवाई और कृष्णके निवासके लिए वृकस्थल गांवमें एक बहुत सुंदर सभा तैयार करवाई, परंतु कृष्ण उन सभाओंको न देखकर हस्तिनापुरके निकट पहुँचे (८९ वाँ अध्याय) और मार्गमें भीष्म, द्रोण तथा धृतराष्ट्रके पुत्रोंसे मिलकर हस्तिनापुरमें धृतराष्ट्रके राजमंदिरमें सुशोभित हुए। (९०) इसके पश्चात् उन्होंने अपनी फूफू कुंतीके समीप जाकर उसको धीरज दिया (९१) और दुर्योधनका निमंत्रण स्वीकार न करके विदुरके गृह भोजन किया (९४ वाँ अध्याय) प्रातःकाल होनेपर दुर्योधन और शकुनी विदुरके गृहमें जाकर कृष्णको कौरवोंकी सभामें ले गए। सब लोग यथायोग्य आसन पर बैठे। (९५ वाँ अध्याय) कृष्णने राजा धृतराष्ट्रसे कहा कि हे भारत! योद्धाओंके विना प्राण नाश हुए, जिसमें कौरव और पांडवोंके बीच संधि स्थापित हो जाय, इसी निमित्त मैं यहां आया हूं। आप अपने पुत्रोंको शांत कीजिए और मैं पांडवोंको शांत करूँगा। पृथ्वीके संपूर्ण राजा एकही स्थान पर मिल गए हैं, जो संपूर्ण प्रजाका संहार कर सकते हैं, इससे आप दया करके संधिकर लीजिए, जिससे संपूर्ण लोकोंकी रक्षा हो। (१२३ वाँ अध्याय) इसके उपरांत नारदऋषिने धृतराष्ट्र और दुर्योधनको समुझाया, कि हठके वशमें होना उचित नहीं है। तुम लोग पांडवोंसे संधिकर लो। (१२४) धृतराष्ट्र बोले कि हे भगवन्! मेरी भी ऐसीही इच्छा है, परन्तु मेरी कुछ भी प्रभुता नहीं है। इसके उपरांत उन्होंने कृष्णसे कहा कि दुर्योधन किसीका कहना नहीं मानता है, इसलिये तुमही इसको शासित करो। कृष्णने दुर्योधनसे कहा कि हे कुरुसत्तम! तुमदुष्ट पुरुषोंके संग त्याग कर पांडवोंके साथ संधिकर लो। तुम्हारी शांतिसे संपूर्ण जगतके मंगलकी संभावना है। (१२५) इसके पश्चात् भीष्म, द्रोणाचार्य, विदुर और धृतराष्ट्रने दुर्योधनको समुझाया कि कृष्णका वचन मानकर तुम पांडवोंसे संधि कर लो। (१२७) दुर्योधनने कहा कि हे कृष्ण! मैंने पांडवोंके

संग कुछ अनुचित अपराध नहीं किया है। कदाचित् दैवः संयोगसे हम लोग संग्राममें मर जायंगे, तौ भी हम लोगोंको स्वर्ग मिलेगा। शरशय्या पर शयन करना क्षत्रियोंका परम धर्म है, इसलिये हमलोग शत्रुओंके निकट सिर न नवाकर वीर शय्या पर शयन करेंगे। जब मैं बालक और दूसरेके आधीन था, तब मेरे पिताने अज्ञानसे अथवा भयसेही मेरा राज्य पांडवोंको दे दिया था, परंतु अब वह राज्य किसी प्रकारसे भी नहीं दिया जा सकता है अधिक क्या कहूँ तीक्ष्ण सूईके नोकसे जितनी भूमि विद्ध हो सकती है। मेरे राज्यसे उतनी भूमि भी पांडवोंको नहीं दी जायगी। (१३० वाँ अध्याय) इसके पश्चात् दुर्योधन, कर्ण, शकुनी और दुःशासनने सभासे निकल कर यह निश्चय किया कि राजा धृतराष्ट्र और भीष्मके संग परामर्श करके कृष्ण हमलोगोंको बांधनेकी इच्छा करते हैं। हमलोग पहिलेही बल पूर्वक कृष्णको बांध लेंगे, जिससे पांडव लोग उत्साह रहित हो जायंगे। सात्यकीने कौरवोंके इस विचारको जान लिया। उसने सभामें जाकर कृष्ण, धृतराष्ट्र और विदुरसे यह वृत्तांत कह सुनाया। धृतराष्ट्रकी आज्ञा पाकर विदुर दुर्योधनको सभामें बुला लाए। धृतराष्ट्र और विदुरने दुर्योधनको बहुत समझाया। कृष्णने उस सभामें अपना विराट रूप दिखलाया। (१३१) इसके उपरांत वह सभासे उठकर कुंतीके मंदिरमें चले गए।

(१४० वाँ अध्याय) कृष्ण कर्णको रथमें बैठाकर नगरसे बाहर हुए और एकांतमें बोले कि हे कर्ण! स्त्री की कन्या अवस्थामें जो कानीन और सहोढ़ दो प्रकारके पुत्र उत्पन्न होते हैं, पंडित लोग कन्याके पाणिग्रहण करनेवाले पुरुषहीको उन पुत्रोंका पिता कहते हैं। इस लिये कुंती देवीकी कन्या अवस्थामें तुम्हारा जन्म होनेसे तुम भी राजा पांडुहीके पुत्र हो। तुम चलो युधिष्ठिरसे पहलेही तुम राजा बनोगे। ब्राह्मण लोग आजही तुमको राज्य सिंहासन पर बैठावेंगे। युधिष्ठिर तुम्हारे युवराज बनेंगे। (१४१ वाँ अध्याय) कर्ण बोले कि हे कृष्ण! मैं दुर्योधनके आसरेमें रहकर १३ वर्षसे निष्कंटक राज्य भोग रहा हूं। मेराही आसरा करके राजा दुर्योधन पांडवोंके संग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए हैं। इसलिये इस समय किसी प्रकारसे मुझको धृतराष्ट्रके पुत्रोंके संग मिथ्या आचरण करनेका उत्साह नहीं होता है। हे कृष्ण! तुम यह वृत्तांत पांडवोंसे मत कहो, क्योंकि यदि युधिष्ठिर मुझे कुंतीका प्रथम-पुत्र जानेंगे, तो वह स्वयं राज्य न लेकर मुझहीको समर्पण करेंगे और मैंभी उस राज्यको लेकर अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार दुर्योधनको देदूंगा। युधिष्ठिरने जिस प्रकारसे क्षत्रियोंकी बड़ी सेना इकट्ठी की है, उससे हम लोगोंकी सहायता लेना कुछ प्रयोजन नहीं है। तीनों लोकोंमें पवित्र कुरुक्षेत्रमें पराक्रमी क्षत्रिय लोग शस्त्रसे मरकर जिस प्रकारसे स्वर्गमें जायं, तुम उसीका विधान करो। (१४२) कृष्ण बोले कि हे कर्ण! तुम भीष्मादिसे जाकर कहो कि यह महीना (अगहन) सब प्रकारसे उत्तम है, आजसे ७ दिनके बाद अमावास्या होगी, उसी दिन युद्ध आरंभ करो। (१४३) कर्ण हस्तिनापुर आए। कृष्णने वहांसे प्रस्थान किया।

(१४४ वाँ अध्याय) कुंतीने विचार किया कि एक मात्र कर्णही लडाईका मूल है। जब गंगाके तीरमें कर्ण जप कर रहे थे, उसी समय कुंती वहां गई। (१४५) उनको देख कर्ण विस्मित होकर बोले कि मैं राधा और अधिरथका पुत्र कर्ण हूं। मैं तुमको प्रणाम करता हूं। कुंतीने कहा हे कर्ण! तुम कुंती पुत्र हो, राधा पुत्र नहीं हो। भगवान् सूर्यने तुमको मेरे गर्भसे उत्पन्न किया था। भ्राताओंके संग पहचान न रहनेके कारण तुम मोहमें पड़कर दुर्योधनकी सेवा कररहे हो। तुम युधिष्ठिरकी राज्यलक्ष्मी धृतराष्ट्रके पुत्रोंसे छीन कर स्वयं

भोग करो। (१४६) कर्ण बोले कि हे माता! तुम्हारे वचनपर मैं श्रद्धा नहीं कर सकता हूं। तुमने जन्मतेही मुझको त्यागकर अधर्म कार्य किया था। उसीसे मेरा यश कीर्ति आदि नष्ट हो गई है। तुम्हारे कारणसे मेरा कोई भी संस्कार क्षत्रियोंके योग्य नहीं होने पाया। धृतराष्ट्रके पुत्रोंने सब प्रकारके भोग और भोजनकी वस्तुओंसे मेरा सत्कार किया है। मैं इस समय उनको कैसे निष्फल कर सकता हूं। जो लोग मुझे नौका स्वरूप समुझकर महा घोर युद्धरूपी समुद्रसे पार होनेकी इच्छा करते हैं। इस समय मैं कैसे उनको त्याग करूंगा। मैं अवश्य धृतराष्ट्रके पुत्रोंके लिये तुम्हारे पुत्रोंसे युद्ध करूंगा, परंतु तुम्हारा अनुरोध भी निष्फल नहीं होगा। मैं युद्धमें प्रवृत्त होकर अर्जुनके अतिरिक्त तुम्हारे ४ पुत्रोंमेंसे किसीका वध नहीं करूंगा। तुम्हारे ५ पुत्र सर्वदा जीवित रहेंगे। अर्जुनकी मृत्यु होनेसे मेरे समेत तुम्हारे ५ पुत्र रहेंगे और मेरे मरनेसे अर्जुन सहित तुम्हारे वही ५ पुत्र रहेंगे। इसके उपरांत दोनों अपने अपने स्थानको चलेगए।

(१४७ वाँ अध्याय) इधर कृष्णने विराटनगरमें पहुंचकर कौरवोंका संपूर्ण वृत्तांत पांडवोंके निकट वर्णन किया। (१५१ वाँ अध्याय) राजा युधिष्ठिरकी आज्ञा और कृष्णके अनुमोदनसे द्रुपद, विराट, धृष्टद्युम्न, शिखंडी, सात्यकी, चेकितान और भीमसेन लोकमें विख्यात ये ७ महारथी सातों अक्षौहिणी सेनाओंके नायक बनाए गए। द्रौपदी विराटनगरको लौट गई। कैकयदेशके पांचों राजा, धृष्टकेतु, काशिराजपुत्र श्रोणिमान, वसुदान, शिखंडी, धृष्टद्युम्न, कुंतिभोज, अनाधृष्टि, चेदिराज, विराट, सुधर्मा, चेकितान, सात्यकी इत्यादि सैनिकगण कुरुक्षेत्रमें युद्धार्थ पहुँचगए। राजा युधिष्ठिरने श्मशान, देवालय, महर्षियोंके आश्रम, तीर्थ और मंदिरोंको छोडकर सुन्दर उपजाऊ और पवित्र भूमिमें अपनी सेनाका निवास स्थान ठहराया। कृष्णने पवित्र तीर्थमें सुन्दर जलसे पूर्ण हिरण्वती नदीको देख जलके अर्थ वहां परिघा स्थापित की। पाण्डवोंके मित्र राजागण सेनाओंसे युक्त होकर उस स्थान पर गये।

(१५४ वाँ अध्याय) रात्रि व्यतीत होने पर राजा दुर्योधनने नियमके अनुसार अपनी ११ अक्षौहिणी सेनाओंका विभाग किया और कृपाचार्य्य, द्रोणाचार्य, शल्य, जयद्रथ, काम्बोजराज सुदक्षिण, कृतवर्मा, अश्वत्थामा, कर्ण, भूरिश्रवा, शकुनी और वाह्लीक इन ११ वीरोंको ११ अक्षौहिणीके पृथक् पृथक् नायक बनाया। (१५५ वाँ अध्याय) जब दुर्योधनने भीष्मपितामहसे सेनापति बननेको कहा, तब वह बोले कि मेरे पक्षमें जैसे तुम लोग वैसेही पाण्डव भी हैं, इसलिये मुझे उन लोगोंके निमित्त भी कल्याणवाक्य कहना पड़ेगा और तुम्हारे निमित्त युद्ध भी करना होगा। मैं किसी प्रकारसे पाण्डु पुत्रोंको नष्ट करनेमें उत्साहित नहीं होऊँगा, परन्तु प्रतिदिन मैं दूसरे दशसहस्र वीर योद्धाओंको मारूंगा। इसके पश्चात् राजा दुर्योधनने-भीष्मपितामहको विधिपूर्वक सर्वप्रधान सेनापति बनाया और महासेनाके सहित कुरुक्षेत्रमें पहुँचकर समानभूमिमें शिविर स्थापित कराया।

(१५६ वाँ अध्याय) बलदेवजी मुख्य मुख्य यदुवंशियोंसे रक्षित होकर पाण्डवोंके निकट आये और युधिष्ठिरसे बोले कि हे राजन्! कालके वशमें होकर पृथ्वीके संपूर्ण क्षत्रिय इस युद्धमें इकट्ठे हुए हैं। मैंने एकान्तमें कृष्णसे कहा था कि पाण्डव लोग तथा दुर्योधन दोनों हमलोगोंके तुल्य सम्बन्धी हैं। तुम दोनोंको एक समान सहायता दो, परन्तु कृष्ण अर्जुनके

स्नेहसे सब प्रकार तुम्हारेही ओर रत हैं। गदायुद्धमें निपुण भीम और दुर्योधन दोनों मेरे शिष्य हैं। मैं कौरवोंको अपने सन्मुख नष्ट हुआ देखकर उपेक्षा नहीं कर सकूंगा। बलदेव-जीने ऐसा कहकर तीर्थयात्राका प्रस्थान किया।

(१६४ वाँ अध्याय) दुर्योधनके पूछने पर भीष्मने कौरव पक्षीय रथी और महारथियोंका नाम वर्णन किया। (१६७ वाँ अध्याय) और यह भी कहा कि हे दुर्योधन! जो तुम्हारा प्यारा मित्र कर्ण है उसको रथी वा अतिरथी कुछभी नहीं कह सकते हैं। वह अनभिज्ञ और दयालु होनेके कारण अपने कवच और कुण्डलसे रहित होगया है। परशुरामके शाप, ब्राह्मणके वचन और कवच कुण्डल आदि साधनोंसे रहित होजानेके कारण मेरे मतमें वह अर्द्धरथी है। द्रोणाचार्यने इस वचनका अनुमोदन किया। इसके उपरान्त भीष्म और कर्णका परस्पर वाक्य विवाद हुआ। कर्णने कहा कि इस युद्धमें मैं अकेलेही पाण्डवोंके संपूर्ण सेनाको मारूंगा, परन्तु यश भीष्महीको मिलेगा, क्योंकि यह सेनापति बने हैं इसलिये भीष्मके जीवित रहते हुए मैं युद्ध न करूंगा। इनके मरजाने पर मैं युद्धमें प्रवृत्त होऊँगा। (१६८ से १७१ वाँ अध्याय तक) भीष्मने पाण्डव पक्षीय रथी और महारथियोंका नाम वर्णन किया और यह वचन कहा कि मैं द्रुपदपुत्र शिखंडीको नहीं मारूंगा। स्त्री अथवा पहिले स्त्री हुए पुरुषको मैं कभी नहीं मार सकताहूं। शिखण्डी पहिले स्त्री रूपमें था इसलिये उसके संग मैं युद्ध नहीं करूंगा और कुन्तीके पुत्रोंको नहीं मार सकूँगा। (१९८ वाँ अध्याय उद्योग पर्व समाप्त हुआ)।

(६) भीष्मपर्व–(पहला अध्याय) उस समय समस्त भूमंडल पुरुष शून्य, अश्वशून्य और गजशून्य सा जान पड़ता था। सब स्थानोंमें केवल लड़के वृद्ध और स्त्रियां ही रह गई थीं। जंबूद्वीप मंडलके जिन जिन स्थानोंतक सूर्यकी ज्योति पहुँचती है, उन सम्पूर्ण स्थानोंसे सब लोग कुरुक्षेत्रमें आकर सैन्यरूपसे उपस्थित हुए। सब जातिके संपूर्ण मनुष्योंने एकत्रित होकर कई एक योजनभूमिमें अनेक देश, नदी पर्वत और नदियोंको छा लिया।

कौरव, पांडव और सोम वंशियोंने युद्धके लिये इस प्रकारकी प्रतिज्ञा और नियम किया, कि केवल बराबरीके लोग न्याय पूर्वक परस्पर युद्ध करेंगे, कोई मनुष्य किसी प्रकार छल नहीं करने पावेगा; न्यायानुसार युद्ध करनेके पश्चात् निवृत्ति होनेपर हम लोगोंके दलोंमें परस्पर प्रीति होगी, जो सैन्यके बीचमें निष्क्रांत होंगे, उनपर कोई आघात नहीं कर सकेगा; रथी रथीके साथ गजारोही गजारोहीसे घुड़सवार घुड़सवारसे और पैदल पैदलसे युद्ध करेंगे, पृथ्वीपर गिरे हुए वा विह्वल हो गए हुए लोगों पर आघात नहीं किया जायगा, दूसरेके साथ युद्ध करते हुए शरण आए हुए, युद्धसे पराङ्मुख भए हुए, शस्त्र रहित, अथवा वर्म हीन लोगोंपर प्रहार नहीं किया जायगा और सारथी, वाहन, शस्त्रवाहक, भेरीशंखादि बजाने-वाले, लोगोंपर आघात नहीं किया जायगा।

(१६ वाँ अध्याय) सूर्योदय होनेके समय कुरु और पांडव दोनों पक्षकी सेना उठकर तैयार हो गई। शकुनी, शल्य, जयद्रथ, अवंतीके राजा विन्द और अनुविंद, कैकयके राजा-गण, कांबोजके राजा सुदक्षिण, कलिंग देशके राजा श्रुतायुध, राजा जयत्सेन, कोशलके राजा बृहद्बल, और कृतवर्मा यही दशों वीर दुर्योधनके एक एक अक्षौहिणी सेनाके सरदार बनाए गए। इनके अतिरिक्त कौरवोंकी एक अक्षौहिणी सेना इन दशों अक्षौहिणीके आगे हुई।

गेरहों अक्षौहिणी सेनाओंके प्रधान सेनापति भीष्म हुए। वैसेही पांडवोंकी ओर भी ७ दल सेना प्रधान प्रधान पुरुषोंसे रक्षित हुई थी। (१७ वाँ अध्याय) कर्ण अपने अमात्यों तथा बंधुओंको लेकर लडाईसे निवृत्त हुए थे और सपूर्ण सैनिक युद्धमें प्रवृत्त हुए। (२२ वाँ अध्याय) कृष्णकी आज्ञासे अर्जुन रथसे पृथ्वीपर उतरकर दुर्गाजीका स्तव करने लगे। तब भगवती अंतरिक्षमें प्रकट होकर बोली कि हे धनंजय! थोड़ेही कालमें तुम शत्रुओंको जीत लोगे।

(२४ वाँ अध्याय) (गीता) भीष्मने बडे ज़ोरसे शंख बजाया। इसके बादही रणस्थलमें सब जगह शंख, भेरी, पणव, पटह और गोमुखके शब्दसे जब भारी कोलाहल होने लगा, तब श्वेत घोडोंके रथ पर श्रीकृष्ण और अर्जुन दिव्य शंख ध्वनि करने लगे। तदनंतर अर्जुन भगवान कृष्णसे बोले कि हे अच्युत! जो लोग लडाई करनेके लिये उपस्थित हुए हैं, जिसमें मैं उनको देख सकूँ, वैसेही ढंगसे दानों पक्षोंकी सेनाओंके मध्यमें आप रथको ठहराइए। कृष्णने दोनों सेनाओंके बीचमें रथको खडा किया। अर्जुनने देखा कि अनेक चाचा, दादा, मामा, भाई, पुत्र, भतीजा, पौत्र, श्वशुर, मित्र और सारथीगण वहां दोनों सेनाओंमें विद्यमान हैं। वह सब बंधु बांधवोंको लडाई करनेके लिए तैयार देखकर परम कृपापरायण होकर कहने लगे; कि हे कृष्ण! इन सब स्वजनोंको तैयार देखकर मेरा गात्र अवसन्न होता है, हाथसे गांडीव धनुष गिरा जाता है और मन बहुत घवड़ा गया है। मैं नहीं समुझता हूँ कि अपने स्वजनोंको मारकर मैं किस प्रकारसे श्रेय प्राप्तकर सकूँगा। अब मुझे राज्य वा सुखकी चाहना नहीं है। जिनके लिये हमलोग राज्य भोगकी अभिलाषा करते हैं, वेही लोग धन और प्राण परित्याग करनेको तैयार होकर रणभूमिमें उपस्थित हुए हैं। दुर्योधनको भाइयों सहित मार डालना हम लोगोंको उचित नहीं है। कुलक्षय होनेसे सनातन कुलधर्म विनाश हो जाता है। अर्जुन ऐसा कहकर शरासन परित्याग करके रथमें चुपचाप बैठ गए। (२५ वाँ अध्याय) कृष्ण बोले कि हे अर्जुन! इस संकट समयमें तुमको क्यों मोह उत्पन्न हुआ। मोहसे स्वर्ग नहीं मिलता और कीर्तिका नाश होजाता है। अर्जुनने कहा, मैं पूजनीय भीष्म और द्रोणके साथ किसप्रकार लडूँगा। गुरुओंको नहीं मारनेसे भिक्षान्न भोजन करना पड़े सो भी मुझे श्रेय मालूम होता, क्योंकि इन गुरुओंको मारनेसे इसी लोकमें रुधिर लिप्त अर्थ काम उपभोग करना होगा। कुलक्षय करनेके दोषकी भावनासे मेरा चित्त ऐसा घबडा गया है, कि मैं नहीं कहसकताहूं, कि धर्म विषयमें मुझे क्या करना उचित है। जिससे श्रेय होय, वह आप निश्चयरूपसे आदेश कीजिए। कृष्ण भगवान् हँसकर कहने लगे कि हे अर्जुन! तुम सब बात तो पण्डितोंके समान बोलते हो, परंतु उन बन्धुओंके लिए शोक करते हो जिनके लिये शोक करना उचित नहीं है। विचारवान् लोग मरे भाई बंधुओंके लिये शोक नहीं करते शरीरके अभिमान करनेवाले जीवोंकीलड़कपन, जवानी और बुढापा अवस्था होतीहै। जैसे लड़कपनकीहानि होकर जवानी, जवानीकी हानि होकर बुढ़ापा आदि अवस्था बदलने पर भी उसकी सचमुच कोई अवस्था नहीं बदलती। वह ज्योंकी त्यों बनी रहती है। वैसेही इस देहके विनाश होनेसे और लिंग देह अवलंबन करनेसे केवल देहांतर होता है, किंतु सचमुच कोई अवस्थांतर वा हानि नहीं होती है। इसलिये धीरलोग देह की उत्पत्ति वा विनाशसे मुग्ध नहीं होते हैं। यह देह नश्वर है। देहस्थित आत्माही सर्वथा एकरूप अविनाशी अपरिच्छिन्न है, इसलिये तुम मोह

जनित शोकको छोड़कर युद्ध करो। आत्मा न किसीको मारता है और न कोई उसको मार सकता है। वह न कभी जन्म लेता, न कभी मरता है और कभी जन्म लेकर जीता भी नहीं रहता है, क्योंकि वह स्वभावतः जन्म रहित है और सदा वर्तमान रहता है। जिस प्रकारसे मनुष्य एक पुराने कपड़ेको परित्याग करके दूसरे नए कपड़ेको पहनता है, वैसेही जीव पुराने शरीरको त्यागकर नए शरीरको प्राप्त करता है। अगर उस आत्माको देहके जन्म लेनेसे जन्मा हुआ और देहके नाश होनेसे मरा हुआ लोग कहते हैं, तौभी तुमको शोक करना उचित नहीं है, क्योंकि जितनी वस्तु जन्म लेती हैं, वे सब मरही जाती हैं और मरने पर फिर अवश्यही जन्म लेती हैं, तब जो बात रुक नहीं सकती है, उसके लिये तुम शोक क्यों करते हो। क्षत्रियोंके लिये युद्धसे बढ़कर और कोई श्रेयकारी कर्म नहीं है। अगर तुम लडाईसे मुह मोडोगे, तो तुमको धर्म और कीर्ति खोकर पाप भोगना पडेगा। रणक्षेत्रमें मारेजाने पर तुमको स्वर्ग मिलेगा। युद्ध करनेमें तुमको कुछभी पाप नहीं लगेगा। (२६ वाँ अध्याय) संपूर्णरूपसे अनुष्ठित पराए धर्मसे अपना धर्म अंगहीन भी हो तौभी उत्तम है, क्योंकि अपने धर्ममें मरण भी श्रेष्ठ है। (२७ वाँ अध्याय) तुम अज्ञानसे उत्पन्न इस संशयको ज्ञानरूपी खड्गसे काटकर कर्म योगके आसरे अहंभाव ममता त्यागकर युद्ध करनेके निमित्त खडे होजाओ, इत्यादि।

(३४ वाँ अध्याय) अर्जुन बोले; हे भगवन्! तुमने जो परमगुप्त परमात्मनिष्ठ आत्मा और अनात्माका विवेक विषयक ज्ञान कहा, उससे मेरा भ्रम और अज्ञान नष्ट होगया। जैसा तुम अपनेको कहते हो, मैं वैसाही तुम्हारे रूपको देखना चाहता हूं। कृष्ण भगवान्ने अर्जुनको ज्ञानदृष्टि देकर अनेक मुख और बहुत नेत्रोंसे युक्त, आश्चर्यसे भरा हुआ प्रकाशमान परमऐश्वर्य युक्त अपना विराट रूप दिखलाया। अर्जुनने जब कृष्णके शरीरमें देवता, पितर, मनुष्य आदि जगत्के विविध जीवोंको देखा, तब सिर नवाकर उस मूर्तिको प्रणाम किया। पश्चात् वह बोले कि अब तुम इस विराट रूपको समेटकर मुझको अपना पहला रूप दिखलाओ। कृष्ण जैसे प्रथम थे वैसेही रूप होगए।

(४१ वां अध्याय) कृष्ण भगवान्ने कहा कि हे अर्जुन! अपना धर्म अधूरा और अंगहीन हो और दूसरेका धर्म पूरी तरहसे अनुष्ठान किया हुआ हो, तो भी अपना धर्म दूसरेके धर्मसे उत्तम और कल्याण करनेवाला है। अपनी जातिके कर्मको कभी नहीं त्यागना चाहिये, क्योंकि धूएंसे ढकी हुई अग्निकी भाँति सब कर्मोंमें कुछ न कुछ दोष है। यदि अहंकार करके मेरी बातोंको नहीं मानोगे, तो नष्ट हो जाओगे। जो तुम अहंकारसे यह समुझते हो कि मैं नहीं लडूँगा, तो यह परिश्रम तुम्हारा समस्त झूठा है और तुम्हारा यह विचार भी निष्फल होगा, क्योंकि तुम्हारी प्रकृति तुम्हें युद्धमें लगा देगी! उसके वशमें होकर तुमको इस युद्धकार्यको अवश्यही करना पडेगा। अर्जुन बोले, हे अच्युत! मेरा अज्ञान और मोह छूट गया, तुम्हारे प्रसादसे आत्मज्ञान मुझको मिला है। मैं अधर्मके विषयमें अब संदेहसे रहित होकर स्थित हूं और तुम्हारी आज्ञा पालन करनेमें तत्पर हूं। (यहां तक १८ अध्याय गीता है)।

(४२ वाँ अध्याय) अर्जुनने फिर गांडीव धनुष धारण किया। संपूर्ण योद्धा सिंहनाद करने लगे। उस समय राजा युधिष्ठिरने समुद्रकी भाँति दोनों ओरकी सेनाओंको बार बार

आगे बढती हुई देखकर कवच उतार अपने शस्त्रोंको फेंक दिया और रथसे उतर दोनों हाथ जोड़कर भीष्मपितामहकी ओर देखते हुए शत्रु सेनामें प्रस्थान किया। अर्जुन भी रथसे उतर भाइयोंके सहित उनके अनुगामी हुए। कृष्ण उनके पीछे पीछे चले। अन्य राजा लोग भी कौतुक देखनेके लिये उनके पीछे चलने लगे। भ्राताओंसे घिरे हुए राजा युधिष्ठिर शत्रुसेनाके बीच भीष्मके निकट जा पहुँचे और उनके दोनों चरण पकडकर बोले कि हे पितामह! आपके संग मैं युद्ध करूंगा, इसके लिये आप मुझे अनुमति और आशीर्वाद दीजिये। भीष्म बोले कि हे भारत! यदि तुम हमारे समीप नहीं आते तो मैं तुम्हारे पराजयके निमित्त तुमको अभिशाप देता। मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हुआ। तुम युद्धमें जय प्राप्त करोगे और दूसरी तुम्हारी जो कुछ इच्छा होगी, उसे भी तुम पाओगे। तुम मुझसे क्या वर मांगते हो। युधिष्ठिर बोले कि आप नित्यही हमारे हितके लिये कौरवोंकी ओरसे युद्ध कीजिये। भीष्मने कहा कि हे राजन्! कौरवोंके पक्षमें हम इच्छानुसारही युद्ध करेंगे। युद्धके अतिरिक्त जो कुछ कहनेकी इच्छा हो वह तुम कहो। युधिष्ठिर बोले कि आप युद्धमें अपराजित हैं। मैं किस प्रकारसे आपके निकट युद्धमें विजयी होसकूंगा। भीष्मने कहा, हे तात! मुझको युद्धमें जीतनेवाला कोई नहीं है। मेरा मृत्युकाल भी अभी नहीं आया है। इससे तुम फिर एक बार मेरे निकट आना। राजा युधिष्ठिर भीष्मकी आज्ञा शिरपर चढा कर भाइयों सहित द्रोणाचार्यके समीप पहुँचे और उनको प्रणाम करके बोले कि हे भगवन्! मैं किस प्रकारसे शत्रुओंको जीत सकूंगा। आप मुझे अनुमति दीजिये द्रोणाचार्य बोले कि हे महाराज! मैं प्रसन्न होकर आपसे कहता हूं कि आप युद्धमें विजय पावेंगे। मैं कौरवोंकी ओरसे युद्ध अवश्य करूंगा, परंतु आपके जयके लिये अंतःकरणसे प्रार्थना करूंगा। मेरे आशीर्वादसे आप विजयी होंगे। युधिष्ठिरने कहा, हे द्विजवर! आप युद्धमें अजेय हैं। मैं आपको कैसे जीत सकूंगा। द्रोणाचार्य बोले कि हे राजन्! मैं जबतक रणभूमिमें युद्ध करता रहूंगा, तबतक आपका विजय नहीं होगा। इसलिये आप शीघ्रही मुझको मारनेका यत्न कीजियेगा। युधिष्ठिरने कहा कि हे आचार्य! मैं अनंत दुःखके सहित आपसे पूछताहूं कि आप अपने मरनेका उपाय मुझसे कहिए। द्रोणाचार्य बोले कि हे तात! जब मैं रणभूमिमें शस्त्रको परित्याग करके योगमें आसक्त और मरनेके निमित्त निष्ठावान् होकर परमेश्वरके ध्यानमें तत्पर होऊँगा, उस अवस्थामें मेरा वध होसकेगा। जिसके वचनमें श्रद्धा की जाती है, ऐसे मनुष्यके मुखसे अत्यंत अप्रिय वचन सुनकर मैं रणभूमिमें अस्त्र शस्त्रका परित्याग कर सकताहूं। राजा युधिष्ठिर वहांसे कृपाचार्यके पास आये और उनको प्रणाम करके यह वचन बोले कि हे आचार्य! मुझको आप युद्धकी अनुमति दीजिए। कृपाचार्य बोले कि हे राजन्! मैं अर्थ अर्थात् धनसे कौरवोंके वशीभूत हूं। मैं उनकी ओरसे युद्ध करूंगा, किन्तु आपका विजय होगा। मैं प्रतिदिन खडा होकर आपके विजयकी प्रार्थना करूंगा। इसके पश्चात् राजा युधिष्ठिर मद्रराज शल्यके निकट गए और उनको प्रणाम कर यह वचन बोले कि हे महाराज! मैं आपके निकट युद्ध करनेकी अनुमति मांगने आया हूं। शल्य बोले कि मैं प्रसन्न हूं। तुम युद्धमें विजयी होगे। तुम युद्धके अतिरिक्त मुझसे क्या अभिलाषा करते हो। युधिष्ठिरने कहा, हे मातुल! आपने स्वीकार कियां था कि रणभूमिमें मैं कर्णके तेजका नाश करूंगा, यही वर मैं आपसे मांगताहूं। शल्य बोले, हे युधिष्ठिर!

तुम्हारी यह अभिलाषा पूरी होगी। तुम्हारे विजयका उपाय करना मैंने अङ्गीकार किया। जब राजा युधिष्ठिर शल्यको प्रणाम कर उस महासेनासे बाहर निकले, तब कृष्णजी सेनासे अलग कर्णके समीप गए और कहने लगे कि हे कर्ण! मैंने सुना है कि भीष्मके द्वेषसे तुम अभी युद्ध नहीं करोगे, इसलिये जबतक भीष्म नहीं मारे जाते हैं, तबतक तुम हमारी ओर आवो, भीष्मके मरनेके पश्चात् तुम फिर दुर्योधनकी सहायता करना। कर्ण बोले हे केशव! मैं दुर्योधनके अप्रिय कार्य नहीं करसकूंगा। तुम उनके निमित्त प्राण त्याग करनेवाला मुझको जानो। इसके पीछे सब लोग अपने अपने रथपर फिर चढे। उन्होंने पहलेके रचे हुए व्यूहको बनाकर फिर सज्जित किया।

(४३ वाँ अध्याय) युद्ध आरंभ होगया। (४६ वाँ अध्याय) जब विराट-पुत्र उत्तरके हाथीने शल्यके रथके घोड़ोंको मार गिराया, तब शल्यने एक शक्ति चलाई, जिसकी चोटसे उत्तर हाथीसे पृथ्वी पर गिरकर मर गया। इसके अनंतर भीष्मके बाण पृथ्वी और आकाश में छा गए। पांडवोंकी ओरके बीर मरने लगे। भीष्म पांडवी सेना के रथियोंके नाम ले ले कर उनका वध करने लगे। पांडवों की सम्पूर्ण सेना भाग गई। पांडवोंने भीष्मको प्रचण्ड तेज से प्रकाशित देखकर संध्याके समय रणभूमिसे अपनी सेना लौटाली।

(४७ वां अध्याय) दूसरे दिन राजा युधिष्ठिरके कहनेके अनुसार क्रौंचारुणव्यूह बना। अर्जुन सब सेना के अगाडी हुए। राजा द्रुपद बडी सेनाके सहित उस व्यूहके मस्तक हुए। कुंतिभोज और चेदिपति व्यूहके नेत्र स्थान में स्थापित किये गए। दाशेरक बीरोंके सहित प्राग् दशार्ण, अनूप और किरातदेशीय राजगण व्यूह की ग्रीवा बने। पटचर, हुंड, कौरव और निषाद आदि विदेशीयबीरोंके सहित राजा युधिष्ठिर उसकी पीठ हुए! भीम, धृष्टद्युम्न, द्रौपदीके पांचों पुत्र, अभिमन्यु और सात्यकी व्यूहके दोनों पंखोंके मध्य स्थानमें नियत हुए। पिशाच दरद, पौंड, कुंडीबृष, मारुत, धेनुक, तंगन, परतंगन, वाह्लीक, तित्तिर, चोल और पांड्य आदि देशोंके बीरोंके सहित नकुल और सहदेव व्यूहके पक्ष स्थान में स्थित हुए। व्यूहके पक्ष स्थान में अयुत (१००००), सिरके भागमें नियुत, पीठ स्थान में एक अर्बुद, बीस हजार और गर्दनमें एक नियुत सत्तर हजार रथ रक्खे गए। दोनों पंखोंके अन्तमें हाथियों का दल चलने लगा। कैकयदेशीय बीरोंके सहित राजा विराट और तीन अयुत रथों के संग काशिराज तथा शैब्य व्यूहके चरण स्थानकी रक्षा करने लगे। (४७ वां अध्याय) भीष्म आदि कौरवोंने पांडवोंके व्यूहके विरुद्ध एक महाव्यूह सज्जित किया। भीष्म सबके आगे चलने लगे। कुंतल, दशार्ण, मागध, विदर्भ, मेकल आदि बीरोंके सहित द्रोणाचार्य भीष्मके अनुगामी हुए और गांधार, सिंधु, सौबीर, शिवि और बशादि देशीय बीरगण सम्पूर्ण सेनाओंके सहित भीष्मके पीछे पीछे चले। शकुनी अपनी सेना के सहित द्रोणाचार्यकी रक्षा करने लगे। अश्वातक, विकर्ण, चामल, काशक, दरद, शक, क्षुद्रक और मालव बीरोंके सहित और अपने सब भाइयोंके साथ राजा दुर्योधन चले। भूरिश्रवा, शल्य, भगदत्त, अवंतिदेशीय विंद और अनुविंद वामपार्श्वकी रक्षा करने लगे। सोमदत्ति, सुशर्मा, कांबोजराज सुदक्षिण, शतायु और अच्युतायु दाहिने पार्श्वकी रक्षा में प्रवृत्त हुए। अश्वत्थामा, कृपाचार्य, केतुमान, कृतवर्मा, वसुदान और विभु बडी सेनाके सहित सेनाके पीठ स्थान पर स्थित हुए। इसके पश्चात् कौरव और पांडवोंके पक्षके संपूर्ण

योद्धा प्रसन्न होकर युद्धमें प्रवृत्त हुए। (५१ वां अध्याय) विविध लडाइयोंके उपरांत कौरव पक्षीय कलिंगराज अपनी वडी सेनाको सं. ले भीमसे लडनेलगा। जो वडा पराक्रम दिखलाकर अपने पुत्रोंके सहित मारा गया। (५२ वां अध्याय) भयंकर संग्राम हानके उपरांत संध्या समय उपस्थित होने पर दोनों ओरकी सेना युद्धसे निवृत्त हुई।

(५३ वां अध्याय) तीसरे दिन सवेरा होनेपर भीष्मने गरुडव्यूहकी रचना की, जिसके तुंडस्थलमें स्वयं भीष्म हुए। दोनों नेत्रोंके स्थानमें द्रोणाचार्य और कृतवर्मा नियत हुए। संपूर्ण त्रिगर्त्त, मत्स्य, कैकय और वाटधानदेशीय वीरोंके सहित अश्वत्थामा और कृपाचार्य सिर स्थलमें स्थित हुए। भूरिश्रवा, शल्य, भगदत्त और जयद्रथ ये लोग मद्रक, सिंधु, सौवीर और पंचनद देशीय वीरोंके सहित ग्रीवा के स्थान में स्थापित किए गए। राजा दुर्योधन अनुयायी और भाइयोंके सहित पीठ स्थान में स्थित हुए। अवंति देशीय विंद और अनुविंद और कांवोजराज पुच्छ स्थानमें रक्खे गए। मागध, कलिंग और दासकर वीर व्यूहके दहिने पार्श्व में और कारुख, विकुंज, मुंड और कुण्डीवृष देशीय योद्धागण वृहद्वलके सहित वाएं पक्षके स्थानमें स्थित हुए। पांडवोंने अर्द्धचन्द्रव्यूहकी रचनाकी, जिसके दहिने नोकपर नाना देशीय राजाओंके सहित भीमसेन विराजमान हुए। पीछे ओर राजा विराट और द्रुपद स्थित हुए। उसके अनन्तर राजा नील नीलके अनन्तर चेदि, काशि, करुष और पौरव वीरोंके सहित धृष्टकेतु रक्खे गए। धृष्टद्युम्न, शिखण्डी पांचाल और प्रभद्रक योद्धागण वडी सेनाके सहित व्यूहके मध्यस्थलमें स्थित हुए। राजा युधिष्ठिरभी हाथियोंकी सेनाके सहित उसंही स्थानपर विराजमान हुए। उनके वाद सात्यकी द्रौपदी के पांचोंपुत्र और अभिमन्यु खड़े हुए। उन लोगोंके अनन्तर इरावान उसके वाद घटोत्कच और उसके अनंतर केकयदेशीय योद्धागण सजके खड़े होगए। उनलोगोंके अनंतर वाएं टुनगे पर श्रीकृष्णके सहित अर्जुन स्थित हुए। इस प्रकारसे दोनों ओरकी सेना व्यूहवद्ध होकर लड़नेलगी (५६ वाँ अध्याय) रणभूमिमें भीष्मने क्रुद्ध होकर वार वार सैकड़ों तथा सहस्रों वाणोंसे कृष्ण और अर्जुनको चारों ओरसे छिपा दिया। जव वह सिंहनादके सहित कृष्णको कंपाने लगे और उनकी वाणवृष्टिसे पांडवोंकी सेना भागने लगी, तव कृष्ण अपनी पूर्व प्रतिज्ञाको भूलकर घोड़ोंकी लगाम छोड़ हाथमें चक्र घुमाते हुए रथसे कूदकर भीष्मकी ओर दौड़े। उस समय अर्जुनने रथसे उतरकर उनकी भुजाओंको पकड़ लिया।

भगवान् कृष्णने रथ पर चढकर घोडोंकी लगाम ग्रहण की। इसके पश्चात् जब अर्जुनने कौरवोंकी सेनाको विकल करदिया, तव कौरवीसेनाके सब वीर अपने अपने डेरोंमें चले गए।

(५७ वाँ अध्याय) चौथे दिन सवेरेही महात्मा भीष्म अर्जुनसे युद्ध करनेके लिये गमन करने लगे। सव वीरोंने हाथी, घोड़े, रथ और पदातियोंसे युक्त अर्जुनके व्यालव्यूहको दूरहीसे देखा, जिसके दोनों कर्णस्थलमें चार चार सहस्र हाथी थे और उसको अर्जुन रक्षा करते थे। इसके पश्चात् लोम हर्षण युद्ध होने लगा। (५९ वाँ अध्याय) मगधदेशके राजाने अपने महा गजराजको अभिमन्युकी ओर चलाया। अभिमन्युने एकही वाणसे हाथीको मारडाला। जव मगधराज हाथीसे रहित होगए, तव अभिमन्युने उनका सिर काटडाला। इधर भीमसेनने कौरवोंकी गजसेनाका विनाश करडाला (६१ वाँ अध्याय) और संग्राममें धृतराष्ट्रके कई एक पुत्रोंका वध किया। संध्या होजाने पर कौरवोंकी सेना

शिथिल होकर युद्धसे निवृत्त होगई। पांडवोंने कौरवोंको पराजित करके अपने शिविरों अर्थात् डेरोंमें प्रवेश किया।

(६६-वाँ अध्याय) पांचवें दिन सूर्योदय होने पर दोनों ओरकी सेना रणक्षेत्रमें चलीं। भीष्म मकरव्यूह बनाकर चारों ओरसे निज सेनाकी रक्षा करने लगे और रथियोंसे घिरकर सेनाके सहित आग बढे। दूसरे सब रथी, घुड़सवार, गजपति और पैदल योद्धा उनके अनुगामी हुए। पांडवोंने अपनी सेनाका श्येन (बाज पक्षी) व्यूह बनाया। उसके मुख स्थानमें भीमसेन, नेत्रस्थानमें शिखंडी और धृष्टद्युम्न, सिरस्थलमें सात्यकी; ग्रीवास्थानमें अर्जुन; बाएं पक्ष पर एक अक्षौहिणी सेना और अपने पुत्रोंके सहित राजा द्रुपद और दहिने पक्ष पर एक अक्षौहिणी सेनाके साथ केकयराज स्थित हुए। द्रौपदीके पुत्रगण और अभिमन्यु व्यूहके पृष्ठ रक्षक हुए। नकुल और सहदेवके सहित राजा युधिष्ठिर उसके पीछे स्थित हुए।

(७१ वाँ अध्याय) सोमदत्तके पुत्र भूरिश्रवाने रणक्षेत्रमें सात्यकीके १० पुत्रोंको अकेलेही मारडाला। संध्या होजाने पर कौरव और पांडवोंकी दोनों सेना विश्राम करनेके लिये अपने अपने डेरोंमें गईं।

(७२ वाँ अध्याय) सवेरा होतेही (छठवें दिन) पांडवोंकी ओर मकरव्यूह बना। इसके मस्तक स्थान पर अर्जुन और राजा द्रुपद; मुख स्थानपर नकुल और सहदेव, ग्रीवा स्थानपर अभिमन्यु, द्रौपदीके पांचों पुत्र, घटोत्कच, सात्यकी और राजा युधिष्ठिर; पीठ स्थान पर बड़ी सेनाके सहित विराट और धृष्टद्युम्न; बाएं पक्ष पर केकय देशीय राजागण; दहिने पक्ष पर धृष्टकेतु और चेकितान; दोनों पांवोंके स्थानपर बड़ी सेनाके सहित कुंतिभोज और शतानीक और उसके पुच्छ स्थानपर सोमवंशीय क्षत्रियोंसे युक्त होकर शिखंडी और इरावान स्थित हुए। इधर भीष्मकी आज्ञासे क्रौंचव्यूह बना। उसके तुंड स्थान पर द्रोणाचार्य; नेत्र स्थान पर अश्वत्थामा और कृपाचार्य; सिर स्थान पर कांबोज देशीय राजा और वाँह्लीकके सहित कृतवर्मा; ग्रीवा स्थान पर अनेक राजाओंसे युक्त राजा दुर्योधन और शूरसेन; पीठ स्थान पर मद्र, सौवीर और कैकय देशीय वीरोंके सहित राजा भगदत्त; बाएं पक्ष पर अपनी बड़ी सेनाके साथ सुशर्मा, दहिने पक्ष पर तुषार, शक, यवन और चूलिक देशीय योद्धागण और व्यूहके चरण स्थान पर श्रुतायु, शतायु और सोमदत्ति लोग स्थित हुए। इसके उपरांत दिनभर घोर युद्ध होता रहा। (७६ वाँ अध्याय) भीष्म संध्याकालमें पाण्डवोंकी सेनाको छितर बितर करके निज शिविरमें आये। राजा युधिष्ठिरने प्रसन्न चित्त अपने डेरेमें प्रवेश किया।

(७८ वाँ अध्याय) प्रातःकाल होने पर (सातवें दिन) भीष्मने बडे बडे वीर योद्धा, गजपति, घुडसवार, पदाती और रथियोंसे चारों ओरसे घेरकर अपनी सेनाका मंडलव्यूह बनाया। प्रत्येक हाथीके समीप सात सात महारथी, प्रत्येक रथीके निकट सात सात घुड़सवार, प्रति घुड़सवारोंके पास ढाल तलवार ग्रहण करनेवाले सात सात योद्धा और प्रत्येक योद्धाओंके निकट सात सात धनुषधारी पुरुष स्थित हुए। सम्पूर्ण महारथियोंके सहित भीष्म सेनाकी रक्षा करने लगे। दस दस सहस्र घोड़सवार, गजपति तथा रथी और चित्रसेन आदिक शूर कवच धारण करके भीष्मकी रक्षा करनेमें प्रवृत्त हुए। राजा युधिष्ठिरने शत्रुओंके मंडलव्यूहको देखकर वज्रव्यूहकी रचना की। रथी घुड़सवार और सम्पूर्ण योद्धागण यथा

रीति स्थानों पर स्थित होकर सिंहनाद करने लगे। युद्ध आरंभ होगया। (७९ वाँ अध्याय) द्रोणाचार्यने विराट-पुत्र शंखको मारकर रणभूमिमें गिरादिया। (दिनभर भयंकर युद्ध होनेके उपरांत) सूर्यास्तके समय कौरव और पाण्डवोंकी सेना युद्धसे निवृत्त होकर अपने अपने वास स्थानोंमें आई।

(८४ वाँ अध्याय) सबेरेके समय (आठवाँ दिन) दोनों ओरके सब वीर युद्धके निमित्त शिविरोंसे बाहर निकले। भीष्मने बाणरूपी तरंगसे युक्त समुद्रके समान निज सेनाका महाघोर व्यूह बनाया और सेनाके अगाडी मालव, दाक्षिणात्य और अवंति देशीय योद्धाओंसे युक्त होकर युद्धके निमित्त प्रस्थान किया। उसके पश्चात् पुलिंद, पारद, क्षुद्रक और मालव देशीय वीरोंके सहित द्रोणाचार्य चले। उनके पीछे मगध, कलिंग और पिशाच वीरोंसे युक्त होकर भगदत्तने गमन किया। उनके पीछे मेकल, त्रिपुर और चिलुक योद्धाओंके सहित कोशलराज बृहद्बल गमन करने लगे। उनके पीछे कांबोज और सहस्रों योद्धाओंसे युक्त होकर प्रस्थल राज त्रिगर्त चले। उनके पीछे अश्वत्थामा, अश्वत्थामाके पीछे अपने भाइयोंके सहित राजा दुर्योधन चले, जिनके पीछे कृपाचार्यने प्रस्थान किया। इधर राजा युधिष्ठिरकी आज्ञासे धृष्टद्युम्नने महादारुण शृंगाटकव्यूह बनाया। कई एक सहस्र रथी, घुड़सवार और पैदल योद्धाओंके सहित भीमसेन और सात्यकी उसके दोनों शृंग स्थानों पर कृष्णके सहित अर्जुन उसके नाभी स्थान पर और राजा युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव, उसके मध्यस्थल पर स्थित हुए। दूसरे प्रवीण योद्धाओंने व्यूहके यथायोग्य स्थानोंपर स्थित होकर उसको पूर्ण किया। उनके पीछे अभिमन्यु, विराट, द्रौपदीके पुत्रगण और घटोत्कच स्थित हुए। दोनों ओरसे भयानक युद्ध होने लगा। (८५ वाँ अध्याय) भीमसेनने दुर्योधनके कई भाइयोंको रणमें मार डाला। (८६ वाँ अध्याय) अर्जुनके पुत्र इरावान युद्ध करनेके निमित्त उपस्थित हुए। गरुडने जब नागराज ऐरावतके पुत्रको हर लिया, तब ऐरावतने अपनी पुत्रवधूको पुत्रहीन देखकर अर्जुनको दे दिया। अर्जुनने उसको अपनी भार्या बनाई। इसी कारण दूसरेके क्षेत्रमें अर्जुनके वीर्यसे इरावानका जन्म हुआ था। इरावानने गांधारराज शकुनीके ५ भाइयोंको रणभूमिमें मारडाला, परन्तु कौरवपक्षीय अलंबुष राक्षस द्वारा अपने मातृवंशीय नागोंके सहित मारा गया। भीमसेनने धृतराष्ट्रके कईपुत्रोंको युद्धमें मारडाला। दोनों ओरके बहुतसे प्रधान योद्धा और सैनिक पुरुष मारे गए। महा भयंकर घोर रात्रि होते देखकर कौरव और पाण्डवोंने अपनी अपनी सेनाको युद्धसे निवृत्त किया। सब योद्धा अपने अपने शिविरों अर्थात् डेराओंमें जाकर स्थित हुए।

(९५ वाँ अध्याय) भीष्मने (नवां दिन) यत्न पूर्वक सर्वतोभद्र नामक व्यूह बनाया। कृपाचार्य, कृतवर्मा, शैव्य, शकुनी, सिंधुराज जयद्रथ, और कांबोजराज सुदक्षिण भीष्म और धृतराष्ट्रके पुत्रोंके सहित सम्पूर्ण सेनाके आगे व्यूहके मुख पर स्थित हुए। द्रोणाचार्य, भूरिश्रवा, शल्य और भगदत्त दहिने पक्षपर, अश्वत्थामा, सोमदत्त और अवंतिराज दोनों भाई बहुत सेना लेकर वाम पक्ष पर, राजा दुर्योधन त्रिगर्त्तदेशीय योद्धाओंके सहित मध्यस्थलपर और अलंबुष और श्रुतायु सब सेनाके सहित व्यूहकी पीठपर स्थित हुए। दूसरी ओर राजा युधिष्ठिर, भीम, नकुल और सहदेव संपूर्ण सेनाका महा दुर्जय व्यूह बनाकर सब सेनाके आगे स्थित हुए। उनके पीछे धृष्टद्युम्न, विराट, सात्यकी; उनके बाद शिखण्डी,

अर्जुन, घटोत्कच, चेकितान और कुंतिभोज और उनके पीछे अभिमन्यु द्रुपद और केकय-राज पांचों भाई चले। सब योद्धा एक दूसरे के सन्मुख होकर शस्त्रोंका प्रहार करने लगे। (१०३ अध्याय) जब भीष्मके बाणों से कृष्ण और अर्जुन क्षत विक्षत शरीर हो गए और भीष्म पांडवों की सेनाके मुख्य मुख्य बीरोंका बध करने लगे, तब कृष्ण घोडोंको त्यागकर रथसे नीचे उतरे और भीष्मके वध करनेकी इच्छा से कोड़ा लेकर भीष्मकी ओर दौडे। उस समय अर्जुनने दौड़कर कृष्णको पकड लिया और उनसे कहा कि आपके युद्ध करने से सब लोग आपको मिथ्यावादी कहेंगे। ऐसा सुन कृष्ण लौटकर फिर रथपर चढे (१०४ अध्याय) संध्या समय होजाने पर राजा युधिष्ठिरने भीष्मके बाणों के भयसे अपनी सेनाको भागते हुए देखकर उनको युद्धसे निवृत्त किया। दोनों पक्षके लोग अपने अपने डेरों में चले गए। रात्रिमें राजा युधिष्ठिरने कृष्णसे कहा कि भीष्मपितामह मेरी सेनाका विनाश किये देते हैं। वह युद्धमें पराजित नहीं हो सकेंगे। मैं शोक समुद्र में डूब रहा हूँ। अब युद्ध करनेकी मेरी इच्छा नहीं होतीहै; इसलिये अव मैं वनको जाऊँगा। कृष्ण बोले; हे पांडुनन्दन! तुम मुझे युद्धमें नियुक्त करो; मैं अपने शस्त्रोंके वलसे भीष्मको रथसे पृथ्वीमें गिरादूंगा। युधिष्ठिरने कहा हे कृष्ण! तुमने कहा था कि मैं युद्ध नहीं करूंगा, अब मैं तुमको मिथ्यावादी नहीं बना सकता। भीष्मने मुझसे कहा था कि मैं तुमको उत्तम मन्त्रणा, दूँगा और दुर्योधन के लिये युद्ध करूंगा, । चलो हम लोग फिर उनके निकट जाकर उनसे उनके वधका उपाय पूछें। वह अवश्यही उत्तम युक्ति देकर हम लोगोंके विजयका उपाय बतावेंगे। जब मैंने अपने पिताके भी पिताका वध करनेकी इच्छा की, तब हम लोगोंकी क्षत्रिय जीविका का धिक्कार है। श्रीकृष्ण बोले कि हे महाराज! तुम्हारे वचनमें मेरी भी संमती है। भीष्म नेत्रसे देखकर ही शत्रुओंको भस्म करदेते हैं। इसलिये उनके वधका उपाय पूछनेके लिये उनके समीप गमन करो। इसके पश्चात् पांडव और कृष्णने शस्त्र और कवचोंको उतारकर सब मिलकरके भीष्मके शिविरमें जाकर उनको प्रणाम किया। भीष्मने पूछा कि तुम लोगोंके प्रीतिके लिये मुझको कौनसा कार्य करना पडेगा। यदि वह कार्य कठिन भी होगा; तौ भी मैं उसे पूर्ण करूंगा। युधिष्ठिर बोले कि हे पितामह! मैं किस प्रकारसे युद्धमें विजय प्राप्तकर सकूंगा। हम लोग युद्धमें किसी प्रकार से तुम्हारे तेजको नहीं सह सकते हैं। इसलिये तुम स्वयं ही अपने वधका उपाय वर्णन करो। भीष्म बोले, हे युधिष्ठिर! जब तक मैं जीता हूँ तब तक तुम्हारे विजयकी संभावना नहीं है। शस्त्रत्यागी, पृथ्वी पर गिरे हुए कवचहीन भागते हुए, भयभीत शरणमें आएहुए, स्त्रीजाती स्त्री नामधारी पुरुष इत्यादि, ऐसेही पुरुष शस्त्र रहित होने पर मेरा वधकर सकते हैं। मैं किसीके अमांगलिक ध्वजा देखनेसे उसके संग युद्ध नहीं करूंगा। द्रुपदराजका पुत्र शिखण्डी जो तुम्हारी सेना में स्थितहै प्रथम कन्या होकर जन्मा था पीछे पुरुष हो गयाहै। अर्जुन कवच धारणकरके शिखण्डी को आगे खडाकरके अपने बाणोंसे मेरा वधकरें। शिखण्डीके रथकी ध्वजा अमांगलिक है। विशेष करके वह कन्या होकर उत्पन्न हुआ था, इसलिये मैं उसके ऊपर प्रहार नहीं कर सकता हूँ। मेरे कथनानुसार करने ही से तुम्हारा विजय होगा। इसके पश्चात् पांडव लोग भीष्मपितामहको प्रणाम करके उनकी आज्ञा ले अपने अपने शिविरों में गए।

(१०५ वां अध्याय) पांडवोंने (दसवें दिन) सर्वशत्रुनिवर्हण नामक व्यूह बनाकर शिखण्डीको आगे करके युद्ध यात्रा की । भीमसेन और अर्जुन शिखण्डीके चक्ररक्षक हुए । द्रौपदीके पांचों पुत्र और अभिमन्यु उसके पृष्ठ रक्षक नियत हुए । सात्यकी और चेकितान उन सबके रक्षक बनाए गए ! पांचाल योद्धाओं से रक्षित होकर धृष्टद्युम्न उन सबके पीछे स्थित हुए उसके पीछे नकुल और सहदेवके सहित राजा युधिष्ठिर गमन करने लगे । उनके पीछे राजा विराट अपनी सेना सहित चले । उनके पीछे राजा द्रुपद चलने लगे । केकयराज पांचों भाई और धृष्टकेतु व्यूहकी रक्षा करते हुए सबके पीछे चले । इधर कौरवोंने अपनी सम्पूर्ण सेनाके आगे भीष्मको करके पाण्डवोंके सन्मुख गमन किया । धृतराष्ट्रके पुत्रगण भीष्मकी रक्षा करनेमें प्रवृत्त हुए तिसके पीछे द्रोणाचार्य और उनके पीछे अश्वत्थामा चले और उनके पीछे हाथियोंकी सेनासे युक्त होकर राजा भगदत्तने प्रस्थान किया । कृपाचार्य और कृतवर्मा राजा भगदत्तके अनुगामी हुए । उनके पीछे कांबोजराज सुदक्षिणने यात्रा की । मगधदेशके राजा जयत्सेन, सुवलपुत्र, वृहद्बल, सुशर्मा आदि दूसरे सम्पूर्ण राजाओंन सब सेनाकी रक्षा करते हुए सबके पीछे गमन किया । उसके पश्चात् भयानक युद्ध आरंभ होगया । (१०६ वाँ अध्याय) भीष्मपितामहने दुर्योधनको धीरज देते हुए यह वचन कहा कि हे राजन् ! मैंने तुम्हारे समीप पहले यह प्रतिज्ञा की थी कि संग्राममें नित्य १० सहस्र योद्धाओंको मारकर तब युद्धसे निवृत्त होऊँगा । उस प्रतिज्ञाको मैंने पूर्ण भी किया है और आजभी संग्राममें मैं बड़ा कर्म करूंगा । आज मैं तुम्हारे सन्मुखही स्वामीके दिये हुए अन्न आदि ऋणोंसे मुक्त होऊँगा । ऐसा कह भीष्मने उस दिन दश सहस्र योद्धाओंका वध किया और सवारोंके सहित दश सहस्र हाथी दश सहस्र घोड़े और बीस सहस्र पैदल योद्धाओंको मारकर वह रणभूमिमें सुशोभित हुए । (११२) इसके उपरान्त भीष्मने समीपमें खड़े हुए राजा युधिष्ठिरसे कहा कि, हे पुत्र ! अब मैं अपने शरीरके रखनेकी इच्छा नहीं करताहूं । तुम पांचाल योद्धा और 'संजयों' के सहित अर्जुनको आगे करके शीघ्रही मेरे वधका यत्न करो । (११६) पांडव लोग शिखण्डीको आगे करके भीष्मको घेर कर चारों ओरसे विद्ध करने लगे । अर्जुन शिखण्डीको आगे कर भीष्मकी ओर दौड़े और उसने अपने बाणोंसे भीष्मका धनुष काट दिया । अर्जुनसे रक्षित शिखण्डीने भीष्मके सारथीको दस बाणोंसे विद्ध करके एक बाणसे उनके रथकी ध्वजाको काट डाला । भीष्मने अर्जुनके बाणोंसे विद्ध होकर फिर उनपर आक्रमण नहीं किया । अर्जुन कुरुसेनाको छितर बितर करने लगे । सौवीर, प्रतीच्य, मालव, अभीषह, शूरसेन, शिवि, वशाति, शाल्व, त्रिगर्त, अम्बष्ठ और केकय देशोंके शूर वीर योद्धाओंने अर्जुनके बाणोंसे पीडित होकर रणभूमिसे पलायन किया, अनन्तर बहुतसे शूर वीर योद्धा चारों ओरसे भीष्मके ऊपर बाणोंकी वृष्टि करने लगे । इसी भांति भीष्म अपराह्न-समयमें अर्जुनके तीक्ष्ण बाणोंसे क्षत विक्षत शरीर होकर पूर्वको शिर करके रथसे गिर पड़े । वह बाणोंसे व्याप्त हो रहे थे इसलिये पृथ्वी पर नहीं गिरे; सूर्यके उत्तरायण आनेकी प्रतीक्षा करते हुए प्राण धारण करके शर-शय्या पर शयन करने लगे । (११७) द्रोणाचार्यने भीष्मके गिरनेका समाचार सुनकर अपनी सेनाको युद्धसे निवृत्त होनेकी आज्ञा देदी । पाण्डवोंने भी अपने घुड़सवार दूतोंको भेजकर सैनिकको युद्धसे निवृत्त किया । अनन्तर सबोंने मिलकर भीष्मके निकट पहुँच

सानबार उनकी प्रदक्षिणा की। सम्पूर्ण वीरोंने भीष्मकी रक्षाका विधान करके अपने अपने शिविरोंमें प्रवेश किया। (११९) इसके उपरान्त कर्णने एकान्तमें भीष्मके निकट जाकर अपना नाम सुनाया। भीष्मने प्रीतिपूर्वक कर्णको आलिंगन किया और उनसे कहा कि हे पुत्र! तुम्हारे ऊपर मेरा कुछ भी द्वेष नहीं है। मैंने तुम्हारे तेज नाश करनेके लिये तुमको कठोर वचन कहा था। तुम विना कारणही पाण्डवोंकी निन्दा किया करते हो। इससे मैंने कुरु सभामें तुमको रूखा वचन सुनाया था। तुम कृष्ण और अर्जुनके समान वीर हो। पाण्डव-तुम्हारे सहोदर भाई हैं। तुम उनसे मिलो। ऐसा होनेसे लड़ाई वन्द होजायगी। पृथ्वीके सम्पूर्ण राजा जीवित बचकर अपने अपने गृहोंको जायँगे। कर्ण बोले हे पितामह! मैं दुर्योधनका ऐश्वर्य उपभोगकर रहा हूँ। मैंने उनके निकट जो कार्य स्वीकार किया है, उसको मिथ्या करनेका उत्साह नहीं करसकताहूँ। ऐसा सुन भीष्मने कर्णको युद्ध करनेकी आज्ञा दी। कर्णने रोदन करते हुए दुर्योधनके निकट प्रस्थान किया।

(७) द्रोणपर्व—(दूसरा अध्याय) कर्ण बोले, हे दुर्योधन! अव मुझको भीष्मके समान कुरु सेनाकी रक्षा करनी होगी। मैंने इसका भार अपने ऊपर लिया। (५ वाँ अध्याय) कर्णकी अनुमतिसे दुर्योधन आदि संपूर्ण राजाओंने द्रोणाचार्यको विधि-पूर्वक प्रधान सेनापति वनाया। (६) द्रोणाचार्यने (युद्ध आरंभके ११ वें दिन) विधि-पूर्वक व्यूह बनाकर युद्धके निमित्त प्रस्थान किया। उनके दहिनी ओर सिंधुराज, कलिंग राज, और धृतराष्ट्रपुत्र विकर्ण चले, जिनके पीछे शकुनीने घुड़सवारों और गांधारदेशीय वीरोंके सहित यात्रा की। कृपाचार्य, कृतवर्मा, चित्रसेन, विविशंती, दुःशासन आदि वीर-गण द्रोणाचार्यकी वाईं ओरके रक्षक हुए। उनके पीछे यवन और शक लोगों कांबोजराज सुदक्षिणको आगे करके अश्वारूढ़ होकर आगे वढ़े। मद्र, त्रिगर्त्त, अंवष्ठ, प्रतीच्य, उदीच्य, मालव, शिवि रोण, शूरसेन, मलद, सौवीर, कितव, प्राच्य और दक्षिणके राजा लोग कर्णके पृष्ठरक्षक होकर चलने लगे। कर्ण संपूर्ण धनुर्द्धारियोंके आगे गमन करने लगे। द्रोणाचार्यने सकटव्यूह रचा। राजा युधिष्ठिरने क्रौंचव्यूह वनाया। कृष्ण और अर्जुन रथ पर चढ़कर व्यूह-के सन्मुख चले। कौरवसेनाके आगे कर्ण और पांडवोंकी सेनाके आगे अर्जुन खड़े हुए। कौरव और पांडवोंकी सेनाका लोमहर्षण युद्ध आरंभ हुआ। असंख्य सैनिक मृत्युको प्राप्त होने लगे। (११ वाँ अध्याय) दुर्योधनने द्रोणाचार्यसे कहा कि हे आचार्य! आप राजा युधि-ष्ठिरको जीतेही पकड़ कर मेरे निकट लाइए। मैं फिर द्यूतके खेलमें वन गमनकी वाजी रख कर उनको पराजित करूंगा। पांडव लोग फिर वनमें जायंगे। मैं युधिष्ठिरके वध की इच्छा कभी नहीं करता हूं। द्रोणाचार्य वोले कि यदि अर्जुन युधिष्ठिरकी रक्षा नहीं करेंगे, तो मैं शीघ्रही युधिष्ठिरको तुम्हारे वसमें करदूंगा। (१२) इसके पश्चात् संग्रामभूमिमें असंख्य वीर मारे गए। (१५) संध्याकाल उपस्थित होने पर द्रोणाचार्यने अपनी सेनाको युद्धसे निवृत्त किया। कृष्ण और अर्जुनने शत्रुओंको छितर वितर करके अपने शिविरोंको प्रस्थान किया।

(१६ वाँ अध्याय) जब दोनों ओरकी सेना अपने अपने डेरोंमें उपस्थित हुईं, तव द्रोणाचार्यने कहा कि हे राजन् दुर्योधन! अर्जुनके रहने पर देवतालोग भी युधिष्ठिरको नहीं पकड़ सकेंगे। यदि तुम किसी उपायसे युधिष्ठिरके निकटसे अर्जुनको हटा सको, तो

राजा युधिष्ठिर तुम्हारे वशमें हो सकेंगे। द्रोणाचार्यके वचन सुनकर (युद्ध आरंभके बारहवें दिन त्रिगर्त्तराज पांचों भाई १०००० रथोंके सहित अर्जुनसे लड़नेके लिए तैयार हुए और मालव तथा तुंडिक देशीय योद्धागण ३०००० रथोंके सहित युद्ध करनेको उद्यत हुए। त्रिगर्त देशीय प्रस्थलाधिपति राजा सुशर्मा १०००० रथ, बहुतेरे योद्धा, तथा अपने भ्राताओंके सहित गमन करने लगे। अनंतर मुख्य मुख्य शूर वीरोंमेंसे १०००० रथी, संपूर्ण रथ सेनासे निकल कर इकट्ठे हुए। सबोंने शपथ की, कि हम लोग अर्जुनको विना पराजित किये हुए निवृत्त नहीं होंगे (शपथ करनेके कारण वे लोग संशप्तक कहलाए) इसके पश्चात् वे लोग अर्जुनको आवाहन करके युद्धमें प्रवृत हुए। जब अर्जुनने संशप्तकवीरोंसे लड़नेके लिये राजा युधिष्ठिरसे आज्ञा मांगी, तब राजाने कहा कि हे तात! द्रोणाचार्यने मुझको पकड़नेकी प्रतिज्ञा की है, जिससे उनका मनोरथ सिद्ध न हो सके, तुम उसका विधान करो। अर्जुन बोले, हे राजन्! आज तुम्हारी रक्षा सत्यजित करेंगे। यदि यह युद्धमें मारे जायँ, तो तुम रणभूमिसे भाग जाना। इसके अनन्तर अर्जुन राजा की आज्ञा लेकर त्रिगर्तराज की ओर दौड़े। (१७) संशप्तक वीरगण अर्द्धचंद्रव्यूह बनाकर युद्धमें प्रवृत्त हुए। बड़े युद्ध होनेके पश्चात् अर्जुनने त्रिगर्त्तराज पांचों भाइयोंको अपने बाणोंसे विद्ध कर सुधन्वाको मार डाला और जब वह उस सेनाका संहार करने लगे, तब संपूर्ण सेना चारों ओर भागने लगी। अनन्तर नारायणी और गोपाली सेनासे युक्त संशप्तक योद्धा लोग फिर लौटकर रणभूमिमें उपस्थित हुए। (१८) अर्जुनने त्वष्टाप्रजापतिके दिए हुए अस्त्रको शत्रुसेना पर चलाया, जिसके प्रभावसे युद्धभूमिमें अर्जुनके सहस्रों स्वरूप पृथक् पृथक् उत्पन्न हुए। संपूर्ण वीर अनेक अर्जुन देखकर अपनी सेनाके वीरोंकोही अर्जुन जानकर एक दूसरेका वध करने लगे और आपसमें एक दूसरेके शस्त्रोंसे मरकर पृथ्वीमें गिरने लगे। अर्जुनके त्वष्टास्त्रने सेनाके वीरोंको यमलोकमें पठा दिया। (१९) द्रोणाचार्यने (दूसरे दिन अर्थात् युद्धारंभके १२वें दिन) अपनी सेनाका गरुडव्यूह बनाकर प्रस्थान किया। युधिष्ठिरने अपनी सेनाका मण्डलार्द्धव्यूह बनाया। गरुडव्यूहके मुखके स्थान पर द्रोणाचार्य; मस्तकके स्थान पर अपने भाइयोंके सहित राजा दुर्योधन, नेत्रके स्थानों पर कृतवर्मा और कृपाचार्य; ग्रीवास्थान पर हाथी घोडे और रथोंसे युक्त होकर भूतशर्मा, क्षेत्रवर्मा. करकाक्ष, कलिंगयोद्धा, सिंहलदेशीय योद्धा, प्राच्य, शूद्र; आभीरक, दाशेरक' शक, यवन, कांबोज, शूरसेन, दरद, मद्र, और केकय देशीय योद्धागण, दहिने पक्षके स्थान पर अक्षौहिणी सेना सहित भूरिश्रवा, शल्य, सोमदत्त; और बाह्लीक; बाएँ पक्षके स्थान पर अश्वत्थामाको आगे करके अवंतिराज विंद और अनुविंद और कांबोजराज सुदक्षिण, पीठ-स्थान पर कलिंग, अंबष्ठ, मागध, पौंड, मद्रक, गांधार और प्राच्य पार्वतीय ओर वशाति-देशीय योद्धागण; पुच्छस्थल पर बन्धु, बांधव, पुत्र और नानादेशोंके राजाओंके सहित-कर्ण व्यूहके वक्षस्थल पर भीमरथ, संपाति, ऋषभ, जय, वृष, क्राथ, निषधराज इत्यादि योद्धागण स्थित हुए। प्राग्ज्योतिषके राजा भगदत्त अपने गजराजपर चढ़कर व्यूहके मध्यमें सुशोभित हुए। इसके पश्चात् संग्राम होने लगा। (२०) जब द्रोणाचार्य युधिष्ठिरको पकड़नेके लिये उनकी ओर बढ़ने लगे, तब सत्यजित, द्रोणाचार्यकी ओर दौड़े। अद्भुत युद्ध होनेके उपरांत द्रोणाचार्यने अर्द्धचन्द्र बाणसे पांचालवीर सत्यजितका सिर काट लिया। तब राजा युधिष्ठिर भयभीत होकर रणभूमिसे भाग चले। पांडवोंकी सेनाने राजाको बचाने के लिये द्रोणाचार्य

पर आक्रमण किया। भयानक संग्राम होने लगा। द्रोणाचार्यने शतानीकका सिर काट डाला। (२२) निम्नलिखित पांडवोंकी सेनाके वीर द्रोणके सन्मुख उपस्थित हुए; भीम, सात्यकी, युधामन्यु धृष्टद्युम्न, इसका पुत्र छत्रधर्मा, शिखण्डीका पुत्र छत्रदेव, नकुल, उत्तमौजा युधिष्ठिर, द्रुपद, विराट, शिखण्डी, विराटका पुत्र शंख, केकयराज पांचोंभाई, शिशुपालका पुत्र धृष्टकेतु शिखण्डीका पुत्र सहदेव, काशिराजका पुत्र विभु, भीमका पुत्र सुतसोम, नकुलका पुत्र शतानीक, द्रौपदीका पुत्र श्रतकर्मा, अभिमन्यु, युयुत्सु, सत्यधृति, वसुदान, कुंतिभोज, जरासंधका पुत्र सहदेव, सुधन्वा, कोशलराजका पुत्र सुछत्र. राजा नील, दंडकेतु पांडवराज इत्यादि; परंतु द्रोणाचार्य इन संपूर्ण वीरोंको अतिक्रमण करके अत्यंतही प्रकाशित हुए। (२५) राजा अंगने अपने हाथीको भीमकी ओर चलाया, जो अपने हाथीके सहित भीमद्वारा मारा गया। राजा भगदत्त गजारूढ़ हो भीमकी सेनाकी ओर दौड़े। भगदत्तके हाथियोंसे पांडवोंकी सेनाका विनाश होने लगा। वह तितर बितर होकर भागने लगी। (२६) जब अर्जुन हाथियोंकी चिल्लाहट सुनकर भगदत्तकी सेनाकी ओर चले, तब १४००० संशप्तक योद्धा जिनमें १०००० त्रिगर्त्तदेशीय महारथ और ४००० कृष्णके अनुयायी महारथी योद्धा थे, उनको युद्धके निमित्त आवाहन करने लगे। अर्जुन पीछे लौटकर लड़ने लगे। उन्होंने अन्तमें संपूर्ण संशप्तक वीरोंको परास्त किया। (२७) इसके पश्चात् वह कुरु सेनाका विनाश करते हुए भगदत्तके निकट पहुंचे। दोनों परस्पर लड़ने लगे। (२८) राजा भगदत्तने अर्जुनके ऊपर वैष्णवास्त्र छोड़ा। कृष्णने अर्जुनको छिपाकर अस्त्रको अपने वक्षस्थलपर ग्रहण किया और कहा कि हे अर्जुन! यह मेरा अस्त्र नरकासुरसे भगदत्तको मिलाथा। इन्द्र और रुद्रादि देवता भी इससे अवध्य नहीं हैं। इस समय पर्वतराज भगदत्त वैष्णवास्त्रसे रहित हो गयाहै। तुम इसको मारो। अर्जुनने भगदत्तके हाथीको मारनेके उपरांत भगदत्तको मार डाला। (२९) पश्चात् उन्होंने इन्द्रके प्रियमित्र राजा भगदत्तको मारकर उनकी प्रदक्षिणाकी और शकुनीके दो भाई वृषक और अचलको मार डाला। (३१) दिनभर युद्ध होनेके उपरांत सूर्यके अस्त होनेपर दोनों ओरकी सेना अत्यन्तही पीडित होकर अपने शिबिरों में गई।

(३२ वाँ अध्याय) द्रोणाचार्यने (युद्ध आरंभके दिनसे १३ वें दिन) कहा कि हे दुर्योधन! आज मैं एक प्रधान महारथीका वध करूंगा। तुम लोग किसी प्रकारसे अर्जुनको अन्यत्र लेजाओ। ऐसा सुन संशप्तक योद्धाओंने दक्षिण ओरसे युद्धके लिये अर्जुनको आवाहन किया। संशप्तक वीरोंके साथ अर्जुनका अपूर्व युद्ध होने लगा। (३३) द्रोणाचार्यने चक्रव्यूहकी रचना की। उस व्यूहमें सम्पूर्ण राजा वा राजपुत्रगण इकट्ठे हुए। व्यूहके मध्यस्थलमें कर्ण, कृपाचार्य और दुःशासन तथा सेना सहित राजा दुर्योधन स्थित हुए। मुखस्थलमें द्रोणाचार्य और जयद्रथ विराजमान हुए। जयद्रथकी दहिनी ओर अश्वत्थामाको आगे करके धृतराष्ट्रके ३० पुत्र और बाईं ओर शकुनी, शल्य और भूरिश्रवा स्थित हुए। (३४) पाण्डव लोग भीमसेनको आगे करके कौरव सेनाकी ओर दौड़े। सात्यकी, चेकितान, धृष्टद्युम्न, कुंतिभोज, द्रुपद, अर्जुनका पुत्र छत्रधर्मा, बृहच्छत्र, चेदिराज, धृष्टकेतु, नकुल, सहदेव, घटोत्कच, युधामन्यु, शिखण्डी, उत्तमौजा, विराट, द्रौपदीके पांचों पुत्र, शिशुपालपुत्र आदि पराक्रमी राजागण सहस्रों योद्धाओंके सहित द्रोणाचार्यकी ओर दौड़े। राजा युधिष्ठिरने अभिमन्युसे कहा कि हे तात! अर्जुन, कृष्ण, प्रद्युम्न और तुम यह चार पुरुषोंके अतिरिक्त और कोई योद्धा चक्रव्यूहके भेदन करनेमें समर्थ नहीं है। तुम अस्त्र ग्रहण करके द्रोणाचार्यकी सेनाका नाश करो,

जिसमें अर्जुन लौटकर हम लोगोंकी निन्दा न करसकें। अभिमन्यु वोले कि मैं द्रोणाचार्यका चक्रव्यूह भेदन करूंगा, परन्तु पिताने केवल उसे भेदन करनेहीकी युक्ति मुझे सिखाई है, व्यूहसे वाहर होनेका उपदेश मुझे नहीं दिया है, यदि वहां पर कोइ आपद उपस्थित होगी, तो मैं व्यूहके भीतरसे निकल नहीं सकूंगा। युधिष्ठिरने कहा कि तुम व्यूहको तोड़कर हम लोगोंके प्रवेश करनेका मार्ग वनादो, तुम जिस मार्गसे गमन करोगे, हमलोग भी उसही मार्गसे चलेंगे। भीमसेन वोले कि मैं धृष्टद्युम्न आदि योद्धाओंके सहित तुम्हारे पीछे पीछे चलूंगा और मुख्य मुख्य योद्धाओंका वध करके सम्पूर्ण सेनाका नाश करदूँगा। (३५) इसके पश्चात् अभिमन्युके रथके पीछे पाण्डवोंकी सेना चली। अभिमन्युने द्रोणाचार्यके सन्मुखहीमें व्यूह भेदकरके शत्रुसेनामें प्रवेश किया। दोनों ओरके योद्धा लोग एक दूसरेके ऊपर शस्त्रोंका प्रहार करने लगे। (४०) अभिमन्युने कर्णके कनिष्ठ भ्राताओंको मारडाला, (४६) कोशलराज वृहद्वलको प्राण रहित करदिया। (४७) मगधराजके पुत्रका वध करके अश्वकेतुको मारा और कौरवी सेनाको व्याकुल करदिया। कर्णने द्रोणाचार्यके उपदेशसे अभिमन्युका धनुष काटदिया। भोजने अभिमन्युके रथके चारों घोड़ोंको और कृपाचार्यने पृष्ठरक्षक योद्धाओं और सारथीको मारडाला। उसके उपरान्त वहां पर स्थित सम्पूर्ण महारथी योद्धा लोग धनुषरहित उस वालकके ऊपर वाणोंकी वर्षा करने लगे। तव अभिमन्यु तलवार ढाल ग्रहण करके रथसे कूदपड़े और रणभूमिमें चारों ओर भ्रमण करने लगे। जव द्रोणाचार्यने उसकी तलवार काटडाली और कर्णने कई एक वाणोंसे उसकी ढाल काट दी, तव अभिमन्यु चक्र ग्रहण करके द्रोणाचार्यकी ओर दौड़े (४८) जव सम्पूर्ण राजाओंने उसके चक्रको अपने अस्त्रोंसे काटदिया, तव उसने गदासे वहुतेरे योद्धाओंको मार गिराया। अनन्तर दुःशासनके पुत्रने अभिमन्युके शिरमें गदासे प्रहार किया, जिसकी चोटसे १६ वर्षकी अवस्थाके अभिमन्यु मृत्युको प्राप्त होकर पृथ्वीमें गिरगए। तव पाण्डवकी सेना रणभूमिसे भागने लगी। संध्या होजाने पर कौरवोंकी सेना अपने अपने डेरोंमें गई। पाण्डवोंकी सेना भी संग्रामसे निवृत्त हो अपने शिविरोंमें चली गई। (७०) अर्जुन संशप्तक वीरोंको मार जययुक्त होकर संध्याके समय अपने शिविरमें गये। (७१) राजा युधिष्ठिरने कहा कि हे अर्जुन! अभिमन्युने जिस मार्गसे द्रोणाचार्यके चक्रव्यूहमें प्रवेश किया, हम लोगोंने भी उसही मार्गसे व्यूहमें प्रवेश करनेकी इच्छा की, परन्तु सिंधुराज जयद्रथने किसी प्रकारसे हम लोगोंको व्यूहके भीतर जाने नहीं दिया। जव अभिमन्यु रथहीन होगए, तव दुःशासनके पुत्रने उनका प्राण हरण किया। ऐसा सुन अर्जुनने अनेक शपथ करके यह प्रतिज्ञा की कि कल्ह सवेरेसे सूर्यास्त पर्यंत, यदि मैं जयद्रथका वध न करूंगा, तो इसही स्थलपर अग्निमें प्रवेश करके प्राणत्याग कर दूंगा।

(८५ वाँ अध्याय) रात्रि व्यतीत होने पर (युद्ध आरंभके १४ वें दिन) प्रातःकालमें द्रोणाचार्यने राजा जयद्रथसे कहा कि तुम भूरिश्रवा, कर्ण, अश्वत्थामा, शल्य, वृषसेन, और कृपाचार्य इन ६ महारथियोंके सहित १००००० घुड़सवार ६०००० रथी, १४००० गजारोही और २१००० पैदल योद्धाओंको संग लेकर यहां से ६ कोस दूरपर जाकर सेनाके बीचमें निवास करो। राजा जयद्रथने ऐसाही किया। द्रोणाचार्यने अपनी चतुरंगिणी सेनाओं को यथायोग्य स्थानों में स्थित करते हुए अपनी विशाल सेनाका चक्र शकटव्यूह

बनाया, जिसकी लंबाई २४ कोसकी हुई । सेनाके आधे भागमें चक्रव्यूह बनाया, जिसका विस्तार तथा घेरा १० कोशका हुआ और चक्रव्यूहके बीचमें सूचीव्यूह निर्माण किया। द्रोणाचार्य महाव्यूह सज्जित करके संपूर्ण सेनाके आगे स्थित हुए । कृतवर्मा पद्मव्यूह अर्थात् चक्रव्यूहके भीतर और सूचीव्यूहके मुखस्थलपर विराजित हुए । उनके पीछे कांबोज और जलसंध खड़े हुए । उनके पश्चात् राज दुर्योधन स्थित हुए, जिनके बाद १००००० योद्धा खड़े हुए । सूचीव्यूहके चारोंओर से घेरकर सेनाका बड़ा दल खड़ा हुआ । उसके भीतर राजा जयद्रथ स्थित हुए । द्रोणाचार्य शकटव्यूहके मुखस्थलपर विराजे । कृतवर्मा पीछे खड़े होकर उनकी रक्षा करने लगे । (८६) नकुल के पुत्र शतानीक और पृथतके पुत्र धृष्टद्युम्नने पांडवों की सेनाका व्यूह बनाया । अर्जुन आदिक संपूर्ण पांडव सेनाओंके सहित रणभूमिमें उपस्थित हुए । दोनों ओरसे भयंकर संग्राम होने लगा । (९७) जब अवंतिराज विंद और अनुविंदने अर्जुनपर आक्रमण किया, तब बड़ा युद्ध होनेके उपरांत अर्जुनने उनको मार डाला । (१०१) अर्जुन जयद्रथ को देखकर उसके रक्षक दुर्योधन आदि वीरोंके साथ लड़ने लगे । (१०३) इधर अपराह्न समय में पांचाल योद्धाओंके संग कौरवों का तुमुल संग्राम हुआ । लोमहर्षण युद्ध होनेके उपरांत द्रोणाचार्यने चार बाणोंसे युधिष्ठिरके चारों घोड़ोंको मारकर एक बाणसे उनके धनुषको काट दिया । जब वह विरथ होगए तब द्रोणाचार्य उनको पकड़नेके लिये दौड़े । उस समय राजा युधिष्ठिर सहदेवके रथपर चढ़ रणभूमिसे भाग गये । (१०६) हिडम्बाके पुत्र घटोत्कच ने अलंबुष राक्षसको मार डाला । (११६) सात्यकीने राजपुत्र सुदर्शनका सिर काट डाला । (१२०) द्रोणाचार्यने व्यूहके द्वारपर पांचालसेनामें प्रवेश करके सैकड़ों सहस्रों योद्धाओंको भगाकर पांचालराजके पुत्र वीरकेतुको मार डाला । (१२३) इसके उपरांत उसने बृहत्क्षेत्र, चेदिराज, धृष्टकेतु, धृष्टकेतुके पुत्र, जरासंधके पुत्र और धृष्टद्युम्नके पुत्र छत्रवर्माको प्राण रहित करके गिरा दिया । उस समय ८५ वर्षके वृद्ध द्रोणाचार्य १६ वर्षके युवा पुरुषकी भांति रणभूमिमें भ्रमण करने लगे । (१२५) भीमसेनने द्रोणाचार्यको पराजित करके व्यूह में प्रवेश किया और धृतराष्ट्रके सुदर्शन आदि कई पुत्रों को मार डाला । (१२७) कर्णने भीमसेन को मूर्छित करदेने पर भी उनका वध नहीं किया, क्योंकि उन्होंने कुन्तीको वरदान दिया था, कि मैं अर्जुनके अतिरिक्त तुम्हारे चार पुत्रोंमें से किसीको नहीं मारूंगा । कर्णने भीमके गले में धनुष डालकर, उनसे कहा कि अरे पेटू मूर्ख ! तू केवल पेट पालनेही में वीरहै । तू कभी रणभूमिमें मेरे समान पुरुषोंसे युद्ध मत कर । जिस स्थान पर खाने, चाटने और पीने की नाना प्रकारकी वस्तु होय, तू उसी स्थान पर रहनेके योग्य है । अथवा तू मुनियोंके व्रतके अनुसार फल मूल भोजन करने वाला है । कर्णने ऐसे कठोर वचन कहकर कृष्ण और अर्जुनके सन्मुख ही भीमको छोड़ दिया । अर्जुनकर्णके ऊपर बाणोंकी वर्षा करने लगे । भीमसेन सात्यकीकी ओर चले गए । (१४०) सात्यकी और भूरिश्रवा परस्पर लड़कर दोनों विरथ होगए । भूरिश्रवाने सात्यकीको पटक कर एक हाथसे उसके केश पकड़ उसकी छाती में लात मारी । जब वह उसके सिर काटने की इच्छा करने लगे, तब कृष्णकी अनुमतिसे अर्जुनने भूरिश्रवाकी भुजा काट दी । (१४१) भूरिश्रवा अर्जुनकी निन्दा करते हुए सात्यकी को छोडकर बैठ गए । उन्होंने बांये हाथसे सम्पूर्ण अस्त्रोंको निकालकर रख दियां और सूर्यकी ओर दृष्टि करके मौनव्रत धारण करके

ब्रह्मका ध्यान किया। उस समय संपूर्ण योद्धागण कृष्ण और अर्जुनकी निंदा और भूरिश्रव की प्रशंसा करने लगे। सात्यकीने किसी का वचन न मानकर योगमें आसक्त भूरिश्रवाका सिर काट लिया। (१४४) अर्जुन कौरवोंकी सेनाको व्याकुलकर जयद्रथ की ओर दौड़े। उसने अश्वत्थामा आदि वीरोंको वाणोंसे विद्ध करके जयद्रथके सारथीका सिर काट लिया। उस समय श्रीकृष्णने सूर्यको अस्ताचल पर गमन करते हुए देख कर उनको छिपानेके लिये अपनी मायासे अन्धकार उत्पन्न किया। कौरवोंने समझा कि, सूर्य अस्त होगए। अब अर्जुन स्वयं प्राणत्याग करेंगे। संपूर्ण योद्धागण और राजा जयद्रथ अपना अपना सिर ऊंचा करके सूर्यकी ओर देखने लगे। कृष्णने अर्जुनसे कहा कि तुम्हारे निकटहीमें जयद्रथ सूर्यकी ओर देख रहा है। तुम उसका सिर काटलो। अर्जुनने कौरव सेनाके योद्धाओंको तितर बितर करके जयद्रथके रक्षक कर्ण, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, वृषसेन, शल्य और सुयोधनको अपने बाणोंके जालसे छिपादिया। कृष्ण बोले, हे अर्जुन! देखो सूर्य अस्त हुआ चाहते हैं। तुम इसी समय जयद्रथका सिर काटकर उसके पिताकी गोदमें गिरादो। उसके पिता वृद्धच्छत्रने ऐसा वर प्राप्त किया था; कि जो पुरुष जयद्रथका सिर पृथ्वीमें गिरावेगा, उसका सिर १०० टुकड़े होकर पृथ्वीमें गिर पड़ेगा। तब अर्जुनने बाण छोड़ा। वह दिव्यबाण जयद्रथके सिरको काटकर "समंतपंचक" के बाहरी भागमें, जहां वृद्धच्छत्र संध्योपासन कर रहे थे, पहुंचा। उसने सिरको उनकी गोदमें गिरादिया। ज्योंही वह भयभीत हो खड़े होने लगे, त्योंही उनकी गोदसे जयद्रथका सिर पृथ्वी पर गिरगया। उसी समय वृद्धच्छत्रका सिर भी १०० टुकड़े होकर पृथ्वीमें गिरा। इसप्रकारसे सिंधुराज जयद्रथ ८ अक्षौहिणी सेनाका विनाश कराके अर्जुनके बाणसे मारा गया।

(१५२ वाँ अध्याय) अत्यन्त भयंकरी रात्रिका समय उपस्थित हुआ। द्रोणाचार्यने १००० हाथी, १०००० रथी, ५०००० घोड़सवार और १ अर्बुद पैदल सेनाके योद्धाओंको छिन्न भिन्न करके पृथ्वीपर गिरा दिया (१५३) और धृष्टद्युम्नके पुत्रों और केकयदेशीय वीरोंको मारकर शिविराजका सिर काटडाला। भीमसेनने कलिंगराजके पुत्रको मारकर (१५५) कुरुवंशीय प्रतीपनंदन वाह्लीकको गदासे मारकर पृथ्वीमें गिरा दिया और धृत राष्ट्रके १० पुत्र और कर्णके भाई (अधिरथके पुत्र) वृषरथको मारडाला। राजा युधिष्ठिर क्रुद्ध होकर अंबष्ठ, मालव, त्रिगर्त, और शिविदेशीय योद्धाओंको वध करने लगे। उन्होंने अभिषाह, शूरसेन, वाह्लीक और वशातिदेशीय वीरोंको खण्ड खण्ड करके उनके रुधिरसे रणभूमिको पूरित करदिया और यौधेय, मालव तथा मद्रदेशीय वीरोंको मारडाला। (१६०) कौरव वंशीय वाह्लीक पुत्र सोमदत्त रणभूमिमें अपना बृहत् पराक्रम दिखलाकर सात्यकीके हाथसे मारागया। (१५६) अंधकार और धूलिसे संपूर्ण रणभूमि और आकाशपूर्ण होगया। उस समय योद्धा लोग एक दूसरेको नहीं देख सकते थे। वे लोग केवल अपने नामको सुनाते हुए अनुमानसे ही घोर युद्ध करनेलगे। उस रात्रिमें असंख्य वीर मरने लगे। राजा दुर्योधन और पांडवोंके पैदल चलनेवाले वीरोंने जलते हुए लुका, दीप, तथा मसाल ग्रहण किये। इसी भांति प्रत्येक हाथियों पर सात सात, रथों पर दस दस और घोड़े पर दो दो दीप जलाए गए। (१६५) कर्णने सहदेवको विरथ करके पकड़ लिया और उनको धनुषके अग्रभागसे पीड़ित करके उनसे कहा कि हे माद्रीपुत्र! तुम अर्जुनके निकट अथवा अपने

घरको चले जाओ। कर्णने कुन्तीको वरदान दिया था, उसको स्मरण करके सहदेवको छोड़ दिया। मद्रराज शल्यने विराटको विरथ करके उनके भाई शतानीकको मारडाला। विराट अपने भाईके रथपर चढगए। (१७७) कर्णने अपनी शक्तिसे (जिसको उन्होंने अभेद्य कवच कुण्डलके बदलेमें इंद्रसे पाया था और उसको अर्जुनके वधके लिये कई वर्षोंसे रक्खा था) घटोत्कचका वध किया (१७८) दोनों ओरके योद्धावीरगण जब युद्धके परिश्रमसे थककर अर्द्धरात्रिके समय निद्रावश होगए, तब अर्जुन बोले कि दोनों ओर योद्धालोग थोडी-देरके लिये रणभूमिमें सो जावें। चन्द्रमाके उदयहोने पर फिर युद्ध आरम्भ होगा। दोनों सेना युद्धसे निवृत्त होकर सुखपूर्वक सो गई। चन्द्रमाके उदय होने पर संपूर्ण योद्धा जागकर सावधान होगए। जब रात्रिके ३ भाग व्यतीत होकर एक भाग बाकी था, दोनों ओरके योद्धागण फिर हर्षित होकर घोर संग्राम करने लगे। उसके पश्चात् भोर हुआ।

(युद्ध आरंभके दिनसे १५ वें दिन) द्रोणाचार्यने राजा द्रुपदके ३ पौत्रोंको और द्रुपद तथा राजा विराटको मारडाला। (१८८ वाँ अध्याय) श्रीकृष्णने पांडवोंको द्रोणाचार्यके बाणोंसे पीड़ित और भयभीत देखकर अर्जुन आदि पांडवोंसे कहा, कि यदि द्रोणाचार्य हाथमें धनुषग्रहण करके रणभूमिमें स्थित रहें, तो इंद्रादि देवता भी उनको नहीं जीत सकेंगे, परन्तु अस्त्र रहित होने पर सामान्य पुरुष भी उनको मार सकेगा। अश्वत्थामाकी मृत्यु सुनने पर वह युद्ध त्याग देंगे। कोई पुरुष उनके निकट जाकरके अश्वत्थामाका वध उनको सुनावे। उस समय अर्जुनने किसी प्रकारसे कृष्णका वचन स्वीकार नहीं किया, परन्तु दूसरे सम्पूर्ण योद्धाओंने और अत्यन्त कष्टसे राजा युधिष्ठिरने भी कृष्णके वचनको स्वीकार किया। उसी समय भीमसेनने मालवदेशीय राजा इंद्रवर्माके अश्वत्थामा नामक हाथीको गदासे मारडाला और द्रोणाचार्यके निकट जाकर "अश्वत्थामा मारेगए" ऐसा वचन कहके वह ऊँचे स्वरसे सिंहनाद करने लगा। द्रोणाचार्य यह अप्रिय वचन सुनकर मनही मन शोकित हुए, परन्तु अपने पुत्रका पराक्रम विचारकर धैर्य्यरहित नहीं हुए। (१८९) उस समय विश्वामित्र, जमदग्नि, भरद्वाज, गौतम, वशिष्ठ, कश्यप आदि ऋषिगण द्रोणाचार्यको क्षत्रिय पुरुषोंके नाशमें प्रवृत्त देखकर अग्निको आगे करके उनके निकट उपस्थित हुए और बोले कि हे द्रोण! तुम वेदवेदांगके जाननेवाले हो विशेष करके सत्य धर्ममें रत ब्राह्मण हो; यह युद्धका क्रूरकर्म तुम्हारे करने योग्य नहीं है। मनुष्यलोकमें तुम्हारे निवास करनेका समय पूर्ण होगया; इसलिये अब अस्त्र त्यागकरके सत्यपथमें स्थित होजाओ। द्रोणाचार्यने ऋषियोंका उपदेश और भीमसेनके पूर्वोक्त वचनोंको सुनकर युद्धसे अपना मन हटालिया और युधिष्ठिरको पुकारकर पूछा कि हे युधिष्ठिर! मेरा पुत्र अश्वत्थामा जीवित है, अथवा मारागया। उनको यह निश्चय था, कि युधिष्ठिर कदापि मिथ्या वचन नहीं कहेंगे। उस समय कृष्णने युधिष्ठिरसे कहा कि हे महाराज! यदि द्रोणाचार्य अर्द्ध दिवस और युद्ध करेंगे, तो तुम्हारी सम्पूर्ण सेनाके योद्धाओंका नाश करदेंगे, इस लिये द्रोणाचार्यसे अपने परित्राण करनेके लिये तुमको सत्यकी अपेक्षा मिथ्या वचन बोलना कल्याणकारी है। प्राण-रक्षा करनेके लिये मिथ्यावचन बोलनेसे पाप नहीं लगता है। उस समय युधिष्ठिरने मनमें हाथी कहकर प्रकटमें "अश्वत्थामा मारे गये" ऐसा वचन कहा। प्रथम राजा युधिष्ठिरके रथके पहिये पृथ्वीसे चार अंगुल ऊपर उठे रहते थे, परन्तु इस समय मिथ्या व्यवहार करनेके

कारण उनके रथके पीहिये भूमिपर चलने लगे। द्रोणाचार्यने युधिष्ठिरके मुखसे पुत्रवध सुनकर जीनेकी आज्ञा छोड़ दी। (१९०) वह चार दिन और एक रात्रि लगातार अपने बाणोंको चलाकर पांचवें दिनके प्रथम प्रहरमें पुत्रशोकसे दुःखित और व्यग्रताके कारण अपने दिव्य अस्त्रोंको भूल गए। उसी समय भीमसेनने द्रोणाचार्यके रथको पकड़कर कहा कि हे ब्राह्मण! तुम जिसका मुख देखकर जीवन धारण करते हो, वही अश्वत्थामा मरकर आज पृथ्वी पर शयन करते हैं। तुम धर्मराजके कहे हुए वचनमें जरा भी सन्देह मत करो। तब द्रोणाचार्य अश्वत्थामाका नाम लेकर ऊँचे स्वरसे रोदन करने लगे और शस्त्र परित्याग कर रथमें बैठ योग युक्त पुरुषकी भांति परमेश्वरके ध्यानमें रत हुए। धृष्टद्युम्न तलवार ग्रहण करके रथसे कूदकर द्रोणाचार्यकी ओर दौड़ा। उस समय सम्पूर्ण प्राणी "धिक्कार है धिक्कार है" ऐसा वचन कहकर हाहाकार करने लगे। द्रोणाचार्य परम शान्त भाव अवलंबन करके योगबलसे तेजोमय रूप धारणकर ब्रह्मलोकमें चले गए। उस समय केवल संजय, अर्जुन, कृपाचार्य, कृष्ण और युधिष्ठिरने उनका दर्शन किया। दूसरा कोई पुरुष जाननेमें समर्थ नहीं हुआ। धृष्टद्युम्नने प्राण रहित शरीर बाद द्रोणाचार्यके केशको ग्रहण कर तलवारसे उनका शिर काट डाला। उस समय द्रोणाचार्यकी अवस्था ८५ वर्षकी थी। उनके केश पक गये थे। (१९७) द्रोणाचार्यके पुत्र अश्वत्थामा शत्रुसेनाके योद्धाओंका विनाश करने लगे। जब उनने पाण्डव और पाञ्चालसेनाको लक्ष्य करके नारायण अस्त्र चलाया, तब उससे सहस्रों भांतिके भयंकर सहस्रों तथा लक्षों बाण प्रकट होने लगे। नारायण अस्त्रके प्रभावसे शत्रुसेना भस्म होने लगी। उस समय कृष्ण भगवान् पाण्डवोंकी सेनाके पुरुषोंसे बोले, कि तुम लोग शीघ्रही अस्त्र शस्त्र परित्याग करके युद्धसे निवृत्त हो जाओ। जो लोग अपने वाहनोंसे उतर कर अस्त्र परित्याग करेंगे; उनको यह अस्त्र वध नहीं करेगा। पांडवोंकी ओरके संपूर्ण योद्धाओंने अस्त्र शस्त्र परित्याग किया, परन्तु भीम इस बातको न मानकर रथारूढ़ होकर अश्वत्थामाकी ओर दौड़े। अश्वत्थामाने नारायण अस्त्रके प्रभावसे बाणोंकी वर्षा कर उनको छिपा दिया। (१९८) जब कृष्ण और अर्जुनने भीमसेनको बल पूर्वक अस्त्र शस्त्रोंसे रहित करके रथसे उतार कर उनको पृथ्वी पर स्थित कर दिया, तब नारायणअस्त्र शान्त होगया। फिर युद्ध आरम्भ हुआ। अश्वत्थामाने मालवराज सुदर्शन, वृद्धक्षत्र और चेदिराजको रणभूमिमें मारडाला। (२०१) द्रोणाचार्यने ५ दिन पर्यन्त महा भयंकर युद्ध किया था।

(८) कर्ण-पर्व—(१० वाँ अध्याय) जब द्रोणाचार्यकी मृत्यु होने पर कौरवोंकी बड़ी सेना इधर उधर भागने लगी, तब राजा दुर्योधनने बहुत यत्नसे अपनी सेनाको स्थिर किया, और बहुत समय तक युद्ध करके सन्ध्या समय अपनी सेनाको लौटाया। राजा दुर्योधननें अश्वत्थामाकी अनुमतिसे कर्णको प्रधान सेनापति बनाया। सम्पूर्ण राजाओंने कर्णका अभिषेक किया।

(११ वाँ अध्याय) महा धनुषधारी कर्णने (युद्ध आरम्भके १६ वें दिन) मकरव्यूह बनाया। व्यूहके मुखस्थानमें विकर्णका पुत्र; नेत्रोंके स्थानमें शकुनी और उलूक, शिरके स्थानमें अश्वत्थामा; गलेमें धृतराष्ट्रके सब पुत्र; पेटके स्थानमें बहुत सेना सहित राजा दुर्योधन; बाएँ चरणके स्थानमें ग्वालियोंके सहित कृतवर्मा; दहिने चरणके स्थानमें त्रिगर्त्तदेशीय क्षत्रियगण और दक्षिणी वीरोंके साथ कृपाचार्य; बाएँ चरणके निकट मद्रदेशकी महा सेनाके

सहित राजा शल्य, दहिने चरणके समीप ३०० हाथी और १००० रथोंके सहित सुषेण और व्यूहके बाईं 'कोख' में बड़ी सेना समेत चित्र और चित्रसेन दोनों भाई स्थित हुए। इधर अर्जुनने अपनी सेनाका अर्द्धचन्द्र व्यूह बनाया, जिसके बाईं ओर भीमसेन; दहिनी ओर धृष्टद्युम्न; मध्यमें अर्जुन; नकुल और सहदेव और पीछे राजा युधिष्ठिर खड़े हुए। इसके पश्चात् दोनों ओरके बीर लडने लगे। (१३) सात्यकीने केकयदेशके राजाको मार डाला। (२०) पांड्यदेशके राजाने कौरवदलके वाह्लीक, पुलिंद, खस, निषाद, अन्धक और कुंतलदेशके बीरोंको तथा दक्षिणी और भोजदेशके क्षत्रियोंको प्राणरहित करके गिरा दिया। अश्वत्थामा पांड्यदेशके राजा मलयध्वजसे लड़ने लगे। राजा मलयध्वज बड़ा पराक्रम दिखाकर अश्वत्थामाके हाथसे मारे गए। (२२) राजा दुर्योधनकी आज्ञासे अंग, बंग, मगध और ताम्रदेशके राजयुद्ध जाननेवालोंने धृष्टद्युम्नको चारोंओरसे घेर लिया। मेकल, कोशल, मद्र; दशार्ण, निषध और कलिंगदेशके क्षत्रियोंके सहित अनेक वीर धृष्टद्युम्नसे युद्ध करने लगे। सात्यकीने अंगदेशके बीरको मारडाला। नकुलने अंगदेशके राजाका शिर काटलिया। मेकल, उत्कल, कलिंग, निषध और ताम्रलिप्तदेशके वीरगण नकुलके ऊपर बाण और तोमर बर्षाने लगे। कर्ण आकर नकुलसे युद्ध करने लगे। जब नकुल कर्णके बाणोंसे पीडित होकर भागे; तब कर्णने उनको पकड़कर उनके गलेमें अपना धनुष डाल दिया और ऐसा कहा कि हे नकुल! तुम बलवान् कौरवोंके साथ कभी युद्ध मत करो, अपने गृहको तथा कृष्ण अर्जुनके समीप चले जाओ। धर्मात्मा कर्णने कुंतीके वचन स्मरण करके नकुलको जीताही छोड़ दिया। नकुल स्वांस लेते हुए युधिष्ठिरके रथपर जा चढ़े। मध्याह्न समयमें कर्ण "चाक" के समान सेनामें घूमकर वीरोंको मारने लगे। (३०) सूर्यास्त होनेके समय दोनों ओरके सेनापतिओंने अपनी अपनी सेनाओंको डेरोंमें जानेकी आज्ञा दी उसदिन पांडवोंने अपनी जीत समझी।

(३१ वां अध्याय) कर्ण दुर्योधनसे बोले कि हे राजन्! जैसे अर्जुनका गांडीव धनुष है वैसेही मेराभी विजय धनुष है। मैं इस धनुषके कारण अर्जुनसे श्रेष्ठ हूं; परन्तु अर्जुनका सारथी जैसा कृष्ण है; वैसा हमारा सारथी नहीं है। राजा शल्य कृष्णके समान घोड़ा हांकना जानते हैं। शल्य हमारे सारथी बनैं और गिद्धपंख लगे हुए बाणोंसे भरे हुए "छकड़े" हमारे संग रहें, तब अवश्य आपका विजय होगा। (३२) राजा दुर्योधनने राजा शल्यके निकट जाकर विनयपूर्वक कहा कि हे मद्रराज! हमारे कल्याणके लिये आप कर्णके सारथी बनिये। ऐसा वचन सुन शल्य क्रोधसे युक्त होकर दुर्योधनको डपट कर बोले, कि हे गान्धारीपुत्र! तुम मुझको नीच राधापुत्रके रथ हांकनेको कहते हो; सूतजाति ब्राह्मण और क्षत्रियोंकी सेवक हैं, उनको उचित है कि हमारी स्तुति करें। इसके उपरांत जब दुर्योधनने बहुत विनीत भावसे राजा शल्यको समझाया; तब उन्होंने कहा कि अच्छा हम कर्णके सारथी बनेंगे, परन्तु मैं कर्णके साथ एक प्रतिज्ञा कर लेता हूं, कि मेरी जो इच्छा होगी वह कर्णको कहूँगा। वह उसका उत्तर नहीं दे सकेगा। कर्णने शल्यकी बात स्वीकारकी।

(३७ वां अध्याय) कर्ण (युद्ध आरम्भसे १७ वें दिन) अपने रथमें बैठकर क्रोध और अहंकारसे युक्त हो अपने सारथी राजा शल्यसे अपनी प्रशंसा करनेलगे। शल्य बोले कि रे कर्ण! तू चुपरह, भला कहां पुरुषसिंह अर्जुन और कहां अधम तू। यदि आज नहीं भागेगा, तो यहांही रह जायगा। (३८) कर्ण बोले; आज हमको जो कोई अर्जुनको दिखलावैगा, म

उसको इच्छानुसार धन दूंगा । इसीप्रकारकी अनेक बातें कहकर उसने अपना शंख बजाया । (३९) राजा शल्य बाले हे सूतपुत्र ! तुम जन्महीसे कुबेरके समान दानी हो, परन्तु अब तुम बिना दानही अर्जुनको देखलोगे । तुम्हारा अब काल आगया है; इसी कारणसे तुम मूर्खके समान बातें करते हो । यदि तु अपना कल्याण चाहते हो, तो अपने संग अनेक योद्धाओंको लेकर अर्जुनसे युद्ध करो । तुम शृगालके समान हो और अर्जुन सिंहके तुल्य हैं । (४०) ऐसा सुन कर्णको बड़ा क्रोध हुआ । वह बोले-कि हे शल्य ! तुम- मूर्ख हो, महायुद्धोंकी विद्या नहीं जानते हो । रे पापबुद्धे क्षत्रियाधम ! आज मैं कृष्ण और अर्जुनको मारकर तुझे भी मारूंगा । तू ऊपरसे मित्र और भीतरसे हमारा शत्रु ह । मद्रदेशके मनुष्य मद्य पीनेवाले, कृतघ्न, विश्वासघाती और दुष्ट होते हैं । मद्रदेशीय मनुष्य गांधारदेशियोंके समान अपवित्र रहते हैं । मद्रसिंधु और सुवीरदेशके मनुष्य पापियोंमें श्रेष्ठ हैं । (४३) हमने प्रथम तुम्हारे कठोर वचन सहनेकी प्रतिज्ञा की है, इसीसे तुम अबतक जीते हो । (४५) राजा दुर्योधनने जब दोनोंको शांत किया; तब कर्णने हँसकर शल्यसे कहा कि, (४६) रथ हांको कौरवोंके दहिने व्यूहके पक्षमें कृपाचार्य, मागध और कृतवर्मा खड़े हुए । उसके निकट शकुनी और उलूक घुड़चढ़ बीरोंके सहित स्थित होकर सेनाकी रक्षा करने लगे । उनके समीप गांधारदेशकी सेना और पिशाचगण खड़े हुए । बांए पक्षमें १४००० संशप्तक बीर और धृतराष्ट्रके अनेक पुत्र स्थित हुए । उसके निकट कांबोज, शक और यवनसेना खड़ी हुई । व्यूहके मुखके स्थानमें कर्ण खड़े हुए । सेनाके पिछले भागमें अनेक वीरोंके सहित दुःशासन स्थित हुए । इनकी रक्षा करनेके लिये राजा दुर्योधन खड़े हुए । मद्र और केकय-देशीय वीर इनकी रक्षा करने लगे । इस भांति बारहस्पति व्यूह तैयार हुआ । दूसरी ओर अर्जुनने अपनी सेनाका व्यूह बनाया, जिसके मुखस्थानमें सेनापति धृष्टद्युम्न खड़े हुए । द्रौपदीके पांचों पुत्र उनकी रक्षा करने लगे । दोनों ओरके वीर लड़ने लगे । (४९) कर्णने रणभूमिमें राजा युधिष्ठिरको परास्त किया । जब राजा भाग चले, तब कर्ण अपने रथसे उतरकर अपने शरीरको पवित्र करनेके लिये राजाका कन्धा हाथसे छूने लगे और उनकी ऐसी भी इच्छा हुई; कि राजाको पकड़ लेजाऊं । उस समय शल्यने पुकारकर कहा, कि यदि तुम राजाको छुओगे तो; वह तुमको भस्म कर देंगे । तब कर्ण बोले; हे कुंतीपुत्र ! तुम क्षत्रिय धर्ममें स्थित होकर भी प्राणोंके भयसे युद्ध छोडकर भागे । तुम क्षत्रिय धर्ममें निपुण नहीं हो । तुम कौरवोंसे युद्ध करनेकी इच्छा कभी मत करो । हमलोगोंसे युद्ध कर-नेमें यही दशा होती है । तुम अपने गृहको अथवा कृष्ण अर्जुनके निकट चले जाओ । कर्ण तुमको कदापि नहीं मारेंगे । ऐसा कह उसने युधिष्ठिरको छोड दिया । राजा युधिष्ठिर लज्जित होकर चले गए । चेदी और पंचालदेशके क्षत्रिय पांडवोंके सहित भागे परन्तु भीमसेन आदि महारथ कौरवोंसे युद्ध करने लगे । (५०) कर्ण भीमसेनके बाणसे मूर्छा खाकर रथमें गिर पड़े । तब शल्यने रथको युद्धसे हटा लिया । (५१)जब भीमसेनने धृतराष्ट्रके अनेक पुत्रोंको मारडाला, तब कर्णने फिर आकर भीमसेनको विरथ कर दिया । (५४) कृपाचार्यने सुकेतुका सिर काटलिया । (६३) कर्णने राजा युधिष्ठिर और नकुलको विरथ करदिया । तब दोनों भाई व्याकुल होकर सहदेवके रथपर चढ़ गए । मद्रराज शल्य अपने भांजोंको रथहीन और घावोंसे व्याकुल देख दयासे भरकर कर्णसे बोले, कि तुमने

कहा था कि आज अर्जुनसे लड़ेंगे, तब युधिष्ठिरसे क्यों लड़ते हो। कर्ण शल्यके ऐसे अनेक वचनको सुन और भीमके बाणोंसे राजा दुर्योधनको व्याकुल देख कर नकुल, सहदेव और युधिष्ठिरको परित्यागकर दुर्योधनकी रक्षाके लिये दौड़े। राजा युधिष्ठिर नकुल और सहदेवके सहित लज्जित और घावोंसे व्याकुल होकर डेरोंमें चले गए और वहां पलंगपर लेट रहे। नकुल और सहदेव रथारूढ़ होकर भीमकी रक्षाके लिए गए। (६५) अर्जुन युद्धका भार भीमसेनपर छोड़कर राजा युधिष्ठिरको देखनेके लिये डेरे पर आए। युधिष्ठिरने समुझलिया था, कि अर्जुनने कर्णको मारडाला। (६८) पीछे जब उन्होंने सुना, कि कर्ण अभी जीवित है, तब कर्णके बाणोंसे व्याकुल, वह क्रोध करके बोले कि हे अर्जुन! जब तुम कर्णको नहीं मारसके, तब भीमको अकेला छोड़ कर्णके डरसे हमारे पास भाग आए हो तुमने कुन्तीके गर्भमें वृथाही जन्म लिया। तुम गांडीवधनुष लेकर और कृष्णको सारथी बनाकर भी कर्णसे डरकर भाग आए। अब तुम यह धनुष कृष्णको दो और तुम घोड़ोंको हांको; अथवा जो तुमसे अधिक शस्त्रविद्या जानता हो, उसी राजाको अपना गांडीवधनुष देदो। (६९) अर्जुनने ऐसा वचन सुन क्रोधकर युधिष्ठिरके मारनेके लिए खड्ग उठाया। तब कृष्णने अर्जुनको निवारण किया और ऐसा क्रोध करनेका कारण पूछा। अर्जुनने कृष्णसे कहा, कि मेरी यह प्रतिज्ञा है, कि जो मुझसे कहेगा कि अपना धनुष दूसरेको देदो मैं उसका सिर काट लूंगा। इसलिये मैं आज राजाका सिर काटकर अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करूंगा। (७०) जब कृष्णने बहुत समझाया और इतिहास कह सुनाया, तब अर्जुनने शांत होकर अपनी भूल स्वीकार की। कृष्णने अर्जुनका अपराध राजासे क्षमा करवाया। (७३) इसके पश्चात् कृष्ण बोले कि हे अर्जुन! युद्ध होते आज १७ दिन होगए। अब तुम्हारी सेना बहुत थोड़ी बची है। पहले कौरवोंके संग बहुत हाथी, घोड़े और रथथे, परन्तु अब तुमने उनको नष्ट करदिया; अब उधर केवल पांच महारथी शेष रहे हैं; अश्वत्थामा, कृतवर्मा, शल्य, कर्ण और कृपाचार्य। हे अर्जुन! यदि तुम अश्वत्थामाको गुरुपुत्र और कृपाचार्यको गुरु जानकर उनपर कृपा करो तो अपनी माताके सम्बन्ध समुझकर कृतवर्माको भी मत मारना। (७४) इसके पश्चात् अर्जुन युद्ध करनेके लिये भीमके समीप गए। (७५) उत्तमौजाने कर्णके पुत्र सुषेणका सिर काट डाला। (८३) दुःशासन और भीमका लोमहर्षण संग्राम होने लगा। अन्तमें भीमकी गदाकी चोटसे दुःशासन पृथ्वीमें गिर पड़े! भीमसेनने सभामें द्रौपदीके दुःख देनेकी बात स्मरण करके दुःशासनका हाथ उखाड़ लिया और फिर अपनी प्रतिज्ञा सत्य करनेके लिये उसकी छाती चीरकर उसका गरम रुधिर पीलिया। इसके उपरान्त उसने दुःशासनका सिर काट डाला। भीमको रुधिर पीते देखकर सब क्षत्रिय कहने लगे कि भीमसेन राक्षस है। फिर भीमने दुःशासनके दस भाइयोंके सिर काटडाले। (९०) कर्ण और अर्जुन दोनों वीरोंने अपने बाणोंसे आकाश पूर्ण कर दिया। परस्पर दोनों योद्धा विस्मयदायक संग्राम करने लगे। जब कर्णकी मृत्युका समय आया; तब पृथ्वीने "अचानक" कर्णके रथका चक्र पकड़लिया। कर्णने परशुरामसे जो बाण सीखा था; उसको उस समय वह भूल गए। शापके कारण कर्णका रथ कुंठित होगया। कर्ण क्रोधमें भरकर हाथ पटकने लगे, तथा अर्जुनके बाणोंसे व्याकुल होकर कांपने लगे, परन्तु साहस करके वह लड़ते थे। उसके उपरान्त पृथ्वीने कर्णके रथके दूसरे पहिएको भी पकड़लिया तब कर्ण रथसे नीचे

उत्तर हाथसे रथके पहिएको उठाने लगे और अर्जुनसे बोले कि जबतक मैं पहिएको न निकाल लूं, तबतक तुम वाण मत छोड़ो। ऐसी अवस्थामें वीर शस्त्र नहीं चलाते हैं। (९१) कृष्ण बोले हे कर्ण! तुम्हारे समान नीच मनुष्य आपत्तिहीमें धर्मका स्मरण करते हैं। जिस समय तुम दुःशासन, दुर्योधन और शकुनीने एकवस्त्रवाली द्रौपदीको सभामें बुलाया था, तब तुमने धर्म नहीं समझा। जब रजस्वला द्रौपदीको देखकर तुम हंसे थे, तब तुम्हारा धर्म कहां गया था। कर्णने लज्जासे नीचे मुख कर लिया। इसके पश्चात् वह धनुष उठाकर घोर युद्ध करने लगे। कर्ण युद्ध करते थे और अवकाश पाकर पृथ्वीसे रथके पहिए को भी उठानेका यत्न करते थे। जब कर्ण रथका चक्र उठा रहे थे; तब दिनके चौथे पहर में अर्जुनने अपने वाणसे कर्ण का सिर काट लिया। मद्रराज शल्य रथको लेकर अपने डेरों में चले गए। (९५) सेनापति अपनी २ बचीहुई सेना लेकर अपने २ डेरों में गए और (९६) पांडवी सेना भी अपने अपने शिविरों में गई।

(९) शल्यपर्व–(६ वाँ अध्याय) दुर्योधन ने अश्वत्थामासे पूछा कि हे गुरुपुत्र! अब मैं किसको अपना सेनापति बनाऊं। अश्वत्थामा बोले कि हे राजन्! आप राजा शल्य को सेनापति बनाइए। यह बड़े कृतज्ञ हैं, क्योंकि अपने भांजों को छोड़कर हमारी ओर लड़ते हैं। (७) राजा दुर्योधनने शास्त्रविधिके अनुसार राजा शल्य का अभिषेक किया। (८) शल्य (युद्ध आरंभके दिनके १८ वें दिन) सर्वतोभद्रव्यूह बनाकर सिन्धुदेशके घोड़ों से युक्त रथपर बैठ युद्ध करने चले। कर्णके पुत्रगण और मद्रदेशके प्रधान क्षत्रियोंके सहित राजा शल्य व्यूहके मुखके स्थान में खड़े होगये। बाईं ओर त्रिगर्तदेशके क्षत्रियों के सहित कृतवर्मा, दहिनीं ओर शक और यवनवीरोंके सहित कृपाचार्य; पीछे की ओर कांबोजदेशीय वीरोंके सहित अश्वत्थामा और व्यूहके मध्यमें प्रधान कुरुवंशीय क्षत्रियोंसे रक्षित होकर राजा दुर्योधन स्थित हुए। शकुनी घुड़चढ़ी सेनाको लेकर अलगही युद्ध करने चला। पांडवोंने अपना व्यूह बनाकर सेनाके ३ भाग किए। पहिले भाग में धृष्टद्युम्न, शिखण्डी और सात्यकी; दूसरे भाग में अपने प्रधान वीरोंके सहित राजा युधिष्ठिर और तीसरे में अर्जुन आदि दूसरे वीरगण खड़े हुए। उस समय निम्न लिखित सेना बची थी; कौरवोंकी ओर ११००० रथ, १०७०० हाथी, २००००० घुड़चढ़े और ३०००००००पैदल और पांडवों की ओर ६००० रथ ६००० हाथी, १०००० घुड़चढ़े और १०००००००पैदल! दोनों सेना लड़ने लगीं। (१०) नकुलने चित्रसेन आदि कर्णके पुत्रोंको मारडाला। (पांडवों की असंख्य सेना नष्ट करके) (१७) मद्रराज शल्य राजा युधिष्ठिरकी शक्तिसे मरकर भूमिमें गिर पड़े। उसके उपरांत युधिष्ठिरने शल्यके छोटे भाई को भी मारडाला। (१९) सात्यकीने म्लेच्छदेशके राजा शाल्वका शिर काट लिया। (२७) अर्जुनने कृष्णजीसे कहा कि अब कौरवोंकी ओर शकुनीके संगके ५०० घुडसवार २०० रथ, १०० हाथी और ३००० पैदल बचे हैं और प्रधानों में अश्वत्थामा, कृपाचार्य, त्रिगर्तदेशके राजा सुशर्मा, उलूक, शकुनी और कृतवर्मा शेष रह गए हैं। इसके उपरांत अर्जुनने सुशर्माको और भीमने सुदर्शन आदि वीरोंको मार डाला। (२८) कौरवोंकी थोड़ी सेना देखकर पांडवों की सेनाके वीर प्रसन्न होकर शत्रुओंका विनाश करने लगे। सहदेवने उलूकको मारडाला। शकुनी अपने पुत्रको मरा हुआ देखकर सहदेवसे युद्ध करने लगा, जो अन्तमें सहदेवके वाणसे मारा गया। (२९

अर्जुनने शकुनीके संगके घुड़सवारोंको मारकर पृथ्वीमें गिरा दिया। दुर्योधनकी आज्ञासे कौरवों की बची हुई चतुरंगिणी सेना लड़नेके लिये चली, परन्तु उसके संग कोई प्रधान नहीं था, इस कारणसे व्यूह नहीं बनसका। पांडवोंकी सेनाके थोड़े वीरोंने निकलकर क्षणभरमें इन सबको मारडाला। उस समय पांडवों की सेना में २००० रथ, ७०० हाथी, ५००० घोड़े और १००००० पैदल बचगए थे।

राजा दुर्योधन गदा लेकर पूर्व दिशाकी ओर पैदल भागे। कौरवोंकी सेना में केवल कृतवर्मा, अश्वत्थामा और कृपाचार्य यह ३ सैनिक पुरुष बचे थे। सात्यकीने संजयको मारने के लिये खड्ग निकाला, परन्तु व्यासजी के कहनेसे उसको छोड़ दिया। संजय हस्तिनापुरकी ओर चले। एककोस आगे आकर उन्होंने देखा कि राजा दुर्योधन घावोंसे व्याकुल हुए अकेले चलेजाते हैं। दुर्योधन संजयसे अनेक बातें करके एक तालाबमें घुसगए। और जलको मायासे स्तंभित करके उसमें सो गए। संजयने आगे जाकर बाणोंके घावसे व्याकुल कृपाचार्य, अश्वत्थामा और कृतवर्माको दूरसे देखा। वे लोग संजयको देख घोड़ोंको तेजीसे हांककर उसके निकट पहुँचे और बोले कि हे संजय! कहो राजा दुर्योधन जीवित हैं, वा नहीं। संजयने कहा कि इसी तालाबमें हैं। उधर रणभूमिके डेरोंसे दुर्योधनके मन्त्री रानियोंको संग लेकर हस्तिनापुर चले। स्त्रियोंके रक्षकगण खच्चरोंके रथोंपर चढ़कर अपनी अपनी रानियोंको साथले अपने अपने नगरोंको चलेगए। राजा युधिष्ठिरकी आज्ञासे युयुत्सुने कौरववंशीय रानियोंको हस्तिनापुर पहुंचा दिया। सूर्य अस्त होते होते वे सब नगरमें पहुंचगए। (३०) इधर अश्वत्थामा तालाबके निकट जाकर बोले कि हे राजा दुर्योधन! आप आइए। मैं शपथ खाकर कहता हूं कि सामवंशियों और पांचालोंका विनाश करूंगा। उसी समय भीमके लिये मांस लानेवाला एक व्याध पानी पीनेके निमित्त तालाबके समीप आया। उसने छिपकर सब बातें सुनली और भीमके निकट जाकर वहांकी सब बातें कह सुनाई। भीमने राजा दुर्योधनका पता राजा युधिष्ठिरसे कहा। पांडवलोग अपनी बची हुई सेनाके संग थोड़ेही समयमें द्वैपायन नामक तालाबके निकट पहुंचे राजा दुर्योधन सेनाको आते हुए देखकर तालाबमें घुसगए; कृपाचार्य, अश्वत्थामा और कृतवर्मा वहांसे चले गए और बहुत दूर जाकर एक वटवृक्षकी छायामें रथोंसे घोड़ोंको छोड़ाकर सो रहे।

(३२ वां अध्याय) जब राजा युधिष्ठिरने अनेक कठोर और कर्षयुक्त वचन कहा; तब राजा दुर्योधन बोले कि हे राजन्! तुम लोग वाहन और सहायकोंके सहित हो; मैं अकेला वाहन रहित और थका हुआ हूं; मैं किस प्रकारसे युद्ध करूंगा। धर्मके अनुसार एक एकके संग युद्ध करनेमें मुझको कुछ भय नहीं है। युधिष्ठिरने कहा कि हे महावीर। मैं तुमको एक वरदान देता हू; हमलोगोंमेंसे जिस वीरके संग तुम्हारी इच्छा हो उससे तुम युद्ध करो। दूसरे सम्पूण लोग युद्ध देखेंगे। हमलोग पांचों भाइयोंमेंसे किसी एकको मारनेसे भी तुमको राज्य मिलेगा। दुर्योधन बोले कि तुमलोगोंमेंसे जो गदायुद्धमें प्रवीण हो, वह हमसे पैदल गदायुद्ध करे। (३३) कृष्णने कहा, हे राजन्! तुमने यह क्या किया, कि दुर्योधनको ऐसा वरदान दिया। इसने १३ वर्ष पर्यंत लोहेका भीम बनाकर उसको तोड़नेका अभ्यास किया था। तुम पांचों भाइयोंमेंसे कोई ऐसा नहींहै, जो धर्मसे युद्ध करते हुए

दुर्योधनको जीतसके। भीमसेन बोले कि तुम कुछ भय मत करो; हम निःसन्देह दुर्योधनको मारेंगे। ऐसा कह वह गदा लेकर खड़े होगये। (३४) उसी समय बलरामजी तीर्थभ्रमण करते हुए वहां आए। वह बोले कि मुझको द्वारिकासे चले हुए ४२ दिन हुए। मैं अपने दोनों शिष्योंके गदा युद्ध देखनेके अर्थ आया हूं। बलरामजी क्षत्रियोंके बीचमें बैठकर सुशोभित हुए। दुर्योधन और भीमका गदा युद्ध होने लगा। (५७) दुर्योधनने भीमके शरीरमें एक गदा मारी, जिसकी चोटसे वह मूर्छित होकर पृथ्वीमें गिर पड़े; परन्तु भीम एक मुहूर्तमें चैतन्य होकर सावधान हो खड़े होगए। (५८) अर्जुनके पूछनेपर श्रीकृष्णने कहा कि भीम और दुर्योधन इन दोनोंकी विद्या समान है, परन्तु जैसे भीम बलमें अधिक हैं वैसेही दुर्योधन भीमसे अधिक चतुर और सावधान हैं। भीम धर्मयुद्धसे दुर्योधनको नहीं मार सकेंगे। यदि भीम अन्यायसे नहीं युद्ध करेंगे; तो अवश्यही दुर्योधन राजा होजायगा; अर्थात् भीमको मारकर राजा बनेगा। ऐसा सुनकर अर्जुनने भीमको दिखलाकर अपनी बाईं जांघमें हाथमारा उस इशारेको देखकर भीम चैतन्य होगए। ज्योंही दुर्योधन भीमके शरीरमें गदा मारनेको उछले, त्योंही भीमने वेगसे उनकी जांघमें गदा मारी, जिससे दुर्योधनकी दोनों जंघा टूटगईं। वह पृथ्वीमें गिर पड़े। (६०) जब भीमसेन राजा दुर्योधनके सिरपर अपना पैर रखने लगे, तब बलरामजी क्रुद्ध होकर बोले कि भीमको बार बार धिक्कार है। शास्त्रमें निश्चय है; कि नाभीके नीचे शस्त्र न मारे, परन्तु इस मूर्खने कुछ शास्त्र नहीं पढा, इस कारणसे इच्छानुसार काम करलेता है। ऐसा कह वह हलउठाकर भीमको मारने दौड़े जब कृष्ण बलरामजीको पकड़कर विनय करनेलगे, तब वह वहांसे द्वारिका चलेगए (६१) राजा दुर्योधन क्रोधित हो उठकर कुहनी टेककरके पृथ्वीमें बैठे और कृष्णसे कहने लगे कि मुझको अधर्मसे गदायुद्धमे मरा हुआ देखकर तुमको कुछ भी लज्जा नहीं होती। तुमने प्रतिदिन छलकरके हमारे सहस्रों वीरोंको मरवा डाला, शिखण्डी को आगे करके पितामह भीष्मको मारा, गुरु द्रोणाचार्यसे शस्त्र रखवाकर उनको धृष्टद्युम्नसे मरवाडाला, इन्द्रने पांडवोंको मारनेके लिये जो कर्णको शक्ति दी थी, तुमने वह घटोत्कचपर छोड़वा दी और रथके पहिए उठाते हुए कर्णको मरवा दिया। तुम्हारीही सम्मतिसे सात्यकीने हाथ कटे हुए भूरिश्रवाको मारा। कृष्ण बोले, अरे पापी! तुम्हारेही पापसे सब मारे गए। तुमने भीमसेनको विष दिया; माताके सहित पांडवोंको लाक्षागृह में जलाना चाहा, रजस्वला द्रौपदीको दुःख दिया; शकुनीने तुम्हारेही कर्तव्यसे द्यूतमें छलसे राजा युधिष्ठिरको जीता, जयद्रथने वनमें द्रौपदी को दुःखदिया। और अनेक वीरों ने मिलकर बालक अभिमन्युको मारा। इसी लिये हमने तुमको इस प्रकारसे युद्धमें मरवाडाला। दुर्योधनने कहा, हमने विधि पूर्वक वेद पढ़ा, पृथ्वीका राज्य किया और हम युद्धमें मृत्युप्राप्त करके स्वर्गमें जाकर अपने मित्र और भाइयोंसे मिलेंगे। हमारे समान महात्मा कौन है। तुमलोग शोकसे व्याकुल होकर जगतमें रहोगे। तुम्हारे संपूर्ण संकल्प नष्ट हो जावेंगे। ऐसा कहतेही राजा दुर्योधनके ऊपर पुष्पवृष्टि होने लगी। गन्धर्व बाजे बजाने लगे। सिद्धगण दुर्योधनको धन्य धन्य कहने लगे। कुरुराजकी प्रशंसा सुनकर कृष्ण आदि सब लज्जित होगए। सबलोग भीष्म द्रोण, कर्ण, और भूरिश्रवाको अधर्मसे मारनेका वृत्तांत सुनकर शोकसे व्याकुल हो, शोचने लगे। तब श्रीकृष्णने कहा कि देवताओंनें अनेक दानवोंको छलसे मारा है। आपलोग शोच मत कीजिए। शत्रुओंको किसी प्रकार

मारनाही धर्म है। भीष्म, द्रोण, कर्ण, भूरिश्रवा और दुर्योधनको धर्म युद्धसे कोई नहीं जीत सकता।

(६२ वाँ अध्याय) अनन्तर सब पांडव लोग दुर्योधनके डेरे में पहुंचे। वहां स्त्री, नपुंसक और वृद्ध मन्त्रियोंके अतिरिक्त कोई न था। दुर्योधनके मन्त्रीगण मैले और गेरुए कपड़े पहने हुए पांडवोंके आगे खड़े हुए। पांडवोंको दुर्योधनके डेरों में कोश, चांदी, सोना, मणि, मोती उत्तम उत्तम आभूषण, दुशाले, असंख्य दासी दास इत्यादि सामग्री मिली। वे लोग अक्षय धन प्राप्त करके बहुत प्रसन्न हुए। कृष्ण बोले कि संपूर्णसेना आज इसी स्थान में रहें; परन्तु पांचों पांडव, सात्यकी और हम मंगलके लिये डेरे से बाहर रहेंगे। इसके उपरांत ये सातों मनुष्य सरस्वती नदीके निकट चले गए। (६३) राजा युधिष्ठिरने विचारा कि गांधारी घोर तप करती है। वह जब सुनेगी कि हमारे पुत्रोंको पांडवोंने छलसे मारा है, तब क्रोध करके अपने मनकी अग्निसे हमलोगों को भस्म कर देगी। उन्होंने कृष्णसे कहा, कि तुम हस्तिनापुरमें जाकर गांधारीको शांत करो। कृष्ण रथपर बैठ थोड़ेही समय में हस्तिनापुर पहुंचे और राजा धृतराष्ट्रका हाथ पकड कर बहुत समय तक ऊंचे स्वरसे रोते रहे। इसके पश्चात् कृष्ण अनेक प्रकारसे धृतराष्ट्र और गांधारीको समुझाकर पांडवोंके पास लौट आए।

(६५ वाँ अध्याय) अश्वत्थामा, कृपाचार्य और कृतवर्मा राजा दुर्योधनका पृथ्वीमें पडा हुआ सुनकर तेजघोडोंके रथों पर बैठकर राजाके निकट आए। अश्वत्थामाने कहा कि हे राजन्! मैं सत्यकी शपथ खाकर आपसे कहताहूँ कि यदि आजकी रात्रिमें सब पांचालोंका नाश न करूं तो मुझे दान धर्म, आदि उत्तम करमों का फल न हो। आप मुझे आज्ञा दीजिए। राजा दुर्योधनकी आज्ञा पाकर कृपाचार्यने एक कलश जल लाकर अश्वत्थामाका अभिषेक किया।

(१०) सौप्तिक–पर्व—(पहिला अध्याय) अश्वत्थामा, कृपाचार्य और कृतवर्मा तीनों वीर पांडवोंके भयसे वहांसे भागे और सूर्यास्त होने पर एक वनमें जाकर तालावके निकट वटवृक्षके नीचे उतरे। कृपाचार्य और कृतवर्मा पृथ्वीमें सो गए; परन्तु अश्वत्थामाको नींद नहीं आई। उन्होंने देखा, कि वटवृक्ष पर सहस्रों कौवे सोरहे हैं। उसी समय एक बड़े उल्लूकने आकर सोते हुए सहस्रों कौवोंको मारडाला। अश्वत्थामाने विचार किया कि इस पक्षीने हमको अच्छा उपदेश दिया। शत्रुओंको मारनेका यही समय है और यही रीति है। मैं ऐसेही पांडवों का नाश करूंगा। ऐसा विचारकर उसने कृतवर्मा और अपने मामा कृपाचार्यको जगाया और अपना मनोरथ उनसे कह सुनाया।

(४) कृपाचार्य बोले, हे वीर! प्रातःकाल होने पर हम और कृतवर्मा तुम्हारे संग चलकर शत्रुआका नाश करेंगे (५) सोते हुए मनुष्यको मारना धर्म नहीं है। अश्वत्थामाने कहा हे मामा! पाण्डवोंहीने पहले इस धर्मरूपी पुलको काटकर सौ टुकड़े कर दिये हैं। उन्होंने शस्त्ररहित मेरे पिताको मरवाडाला। अर्जुनने रथ रहित कर्णको मारा और शिखण्डीको आगे करके शस्त्ररहित भीष्मको मारदिया। सात्यकीने भूरिश्रवाको व्रतमें बैठेहुए देखकर मारडाला। भीमने गदायुद्धमें अधर्मसे राजा दुर्योधनको मारा। अश्वत्थामा जब उठकर रथारूढ़ हो अकेले शत्रुओंकी ओर चले, तब कृपाचार्य और कृतवर्मा भी उनके संग चलने लगे, तीनोंने पाण्डवोंकी सेनाके समीप जाकर देखा कि सम्पूर्ण वीर सो रहे हैं। (६७) तब अश्वत्थामा वहांसे थोड़ी दूर आगे बढ़े; तब भगवान् शिवने उनको डरवानेके लिये भयंकर भूत और

बहुतेरे अपने गणोंको दिखलाया, परन्तु वह न डरे। जब अश्वत्थामा अपने शरीरको आहुति देनेकी इच्छासे जलती हुई अग्निमें घुस गये, तब साक्षात् शिव उनसे बोले, कि हे प्यारे भक्त! मुझे कृष्णने प्रसन्न किया था, इसी लिये मैं पाञ्चालोंकी रक्षा कर रहा था, परन्तु अब पाञ्चालोंका काल आगया। ऐसा कहकर शिवने अश्वत्थामाके शरीरमें प्रवेश किया और उनको एक तेज खड्ग दिया। अश्वत्थामा अत्यन्त बलवान् होगये। सब भूत भी उनके संग चले। (८) जब अश्वत्थामा डेरोंके भीतर घुसे, तब कृपाचार्य और कृतवर्मा द्वारपर खड़े रहे। अश्वत्थामाने धृष्टद्युम्नके डेरेमें जाकर उसको एक लात मारी। जब उसने उठनेकी इच्छा की, तब अश्वत्थामाने बाल पकड़कर उसको पृथ्वीमें गिरादिया और एक चरण उसके कंठपर और एक चरण छातीपर रखकर उसको पशुके समान मारडाला। अश्वत्थामाके जानेपर जब वहांकी स्त्रियां हाहाकार करके रोने लगीं, तब सब क्षत्रिय जागे और युद्धके लिये व्यूह (किला) बनाने लगे। सब वीर अश्वत्थामाको मारने दौड़े, परन्तु उसने रुद्राखसे सबको मारडाला। अश्वत्थामाने फिर उत्तमौजाके डेरेमें जाकर उन्हेंभी धृष्टद्युम्नके समान मारडाला। इसके पश्चात् उन्होंने युधामन्युको मारकर दूसरे महारथियोंके डेरोंमें जाकर सबको सोतेही मारडाला और किसीको कांपते हुए किसीको उठते हुए मारा। जो क्षत्रिय डेरोंमें जागते थे, वह अश्वत्थामाको भूत जान आंख बन्द करलेतेथे। बचे हुए पाञ्चाल वीर और द्रौपदीके पुत्रगण जागे। द्रौपदीके पाँचों पुत्रोंने द्वारपर आकर देखा कि कृपाचार्य खड़े हैं। वे उनके ऊपर बाण वर्षाने लगे। इतनेमें प्रभद्रकवंशीय क्षत्रिय आपहुँचे। तब शिखण्डी अश्वत्थामाके ऊपर बाणवृष्टि करने लगे। इसके पश्चात् द्रौपदीके पुत्र प्रतिविंध्य, सुतसोम, शतानीक, श्रुतकर्मा और श्रुतकीर्ति एक एक अश्वत्थासे लड़े और मारे गए। बाद अश्वत्थामाने शिखण्डीको मारडाला। इसके पश्चात् उन्होंने विराटके वंशवाले, राजा द्रुपदके पुत्र, पौत्र और मित्रवर्ग जो बचे थे, सबको मारकर गिरा दिया और प्रधान प्रधान क्षत्रियोंको खड्गसे काट डाला। राक्षस और भूतोंके गर्जनेसे हाथी और घोड़े इधर उधर दौड़ने लगे। उनके दौड़नेसे घोर धूल उड़ी, जिसमें महा अन्धकार छागया। हाथी हाथियोंकी ओर घोड़े घोड़ोंकी ओर दौड़े। कोई किसीको नहीं पहचानता था। परस्पर एक दूसरेको मारते थे। हाथी और घोड़े मनुष्योंको पीस देते थे। वीर अपनेही वीरोंको मारते थे। जो लड़नेको उठता था, उसको अश्वत्थामा मार डालते थे। जो क्षत्रिय अपना जीव लेकर भागता था, उसको द्वारपर कृपाचार्य और कृतवर्मा मार डालते थे। कृपाचार्य और कृतवर्माने डेरोंमें तीनों ओर आग लगादी। अश्वत्थामाने खड्ग लेकर सहस्रों वीरोंको मार डाला (९ अध्याय) अश्वत्थामा कृपाचार्य और कृतवर्मा तीनों वीर रथों पर चढ राजा दुर्योधनके निकट आए। उन्होंने देखा कि राजा मरनाही चाहते हैं। कृपाचार्य उनके मुखका रुधिर अपने हाथसे पोछकर रोदन करने लगे। अश्वत्थामा ऊँचे स्वरसे रोने लगे। इसके उपरान्त उसने कहा कि हे राजन्! जो अभी आप जीवित हों तो सुनिए अब पाण्डवोंकी सम्पूर्ण सेनामें केवल ७ मनुष्य बचे हैं, अर्थात् पांचों पाण्डव, छठवें कृष्ण और सातवें सात्यकी और आपकी ओर हम ३ शेष हैं। मैंने आपका बदला लेलिया। द्रौपदीके पांचों पुत्र और बचे हुए सम्पूर्ण सैनिक मारे गए। राजा दुर्योधन अश्वत्थामाके प्रिय वचन सुन चैतन्य होकर बोले, कि अब मैं अपनेको इंद्रके समान मानताहूं। तुम लोगोंका कल्याण हो। ऐसा कह दुर्योधन शांत होकर स्वर्गको चले गए। उनका शरीर वहां पड़ा

रहा। अश्वत्थामा आदि तीनों वीर रोते हुए अपने अपने रथोंमें बैठ नगरकी ओर चले। उसी समय सूर्योदय होनेलगा।

(१० वां अध्याय) रात्रि व्यतीत होनेपर धृष्टद्युम्नके सारथीने राजा युधिष्ठिरके निकट आकर कहा कि हे राजन्! कृतवर्मा, कृपाचार्य और अश्वत्थामाने राजा द्रुपदके पुत्रोंके सहित आपके पांचों पुत्रोंको मारडाला। आपकी सेनामें केवल एक मैंही वचा हूं। राजाने द्रौपदीको बुलानेके लिये नकुलको भेजा। (११) नकुल उपप्लव (छावनी) से द्रौपदीको लिवा लाए। द्रौपदी बोली, हे राजन्! यदि अश्वत्थामाको इस पापका फल नहीं दिया जायगा, तो मैं यहांही मरजाऊंगी। उसके सिरमें मणि है। उसको मारकर मणि छीन लीजिये। भीमसेनने नकुलको सारथी बनाकर अश्वत्थामाके रथकी लीक देखते हुए रथको चलाया। इसके पश्चात् श्रीकृष्ण, युधिष्ठिर और अर्जुन तीनों आदमी एकही रथमें बैठ क्षणभरमें भीमके रथके निकट आगए। सबलोग शीघ्र रथको दौड़ाकर गंगाके किनारे पहुंचे। उन्होंने वहां देखा; कि ऋषियोंके सहित महर्षि व्यास स्थित हैं और उनके समीप शरीरमें घी लगाए हुए कुशकी चटाई ओढ़े हुए शरीरमें धूल लपटाए हुए अश्वत्थामा बैठे हैं। भीमसेन उनको देखतेही धनुष पर बाण चढ़ाकर दौड़े। अश्वत्थामाने मन्त्रबलसे ब्रह्म सिर अस्त्रका आवाहन किया और पांडवोंके नाशके लिये उस अस्त्रको छोड़ा। उस समय ऐसा जानपड़ा, कि आज तीनों लोक भस्म होजायँगे। (१४) अर्जुनने ऐसा कहकर कि पहिले हमारे गुरुपुत्र अश्वत्थामाका कल्याण हो, पीछे हमारे भाइयोंका और हमारा कल्याण हो और अश्वत्थामाका अस्त्र मेरे अस्त्रसे शांत होजाय, द्रोणाचार्यका बताया हुआ दिव्य अस्त्र छोड़ा। अश्वत्थामा और अर्जुन दोनोंके अस्त्र छूटकर जलने लगे। सहस्रों अपशकुन होने लगे। सब जगत भयसे व्याकुल होगया। उस समय महर्षि नारद और व्यास जलतेहुए अस्त्रोंके बीचमें खड़े होगए और दोनों बीरोंको शांत करने लगे। (१५) अर्जुनने अपने अस्त्रको लौटा लिया। अश्वत्थामाने ऋषियोंको अपने आगे देखकर अस्त्र लौटानेकी इच्छा की, परन्तु वह शीघ्र नहीं लौटा सके। व्यासने कहा; हे अश्वत्थामा! तुम अपने सिरकी मणि पांडवोंको देदो। ये लोग तुमको छोड़ देंगे। अश्वत्थामा बोले कि मैं आपके वचन टाल नहीं सकता। यह उत्तम मणि रक्खी है, परन्तु अब यह अस्त्र अभिमन्युकी स्त्रीके गर्भमें जाकर गिरेगा, क्योंकि मैं इसको छोडकर लौटा नहीं सकता। व्यास बोले, हे पापरहित! तुम अस्त्रको छोड़कर शांत हो जाओ। अश्वत्थामाने अस्त्रको उत्तराके गर्भमें जानेकी आज्ञा दी। (१६) इसके पश्चात् वह पांडवोंको अपनी मणि देकर मलीन चित्त वनको चले गए। पांडव लोग मणि लेकर अपने डेरे पर गए। राजा युधिष्ठिरने उस मणिको अपने सिरमें बांधा। (१८) श्रीकृष्णने राजा युधिष्ठिरसे कहा कि हे राजन्! शिवके क्रोधसे सबका विनाश हुआ है। उन्हीके प्रभावसे तुम्हारे सब पुत्र और साथियों सहित धृष्टद्युम्न मारे गए। आप इस कर्मको अश्वत्थामाका किया हुआ मत मानो।

(११) स्त्रीपर्व—(पहला अध्याय) संजयने हस्तिनापुरमें जाकर राजा धृतराष्ट्रसे कहा कि हे राजन्! १८ अक्षौहिणी सेना मारी गई। अब आप उठकर गुरु, पुत्र, पौत्र, ज्ञाति और मित्रोंका प्रेतकर्म कीजिए। ऐसा सुन राजा व्याकुल होकर पृथ्वीमें गिर गए। (१०) इसके अनंतर राजा धृतराष्ट्रकी आज्ञासे गांधारी, कुन्ती आदि कुरुकुलकी स्त्रियां

विविध वाहनोंपर चढ़कर रोती हुई कुरुक्षेत्रको चलीं। राजाने सहस्रों स्त्रियोंको संग लेकर हस्तिनापुरसे प्रस्थान किया। (११) राजाको एक कोश जानेपर सूर्यास्तके समय कृपाचार्य अश्वत्थामा और कृतवर्मा मिले। उन्होंने कहा कि हे राजन्। आपकी सब सेना मारी गई। केवल हमही तीन वीर बचे हैं। अब हमलोग यहांसे भागते हैं। ऐसा कह तीनों राजाकी प्रदक्षिणा करके गंगाके तटपर चलेगए। वहांसे कृपाचार्य हस्तिनापुरको, कृतवर्मा द्वारिकाको और अश्वत्थामा व्यासजीके आश्रममें चले गए (जहां पांडवोंने अश्वत्थामाको जीता)।

(१२ वां अध्याय) राजा युधिष्ठिरने अश्वत्थामाको जीतनेके पश्चात्, सुना कि राजा धृतराष्ट्र हस्तिनापुरसे चले आते हैं। तब पांडवोंने आकर अपना नाम ले लेकर उनको प्रणाम किया। राजा धृतराष्ट्रने युधिष्ठिरको प्रीति रहित अपनी छातीसे लगाया, फिर मारने की इच्छासे वह भीमको ढूंढ़ने लगे। कृष्ण भगवानने भीमको पकड उनके आगेसे हटा दिया और लोह की बनी हुई भीमकी मूर्तिको धृतराष्ट्रके आगे खड़ा करवा दिया। राजा धृतराष्ट्र ने उस मूर्तिको हाथोंसे दबाकर पीस डाला। दश हजार हाथियोंके तुल्य बलवान धृतराष्ट्र जब भीमकी मूर्तिको तोड़ चुके, तब वह रुधिर वमन करके पृथ्वीमें गिरपड़े। जब धृतराष्ट्र का क्रोध शांत हुआ तब वह शोकसे व्याकुल होकर हा भीम! हा भीम! कहकर रोने लगे। कृष्ण बोले हे राजन्! आप शोच मत कीजिए आपने भीमको नहीं मारा। यह लोह की बनाई हुई भीमकी मूर्ति है। (१३) तब राजा धृतराष्ट्रने बड़े स्नेहसे भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेवका शरीर स्पर्श किया। (१४) इसके पश्चात् कृष्णके सहित पांडवगण गांधारीके निकट गए। व्यासमुनिने गांधारीको बहुत समुझाया। (१५) गांधारीने क्रोधसे युक्त होकर पूछा, कि युधिष्ठिर कहां है? युधिष्ठिर कांपते हुए हाथ जोडकर उनके पास गए। गांधारीने उनको डरे हुए देखकर कुछ न कहा, केवल श्वास लेने लगी। जब युधिष्ठिर उनके चरणोंपर गिरे, तब गांधारीने अपने कपड़ेके भीतरसे उनको अपनी अँगुली दिखलाई। उसी समय युधिष्ठिरके नख बिगड़ गए। गांधारीका क्रोध शांत हुआ।

(१६ वां अध्याय) पांडवगण और कृष्ण कुरुकुलकी स्त्रियोंको संग लेकर युद्ध भूमिमें गए। पतिरहित स्त्रियां कुरुक्षेत्रमें जाकर मरे हुए अपने पति, पिता, पुत्र और भाइयोंको देख व्याकुल होकर रोने लगीं। जिसके शब्दसे युद्धभूमि पूरित होगई। गांधारी कृष्णको बुलाकर रोदन और विलाप करती हुई स्त्रियोंकी दशा उनको दिखाने लगी। (२५) और (संपूर्ण वीरोंकी दशा दिखलाकर) धीरज छोडकर शोकाकुल हो पृथ्वीमें गिर पड़ी। फिर सचेत हो कृष्णसे बोली, कि हे कृष्ण! जब कौरव और पांडव लडकर नष्ट होते थे, तब तुमने उनको निवारण क्यों नहीं किया। तुम समर्थ बलवान् और बहुत सेवकोंसे युद्ध होने पर भी कौरवोंका विनाश देखते रहे। इसलिये उस कर्मका फल भोगोगे। मैंने जो अपने पतिकी सेवारूपी तप किया हो, तो मेरा वचन सत्य होय। तुम भी अपनी जातिका नाश करोगे। अबसे ३६ वें वर्ष तुम अपने पुत्र पौत्र, जाति और बांधवों से हीन होकर अनाथके समान दुष्ट उपायसे वनमें मारे जाओगे। जैसे कुरुकुलकी स्त्रियां रोती फिरती हैं, ऐसेही तुम्हारी स्त्रियां रोदन करेंगी। कृष्ण भगवान् हंसकर बोले, कि हे गांधारी! तुम जो कहती

हो वह पहलेही हमने विचार लिया था। प्रारब्धहीसे यदुवंशियोंके नाशका समय आगया है। (२६) उसके अनन्तर राजा धृतराष्ट्रकी आज्ञासे राजा युधिष्ठिरने दुर्योधनके पुरोहित सुधर्मा, अपने पुरोहित धौम्य तथा संजय, विदुर युयुत्सु, इन्द्रसेन आदि सारथी और संपूर्ण सेवकोंको आज्ञा दी, कि तुम लोग इनसब मृतकोंके प्रेतकर्म करो। तब सेवकोंने चन्दन, अगरु तगर, आदि काष्ठ और तेल, घी, रेशमी वस्त्र इकट्ठे करके शास्त्रकी विधिके अनुसार सबको क्रमसे जलाया। राजा युधिष्ठिर धृतराष्ट्रको आगे करके गंगाकी ओर चले। (२७) संपूर्ण लोग गंगामें जाकर पिता, भ्राता, पुत्र, पौत्र और मित्रोंको जल देने लगे। स्त्रियोंने भी अपने अपने पति तथा बांधवोंको जल दिया। उस समय कुन्तीने अपने पुत्रोंसे कहा, कि हे पांडवो ! कर्ण, जिसको तुमलोग राधाका पुत्र जानते थे, तुम्हारा बड़ा भाई था। वह सूर्यके तेजसे कवच और कुण्डल धारण किए हुए मेरे गर्भसे उत्पन्न हुआ था, इसलिए तुमलोग उसको भी जलदो। ऐसा सुन पांडवोंने कर्णके शोकसे व्याकुलहोकर उनको भी जल दिया।

(१२) शांतिपर्व–(प्रथम अध्याय) राजा धृतराष्ट्र पांडवगण, विदुर और भरतकुलकी स्त्रियोंने दुर्योधन आदि सुहृद् पुरुषोंकी जलदानादि क्रिया विधिपूर्वक की। इसके उपरांत वे लोग एक महीने तक नगरके बाहर गंगातीरपर वास करते रहे। उसी समय महात्मा नारद, वेदव्यास आदि महर्षिगण राजा युधिष्ठिरके समीप उपस्थित हुए। (३७) राजा युधिष्ठिर बोले, हाय मैंने राज्यके लोभसे संपूर्ण स्वजनोंका नाश करके एकबारगी अपने वंशका विनाश किया है। जिसने गोदमें लेकर हम लोगोंको लाड़ प्यारसे पालन करके बड़ा किया था मैंने राज्य लोभसे उस भीष्मपितामहका भी वध किया है। मैंने गुरु द्रोणाचार्यके समीप जाकर जो मिथ्या वचन कहा था, कि आपका पुत्र मारा गया, उसके पापसे मेरा शरीर भस्म हुआ जाता है। मैंने अपने ज्येष्ठ भाई कर्णका वध किया है। मुझसे बढ़कर पापी दूसरा कौन होगा। मैं पृथ्वीके सम्पूर्ण क्षत्रियों और गुरुजनोंको नाश करके अत्यन्त अपराधी हुआ हूँ। इसलिये मैं योगाभ्यास करके अपने शरीरको सुखादूँगा। आजसे मैं अनशन व्रत करके अपना प्राण त्याग करूंगा। हे महर्षिगण ! आप लोग मुझको ऐसी आज्ञा देकर अपने अभिलषित स्थानों पर गमन कीजिये। राजाका ऐसा वचन सुन व्यासदेव उनको प्रबोध और उपदेश करने लगे। (३७) पश्चात् श्रीकृष्ण, अर्जुन और व्यास आदि ऋषियोंके विनीत वचनोंसे प्रबोधित होकर राजा युधिष्ठिरने अपना मानसिक संताप परित्याग किया। तब राजा धृतराष्ट्र गांधारीके सहित पालकीमें बैठकर युधिष्ठिरके आगे २ चले। राजा युधिष्ठिरने चतुरंगिणी सेनाओंसे घिरकर अपने भ्राताओंके सहित मंगल लक्षणोंसे युक्त हस्तिनापुरमें प्रवेश किया।

(४० वाँ अध्याय) श्रीकृष्णने शंख ग्रहण करके युधिष्ठिरका अभिषेक किया। उसके पश्चात् कृष्णकी आज्ञासे राजा धृतराष्ट्र और सब प्रजागण जल लेकरके राजाके ऊपर अभिषेचन करनेमें प्रवृत्त हुए। उसके अनन्तर राजाने वेद पढ़नेवाले ब्राह्मणोंको बहुतसी गौ और सुवर्ण मुद्रा प्रदान किया। (४१) राजा युधिष्ठिरने भीमको युवराज बनाया, (४५) कृपाचार्यको पहिलेकी भांति अपना गुरु नियत किया, विदुर और युयुत्सुको विशेषरूपसे सम्मानित किया और धृतराष्ट्र गांधारी तथा विदुरको राज्यभार सौंपकर सुखपूर्वक वह निवास करने लगे।

(५० वाँ अध्याय) श्रीकृष्ण, पाण्डवगण, कृपाचार्य, यादव और कौरवोंके सहित हस्तिनापुरसे चलकर उस स्थानपर पहुँचे, जहां नदीके किनारे भीष्म शर-शय्यापर शयन कर रहे थे। वे लोग भीष्मको दूरहीसे देखकर रथसे उतर गए और उनके निकट जाकर चारों ओर बैठ गए। कृष्ण भगवान् बोले, हे पुरुषश्रेष्ठ पितामह ! अर्थ सहित निखिल धर्मशास्त्र और पुराण आदिकोंके सम्पूर्ण तात्पर्य आपके मनमें विशेषरूपसे विराजमान हैं, विशेष करके संसारमें जिन विषयोंके अर्थोंमें संशय है, उसे छेदन करनेवाला आपके अतिरिक्त कोई पुरुष नहीं है; इसलिये आप अपने ज्ञान प्रभावसे राजा युधिष्ठिरका शोक दूर कीजिये। (५१) भीष्मने कृष्णकी स्तुति की। कृष्ण बोले, हे पितामह ! जिस स्थानमें गमन करनेसे जीवोंकी पुनरावृत्ति नहीं होती, मैं तुमको उसी स्थानमें भेजूंगा; परन्तु अभी ३० दिवस तुम्हारे जीवनका समय बाकी है। (५२) भीष्म बोले; हे मधुसूदन ! मेरा शरीर वाणोंकी चोटसे पीड़ित है और मेरी बुद्धि प्रतिभा रहित हो रही है, मैं धर्म उपदेश किस भांति करूंगा। कृष्ण बोले कि मैं आपको वरदान देता हूँ, कि अबसे शारीरक पीड़ा तथा दाह मूर्छा आदि किसी प्रकारकी पीड़ा और पिपासा आदि क्लेश आपके चित्तको कभी दुःखित नहीं कर सकेंगे। तुम्हारे ज्ञानकी प्रतिभा पूरी रीतिसे प्रकाशित होगी। इसके पश्चात् सूर्यके पश्चिम दिशामें जाने पर पाण्डवगण अपनी चतुरंगिणी सेनाओंके सहित हस्तिनापुर चले गए। (५४) दूसरे दिन सवेरा होतेही कृष्ण, राजा धृतराष्ट्र और पाण्डवगण, नारदादि महर्षियोंके सहित भीष्मके समीप गए। (५६) राजा युधिष्ठिरने भीष्मसे प्रथम राजधर्म पूँछा। भीष्म राजाओंके कर्तव्य कर्म वर्णन करने लगे। (५८) सूर्यास्तके समय सब लोग दृषद्वती नदीमें यथारीतिसे संध्योपासन करके हस्तिनापुर चले आए। (५९) पाण्डव और यादव तीसरे दिन प्रातःकाल नित्यकर्मोंको समाप्त करके रथारूढ़ होकर कुरुक्षेत्रमें भीष्मके निकट पहुँचे। भीष्म राजा युधिष्ठिरके प्रश्नोंका उत्तर देने लगे।

(६० वाँ अध्याय से ३६५ वाँ अध्याय तक) उन्होंने राजाके विविध प्रश्नोंका समाधान किया।

(१३) अनुशासन पर्व—(१६६ वाँ अध्याय) जब (भीष्मपितामह राजा युधिष्ठिरसे सम्पूर्ण धर्मशास्त्र, दान आदि कर्मोंकी विधि और विविध इतिहास कह चुके) समस्त राजमंडली मुहूर्त भर चुप रही तब वेदव्यासने भीष्मपितामहसे कहा, कि राजा युधिष्ठिर भाइयों और राजाओंके सहित प्रकृतिको प्राप्त हुए हैं। अब आप इनको नगरमें जानेकी अनुमति दीजिये। भीष्मने राजासे कहा कि अब तुम नगरमें जाओ। सूर्यके उत्तरायण होने पर मेरे मरनेके समय तुम मेरे समीप आना। राजा युधिष्ठिर धृतराष्ट्र और गांधारीको आगे करके सब लोगोंके सहित हस्तिनापुर आए। (१६७ वां अध्याय) जब सूर्य उत्तरायणमें प्रवृत्त हुए, तब राजा युधिष्ठिर, राजा धृतराष्ट्र; गांधारी, कुंती और भाइयोंको आगे करके कृष्ण, विदुर युयुत्सु, सात्यकी इत्यादि लोगोंके सहित कुरुक्षेत्रमें भीष्मपितामहके निकट उपस्थित हुए और बोले कि हे पितामह ! मैं युधिष्ठिर हूं। मैं आपको प्रणाम करता हूं। इस समय जो कुछ कर्तव्य है, वह आपकी आज्ञानुसार मैंने संग्रह किया है। भीष्मपितामह आंखें उघार कर बोले कि हे युधिष्ठिर ! मुझको तीक्ष्ण वाणोंके अग्रभागपर शयन किए हुए ५८ रात्रि बीत गईं। यह चान्द्रमासका शुक्लपक्ष उपस्थित है। मासके तीन भाग शेष

हैं। (महीनेका अंतिम दिन अमावास्या है; इसी हिसाबसे माघ सुदी ८ के दिन महीनेका तीन भाग बाकी रहता है) अब मेरी मृत्युका समय आगया है। ऐसा कह भीष्मने राजाको धर्म उपदेश दिया और कृष्णकी स्तुति की। (१६८) इसके पश्चात् उन्होंने सब अवयवोंमें प्राणसंयुक्त मनको निरोध करके मस्तक भेद कर स्वर्गमें गमन किया। देवता आकाशसे पुष्पवृष्टि करके दुंदुभी बजाने लगे। पांडवगण, विदुर और युयुत्सुने बहुतसा सुगंध युक्त काष्ठ लाकर चिता बनाई। धृतराष्ट्र आदि कौरवोंने अनेक प्रकारकी सुगंधित वस्तुओंसे भीष्मपितामहको आच्छादित करके चितामें अग्नि लगाकर उसकी प्रदक्षिणा की। कुरुगण भीष्मपितामहका संस्कार करके गंगाके तटपर गए। उन्होंने विधिपूर्वक भीष्मपितामहका तर्पण किया। उस समय गंगादेवी जलसे उठकर पुत्र शोकसे व्याकुल हो विलाप करने लगीं। तब कृष्ण भगवान्‌ने बहुत बातें कहकर गंगाको धीरज दिया।

(१४) अश्वमेध-पर्व—(पहिला अध्याय) राजा युधिष्ठिर भीष्मके तर्पण करनेके उपरांत शोकाकुल होकर गंगा तटपर गिर पड़े। राजा धृतराष्ट्र उनको समुझाने लगे। (२) जब युधिष्ठिर मौनभावसे ही स्थिर रहे तब कृष्ण भगवानने उनको बहुत समझाया युधिष्ठिर बोले, हे गदाधारी! अब तुम मुझे तपोवनमें जानेकी आज्ञा दो। मैं संग्राममें कर्ण और पितामह भीष्मको मारकर, इसके अतिरिक्त किसी प्रकारसे शोक शांतिका उपाय नहीं देखता हूं। जिस कार्यके करनेसे मैं इस पापसे छूटूं और मेरा चित्त पवित्र हो तुम उसीका विधान करो। (व्यासदेवने कहा; हे युधिष्ठिर! मनुष्य लोग तपस्या यज्ञ और दानके बलसे पाप कर्मसे मुक्त होते हैं, इस लिय दशरथके पुत्र रामकी भांति तुम राजसूय; अश्वमेध सर्वमेध और नरमेध यज्ञ करो। युधिष्ठिर बोले, अश्वमेध यज्ञ निःसन्देह राजाओंको पवित्र करता है, परन्तु मैं महत् स्वजन वध करके अल्पदानसे पवित्र न हूंगा और बहुत दान करनेके लिये मेरे पास धन नहीं है; तथा मैं आर्द्रभावयुक्त वर्तमान राजपुत्रोंके समीप धन मांगनेका उत्साह नहीं कर सकता हूं। मैं स्वयं पृथ्वीका विनाश करके फिर किस प्रकारसे यज्ञके लिये राजपुत्रोंसे "कर" लूंगा। इस कारणसे इस यज्ञमें पृथ्वी दक्षिणाही प्रथम कल्प है। व्यास देव बोले, हे पार्थ! मरुत राजाके यज्ञ कालका ब्राह्मणोंका उत्कृष्ट धन हिमालय पर्वतमें विद्यमान है। तुम उसी धनको मँगाकर यज्ञ करो। (१४) राजा युधिष्ठिरने आश्वासित होकर मानसिक शोक संताप परित्याग किया। वह हस्तिनापुरमें प्रवेश करके भ्राताओंके सहित पृथ्वी शासन करने लगे। (१५) श्रीकृष्ण और अर्जुनने विविध प्रकारकी क्रीडा करते हुए कुछ दिनों तक इन्द्रप्रस्थमें विहार किया। (५९) कृष्ण हस्तिनापुरसे प्रस्थानकर द्वारिकापुरीमें आए।

(६० वां अध्याय) कृष्ण भगवान कुरुक्षेत्रके संग्रामका संक्षिप्त वृत्तान्त वसुदेवसे कहने लगे, कि कुलवंशावतंस भीष्म पितामह कौरवोंकी ११ अक्षौहिणी सेनाके अधिपति हुए थे। पांडवोंकी ओर शिखंडी ७ अक्षौहिणी सेनाके सेनापति हुए। अर्जुन उनकी रक्षा करते थे। संग्रामके दसवेंदिन शिखंडीने गांडीवधारी अर्जुनके सहित अनेक बाणोंसे भीष्मको मारा। अनन्तर द्रोणाचार्य कौरवोंके सेनापति हुए। वह बची हुई ९ अक्षौहिणी सेनासे युक्त हो युद्ध करने लगे। कृपाचार्य और मुख्य क्षत्रियगण उनकी रक्षामें नियुक्त हुए थे। धृष्टद्युम्न भीमसे रक्षित होकर पांडवोंके सेनापति हुए। कई दिशाओंसे आए हुए राजागण द्रोण और धृष्टद्युम्न

के युद्धमें प्रायः सब मृत्युको प्राप्त हुए। पांचवें दिन द्रोणाचार्य धृष्टद्युम्नके हाथसे मारे गए॥ तब कर्ण दुर्योधनकी सेनामें वची हुई ५ अक्षौहिणी सेनाओंसे युक्त होकर सेनापति बने। पांडवों की ओर अवशिष्ट ३ अक्षौहिणी सेना अर्जुनसे रक्षित होकर युद्धमें स्थित हुई। दूसरे दिन अर्जुनने कर्ण को मारडाला। तब कौरवोंने मद्रराज शल्यको ३ अक्षौहिणी सेनाका अधिपति बनाया। पांडवोंने युधिष्ठिरको १ अक्षौहिणी सेनाका सेनापति किया। राजा युधिष्ठिरने अर्ध दिन तक संग्राम करके शल्यको मारडाला। संपूर्ण सेना नष्ट हो जाने पर दुर्योधनने भागकर द्वैपायन ह्रदमें निवास किया, जिसको भीमसेनने गदा युद्धमें मारा। अनन्तर द्रोणाचार्यके पुत्र अश्वत्थामाने रात्रिके समय पांडवों की समस्त सेना का विनाश किया। पांडवों की ओर में, सात्यकी और ५ पांडव यही सात बचे और कौरवोंकी ओर अश्वत्थामा, कृपाचार्य और कृतवर्मा यही तीन बचे। इस प्रकारसे वह युद्ध १८ दिन में समाप्त हुआ।

(६३ वाँ अध्याय) राजा युधिष्ठिर रत्न लानेके लिये अपने भाइयों सहित चले॥ (६४) जिस स्थान में राजा मरुतका उत्तम धन रक्खा था, वह सेना सहित वहां पहुंचे॥ (६५) राजा ब्राह्मणों की आज्ञानुसार शिवका पूजनकरके धनको खुदवाने लगे और अनेक प्रकारके पात्र और वस्तु अनेक प्रकारके वाहनों पर लदवाकर हस्तिनापुर को चले। इतनेही समयमें श्रीकृष्ण बलदेव आदि यादवों सहित हस्तिनापुर आए॥ उसी समय परीक्षित उत्पन्न हुए, परन्तु वे गर्भमें ब्रह्मास्त्रसे पीडित होनेके कारण मृतकके रूपसे भूमिमें गिरे। यह वृत्तांत सुन कृष्ण भगवानने सात्यकीके सहित अन्तःपुरमें प्रवेश किया। (६६) कुन्ती बोली, हे कृष्ण! यह बालक अश्वत्थामाके अस्त्रसे मरकर उत्पन्न हुआ है, तुम इसे जीवित करो। (६९) जब कृष्ण जल स्पर्शकरके ब्रह्मास्त्र प्रति संहार करने लगे, तब वह बालक धीरे धीरे सचेत होकर अंग प्रत्यंग संचालन करने लगा॥ (७०) और जीवित हो गया। परीक्षित जब एक मास का हुआ, तब पांडव लोग रत्न लेकर हस्तिनापुर आए।

(७२ वाँ अध्याय) राजा युधिष्ठिरने व्यासदेवकी आज्ञानुसार यज्ञकार्य प्रारंभ किया॥ (७३) अश्वमेधके लिये श्यामकर्ण घोड़ा छोड़ा गया। अर्जुन घोड़ेके अनुगामी हुए। प्रथम कुरुक्षेत्रके संग्राम में मरे हुए त्रिगर्त्तवासियोंके पुत्र और पौत्रगण अर्जुनसे युद्ध करने लगे॥ वे परास्त होजानेके उपरांत अर्जुनके आधीन हुए। (७५) प्राग्ज्योतिषपुरमें जाने पर भगदत्तका पुत्र वज्रदत्त लड़ने लगा। (७६) अर्जुनने ४ दिनों तक वज्रदत्तके संग घोर युद्ध किया। जब वह परास्त हुआ, तब अर्जुनने उससे कहा कि चैत्रकी पूर्णिमामें धर्मराजा युधिष्ठिरका अश्वमेध यज्ञ होगा; उस समय तुमको वहां आना होगा। वज्रदत्तने यह बात स्वीकार करली। (७७) अनन्तर जब अर्जुन सिन्धुदेशमें गए, तब सिन्धुराज वंशियोंके संग उनका युद्ध हुआ। (७८) अर्जुन सिन्धुदेशियोंको परास्त करके मणिपुर में आए॥ (७९) मणिपुरके राजा बभ्रुवाहन अपने पिता अर्जुनका आगमन सुन ब्राह्मण और अर्थ उपहार आगे करके उनके समीप उपस्थित हुए। अर्जुनने उससे कहा, कि तुम क्षत्रिय धर्म से बाहर हो। मैं तुम्हारे राज्यमें आया हूँ। तुम क्यों हमारे साथ युद्ध नहीं करते हो। तुझे धिक्कार है। उस समय नागपुत्री उलूपी पातालसे आकर बभ्रुवाहनसे बोली, कि हे

पुत्र! तुम मुझे अपनी माता जानों, तुम अपने पिता से युद्ध करो, तब बभ्रुवाहनने अश्वविद्या-विशारद पुरुषोंकी सहायतासे उस घोड़े को ग्रहण किया। तुमुलसंग्राम होने लगा। भयानक युद्ध होनेके पश्चात् अर्जुन बभ्रुवाहनके बाणोंसे विद्ध होकर पृथ्वीमें गिरपड़े। उसके पीछे बभ्रुवाहन भी मृत्युको प्राप्त हुआ। बभ्रुवाहनकी माता चित्रांगदा रणभूमिमें आकर रोदन करने लगी। (८०) चित्रांगदाने उलूपीसे कहा कि तुमने मेरे पुत्रसे मेरे पतिका वध करवाया है, परन्तु आज यदि तुम मेरे पतिको नहीं जिलावोगी, तो मैं मरजाऊंगी। उस समय बभ्रुवाहन सचेत होकर उलूपीसे बोले कि हे नागपुत्री! यदि मेरे पिता नहीं उठेंगे; तो मैं अपना शरीर त्याग दूँगा। तब उलूपीने ध्यान करके संजीवन मणिको बुलाया। बभ्रुवाहनने उलूपीके कथनानुसार जब अर्जुनके वक्षस्थल पर उस मणिको रक्खा। तब अर्जुन जीवित होकर जाग उठे। (८१) उलूपीने कहा कि हे धनंजय! आप जो युद्धमें भीष्मको मारकर पाप ग्रस्त हुए थे, आज पुत्रके हाथसे पीड़ा प्राप्त होनेसे आपका पाप दूर होगया। शंतनुपुत्र भीष्मके मरने पर वसुगणने गंगातट पर आकर तुमको शाप दिया था। (८२) अर्जुन वहांसे लौटने पर मगधदेशमें आए। मगधके राजा सहदेवके पुत्र मेघसंधि अर्जुनसे युद्ध करके परास्त हुआ। (८३) अर्जुन दक्षिणदेशमें जाकर घोड़ेके संग विचरने लगे। अनंतर वह घोड़ा लौटकर चेदीवालोंकी शुक्तिनगरीमें पहुँचा। वहां अर्जुन शिशुपालके पुत्र शरभ द्वारा युद्धमें पूजित हुए। फिर घोड़ा काशी, अंग कोशल किरात और तंगण देशमें गया। अर्जुनने वहांसे दशार्ण देशमें गमन किया। वहां वे चित्रांगदको परास्त करके निषादराजके राज्यमें गए। निषाद-राजको जीतकर वे फिर दक्षिण समुद्रकी ओर गए। वहां द्राविड़, अंध्र, माहिषक और कालगिरीय लोगोंके संग अर्जुन लड़े। उन्होंने उनको जीतकर सुराष्ट्रकी ओर गमन किया। घोड़ा गोकर्ण और प्रभासमें जानेके पश्चात् द्वारिकामें पहुँचा। उसके उपरान्त वह समुद्रके पश्चिम देशमें विचरते हुए पंचनद और पंचनदसे गांधारदेशमें गया। (८४) अर्जुनने गांधारदेशके शकुनीके पुत्रको परास्त किया। (८५) घोड़ा लौटकर हस्तिनापुरको चला। राजा युधिष्ठिरने अर्जुनके लौटनेकी बात सुनकर भीमसेनसे कहा, कि यही माघी पूर्णिमा है इसके बाद माघ बीतेगा, इसलिये यज्ञस्थान निरूपण करनेके लिये तुम विद्वान ब्राह्मणोंको भेजो। भीमसेनने राजाकी आज्ञानुसार कार्य किया और अनेक देशोंसे आनेवाले राजाओं तथा ब्राह्मणोंके लिये बहुतसे गृह बनवाए। फिर उन्होंने राजाओंके पास दूत भेजा। राजालोग बहुतसे रत्न, स्त्री, अश्व और अनेक प्रकारके शस्त्र लेकर हस्तिनापुर आए। राजा युधिष्ठिर दंभ त्यागकर स्वयं सबके डेरों पर गए। (८६) श्रीकृष्ण बलदेव आदि यदुवंशियोंके सहित हस्तिनापुरमें आए। (८७) उसी दिन अर्जुन दिग्विजय करके हस्तिनापुरमें उपस्थित हुए और राजा बभ्रुवाहन अपनी दोनों माताओंके संग कुरुगणके निकट पहुँचे। (८८) राजा युधिष्ठिर यज्ञकालमें बहुत सुवर्णदान करके भाइयों सहित निःपाप होकर आनंदित हुए। (९२) (अश्वमेध पर्व समाप्त हुआ)।

(१५) आश्रमवासिक–पर्व—(१ ला अध्याय) पाण्डव लोग १५ वर्ष तक धृतराष्ट्रकी आज्ञानुसार सब काम करते रहे। राजा युधिष्ठिरके मतके अनुसार पाण्डवलोग उनके निकट जाकर उनकी सेवा करते थे और कुन्ती गुरुकी भांति गांधारीका सम्मान करती थी; परन्तु धृतराष्ट्रकी दुर्बुद्धिसे द्यूत हुआ था, वह भीमके हृदयसे दूर नहीं हुआ। भीमके अतिरिक्त

सब पांडव विशेष यत्नपूर्वक धृतराष्ट्रकी सेवा करते थे। (३) भीमसेन धृतराष्ट्रके किसी कार्य तथा दुर्योधनके बुरे विचारका स्मरण करके सुहृदोंके बीच ताल ठोंकते थे। एक बार भीमसेन धृतराष्ट्र और गान्धारीके निकट दुर्योधन, कर्ण और दुःशासनकी प्रशंसा सुनकर अत्यन्त कोपित हुए और अभिमान पूर्वक कठोर वचन कहने लगे, कि महायोद्धा! अन्धे राजा धृतराष्ट्रके पुत्रगण मेरी परिघ सदृश भुजाओंसे मारे गए। जिन भुजाओंसे वे नष्ट हुए, वह परिघ सदृश ये मेरी दोनों भुजा विद्यमान हैं। जिन भुजाओं द्वारा दुर्योधन अपने पुत्र और सुहृदों सहित नष्ट हुआ, मेरी ये दोनों भुजा सुगंध चन्दनसे चर्चित होकर शोभित होती हैं। धृतराष्ट्र भीमके इसी प्रकारके अनेक वाक्य सुनकर परम दुःखको प्राप्त होते थे। वह १५ वर्ष वीत जानेपर अति दुःखित होकर राजा युधिष्ठिर और सुहृदोंसे कहने लगे, कि मैंने जो दुर्बुद्धिवश दुर्योधनको कौरवोंके राज्यपर अभिषिक्त किया था; श्रीकृष्ण, विदुर भीष्म, द्रोण, कृप, व्यासदेव, संजय और गान्धारीने उस दुर्मति दुर्योधनको मंत्रियोंके सहित वध करनेको जो सार्थक वचन कहा था; उसको मैंने पुत्र स्नेहसे युक्त होकर नहीं सुना और पांडुपुत्रोंको राज्य नहीं दिया; इसी लिये मैं इस समय दुःखित हो रहा हूँ। अपरिमित वचन रूपी शल्योंको मैं हृदयमें धारण करता हूँ। मैं जो समयके चौथे भाग कभी आठवें भागमें केवल तृष्णा निवारणके योग्य भोजन किया करता हूं, उसको गांधारीही जानती है। मेरे भूखे रहनेसे युधिष्ठिर अत्यन्त दुःखी होंगे; इसी भयसे मैं इस प्रकार भोजन करके जीवन धारण करता हूं। हे युधिष्ठिर! तुम आज्ञा दो कि मैं चीर वल्कल पहिनकर गांधारी सहित वनमें जाऊँ। मेरी अवस्थाका अन्त हुआ है। मैं वनमें जाकर परम तपस्या करूंगा। राजा युधिष्ठिर बोले कि हे नरनाथ! मैं अत्यन्त दुर्बुद्धि, राज्यासक्त और प्रमादी हूं, इसलिये मुझको धिक्कार है; क्योंकि मैं आपको दुःखार्त, उपवाससे अत्यन्त कृश, जिताहारी और भूतलशायी नहीं जान सका और आप मेरा विश्वास करके इस प्रकार दुःख भोग करते हैं। हे राजन्! आपके औरस पुत्र युयुत्सु अथवा आप जिसके लिये इच्छा करें, वही इस राज्यपर अभिषिक्त हो। मैं वनमें जाऊँगा। यदि आप मुझको परित्याग करके जायँगे तो मैं भी आपका अनुगामी होकर तपसे परमात्माको प्राप्त करूंगा। राजा धृतराष्ट्र बोले, हे युधिष्ठिर! तुम मुझको तप करनेके लिये आज्ञा करो। इस विषयमें वार वार आलोचना करते हुए मेरा मन मलीन होता है। मुझे क्लेश देना तुम्हें उचित नहीं है। (४) वेदव्यास बोले, हे युधिष्ठिर। धृतराष्ट्र जो कहते हैं तुम उस विषयमें विचार न करके उस कार्यको पूरा करो। जिसमें वृद्ध राजा इस स्थानमें न मृत्यु पावें। तुम इनको वनमें जानेकी आज्ञाकरके मेरा वचन प्रतिपालन करो। वेदव्यासकी आज्ञाको राजा युधिष्ठिरने स्वीकार किया।

(१५ वां अध्याय) राजा धृतराष्ट्र कार्तिकी पौर्णमासीमें वेद पारग ब्राह्मणों द्वारा "उदवसनीय" यज्ञ पूरा करके वल्कल तथा अजिन धारणकर अग्निहोत्र आगे करके निज गृहसे निकले। कुरुकुलकी स्त्रियोंमें रोदनकी ध्वनि प्रकट हुई। राजा युधिष्ठिर विलाप करते हुए पृथ्वी पर गिर पड़े। उसके पश्चात् अर्जुन भीम इत्यादि पांडव और धौम्य प्रभृति विप्रगण रुद्धकंठसे उनका अनुगमन करने लगे। कुंतीने नेत्र वांधकर चलनेवाली गांधारीके हाथ अपने कन्धे पर रखके प्रस्थान किया राजा धृतराष्ट्र गांधारीके कन्धे पर हाथ रखके चलने

लगे। (१६) संजय और विदुर भी राजाके संग वनमें चले। (१८) राजा धृतराष्ट्रने उस दिन बहुत दूर जाकर भागीरथीके तटपर वास किया और प्रातःकाल होनेपर उत्तर ओर प्रस्थान किया। (१९) इसके उपरान्त वे लोग कुरुक्षेत्रमें पहुँचे। राजा धृतराष्ट्र जटा अजिन तथा वल्कल धारण करके तीव्र तपस्यामें नियुक्त हुए। गांधारी और कुंती भी वल्कल तथा अजिन धारण करके तपस्या करने लगी। विदुर भी संजयके सहित वल्कल तथा चीर वसन धारण करके धृतराष्ट्रके निकट घोर तप करने लगे। (२०) नारदमुनिने कुरुक्षेत्रमें जाकर राजा धृतराष्ट्रसे कहा कि हे राजर्षि ! मैंने इन्द्रलोकमें इन्द्रके मुखसे ऐसा सुना है कि राजा धृतराष्ट्रकी परमायु अब ३ वर्ष अवशिष्ट है। उसके अनन्तर वह गांधारीके सहित विमान पर चढ़कर कुबेरभवनमें जायंगे।

(२२) राजा युधिष्ठिरने भ्राताओंके सहित कुरुक्षेत्रको गमन किया। (२३) सब लोग विविध वाहनोंपर चढकर चले। कृपाचार्यने सेना नायक होकर सेना सहित आश्रमकी ओर प्रस्थान किया। द्रौपदी आदि स्त्रियां पालकीमें चढ़कर चलने लगीं। राजा युधिष्ठिर यमुना नदी पार होकर कुरुक्षेत्रमें पहुँचे। (२४) सब लोगोंने धृतराष्ट्रके आश्रममें प्रवेश किया। राजा युधिष्ठिरने तपस्वियोंसे पूछा, कि हमारे जेष्ठ पिता कुरवंश पति कहां हैं ? उन्होंने कहा कि हे प्रभु ! वह फूल और जल लाने तथा यमुनामें स्नान करनेके निमित्त इसी मार्गसे गए हैं। पांडवोंने उनके कहे हुए मार्गसे गमन किया। सब लोग धृतराष्ट्रको पाकर यथायोग्य मिलने लगे। (२५) राजा धृतराष्ट्रने पांडवोंके सहित निजआश्रममें निवास किया। (२६) राजा युधिष्ठिरने राजा धृतराष्ट्रसे पूछा कि हे राजन् । विदुर कहां हैं। धृतराष्ट्रने कहा कि हे पुत्र ! विदुर केवल वायु पानकरके अति कृशित हुए हैं। वह किसी किसी समय इस सूने जङ्गलमें ब्राह्मणोंके द्वारा लक्षित हुआ करते हैं। जब धृतराष्ट्र ऐसा कह रहे थे, उसी समय जटाधारी अत्यन्त दुर्बल दिगम्बर वेष दूरसे विदुर देख पडे। राजा युधिष्ठिर घोर अलक्ष वनमें प्रविष्ट विदुरके पीछे दौड़े। जब राजा विदुरके निकट पहुंचे, तब विदुर अनिमिष नेत्रसे युधिष्ठिरको देखने लगे और उन्होंने योगबल अवलंबन करके राजाके शरीरमें निज शरीर प्राणमें प्राण और इन्द्रियोंमें निज इन्द्रियों को मिला दिया। (२९) पांडवोंके एकमास उस तपोवनमें रहने के उपरांत वहां व्यास नारद आदि महर्षिगण आए। (३६) राजा युधिष्ठिर (कुछ दिनों के उपरांत) बन्धुवर्ग और सैनिकोंके सहित कुरुक्षेत्रसे हस्तिनापुर आए।

(३७ वाँ अध्याय) हस्तिनापुर जानेके २ वर्ष पीछे महर्षि नारद राजा युधिष्ठिरके निकट उपस्थित हुए। वह राजासे कहने लगे कि हे पांडुनन्दन ! आपलोगोंके हस्तिनापुर आने पर धृतराष्ट्र, गांधारी, कुन्ती और संजयने अग्निहोत्रके सहित कुरुक्षेत्रसे गंगाद्वारमें गमन किया। धृतराष्ट्रने मौन हो वायुभक्षी होकर तीव्र तप आरंभ किया। ६ माससें उनकी त्वचा तथा हड्डीमात्र शेष रह गई। उसके अनन्तर उन्होंने गंगाके किसी तटमें जाकर स्नान किया। महा वायु प्रकट होनेसे उस वनमें दावाग्नि उत्पन्न हुई। राजा धृतराष्ट्र योगयुक्त चित्तसे गांधारी और कुन्ती सहित पूर्वमुखसे बैठे और तीनों दावाग्निमें जल गए। संजय दावाग्निसे छूट कर गंगा तटके तपस्वियों से सब वृत्तांत सुनाकर हिमालय पर चले गए। (३९) ऐसा सुन राजा युधिष्ठिरने कुरुवंशियों सहित गंगाके तट जाकर राजा धृतराष्ट्र गांधारी और कुन्ती को जल प्रदान किया।

(१६) मौषल–पर्व—(पहिला अध्याय) एक समय सारण आदि यदुवंशियोंने कृष्ण और नारदमुनिको द्वारिकामें आए हुए देखा और सांबको स्त्री की भांति सज्जित करके ऋषियोंसे पूछा, कि हे ब्रह्मर्षिगण ! यह पुत्राभिलाषिणी भार्या क्या ? प्रसव करेगी । ऋषिगण बोले कि यह कृष्णका पुत्र सांब वृष्णि और अन्धकोंके विनाशके लिये एक मूषल प्रसव करेगा । दूसरे दिन सवेरे सांबने मूषल प्रसव किया ! राजा उग्रसेनने मूषलका महीन चूर्ण करवाकर समुद्रमें फेंकवा दिया । (२) राम और कृष्णके अतिरिक्त प्रायः सम्पूर्ण यदुवंशीलोग कालप्रेरित होकर गुरुजनोंका अपमान करने लगे । अनेक अशकुन होने लगे । कृष्णने यादवोंसे कहा कि भारत युद्धके समय जिस प्रकार हुआ था, उसी भांति हम लोगोंके विनाशके लिये आज त्रयोदशी मेंही पौर्णमासीका कार्य संपादित होताहै । गांधारीने पुत्रशोकसे तप्त होकर आर्तभावसे जो शाप दिया था वही छत्तीसवां वर्ष उपस्थित हुआ है ! ऐसा कह कृष्ण भगवानने सबको तीर्थ यात्राकी आज्ञा दी ।

(३) द्वारिका वासी अन्तःपुरचारिणी स्त्रियोंके सहित तीर्थ यात्रा करनेके अभिलाषी हुए । उन्होंने अनेक प्रकारकी भक्ष्य, भोज्य और पीनेकी वस्तु तैयार करके वहुत सा मद्य और मांस मंगाया । वे लोग सैनिक पुरुषोंके सहित हाथी, घोड़े और यानोंपर चढ़ चढ़ प्रभास तीर्थमें पहुंचकर सुख भोगने लगे । वहाँ यादवोंके सैकड़ों तूर्यशब्द तथा नृत्य गीतादि युक्त महापान आरंभ हुआ । ब्राह्मणोंके निमित्त जो सब अन्न पकाया गया था; उन्होंने मदमत्त होकर वह सब अन्न वानरोंको प्रदान किया । राम, कृतवर्मा, सात्यकी, गद; बभ्रु आदि वीरगण कृष्णके सन्मुखही मद्य पीने लगे । सात्यकी मतवाला होकर कृतवर्मासे बोला कि कौन पुरुष क्षत्रियकुलमें जन्म लेकर सोए हुए पुरुषोंका वध करता है । तुमने जो कार्य किया है, यदुवंशी लोग उसको कदापि नहीं सहेंगे । प्रद्युम्नने सात्यकीके वचनकी प्रशंसा की । कृतवर्मा बोले कि जब भूरिश्रवा भुजा कट जाने पर योगयुक्त होकर बैठा था, तब तुमने वीर होकर किस प्रकार उसका वध किया । इतनी बात सुन कृष्ण बहुत क्रुद्ध होकर तिरछे नेत्रसे कृतवर्माको देखने लगे । उस समय सात्यकीने सत्राजितकी "स्यमंतक" मणि संबंधीय सब संवाद कृष्णको सुनाया । उसको सुन सत्यभामा क्रुद्ध होकर रोती हुई कृष्णकी गोदमें गिरी । सात्यकी क्रोधपूर्वक दौड़ा, कृष्णके सामनेही उसने कृतवर्माका सिर काट लिया और उसके बांधवोंका वध करते हुए वह चारों ओर घूमने लगा । कृष्ण उसके निवारण करनेके लिए आगे बढ़े । इतनेही समयमें भोज और अंधक वंशियोंने एकत्रित होकर सात्यकीको घेर लिया । वे उसको मारने लगे । रुक्मिणीके पुत्र सात्यकी की रक्षाके लिये युद्ध करने लगे । जब सात्यकी और कृष्णके पुत्र यह दोनों मारे गए, तब कृष्णने क्रोध करके एक मुट्ठी "एरका" (पटेर) ग्रहण किया । वह वज्र सदृश लोहमय मूषल होगया । कृष्णने जिसको सामने पाया उस मूषलसेही सबका नाश करदिया । उसे देखकर अन्धक, भोज, शैनीय और वृष्णि वंशीयगण उसी मूषलभूत एरका लेकर परस्परमें एक दूसरेका नाश करने लगे । उस समय सम्पूर्ण एरका ब्रह्मशापके कारण वज्रकी भांति सारवान होगया, तथा समस्त तृण भी मूषल होगए । मतवाले होकर पिता पुत्रको और पुत्र पिताको मार कर गिराने लगे । कृष्णने सांब, चारुदेष्ण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, गद आदि वीरोंको हत वा आहत देखकर बचे हुए वीरोंको मारडाला । (४) अनन्तर कृष्ण,

दारुक और बभ्रुने वहांसे रामके समीप आकर देखा, कि वह निर्जन स्थानमें वृक्षके ऊपर बैठकर ध्यान कर रहे हैं। माधवने दारुकसे कहा कि तुम कौरवोंके समीप जाकर यादवोंका मृत्यु सम्वाद कहो और अर्जुनको शीघ्र इस स्थानमें लावो। दारुक रथपर चढ़ कौरवोंके निकट हस्तिनापुर गया। कृष्णने बभ्रूसे कहा कि तुम शीघ्र द्वारिकामें जाकर स्त्रियोंकी रक्षा करो, जिससे डाकूलोग धनके लोभसे उनकी हिंसा न कर सकें। उसी समय किसी व्याधके मूषलने सहसा गिरकर बभ्रुका प्राण हरलिया। तब कृष्णने बलरामसे कहा, कि जब तक मैं स्त्रियोंको स्वजनोंकी रक्षामें रखकर न लौटूं, तबतक आप इसी स्थानमें रहिए। कृष्ण द्वारिकामें जाकर वसुदेवसे बोले, कि जब तक अर्जुन नहीं आवें, तबतक आप पुरनारियोंकी रक्षा कीजिये। इसके उपरान्त कृष्णने प्रभासमें जाकर देखा कि बलराम निर्जनमें योगयुक्त होकर बैठे हैं। उनके मुखसे एक श्वेतवर्ण महानाग बाहर होता है। देखते देखते वह सहस्र-शीर्ष नागने अपना मानुषी तनु परित्याग करके समुद्रमें प्रवेश किया। कृष्ण भगवान् दिव्य दृष्टिकी सहायतासे कालकी समस्त गति देखकर निर्जन वनमें महा योग- अवलम्बन कर सो गए। उसी समय जरा नामक व्याध कृष्णको मृग समुझ बाणसे विद्धकर पकड़नेके लिये उनके निकट आया। उसने समीप पहुँचने पर जब योगयुक्त पीताम्बरधारी चतुर्भुज पुरुषको देखा, तब शंकित चित्तसे कृष्णके दोनों चरणोंको धारण किया। कृष्ण भगवान् व्याधको आश्वासित करके निज तेजसे पृथ्वी और आकाशको परिपूरित करते हुए अपने धामको गए।

(५ वाँ अध्याय) दारुकने हस्तिनापुरमें जाकर द्वारिकावासियोंकी मृत्युका सम्वाद पाण्डवोंसे कह सुनाया। पाण्डवलोग भोज, अन्धक और कुक्कुर गणोंके सहित वार्ष्णेय लोगोंका विनाश सुनकर अत्यन्त शोक संतप्त और व्याकुल चित्त हुए। अर्जुनने दारुक सहित जाकर देखा कि द्वारिका नगरी नाथरहित हुई है। (७) उन्होंने उस रात्रिमें कृष्णके गृहमें निवास किया। दूसरे दिन भोर होतेही वसुदेव योग अवलम्बन करके उत्तम गतिको प्राप्त हुए। देवकी; भद्रा, मदिरा और रोहिणी अपने पति वसुदेवकी चिताग्निमें जलकर पतिलोकमें गईं। अर्जुनने प्रभासमें जाकर प्रधानताके अनुसार सब मृतकोंका अन्त्येष्टि कार्य किया और अनुगत लोगोंसे बलराम और कृष्णके शरीरका अनुसन्धान करा करके उनको विधिपूर्वक जलाया। वह प्रेत कार्य पूरा करके सातवें दिन उस स्थानसे बाहर हुए। वृष्णिवंशियोंकी स्त्रियां घोड़े बैल, खच्चर और ऊंटोंके रथोंमें बैठकर अर्जुनके पीछे चलीं। अन्धक और वृष्णि-वंशीय रथी तथा घुड़सवार आदि सेवकवृंद, बालक और वृद्धोंसे युक्त स्त्रियोंकी रक्षाके लिये उनके चारों ओर चले और पदाति तथा गजारोही पुरुष आगे पीछे चलने लगे। कृष्णकी स्त्रियां उनके प्रपौत्र वज्रको आगे करके बाहर हुईं। उनके बाहर होने पर समुद्रने द्वारिका नगरीको जलमें डुबादिया।

अर्जुनने वन पर्वत तथा नदियोंके तटपर निवास करते हुए एक दिन पञ्चनदके समीपवर्ती किसी स्थानमें निवास किया। उस स्थानपर बहुत आभीर डाकू निवास करते थे। वे लोग लोभसे अन्धे होकर लाठी लेकर वृष्णिवंशियोंकी स्त्रियोंकी ओर दौड़े। अर्जुन बहुत कष्टसे अपने गांडीव धनुपपर "रोदा" चढ़ाकर अस्त्रोंका स्मरण करनेलगे, परन्तु कोई अस्त्र उस समय उनकी मतिमें न आया। वृष्णिवंशीय रथी तथा गजसवार आदि सैनिक स्त्रियोंको छीननेमें समर्थ नहीं हुए। अर्जुन वृष्णिवंशीय सेवकोंके सहित बाणोंसे डाकुओंको मारने लगे, परन्तु सब बाण क्षीण वीर्य होकर

निष्फल होगए। डाकूगण अर्जुनके देखते देखते वृष्णि और अंधकवंशीय स्त्रियोंको लेकर चले गए। अर्जुनने बची हुई यादवोंकी स्त्रियोंको कुरुक्षेत्रमें लाकर स्थान स्थानमें बास करांया और कृतवर्माके पुत्र तथा हरतेसे बची हुई भोजराजकी स्त्रियोंको मार्तिकावत नगरमें स्थापित करके वह अवशिष्ट बालक, वृद्ध और स्त्रियोंको इन्द्रप्रस्थमें लेगए। उन्होंने सत्यकनन्दन युयुधानके पुत्रको वृद्ध और बालकोंके सहित सरस्वतीके तटपर स्थापित करके अनिरुद्धके पुत्र तथा कृष्णके प्रपौत्र वज्रको इन्द्रप्रस्थका राज्य प्रदान किया। रुक्मिणी, गांधारी, शैव्या, हैमवती और जाम्बवती देवीने अग्निमें प्रवेश किया। कृष्णकी सत्यभामा आदि अनेक स्त्रियां तपस्याके लिये वनमें प्रविष्ट हुईं। अर्जुनने विभागक्रमसे बहुतेरे द्वारिकावासियोंको वज्रके समीप स्थापित किया।

(८ वां अध्याय) इसके पश्चात् धनंजयने व्यासदेवके आश्रममें जाकर महर्षिसे कहा, कि पांच लाख यदुवंशीय वीर परस्पर युद्ध करके मर गए हैं। कृष्णसे रहित होकर अब मुझे जीवन धारण करनेका उत्साह नहीं होता है। वहांसे अर्जुनने हस्तिनापुरमें आकर वृष्णि तथा अंधक वंशियोंके विनष्ट होनेका सारा वृत्तांत राजा युधिष्ठिरसे कह सुनाया।

(१७) महाप्रस्थानिक-पर्व—(१ ला अध्याय) राजा युधिष्ठिरने वैश्यापुत्र युयुत्सुको सम्पूर्ण राज्यभार प्रदान किया और परीक्षित्को निज राज्यपर अभिषिक्त करके उनको शिष्य रूपसे कृपाचार्यके हाथमें सौंप दिया।

राजा युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव, द्रौपदी और एक कुत्तेके सहित तपस्वी वेषसे नगरसे बाहर हुए और पूर्वकी ओर चलने लगे। वे लोग अनेक जनपद, सागर तथा नदियोंको अतिक्रमण करके जाते जाते उदयाचलके निकट लौहित्य-समुद्रके तटपर पहुँचे। वहांसे उन्होंने दक्षिण ओर गमन किया। इसके पश्चात् वे लोग लवण-समुद्रके किनारे चलते हुए दक्षिण जाकर, दाक्षिणसे पश्चिममें जाकर द्वारिकामें पहुँचे। इसी प्रकारसे पांडवगण पृथ्वीकी प्रदक्षिणा करते हुए पश्चिमसे उत्तरको चलकर (२) हिमवान पर्वतको लांघनेके उपरान्त सुमेरु पर्वतके निकट उपस्थित हुए। जब वे लोग शीघ्रतासे सुमेरु पर चढ़ रहे थे, इतनेही समयमें द्रौपदी योगभ्रष्ट होकर पृथ्वीमें गिरपड़ी। जब भीमसेनने द्रौपदीके गिरनेका कारण पूछा, तब राजा युधिष्ठिरने कहा कि हम सब लोगोंके तुल्य होनेपर भी अर्जुनके ऊपर विशेष रीतिसे इसका पक्षपात था। यह उसी फलको आज भोगती है। युधिष्ठिर आगे चलने लगे। इतनेही समयमें सहदेव पृथ्वीमें गिरे। तब युधिष्ठिरने भीमसे कहा कि यह किसी पुरुषको अपने समान प्राज्ञ नहीं समुझता था, उस दोषसे यह इस जगह गिरा है। जब राजा आगे चलने लगे; तब नकुल, शोकसे पीडित होकर पृथ्वीतलमें गिर पड़े। जब भीमसेनने इसका कारण पूछा, तब राजा बोले कि नकुल सर्वदा अहंकार करते थे; कि तीनों लोकमें मेरे समान रूपवान कोई नहीं है। यह इस समय इसी गर्वके कारण गिरा है। द्रौपदी और भाइयोंको इस प्रकार गिरते हुए देखकर अर्जुन शोकसे सन्तापित होकर गिर पड़े। भीमने राजासे पूछा कि किस कर्म विकारसे यह पृथ्वीमें गिरा है। युधिष्ठिर बोले कि अर्जुनने कहा था कि मैं एकही दिनमें शत्रुओंको जला दूंगा, परन्तु उस कार्यको पूरा न किया इस समय उस मिथ्या प्रतिज्ञाके कारणसे वह गिरा है। विशेष करके यह सदा दूसरे धनुर्द्धारियोंकी "अवज्ञा" करता था। उसके गिरनेका दूसरा कारण यह भी है। इतना कहकर जब राजा चलने लगे; तब उसी समय भीमसेन गिर पड़े और गिरते गिरते

उसने युधिष्ठिरसे पूछा, कि मैं किस निमित्त गिरता हूं। राजा बोले हे पार्थ ! तुम बहुतसा भोजन करते और दूसरेके बलको नहीं देखकर सदा अपने बलकी बड़ाई करते थे। इसीलिये पृथ्वीमें गिरे हो। इतनी बात कहकर राजा युधिष्ठिर चलने लगे उस समय एक मात्र कुत्ता उनके पीछे चलने लगा। (३) इन्द्रने वहां आकर राजा युधिष्ठिरको रथमें चढ़नेको कहा। युधिष्ठिर बोले, हे सुरेश्वर ! मेरे भ्रातागण इस स्थानमें गिरे हुए हैं। इनसे रहित होकर मुझको स्वर्ग जानेकी इच्छा नहीं है। इन्द्र बोले की तुम्हारेभाई गण शरीर परित्याग करके द्रौपदीके सहित तुमसे पहले ही सुरलोकमें गए हैं। तुम इस शरीरसेही स्वर्गमें जाओगे। राजा बोले, यह कुत्ता मेरा भक्त है। इसको अपने संग स्वर्गमें लेजाऊंगा। इन्द्र बोले, जिनके पास कुत्ता रहता है, उन अपवित्र लोगोंको स्वर्गमें स्थान नहीं मिलता। युधिष्ठिरने कहा कि मैं ऐसे शरणागत भक्तको किसी प्रकार परित्याग नहीं करूंगा। उस समय धर्मरूपी भगवानने (जो कुत्ता बने थे) युधिष्ठिरके वचनसे प्रसन्न होकर उनकी प्रशंसा की। राजा युधिष्ठिर, इन्द्र, धर्म आदि देवताओं सहित रथारूढ़ होकर स्वर्गमें जा पहुंचे।

(१८) स्वर्गारोहण-पर्व—(१ ला अध्याय) धर्मराज युधिष्ठिरने "त्रिविष्टप" में जाकर दुर्योधनको दीप्यमान दिवाकरकी भांति आसनपर बैठे हुए देखा। तब वह देवतोंसे बोले की मैं लोभी दुर्योधनके संग स्वर्गमें वास नहीं करूंगा। मेरे भ्रातालोग जिस स्थानमें हैं; मैं वहीं जानेकी इच्छा करता हूं। कर्ण, धृष्टद्युम्न, सात्यकी, धृष्टद्युम्नके पुत्रगण और जो सब राजा क्षत्रियधर्मके अनुसार शस्त्रोंसे मरे हैं, वे कहां हैं। (२) देवताओंने देवदूतसे कहा, कि तुम युधिष्ठिरके सुहृदोंको दिखाओ।

राजा युधिष्ठिरने देवदूतके संग जाकर यमयातनासे पीडित जीवोंको देखा। राजाने उनसे पूछा कि तुम कौन हो, तब वे लोग चारों ओरसे कहने लगे मैं कर्ण, मैं भीम, मैं अर्जुन, मैं नकुल मैं सहदेव. मैं द्रौपदी हूँ हमलोग द्रौपदीके पुत्र, हैं। राजा युधिष्ठिर शोक दुःखसे युक्त और चिन्तासे व्याकुल होकर धर्म और देवताओंकी निन्दा करने लगे और देवदूतसे बोले, कि तुम जिनके दूतहो, उनके समीप जाओ। मैं वहाँ न जाऊं गा। इसी स्थान में निवास करूंगा। तब देवदूतने इन्द्रके समीप जाकर राजा युधिष्ठिरका वचन कह सुनाया। (३) युधिष्ठिरके मुहूर्तभर निवास करनेके पीछे सब देवता इन्द्रको आगे करके राजा युधिष्ठिरके समीप आए। मूर्तिमान धर्म वहाँ समागत हुए। उस समय राजाने देखा, कि नरकका सम्पूर्ण सामान वहाँसे अदृश्य हो गया है। इन्द्र बोले हे राजन् ! तुमने छल पूर्वक द्रोणाचार्यका बध कराया था। इसी लिये मैंने छल क्रमसे तुमको नरक दिखाया है। तुमने जिस प्रकार कपट नरक देखा, उसी प्रकार मायाके भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव, और द्रौपदी झूठे नरकके तुमको देख पड़ी थी। तुम शोक परित्याग करके अपने भाइयों और स्वपक्षके राजाओंको स्वर्गमें निज निज स्थानमें देखो। मूर्तिमान् साक्षात् धर्म ने युधिष्ठिरसे कहा कि हे पुत्र ! मैंने यह तीसरी वार तुम्हारी परीक्षाकी है। मेरी प्रथम परीक्षा द्वैतवनमें ब्राह्मणके "अरणी" के निमित्त और दूसरी परीक्षा द्रौपदी और सहोदर भाइयोंके विनष्ट होते रहने पर हुई थी। मैंने वहाँ कुत्तेके रूपको धरकर तुम्हारी परीक्षाकी थी। यह नरक देखना मेरी तीसरी परीक्षा है। अब आवो; गंगाको देखो। तब राजा

युधिष्ठिरने गंगामें स्नान करके मानुषी मूर्ति परित्याग की और दिव्यदेहयुक्त तथा, संताप रहित होकर वह सुशोभित होने लगे। (४) इसके पश्चात् राजा युधिष्ठिर देवताओंके संग वहाँ गए, जहां ऋषियोंके सहित कुरु पाण्डवगण निवास करते थे। उन्होंने वहाँ कृष्णका दर्शन किया और कर्ण, भीम आदि अपने भाइयों, द्रौपदी और अन्य सम्पूर्ण मृत संबंधियोंको देखा।

(५) निम्न लिखित लोग नीचे लिखे हुए देवतोंमें लीन हुए थे। भीष्म आठों वसुओं में, द्रोणाचार्य वृहस्पति में, कृतवर्मा मरुत गणमें, प्रद्युम्न सनत्कुमारमें धृतराष्ट्र और गांधारी कुबेरलोकमें, पांडु अपनी दोनों स्त्रियोंके सहित महेंद्रलोकमें, विराट, द्रुपद, धृष्टकेतु, निशठ, अंक्रूर, सांव, भूरिश्रवा, कंस, उग्रसेन, वसुदेव, उत्तर आदि विश्वेदेवगणोंमें, अभिमन्यु चन्द्रमण्डलमें, कर्ण सूर्यमण्डल में, धृष्टद्युम्न अग्निमें, धृतराष्ट्रके पुत्रगण स्वर्गमें, विदुर और युधिष्ठिर धर्ममें, वलराम रसातलमें, श्रीकृष्ण नारायणमें। कृष्णकी सोलह हजार स्त्रियों काल क्रमसे सरस्वती नदीमें डूबीं और शरीर छोड़कर सुरपुरमें गई। वहीं अप्सरा होकर कृष्णके निकट प्राप्त हुई। घटोत्कच आदि वीर देवताओं तथा यक्षोंमें प्राप्त हुए।। दुर्योधनके सहायक राक्षसोंने महेंद्रके भवन और कुबेर और वरुणके स्थानमें प्रवेश किया था। (६) स्वर्गारोहण पर्व समाप्त हुआ।

संक्षिप्त-प्राचीन कथा—विष्णुपुराण—(५ वाँ अंश ३५ अध्याय) कुरुवंशी राजा दुर्योधनकी कन्याका स्वयंवर हुआ। जामवन्तीका पुत्र सांव जव वलसे उस कन्याको ले भागा। तव भीष्म, दुर्योधन, कर्ण आदिने सांवको जीतकर वांध लिया। यह समाचार पाकर यदुवंशीयगण जव युद्धका प्रवन्ध करने लगे, तव वलरामजी उनको शान्त करके सांवको छोड़ानेके लिये अकेले हस्तिनापुर गए। जव वलदेवजीके समुझाने पर कुरुवंशियोंने सांवको नहीं छोड़ा, तव उन्होंने क्रोध करके अपने हलको हस्तिनापुरकी शहरपनाहमें लगाय और उसको गंगाकी ओर खींचा। जव वह नगर कड़कड़ा कर नदीकी ओर झुका; तव कौरवोंने वलदेवजीके चरण पर गिरकर उनसे क्षमा मांगी। वलदेवजीने नगरको छोड़ दिया। हस्तिनापुर अव भी गंगाकी ओर झुका हुआ वलरामजीका पराक्रम सूचित करता है। यह कथा आदि ब्रह्मपुराणके (९६ अध्यायमें भी है)

श्रीमद्भागवत—(दशमस्कन्ध-६८ वाँ अध्याय) जव स्वयंवरसे राजा दुर्योधनकी कन्या लक्ष्मणाको सांव ले भागा, तव कौरवोंने उसको जीतकर वांध रक्खा। वलदेवजीने हस्तिनापुरमें आकर कौरवोंको समुझाया, जव उन्होंने वलदेवजीके वचनका निरादर किया, तव उन्होंने हलके अग्रभागसे हस्तिनापुरको उखाड़कर गंगाकी ओर खैंचा। जव नगर नौकाके समान भ्रमण करता हुआ गंगामें गिरने लगा, तव कौरवगण लक्ष्मणा सहित सांवको आगे करके वलरामजीके शरणमें आये। अव तक हस्तिनापुर वलरामजीके पराक्रमको जनाता हुआ दक्षिणकी ओरसे गंगाजीमें झुका दिखाई देता है।

(९ वाँ स्कन्ध २२ वाँ अध्याय) राजा परीक्षितके पश्चात् इस क्रमसे पाण्डुवंशीय राजा होंगे। (१) जनमेजय, (२) शतानीक, (३) सहस्रानीक, (४) अश्वमेधज, (५) असीमकृष्ण, (६) नेमीचक्र, (७) उग्र, (८) चित्ररथ, (९) कविरथ, (१०) वृष्णिमान, (११) सुषेण, (१२) सुनीथ, (१३) नृचक्षु, (१४) सुखीनल, (१५)

परिप्लव, (१६) सुनय, (१७) मेधावी, (१८) नृपंजय, (१९) ऊर्व, (२०) तिमि, (२१) बृहद्रथ, (२२) सुदास, (२३) शतानीक, (२४) दुर्मन, (२५) वहीनर, (२६) दंडपाणि, (२७) दुर्नेमि और (२८) क्षेमक। नेमीचक्रके राज्यके समय हस्तिनापुर गंगामें डूबजायगा, तब वह राजा कौशांबी नगरीमें निवास करेगा। क्षेमकके पश्चात् यह वंश समाप्त होजायगा।

मत्स्यपुराण–(५० वाँ अध्याय) राजा परीक्षितके पीछे इस क्रमसे पाण्डुवंशी राजा होंगे। (१) जनमेजय, (२) शतानीक, (३) अधिसोमकृष्ण, (४) विवक्षु, (५) भूरि, (६) चित्ररथ, (७) सुचिद्रव, (८) वृष्णिमान, (९) सुषेण, (१०) सुनीथ, (११) नृचक्षु, (१२) सुखीवल, (१३) परिप्लव, (१४) सुतपा, (१५) मेधावी, (१६) पुरंजय, (१७) ऊर्व, (१८) तिग्मात्मा, (१९) बृहद्रथ, (२०) वसुदामा, (२१) शतानीक, (२२) दयन, (२३) वहीनर, (२४) दंडपाणि, (२५) निरमित्र और (२६) क्षेमक। जब हस्तिनापुर नगरको गंगा वहा ले जायगी, तब राजा विवक्षु हस्तिनापुर छोड़कर कौशांबीमें बसेगा। राजा क्षेमकके पश्चात् यह वंश नष्ट होजायगा।

ग्यारहवां अध्याय।
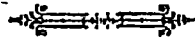
(पंजावमें) जगाद्री, नाहन, अम्बाला, थानेसर वा कुरुक्षेत्र, कर्नाल, पानीपत और शिमला।

जगाद्री।

सहारनपुरसे १३ मील पश्चिम यमुना नदीपर रेलका पुल है। यमुना पश्चिमोत्तर प्रदेश और पञ्जावकी सीमा है; इससे पश्चिम पञ्जाव देश है। यमुनासे ५ मील पश्चिमोत्तर (सहारनपुरसे १८ मील) जगाद्रीका रेलवे स्टेशन है। रेलवेसे तीन मील उत्तर पंजावके अम्बाले जिलेमें तहसीलीका सदरस्थान जगाद्री एक कसवा है, जिसके निकट यमुनाकी पश्चिमी नहरपर रेलवेका पुल है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणनाके समय जगाद्रीमें १३०२९ मनुष्य थे; अर्थात् १६१० हिन्दू, ३०६७ मुसलमान, १८७ जैन, १६० सिक्ख, ४ क्रस्तान और १ पारसी।

जगाद्रीमें तहसील और पुलिस स्टेशन है; तांवा और लोहा निकटके पहाड़ियों और कलकत्ते तथा वम्वईसे आते हैं, इनसे वहुत दस्तकारी होती है। इनके अतिरिक्त यहां सुन्दर लम्प और पीतलके वर्तन वनते हैं। सोहागा पहाड़ियोंसे लाकर बंगालमें भेजा जाता है।

नाहन।

जगाद्रीसे पचीस, तीस, मील उत्तर और शिमलेसे लगभग ४० मील दक्षिणदेशीय राज्य सिरमौरकी राजधानी नाहन है। जगाद्रीसे नाहनको सड़क गई है। नाहन वरावर पत्थरीली ऊँचाई पर छोटा कसबा है; जिसमें पत्थरके छोटे २ मकान वने हैं। कसवेमें राजाका बड़ा मकान है। कसवेके बाहर ७ या ८ मकान यूरोपियन ढंगके बने हुए हैं अब राजाने एक

सुन्दर उद्यानमें एक उत्तम मकान बनवाया है। कई एक सुन्दर मकान यूरोपियन अफसर और मेहमानोंके रहनेके लिये बनाए गए हैं। इनके अतिरिक्त नाहनमें २ सराय, १ डाक बंगला, १ अस्पताल, १ स्कूल, १ नई छावनी और बड़ा बाजार है।

सन् १८८१ की मनुष्य गणनाके समय नाहनमें ९३७ मकान और ५२५३ मनुष्य थे अर्थात् ४१४५ हिन्दू, ९८५ मुसलमान, १०२ सिक्ख, ५ जैन और १६ दूसरे।

सिरमौर-राज्य—इस राज्यकी राजधानी नाहन है, इसलिये बहुधा लोग इसको नाहन राज्य भी कहते हैं। पंजाबकी पहाड़ी रियासतोंमें यह राज्य प्रथम श्रेणीमें है। इस राज्यके पूर्व यमुना और "टीस" नदियां, बाद पश्चिमोत्तर देशके देहरादून जिला; दक्षिण पश्चिम अंबाला जिला और "कलसिया" राज्यके कई भाग; पश्चिमोत्तर पटियाले और "क्योंथल" के राज्य और उत्तर "बलसन" और जबल पहाड़ी राज्य हैं। यह राज्य समुद्रके जलसे १२००० से १५००० फीट तक ऊपर, उत्तरसे दक्षिणको ढालू है, जिसका क्षेत्र-फल १०७७ वर्गमील है।

राज्यके पूर्वोत्तर भागमें राजावन है, जिसमें शालकी उत्तम लकड़ी होती है और कभी कभी खन्दकोंमें हाथी फँसाए जाते हैं। कलसीकी खानसे पहिले तांबा निकाला जाता था, फिर राज्यमें एक सीसेकी खान खुली है और लोहाका "ओर" बहुत है। कई एक स्थानोंमें छत्त बनानेके लिये स्लेट निकाला जाता है। सघन वनोंमें हाथी, बाघ और भालू बहुत हैं। राज्यका प्रधान पैदावार गल्ले और अफियून है। उत्तम भेड़ोंके लिये यह राज्य प्रसिद्ध है।

अधिक मकान दो मंजिले तीन मंजिले पत्थरसे बने हुए हैं, जो खास करके स्लेटसे और कुछ कुछ लकड़ीके तखतेसे छाए गए हैं। बस्तियां साधारण तरहसे पहाड़ियोंके ढालू सिरोंपर बसी हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य गणनाके समय इस राज्यके २०६९ गावोंमें २६८७२ मकान और ११२३७१ मनुष्यथे; अर्थात् १०७६३४ हिन्दू ४३४० मुसलमान, ४६८ सिक्ख, ३१ क्रस्तान और ८ जैन। मैदानमें ब्राह्मण बहुत हैं और पहाड़ियोंमें नीचे दरजेके राजपूत "कानेट" जाति बहुत बसते हैं; जो स्त्रियोंको मोल लेते हैं और विधवा विवाह करते हैं।

राज्यसे लगभग ३१०००० रुपए मालगुजारी आती है। राजाको खिराज नहीं देना पडता है; इनका सैनिक बल ५५ सवार, ३०० पैदल, १० मैदानकी तोपें और २० गोलंदाज हैं। सिरमौरके राजाओंको अङ्गरेजी सरकारकी ओरसे ११ तोपोंकी सलामी मिलती है।

इतिहास—सिरमौरका पहला राजा "सैलाब"में बहगया। सन् १०९५ ई०में जैसलमेर राजवंशके अमरसेन रावल सिरमौरकी खाली गद्दी पर राजा बना जिसके वंशधर सिरमौर के वर्तमान राजा सर शमशेरप्रकाश बहादुरजी. सी. एस. आई. हैं, जिनका जन्म सन् १८४३ ई० में हुआ था। सन् १८०५ में गोरखों ने इस राज्यको ले लिया था परन्तु सन् १८१५ ई० में अंगरेजों ने गोरखोंको निकाल कर सिरमौरका राज्य वहांके राजाको दे दिया।

अम्बाला ।

जगाद्रीसे ३२ मील (सहारनपुरसे ५० मील) पश्चिमोत्तर अम्बाला छावनीका रेलवे जंक्शन और ३७ मील अम्वाले शहरका रेलवे स्टेशन है। अम्वाला शहर पञ्जाबमें किस्मत और जिलेका सदर स्थान समुद्रके जलसे १०४० फीट ऊपर "गागरा" नदीके ३ मील पूर्व (३० अंश २१ कला २५ विकला उत्तर अक्षांश: ७६ अंश ५२ कला १४ विकला पूर्व देशान्तर) में है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणनाके समय अम्बाला शहर और इसकी फौजी छावनीमें ७९२९४ मनुष्य थे (४७५११ पुरुष और ३१७८३ स्त्रियां) अर्थात् ४०३३९ हिन्दू, ३०५२३ मुसलमान, ४८९९ कृस्तान, २४०७ सिक्ख, ११११९ जैन, ६ पारसी और १ दूसरा। मनुष्य–गणनाके अनुसार यह भारतवर्ष में ३७ वाँ और पञ्जावमें ५ वाँ शहर है।

अम्वाले शहरमें देशी दुकानोंके अतिरिक्त कई एक यूरोपियन दुकानें; २ गिर्जे, १ बीमारखाना, १ खैराती दवाखाना, १ कोढ़ीखाना, और नये और पुराने दो महल्ले हैं. चौड़ी सड़कें और अच्छे अच्छे मकान बने हैं । अम्बालेमें रुई, गल्ला, तेलहन, सोंठ. दरी. कपड़े और लोहेकी बड़ी तिजारत होती है।

शहर और छावनीके बीचमें सिविल स्टेशन है. जिसमें कचहरीके मकानोंके अतिरिक्त खजाना, जेल और स्कूल भी हैं।

शहरसे ४ मील दक्षिणपूर्व फौजी छावनी ७२२० एकड़ भूमिपर फैली हुई है, जो सन् १८४३ ई० में नियत हुई थी। इसमें उत्तम सड़कें और सुन्दर बंगले बने हैं; पश्चिम भागमें फौजी लाइन है, जिसमें मामूली तरहसे आर्टिलरोके ३ बैटरी; १ यूरोपियन रेजीमेंट, १ देशी सवारकी रेजीमेंट, १ यूरोपियन पैदल रेजीमेंट और देशी पैदलकी रेजीमेंट रहती है।

अम्बाला छावनीके रेलवे स्टेशनसे दक्षिण कुछ पूर्व २६ मील थानेश्वर और १२३ मील दिल्ली, पूर्वोत्तर ३९ मील शिमलाके नीचे कालका; पश्चिमोत्तर ७१ मील लुधियाना और १०६ मील जलंधर और पूर्व दक्षिण ५० मील सहारनपुर है।

अम्बाला जिला—इस जिलेके पूर्वोत्तर हिमालय, उत्तर सतलज नदी; पश्चिम पटियाला का राज्य और लुधियाना जिला और दक्षिण कर्नाल जिला और यमुना नदी है। जिलेका क्षेत्रफल २५७० वर्गमील है ।

सतलज और यमुना जिलेकी सीमा पर और अन्य बहुतेरी छोटी नदियां जिलेके प्रत्येक भागमें बहती हैं। गागरा अर्थात् दृषद्वतीनदी नाहन राज्यसे निकलकर इस जिलेके कोताहा परगनेको लांघकर पटियालेके राज्यमें जाती है । अम्बाले और कालकाके बीचमें गागरा नदी पर रेलवेका पुल है। वर्षा ऋतुमें डाक हाथियोंपर जाती है।

सरस्वती गागराकी "सायक" नदी है, जो एक समय बहुत प्रसिद्ध नदी थी, यह अंबाले जिलेकी सीमा से बाहर नहान राज्यके नीची पहाड़ियोंमें निकलती है और अम्बाले जिलेके जाधवदरीके मैदानमें प्रकट होती है, कई बार बालूमें गुप्त होनेके उपरांत दक्षिण पश्चिमकी ओर बहती है और कर्नालको लांघनके पश्चात् पटियालेके राज्यमें गागरामें मिल जाती है।

पश्चिमी यमुना नहर इस जिलेमें हाथी कुण्डके निकटसे निकली है जिले में कई एक बड़े बनहैं, जिनमेंसे कालेश्वर जङ्गल बहुत प्रसिद्ध है, यह १३९१७ एकड़में फैला हुआ, बहुमूल्य

शालवृक्षोंसे परिपूर्ण है। वनों में भालू, बाघ हुंडार आदि वनजन्तु बहुत रहते हैं। अम्बाले जिलेमें पवित्र सरस्वती नदीके आस पास और कई एक कसबोंमें समय समयपर पर्व और मेले हुआ करते हैं। सन् १८९१ की मनुष्य गणनाके समय इस जिलेके जगाद्रीमें १३०२९, शाहाबादमें ११४७३; सधौरामें १०४४५ और रूपड़, बुरिया और थानेसरमें इनसे कम मनुष्य थे। इस जिलेमें चमार पुश्तहा पुश्तसे कुम्हारका काम करते हैं; अर्थात् मट्टीके वर्तन बनाते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय अम्बाले जिलेमें १०३३३६१ मनुष्य थे, इनमें लगभग एक तिहाई मनुष्य मुसलमान हैं। इस जिलेमें राजपूत, ब्राह्मण, जाट इत्यादि जातियोंमें भी बहुत मुसलमान हैं। जिनकी फिहरिस्त नीचे दी जाती है। जैसे मुसलमानी नाई, मुसलमानी धोबी इत्यादि होते हैं, वैसेही पञ्जाबमें राजपूत इत्यादि बहुत जाति मुसलमान हैं। वे लोग मुसलमानोंके राज्यके समय हिन्दूसे मुसलमान होगये थे। इनकी जाति प्रथमही की रहगई, मजहब मुसलमानी होगया। इनका विवाह अपनी जातके मुसलमान या दूसरे मुसलमानोंसे भी होता है। मनुष्य-गणनाके समय जहां जाति लिखी जाती है, वहां हिन्दू, मुसलमान तथा सिक्ख तीनों तरहके राजपूत राजपूतहीमें लिखे जाते हैं, परन्तु जहां मजहब लिखा जाता है, वहाँ हिन्दू राजपूत हिन्दूमें, मुसलमान राजपूत मुसलमानमें और सिक्ख राजपूत सिक्खमें लिखाते हैं, इसी प्रकार जाट आदि दूसरी जातके लोग भी।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय नीचे लिखी हुई जातियोंमें इस प्रकारसे हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख लिखे गये थे।

जाति.	संख्या.	हिन्दू.	मुसलमान.	सिक्ख.
जाट	१७१२५७	१११५४९	१२४२९	४७२७९
चमार	१४०७५१	१३०३४९	४	१०३९८
राजपूत	९१०३३	२२६०८	६९२२२	२०३
ब्राह्मण	६५०३५	६४३९६	३१६	३२३
साइनी	६३०५४	६१३४६	७२०	९८८
गूजर	५१०७७	२५४०८	२५६१४	५५
झिनवार	४७१०४	४४०३०	१९८२	१०९२
चुहरा	४१७५५	४०८७१	३१	८५३
बनिया	४००६१	३९०३४	०	८३
अरायन	३०८८१	३३६	३०५४५	०
तरखान	२५२६५	१९०९४	४६१०	१५६१
जुलाहा	२४९३१	३३००	२१५२४	११७
तेली	१७५७७	१७७	१७४००	०
लोहार	१६५५०	९०६६	७१४३	३४१
कुम्हार	१५५९८	१२८०८	२६२९	१६१
नाई	१४९३२	१०६०९	३९७१	३५२
कंबोह	१२९८८	१०१०६	१-१६५	१७१७

खत्री	८१५४	७६६८	५	४८१
सोनार	८३२३	६६४८	५७३	१०२
गड़रिया	६६७१	६६७१	०	०

इतिहास—अम्बाले जिले और इसके पड़ोसमें सरस्वती और गागरा (दृषद्वती) के बीचकी भूमि आर्यधर्मका पवित्र स्थान है। सरस्वतीमें स्नान करनेके लिये सब प्रदेशोंसे धार्मिक लोग आते हैं, इसके किनारों पर अनेक तीर्थ स्थान बने हैं, थानेश्वर और पोहवा इनमें प्रधान स्थान हैं। इसी देशमें कौरव और पाण्डवोंका बड़ा युद्ध हुआ था।

चीनका हुयत्संगने, जो सन् ६२९ ई० से ६४५ तक भारतवर्षमें रह गया था, एक राजाके आधीन, जिसकी राजधानी जगाद्रीके निकट श्रुगनामें थी, इस देशको देखा था। अम्बालेके चारों ओरका देश गजनी और गोरके खानदानोंके हाथमें आया था। सन् ई० के चौदहवीं शताब्दीमें अम्बा नामक राजपूतने अम्बाले शहरको बसाया। "अकबर" के आधीन अम्बाला जिला सरहिन्द सुबाहटका हिस्सा बना। सन् १८०८ ई० तक यह प्रसिद्ध नहीं था। सन् १८०९ में अङ्गरेजी सरकारने महाराज रणजीतसिंहसे संधि करके सतलजके इस पारके राजाओंको स्वतंत्र बनाया। सन् १८२३ में अम्बालेके राजा गुरबकससिंहकी विधवा दयाकुंआरिके मरने पर अङ्गरेजी सरकारने अम्बालेको अपने राज्यमें मिला लिया। सन् १८४३ में अम्बालेमें फौजी छावनी बनी। सन् १८४९ में, जब पञ्जाब अङ्गरेजी राज्यमें मिला लिया गया, अम्बाला एक जिलेका सदर स्थान बना।

थानेसर (कुरुक्षेत्र)

अम्बाला जंक्शनसे २६ मील दक्षिण थानेसरका रेलवे स्टेशन है। थानेसर पञ्जाबके अम्बाले जिलेमें पवित्रदेश कुरुक्षेत्रके मध्यमें रेलवे स्टेशनसे १ मील दूर सरस्वती नदीके निकट (२९ अंश ५८ कला ३० विकला उत्तर अक्षांश; और ७६ अंश ५२ कला पूर्व देशान्तरमें) एक कसबा है। ईश्वर (अर्थात् महादेव) के स्थान अथवा स्थाणुसरसे थानेसर नामकी उत्पत्ति है। यह कसबा भारतवर्षके सबसे अधिक प्राचीन और प्रसिद्ध कसबोंमेंसे एक है।

सन् १८८१ की मनुष्यगणनाके समय थानेसरमें १३०० मकान और ६००५ मनुष्य थे; अर्थात् ४१२९ हिन्दू, १७५८ मुसलमान, १०६ सिक्ख और १२ जैन। थानेसरमें विना गच किए हुए ईंटके दो मंजिले मकान अधिक हैं; जिनमेंसे बहुतेरोंकी छत मिट्टीसे पाटी हुई है; कश्मीर, पटियाले, जींद, नाभा, फरीदकोट आदि पंजाबके राजाओंके बड़े बड़े मकान बने हैं; जिनमें समय समय पर सदावर्त जारी होता है सड़कें साफ नहीं हैं, निवासी खास करके पंडे हैं, यात्रियोंकी आवश्यकीय वस्तु मिलती है; पंडेलोग अपने गृहमें यात्रियोंको टिकाते हैं। कसबेके आसपास स्थान स्थानमें करील, बबूल, बैर आदि लगे हुए हैं।

कसबेके निकट बहुतेरे सरोवर हैं; जिनमें कुरुक्षेत्र सरोवर, सान्निहित और स्थाणु ये ३ प्रधान हैं। प्रति अमावास्याको स्नानके लिये थानेसरमें बहुत यात्री आते हैं। साधारण तरहसे वहां वर्षमें तीन चार लाख यात्री पहुँचते हैं, परन्तु सूर्यग्रहणके समय आठ दश लाख यात्री भारतवर्षके प्रति विभागोंसे यहां आकर स्नान-दान करते हैं। कुरुक्षेत्रमें दान करनेका माहात्म्य अन्य सम्पूर्ण तीर्थोंसे अधिक है।

अन्तरगृहीकी परिक्रमा करनेमें (कुरुक्षेत्र सरोवरकी परिक्रमा छोड़ करके) मुझको ३ घण्टे लगे। नीचे लिखे हुए क्रमसे देवस्थान मिले। (१) कुरुक्षेत्र सरोवर—यह थानेसरमें स्नानका मुख्य स्थान कसवेसे ¾ मील दक्षिण सरस्वतीके जलसे भरा हुआ पवित्र सरोवर है; जिसकी लम्बाई पूर्व पश्चिमको १३०० गज और चौड़ाई ६५० गज तथा इसका घेरा २ मीलसे अधिक है। सरोवरके दक्षिणका बड़ा भाग मट्टीसे भर गया है, उसपर ववूल वैर आदि वृक्षोंका जङ्गल लग गया है जिसमें पक्षी वहुत रहते हैं। सरोवरके उत्तरीय भागमें कमल आदि जल उद्भिजसे पूर्ण स्वच्छ जल है और पश्चिम और उत्तर तथा १०० गज पूर्व नीचेसे ऊपरतक पक्की सीढ़ियां वनी हैं। सरोवरमें उत्तरके किनारेके मध्यसे ७५ गज दक्षिण ऊँची भूमिपर सूर्यघाट है। उत्तर-किनारेसे सूर्यघाट तक पुल वना है। सूर्यघाट पर स्नान, दान और एक मन्दिरमें गौरीशङ्करका दर्शन होता है। पुलसे लगभग ६० गज पश्चिम इसके समानान्तर रेखामें दूसरा पुल है; जिससे सरोवरके भीतरके चन्द्रकूपके निकट जाना होता है। वहां एक मन्दिरके समीप चन्द्रकूप नामक पवित्र कुआँ है। यात्रीगण कुरु-क्षेत्र सरोवरकी परिक्रमा करते हैं। सरोवरसे उत्तर श्रवणनाथ संन्यासीका वनवाया हुआ एक सुन्दर मन्दिर है, जिसके आँगनके वगलोंमें दो मञ्जिले मकान वने हैं, जिनमेंसे पूर्वके गृहमें श्रीकृष्ण और युधिष्टिर आदि पांचों पांडव और दक्षिणके गृहमें शिवलिङ्ग और कई देवमूर्त्तियां स्थापित हुई हैं। (२) नाभ कमल—एक पक्के सरोवरके किनारे एक मन्दिरमें भगवान् आदि देवता हैं। (३) रुद्रकर-एक पक्के सरोवरके समीप एक मन्दिरमें शिवलिङ्ग है। (४) स्थाणुतीर्थ-थानेसर कसवेसे उत्तर स्थाणुसर नामक एक वड़ा सरोवर है, जिसके चारों ओर पक्की सीढ़ियां वनी हैं; किनारों पर अनेक वृक्ष और कई एक देवमन्दिर हैं, पश्चिम किनारे पर स्थानेश्वर शिवका सुन्दर मन्दिर वना है। (५) ब्रह्मसर-पक्के सरोवरके किनारेपर एक छोटे मन्दिरमें ब्रह्माजीकी स्थापित चतुर्मुख शिवमूर्त्ति है। (६) देवी कूप—एक वड़े कूपके निकट एक मन्दिरमें देवीजीकी प्रतिमाहै। (७) पञ्चप्राची एक पक्का सरोवर है। (८) कुवेरभण्डार–छोटे सरोवरके किनारेपर कुवेर आदिकी मूर्त्तियाँ हैं। (९) सरस्वती–एक नालेमें थोड़ा जल है। (१०) दुर्गाकुण्ड–एक छोटा सरोवर है। (११) सन्निहित– यह थानेसर कसवेके पूर्व दक्षिण पुरइनसे भराहुआ नदीके समान लम्वा एक सरोवर है; जिसके पूर्व, उत्तर और पश्चिम पक्के घाट वने हैं, पश्चिम एक जनाना घाट, एक लक्ष्मीनारायणका मन्दिर और अनेक दूसरे मन्दिर हैं। इस परिक्रमाके मार्गमें फरीदकोटके राजाका एक उत्तम समाधि मन्दिर मिलताहै।

थानेसरके चारोंओर इस देशमें कुरुक्षेत्रके ३६० पवित्र स्थान हैं, वे वड़ी परिक्रमा करनेवालोंको मिलते हैं।

थानेसरका इतिहास—चीनके हुएनसंगने सन् ई० की सातवीं शताव्दीमें लिखा है कि ११६७ मील घेरेके एक राज्यकी राजधानी थानेसर है। सन् १०११ ई० में गजनीके महमूदने थानेसरको लूटा और मन्दिरोंका विनाश किया। सिक्खोंका वल वढ़नेपर यह मोथ-सिंहके हस्तगत हुआ। वह अपने भतीजेको अपना राज्य छोड़ गया। सन् १८५० में उस वंशके लोप होजाने पर थानेसर अङ्गरेजी सरकारके पास आया और कुछ दिनोंके लिये जिलेका सदर स्थान वना। सिविल स्टेशनके हट जानेके समयसे यह कसवा वहुत शीघ्र घट गया है।

पोहवा-थानेसर कसबेसे १३ मील पश्चिम-दक्षिण कुरुक्षेत्रकी सीमाके भीतर (अम्वाले जिलेमें) सरस्वती नदीके निकट पोहवा नामक एक छोटा पुराना कसवा और पवित्र स्थान है;जो पूर्व समयमें पृथूदक तीर्थके नामसे प्रसिद्ध था। महाभारत (वनपर्व) में पुष्करसमिती इसका नाम लिखा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय पोहवामें ४८४ मकान और ३४०८ मनुष्य थे, अर्थात् ३९६० हिन्दू, ४४२ मुसलमान और ६ सिक्ख।

सरस्वतीके बढ़नेपर कसबेके चारोंओर पानी होजाता है। कसबेके पुराने मन्दिरोंको मुसलमानोंने तोड़ दिया था। पोहवामें पुराने स्तम्भोंकी कई एक आश्चर्य निशानियाँ हैं, पुरुष और स्त्रियोंकी प्रतिमाओंसे छिपाहुआ कारीगरीसे युक्त एक पुराना दरवाजा है और उसी ढांचेका उससे बड़ा परन्तु सादा एक दूसरे फाटकका निशान है, ये दोनों फाटक कृष्ण भगवान्के बड़े मन्दिरके फाटक थे, भगवान्की प्रतिमा दोनों दरवाजोंके मध्यमें है। पोहवामें अनेक नये मन्दिर बनाए गए हैं। 'कैथल' के राजाके महलमें यात्री टिकते हैं। सरस्वतीमें थोड़ा पानी बहता है, परन्तु बाँध बाँधकरके स्नान करनेके योग्य पानी रक्खा जाता है।

आश्विन और चैत्रकी अमावस्याको पोहवामें मेला होताहै। विधवा स्त्रियाँ मेलेमें एकत्र होकर अपने अपने पतियोंके लिये विलाप करती हैं। थानेसरके बहुतेरे यात्री पोहवामें जाते हैं और सरस्वतीमें स्नान तर्पण और श्राद्ध करते हैं। अकाल मृत्युसे मरे हुए मनुष्योंके सम्बंधी लोग पोहवामें जाकर उनके उद्धारके लिये वहाँ श्राद्ध कर्म करते हैं।

सरस्वती नदी-यह अम्बाले जिलेकी सीमासे बाहर नाहन राज्यके नीची पहाड़ियोंसे निकलती है और अम्बाले जिलेके जाघबदरीके मैदानमें एक पवित्र स्थान में प्रकट होती है। कई एक मील मैदानमें बहनेके पश्चात् कुछ समयके लिये बालूमें गुप्त होजाती है. परन्तु ३ मील दक्षिण भूमिके भीतर बहनेके उपरांत "भावतपुर" के निकट फिर प्रकट होजाती है, 'बलछपुर' के निकट यह फिर भूमिमें गुप्त होती है, परन्तु फिर प्रकट होकर दक्षिण पश्चिम की ओर बहती है। इस प्रकारसे यह नदी थानेसर कसबे और कुरुक्षेत्रके अन्य कई स्थानों में होती हुई कर्नाल जिलेको लाँघकर पटियालेके राज्यमें गागरा (दृषद्वती) नदीमें मिल जाती है। पुराने समयमें यह नदी राजपूतानेके मैदानके पारतक बहती थी, बहावलपुरके मीरगढतक सरस्वतीके छोड़े हुए बेड़का अबतक पता लगता है, परन्तु राजपूताने भटनेरके समीप इसकी धारा गुप्त होजाती है।

कुरुक्षेत्र—अम्बाले और कर्नाल जिलेमें तथा थानेसरसे ६४ मील दूर जींद कसबेतक लोगोंके कहनेके अनुसार कुरुक्षेत्रमें ३६० तीर्थ स्थान हैं। यह निश्चय है कि सरस्वती और गागरा (दृषद्वती) के बीचका देश आरम्भहीसे आर्यधर्मका गृह बना था। कुरुक्षेत्रकी राजधानी "श्रुगना" थी, जिस स्थानपर जगाद्री और बुरियाके समीप "शुग" गाँव है। चीनके हुएत्संगने सन् ई० के सातवीं शताब्दीमें श्रुगनाको एक राज्यकी राजधानी लिखा है। कुरुक्षेत्रमें थानेसर और पोहवा यात्राका प्रधान स्थान है, परन्तु सरस्वतीके आसपास बहुतेरे मीलोंतक छोटे छोटे बहुतेरे तीर्थ स्थान हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—मनुस्मृति (दूसरा अध्याय) सरस्वती और दृषद्वती इन दोनों देवनिर्मित नदियोंके अन्तरवर्त्ती देवनिर्मित देशको ब्रह्मावर्त्त कहते हैं। इस देशमें चारों वर्ण और शङ्कर जातियोंके बीच जो आचार परम्परा क्रमसे चले आते हैं; उसे सदाचार कहते हैं।

व्यासस्मृति—(चौथा अध्याय) मनुष्य कुरुक्षेत्र तीर्थको करके सब पापोंसे विमुक्त होजाता है।

शङ्खस्मृति—(१४ वाँ अध्याय) कुरुक्षेत्रमें दान करनेवाले मनुष्यको अनन्त फल मिलता है।

महाभारत—(आदिपर्व, प्रथम अध्याय) परशुरामने क्षत्रीकुलका सत्यानाश कर उनके शोणितसे समन्तपञ्चकमें ५ ह्रद बनाये और पितृगणोंसे यह वर माँगा, कि ये ह्रद भूमण्डलमें प्रसिद्ध तीर्थ बनें। इन ह्रदोंके आसपासका देश पवित्र समन्तपञ्चक नामसे प्रसिद्ध हुआ; उसी देशमें कुरु और पाण्डवोंका संग्राम हुआ था।

(९४ वाँ अध्याय) पुरुवंशी राजा भरतके पश्चात् छठवीं पीढ़ीमें राजा संवरणका पुत्र राजा कुरु हुआ, जिसकी तपस्या करनेसे कुरुजाङ्गल नामक स्थान, उसके नामके अनुसार कुरुक्षेत्र नामसे प्रसिद्ध हुआ।

(वनपर्व ८३ अध्याय) सरस्वतीसे दक्षिण और दृषद्वती नदीसे उत्तर कुरुक्षेत्रमें जो लोग बसते हैं, वे स्वर्गवासी हैं। उसके पुष्करसम्मिती तीर्थमें स्नान करके पितर और देवतोंका तर्पण करना चाहिये वहीं परशुरामने भारी काम किया था, वहाँ जानेसे पुरुष कृतकृत्य होजाता है और अश्वमेधका फल लाभ करता है। तीर्थसेवी पुरुष रामसरमें स्नान करें; तेजस्वी परशुरामने वहीं क्षत्रियोंको मार तड़ागोंको रुधिरसे भरकर अपने पितर और पूर्व पितरोंका तर्पण किया था। पितरोंने परशुरामको यह वरदान दिया, कि तुम्हारे यह तालाब निःसन्देह तीर्थ होजायँगे; जो कोई तुम्हारे इन तीर्थोंमें स्नान करके अपने पितरोंका तर्पण करेगा; उसको पितर लोग प्रसन्न होकर जगतमें दुर्लभ कामना देंगे और सनातन स्वर्गमें पहुँचावेंगे।

चन्द्रग्रहणमें कुरुक्षेत्रमें स्नान करनेसे १०० अश्वमेधका फल होता है। पृथ्वी और आकाशके सम्पूर्ण तीर्थ और नदी, कुण्ड, तड़ाग, झरने, तलैया और बावड़ी अमावास्याके दिन प्रतिमास कुरुक्षेत्रमें आती हैं; इसी निमित्त कुरुक्षेत्रका दूसरा नाम सन्निहित है; उसमें स्नान कर और उसका जल पीकर पुरुष ब्रह्मलोकमें जाता है।

आकाशमें पुष्कर और पृथ्वीमें नैमिषारण्य सर्वोपरि है और कुरुक्षेत्र तीनों लोकमें श्रेष्ठ है। कुरुक्षेत्रकी धूल जो वायुसे उड़ती है, उससे भी महा पापी पुरुष मोक्ष पा सक्ता है। सरस्वतीके दक्षिण और दृषद्वती नदीके उत्तर कुरुक्षेत्रमें जो पुरुष निवास करते हैं, वे स्वर्गवासी हैं। परशुरामके तड़ाग और "मचकुक" तीर्थके बीचकी भूमिका नाम कुरुक्षेत्र है; इसीको समन्तपञ्चक भी कहते हैं; यह ब्रह्माकी उत्तर वेदी है।

(११७ वाँ अध्याय) परशुरामने २१ वार पृथ्वीको क्षत्रियोंसे रहित करदिया और समन्तपञ्चक तीर्थमें जाकर क्षत्रियोंके रुधिरसे ५ तालाबोंको भरदिया।

(उद्योगपर्व—१५१ अध्याय) युधिष्ठिरने श्मशान, देवालय, महर्षियोंके आश्रम, तीर्थ और मन्दिरोंको छोड़कर उपजाऊ और पवित्र भूमिमें अपनी सेनाका निवास स्थान ठहराया। (१५९ वाँ अध्याय) पाण्डवोंने हिरण्वती नदीके किनारे शिविर स्थापित किया। (१९७ अध्याय) ५ योजनके परिमाण परिधियुक्त स्थानको प्राप्त कर कौरवोंकी सेना इकट्ठी हुई; वहाँ पर सब राजाओंने उत्साह और बलके अनुसार अनेक शिविर तय्यार कराये। (इसके पश्चात् कुरुक्षेत्रमें कौरव और पाण्डवोंका जगत् विख्यात भयङ्कर संग्राम हुआ)।

(शल्यपर्व–३८ अध्याय) जब महाराज कुरुने कुरुक्षेत्रमें यज्ञ किया, तब उनके ध्यान करनेसे ऋषभ देशको छोडकर 'सुरेणु' नामक सरस्वती कुरुक्षेत्रमें पहुँची । 'ओघवती, नामक सरस्वती वशिष्ठके ध्यान करनेसे कुरुक्षेत्रमें आई थी । जगत्में ७ सरस्वती हैं; पुष्करमें सुप्रभा, नैमिषारण्यमें कांचनाक्षी, गयामें विशाला, अयोध्यामें मनोरमा, कुरुक्षेत्रम ओघवती, गङ्गाद्वारमें सुरेणु और हिमालयमें विमलोदका ।

(५३ अध्याय) महात्मा कुरुने अनेक वर्ष तक इसमें निवास किया था और इस पृथ्वीको जोता था, इस लिये इसका नाम कुरुक्षेत्र हुआ । जो मनुष्य यहां दान देते हैं, उसका वह दान शीघ्रही सहस्रगुण होजाता है । (५५ अध्याय) कुरुक्षेत्र ब्रह्माकी उत्तर वेदी है ।

(शांति पर्व १५२ वां अध्याय) पण्डितलोग कुरुक्षेत्रको पवित्र तीर्थ कहा करते हैं । कुरुक्षेत्रसे सरस्वती और सरस्वतीसे पृथूदक तीर्थ पवित्र है जिसके स्नान और जलपान करनेसे मनुष्य अकालमृत्युसे शोकित नहीं होते ।

लिंगपुराण—(३६ अध्याय) जिस युद्धमें शिव-भक्त दधीचिसे राजा क्षुप और विष्णु परास्त हुए; उस स्थानका नाम स्थानेश्वर हुआ; वहां शरीर त्याग करनेसे शिवलोक मिलता है (यही कथा शिवपुराण, दूसरा खण्ड; ३२ वें अध्यायमें भी है) ।

वामन पुराण—(२२ अध्याय) राजा सम्वरणके पुत्र कुरुने द्वैतवनमें प्राप्त हो सरस्वती नदीको देखा । पीछे वह ब्रह्माकी उत्तरवेदीको गये, जहां बीस बीस कोस चारों ओर 'स्यमन्तपञ्चक' नामक क्षेत्र है । राजा कुरुने उस क्षेत्रको उत्तम माना और कीर्तिके लिये सोनाका 'हल' बनाकर महादेवके वृष और धर्मराजके भैंसेको हलमें लगाया । वह प्रतिदिन उसी हलसे सात कोस चारों तरफ पृथ्वीको बाहने लगे । इसके अनन्तर राजा कुरुने विष्णुके प्रसन्न होनेपर यह वरदान मांगा, कि जहां तक मैंने यह पृथ्वी बाही है, वह धर्मक्षेत्र हो जाय । यज्ञ; दान, उपवास; स्नान, जप, होम, आदि शुभ और अशुभ काम जो इस क्षेत्रमें किया जाय, वह अक्षय होजाय और आप तथा महादेव, सब देवताओंके साथ यहां वास करें ।

आदिमें यह स्थान ब्रह्माजीकी वेदी कहाया पीछे रामह्रदके नामसेवि ख्यात हुआ और कुरु राजाके हलसे बाहनेपर कुरुक्षेत्रके नामसे प्रसिद्ध हुआ ।

(३३ अध्याय) सरस्वती और दृषद्वती इन दो नदियोंके बीचमें जो अन्तर है वह देव निर्मित ब्रह्मावर्त देश कहलाता है ।

जो मनुष्य सन्निहित तीर्थमें स्नानकर सरस्वतीके तटपर स्थित रहता है, वह ब्रह्मज्ञान पाता है । कुरुक्षेत्रमें सन्निहित तीर्थ ब्रह्मवेदी है । जो मनुष्य नियमकर सन्निहितकी परिक्रमा करता है, उसका विघ्न नाश होजाता है ।

(३४ अध्याय) विष्णुने कुरुक्षेत्रमें वाराह तीर्थ विख्यात किया है, वहां स्नान करनेसे परमपदकी प्राप्ति होतीहै । पुष्कर तीर्थमें परशुरामजीके किए हुए तीर्थ हैं; जिनमें पितरोंके पूजन करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल होताहै ।

(३५ अध्याय) कुरुक्षेत्रमें रामह्रद है, जहां परशुरामजीने सब क्षत्रियोंको मारकर उनके रुधिरोंसे ५ ह्रद पूरित किये हैं, जो संसारमें उत्तम तीर्थ करके विख्यात हैं । जो व्यक्ति उनमें स्नान कर अपने पितरोंको तृप्त करेगा, उसको पितर लोग मनोवाञ्छित फल देंगे ।

(४१ अध्याय) सूर्य्यग्रहणमें सन्निहित तीर्थमें श्राद्ध करनेसे महाफल होताहै ।

(४३ अध्याय) नारायणने जलके भीतर जगत्को जानकर अण्डेका विभाग किया जिससे पृथ्वी हुई। जिस स्थानमें अण्डा स्थित हुआ, वहांही सन्निहित सरोवर है । आदिके निकले हुए तेजसे आदित्य (सूर्य) और अण्डके मध्यमें ब्रह्मा उत्पन्न हुए।

(४४ अध्याय) ऋषियोंके शापसे शिवलिङ्गके गिरनेपर जगत्में बड़ा उपद्रव होनेलगा। पीछे शिवजीने ब्रह्माकी स्तुतिसे प्रसन्न होकर ऐसा कहा कि जो लिङ्ग गिरा है, वह सन्निहित तीर्थमें प्रतिष्ठित होजाय। जब गिरा हुआ शिवलिङ्ग किसीसे न उठा, तब शिवजीने हस्ती–रूप धारणकर दारुकवनसे अपने सुण्ड द्वारा उस लिङ्गको लाकर सरकी पश्चिमी पार्श्वमें निवेशित किया।

(४५ अध्याय) स्थाणु लिङ्गके दर्शनके माहात्म्यसे मनुष्योंसे स्वर्ग पूर्ण होने लगा। स्थाणु तीर्थमें स्नान, लिङ्गके दर्शन और वटके स्पर्श करनेसे मुक्ति और मनोवांछित फल प्राप्त होत हैं।

चैत्र महीनेके कृष्णपक्षकी चतुर्दशीके दिन "रुद्रकर" तीर्थमें स्नान करनेसे परमपद प्राप्त होता है।

(४६ अध्याय) स्थाणुवटके उत्तरकी ओर शुक्रतीर्थ पूर्वकी तरफ सोमतीर्थ, दक्षिणकी ओर दक्षतीर्थ, पश्चिमकी तरफ स्कन्दतीर्थ और इनके मध्यमें स्थाणुतीर्थ है। वटके उत्तर महालिंग और पूर्व विश्वकर्माका रचा लिंग है। वहाँही लिंगरूपसे सरस्वती स्थित हैं। वटके पार्श्वमें ब्रह्माका प्रतिष्ठित किया हुआ शिवलिङ्ग है।

(४९ अध्याय) ब्रह्मा अपनी कन्याको देख मोहित हुए, उस पापसे ब्रह्माका सिर कट गया। पीछे ब्रह्माने कटे हुए सिरके सहित सन्निहित तीर्थमें जाकर स्थाणु तीर्थमें सरस्वतीके उत्तर तीरपर ४ मुखवाले शिवको प्रतिष्ठाकर आराधन किया, तब वह पाप रहित होगए। इस प्रकारसे ब्रह्मसर प्रतिष्ठित हुआ ।

(५७ अध्याय) कुरुक्षेत्रमें ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र आदि सब देवताओंने स्वामिकार्तिकका अभिषेक किया और उनको सेनापति बनाया। (८९ अध्याय) राजा बलिने कुरुक्षेत्रमें यज्ञ किया, (९२) वामनजीने जाकर ३ पग पृथ्वी बलिसे मांगी और बलिने देदी।

मत्स्यपुराण–(१०८ अध्याय) पृथ्वीपर नैमिषारण्यतीर्थ और आकाशमें पुष्करतीर्थ श्रेष्ठ है, परन्तु कुरुक्षेत्र तो तीनों लोकमें सर्वोपरितीर्थ है । (१९१ अध्याय) सूर्यग्रहणमें महापुण्यवाले कुरुक्षेत्रको सेवते हैं। (२४३ अध्याय) कुरुक्षेत्रमें वामनजीकी मूर्ति है ।

स्कन्दपुराण–(सेतुबन्ध खण्ड–३० अध्याय) कुरुक्षेत्रमें दान देनेसे ब्रह्महत्या आदि पाप नष्ट होते हैं।

पद्मपुराण–(सृष्टिखण्ड, १८ वाँ अध्याय) कार्तिक और वैशाखकी पूर्णिमासी; चन्द्र-ग्रहण और सूर्यग्रहण कुरुजांगलदेशमें पुण्यकाल कहाते हैं। (पातालखण्ड ९१ अध्याय) सूर्यग्रहणमें कुरुक्षेत्र मोक्षदायक होताहै ।

गरुड़पुराण–(पूर्वार्द्ध ६६ वाँ अध्याय) कुरुक्षेत्र तीर्थ सम्पूर्ण पापोंका नाश करनेवाला और भुक्ति मुक्ति देनेवाला है। (८१ वाँ अध्याय) कुरुक्षेत्रमें दान तपस्या आदि कर्म करनेसे भुक्ति मुक्ति मिलती है।

अग्निपुराण–(१०८ वाँ अध्याय) कुरुक्षेत्रमें निवास करनेसे वैकुण्ठ मिलता है और 'कुरुक्षेत्र'' ऐसा शब्द सर्वदा उच्चारण करनेसे स्वर्गमें बास होताहै । कुरुक्षेत्रमें विष्णु आदि देवता निवास करते हैं । वहां सरस्वती नदीमें स्नान करनेसे ब्रह्मलोक प्राप्त होताहै । कुरुक्षेत्रका रजभी परमगतिको देनेवाला है, तो वहाँके देवताओंके दर्शनके फलका क्या वर्णन कियाजाय । (१८ वाँ अध्याय) कुरुक्षेत्रमें विधिपूर्वक श्राद्ध करनेसे अक्षय फल प्राप्त होताहै ।

कूर्मपुराण–(उत्तरार्द्ध ३६ वाँ अध्याय) ब्राह्मणोंकरके सेवित कुरुजांगल तीर्थ है, जिसमें विधिपूर्वक दानदेनेसे ब्रह्मलोक प्राप्त होता है ।

सौरपुराण–(६७ वाँ अध्याय) कुरुक्षेत्रमें महेश्वर नामक शिव हैं; वहां ब्रह्माजीने तप करके ब्रह्मत्वको पाया और बालखिल्यादि ब्राह्मणोंने परमसिद्धि लाभ की ।

श्रीमद्भागवत–(१० वाँ स्कन्ध ८२ अध्याय) एक समय सूर्यग्रहण आया; सब ओरसे मनुष्य दान स्नान करनेके लिये कुरुक्षेत्रको जाने लगे, जहां परशुरामजीने पृथ्वीको २१ वार निःक्षत्रिय करके राजाओंके रुधिरसे कुण्ड भरदिये थे और कुरुक्षेत्रमें यज्ञ किया था । तीर्थ यात्रामें सम्पूर्ण भरतखण्डकी प्रजा आई । उसी प्रकार अक्रूर, वसुदेव, राजा उग्रसेन, आदि द्वारिका वासियोंने कुरुक्षेत्रमें आकर परशुरामजीके सरोवरमें स्नान करके ब्राह्मणोंको बहुत सुवर्णदान दिया । वहां नन्द आदिक ब्रजगोप और भीष्म, धृतराष्ट्र पाण्डव आदि कौरवओंसे कृष्णचन्द्र आदि यदुवंशियोंकी भेंट हुई । (८४ अध्याय) वसुदेवजीने कुरुक्षेत्रमें विधिवर्क यज्ञ किया ।

कर्नाल ।

थानेसरसे २१ मील (अम्बाला जंक्शनसे ४७ मील) दक्षिण और दिल्लीसे ७६ मील उत्तर कर्नालका रेलवे स्टेशन है । पञ्जाबके दिल्ली विभागमें जिलेका सदर स्थान ऊँची भूमि पर यमुनाकी पश्चिमी नहरके निकट कर्नाल एक पुराना कसबा है । पूर्वकालमें यमुना कर्नाल होकर बहती थीं, जो अब ७ मील पूर्व है ।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय कर्नालमें २१९६३ मनुष्य थे; अर्थात् १४३८० हिन्दू, ७३७७ मुसलमान, १८४ जैन, ६३ कृस्तान और ५९ सिक्ख ।

कर्नाल कसबेका शहरपनाह १२ फीट ऊँचा है और इसकी सड़कें तङ्ग और टेढ़ी हैं । कसबेके बाहर टौनहाल, खैराती असपताल और कई एक स्कूल हैं । कसबेके उत्तर छावनीके स्थान पर सिविल स्टेशन फैला है । कसबेमें एक सुन्दर मसजिद और सन् १८६५ का बना हुआ एक मिशन स्टेशन है । कर्नालका पुराना किला अब जिलास्कूलके काममें आता है ।

कर्नालमें देशी कपड़ा, कम्बल और बूट बनते हैं ।

कर्नाल जिला—यह दिल्ली विभागके उत्तरी जिला है । इसके उत्तर अम्बाला जिला और पटियालेका राज्य, पश्चिम पटियाला और "जींद" के देशी राज्य, दक्षिण दिल्ली और "रोहतक" जिले और पूर्व यमुना नदी, बाद पश्चिमोत्तर देशमें सहारनपुर, मुजफ्फरनगर और मेरठ जिले हैं । जिलेका क्षेत्रफल २३९६ वर्गमील है, इसमें कर्नाल, पानीपत और कैथल ३ तहसील हैं । जिलेके पश्चिमोत्तरकी सीमाके निकट गागरा अर्थात् दृषद्वती और सरस्वती नदी और जिलेमें पश्चिमी यमुना नहर और इसकी कई एक शाखा हैं ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेमें ६७३०२२ मनुष्य थे। जिलेके ३ कसवेंमें ५ हजारसे अधिक मनुष्य थे; पानीपतमें २७५४७, कर्नालमें २१९६३ और कैथलमें १५७६८। जिलेमें जाट सब जातियोंसे अधिक हैं; इनके पश्चात् ब्राह्मण, राजपूत और चमारोंके नम्बर हैं। राजपूतोंमें खास करके मुसलमान हैं।

इतिहास—ऐसा कहा जाता है कि राजा दुर्योधनके सेनापति कुन्तीके पुत्र राजा कर्णने कर्नालको वसाया। उन्हींके नामसे इसका कर्नाल नाम पड़ा (महाभारत-आदिपर्वके १३७ वें अध्यायमें लिखा है कि राजा दुर्योधनने कर्णको अङ्गदेशका राजा बनाया)। कर्नाल जिलेका उत्तरीय वड़ा भाग कुरुक्षेत्रमें शामिल है और दक्षिणमें पानीपत उन पाँच गांवोंमेंसे है; जिनको युधिष्ठिरने दुर्योधनसे माँगा था।

सन् १७३९ ई० में "नादिरशाहइरानी" ने मुगल वादशाह महम्मदशाहको कर्नालमें परास्त किया। २ घंटेकी लड़ाईमें २०००० हिन्दुस्तानी सैनिक मारे गये और इससे भी अधिक कैदी वनाये गए। वहुत वड़ा खजाना और वहुत हाथी नादिरशाहको मिले। इरानी सेनाकी नुकसानी ५०० से २५०० तक अनेक प्रकारसे कही जाती है। दूसरे दिन महम्मद-शाहके परास्त होने पर नादिरशाह दिल्लीको चला और ५८ दिनोंतक दिल्लीमें लूट करनेके उपरान्त ३२ करोड़ रुपयेका तकसीमी धन लेकर पारसको चलागया।

अठारहवीं शताव्दीके मध्यमें जींदके राजाने कर्नाल कसवेपर अधिकार किया। सन् १७९५ ई०में अङ्गरजोंने इसको लेलिया, परन्तु शीघ्रही 'लड़वा' के सिक्ख राजाने इसको छीनलिया। सन् १८०५ में यह फिर अङ्गरेजोंके आधीन हुआ। सन् १८४१ तक कर्नालके किलेमें अङ्ग-रेजी फौजी छावनी थी, पर यहाँके पानी पवन अस्वास्थ्य कर रहनेके कारण पीछे छावनी उठा दी गई। सन् १८४० ई० में कावुलके अमीर दोस्त महम्मदखां ६ मास तक कर्नालमें कैद रखकर कलकत्ते भेजे गये।

पानीपत।

कर्नालसे २१ मील (अम्वाला जंक्शनसे ६८ मील) दक्षिण और दिल्लीसे ५५ मील उत्तर पानीपतका रेलवे स्टेशन है। पञ्जावके कर्नाल जिलेमें तहसीलका सदर स्थान और जिलेका प्रधान कसवा पानीपत है। जो सन् १८५४ ई० तक पानीपत जिलेका सदर स्थान था।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इसमें २७५४७ मनुष्य थे; (१४३१२ पुरुष और १३२३५ स्त्रियां); अर्थात् १८६८० मुसलमान, ८१०६ हिन्दू, ७१७ जैन ३९ सिक्ख और ५ कृस्तान।

कसवेके चारों ओर पुरानी दीवार और १५ फाटक हैं। यहां मामूली सब डिविजनके आफिसों और कचहरियोंके अतिरिक्त एक वड़ी सराय, पुलिसष्टेशन और स्कूल है और देशी कपडा, कम्वल तथा तांवेके वर्तन बनते हैं।

इतिहास—महाभारत-उद्योग पर्वके ३१ वां अध्यायमें लिखा है कि राजा युधिष्ठिरने दुर्योधनसे कहा था कि आधा राज्य हमको नहीं दोगे तो अविस्थल, वृकस्थल, माकंदी, वारणावत और पांचवां जो तुम्हारी इच्छा हो; यही पांच गांव हमको देदो, ऐसा प्रसिद्ध कि उन्हीं गांवोंमेंसे एक पानीपत है।

थानेसर और दिल्लीके बीचकी भूमि पुराने समयसे भारतवर्षकी लड़ाईका मैदान है। निम्न लिखित ३ लड़ाइयोंके लिये पानीपत प्रसिद्ध है, (१) सन् १५२६ के २१ अपरैलको बाबरने अफगान इब्राहीम लोदीको पानीपतके निकट परास्त किया। मुगलोंके कहनेके अनुसार १५००० अफगान उस युद्धमें मरे थे। मुगलोंने भागे हुए अफगानोंका आगरा तक पीछा किया। इब्राहीम लोदी भी मारागया। लड़ाईके तीसरे दिन बाबर दिल्लीमें पहुँचा। (२) दूसरी बड़ी लड़ाई सन् १५५६ ई० में हुई। अकबरने सुलतान महम्मद साह आदिकके जनरल शेरशाहके भतीजे 'हिमू' को परास्त किया। हिमूके पास पैदल सेनाके अतिरिक्त ५००० घोड़सवार और ५०० हाथी थे। लडाईके अन्तमें वह मारा गया। इसी लड़ाईसे अफगानवंशका अन्त होकर तमूरवंश अर्थात् मुगलका राज्य नियत हुआ। (३) तीसरी लड़ाई पानीपतके निकट सन् १७६१ ई० में हुई। तारीख ७ जनवरीको अहमदशाह दुर्रानीने महाराष्ट्रोंकी सम्पूर्ण सेनाको परास्त किया। उस समय हुलकर, सिंधिया, गायकवाड और पेशवा सम्पूर्ण प्रसिद्ध महाराष्ट्र राजा अपनी अपनी सेनाओंके सहित रणभूमिमें वर्तमान थे। लोग कहते हैं कि महाराष्ट्रोंकी सेनामें १५००० पैदल, ५५००० घोड़सवार २०० तोप और २००००० पिंडारी और खीमेंबरदार थे और अफगानोंकी सेनामें ३८००० पैदल, ४२००० घोड़सवार और ३० तोपें थीं। जब विश्वासराव पेशवाके बड़े पुत्र मरने योग्य घायल हुए और हुलकरके चलेजाने पर गायकवाड़ भी चला गया, तब महाराष्ट्र लोग भागे और हजारहां काट दिए गए। अफगानोंने बहुतेरे पुरुष, स्त्री और लड़कोंको पकड़कर अपना दास बनाया।

शिमला।

अम्बाला जंक्शनसे ३९ मील पूर्वोत्तर पहाड़के पादमूलमें समुद्रके जलसे २४०० फीटकी उँचाई पर 'कालका' रेलवे स्टेशन है। कालकासे शिमला जानेके लिये पुरानी और नई दो सड़के हैं। पुरानी सड़क कालकासे 'जुटोग' होकर शिमले तक ४१ मील है, उसी सड़कसे मुसाफिर लोग 'झंपान' या टट्टू पर चढ़ करके 'कसौली' जाते हैं, कालकासे ९ मील दूर समुद्रके जलसे ६३२२ फीट ऊपर पहाड़ी पर कसौली एक फौजी छावनी है। नई सड़क पुरानी सड़कसे पूर्व है, इस सड़कसे 'तांगा' (एक प्रकारका एका) शिमला जाता है, कालकासे १५ मील धर्मपुर, २७ मील सोलोन, ४२ मील केरीघाट और ५७ मील शिमला है। सड़क कालकासे धर्मपुर तक तंग है, वहांसे सोलोन फोजी स्टेशन तक उत्तम है, परन्तु अन्तमें ३ मील खड़ी उतराई है, सोलोनसे आगे दूर तक सुगम चढ़ाई है, तांगा तेज जाता है, अन्तकी १० मील सड़क गहिडी घाटीके पूर्व बगलमें घुमावकी है। और धीरे धीरे केरीघाटके डाक बंगले तक ऊंची होती गई है। तांगा लगभग ७ घण्टेमें शिमला पहुँच जाता है।

शिमला पंजाबके अम्बाले विभागमें जिलेका सदर स्थान और भारतगवर्नमेन्टकी गर्मीके दिनोंकी राजधानी (३१ अंश ६ कला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश ११ कला पूर्व देशान्तरमें) एक पहाड़ी कसबा है, जिसकी औसत उँचाई समुद्रके जलसे ७०८४ फीट है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय शिमले और इसकी छावनीमें १३८३६ मनुष्य थे; अर्थात् १०१८० पुरुष और ३६५६ स्त्रियां। इनमें ८४८४ हिन्दू, ३४८९ मुसलमान, १५८७ क्रस्तान, २४८ सिक्ख, २२ जैन, ३ पारसी और ३ दूसरे थे।

पूर्वसे पश्चिम ५ मील लम्बे पहाड़ी सिलसिलेके ऊपर नये चन्द्रमाकी शकलमें यूरोपियन कोठियां फैली हैं। नीचेकी घाटीमें कई एक धारें हैं, जिनमें २ झरने बड़े हैं। सिलसिलेके पूर्व भागको छोटा शिमला कहते हैं और पश्चिम वेलीगञ्ज है। स्टेशनसे अखीर पश्चिम एक ऊंची खड़ी पहाड़ीके सिरपर 'जुटोग' एक छोटा फौजी मकान है, जिससे १½ मील पूर्व 'प्रस्पेक्ट' पहाड़ी समुद्रके जलसे ७१४० फीट ऊँची है। पहाड़ीके १ मील पूर्व वाइसरायकी पुरानी कोठी है, जिससे ६५० गज पश्चिम अवजरवटेरी पहाड़ीपर उत्तम गवर्नमेन्ट 'हाउस' बना है। शिमलेमें कई स्कूल, लड़कियोंका स्कूल, सुन्दर टाउनहाल, ३ अङ्गरेजी वङ्क, १ क्लब कई एक गिर्जे कई एक अङ्गरेजी दूकान, जिलेकी कचहरियां, खजाना, तहसील, टेलिग्राफ ऑफीस कई एक अस्पताल हैं। भारतवर्षके गवर्नमेन्ट जाड़ेके दिनोंके अतिरिक्त लगभग ८ महीने कलकत्तेको छोड़कर शिमलेमें रहते हैं। शिमलेका पानी, पवन अनामय कर है। वहाँसे चारों ओर उत्तम दृश्य देख पड़ता है।

शिमला जिला—शिमलेके डिपोटी कमिश्नरके आधीन कई एक देशी राज्योंसे घेरे हुए शिमले जिलेके कई टुकड़े हैं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय शिमले जिलेके अङ्गरेजी राज्यका क्षेत्रफल ८१ वर्ग मील और इसकी मनुष्य-संख्या ४४५९१ थी। जिलेमें कानेट, कोली और चमार दूसरी जातियोंसे अधिक वसते हैं; इनके बाद ब्राह्मण और राजपूतोंकी संख्या है। इस जिलेमें दगसाई, कसौली, सुवाथू, सोलोन और कालका बड़ी वस्ती हैं।

शिमलेका इतिहास—अङ्गरेजी सरकारने सन् १८१५-१६ ई० की गोरखा लड़ाईके समय शिमलेको स्वास्थ्यकर स्थान समझ कर नैपालके महाराजसे लेलिया। सन् १८१९ में लेफ्टिनेंट रासने शिमलेमें रहनेके लिये लकड़ोका एक छोटा मकान बनाया। सन् १८२१ में उसके बादके लेफ्टिनेंट केंड़ीने सर्वदाके लिये वहाँ एक कोठी बनाई। सन् १८२६ में शिमला एक मुकाम होगया। सन् १८२९ में लार्ड एम्हरेष्टने शिमलेमें एक गर्मीका मोसिम बिताया, उस समयसे वहाँ बहुत यूरोपियन रहने लगे। सन् १८६४ ई० गवर्नरजनरल सर जान लारेंसके समयसे शिमला भारतवर्षकी गर्मीकी ऋतुओंकी राजधानी हुआ है। ज्योंही गर्मीकी ऋतु आरंभ होती है, वाइसराय और सरकारी अफसर कलकत्तेसे शिमलेमें पहुँच जाते हैं।

बारहवां अध्याय।

(पञ्जाबमें) पटियाला, नाभा, फरीदकोट, सरहिंद, लुधियाना, मलियरकोटला, फिलौर, जलंधर और कपुरथला।

पटियाला।

अम्बाला जंक्शनसे १७ मील पश्चिमोत्तर राजपुर रेलवेका जंक्शन है; जहांसे "नर्थवेष्टर्न" रेलवे, की शाखा पश्चिम 'भटिंडा' में जाकर वम्बे वड़ोदा और संट्रल इंडियन रेलवेमें मिली

है; इसी शाखपर राजपुरसे १६ मील पटियाला, ३२ मील नाभा, ६८ मील बर्नाला और १०८ मील भटिंडा जंक्शन है।

राजपुर जंक्शनसे १६ मील पश्चिम पटियालेका रेलवे स्टेशन है। पटियाला पञ्जाबमें बड़े देशी राज्यकी राजधानी (३० अंश २० कला उत्तर अक्षांश; ७६ अंश २५ कला पूर्व देशांतरमें) एक छोटा शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पटियालेमें ५५८५६ मनुष्य थे; अर्थात् २७६२९ हिन्दू, २२१२१ मुसलमान, ५७५५ सिक्ख, २३४ जैन, ६२ क्रस्तान और ५५ पारसी। मनुष्यगणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ६८ वाँ और (काश्मीरको छोड़कर) पञ्जाबके देशी राज्योंमें पहिला शहर है।

पटियालेमें महाराजका महल और कचहरियां सुन्दर बनी हैं; कई एक बाग लगे हैं; प्रधान सड़कपर रातमें रोशनी होती है, महाराजकी ओरसे स्कूल और अस्पताल हैं।

पटियाला राज्य–इस राज्यका क्षेत्रफल ५९५१ बर्गमील और इसकी मालगुजारी ४९३३००० रुपया है। पटियालेकी आय पञ्जाबके दूसरे सम्पूर्ण राजाओंसे अधिक है। सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय इस राज्यमें १५३८८१० मनुष्य और सन् १८८१में १४६७४३३ मनुष्य थे; अर्थात् ७३४९०२ हिन्दू, ४०८१४१सिक्ख, ३२१३५४ मुसलमान, २९९७ जैन और ३९ क्रस्तान।

सन् १८९१ में पटियाले राज्यके नारनवलमें २११५९, बूसीमें १३८१०, सुनःममें १०८६९, महेंद्रगढ़में १०८४७ और समानामें १००३५ मनुष्य थे।

राज्यमें सीसा, तांबा, स्लेट और मार्बुलकी खान हैं; आम शिक्षाका एक डाइरेक्टर है और साधारण गल्ले पैदा होते हैं। राज्यका सैनिक बल लगभग २७५० सवार, ४१४७ पैदल, ३१ मैदानकी और ७८ दूसरी तोपें और २३८ गोलन्दाज हैं। अंगरेजी सरकारकी ओरसे पटियालेके महाराजको १७ तोपोंकी सलामी मिलती है।

इतिहास–पटियाला, जींद और नाभाके राजालोग फुलकियन घरानेके सिद्धू जाट कहलाते हैं; क्योंकि ये लोग फूलनामक-शरीफसे हैं। फूलने अठारहवीं 'सदी' के मध्यभागमें अपने नामसे एक गाँव बसाया; जो नाभाके राज्यमें है। फूलके बड़े पुत्र तिलोकसे जींद और नाभाके राजा और दूसरे पुत्र रामसे पटियालेके राजा हैं। जाट जातियोंमेंसे बहुतेरोंके समान सिद्धू जाट भी अपनेको राजपूत होनेका दावा करते हैं। वे कहते हैं कि जैशलमेरको बसानेवाला जैशल नामक भाटी राजपूतके बंशधर हमलोग हैं; जो सन् ११८० ई० की बगावतमें अपने राज्यसे खदेरा गया था।

रामके पुत्र सरदार आलासिंहने सन् १७५२ ई०में पटियाला राजधानीको बसाया और सन् १७६२ में अहमदशाह दुर्रानीसे राजाका पद प्राप्त किया। सन् १७६५ में आलासिंहकी मृत्यु होने पर अमरसिंह उत्तराधिकारी हुए, जिनको अहमदशाह दुर्रानीने सन् १७६७ में राजाई राजगान बहादुरकी पदवी दी। सन् १७८१ में अमरसिंहका देहान्त होगया। बहुत दिनोंतक पटियालेकी प्रधानता निर्बल रही। लाहौरके महाराजके बलके सामने इसकी प्रसिद्धता घटगई थी। सन् १८०८ में शतलजके पूर्वके दूसरे राज्योंके सहित पटियालाका राज्य अंगरेजी सरकारकी रक्षामें आया। सन् १८१० में दिल्लीके दूसरे अकबरने पटियाले

के राजाको महाराजकी पदवी दी । पटियालेके महाराजने नैपालकी लड़ाईके समय अंगरेजी सरकारकी सहायता करके क्योंथल और बागढ़ परगने प्राप्त किए। सन् १८३० में अंगरेजी गवर्नमेंटने महाराजको बरौली देकर उसके बदले में शिमलेका राज्य लेलिया।। सन् १८४५ की सिक्ख लड़ाईके समय महाराजने अंगरेजोंकी सहायता की; उस समय अंगरेजी गवर्नमेंटने इनको नाभा राज्यका कुछ भाग दे दिया। सन् १८५७ के बलवेके समय महाराज नरेंद्रसिंहने अंगरेजी सरकारकी अच्छी सहायता की, जिसके पुरस्कारमें उनको नारनवल डिविजन मिला । सन् १८६२ में महाराज नरेंद्रसिंहकी मृत्यु होनेपर उनके पुत्र महींद्रसिंह उत्तराधिकारी हुए । सन् १८७६ में इनके देहान्त होने पर इनके पुत्र पटियालेके वर्त्तमान नरेश महाराज राजेंद्रसिंह महेंद्र बहादुरजी. सी. एस. आई राज्य सिंहाशन पर बैठे, जिनका जन्म सन् १८७२ ई० में हुआ था । पटियालेका राजवंश सिक्ख संप्रदायका हैं।

नाभा।

पटियालेसे १६ मील (राजपुर जंक्शनसे ३२ मील) पश्चिम पंजाबमें एक देशी राज्यकी राजधानी नाभा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय नाभामें १७१०८ मनुष्य थे; अर्थात् ८३८३ हिंदू, ६२६९ मुसलमान, २२१८ सिक्ख, २३१ जैन और ७ क्रस्तान । नाभामें महाराजका सुन्दर महल बना है और वाटिका लगी है।

नाभा राज्य—यह राज्य पटियालेके उत्तर ९३६ वर्गमीलमें फैला है। सन् १८८३ ई० में इस राज्यकी अनुमानिक मालगुजारी ६५०००० रुपये थी। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय राज्यमें २८२७६० मनुष्य बसते थे और सन् १८८१ में २६१८२४ मनुष्य थे; अर्थात् १२३५७४ हिंदू, ७७६८२ सिक्ख, ५०१७८ मुसलमान, ३७२ जैन और १८ क्रस्तान। राज्यका प्रधान पैदावार रुई, तम्बाकू और चीनी है। राजके अनुमानिक फौजी १२ मैदानकी और १० दूसरी तोपें, ५० गोलंदाज; ५०७ सवार और १२५० पैदल हैं नाभाके राजाको अङ्गरेजी सरकारकी ओरसे ११ तोपोंकी सलामी मिलती है।

इतिहास—फूल नामक सिद्धू जाटके बड़े पुत्र तिलोकसे नाभाराज वंश है । फूलने 'फूलपुर' नामक गांव बसाया, जो अबतक इस राज्यमें है।

जब जान पडा कि लाहोरके राजा रणजीतसिंहने सम्पूर्ण पञ्जाब जीत लेनेकी इच्छा कर ली है, तब नाभाके राजाने अङ्गरेजी सहायता चाही। सन् १८०९ ई० में नाभाका राज्य पञ्जाबके दूसरे राज्योंके सहित अङ्गरेजी रक्षामें आया। नाभाके राजा 'यशवन्तसिंह' सन् १८४० ई० में मरगए; उनके पुत्र राजा देवेन्द्रसिंहने सन् १८४५ की सिक्ख लड़ाईके समय अङ्गरेजोंके विरुद्ध सिक्खोंकी सहायता की; इस अपराधके लिये उनको राजगद्दीसे उतारकर ५०००० रुपए वार्षिक 'पेंशन' मिलने लगा, परन्तु उनके बड़े पुत्र भरपूरसिंहका अखतियार रक्खा गया। सन् १८५७ के बलवेके समय भरपूरसिंहने राजभक्ति दिखलाई, इससे अङ्गरेजी सरकारने उनको १००००० रुपएसे अधिक मूल्यकी भूमि दी। सन् १८६३ में राजा भरपूरसिंहकी मृत्यु होनेपर उनके भाई भगवानसिंह उत्तराधिकारी हुए । सन् १८७१ में जब राजा भगवानसिंह निःपुत्र मरगए, तब इसी परिवारके वर्तमान नाभानरेश

श्रीहीरासिंह मलवण्डर बहादुर, जिनका जन्म लगभग सन् १८४३ ई० में था; राज्याधिकारी हुए। नाभाके राजा सिक्ख सम्प्रदायके हैं।

फरीदकोट।

पटियाले और लुधियाने कसबेसे ६० मील दक्षिण-पश्चिम पंजाब प्रदेशमें एक देशी राज्यकी राजधानी (३० अंश ४० कला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश ५९ कला पूर्व देशान्तरमें) फरीदकोट है।

सन् १८८१-की मनुष्य-गणनाके समय फरीदकोट कसबेमें ११३२ मकान और ६५९३ मनुष्य थे; अर्थात् ३२४१ मुसलमान, १८६२ हिन्दू, १२२६ सिक्ख और २६४ जैन।

फरीदकोटका राज्य—यह राज्य पटियालेके राज्यके पश्चिमोत्तर और फिरोजपुर जिलेके दक्षिण-पूर्व ६४३ वर्गमीलमें है; जिसमें खास फरीदपुर और कोटकपुरा दो भाग हैं। राज्यसे लगभग ३००००० रुपए मालगुजारी आती है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इस राज्यमें ११५०४० मनुष्य और सन् १८८१ में ९७०३४ मनुष्य थे; अर्थात् ४०१८७ सिक्ख, २९०३५ मुसलमान, २७४६३ हिन्दू और ३४९ जैन।

फरीदकोटके राजाको अङ्गरेजी सरकारकी ओरसे ११ तोपोंकी सलामी मिलती है और सैनिक बल २०० सवार, ६०० पैदल और पुलिस और ३ मैदानकी तोपें हैं।

इतिहास—फरीदकोटका राजवंश बराडवंशी जाट हैं। बादशाह अकबरके राज्यके समय भालननामक जाटने इस वंशकी प्रतिष्ठा बढ़ाई; उसके भतीजेने कोटकपुराका किला बनाकर स्वाधीन राज्य स्थापन किया। सन् ई० की उन्नीसवीं शताब्दीके आरंभमें लाहौरके महाराज रणजीतसिंहने इस राज्यको छीन लिया था; परन्तु अङ्गरेजोंने रणजीतसिंहसे छीनकर फरीदकोटके राजाको देदिया। सन् १८४५ के सिक्ख-युद्धके समय पहाड़सिंहने अङ्गरेजोंकी सहायता की; जिसकी कृतज्ञतामें अङ्गरेजी सरकारने पहाड़सिंहको राजाकी पदवी छीना हुआ कोटकपुराका किला और नाभाके राजासे छीनकर आधा राज्य देदिया। पहाड़सिंहके पुत्र राजा वजीरसिंहके देहान्त होने पर उनके पुत्र फरीदकोटके वर्तमान नरेश राजा विक्रमसिंह बहादुर; जिनका जन्म सन् १८४२ ई० में हुआ था, सन् १८८३ में राज्यसिंहासनपर बैठे।

सरहिन्द।

राजपुर जंक्शनसे १६ मील (अम्वाला जंक्शनसे ३३ मील) पश्चिमोत्तर सरहिन्दका रेलवे स्टेशन है। पञ्जाबके लुधियाने जिलेमें सरहिन्द एक छोटा कसबा है। गजनीके महमूदके समय मुसलमानोंके सरहदका यह शहर था, इसलिये इसका नाम सरहिन्द पड़ा। पहले सरहिन्द प्रदेशमें अम्बाला जिला और पटियाला तथा नाभाके देशी राज्य भी शामिल थे। अकबरकी राजगद्दीके समयसे औरङ्गजेबके मरनेके समय तक लगभग १५० वर्ष पर्यंत यह मुगलोंके राज्यमें सबसे उन्नतिवाले शहरोंमेंसे एक था। बहुतेरे मकबरे और अनेक मसजिद अबतक यहाँ खड़ी हैं और पुराने शहरके चारों ओर कई एक मीलोंतक तबाहियोंके ईटोंकी ढेर देख पड़ते हैं।

वर्तमान वस्तीके उत्तर; सदन कसाईका मकवरा है, जिसके पश्चिमका वगल गिरगया है मकवरेके मध्यमें ४५ फीट व्यासका गुम्वज है । इसके अतिरिक्त यहां मीर, मीरन आदि मुसलमानोंके कई एक पुराने मकवरे हैं। वड़ी सरहिन्द-नहर, जो सन् १८८२ ई० में खुली थी, यहाँसे २० मील दूर रोपड़के निकट सतलजसे निकलकर सरहिन्द और पटियाला होकर कर्नालके निकट यमुनामें मिली है ।

लुधियाना।

सरहिन्दसे ३८ मील (अम्वाला जंक्शनसे ७१ मील) पश्चिमोत्तर लुधियानाका रेलवे स्टेशन है। पञ्जावके अम्वाला विभागमें (३० अंश ५५ कला २५ विकला उत्तर अक्षांश ७५ अंश ५३ कला ३० विकला पूर्व देशान्तर,) सतलज नदीसे ८ मील दक्षिण जिलेका सदर स्थान लुधियाना एक छोटा शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय लुधियानेमें ४६३३४ मनुष्य थे (२५५०६ पुरुष और २०८२८ स्त्रियां); अर्थात् ३०२५७ मुसलमान, १३८७१ हिन्दू, १०६५ सिक्ख, ८१३ जैन और ३२८ कृस्तान । मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ८५ वाँ और पञ्जावके अङ्गरेजी राज्यमें ११ वाँ शहर है ।

शहरके पश्चिमोत्तर किला है, जिसमें ५०० आदमीके रहनेके योग्य वारक अर्थात् सैनिक-गृह बने हैं। छावनीके पश्चिम गिर्जा और पवलिग वाग है; इनके अतिरिक्त लुधियानेमें जिलेकी कचहरियां, जेल, सराय, खैराती अस्पताल और स्कूल हैं। मुसलमानी फकीर शेख अवदुलकादिर जलानीके दरगाह पर वर्षमें एक प्रसिद्ध मेला होता है; जिसमें हिन्दू और मुसलमान दोनों वरावर आते हैं ।

कश्मीरी और कावुली पठान इस शहरमें अधिक रहते हैं, इससे मुसलमानोंकी संख्या बहुत होजाती है। पशमीने; ऊनके वने हुए शालके लिये लुधियाना शहर प्रसिद्ध है। पठान लोग कश्मीरी शाल और पशमीना कपड़ा वनाते हैं। यहाँ रामपुरके मुलायम ऊनके शाल, कपड़ा, दुपट्टा, पगड़ी, गाड़ी और अनेक तरहके असवावकी सौदागरी होती है। रेलवे खुलनेसे लुधियाना गल्लेके वाजारका 'केन्द्र' हुआ है ।

लुधियाना जिला—यह अम्वाले विभागके पश्चिमका जिला है । इसके पूर्व अम्वाला जिला, दक्षिण पटिया, जींद, नाभा और मलरकोटला राज्य; पश्चिम फिरोजपुर जिला और उत्तर सतलज नदी, वाद जलंधर जिला है। जिलेके भीतर देशी राज्योंके कई एक टुकड़े हैं। जिलेका क्षेत्रफल १३७५ वर्ग मील है। जिलेके भीतर कोई पहाड़ी अथवा नदी नहीं है। सरहिन्द नहरकी शाखा जिलेमें निकाली गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय लुधियाने जिलेमें ६४८५४७ मनुष्य थे। जिलेमें हिन्दुओंकी संख्यासे कुछही कम मुसलमान और हिन्दुओंके लगभग आधा सिक्ख है। जिलेकी मनुष्य संख्याके $\frac{1}{3}$ जाट हैं. दूसरी जातियोंमें राजपूत, गूजर और ब्राह्मण अधिक हैं। राजपूत प्रायः सव मुसलमान हैं। (अम्वाले जिलेमें देखो) गूजरमें भी वहुतेरे मुसलमान हैं। जिलेमें लुधियानेको छोड़कर ३ अन्य कसवे हैं; जगरून (जन संख्या सन् १८९१ में १८११६) रायकोट और मछवाड़ा ।

इतिहास—सन् १४४० ई० में लोदी खानदानके युसुफ और निहंग नामक २ शाहजादोंने इस शहरको नियत किया, इससे इसका नाम लुधियाना पड़ा। लोंदी खांदानके विनाश होनेके पश्चात् यह शहर मुगलोंके हस्तगत हुआ। सन् १७६० ई० में रायकोटके राय लोगोंने मुगलोंसे शहरको छीन लिया। अठारवीं शताब्दीके अन्तमें लाहौरके महाराज रणजीतसिंहने उनको निकालकर जींदके राजा बाघसिंघको शहर दे दिया। सन् १८०९ में यह अंगरेजोंके आधीन हुआ। सन् १८३४ से १८५४ ई० तक लुधियानेमें अंगरेजी सेना रहती थी।

मलियरकोटला।

लुधियाने शहरसे ३० मील दक्षिण पञ्जाबमें एक देशी राज्यकी राजधानी मलियरकोटलाहै। सन् १८९१ की मनुष्य-संख्याके समय इसमें २१७५० मनुष्य थे; अर्थात् १५५२० मुसलमान, ४९६१ हिन्दू, १२२७ जैन, ३७ सिक्ख और ९ कृस्तान।

मलियरकोटला राज्य—इस राज्यका क्षेत्रफल १६४ वर्गमील और इसकी मालगुजारी लगभग २८४००० रुपया है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय राज्यमें ७५७५० मनुष्य और सन् १८८१ में ७१०४४ मनुष्य थे; अर्थात् २८९३१ सिक्ख; २४६१६ मुसलमान, १६१७१ हिन्दू १३२३ जैन और ३ कृस्तान। राज्यका सैनिक वल ७६ सवार, २०० पैदल ८ मैदानकी तोपें और १६ गोलंदाज हैं। यहाँके नवावको ११ तोपोंकी सलामी मिलती है।

इतिहास—यहाँके नवाव अफगानमुसलमानहैं, जिनके पुरुषे काबुलसे आए और सन् ई० की अठारहवीं शताब्दीके आरम्भमें मुगलोंके राज्यकी घटतीके समय धीरे धीरे स्वाधीन बनगए। मलियरकोटलाके नवाव जमालखांने सन् १७३२ ई० में पटियालेके राजा आलासिंहके विरुद्ध शाही सेनाकी मदद दी थी और सन् १७७१में अपने पड़ोसी सिक्खोंके विरुद्ध अहमदशाह दुर्रानीके लेफ्टिनेंटकी सहायता की। जब जमालखां लड़ाई में मारेगए; तब उनके पुत्रोंमें विवाद हुआ. अन्तमें बैरामखां नवाव वने। लाहौरके महाराज रणजीतसिंहने इस राज्यको लेलिया था, परन्तु सन् १८०९ में अंगरेजी सरकारने महाराजसे संधि होजाने पर वहाँके नवावको राजगद्दीपर फिर वैठाया। मलियरकोटलाके वर्तमान नवाव महम्मद इब्राहीम अलीखां वहादुर ३५ वर्षके युवा हैं।

फिलौर।

लुधियानेसे ८ मील (अम्बाला जंक्शनसे ७९ मील) पश्चिमोत्तर फिलौरका रेलवे स्टेशन है। पञ्जाबके जलंधर जिलेमें सतलज नदीके किनारेपर रेलवे पुलके निकट तहसील का सदरस्थान फिलौर एक छोटा कसबा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय फिलौरमें ७११७ मनुष्य थे; अर्थात् ४०३२ मुसलमान २७४९ हिन्दू, २६० सिक्ख, ७५ कृस्तान और १ जैन।

फिलौरमें तहसील कचहरी, पुलिसस्टेशन; मिडिलक्लाश स्कूल और जङ्गली 'डिवीजन' का सदर स्थान है। लोग यहांके बाजारसे लकडी खरीदकर सतलजमें बहाकर नीचेके देशमें लजाते हैं। सतलजके किनारेपर सिक्खोंके समयका एक दृढ किला है।

जलन्धर।

फिलौरसे २४ मील (अम्वाला जंक्शनसे १०६ मील) पश्चिमोत्तर जलंधर शहरका रेलवे स्टेशन है। छावनीका स्टेशन ३ मील पहले मिलता है। पञ्जावप्रदेशमें (३१ अंश १९ कला ३६ विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश ३६ कला ४८ विकला पूर्व देशांतरमें) किस्मत और जिलेका सदरस्थान जलंधर एक पुराना शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय शहर और छावनीमें ६६२०२ मनुष्यथे; अर्थात् ३७४७१ पुरुष और २८७३१ स्त्रियां। इनमें ३८९९४ मुसलमान; २३०१५ हिन्दू, २२७४ सिक्ख, १५६९ कृस्तान, ३४७ जैन. और ३ पारसी थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ५३ वां और पञ्जावमें ८ वां शहर है।

पुराने शहरकी निशानी २ पुरानें तालाव हैं। हालके शहरके कई एक महल्ले अलग अलग खाश दीवारोंसे घेरे हुए हैं। जलंधरमें कचहरियोंके अतिरिक्त १ गरीवखाना, जनाना स्कूल, सेखकरीमवख्शकी वनवाई हुई एक सुन्दर सराय और कई एक स्कूल हैं।

शहरसे ४ मील दूर ७ ३/४ वर्गमीलमें फौजी छावनी फली है, जो सन् १८४६ ई० में नियत हुई इसमें साधारण तरहसे यूरोपियन पैदलका एक रेजीमेन्ट; आर्टिलरीकी १ वैटरी और देशी पैदलकी १ रेजोमेन्ट रहती है। छावनीमें एक उत्तम पवलिक वाग है।

जलन्धरजिला—यह जलन्धर डिविजनके दक्षिणका जिला है। इसके पूर्वोत्तर होशियारपुर जिला, पश्चिमोत्तर कपुरथलाका राज्य और दक्षिण शतलज नदी है। जिलेका क्षेत्रफल १३२२ वर्गमील है। जिसमें जलन्धर, नवशहरा, फिलौर और रनकोदर ४ तहसीली हैं। जिलेके पूर्वके कोनेमें राहोन झोल ५०० एकड़में और फिलौरके निकटकी झील लगभग २५० एकड़ भूमि पर फैली हुई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय जलन्धर जिलेमें ९०८१९१ मनुष्य थे। जिलेमें हिन्दू और मुसलमान दोनोंकी संख्या प्रायः वरावर है। हिन्दुओंके लगभग चौथाई सिक्ख हैं। जलन्धर जिलेमें जाट सम्पूर्ण दूसरी जातियोंसे वहुत अधिक हैं, जिनकी संख्या सन् १८८१ में १६३७५७ थी। इनके कब्जेमें जिलेकी आधी भूमि है। इसके बाद राजपूतकी संख्या है; जो सन् १८८१ में ४३७८९ थे; जिनमें ५६०८ के अतिरिक्त सव मुसलमान थे। इनसे कम संख्या व्राह्मण और खत्रियोंकी है।

इस जिलेमें जलन्धर शहरके अतिरिक्त राहोन (सन् १८९१ में १०६६७ मनुष्य), कर्त्तारपुर (१०४४१ मनुष्य), नकोदर, नूरमहल, फिलौर विलगा; जण्डियाला, महतपुर और नवशहरा कसवे हैं।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि जलन्धर दैत्यने जलन्धर शहरको वसाया, जिसको अन्तमें भगवान शिवने मारडाला था। जलन्धर "दोआव" अतिप्राचीन कालमें एक चन्द्रवंशी राजाके वंशधरों द्वारा शासित होता था; जिनकी सन्तानलोग अवतक कांगड़ाकी पहाड़ियोंमें छोटे प्रधान हैं; वे लोग कहते हैं कि हमलोग महाभारतके युद्धमें लडनेवाले राजा सुशर्माके वंशधर हैं; हमलोगोंके पूर्व पुरुषोंने मुलतानसे जलन्धर दो आवमें आकर कटोच राज्य कायम किया था।

(महाभारत—विराटपर्वके ३० वें अध्यायमें लिखा है कि दुर्योधनकी सेनाने दो भाग होकर विराटनगर पर चढ़ाई की। प्रथम भागका सेनापति त्रिगर्त्तदेशका राजा सुशर्मा हुआ, जिसने विराटनगरमें जाकर विराटके अहीरोंसे सब गऊ छीन ली थीं। द्रोणपर्वके १६ वें अध्यायमें है कि त्रिगर्त्तदेशीय प्रस्थलाधिपति राजा सुशर्मा अपने चारों भाइयों और १० सहस्र रथोंके सहित अर्जुनसे लड़नेके लिये तय्यार हुआ और शल्य पर्वके २७ वें अध्यायमें लिखा है कि अर्जुनने त्रिगर्त्तदेशके राजा सुशर्माको मारडाला।

सिकन्दरके आक्रमणके पहिले जलन्धर शहर कटौच राजपूतके राज्यकी राजधानी था। चीनके हुएत्सङ्गने सातवीं शताब्दीमें लिखा था, कि जलन्धर शहर २ मीलके घेरेमें एक बड़े राज्यकी राजधानी है। मुगलोंके आधीन जलन्धर शहर शतलज और व्यासके बीचके देशकी राजधानी बना। सन् १७६६ में यह सिक्खोंके हस्तगत हुआ। खुसहालसिंहके पुत्र बुद्धसिंहने शहरमें एक किला बनवाया। सन् १८११ में लाहौरके महाराज रणजीतसिंहने बुद्धसिंहको खदेरकर जलन्धरपर अधिकार करलिया। सन् १८४९ ई० में अङ्गरेजी सरकारने जलन्धरमें कमिश्नरका सदरस्थान बनाया, जिसके आधीन जलन्धर, होशियारपुर और काङ्गड़ा ये ३ जिले हुए।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—पद्मपुराण (उत्तरखण्ड, ३ रा अध्याय) एक समय इन्द्रने कैलास पर जाकर भगवान् शङ्करको प्रसन्न किया। महादेवजी बोले कि हे देवराज! मैं प्रसन्न हूँ, तुम वरदान माँगो। इन्द्रने अहङ्कार युक्त कहा, कि हे प्रभो! मैं आपके समान योद्धासे युद्ध करना चाहता हूँ। शङ्करजीने 'एवमस्तु' कहा। इन्द्रके चले जाने पर महादेवजीका क्रोध मूर्त्तिमान होकर खड़ा होगया और बोला कि हे प्रभो! मुझको आज्ञा दो मैं कौन काम करूं; तब शिवजीने कहा, कि स्वर्गके समुद्र और सागरमें प्राप्त होकर इन्द्रको जीतो। ऐसा सुन वह क्रोध अन्तर्द्धान होगया, जब गङ्गा सागरका सङ्गम होगया, तब समुद्रने महा नदीको प्राप्त करके उसमें पुत्र उत्पन्न किया; उस पुत्रके रोदन करनेसे पृथ्वी कांप उठी, जिससे तीनों लोकमें महान शब्द हुआ। ब्रह्माजी तीनों लोकोंको भयभीत देखकर समुद्रके पास गये और समुद्रसे बोले, कि तुम वृथा क्यों गर्जते हो। समुद्रने कहा, कि हे प्रभो! मैं नहीं गर्जता हूँ, यह मेरे पुत्रका शब्द है। समुद्रकी स्त्रीने पुत्रको लाकर ब्रह्माजीके गोदमें बैठा दिया; जब बालकने ब्रह्माजीका 'कूच' पकड़लिया और किसी भांतिसे उनके छुड़ाने पर नहीं छोड़ा, तब समुद्रने बालकके हाथसे ब्रह्माका कूच छोड़ा दिया। ब्रह्माने बालकका पराक्रम देखकर प्रसन्न हो, उसको 'जालन्धर' अर्थात् कूचका पकड़नेवाला कहा, इस लिये उसका नाम जालन्धर हुआ। ब्रह्माने जालन्धरको ऐसा वरदान दिया कि यह देवताओंसे अजेय होगा और पातालसहित स्वर्गको भोगैगा।

(४ थाँ अध्याय) एक समय जब जालन्धर युवा होगया था, दैत्योंके गुरु शुक्रजीने समुद्रसे कहा कि तुम्हारा बालक तीनों लोकका राज्य करेगा; तुमने जम्बूद्वीपमें योगिनीगणोंसे सेवित महापीठको डुबा दिया है; उसको अब छोड़कर वहाँ जालन्धरका राजतिलक करदो। समुद्रकी आज्ञासे मय दानवने पुण्यदेश जालन्धरपीठमें जालन्धरके लिये रत्नमय उत्तम पुर बनाया। समुद्रने शुक्रजीके सहित उस पुरमें जाकर जालन्धरका अभिषेक किया। उसी समय पातालके रहनेवाले कालनेमि इत्यादि दैत्यगण जालन्धरसे आ मिले। जालन्धर

पिताका दिया हुआ राज्य करने लगा । पूर्व समयकी स्वर्गके रहनेवाली स्वर्णानामक अप्सराकी कन्या परम सुन्दरी 'वृन्दा' से जालन्धरका विवाह हुआ। जब जालन्धरने शुक्रके मुखसे सुना कि देवताओंने समुद्र मथन करके उनका सब धन निकाल लिया है, तब देवताओंसे लड़नेके लिये उद्यत हुआ।

(५ वाँ अध्याय) जलन्धर अपनी भारी सेनासे यमराज, वरुण आदि लोकपालोंको जीतकर इन्द्रपुरीमें पहुँचा । इन्द्र बृहस्पतिके उपदेशसे देवताओंके सहित वैकुंठमें विष्णुकी शरणमें गये । लक्ष्मीजीने विष्णु भगवान्से कहा कि मेरा भाई जलन्धर आपके मारनेके योग्य नहीं है, आप उसको मत मारिये । विष्णु देवताओंको अभय देकर उनके साथ चले । इन्द्रपुरीमें दैत्य और देवताओंका बड़ा भयानक युद्ध होने लगा।

(६ वाँ अध्याय) विष्णुने कालनेमि राक्षसको मारडाला। (७) विष्णु और जालन्धरका घोर युद्ध होने लगा । भगवान्ने तो लक्ष्मीके प्रेमसे जालन्धरको नहीं मारा, परन्तु उसके बाणसे आपही गिर गये, जब जालन्धरन उनको उठा कर अपने रथमें चढ़ा लिया तब लक्ष्मीजी रोदन करती हुई जालन्धरसे बोलीं कि भाई! तुमने विष्णुको जीत लिया; पर अब अपनी बहनको विधवा मत करो, ऐसा बहनका वचन सुन उसने विष्णुको छोड़ दिया विष्णुने जालन्धरसे कहा कि हम तुम्हारे कर्मसे प्रसन्न हुए हैं; तुम वर मांगो । जालन्धरने कहा कि हे भगवन्! आप लक्ष्मी सहित हमारे पिताके गृहमें निवास कीजिए । भगवान् उसको यह वरदान देकर लक्ष्मी सहित क्षीरसमुद्रमें चले गए; तभीसे वह अपने श्वसुर समुद्रके मन्दिरमें हैं; अर्थात् समुद्रमें बसते हैं । (८ अध्याय) जलन्धरने स्वर्गको जीत क्षीर समुद्रसे निकाला हुआ रत्न सब देवताओंसे छीन लिया; शुम्भ और निशुम्भको युवराज बनाकर बहुत वर्षतक जालन्धरपीठमें राज्य किया । उसके राज्यमें देवताओंके अतिरिक्त सम्पूर्ण प्रजा सुखी थी । (९ वाँ अध्याय) देवतालोग ब्रह्माको साथ ले कैलासमें जाकर महादेवजीके शरणागत हुए । विष्णु भगवानभी वहां पहुँचे । ब्रह्मा, विष्णु, शिव और इन्द्र आदिक सब देवताओंके तेजसे जालन्धरके मारनेके लिये सुदर्शनचक्र बनाया गया।

(१० अध्याय) जालन्धरने नारदजीके मुखसे पार्वतीजीकी सुन्दरताकी प्रशंसा सुनकर राहूको भेजकर शिवजीसे पार्वतीको मांगा (११) जब राहू निराश लौट आया, तब जालन्धरने दैत्योंकी सेना तैयार की । प्रथम उसने समुद्रमें विष्णुके समीप जाकर प्रीतिपूर्वक उनसे कहा कि आप इस स्थानमें सुखसे निवास कीजिए । लक्ष्मीजीने जालन्धरको अक्षत दिया; विष्णुने भी शुभके लिये पूजन किया । उसके पश्चात् समुद्र और वृन्दाने उससे कहा कि तुम शिवसे मत लड़ो, पर उसने उनका वचन स्वीकार नहीं किया; वह भारी सेना लेकर कैलासमें पहुँचा । महादेवजीने सखियोंके सहित पार्वतीको ऊँचे पर्वतके कंगूरेमें बैठा दिया । देवताओंसे युक्त शिवगणोंसे दानवोंका युद्ध होने लगा । (१३) जब महादेवजी लड़ने लगे, तब जालन्धर शिवका रूप बनकर मानसोत्तर पर्वतकी गुहामें पार्वतीके निकट गया; उसने पार्वतीको गणेश और स्वामिकार्तिकके कटे हुए सिर दिखलाए, जिनको देख वह रोदन करने लगी । शिवरूपी जालन्धरने पार्वतीसे कहा कि हे प्रिये! तुम अभी मुझसे प्रसंग करो । उस विषादके समय उसके ऐसे वचन सुन पार्वतीको संदेह हुआ ।

(१४ वाँ अध्याय) जब मायाके महादेवसे पार्वतीका मन मोहको प्राप्त हुआ, तब क्षीरसमुद्रमें सोते हुए नारायणका हृदय अकस्मात् क्षोभित होगया। भगवानने गरुड़को युद्धस्थलमें भेजा। गरुड़ने मायाके शिवको देखकर वहांका सब वृत्तांत भगवानको सुनाया और उनसे कहा कि हे भगवान् ! आपके शाले जालन्धरकी स्त्री वृन्दा परम सुन्दरी है; आप उससे भोग करके महादेवजीका उपकार कीजिए। भगवानने शेषजीके सहित जटा वल्कल धारण करके मायासे पुण्यकारी वनमें एक आश्रम रचा और उस वनमें मन्त्रसे वृन्दाको आकर्षण किया। वृन्दाने रात्रिमें विधवाके भयका सूचक भयंकर स्वप्न देखा, तब वह रथमें सवार हो एक सखी सहित वनमें जाकर अपने पतिका स्मरण करने लगी। वहां एक राक्षसने रानी वृन्दाके रथकी घोड़ियोंको खाकर वृन्दाको पकड़ लिया और उससे कहा कि तुम्हारे स्वामीको महादेवजीने मारडाला तुम हमको अपना पती बनाओ। रानी ऐसा सुन प्राण रहितसी होगई। (१५) उस समय जटा वल्कल धारण किए हुए नारायण वृन्दाके पास आए; उनकी क्रोध दृष्टिसे राक्षस वृन्दाको छोड़कर भस्म होगया। उसके पश्चात् एक वाघ आगया, जिसके भयसे वृन्दा तपस्वी रूप भगवान्‌के कण्ठमें लिपट गई, तब भगवान बोले कि तुम्हारे आलिंगनके प्रभावसे तुम्हारे स्वामीका सिर फिर अंगोंसे युक्त होजायगा; तुम चित्रशालामें जाओ। जब वह अपने पतिका सिर लेकर चित्रशालेमें गई तब भगवान जालन्धरका रूप धारण करके वहां गए। वृन्दाने विष्णुको जालन्धर जानकर उसके साथ सहवास किया। कुछ दिन प्रसंग करनेके पश्चात् जब एक दिन वृन्दाने भगवानको पहचान लिया, तब वह बोले कि जालन्धर लड़ाईमें मारा गया है। अब तुम हमको सेवन करो। उस समय वृन्दाने भगवानको शाप दिया कि जिस प्रकार तुमने तपस्वी बन मुझको छला है, उसी प्रकारसे कोई माया रूपी तपस्वी तुम्हारी स्त्रीको हरले जायगा। इसके पश्चात् भगवान अन्तर्धान हो गए; माया सब नष्ट हो गई।

वृन्दाने घोर तपस्या करके अपने शरीरको सुखाडाला और वह योगाभ्याससे विषयोंसे मनको खींचकर शरीर छोड़ ब्रह्मलोकमें चलीगई। जिस स्थानमें वृन्दाने अपना शरीर छोडा, उसी स्थानपर गोवर्द्धन पर्वतके निकट वृन्दावन हुआ।

(१६ वां अध्याय) उधर पार्वतीकी सखी जयाने उनकी आज्ञानुसार पार्वतीका रूप धरकर जालन्धरकी परीक्षाकर उसको पहचान लिया और पार्वतीसे कहा कि यह शिवरूपधारी जालन्धर है। उस समय पार्वतीजी डरकर कमलमें प्रवेश कर गईं। दूतोंने जब रणभूमिसे आकर जालन्धरसे कहा कि तुम्हारी रानीको विष्णुने हरलिया है; (१७) तब वह रणभूमिमें आकर लडने लगा।

(१८ अध्याय) वड़ी लडाईके पश्चात् शिवजीने चक्रसे जालन्धरका सिर काटडाला; जब वह सिर आकाशमें भ्रमण करने लगा, तब शिवजीने उसको दो टुकडे कर दिया, जो हिमवान पर्वतपर गिरे और पीछे शिवमें लीन होगए। इसके उपरांत शिवजी नाचते हुए जालन्धरके रुण्डको चक्रसे काटने लगे। जब उसके मेदासे पृथ्वी पूर्ण होगई, तब शिवजीकी आज्ञासे योगिनियोंने क्षण मात्रमें मांस समूहको खा लिया। शक्तियोंसे दबाया हुआ जालन्धरके क्षीण देहसे तेज निकलकर महादेवजीमें लीन होगया। देवतागण प्रसन्न हुए। शिवजीका अभिषेक हुआ।

(इसी पुराणके १६ वें अध्यायसे १०४ वें अध्यायतक प्रसंग वश जालन्धरकी उत्पत्ति और वधकी कथा फिर लिखी गई है)

कपूरथला।

जालन्धरसे ११ मील पश्चिमोत्तर (सुलतापुरसे १६ मील) व्यासनदीसे ८ मील दूर पञ्जाबमें प्रसिद्ध देशी राज्यकी राजधानी कपूरथला है। जालन्धरसे कपूरथलाको पक्की सड़क गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कपूरथला राजधानीमें १६७४७ मनुष्य थे; अर्थात् १०१६३ मुसलमान, ५२५३ हिंदू १२८९ सिक्ख, ३४ जैन और ८ कृस्तान।

राजधानीमें महाराजका सुन्दर महल बना है; उत्तम वाटिका लगी हैं; राजभवन और महाराजकी सरकारी इमारतोंमें बिजलीकी रोशनी होती है।

कपूरथला राज्य—राज्यके पश्चिमोत्तर सीमापर व्यासनदी बहती है। राज्यका क्षेत्रफल ६२० वर्गमील है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इसमें २९९५९० और सन १८८१ में २५२६१७ मनुष्य थे; अर्थात् १४२९७४ मुसलमान, ८२९०० हिंदू, २६४९२ सिक्ख, २१४ जैन, ३५ कृस्तान और १ बौद्ध। महाराजको पञ्जाबके राज्यसे लगभग १०००००० रुपए मालगुजारी आती है जिसमेंसे १३१००० रुपया अङ्गरेजी सरकारको सैनिक खरचके लिए दियाजाता है। पञ्जाबके राज्यके अतिरिक्त अवधमें ७०० वर्गमील कपूरथलाके महाराजकी मिलकियतें हैं, जिनमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय २४९३०१ मनुष्य बसते थे। इन मिलकीयतोंसे महाराजको८०००००रुपए वार्षिक आमदनी है। महाराजका सैनिक बल ४ किलेकी और ९ मैदानकी तोपें; १८६ सवार, ९२६ पैदल और ३०३ पुलिस हैं। इनको अङ्गरेजी सरकारसे ११ तोपोंकी सलामी मिलती है।

राज्यका प्रधान पैदावार ऊख, कपास, 'गेहूँ' मकाई तम्बाकू हैं। राज्यमें ४ कसबे हैं कपूरथला (जन संख्या सन् १८९१ में १६७४७), फगवारा (जन संख्या सन् १८९१ में १२३३१) फगवारा और सुलतापुर।

इतिहास—कपूरथला राजवंश कल्लालजाति और सिक्ख संप्रदायका है। यहांके महाराजके पुरुषे एक समय सतलज नदीके दोनों ओरके देशों पर (सीस सतलज और ट्रेंस सतलज और बारी दो आवमें भी अधिकार किए हुए थे। बारी दो आवके अहलू गांवमें उनके पुरुषे रहते थे, इस लिए राजवंशके लोग अहलुआलिया कहलाते हैं। महाराजके पुरुषे सरदार यशोसिंहने सन् १७८० ई० में बारीदोआवमें तलवारसे अपना अधिकार करलिया और पीछे सिससतलजके राज्यके कई एक भागोंको जीता और सन् १८०८ में शेष भागोंको महाराज रणजीतसिंहसे पाया सन् १८०९ ई० में अंगरेजी गवर्नमेंट और कपूरथलाके सरदारसे संधि हुई। सरदारने अपने सिससतलज राज्योंमें अंगरेजी फौजकी सहायता करने का करार किया। सन् १८४५ की पहली सिक्ख लड़ाई के समय कपूरथलाकी सेना 'अलीवाल'' में अंगरेजोंसे लड़ी, इस कारण अंगरेजी गवर्नमेंटने सरदार फतहसिंहके पुत्र सरदार निहालसिंहके सतलजके पूर्व ओरका राज्य जप्तकरलिया। सन् १८४९ ई० में अंगरेजी सरकारने सरदार निहालसिंहको राजा बनाया। सन् १८५२ में निहालसिंहके देहान्त होने

पर उनके पुत्र महाराज रणधीरसिंह राज्याधिकारी हुए. जिन्होंने अंगरेजोंको सन् १८५७के बलवेके समय जलन्धर दोआवमें अपनी सेनासे वड़ी मदद दी और सन् १८५८ में अवधमें सेना लेजाकर अच्छी सहायताकी, जिसकी कृतज्ञतामें अंगरेजी सरकारने उनको अवधमें बाउड़ी, बिथौली और एकवनाकी मिलिकियतें दीं, जिनसे वार्षिक मालगुजारी ८ लाख रुपया आती है। सन् १८७० में महाराज रणधीरसिंह इंगलैंड जाते हुए "अदन" में मरगए उनके पुत्र खड्गसिंह उत्तराधिकारी हुए। महाराज खड्गसिंहकी मृत्यु होनेके पश्चात् सन् १८७७ में उनके पुत्र कपूरथलाके वर्त्तमान नरेश महाराज जगतजीतसिंह बहादुर, जिनकी अवस्था २१ वर्षकी है, उत्तराधिकारी हुए. जो अंगरेजी, संस्कृत और पारसी अच्छी तरहसे पढे हुए हैं। राज्यका प्रबंध अच्छा है। राज्यमें विद्याकी उन्नति होरही है।

तेरहवां अध्याय।
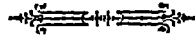
(पञ्जाबमें) होशियारपुर, ज्वालामुखी, रोवालसर, कांगड़ा, मण्डी, डलहौसी, चम्बा, पठानकोट, गुरदासपुर और बटाला।

होशियारपुर।

जलन्धर शहरसे २५ मील पूर्वोत्तर शिवालिक पहाड़ीके पादमूलसे ५ मील दूर एक धाराके चौथे वेड़के निकट पञ्जावके जलन्धर विभागमें जिलेका सदर स्थान होशियारपुर एक कसवा है। जलन्धर और होशियारपुरके वीचमें उत्तम सड़क वनी है और घोड़े गाड़ी की डाक चलती है। मार्गके मध्यमें एक पड़ाव है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय होशियारपुरमें २१५५२ मनुष्यथे; अर्थात् १०८८२ मुसलमान, ९९१० हिन्दू, ४४४ जैन, २७० सिक्ख, ४५ कृस्तान और १ दूसरे।

कसवेसे १ मील दूर जिलेकी कचहरियां; अस्पताल और सराय है। कसवेमें सड़कके निकट मक्खनमलकी वनवाई हुई सुन्दर धर्मशाला है और गल्ला, चीनी और तम्बाकूकी सौदागरी तथा देशी कपड़ा, जूता, पीतल और तांबेके वर्तन और लाहकी दस्तकारी होतीहै।

होशियारपुर जिला–इसके पूर्वोत्तर कांगड़ा जिला और विलासपुरका देशी राज्य, पश्चिमोत्तर व्यास नदी, जो गुरदासपुर जिलेसे इसको अलग करती है, दक्षिण–पश्चिम जलन्धर जिला और कपुरथलाका राज्य और दक्षिण सतलज नदी है जिलेका क्षेत्रफल २१८० वर्गमील है, इसमें मैदान और पहाड़ियां दोनों हैं और जंगल वहुत है। वनोंमें वाघ, भेड़िया, हरिन इत्यादि वनजन्तु रहते हैं। सोहनधाराके वेड़में कुछ कुछ सोना मिलता है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेमें १०११३८४ मनुष्य थे। जिलेमें आंधेसे अधिक हिन्दू वसते हैं, जाट सब जातियोंसे अधिक हैं, बाद ब्राह्मण; रजपूत और गूजरकी संख्याहै। मैदानके राजपूत आम तरहसे मुसलमान हैं।

इस जिलेमें होशियारपुरके अतिरिक्त अमरटांड़ा (जन संख्या सन् १८९१ में ११६३२) मियानी, हरियाना, दसुआ, आननपुर, गढ़शंकर और ऊना कसवे हैं।

इतिहास—कहावतके अनुसार होशियारपुर, ई० सन्‌के चौदहवीं शताब्दीके आरम्भमें बसा। सिक्खोंकी बढ़तीके समय एकड़ाके प्रधानने इसपर अधिकार किया; जिससे सन् १८०९ में महाराज रणजीतसिंहने लेलिया। सन् १८१८ के लगभग सतलजसे व्यासा तकका सम्पूर्ण देश लाहौरके आधीन हुआ और सन् १८४६ में अङ्गरेजी सरकारके हाथमें आया।

ज्वालामुखी।

होशियारपुर कसबेसे ४९ मील (जलन्धरसे ७४ मील) पूर्वोत्तर एक पहाड़ीके पादमूल पर 'ज्वालामुखी' एक कसबा है, जिसमें ज्वालामुखीदेवीका प्रसिद्ध मन्दिर स्थित है।

होशियारपुरसे ८० मील (जलन्धरसे १०५ मील) पूर्वोत्तर काङ्गड़ा कसबे होकर धर्मशाल' छावनीतक सुगम चढ़ाव उतरावका पहाड़ी मार्ग बना है, जिस पर ताङ्गे और इक्के चलते हैं, जगह जगह पड़ाव; धर्मशाले और दुकानें हैं। पड़ाव और धर्मशालोंमें मोदियोंकी दुकान रहती हैं और सर्वत्र मीलके पत्थर लगे हैं। इसी मार्गसे ४१ मील जाकर ८ मील दूसरे मार्गसे ज्वालामुखी पहुँचना होता है। मैं होशियारपुरमें किरायेके इक्के पर सवार हो ज्वालामुखीको चला।

५ मीलसे आगे पहाड़ियोंकी चढ़ाई उतराई आरंभ होजाती है। होशियारपुरसे ९ मील पर पड़ाव (जहाँ "धर्मशाल" छावनीमें जाने आनेके समय अङ्गरेजी सेना टिकती है), ११½ मील पर छोटी चट्टी, १६ मील पर पड़ाव और १८ मील पर स्लेट पत्थरके टुकड़ोंसे छाई हुई एक दो मञ्जिली धर्मशाला मिलती हैं। पड़ावसे धर्मशाले तक २ मील समतल भूमि है, आगे फिर चढ़ाव उतरावका मार्ग आरंभ होजाता है। २२ मील पर एक धर्मशाला और साधुका मठ, २५½ मील पर पक्की धर्मशाला, २५¾ मील पर पानीका झरना और २८½ मील पर बड़ा पडाव है; जहाँ वर्षाकालमें कई एक हाकिम रहते हैं।

पडावसे १½ मील दूर होशियारपुर जिलेमें चिन्तापूर्णी नामक एक छोटी वस्ती है; जहाँ पड़ावसे एक दूसरा मार्ग गया है। वस्तीमें पण्डा और मोदियोंके मकान और एक गहरा सरोवर है, जिसमें १५० सीढ़ियोंके नीचे पानी है। सरोवरके ऊपर एक मन्दिरके भीतर मार्बुलका छोटा मन्दिर है; जिसमें चिन्तापूर्णीदेवी लिङ्गरूपसे स्थित हैं। यात्रीगण दूर दूरसे जाते हैं और सरोवरमें स्नान करके देवीकी पूजा करते हैं।

बडे पडावसे आगे होशियारपुरसे २९½ मील और ३२ मील पर मोदियोंकी दुकानें ३८½ पर चट्टी और ३९ मील पर व्यास नदी मिलती है; जिस पर नावका पुल है मैंने पुलके निकट नदीमें एक मसक देखी जिस पर तैरकर लोग पार होजाते हैं। वहाँके लोग किसी बड़े जानवरके साबित चमड़ेको सीकर ऐसी मसक बनालेते हैं कि उसके भीतर पानी न घुस सके और उसीके सहारे नदी उतर जाते हैं। नदीके दूसरे पार अर्थात् होशियारपुरसे ३९¾ मील पर काङ्गडा जिलेमें डेहरा वस्ती है; जिसमें तहसील, पुलिसकी चौकी और अनेक मोदियोंकी दुकानें हैं और ४१ मीलसे आगे धर्मशाला जानेवाली सडक छूटजाती है; दहिने ज्वालामुखी तक ८ मीलका दूसरा मार्ग है; जिसके बीचमें एक नदी मिलती है। मैं होशियारपुरसे ज्वालामुखी (४९ मील) दो दिनमें पहुँचा। मार्गमें यात्रियोंको किसी तरहका

भय नहीं है; स्थान स्थानमें पहाड़ी जङ्गलोंका उत्तम दृश्य देखनेमें आता है और समय पर गरनाके फूलोंकी सुगन्ध फैलजाती है।

पञ्जाब–काङ्गड़ा जिलेके डेहरा तहसीलमें ज्वालामुखी पुराना पहाड़ी कसबा है; जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ५४२ मकान और २४२४ मनुष्य थे; अर्थात् २२१७ हिन्दू १९६ मुसलमान और ११ जैन। निवासी देवीके पण्डे अधिक हैं।

यहाँ छोटी बड़ी ८ धर्मशालायें, पटियालेके महाराजकी बनवाई हुई एक सराय; पोष्टआफिस, पुलिस स्टेशन, स्कूल और म्युनीसिपलिटी है और थोड़ी सौदागरी होती है। ज्वालामुखीके पड़ोसमें ६ गरम झरने हैं।

कसबेमें (ज्वलनीय गैशके जेटोंके ऊपर) ज्वालादेवीका गुम्बजदार मन्दिर खड़ा है। मन्दिरकी दीवारके नीचेका भाग और इसका फर्श मार्बुलका है। मन्दिर और जगमोहन दोनोंके गुम्बजोंके ऊपर सुनहला मुलम्मादार पत्तर जड़ा हुआ है, जिनको सन् १८१५ ई० में लाहौरके महाराज रणजीतसिंहने जड़वाया। जगमोहनके चारों बगलोंपर घण्टियोंकी एक पंक्ति है; एक जगह डोलानेसे सम्पूर्ण घण्टी बजती हैं। मंदिरके किंवाड़ों पर चांदीका मुलम्मा है।

मन्दिरके भीतर देवीका प्रकाश भूमिकी अग्निसे निकलते हुए; छोटे बड़े १० लाफ दिन रात लगातार बलते हैं; अर्थात् मंदिरकी पिछली दीवारमें ४ कोनेमें १; और दहिनेकी दीवारमें १; और मध्यके कुण्डकी दीवारमें ४। इनमेंसे दहिनेकी दीवारका लाफ बड़ा दीपशिखाके समान; कोनेका लाफ मसालके तुल्य बड़ा और पिछली दीवारके चारों लाफ इनसे छोटे हैं। ६ वो लाफ मन्दिरकी खड़ी दीवारमें फर्शसे एक दो हाथ ऊपर हैं कोनेके लाफ द्वारा यात्री लोग देवीको पेडा खिलाते हैं और दूध पिलाते हैं; अर्थात् लाफके स्थान पर दीवारके छिद्रमें छोटी 'लोटकी' से दूध डालते हैं और जलती लाफमें पेडे जलाते हैं! बचे हुए पेड़ोंके टुकड़े प्रसाद करके अपने गृह लेजाते हैं। पिछली दीवारके मध्यमें जो एक ताकमें छोटी लाफ है; उस स्थानपें पंडे लोग यात्रियोंसे देवीकी प्रथम पूजा करवाते हैं। मन्दिरके मध्यमें मार्बुलके ४ पतले खंभाओंके भीतर एक लम्बा चौकुण्ठा गहडा कुण्ड है; जिसमें पैठनेके लिये एक ओर कई एक सीढ़ियां बनी हैं। यात्री लोग कुण्डके ऊपर देवीकी पूजा करते हैं। कुण्डकी दीवारमें ४ लाफ जलते हैं; जिन दिशाओंमें मन्दिरकी दीवारकी लाफ हैं; उन्हीं दिशाओंमें कुण्डकी दीवारमें लाफ बलती हैं। कुण्डकी दीवारके कोनेका लाफ मसालके तुल्य बड़ा है; उसमें यात्री लोग होम करते हैं, होमकी बिभूति अपने गृह ले जाते हैं। लाफों द्वारा देवीको पेड़ा खिलाते हैं और दूध पिलाते हैं। लाफोंके जलनेसे मन्दिरमें रात्रिके समय भी दिनके समान प्रकाश रहता है। नित्य रात्रिमें देवीके शयनके लिये मन्दिरमें पलङ्ग बिछाया जाता है, उसपर तोसक, तकिए और बहुमूल्य वस्त्र आभूषण रक्खे जाते हैं और मन्दिरका द्वार बन्द करदिया जाता है। भीतरके दशों लाफोंके अतिरिक्त मन्दिरसे बाहर इसकी पीछेकी दीवारमें कई छोटे टेंम बलते हैं, जो हवेसे बुताजाते हैं, परन्तु वे पीछे आपसे आप या बारदेनेपर जलने लगते हैं। ज्वालादेवीको जीव बलिदान नहीं दियाजाता है।

मन्दिरके पीछे छोटे मन्दिरमें एक कूप है। कूपके भीतर उसके बगलमें आमने सामने २ बड़े लाफ वरते हैं; इसके पास दूसरे कूपका जल खौलता रहता है; इसको लोग गोरख-नाथकी 'डिभी' कहते हैं। मन्दिरके आसपास काली आदिके कई एक देव मन्दिर और कई मकान हैं। मंदिरके आगे दहिने ओर मीठा जलका कुण्ड है; जिसमें नालाद्वारा एक तालावसे पानी आता है। यात्रीलोग कुण्डसे जल बाहर निकालकर स्नान करते हैं। बस्तीके बहुतेरे लोग कुण्डका जल पीनेके लिये ले जाते हैं। नित्यही ज्वालामुखीमें यात्री आते हैं; परन्तु आश्विनके नवरात्रमें लगभग ५०००० यात्री आकर ज्वालादेवीका दर्शन करते हैं चैत्रके नवरात्रमें इससे कम लोग आते हैं।

इतिहास—एक समय ज्वालामुखी एक बड़ी और घनी कसबा थी; उसकी तवाहियां इस बातकी साक्षी देती हैं। ज्वालादेवीके मन्दिरके होनेसे वह कांगडासे भी अधिक प्रसिद्ध हुई है। लगभग ७०० वर्ष हुए, कि एक दक्षिणी ब्राह्मणने उस स्थान पर जाकर पृथ्वीसे निकलती हुई सर्वदा जलनेवाली एक ज्वाला देखी; उसने उस स्थानपर देवीका मन्दिर बनवाया। वर्तमान मन्दिर सैकडों वर्षसे बहुत खर्चसे सँवारा गया है। महाराज रणजीतसिंहने सन् १८१५ में उसके गुम्वजोंपर मुलम्मा करवाया।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—शिवपुराण (दूसराखण्ड; ३७ वां अध्याय) जब सतीने कनखलमें अपना शरीर जलादिया; तब उससे एक प्रकाशमान ज्योति उठी, जो पश्चिमकी ओर एक देशमें गिर पडी; उसका नाम ज्वाला भवानी हुआ वह सबको प्रसन्न करनेवाली है। उनकी कला प्रत्यक्ष है; उनकी सेवा पूजा करनेसे सब कुछ मिलता है, उसीको ज्वालामुखी कहते हैं।

देवीभागवत—(७ वां स्कंध-३८ वां अध्याय) ज्वालामुखीका स्थान देखने योग्य और सर्वदा व्रत करने योग्य है।

रोवालसर।

रोवालसर जानेका एक मार्ग होशियारपुरसे सीधा और दूसरा ज्वालामुखी होकरके है। होशियारपुरसे २० कोस 'ऊना' तहसीली; ३२ कोस 'वडसर' का थाना ४२ कोस मेडाका पडाव और ६० कोस रोवालसर है, जो लगभग ८० मील होगा और ज्वालामुखीसे रोवालसर लगभग ५५ मील है।

रोवालसर नामक एक वडा झील है; जिसमें पौधे लगे हुए कई एक टीले हैं। झीलमें टीलेके नकलका बनाया हुआ एक बेड़ है, जिसपर पौधे लगे हैं और देवमूर्त्तियां रक्खी हुई हैं। यात्रियोंके एकत्र होने पर वहाँके पण्डे गुप्तभावसे बेड़को झीलके भीतरसे किनारे पर खैंच लेते हैं। यात्रीगण टीलेको चलता हुआ अर्थात् किनारे आया हुआ देखकर बड़ा आश्चर्य मानते हैं और बेडेके ऊपरकी देवमूर्त्तियोंका पूजन करते हैं। मेषकी संक्रांतिको वहाँ स्नान दर्शनका मेला होता है।

कांगड़ा।

ज्वालामुखीसे २५ मील पूर्वोत्तर पञ्जावके जलन्धर विभागके काङ्गड़ा जिलेमें (३२ अंश ५ कला १४ विकला उत्तर अक्षांश; ७६ अंश १७ कला ४६ विकला) पूर्व देशान्तरमें काङ्गडा म्युनिसपलटी कसवा है, जिसको पहिले लोग नगरकोट कहते थे।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय काङ्गड़ामें ९२८ मकान और ५३८७ मनुष्य थे; अर्थात् ४४५४ हिन्दू, ८७२ मुसलमान, ९ सिक्ख और ५२ दूसरे।

कसबा एक पहाड़ीके दोनों ढालु पर वसा है; वहाँसे बांणगङ्गा देख पड़ती है। दक्षिणी ढालू पर कसबेका पुराना भाग; उत्तरीय ढालू पर भवनकी शहर तली और महामायादेवीका प्रसिद्ध मन्दिर और खड़े चट्टानके सिरपर किला है; जिसमें गोरखा रेजीमेंटका १ भाग रहता है। काङ्गड़ेमें तहसीली, खैराती अस्पताल, स्कूल और सराय है। यह कसवा सुन्दर नीला मीनाकारी और गहना वननेके कामके लिये प्रसिद्ध है। काङ्गड़ामें महामायादेवीका मन्दिर अतिप्राचीन और वहुत प्रसिद्ध है; जहाँ दूर दूरसे यात्रीगण विशेष करके नवरात्रोंमें देवीके दर्शनके लिये आते हैं।

धर्मशाला—काङ्गड़ा कसवेसे ६ मील पूर्वोत्तर धर्मशालेमें अङ्गरेजी फौजी छावनी और काङ्गड़ा जिलेकी सदर कचहरियां हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय धर्मशालेमें ५३२२ मनुष्य थे। सन् १८६३ ई० के नवम्वरमें भारतवर्षके गवर्नर जनरल लार्ड "एल्गिन" धर्मशालेमें मर गये, यहाँ उनकी कबर है। सन् १८५५ ई० में काङ्गड़ा जिलेकी सदर कचहरियाँ धर्मशालामें नियत हुईं, तबसे काङ्गड़ा कसवेकी घटती और धर्मशालाकी बढ़ती होने लगी।

काङ्गड़ा जिला—इसके पूर्वोत्तर हिमालयका सिलसिला, जो तिव्वत देशसे इसको अलग करता है; दक्षिण–पूर्व वसहर और विलासपुरके पहाड़ी राज्य, दक्षिण–पश्चिम होशियारपुर जिला और पश्चिमोत्तर चक्की नामक छोटी नदी, वाद गुरदासपुर जिलेका पहाड़ी भाग और चम्बाका राज्य है। काङ्गड़ा जिलेका क्षेत्रफल पञ्जावके सव जिलोंमें दूसरा याने ९०६९ वर्गमील है; जिसमें हमीरपुर, डेहरा, नूरपुर, काङ्गड़ा और कुलू ५ तहसील हैं। जिलेमें मैदान और पहाड़ी देश दोनों हैं। पहाड़ियोंके वगलोंमें और उनके ऊपर जङ्गल लगे हैं। कई एक जङ्गलोंमें अनेक प्रकारके उत्तम जङ्गली वृक्ष हैं। वनोंमें चीता, भालु, भेंड़ियाँ बहुत हैं; वाघ भी कभी कभी देख पड़ते हैं और कई एक प्रकारकी वनैली विलारियाँ हैं। काङ्गड़ा जिलेमें व्यास, चनाव और रावी नदियां निकलती हैं। व्यास कुलूके उत्तर रोहतङ्ग पहाड़ियोंसे निकलकर लगभग ५० मील दक्षिण--पश्चिम वहनेके वाद मण्डी राज्यमें प्रवेश करके उसको लांघती है, पश्चात्, खास काङ्गड़ाके सम्पूर्ण घाटियोंमें वहती हुई पञ्जावके मैदानमें जाती है। चनाव नाहुलके ढालुओंसे वहती हुई मध्य हिमालयनके उत्तर चम्बा राज्यमें प्रवेश करती है, और रावी नदी वङ्गहालघाटीमें वहती हुई, पश्चिमोत्तरको चम्बा राज्यमें गई है, इस जिलेमें लोहा, शीशा और तांबाकी खान हैं। व्यास नदीकी वालुओंमें कुछ सोना मिलताहै। कांगड़ा और कुलू तहसीलीमें स्लेट पत्थर वहुत है, जो अम्वाले जलन्धर आदि जिलोंमें मकानोंकी छत पटानेके लिये भेजाजाताहै।

कुलू सवडिवीजनमें गरम झरने वहुत हैं, जिनमेंसे ३ अधिक प्रसिद्ध हैं, (१) व्यासके किनारेपर वशिष्ठ कुण्ड, (२) व्यासके किनारेपर कलात कुण्ड और (३) पार्वती घाटीमें मणिकर्णिका कुण्ड। मणिकर्णिका कुण्डके जलमें थैलोंमें चावल करके रख देनेसे वह पक कर भोजनके योग्य भात वन जाता है। झरनोंके समीप दूर दूरसे वहुतेरे यात्री और रोगी मनुष्य जाते हैं।

टांकरी वर्णमाला।

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह

का कि की कु कू के कै को कौ कं १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय इस जिलेमें ७५३९६० मनुष्य थे, निवासी प्रायः सब हिन्दू हैं, मुसलमान, बौद्ध, सिक्ख, कृस्तान; और जैन सब मिलकर ५० हजारसे भी कम हैं. ब्राह्मण और राजपूत बहुतहैं; इनके बाद कानेट, चमार और राठी जातियोंकी संख्या है। कुलू सब डिविजनके एक भागमें और लाहुलके उत्तर भागमें बहुत लोग बौद्ध मतके तिब्बतन हैं। खास कांगड़ा सब डिवीजनमें किसानलोग गांव बनाकर नहीं बसे हैं प्रत्येक मनुष्य अपने खास खेतपर रहते हैं और चुना हुआ किसी जगहपर अपना अपना झोपड़ा बनाते हैं, मकान आम तरहसे कच्चे ईंटेसे बने हुए दो मंजिले हैं। कुलू सब डिवीजनमें १०० से अधिक मकान वाले कई एक गांव हैं। गरीब लोगोंके मामूली पोशाक कमर तक कुर्ती वा टेहुने तक चोली, छोटा पायजामा और टोपी है। बहुत लोग कानमें सोनेका बाला पहनते हैं; धनीलोग बीचमें एक एक गुरिया और एक एक सोने वा चांदीकी कण्ठी गूँथकर गलेमें लगाते हैं और हाथमें सोने वा चांदीका बाला डालते हैं। हिन्दुओंकी स्त्रियां घांगड़ी, चोली और लम्बा पायजामा पहनती हैं और एक डुपट्टा ओढ़ती हैं, जो कभी कभी अपने सिर पर बांध लेती हैं वे गहना बहुत पहनती हैं। रंगदार गुरियोंकी कण्ठी पहननेकी बहुत चाल है। बिना ब्याही हुई और विधवा स्त्रियां नथिया नहीं पहनती हैं। पहाड़ी लोग सच्चे और इमानदार होते हैं; वे लोग अपने देशकी पहाड़ियोंमें रहते हैं; किसीको मैदानमें काम करना स्वीकार नहीं होता। बहुतेरे लोग अपनी स्त्रीको दूसरेके हाथ बेंच देते हैं। कांगड़ा सबडिवीजनमें बहुतेरी जातियोंमें एक स्त्रीके अनेक पति होते हैं। सन् १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय कांगड़ा जिलेकी ६ बस्तियोंमें २०००० से अधिक मनुष्यथे; अर्थात् ५७४४ नूरपुरमें, ५३८७ कांगड़ामें ५३२२ धर्मशालामें, ३४३१ सुजनपुरमें, २४२४ ज्वालामुखीमें और २१७४ हरिपुरमें।

कांगड़ा कसबेसे ५ पड़ाव अर्थात् लगभग ५० मील पश्चिमोत्तर पठान कोटमें रेलवे स्टेशन है, जिससे ६६ मील दक्षिण पश्चिम अमृतसर शहर है। कांगड़ासे एक पहाड़ी रास्ता शिमलाको गया है।

इतिहास—कांगड़ा कसबा पूर्वकालमें कटौच राज्यकी राजधानी था। कटौच राजकुमार "तवारीखी" समयके पहिलेसे अंगरेजोंके आनेके समय तक कांगड़ाकी घाटीपर हुकूमत करते थे। सन् १००९ ई० में गजनीके महमूदने हिन्दुओंको पेशावरमें परास्त करके नगरकोट (कांगड़ा) का किला ले लिया और वहांकी देवीके मन्दिरके बहुत सोना चांदी और रत्नोंको लूटा, परन्तु उससे ३५ वर्ष पीछे पहाड़ी लोगोंने दिल्लीके राजाकी सहायतासे मुसलमानोंसे किला छीन लिया। सन् १३६० में फिरोज तोगलकने कांगड़ापर चढ़ाई की। राजा उसकी आधीनता स्वीकारकरके अपने राज्यपर कायम रहा; परन्तु मुसलमानोंने फिर एकबार मन्दिरका धन लूटा। सन् १५५६ में अकबरने कांगड़ाके किलेको ले लिया। मुगल बादशाहोंके राज्यके समय कांगड़ा कसबेकी जन–संख्या इस समयकी आबादीसे बहुत अधिक थी। सन् १७७४ में सिक्ख प्रधान जयसिंहने छलसे कांगड़ाके किलेको ले लिया, जिसने सन् १७८५ में कांगड़ाके राजपूत राजा संसारचन्दको दे दिया। सन् १८०५ के पश्चात् ३ वर्ष तक गोरखोंकी लूटसे मुल्कमें अराजकता फैली रही सन् १८०९ में लाहौर के महाराज रणजीतसिंहने गोरखोंको परास्त करके संसारसिंहको राज्याधिकारी

वनाया । सन् १८२४ में संसारचन्दकी मृत्यु होने पर उसका पुत्र अनरुद्धसिंह उत्तराधिकारी हुआ । ४ वर्ष पीछे जव अनरुद्धसिंह उदास हो अपना राजसिंहासन छोडकर हरिद्वार चला गया, तव रणजीतसिंहने राज्यपर आक्रमण करके उसका एक भाग ले लिया । सन् १८४५ की सिक्ख लड़ाईके समय अङ्गरेजी सरकारने कांगडाको ले लिया, परन्तु किले पर उनका अधिकार पीछे हुआ । कांगडा जिलेकी सदर कचहरियां पहले कांगड़ा कसबेमें थीं, परन्तु सन् १८५५ में वह धर्मशालामें नियत हुई, तवसे कांगड़ा कसवेकी जन-संख्या तेजीसे घट गई ।

मण्डी ।

कांगड़ा कसबेसे ३ पडाव अर्थात् लगभग ३० मील दक्षिण-पूर्व समुद्रके जलसे २५५७ फीट ऊपर व्यास नदीके किनारे पर पञ्जावमें शिमलेके पहाड़ी राज्योंमें सबसे प्रसिद्ध देशी राज्यकी राजधानी मण्डी है ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय मण्डीमें ५०३० मनुष्य थे, अर्थात् ४८०७ हिन्दू, २०२ मुसलमान, १४ सिक्ख और ७ कृस्तान ।

मण्डी राजधानीके निकट व्यास नदीके दोनों किनारे ऊँचे और पथरीले हैं, नदीकी धारा तेज है; नदी पर लटकाऊ पुल वना है, जो सन् १८७८ ई० में खुला था । कसवेमें स्कूल और पोष्ट आफिस है ।

मण्डीका राज्य—इसके पूर्व कांगडा जिलेके कुलू विभाग; दक्षिण सकेत; उत्तर और पश्चिम कांगडा जिला है । मण्डी राज्यका क्षेत्रफल अनुमानसे १००० वर्ग मील है, जिसमें वहुत पहाडियां हैं । राज्यकी खाढ़ी उपजाऊ है जिसमें गल्ले, ऊख, अफियून और तम्वाकू उपजते हैं । निमककी दो खानोंसे राज्यकी-चौथाई मालगुजारी आती है । राज्यकी सम्पूर्ण मालगुजारी लगभग ३५०००० रुपया है, जिसमेंसे १००००० रुपया अङ्गरेजी गवर्न मेण्टको दिया जाता है । निवासी प्रायः सव हिन्दू हैं । सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय १४७०१७ मनुष्योंमेंसे २३९६ मुसलमान, सिक्ख और कृस्तान शेष सव हिन्दू थे राजाके सैनिक वल २५ सवार और ७०० पैदल हैं और इनको अङ्गरेजी गवर्नमेण्टकी ओरसे ११ तोपोंकी सलामी मिलती है ।

इतिहास—मण्डी राजवंश चन्द्रवंशी राजपूत हैं, जो मण्डियाल कहलाते हैं । राजा लोगोंकी सेनकी और राजपरिवारके दूसरे लोगोंकी सिंहकी पदवी है । लगभग सन् १२०० ई० में सुकेतके प्रधानका छोटा भाई वाहुसेन अपने वडे भाईसे झगड़ा करके कुलूमें जाकर मंगलोरमें वसा, जहां उसकी सन्तान ११ पुस्त तक रही वावूने सकोरके राणाको मारकर कई वर्ष तक सकोरमें हुकूमत की । उसके उपरांत वह मण्डी कसवेसे ४ मील दूर व्यास-नदीके तटपर भीनमें जाकर रहने लगा । वाहुसेनके १९ वें पुस्तमें राजा अजवरसेन हुए, जिन्होंने सन् १५२७ ई० में मण्डी कसवेको बसाया जो मण्डीका प्रथम राजा है । सन् १७७९ से १८२६ तक ईश्वरीसेनकी हुकूमतके समय मण्डी क्रमसे कटौच राजा, गोरखा और रणजीतसिंहके आधीन थी । सन् १८४० तक लाहौरको खिराज दिया जाता था । सन् १८४६ में मंडी अङ्गरेजोंके आधीन हुई । अङ्गरेजोंने वर्तमान राजाके पिताको राज्य-

सिंहासन पर बैठाया। मण्डीके वर्तमान नरेश राजा विजयसेन बहादुर ४५ वर्षकी अवस्थाके चन्द्रवंशी राजपूत हैं।

डलहौसी।

कांगड़ा कसबेसे ५ पडाव उत्तर कुछ पश्चिम और पठान कोटक रलव स्टशनसे ५१ मील पूर्वोत्तर डलहौसी एक फौजी छावनी और पहाडी स्वास्थ्य कर स्थान है। पठानकोटसे लोग टट्टू वा झंपान पर चढ़ करके चम्बा और डलहौसी जाते हैं। रावी नदीके पूर्व समुद्रके जलसे ७६८७ फीट ऊपर पहाड़की तीन चोटियोंके सिर और ऊपरी ढालुओंपर डलहौसी बसी है। कसबेमें एक कचहरी, पुलिस स्टेशन, अस्पताल; गिर्जा और कई एक होटल हैं। कसबेके बहुतेरे मकान दो मञ्जिले बने हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय बाकून छावनीके साथ डलहौसीमें १६१० मनुष्य थे; अर्थात् १००९ हिन्दू; ३१७ मुसलमान, ८ सिक्ख और १९६ दूसरे। गर्मीके दिनोंमें इसकी जन-संख्या बहुत बढजाती है।

सन् १८५२ ई० में अङ्गरेजी गवर्नमेण्टने चम्बाके राजासे डलहौसीको खरीदा। सन् १८६८ में यहां अङ्गरेजी सेना रक्खी गई।

चम्बा।

डलहौसीसे १ पड़ाव दूर कश्मीर-राज्यके निकट रावी नदीके दहिने पञ्जाबमें एक छोटे देशी राज्यकी राजधानी चम्बा है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ५२१८ मनुष्यथे; अर्थात् ४३९० हिन्दू, ७३० मुसलमान ४३ सिक्ख और ५५ दूसरे। पठानकोटसे टट्टू वा झम्पानपर चढ़करके लोग चम्बा जाते हैं।

चम्बा-राज्य-यह ऊँची पहाड़ी सिल सिलोंसे बन्द पञ्जावके पहाड़ी राज्योंमेंसे एक है। इसके पश्चिमोत्तर और पश्चिम कश्मीर राज्य; दक्षिण और दक्षिण-पूर्व कांगड़ा और गुरदास पुर जिले, पूर्व और पूर्वोत्तर लाहुल और लदाख है। राज्यका अनुमानिक क्षेत्रफल ३१८० वर्ग मील है।

वर्फमय चोटियोंके २ सिलसिले इस राज्य होकर गए हैं। राज्यके वनमें बहुत लकड़ी होती है। खानोंसे लोहेके और बहुत निकलते हैं। सम्पूर्ण राज्यमें स्लेटकी खान हैं। पहाड़के सिलसिलोंमें सुस्त और पीले भालू, पहाड़ी चीता, बारहसिंगा बनैली भेंड, बनैली बकरी, हरिन, कस्तुरा और तिब्बतन बैल होतेहैं। गर्मीके महीनोंमें लाखों भेड़ और बकरियें और हजारहां भैंस और गोरू चम्बाके पहाड़ोंपर चरते हैं।

राज्यमें गेंहू, जौ, जनेरा, और धान होते हैं। अक्खरोट, मधु, ऊन और घी इस राज्यसे अन्य स्थानोंमें भेजेजाते हैं। कपड़ा, तेल, चमड़ा और मसाला यहांसे लदाख, आरकन्द और तुरकिस्तानमें जाते हैं। राज्यकी मालगुजारी लगभग २३५००० रुपया है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इस राज्यके ३६५ गांवोंमें ११५७७३ मनुष्यथे, अर्थात् १०८३९७ हिन्दू, ६८७९ मुसलमान ३८५ बौद्ध, ७२ सिक्ख और ४० क्रस्तान। ब्राह्मण बहुत हैं; जो खेती और जाड़ेके दिनोंमें चराईका काम करते हैं और राजपूत बहुत कम हैं, जो खेती और कुली, चौकीदार आदिका काम करते हैं।

इतिहास–चम्बाका राजवंश क्षत्रिय है। वह पुराना राज्य सन् १८४६ ई० में अंगरेजी गवर्नमेंटके आधीन हुआ। चम्बाका मत नरेश राजा गोपालसिंह अपने वदचलनसे अंगरेजी सरकारको अप्रसन्न करके सन् १८७३ ई० में राज्यसे अलग किया गया। चम्बाके वर्तमान नरेश राजा शाम्वसिंह हैं जिनका जन्म सन् १८६६ ई० में हुआ। यहाँके राजाओंको अंगरेजी गवर्नमेंटकी ओरसे ११ तोपोंकी सलामी मिलती है और इनकी फौजी वल १ तोप और १६० सेना और पुलिस है।

पठानकोट।

डलहौसीसे ५१ मील पश्चिम–दक्षिण और कांगड़ासे ५ पडाव लगभग ५० मील पश्चिमोत्तर और अमृतसरसे ६६ मील पूर्वोत्तर पठानकोटका रेलवे स्टेशन है। पञ्जावके गुरदासपुर जिलेमें पठानकोट उन्नति करता हुआ कसवा है। पठानकोटसे डलहौसी और चम्वा और कांगड़ाको पहाड़ी रास्ते गए हैं और वहुतेरे लोग टट्टू वा झम्पानपर चढ़कर चम्वा और डलहौसा जाते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय पठानकोटमें ४३४४ मनुष्यथे, अर्थात् ३३१६ मुसलमान, १९९१ हिन्दू, ३२ सिक्ख और ५ क्रस्तान।

पठानकोटमें ईंटेके मकान हैं, पक्की सड़कें वनी हुई हैं, मामूली सवडिवीजनल कचहरियोंके अतिरिक्त स्कूल, अस्पताल, डाकवंगला और सराय हैं और सन् ई० की सोलहवीं शताब्दीका वना हुआ एक छोटा किला है।

गुरदासपुर।

पठानकोटसे २२ मील दक्षिण पश्चिम गुरदासपुरका रेलवे स्टेशन है। पञ्जावके अमृतसर विभागमें जिलेका सदर स्थान गुरदासपुर एक छोटा कसवा है।

सन् १८८१ की मनुष्य गणनाके समय गुरदासपुरमें ४७०६ मनुष्यथे; अर्थात् २५१८ हिन्दू, १९८९ मुसलमान, १६८ सिक्ख, ४ जैन और २७ दूसरे।

गुरदासपुरमें कचहरीका मकान, जेलखाना, वङ्गला, सराय, तहसील, अस्पताल, स्कूल, और एक छोटा पुराना किला है, जिसमें अव सारस्वत ब्राह्मणोंका एक मठ है।

गुरदासपुर–जिला—यह अमृतसर विभागके पूर्वोत्तरका जिला है। इसके उत्तर कश्मीर और चम्वाका राज्य; पूर्व काङ्गड़ा जिला और व्यासनदी, जो होशियारपुर जिले और कपूरथला–राज्यसे इस जिलेको अलग करती है; दक्षिण–पश्चिम अमृतसर जिला और पश्चिम स्यालकोट जिला है। जिलेका क्षेत्रफल १८२२ वर्गमील है।

यह जिला व्यांस और रावी दोनों नदियोंके वीचमें है और पश्चिमओर रावी नदीके वाद तक फैला है। चक्की नदीकी तेज धारा काङ्गड़ाकी पहाड़ियोंसे गुरदासपुरकी पहाड़ियोंको अलग करती है। जिलेकी उत्तरीय सीमा पर थोड़ी दूरतक रावी नदी वहती है। जिलेमें २ हजार फीट चौड़ी और ९ मील लम्वी एक झील है, जिसमें महाराज शेरसिंहका वनवाया हुआ एक महल स्थित है। जिलेके वनमें वाघ, भेड़िया, और हरिन रहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेमें ९४६०१२ मनुष्य थे। सन् १८८१ में ८२३६९५ मनुष्य थे; अर्थात् ३९१४०० मुसलमान, ३५९३२९ हिन्दू, ७३३९५ सिक्ख,

४६३ क्रुस्तान और १०८ जैन। इनमेंसे १२९७५५ जाट, जिनमें ३८०४७ हिन्दू, ४६०७९ सिक्ख और ४५६२९ मुसलमान, ७१५१९ राजपूत, जिनमें ३१७२३ हिन्दू, शेष सब मुसलमान, ४७८९९ ब्राह्मण, जिनमें सब हिन्दू वा सिक्ख और ४३५७१ गूजर, जो प्रायः सब मुसलमान हैं।

गुरदासपुर जिलेमें बटाला (जन संख्या २७२२३) प्रधान कसबा और दीनानगर कलानूर, गुरदासपुर, पठानकोट डलहौसी इत्यादि छोटे कसबे हैं और डेरानानक और श्रीगोबिन्दपुर सिक्खोंका पवित्र स्थान है।

इतिहास—सन् १७१२ ई० में सिक्खोंके प्रधान बन्दाने गुरदासपुरके किलेको बनवाया, जो अन्तमें शाही सेनासे परास्त होनेके उपरान्त लोहेके "पीञ्जरे" में बन्द करके दिल्लीमें लायागया और बड़ी निर्दयतासे मारागया, सिक्ख सब पहाड़ी और वनोंमें भागगए। अङ्गरेजी राज्य होनेपर सन् १८४९ ई० के पश्चात् बारीदोआबका ऊपरी भाग एक जिला बनायागया, जिसका सदरस्थान बटालामें हुआ। सन् १८५६ में जिलेका सदरस्थान बटालासे गुरदासपुरमें आया।

बटाला।

गुरदासपुरसे २० मील (पठानकोटसे ४२ मील) दक्षिण–पश्चिम 'बटाला' का रेलवे स्टेशन है। पञ्जाबके गुरदासपुर जिलेमें प्रधान कसबा और तहसीलका सदरस्थान बटाला है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बटालामें २७२२३ मनुष्य थे, अर्थात् १७३१६ मुसलमान, ९५५९ हिन्दू, ३२७ सिक्ख और २१ क्रुस्तान। बटालेमें ईंटके मकान बने हैं और २ सुन्दर तलाव. शमशेरखांका मकबरा, महाराज रणजीतसिंहके पुत्र शेरसिंहकी बनवाई हुई आनारकली नामक सुन्दर इमारत, एक देव मन्दिर, एक मिशन कालेज, सराय, अस्पताल, स्कूल, पुलिस स्टेशन और कचहरीके मकान हैं। बटाला गुरदासपुर जिलेमें सौदागरीका "केन्द्र" है, इसमें मोटे पशमीने बनते हैं और रेशम, रुई, पीतल और चमडेकी सौदागरी होती है। बटालासे २४ मील दक्षिण–पश्चिम अमृतसर है।

इतिहास—लगभग सन् १४६५ ई० के बहलोल लोदीके राज्यके समय भट्टी राजपूत राय रामदेवने बटालाको बसाया। सोलहवीं शताब्दीमें बादशाह अकबरने इसको शमशेरखांको (जागीर) दिया। शमशेरखांने कसबाकी उन्नति की और इसके बाहर एक सुन्दर तालाब बनाया, जो अब तक स्थित है।

चौदहवां अध्याय।

(पञ्जाबमें) अमृतसर और लाहौर।

अमृतसर।

जलन्धर शहरके रेलवे स्टेशनसे ३३ मील पश्चिमोत्तर व्यास नदीके रेलवे पुल लांघने पर व्यास स्टेशन मिलता है। व्यासनदी हिमालयके दक्षिण कांगड़ा जिलेसे निकली है, और २९० मील बहनेके उपरांत हरीके पट्टनके निकट सतलजमें मिल गई है। महाभारत, वनपर्वके १३० वें अध्यायमें लिखा है, कि वशिष्ठ मुनि पुत्रके शोकसे व्याकुल हो व्यास-

नदी पर पृथ्वीमें गिर गए फिर व्यासे होकर उठे थे, इसी लिए इस नदीका नाम विपासा है। और अनुशासन पर्वके २५ वें अध्यायमें है कि विपासा (व्यासा) नदीमें स्नान करनेसे मनुष्य पापोंसे छूट जाता है।

व्यास-स्टेशनसे २६ मील और जलन्धर शहरसे ४९ मील (अम्वाला-छावनीसे १५५ मील) पश्चिमोत्तर और वटालासे २४ मील दक्षिण पश्चिम अमृतसरका रेलवे स्टेशन है। अमृतसरसे पूर्वोत्तर एक रेलवे शाखा गई है, जिसपर अमृतसरसे २४ मील वटाला, ४४ मील गुरदासपुर, ५१ मील दीनानगर और ६६ मील पठानकोट है।

पञ्जावके व्यास और रावी नदियोंके बीचमें (३१ अंश ३७ कला १५ विकला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश ५५ कला पूर्व देशांतरमें) किस्मत और जिलेका सदरस्थान सिक्खोंकी मजहवी राजधानी अमृतसर एक सुन्दर शहर है।

सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय अमृतसरमें १३६७६६ मनुष्य थे अर्थात् ७८७८६ पुरुष और ५७९८० स्त्रियां। इनमें ६३३६६ मुसलमान, ५६६५२ हिन्दू, १५७५१ सिक्ख, ८४८ कृस्तान, १४३ जैन, ५ पारसी और १ दूसरे थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें १९ वां और पञ्जावमें तीसरा शहर है।

रेलवे स्टेशनसे ½ मील दक्षिण अमृतसर शहर है। शहरके मध्यभागमें अमृतसरनामक पवित्र तालाव है, जिसके नामसे शहरका नाम अमृतसर पड़ा है। तालावके दक्षिण दरवार वाग और अटलटावर; पश्चिमोत्तर शहरके अन्तमें तेजसिंहका वनवाया हुआ शिव मन्दिर और १ मील पूर्वोत्तर डांक वंगलेके निकट संटपाल्स चर्च है। शहरसे पश्चिम कुछ उत्तर 'गोविंदगढ़' किला है। जिसमें युद्धका सामान और अङ्गरेजी पैदलकी एक कम्पनी रहती है। गुरुद्वारासे लौटनेपर रामवागके फाटकसे वाहर होकर आगे जानेपर कोतवाली मिलती है, जिससे आगे वाईं ओर महम्मदजानकी मसजिद और अधिक उत्तर ईदगाह है, जिसके समीप खांमहम्मदकी मसजिद है। दहिने एक उत्तम तालाव और ¾ मील दक्षिण ४० एकड भूमिपर पवलिक वाग है, जिसके मध्यमें एक सायवान वना हुआ है; जिसमें महाराज रणजीतसिंह अमृतसरमें आने पर ठहरते थे। शहरमें २ वड़ी सराय, सत्यनारायणका मन्दिर, केसरवागमें महारानी विक्टोरियाकी उजले मार्वुलकी प्रतिमा है। शहरके उत्तर सिविल लाइन है जिसके वाद देशी पैदलकी २ कंपनियोंकी फौजी छावनी है। इनके अतिरिक्त अमृतसरमें कई एक छोटे सरोवर; कई मन्दिर, कई एक गिर्जे, जेलखाना, अस्पाल, टाउन-हाल और स्कूलके मकान हैं। यहां नानकशाहियोंके १३ अखाड़े हैं।

अमृतसर उन्नति करती हुई दस्तकारीका प्रधान स्थान है। यहां तिव्वतके प्लेटू पर रहनेवाली वकरियोंके मुलायम वालसे कश्मीरी शाल विनेजाते हैं लगभग ४ हजार कश्मीरी लोग शालका काम करते हैं। ८०० रुपए तकका शाल तैयार होता है, कई एक यूरोपियनकोठी शाल खरीदनेके लिये हैं। शहरकी दूसरी दस्तकारियां सोनेके तारकी कारचोवीका ऊनी कपड़ा और रेशमी असवाव और हाथीदांतमें नकाशीका काम है। अमृतसरमें वहुत वडा कालीनका कारखाना है; दस्तकारियोंके लिये मध्य एशियाके सम्पूर्ण विभागोंसे वहुत असवाव लाए जाते हैं। वहुतेरे कश्मीरी अफगान, नयपाली, वोखारावाले, वलूची, पारसियन, तिव्वतन, आरकंडी इत्यादि सौदागर शहरके आसपास और कारवान सरायमें देख पड़ते हैं। गल्ला, चीनी, तेल, निमक,

तम्बाकू, अंगरेजी असबाब, कश्मीरका शाल, रेशम, शीशा मट्टी और लोहेका वर्तन, चाय, रंग इत्यादि दूसरे देशोंसे यहां आते हैं और यहांकी बनी हुई वस्तु दूसरे देशोंमें भेजीजाती है।

अमृतसरमें कार्त्तिककी दिवालीके समय विशेष उत्सव होताहै। गुरुद्वारामें बड़ी रोशनी, सजावट और यात्रियोंकी भीड होती है। उस समय यहां बहुत भारी मेला लगता है, उसमें सैकड़ों कोससे सौदागर आते हैं। अमृतसरमें दूसरा मेला बैशाखमें होताहै। दोनों मेलोंमें पचासों हजार मवेशियां और कई एक हजार घोड़े आते हैं और दूरके प्रदेशोंसे सौदागर आकर घोड़े खरीदते हैं।

अमृतसरतालाव–मैं शहरके मध्यभागमें अमृतसर तालावके निकट किराएके मकानमें टिका। दूरहीसे अपूर्व तालाव और गुरुद्वारा मन्दिरका मनोहर दृश्य दृष्टि गोचर होताहै। तालाव ४७५ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है, जिसके चारों ओर सफेद मार्बुल और काले तथा भूरे पत्थरके चौकोनें तख्तोंसे बना हुआ २४ फीट चौड़ा फर्श है। तालावके चारों बगलोंमें नीचेसे ऊपरतक सफेद मार्बुलकी सीढ़ियां हैं। तालावके तीन ओर सिक्ख राजाओं और सरदारोंके बनवाए हुए बहुतेरे मकान और उत्तर ओर पत्थरके तख्तोंसे पाटा हुआ बड़ा फर्श है; जिसपर घड़ीका ऊँचा बुर्ज बना है। तालावमें गहरा जल है। कोई आदमी इस पवित्र तालावके समीप जूता नहीं लेजाता है और इसके जलमें अपवित्र वस्त्र नहीं फींचता है। तालावके मध्यमें गुरुद्वारा वा स्वर्ण मन्दिर खड़ा है।
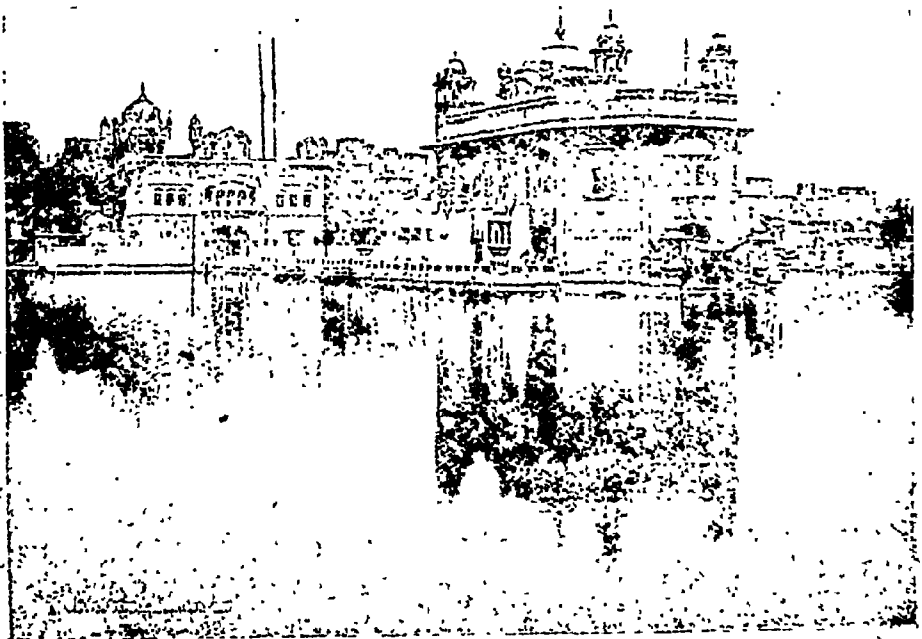
स्वर्णमन्दिर, अमृतसर।

गुरुद्वारा वा स्वर्णमन्दिर–इस मन्दिरके ३ नाम हैं। गुरुद्वारा, स्वर्णमन्दिर और दरबार-साहब। अमृतसर तालावके मध्यमें ६५ फीट लम्बे और इतनेही चौड़े चबूतरेपर स्वर्णमन्दिर खड़ा है। तालावके पश्चिम किनारेसे मन्दिर तक २०० फीट लम्बा पुल है, जिसके पश्चिमी छोरपर एक मेहरावी फाटक है। पुलका फर्श श्वेत और नीले मार्बुलके तख्तोंसे वना है और पुलके दोनों किनारोंपर चमकीले मार्बुलके स्तम्भोंपर २० सोनहुले लालटेन हैं।

मन्दिरकी लम्बाई पश्चिमसे पूर्व तक ५५ फीटसे कम और चौड़ाई लगभग ३५ फीट है, जिसके शिरोभागपर मध्यमें १ बडा गुम्बज और चारों कोनों पर ४ छोटे गुम्बज हैं। मन्दिरकी दीवारके नीचेका भाग श्वेत मार्बुलसे बना है, जिसपर विविध रंगके बहुमूल्य पत्थर जड़कर स्थानस्थानपर चित्र बने हैं और ऊपरके भाग तथा सम्पूर्ण गुम्बजोंपर तांबेके पत्तर जड़कर सोनेका मुलम्मा किया हुआ है, इसलिए यह मन्दिर स्वर्णमन्दिर वा सोनहला मन्दिर करके प्रसिद्ध है। भारतवर्षके किसी मन्दिरमें इस मन्दिरके समान सोना नहीं लगा है। मन्दिरकी दीवारके बगलोंपर गुरुमुखी अक्षरोंमें ग्रन्थके बहुत पद्योंका शिलालेख है। इसके दरवाजोंपर सुन्दर रीतिस चांदीका काम है। मन्दिरका दृश्य अत्यन्त हृदयग्राही और मनोहर है। इसके भीतरका दृश्य भी बहुत सुन्दर है; दीवारपर उत्तम प्रकारसे मुलम्मा किया हुआ है; चित्रसे फूल इत्यादि बने हैं, छतमें छोटे दर्पणोंको बैठाकर कुन्दन किया हुआ है, फर्शमें शुक्ल और नील मार्बुलके टुकड़े सुन्दर रीतिसे जडे हुए हैं, पूर्व ओर मन्दिरका प्रधान पुजारी ग्रन्थ पढ़ता हुआ अथवा चंवर डोलाता हुआ बैठा रहता है, और मध्यमें एक चादर पर यात्रीगण रुपये, पैसे, कौडी, फूल, मोहनभोग इत्यादि पूजा चढ़ाते हैं। यहां अशरफियों-से लेकर कौडी तक पूजा चढ़ाईजाती है। सिक्खलोग ग्रन्थमें ईश्वरको मानते हैं, इस लिये वे लोग प्रतिदिन प्रातःकाल अपने ग्रन्थको वेठनसे संवारते हैं, उसको चांदनीके भीतर गद्दी पर रखकर चंवर डोलाते हैं और संध्या समय ग्रन्थको उठाकर निकटके पवित्र मन्दिरमें लेजाते हैं, जहां रात्रिमें सोनहले विस्तरपर उसको आराम कराते हैं।

मन्दिरके ऊपरकी मंजिलमें एक छोटा, परन्तु उत्तम प्रकारसे संवारा हुआ शीशमहल है, जहां गुरु बैठते थे, वहां मोरपंखकी झाड़ूसे बहारा जाता है। चांदीके पत्तर जडे हुए दरवाजेके पास सीढ़ियां खजानेको गई हैं, जिसमें १ बडा सन्दूक है। यहाँ ९ फीट लम्बे और ४ ½ इंच व्यासके चांदीके ३१ चोब हैं और ४ इनसे भी बड़े हैं। सन्दूकमें सुनहले डाट लगे हुए मुलम्मेदार ३ सोंटे, १ पंखा, २ चँवर, ५ शेर खालिस सोनेकी एक चाँदनी, जिसमें लाल, पन्ने और हीरे लगे हुए हैं, एक सोनेका झब्बू, रङ्गा हुआ मन्दिरका नकशा, मोतियोंकी झालर लगी हुई हीरोंका एक सुन्दर मुकुट, जिसको नवनिहालसिंह पहनते थे, ये सब असवाव रक्खे हुए हैं, जो ग्रन्थकी यात्राके समय उसके साथ जाते हैं।

मन्दिरके चारों ओरके फर्श पर श्वेत और नील मार्बुलके टुकड़े अच्छी रीतिसे बैठाये गये हैं और जगह जगह मार्बुलके गुम्बजदार छोटे स्तम्भ हैं। मन्दिरमें और इसके निकट नानकशाही लोग दिन रात भजन और ध्यान करते हैं और सर्वदा यात्रियोंकी भीड़ रहती है मन्दिरमें नानकशाही पुजारी और पण्डे बहुत रहते हैं। मन्दिरके आसपास जूता पहनकर

कोई नहीं जाने पाता है। मुसलमान और यूरोपियन लोग भी विना जूता पहने हुए मन्दिरमें जाते हैं; परन्तु पश्चिमके द्वारसे नहीं; उत्तरके द्वारसे।

अमृतसर तालाबके पश्चिम किनारे पर पुलके पास पाँचवां गुरु अर्जुनके समयका बना हुआ एक सिक्ख मन्दिर है, जिसके गुम्बज पर सोनहरा मुलम्मा है। सीढ़ियोंसे मन्दिरमें जाना होता है, जिसमें सुनहरे सिंहासनपर वस्त्रसे छिपाये हुए कई एक असवाव, ४ फीट लम्बी गुरुगोविन्दकी एक तलवार और एक गुरुका एक सोंटा रक्खा हुआ है।

तालाबके पूर्व मङ्गलसिंहके कुलके बनवाये हुए २ बड़े बुर्ज हैं, जो रामगढ़िया मीनार कहे जाते हैं, इनमेंसे उत्तरवाले मीनार पर आदमी चढ़ते हैं।

अटलमीनार—अमृतसर-तालाबके घेरेसे दक्षिण ३० एकड़ भूमि पर दरवार बाग है, जिसमें कवलसर नामक एक सरोवर और कई छोटे सायबान हैं। वागके दक्षिण किनारेके निकट १३१ फीट ऊँचा सुन्दर 'अटलमीनार' है, जिसको लोग वाबाअटल भी कहते हैं। इसका निचला कमरा सुन्दर प्रकारसे रंगा हुआ है, जिसके भीतरका व्यास ३० फीट है। इसके भीतरकी सीढ़ियाँ ऊपर ७ गेलरीको गई हैं। आठवें गेलरीमें लकड़ीकी सीढ़ियाँ बनी हैं। यह मीनार सिक्खोंके छठवें गुरु हरगोविन्दके छोटे पुत्र अटलरायके समाधि मन्दिरके स्थान पर बना है।

सिक्खोंके दश गुरु—सिक्ख शब्द शिष्यका अपभ्रंश है। सिक्खमतको नियत करनेवाले गुरु नानक हैं, जो लाहौर प्रान्तके 'तलवंडी' ग्राममें सम्वत् १५२६ (सन् १४६९ ई०) के कार्तिक सुदी १५ की रात्रिमें कल्याणराय खत्रीके गृह तृप्ताके गर्भसे जन्मे। इनके पुत्र श्रीचन्द्र और लक्ष्मीचन्द्र हुए। गुरु नानकका उपदेश प्रायः कबीरसाहबजीके उपदेशके समान था। सम्वत् १५९५ (सन् १५३८ ई०) के आश्विन बदी ८ को गुरु नानकका देहान्त हुआ। उनके पुत्रोंमेंसे एकने दूसरा गुरु होनेकी इच्छा की, परन्तु गुरु नानककी आज्ञानुसार उनके चेला लहना गुरु अङ्गदके नामसे दूसरा गुरु बने। वह व्यास नदीके निकट खादुरगांवमें रहते थे, जिन्होंने सिक्खोंकी पवित्र पुस्तकोंको लिखा। सन् १५५२ ई० में जब खादुरगांवमें गुरु अङ्गदका देहान्त होगया, तब अमरदास तीसरे गुरु हुए। वह खादुरगांवके पड़ोसके गोविन्दबास गांवमें बसते थे। सन् १५७४ ई० में अमरदास (खत्री) की मृत्यु होने पर उनके दामाद रामदास चौथा गुरु बने, जिन्होंने अकबरकी दी हुई भूमि पर अमृतसर शहरकी नेव दी और अमृतसर तालाव खोदवाया, तथा तालाबके छोटे टापू पर एक सिक्ख मन्दिर बनानेका काम आरम्भ किया। सन् १५८१ ई० में रामदास परमधामको गये। इसके पश्चात् रामदासके पुत्र अर्जुनमल पाँचवां गुरु हुए; जिन्होंने सिक्खोंके आदि ग्रन्थको बनाया और तालाबके बीचके मन्दिरका काम पूरा किया; इनके समय इस शहरकी बढ़ती हुई। अर्जुनमल सन् १६०६ ई० में जहांगीरके कैदखानेमें मरगये। उनके मरनेके पश्चात् उनके पहले पुत्र हरगोविन्द सिक्खोंके छठवें गुरु हुए; जिन्होंने अपने पिताकी दुगार्ति देखकर सिक्खोंमें मुसलमान द्वेष भड़काया। वह दो तलवार बाँधते थे। एक अपने पिताके हत्यारेको मारनेके लिये और दूसरा मुसलमानोंके राज्यके विनाश करनेके निमित्त। गुरु हरगोविन्दके ५ पुत्र थे; १ गुरुदत्त, २ सूरत, ३ तेगबहादुर, ४ हरराय और ५ वां अटलराय। सन् १६४४ ई० में गुरु हरिगोविंदकी मृत्यु हुई; उनके चौथे पुत्र हरराय सातवें गुरुकी गद्दी

पर बैठे; जिनका देहांत सन् १६६१ ई० में हुआ। इसके उपरांत हररायके पुत्र हरकृष्ण आठवें गुरु हुए। सन् १६६४ में उनकी मृत्यु होने पर हरगोविंदके तीसरे पुत्र तेगवहादुर नवें गुरुकी गद्दी पर बैठे, जिनको सन् १६७५ ई०में औरंगजेवने मारडाला। गुरु तेगवहादुरके पश्चात् उनके पुत्र गोविंदसिंह सिक्खोंके दसवें गुरु हुए जिनका जन्म सन् १६६६ ई० में विहार प्रदेशके पटने शहरके हरमन्दिरमें हुआ था।

गुरुगोविंदसिंह सिक्ख शासनको फिर शकलपर लाए। उन्होंने स्वाधीन राज्य नियत करनेको चाहा; अपने मतवालोंको सिंहकी पदवी दी और टोपी न पहननेकी, भोजनके समय मुरेठा न उतारनेकी और वाल न मुड़वानेकी आज्ञा दी। गुरुगोविंदसिंहने एक दूसरा ग्रन्थ वनाया, जो दशवें गुरुका ग्रन्थ कहलाता है। उन्होंने आज्ञा दी कि हमारे पश्चात् अव दूसरा कोई गुरु न होगा; सव लोग अवसे ग्रन्थ साहवको गुरु समझेंगे; जो किसीको कुछ पूछना होगा; वे वही देखलेवेंगे। सिक्खलोग वहुतेरे विषयोंमें हिन्दूके धर्म कर्मको पुष्ट करते हैं। पहला गुरुने जाति भेद उठा दिया और मूर्ति पूजाका निषेध किया परन्तु गुरुगोविंदसिंह लोगोंके उदाहरण; अपने करके दिखाया। वहुतेरे सिक्ख जाति भेद मानते हैं; जनेऊ पहनते हैं; हिन्दूका पर्व श्राद्ध और देवमंदिरोंमें देवताओंकी पूजा करते हैं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय हिन्दुस्तानमें १९०७८३३ सिक्ख थे। हिन्दुस्तानके जितने लोग अङ्गरेजोंसे लडे थे, उनमेंसे सिक्ख लोग सवसे अधिक लडनेवाले थे। गुरुगोविंदसिंहके जीवनका वडा भाग युद्धमें वीता। उन्होंने सन् १७०८ ई० में हैदरावादके राज्यके 'नदेड' में मुसलमानोंसे लडकर संग्राममें अपने प्राणका विसर्जन किया। वहां गुरुगोविंदकी संगति वनी है।

तरनतारन—अमृतसर शहरसे १२ मील दक्षिण व्यास और सतलज नदियोंके संगमसे उत्तर अमृतसर जिलेमें एक तहसीलीका सदर मुकाम और सिक्खोंका पवित्र स्थान तरनतारन है। अमृतसर शहरसे तरनतारनको पक्की सडक गई है, जिसपर घोड़े गाड़ीकी डाक चलती है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय तरनतारन कसवेमें ३२१० मनुष्य थे; अर्थात् १०७७ सिक्ख, १०४४ हिन्दू और १०८९ मुसलमान। कसवेमें कचहरीका मकान, पुलिस स्टेशन, सराय, स्कूल और अस्पताल और कसवेसे वाहर कोढ़ीखाना है।

सिक्खोंके पांचवेंगुरु अर्जुनमलने तरनतारन कसवेको नियत किया और उसमें एक सुन्दर तालाव और तालावके पूर्व वगलमें एक सिक्ख मन्दिर वनवाया। महाराज रणजीतसिंहने उस मन्दिरके ऊपर तांवेके पत्तरपर सोनेका मुलम्मा करवा दिया और उसको सुन्दर तरहसे सँवारा। मन्दिरके नीचेका भाग उत्तम रीतिसे रँगा हुआ है, वाहरकी दीवारपर देवताओंके चित्र वने हैं चारों ओर दालान है। मन्दिरके भीतर दक्षिण वगलमें रेशमी वस्त्रमें वांधे हुऐ ग्रन्थ साहव हैं; जिसको समय समय पर पुजारी पंखा डोलाता है। तालावके उत्तर कोनेके निकट नवनिहालसिंहका वनवाया हुआ ऊँचा वुर्ज है। वारीदोआव नहरकी सोभ्रांवनशाखा इस कसवेसे थोड़ी दूर पर वहती है जिससे नाला द्वारा इस तालावमें पानी जाता है। ऐसा प्रसिद्ध है कि जो कोढ़ी इस तालावमें तैर कर पार हो जाता है, उसका कुष्ठ रोग नहीं रहता है, इसीं लिये इस तालाव और इस कसवेका नाम तरनतारन है। अमृतसरसे यह पुराना स्थान है। वैशाखकी अमावास्याको यहां वडा मेला होता है, जो दो सप्ताह तक रहता है।

रामतीर्थ—अमृतसरसे ८ मील पश्चिम खासाके रेलवे स्टेशनके निकट रामतीर्थ है। जहां कार्तिक शुक्ल त्रयोदशीको एक मेला होता है। यात्रीगण एक पवित्र कुण्डमें स्नान करते हैं।

अमृतसर-जिला—इसके पश्चिमोत्तर रावी नदी, जो स्यालकोट जिलेसे इसको अलग करती है, पूर्वोत्तर गुरदासपुर जिला; पूर्व-दक्षिण व्यास नदी; जो कपूरथलाके राज्यसे इसको जुदा करती है और दक्षिण पश्चिम लाहौर जिला है। जिलेका क्षेत्रफल १५७४ वर्गमील है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय अमृतसर जिलेमें ९९२१०१ मनुष्य और सन् १८८१ में ८९३२६६ मनुष्यथे, अर्थात् ४१३२०७ मुसलमान, २६२५३१ हिन्दू, २१६३३७ सिक्ख, ८६९ क्रस्तान, ३१२ जैन और १० दूसरे। इस जिलेकी बहुत जातियोंमें हिन्दू, सिक्ख और मुसलमान तीनों हैं, जो सन् १८८१ की नीचेकी फिहरिस्तसे जान पड़ेंगे।

जाति	मनुष्य-संख्या	हिन्दू	सिक्ख	मुसलमान
जाट	२०५४३४	१६८४३	१५११०७	३७४८४
चुहरा	१०७०११	१०२२४५	२३५१	२४१५
झिनवार	४५३६०	१६२३६	५५५४	२३५७०
तरखाना	३४९८४	४१०१	२१०९५	९७८८
ब्राह्मण	३४७५३	३४१२०	६३३	"
खत्री	३१४११	२९०३६	२३७५	"
कुंभार	२९१७५	६१५६	२४२९	२०५९०
राजपूत	२५६६५	१८१८	४५०	२५३९७
अरोरा	२०६१३	१४७७१	५८४२	"
लोहार	१८७७८	१०३९	४७६९	१२९७०
नाई	१४६९४	४८४३	३४४७	६४०४
कंबोह	१३६५४	२८४४	६८१४	३९९६
छिंबा	१३३७९	३२७३	३९५६	६१५०
मिरासी	११०४६	९०	"	१९०५६
सोनार	८६०५	५०८५	२८६०	६६०

अमृतसर जिलेमें अमृतसर शहरके अतिरिक्त ७ छोटे कसबे हैं। जंडियाला; मजीठा, भैरावल, रामदास, तरनतारन, साढ़ालीकलां और बुलन्दा; इनमेंसे पहलेके ५ में म्यूनिसिपलिटी हैं और रामदासनामक कसबेमें एक सुन्दर सिक्ख मन्दिर बना हुआ है।

इतिहास—सिक्खोंके चौथे गुरु रामदासने सन् १५७४ ई० में बादशाह अकबरकी दीहुई भूमिपर अमृतसर शहरकी 'नेव' दी और अमृतसर नामक तालाव बनवाया, जिसके नामसे उस शहरका नाम अमृतसर पड़ा। उन्होंने तालाबके मध्यमें एक सिक्ख मन्दिर अर्थात् गुरुद्वारा बनानेका काम आरम्भ किया जिसको पांचवां गुरु अर्जुन मल्ने पूरा किया। सन् १७६१ में अहमदशाह दुर्रानीने सिक्खोंको परास्त करके शहर और मन्दिरका विध्वंस किया, उसके चले जानेके पश्चात् कई एक सिक्ख प्रधानोंमें अमृतसर बांटा गया,

परन्तु यह धीरे धीरे भांजीमिस्लके कब्जेमें आया। सन् १८०२ ई० में लाहौरके महाराज रणजीतसिंहने उससे शहरको छीनकर अपने राज्यमें मिला लिया और उस स्थान पर बहुत सा रुपया खर्च किया, तथा सोनेके मुलम्मे किए हुए तांबेकी चादरोंको मन्दिर पर जडवाया तबसे वह मन्दिर सोनहुला मन्दिर करके प्रसिद्ध हुआ। सिक्खोंने जहांगीरके मकबरे और दूसरे मुसलमानोंकी कबरोंसे बहुतेरे कीमती असबाब लाकर मन्दिर और तालाबमें लगा दिए। महाराज रणजीतसिंहने सन् १८०९ ई० में गोविन्दगढ किला बनवाया। और अमृतसर शहरको दृढ दीवारसे घेरवाया, जिसका बडा हिस्सा अंगरेजोंने अपनी अमलदारी होने पर तोड़वा दिया था; उसका कुछ भाग अवतक है। शहरमें १२ फाटक थे, जिनमेंसे शहरके उत्तर रामबागके निकट अब एक फाटक है।

सन् १८४९ ई० में पञ्जाबके दूसरे देशोंके साथ यह जिला अंगरेजोंके हाथमें आया। शहरका पुराना भाग सन् १७६२ से पीछेका और बडा भाग हालकी बनावटका है।

लाहौर।

अमृतसरसे ३२ मील पश्चिम लाहौरका रेलवे स्टेशन है। पञ्जाबमें किस्मत और जिलेका सदर स्थान तथा पञ्जाबकी राजधानी (३१ अंश ३४ कला ५ विकला उत्तर अक्षांश और ७४ कला २१ विकला पूर्व देशांतरमें) रावी नदीके १ मील बायें, अर्थात् दक्षिण लाहौर एक प्रख्यात शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फौजी छावनीके सहित लाहौरमें १७६८५४ मनुष्य थे, अर्थात् १०४७१० पुरुष और ७२१४४ स्त्रियां। इनमें १०२२८० मुसलमान, ६२०७७ हिन्दू, ७३०६ सिक्ख, ४६९७ कृस्तान, ३३९ जैन, १३२ पारसी, १४ यहूदी और ९ दूसरे थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें १२ वां और पञ्जाबमें दूसरा शहर है।

नया लाहौरका क्षेत्रफल ६४० एकड़ है। लाहौरके चारोंओर १५ फीट ऊँची ईंटोंकी दीवार और १३ फाटक हैं। उत्तरके अतिरिक्त शहरके तीन ओर खाई थी; जो अब भर गई है। शहरपनाहके बाहर चारो ओर पक्की सडक है।

मैं रेलवे स्टेशनके निकट मेलाराम खत्रीकी धर्मशालामें जा टिका। वहां पक्के तालावके चारों ओर धर्मशालेके मकान बने हैं; तालावके दक्षिण जनानाघाट और धर्मशालेसे उत्तर सुन्दर बाग है। रेलवे स्टेशनसे १ मील पश्चिम शहर तक 'ट्राम्वे' गई है। लाहौरमें जलकल सर्वत्र लगी है; जो सन् १८८१ ई० में खुली प्रधान सड़कोंपर रात्रिमें रोशनी होती है, कई एक धर्मशाले और देवमंदिर बने हैं और अनारकली चौक प्रधान बाजार है। चैत्रमें शालामारका प्रसिद्ध मेला होता है।

लाहौरमें चीफकोर्ट दोमञ्जिली इमारत पत्थरसे बनी हुई है, जिससे आगे जानेपर चिडियाखाना; अर्थात् पशुशाला मिलती है, इसमें थोडे पक्षी और बाघ इत्यादि वनजन्तु पाले गए हैं। गवर्नमेण्टहौसके दक्षिण और सिविल स्टेशनके अखीर दक्षिण एक वडा जेल है; जिसमें २२७६ कैदी रह सकते हैं। जेलखानेमें गलीचे, कम्बल इत्यादि बहुत सामान तैयार होते हैं, जिनको लन्दन और अमेरिकाके सौदागर बहुत खरीद करके ले जाते हैं। शहरसे १ मील उत्तर पञ्जाबके प्रसिद्ध पांच नदियोंमेंसे रावी नदी बहती है जो एक समय

शहरके पासही थी। यह नदी हिमालयके दक्षिण कांगड़ा जिलेसे निकलकर ४५० मील बहनेके उपरांत मुलतानसे प्रायः ४० मील ऊपर चनावमें मिली है। लाहौरमें रावीपर नावका पुल बना है। जिससे होकर शाहदारा जाना होता है। शहरसे २ मील दूर सीढ़ियोंसे घिरा हुआ एक बड़ा तालाव है, जिसके मध्यमें तीन मंञ्जिली बारहदरी बनी हुई है और उत्तर दर्वाजेके समीप एक बुर्ज है।

दूसरे बडे शहरोंके समान लाहौरमें बड़ी सौदागरी नहीं होती है। यहां रेशम और सोना तथा चांदीके लैस बनते हैं और यहांसे दूसरी जगहोंमें भेजे जाते हैं। लाहौरमें बङ्गालवङ्क, आगराबङ्क, शिमलाबङ्क इत्यादिकी शाखा हैं और अनेक यूरोपियन सौदागर तथा तिजारती लोग रहते हैं।

लाहौरके रेलवे स्टेशनसे गाडी वा एक्के पर सवार होकर इस क्रमसे लाहौरके प्रसिद्ध इमारत आदि वस्तुओंको देखना चाहिए। चौमुहानी सड़कसे पूर्व जानेपर दहिने लारेंस-बाग, बाएं पञ्जाब क्लब, दहिने लारेंस-हाल, बाएँ गवर्नमेण्टहौस, अर्थात् चीफ कमिश्नरकी कोठी और चिफ्सकालिज और ३ मील आगे मियामीरकी छावनी मिलती है और चौमुहानी सडकसे पश्चिम जाने पर कई एक अच्छी दुकानें, बाएँ होटल और लार्ड लारेंसकी प्रतिमा; दहिने कथेड्रल, बांए चीफ-कोर्ट और कई एक बङ्क, दहिने पोष्टआफिस और टेलीग्राफआफिस; थोडा घूमने पर बाएं पुराना और नया अजायबखाना और बाद अनार-कली बागका दरवाज़ा; उत्तर घूमने पर दहिने गवर्नमेण्ट कालिज और छोटी कचहरियां; बाएं डिपुटी कमिश्नरकी कचहरी और गवर्नमेण्ट-स्कूल; उससे आते पूर्व अनारकली बाजारके निकट 'मेओ'–अस्पताल, जिसमें ११० रोगी रह सकते हैं और कुछ पूर्व बाएं कबरगाह मिलता है, कबरगाहसे आगे सडक दो तरफ गई है, बाएं वाली नावके पुलपर होकर शाह दाराको और दहिने वाली किलेकी ओर।

लारेंसबाग—यह बाग ११२ एकडमें फैला हुआ है; इसमें भांति भांतिके वृक्ष और विविध प्रकारके झार बूटे लगाए गए हैं। बागके उत्तर बगलमें सर जे० लारेंसके स्मरणार्थ सन् १८६२ ई० का बनाहुआ लारेंसहाल है, जिसके निकट मण्टगोमरीके स्मरणार्थ सन् १८६६ ई० का बनाहुआ मण्टगोमरीहाल देखनेमें आता है। लारेंसबागसे उत्तर और गवर्नमेण्टहौसके समीप तैरनेके लिये एक उत्तम हम्माम बना है।

शालामार–बाग—यह लाहौरके टकशाल फाटकसे ६ मील पूर्व है; जो बादशाह शाहजहांके हुक्मसे सन् १६३७ ई०में बनाया गया और रणजीतसिंहने इसकी मरम्मत करवाई। यह एक दीवारसे घिरा हुआ प्रायः ८० एकड़में है। इसके ३ भाग हैं। फाटक द्वारा एक भागसे दूसरे भागमें जाना होता है। बागके दक्षिण बगल पर सडकके निकट बागका सदर फाटक है।

शालामारका पहला भाग प्रायः ३०० गज लम्बा और इतनाही चौड़ा आमका बाग है, इसके मध्यभागमें पूर्वसे पश्चिम और उत्तरसे दक्षिण एक दूसरेको काटते हुए पतले हौज बने हुए हैं; जिनके मध्यमें ४ वा ५ गजके अन्तर पर बिगडे हुए लगभग १०० फव्वारे और दोनों बगलोंपर पक्की सड़कें हैं। बागके चारों बगलोंपर दीवारके भीतर और बागमें जगह जगह सड़कें बनी हुई हैं और बागके चारों बगलोंमें दीवारके समीप एक एक बँगले हैं। उत्तरवाले बँगलेमें मार्बलका काम है।

इससे उत्तर शालामार बागका दूसरा भाग है; इसमें प्राय: ६० गज लम्बा और इतनाही चौड़ा एक पक्का सरोवर है; जिसके मध्यमें पूर्वसे पश्चिम तक पत्थरकी सड़क और भीतर कई एक पंक्तियोंमें २०० से अधिक मार्बुलके फव्वारे हैं । सरोवरके पूर्व और पश्चिम आमका बाग और उत्तर तथा दक्षिण फूल लगे हैं । चारोंओर दीवारोंके निकट एक एक छोटे बंगले और दक्षिण ओर मार्बुलकी वडी चौकी है ।

बागका तीसरा भाग सबसे उत्तर है; जिसमें आमके वृक्ष लगे हैं और स्थान स्थानमें पक्की सड़क वनी हैं ।

मियांमीरकी छावनी—लाहौरके सिविल स्टेसनसे ५ मील दक्षिण-पूर्व मियांमीरकी फौजी छावनी है । जिसमें १ अङ्गरेजी रेजीमेण्ट, २ बैटरी, २ देशी रेजीमेण्ट और १ रिसाला है । सन् १८८१ में मियांमीरमें १८४०९ मनुष्य थे ।

मियांमीर एक फकीर था, जिसके नामसे इस स्थानका यह नाम पडा है । छावनीमें जानेवाली सड़कके दहिने ½ मील पश्चिमोत्तर २०० फीट लम्बे और इतनेही चौडे चौकके मध्यमें मार्बुलके चबूतरे पर मियामीरका स्थान है, जिसके दरवाजेका शिलालेख सन् १६३५ ई० के मुताविक होता है । घेरेके बाएं बगलमें एक मसजिद है । महाराज रणजीतसिंह हजूरी बागकी बारहदरीमें लगानेके लिये यहांसे उजाडकर बहुतेरे मार्बुल लेगएथे ।

अजायब खाना—अनारकली-बागके निकट दो मञ्जिला पुराना अजायबखाना है; जिसमें पुराने समयके रिमेंस, कारीगरी, दस्तकारी, खानिक वस्तु और जानवर इत्यादि दर्शनीय वस्तुओंके नमूने रक्खे हुए हैं । पुराने रिमेंसोंमें बौद्ध सङ्गत राशियां, अनेक भांतिके सिक्के और पीतलकी २ पुरानी तोपें हैं, जिनको गुरुगोविन्दसिंहके समयकी लोग कहते हैं । यह तोपें होशियारपुर जिलेके आनन्दपुरके टीलेमें गाड़ी हुई मिलीं थीं । हिन्दुस्तानी कारीगरोंकी बनाई हुई पञ्जाबके राजाओं और सरदारोंकी बहुतसी तस्वीर दीवारमें लटकाई हुई हैं । इनके अतिरिक्त विविध भांतिके पञ्जाबी, जेवर; बाजा, वर्तन, गिलास इत्यादि; भावलपुरके प्याले और गहने दिल्लीके धातुके काम और छोटी २ मोतियां लगे हुए खञ्जर हैं । दस्तकारियोंमें देवमूर्तियां, पञ्जाबके चमड़ेके वर्तन, भावलपुर और मुलतानके रेशमी दस्तकारीका उत्तम नमूना और कपडे पर मुलायम रेशमके कारचोबीका काम; जिसमें जगह जगह शीशे लगे हैं; इत्यादि वस्तु हैं । खानिक वस्तुओंमें कोहनूर हीरेका नकल, पञ्जाबकी नदीमें पाया हुआ सोना; चट्टानी नामकके दो तरहके नमूने हैं । इनके अतिरिक्त अजायबखानेमें भांति भांतिके मरे हुए चिडिएं और कीडे इत्यादि अनेक पदार्थ हैं ।

दरवाजेके आगे ऊँचे चबूतरे पर एक पुरानी तोप है; जिसको अहमदशाह दुर्रानीके वजीर शाहवलीखांने वनवाया । अहमदशाहके हिन्दुस्तान छोडनेपर यह भांजीभिस्लके हाथमें आई । पीछे यह महाराज रणजीतसिंहके हस्तेगत हुई । सन् १८६० ई० में यह तोप लाहौरके दिल्ली फाटकसे यहां लाई गई । इसके ऊपरका पारिसियन लेख सन् १७६२ ई०के मुताविक है ।

पुराने अजायबखानेके निकट नया अजायबखाना बनकर तैयार हुआ है, जिसके समीप सन् १८९० ई० का वनाहुआ टाउनहाल है ।

अनारकलीका मकवरा—सिविल स्टेशनके निकट अठपहला और गुम्मजदार मकवरा है, जो वहुत वर्षोंतक सिविल स्टेशनके चर्चके काममें लाया जाता था । नकली कवर-इमारतके

मध्यसे हटा करके वगलके कमरेमें करदी गई है। उजले मार्बुलकी कवरपर सुन्दर लेख है, जिनमेंका हिजरी सन् १५९९ और १६९५ ई० के मुताविक होता है। पहला सन् (१५९९) अनारकलीके मरनेका और दूसरा सन् मकवरा तैयार होनेका होगा।

इतिहास—अकबरकी एक प्रिय स्त्री अनारकली कही जाती थी, जिसका नाम नादिरा बेगम और शरीफूनिसा भी था। लोग कहते हैं कि अनारकलीपर सलीम आशिक था। अकबरने सलीमको जनानेमें प्रवेश करनेके समय अनारकलीको मुसकुराते हुए देखा, इस लिये अनारकलीको जीते हुए गडवा दिया। अकवरके मरनेपर जव सलीम जहांगीरके नामसे बादशाह हुआ, तव उसने अनारकलीके मकवरेको वनवाया।

सोनहली मसजिद—इसके तीनों गुम्वजोंपर सोनाका मुलम्मा है; इस लिये इसको लोग सोनहली मसजिद कहते हैं। सन् १७५३ ई० में एक मुसलमानने इसको वनवाया। मसजिदके पीछेके आंगनमें एक वडा कूप है, जिसमें पानी तक सीढ़ियां वनी हैं। लोग कहते हैं कि इस कूपको गुरु अर्जुनने वनवाया था।

किला—शहरके पूर्वोत्तरके कोनेके निकट शहरपनाहके भीतर किला है। किलेके पश्चिमके रोशनाई फाटकसे किलेमें प्रवेश करनेपर थोडी दूर आगे जहांगीरकी वनवाई हुई मोती-मसजिद मिलती है, जिसके ३ गुम्वज उजले मार्बुलके हैं। वाहरके आंगनमें मेहरावी दरवाजेके ऊपर सन् १५९८ ई० का पारासियन लेख है। महाराज रणजीतसिंह इसमें अपना खजाना रखते थे। अङ्गरेजी सरकार भी इसमें अपना खजाना रखती है। जगह जगह सन्त्री रहते हैं।

पूर्व वढ़ने पर दलीपसिंहकी माताकी आज्ञासे वना हुआ एक छोटा सिक्ख मन्दिर देख पड़ता है।

मोतीमसजिदके समीप शाहजहांका वनवाया हुआ शीशमहल है, जिसकी कोठरियोंकी दीवारों और छतोंमें शीशेका उत्तम काम है। ख्वावगाहके वाएं शाहजहांका वनवाया हुआ नवलखामहल है। लोग कहते हैं कि इसके वनानेमें ९ लाख रुपए खर्च पडे थे। महलके प्रधान भागको समनवुर्ज कहते हैं, जिसमें उजले मार्वुलसे वना हुआ मण्डपाकार एक सुन्दर गृह है, जिसमें विचित्र रंगके वहुमूल्य पत्थरोंकी पच्चीकारी करके फूल लता वनाई हुई हैं।

पूर्व ओर ३२ खम्भोंपर वनाहुआ उजले मार्वुलका दीवानखास है, उत्तरको टट्टीमें एक छोटी खिड़की है; जिसके निकट वादशाह वैठकर प्रजाओंकी अरजो सुनते थे। अव यह चर्चके काममें आता है। इससे पूर्व अकवरी महल नामक सुन्दर सायवान है।

वाहरकी दीवार और महलके उत्तरकी दीवारके वीचमें दीवानखाससे नीचे ६७ सीढ़ियां गई हैं, जिससे लगभग ६० फीट दक्षिण वादशाह जहांगीरका वनवाया हुआ ख्वावगाह है, जिसके खम्भोंको उत्तम नकाशी है। अकवरी महलकी प्रतिमाओंके तुल्य इसमें हाथी और चिडियें वनाए गए हैं।

किलेक मध्य भागमें लाल पत्थरसे वना हुआ दीवानआम है, जो वारकके काममें आता है। इसके मध्यमें १२ खम्भे लगे हैं और वीचमें वादशाहका तखतगाह है। १२ सीढ़ियोंसे चढ़कर दीवानआममें जाना होता है; जिसके पीछे कई एक कमरे हैं; इसके उत्तर जहां अव कई एक वृक्ष हैं, इस कामके लिये एक कवर थी कि उसका देखकर वादशाहको स्मरण होता रहे कि एक समय मैं भी कवरमें जाऊंगा।

पूर्व अस्पताल है, जिसको महाराज रणजीतसिंहकी पुत्रवधू चन्द्रकुंआरिने अपने रहनक लिये बनवाया था। पीछे शेरसिंहकी आज्ञासे इसमें वह कैद थी और उन्हींके हुक्मसे पीछे मारदी गई। दीवानआमके पूर्व इसमें लगा हुआ शेरसिंहका दो मञ्जिला मकान है, जो पहले ४ मञ्जिलका था।

महाराज रणजीतसिंहकी छतरी—(अर्थात् समाधिमन्दिर)—यह किलेके पश्चिमके रोशनाई फाटकके आगे है। इसका अगवास किलेके फाटककी ओर है। छतरी और किलेके मध्यमें सिक्खोंके आदि ग्रन्थकर्ता तथा पांचवां गुरु अर्जुनकी सादी छतरीहै।

महाराजका गुम्बजदार समाधि मन्दिर मार्बुलसे बना है, जिसकी छत गोलाकार है। इसके भीतर मध्यमें चमकीले मार्बुलकी वारहदरी है, जिसमें मार्बुलके अठपहले ३२ खम्भे लगे हैं। इसके सोनहले छतमें उत्तम रीतिसे शीशे जड़े हुए हैं। वारहदरीके बाहर चारों ओर मकानकी छतमें शीशेके टुकड़े, अर्थात् दर्पण जड़कर चांदी और सोनेका कुन्दन हुआ है। वारहदरीका फर्श मार्बुलके टुकडोंसे बना है; जिसके बीचमें मार्बुलका ऊँचा चबूतरा है, जिसपर मार्बुलमें काट करके १ बडा और उसके चारों ओर ११ छोटे कमलके फूल बनाए गए हैं। मध्यके फूलके नीचे महाराज रणजीतसिंहके मृतशरीरकी भस्म रक्खी गई थी और दूसरे ११ कमल उनकी ४ स्त्रियों और ७ सहेलिनियोंके स्मरणार्थ बने हैं; जो महाराजके साथ सन् १८३९ ई० में सती हो गई थीं। बाहरके मकानमें मार्बुलकी कई देवमूर्तियां हैं। सिक्ख पुजारी प्रतिदिन महाराजकी समाधिके समीप सिक्खोंका आदि ग्रन्थ पढ़ता है और ग्रन्थको चँवर डोलाता है।

जामामसजिद—महाराज रणजीतसिंहकी छतरीके पश्चिम औरङ्गजेबकी बनाई हुई एक बडी जामामसजिद है। मसजिद सुर्ख पत्थरकी और इसके ३ सादे गुम्बज उजले मार्बुलके हैं। मसजिद बे मरम्मत है। इसके चारों बुर्ज-ऊपरके मञ्जिलके गिर जानेसे बदशकल होगए हैं; दक्षिण-पश्चिम वाला बुर्ज ऊपर चढ़नेके लिए खुला रहता है। दरवाजेके ऊपरका शिलालेख सन् १६७४ ई० के मुताबिक होता है। सीढ़ियोंसे मसजिदके फाटकमें जाना होता है। ऊपर एक कमरेमें अली और उसके पुत्र हसन और हुसेनकी पगड़ियां, एक टोपी, जिसपर अरबी लिखी है, अलीकी स्त्री फातिमाके एबादतका कालीन; महम्मदका स्लीपर, पत्थरपर उखडा हुआ चरण चिह्न, पोशाक, एबादतका कालीन, एक सब्ज पगडी और सुर्ख रंगकी दाढ़ीका १ बाल रक्षित है।

औरङ्गजेबने अपने बडे भाई दाराको मारकर उसके धनसे इस मसजिदको बनवाया, इसलिये मुसलमानलोग एबादतके लिए इसको पसन्द नहीं करते हैं। महाराज रणजीतसिंहने इसको मेगजीन बनाया था। अङ्गरेजी सरकारने सन् १८५६ ई० में मुसलमानोंको यह मसजिद देदी।

मसजिदके बाहरके आंगनको हजूरीबाग कहते हैं; जिसके मध्यमें रणजीतसिंहकी बनवाई हुई एक सुन्दर बारहदरी है, जिसको उन्होंने शाहदरावाले जहांगीरके मकबरेसे श्वेत मार्बुल लाकर बनवाया।

जहांगीरका मकबरा—किलेसे १ ३/४ मील उत्तर और शाहदराके रेलवे स्टेशनसे १३/४ मील दूर शाहदरामें दिल्लीके बादशाह जहांगीरका बड़ा मकबरा है। मकबरे और शहरके बीचमें रावी नदी पर नावोंका पुल बना है यद्यपि सिक्खलोग इससे असबाब उजाड लेगए थे,

तथापि यह मकवरा लाहौरको भूषित करनेवाली प्रधान वस्तुओंमेंसे एक है। सन् १६२७ ई० में जहांगीर मरा और यहां दफन किया गया। ५० फीट ऊँची मेहरावीसे मकवरेके आंगनमें जाना होता है, जो एक वाग है। वाग सींचनेके लिये रहंट वना है।

मकवरा २०० फीटसे कुछ कम लम्वा और इतना ही चौडा है। इसके ऊपर समतल एकही छत है; जिसपर काले और सुर्ख मार्वुलके तख्ते जडे हुए हैं; जो अव वहुत उदास पड गए हैं। पहिले मकवरेके ऊपर मार्वुलका गुम्वज था, जिसको औरङ्गजेवने हटा दिया और चारों किनारों पर मार्वुलका घेरा था; जिसको रणजीतसिंहने उजाड लिया। मकवरेके प्रत्येक कोनेके समीप भूमिसे ९५ फीट ऊँचा एक चौमञ्जिला वुर्ज है। वाहरकी सीढ़ियोंसे मकवरेकी छतपर जाना होता है।

मकवरेके मध्यमें अठपहला कमरा और उसके चारों ओर खाली मकान है। कमरेके चारों वगलोंमें नफीस जालीदार टट्टियां वनी हैं; जिससे उसमें पूरा प्रकाश रहता है। कमरेके मध्यमें उजले मार्वुलसे वनी हुई जहांगीरकी कवर है; जिसपर अनेक रंगके वहुमूल्य पत्थरोंकी पच्चीकारी करके लता फूल वनाए गए हैं। कवरके पूर्व और पश्चिम 'खोदा' के ९९ नाम उत्तम प्रकारसे नकाशी किए गए हैं। और दक्षिण वगलमें वादशाह जहांगीरका नाम है।

जहांगीरकी स्त्री नूरजहां और नूरजहांके भाई आसफखांके मकवरे खराव हो गए हैं; क्योंकि सिक्खलोग उनमेंसे मार्वुल और उनके मीनारोंमेंसे पत्थर निकाल लेगए थे।

लाहौर जिला—यह लाहौर विभागका मध्य जिला है। इसके पश्चिमोत्तर गुजरानवाला जिला; पूर्वोत्तर अमृतसर जिला; दक्षिण-पूर्व सतलज नदी; जो फिरोजपुर जिलेसे इसको अलग करती है और दक्षिण-पश्चिम मांटगोमरी जिला है। जिलेका क्षेत्रफल ३६४८ वर्ग मील है। लाहौर जिलेमें ४ तहसील हैं। जिलेकी सम्पूर्ण लम्वाई में रावी नदी वहती है। जिलेमें डेगनदी और वारीदोआव नहर भी है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय लाहौर जिलेमें १०७४७६७ मनुष्य और सन् १८८१ में ९२४१०६ थे, अर्थात् ५९९४७७ मुसलमान, १९३३१९ हिन्दू, १३५५९१ सिक्ख, ४६४४ क्रस्तान, ९७० जैन, ९२ पारसी और १३ दूसरे। जिलेमें जाट वहुत हैं, जो सन् १८८१ में १५७६७०थे। इनमेंसे ८४१७४ हिन्दू और सिक्ख, शेष सव मुसलमान थे। इनके वाद ९९०२५ चुहरा, ९४९६४ अराइन, ५४९७७ राजपूत थे, जिनमेंसे अधिक वा कम सव जातियोंमें मुसलमान हैं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय लाहौर जिलेके लाहौरमें १७६८५४, कसूरमें २०२९० और चुनियनमें १०३३९ मनुष्य थे।

इतिहास—ऐसी कहावत है कि अयोध्याके महाराज रामचन्द्रके पुत्र लवने लाहौरको और कुशने कसूरको (जो लाहौर जिलेमें है) नियत किया। लवके लौहर नामका अपभ्रंश लाहौर नाम है। सिकन्दरके समयके इतिहासमें लाहौरका वयान नहीं है, इससे जान पड़ता है कि लाहौर उस समय प्रसिद्ध नहीं था। सातवीं शताव्दीमें चीनका रहनेवाला यात्री हुएंस्संगने लिखा था कि लाहौर हिन्दुओंका वड़ा शहर है; इससे, ज्ञात होता है कि सन् ई० की पहली और सातवीं शताव्दीके वीचमें लाहौर प्रसिद्ध हुआ था।

सन् ९७७ ई० में लाहौरके राजा जयपालने अफगानिस्तानमें गजनीके राज्यपर आक्रमण किया, वह अपनी सेना पहाडके दर्रोतक ले गया। गजनी-खांदानके शाहजादा

सुबुक्तगीने बड़ी लड़ाईके पश्चात् तुफानका मौका पाकर हिन्दुओंके लौटनेका मार्ग बन्द कर दिया, परन्तु जब राजाने ५० हाथी उसको दिये और १० लाख 'दिरहम' अर्थात् २ लाख पचास हजार रुपया देनेका करार किया, तब उसने राजाकी फौजको हिन्दुस्तानमें लौटने दिया। अन्तमें दिरहम न मिलने पर सुबुक्तगीने हिन्दुस्तानमें आकर जयपालको परास्त किया और पेशावरके किलेमें १० हजार सवार और १ अफसर तैनात किया। सन् ९९७ ई० में सुबुक्तगीके मरने पर उसका पुत्र महमूद गजनीके तख्तपर बैठा, उसने ग्यारहवीं शताब्दीके आरम्भमें राजा जयपालको परास्त किया। उस समय हिन्दुओंका यह दस्तूर था कि जो राजा दो बार लड़ाईमें हारै, उसको लोग राजगद्दीके योग्य नहीं समुझते थे, इसलिये जयपाल अपने पुत्र अनङ्गपालको राज्य देकर बादशाही ठाटसे चितापर जल गया। पीछे लाहौर मुसलमानोंके आधीन उनकी हिन्दुस्तानकी राजधानी हुआ। सन् ११९३ ई० में महम्मदगोरीने लाहौरको छोड़ कर दिल्लीमें अपनी राजधानी बनाई।

मुगल बादशाहोंके राज्यके समय लाहौर शहरकी उन्नति हुई। अकबरने लाहौरके किलेको बढ़ाया और सुधारा तथा शहरको दीवारसे घेरा, जिसका हिस्सा अबतक महाराज रणजीतसिंहका बनवाया हुआ नया शहरपनाहमें वर्तमान है। अकबरके राज्यके समय यह शहर क्षेत्रफल और आबादीमें तेजीसे बढ़गया। जहांगीर लाहौरमें बहुधा रहता था, जिसका मकबरा शाहदारामें स्थित है। शाहजहांने (किलेमें) अपने बापकी इमारतके बगलमें एक छोटा महल बनवाया। औरङ्गजेबके राज्यके समय लाहौरकी घटती आरम्भ हुई। सन् १७४८ में अहमदशाह दुर्रानीने लाहौर शहरको ले लिया, तबसे लगातार आक्रमण और लूटपाट होने लगा, लेकिन महाराज रणजीतसिंहके राज्य होनेपर फिर लाहौरकी उन्नति हुई।

'गुजरांवाला' (शहर) के रहनेवाले महाराज रणजीतसिंहने सन् १७९९ ई० में अफगानिस्तानके शाहजमांसे लाहौर पाया, उन्होंने अपने पराक्रम और बुद्धिबलसे सतलज नदीके उत्तरका सम्पूर्ण मुल्क काश्मीर, पेशावर, और मुलतान तक अपने आधीन करके एक बड़ा राज्य नियत किया। लाहौर राजधानी हुआ, इनके राज्यके समय लाहौर फिर पूर्ववत् रवनकदार हुआ। महाराजने लाहौरको अच्छी तरहसे सुधारा। महाराज रणजीतसिंह ५९ वर्षकी अवस्थामें सन् १८३९ ई० की तारीख ३० जूनको मरगए, उनकी ४ स्त्रियां अच्छे अच्छे वस्त्राभूपणोंसे सज्जित हो ७लौंडियोंके सहित महाराजके चितापर जलकर सती होगई।

महाराजके देहांत होनेपर उनके बड़े पुत्र खड्गसिंह लाहौरके राजा हुए; पर थोड़ेही दिनके पश्चात् पुराने मंत्री ध्यानसिंहके अनुमतिसे खड्गसिंहका पुत्र नवनिहालसिंह अपने बापको नजरबन्द करके आप राज्यका काम करने लगा। सन् १८४० के नवम्बरमें महाराज खड्गसिंहकी मृत्यु हुई। नवनिहालसिंहकी अवस्था १८ वर्ष की थी, वह महाराजकी प्रेतक्रिया कर हाथी पर सवार हो, एक फाटक होकर जाता था, फाटककी इमारत गिर गई जिससे नवनिहालसिंह मरगया। इसके पश्चात् नवनिहालसिंहकी माता चन्दकुँआरि राज्य करने लगी। सन् १८४२ ई० में महाराज रणजीतसिंहकी महताबकुँअरीके पालकपुत्र शेरसिंहने ध्यानसिंहकी अनुमतिसे जो लाहौर दरबारके अधीन जम्बूका राजा था, लाहौरपर आक्रमण किया। शेरसिंह राजा और ध्यानसिंह मन्त्री हुआ। चन्दकुँअरीके खर्चके लिये ९ लाख रुपएकी जागीर मिली, अन्तमें शेरसिंहकी आज्ञासे चन्दकुँअरी मारी गई। अजितसिंहने जो चन्दकुँ-

अरीका सहायक था। सन् १८४३ में ध्यानसिंहके सलाहसे दगा करके पिस्तौलसे महाराज शेरसिंहको मारडाला और शेरसिंहके शिशुपुत्र प्रतापसिंह और मंत्री ध्यानसिंहको भी मार-कर महाराज रणजीतसिंहके छोटे पुत्र दलीपसिंहको राज्य सिंहासन पर बैठाया जिसका जन्म सन् १८३८ ई० के ४ सितम्बरको था। अजितसिंह महाराज दलीपसिंहका मंत्री बना। ध्यानसिंहका पुत्र हीरासिंह सरदारलोग और सेनाओंको अपनी ओर करके उसी दिन किलेके द्वारपर पहुँचा। रातभर लड़ाई होती रही, सवेरे अजितसिंह और उनके साथी लहनासिंह मारेगए। अजितसिंहका सिर काटकर ध्यानसिंहकी स्त्रीके चरणोंपर रक्खा गया। वह प्रसन्न होकर १३ स्त्रियोंके सहित ध्यानसिंहकी देहके साथ चितापर जलगई।

दलीपसिंह राजा और हीरासिंह मंत्री हुए। दलीपसिंहकी माता महारानी चन्दकुँअरी राजकार्य्य करने लगी। कुछ दिनोंके पश्चात् सरदारलोग हीरासिंहसे चिढ़गए, हीरासिंह अपने सलाहकार पण्डित जल्लाके साथ भागे, परन्तु रास्तेमें दोनों मारे गए, इसके पश्चात् दली-पसिंहका मामा अयोग्य पुरुष जवाहिरसिंह मंत्री बना, इसी अरसेमें कुँअर पिशौरासिंहने जो महाराज रणजीतसिंहके लड़कोंमेंसे था, बिगड़कर अटकके किलेको जा दबाया। जवाहिरसिंहकी आज्ञासे वहां वह मारा गया। खालसासेनाने इस कामसे अप्रसन्न होकर सन् १८४५ के २१ सितम्बरको जवाहिरसिंहका मारडाला, इसके बाद कोई मंत्री नहीं हुआ। खालसा सेना स्वतंत्र बनकर मनमाना काम करने लगी।

सन् १८४५ ई० के दिसम्बरमें सिक्ख सेनाने, जिसमें ६० हजार आदमी और १५० तोपें थीं, सतलज नदीको लांघकर अङ्गरेजी राज्य पर आक्रमण किया। २ महीनेके अर्सेमें मुदकी, फिरोजपुर, अलीवाल और सुब्रांव ४ भारी लड़ाइयां हुई। प्रत्येक युद्धमें बहुत अङ्गरेजी सेना मारी गई, परन्तु अंतकी लड़ाईमें सिक्ख परास्त होकर भागगए। लाहौर दरबारने अङ्गरेजी सरकारकी ताबेदारी कबूल की। सन् १८०९ ई० की संधि तोडदी गई। नयी संधिके अनुसार दलीपसिंह लाहौरका राजा बनाया गया। सतलज और व्यास दोनों नदियोंके बीच की भूमि अङ्गरेजी राज्यमें मिला ली गई। लड़ाईके खर्चेमें ५० लाख रुपए और १ किरोड़ रुपएके बदलेमें काश्मीर प्रदेश ले लिया गया। पीछे सरकारने ७५ लाख रुपए लेकर काश्मीर प्रदेशको महाराजके खिताबके साथ गुलाबसिंहको देदिया। सिक्खोंकी सेना की संख्या नियत की गई। लाहौर दरबारमें एक रेजीडेंट नियतहुआ और पञ्जाबमें ८ वर्षके लियेएक अङ्गरेजी लश्कर तैनात हुआ।

सन् १८४८ ई० में लाहौर दरबारके अधीन मुलतानके दीवान मूलराजने २ अङ्गरेजी अफसरोंको मारडाला। अङ्गरेजी सरकारने मूलराजको शिकस्त देनेके लिये लाहौर दरबा-रसे सिक्खसेना भेजी, परन्तु सिक्खसेनाका सेनापति और खालसाकी फौज अङ्गरेजोंसे नाराज थीं। शेरसिंह बिगड़ा। लड़ाईकी आग सम्पूर्ण पञ्जाबमें भड़क उठी। सिक्खोंका लश्कर फिर जमा हुआ। सिक्खोंने अङ्गरेजोंके साथ बड़ी बहादुरीसे लड़ाई की। चिलि-यानवालाकी लड़ाइमें अङ्गरेजोंके २४०० सिपाही और अफसर मारे गए और सन् १८४९ की १३ जनवरीको उनके ४ तोपें और ३ पलटनोंके निशान जाते रहे, परन्तु अन्तमें गुज-रात शहरके निकटकी लड़ाईमें बहादुर सिक्ख परास्त होगए। तारीख २९ मार्चको इश्तिहार दियागया कि आजसे पञ्जाबका मुल्क अङ्गरेजी राज्यमें मिलगया। महाराज दलीपसिंहके लिये ५ लाख ८० हजार रुपया वार्षिक पेंशन नियत हुई।

अङ्गरेजोंने दलीपसिंहसे सुप्रसिद्ध कोहनूर हीरा भी ले लिया, जिसको सन् १६३९ ई० में पारसक नादिरशाहने दिल्लीके वादशाह महम्मदशाहसे छीन लिया था। नादिरशाहके मरने पर वह हीरा अफगानिस्तानके अहमदशाह दुर्रानीके हाथमें आया। पीछे वह शाहशुजाको मिला। शाहशुजा राज्यसे च्युत होकर कावुलसे भागकर सन् १८१३ ई० में महाराज रणजीतसिंहके शरणमें आया। रणजीतसिंहने शाहशुजासे हीरेको छीन लिया था। अव यह हीरा इङ्गलेण्डेश्वरी महारानी विक्टोरियाके मुकुटमें लगा है। हीरा लण्डनमें फिरसे काटकर दुरुस्त किया गया। काटनेमें ८० हजार रुपए खर्च पड़े थे। हीरेका वजन १८६ करांतसे १०२ करांत होगया। विलायती जौहरी अव हीरेका दाम ३ किरोड़ आँकते हैं। कुछ लोगोंका ऐसा मत है कि यह हीरा पूर्व समयमें कुन्तीपुत्र राजा कर्णके पास था।

महाराज दलीपसिंह अपनी माता चन्दाकुँअरीके साथ इङ्गलेण्ड गया और नारफाक देशमें रहने लगा। सन् १८६१ में चन्दाकुँअरीका देहान्त होने पर दलीपसिंह उसकी क्रिया करनेके लिये हिन्दुस्तानमें आया था। पीछे वह विलायतमें जाकर कृस्तान होगया, उसने एक मेमसे अपना व्याह किया, जिससे ३ पुत्र हुए; जिनमें अव दो जीवित हैं। दलीपसिंह अङ्गरेजी सरकारसे नाराजहोकर 'रूस' गया था। उसी समय विलायतमें उसकी स्त्री मरगई, तव उसने रूससे लौटने पर पेरिसमें अपना दूसरा व्याह किया। अव वह उसी जगह रहता है।

सन् १७५७ की जुलाईमें २६ वां देशी पैदल रेजीमेण्ट मियांमीरकी छावनीमें वागी हुई और अपने अफसरोंमेंसे कई एकको मारनेके पश्चात् भागगई, परन्तु उनको अङ्गरेजोंने रावीके किनारे पर पाकर मारडाला।

पञ्जावदेश—पञ्जावके पूर्व यमुना नदी, जो पश्चिमोत्तर देशसे इसको अलग करती है और चीनका राज्य, उत्तर काश्मीर और स्वात और वोनरके देशी राज्य, पश्चिम अफगानिस्तान और खिलात और दक्षिण सिंध और राजपूताना देश है। पञ्जावके मध्यमें इसकी राजधानी लाहौर शहर है। परन्तु आवादी और मशहूरीमें दिल्ली प्रधान है। पञ्जावके अङ्गरेजी राज्यका क्षेत्रफल ११०६६७ वर्गमील और देशी राज्योंका क्षेत्रफल ३८२९९ वर्ग मील तथा दोनोंका क्षेत्रफल १४८९६६ वर्ग मील है। पञ्जावमें लगभग ३४००० वर्गमील भूमि जोतने लायक नहीं है। उसमें पहाड़ और जंगल है।

इस प्रदेशका पंजाव नाम इसकारणसे पड़ा कि इसमें सतलज, व्यास, रावी, चनाव और झेलम, ये ५ नदियां वहती हैं। पंजाव ३ भागोंमें विभक्त है १ सिंधसागर दोआव; २ देराजात और ३ रासीसतलज जिले। इनमें १० भाग और ३२ जिले इस भांति हैं—(१) दिल्ली विभागमें दिल्ली, गुरगांवां और कर्नाल जिले (२) हिसार विभागमें सिरसा और रुहतक, (३) अम्बाला विभागमें अम्बाला, लुधियाना और शिमला, (४) जलन्धर विभागमें जलन्धर, होशियारपुर और कांगड़ा, (५) अमृतसर विभागमें अमृतसर, गुरदासपुर और स्यालकोट, (६) लाहौर विभागमें लाहौर, फिरोजपुर और गुजरांवाला, (७) रावलपिण्डीमें रावलपिण्डी, गुजरात, शाहपुर और झेलम जिले, (८) मुलतान विभागमें मुलतान, झंग, मांटेगोमरी और मुजफ्फरगढ़ जिले, (९) देराजात विभागमें देरागाजीखां देराइस्माइलखां और वन्नू जिले और पेशावर विभागमें पेशावर, कोहाट और हजारा जिले। पंजावमें वारीदोआव नहर, पश्चिमी यमुनानहर और सरहिंद और स्वात नदीकी नहर है।

सन् १८९१की मनुष्य-गणनाके समय पञ्जावके अङ्गरेजी राज्यमें २०८६६८४७ मनुष्य थे अर्थात् ११२५५९८६ पुरुष और ९६१०८६१ स्त्रियां । इनमेंसे ११६३४१९२ मुसलमान, ७७४३४७७ हिन्दू, १३८९३४ सिक्ख, ५३५८७ कृस्तान, ३९४७७ जैन, ५७६८ बौद्ध, ३५७पारसी २७ यहूदी और २८ दूसरे थे। इनमें सैकड़े पीछे पंजाबी भाषावाले६३$\frac{3}{4}$ मनुष्य, हिन्दीवाले १७$\frac{1}{2}$, जतकी भाषाके मनुष्य ८$\frac{1}{2}$, पस्तोभाषावाले ५, पश्चिमी पहाड़ी३$\frac{1}{2}$, वागड़ी १$\frac{1}{2}$ और अन्य भाषावाले $\frac{3}{4}$ मनुष्य थे।

पंजाबके शहर और कसबे, जिनमें सन् १८९१ की जनःसंख्याके समय १०००० से अधिक मनुष्य थे।

नम्बर	शहर वा कसवा	जिला	जन-संख्या
१	दिल्ली	दिल्ली	१९२५७९
२	लाहौर	लाहौर	१७६८५४
३	अमृतसर	अमृतसर	१३६८६६
४	पेशावर	पेशावर	८४१९१
५	अम्बाला	अम्बाला	७९२९४
६	मुलतान	मुलतान	७४६६२
७	रावलपिंडी	पिंडी	७३७९५
८	जलन्धर	जलन्धर	६६२०२
९	स्यालकोट	स्यालकोट	५५०८७
१०	फिरोजपुर	फिरोजपुर	५०४३७
११	लुधियाना	लुधियाना	४६३३४
१२	भिवानी	हिंसार	३५४८७
१३	रिवाड़ी	गुड़गांवां	२७९३४
१४	देरागाजीखां	देरागाजीखां	२७८८६
१५	पानीपत	कर्नाल	२७५४७
१६	बटाला	गुरदासपुर	२७२२३
१७	कोहाट	कोहाट	२७००३
१८	देराइस्माइलखां	देराइस्माइलखां	२६८८४
१९	गुजरांवाला	गुजरांवाला	२६७८५
२०	झंगमगियाना	झंग	२३२९०
२१	कर्नाल	कर्नाल	२१९६३
२२	होशियारपुर	होशियारपुर	२१५५२
२३	कसूर	लाहौर	२०२९०
२४	जगरुन	लुधियाना	१८११६
२५	गुजरात	गुजरात	१८०५०
२६	भीरा	शाहपुर-	१७४२८
२७	हिसार	हिसार	१६८५४
२८	रोहतक	रोहतक	१६७०२
२९	सिरसा	हिसार	१६४१५

नम्बर	शहर वा कसबा	जिला	जन-संख्या
३०	वजीराबाद	गुजरानवाला	१५७८६
३१	कैथल	कर्नाल	१५७६८
३२	हांसी	हिसार	१५१९०
३३	पिंडदादनखां	झलम	१५०५५
३४	शिमला	शिमला	१३८३६
३५	चिनयट	झंग	१३०२९
३६	झेलम	झेलम	१२८७८
३७	सुनपत	दिल्ली	१२६११
३८	प्रांग	पेशावर	१२३२७
३९	झझर	रोहतक	११८८१
४०	अमरकटांडा	होशियारपुर	११६३२
४१	शाहाबाद	अम्वाला	११४७३
४२	पलवल	गुड़गांवा	११२२७
४३	जलालपुर	गुजरात	११०६५
४४	राहोन	जलंधर	१०६६७
४५	चरसदा	पेशावर	१०६१९
४६	सधवरा	अम्वाला	१०४४५
४७	कर्तारपुर	जलंधर	१०४४१
४८	चुनियन	लाहौर	१०३३९
४९	ऐव्टावाद	हजारा	१०१६३

पंजावमें छोटे वडे ३६ देशी राज्य हैं, जिनमेंसे पटियाला, वहावलपुर, नाभा और जींद; ये ४ पञ्जावके लेफ्टिनेन्ट गवर्नरके आधीन; चम्बा, अमृतसरके कमिश्नरके आधीन; मलियरकोटला और कलसिया तथा शिमलाके २२ देशीराज्य अम्वालाके कमिश्नरके आधीन, कपूरथला, मंण्डी और सुकेत जलन्धरके कमिश्नरके आधीन; फरीदकोट लाहौरके कमिश्नरके आधीन, पटउड़ी दिल्लीके कमिश्नरके आधीन; और लौहारू और दुजाना हिसारके कमिश्नरके आधीन है। इन राज्योंका क्षेत्रफल ३८३९९ वर्गमील है। पहिले काश्मीर राज्य भी पञ्जावमें था परन्तु सन् १८७७ ई० में वह सीधा हिन्दुस्तानके गवर्नमेण्टके आधीन करादिया गया।

पंजाबके देशी राजाओं और प्रधानोंमें वहावलपुर, मलियरकोटला, पतोंदी, लोहारू और दुजानाके नरेश मुसलमान, पटियाला, जींद, नाभा, कपूरथला, फरीदकोट, और कलसियाके राजा सिक्ख; शेष सब हिन्दू हैं। सिक्ख राजाओंमें कपूरथलाके राजा कलाल शेष सब जाट हैं, बकिए हिन्दू नरेश, जिनके राज्य हिमालय पहाड़के नीचले सिलसिलेमें हैं, खास करके राजपूत हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पंजाबके देशी राज्योंमें ४२६३२८० मनुष्य थे। अर्थात् २३२४०९१ पुरुष और १९३९१८९ स्त्रियां। इनमेंसे २४९४२२३ हिन्दू, १३८१४५१ मुसलमान, ४८०५४७ सिक्ख, ६२०६ जैन ४६८ बौद्ध, ३२२ कृस्तान, ५५ पारसी, ६ यहूदी और २ दूसरे थे। इनमें सैकड़े पीछे पंजावी भाषावाले ६०½, पश्चिमी पहाड़ी १८¾, हिन्दी भाषावाले ११¼, जात्की ३¾; मारवाड़ी ५½ और अन्यभाषावाले १¾ मनुष्य थे।

पंजाबके देशीराज्योंका नक्शा।

नम्बर	देशीराज्य	क्षेत्रफल वर्गमील	कसबे और गाओंकी संख्या	मकानोंकी संख्या	मनुष्य संख्या सन् १८८१ ई०	मालगुजारी रुपया सन् १८८३-८४ ई०
	मैदानमें					
१	पटियाला	५८८७	३६०१	२८२०६३	१४६७४३३	४६८९५६०
२	बहावलपुर	१५०००	९२२	८८६५०	५७३४९४	१६०००००
३	कपूरथला	६२०	६१७	३७६३३	२५२६१७	१००००००
४	नाभा	९२८	४८५	४२०१९	२६१८२४	६५००००
५	जींद	१२३३	४२३	४२०७८	२४९८६२	६०००००
६	फरीदकोट	६१२	१६८	१००३१	९७०३४	३०००००
७	मलियरकोटला	१६४	११५	१२९६४	७१०५१	२८४०००
८	कलसिया	१७८	१७९	९३११	६७७०८	१७२०६०
९	पतउड़ी	४८	४०	२५३७	१७८४७	८०७६०
१०	दजाना	११४	२८	२९८१	२३४१६	७७१७०
११	लोहारू	२८५	५४	१ १७	१३७५४	६९०००
	जोड़	२५०६८	५६२२	५३१८८४	३०९६०४०	९५३२५५०
	पहाडी राज्य					
१	मण्डी	१०००	४५५९	२४३३१	१४७०१७	३६००००
२	चम्बा	३१८०	३५६	२०१६३	११५७७३	२३५०००
३	नाहन	१०७७	२०६९	२१५६२	११२३७१	२१००००
४	बिलासपुर	४४८	१०७३	९६२५	८६५४६	१०००००
५	सुकेत	४७४	२२०	८६५८	५२४८४	१०००००
६	नालागढ़	२५२	३३१	१०२४६	५३३७३	९००००
७	क्योंथल	११६	८३८	६३१८	३११५४	६००००
८	बाघल	१२४	३४६	१४४६	२०६२३	६००००
९	बसहर	३३२०	८३६	८५३३	६४३४५	५००००
१०	जबल	२८८	४७३	३०५१	१९११६	३००००
११	भज्जी	९६	३२७	५८२	१२१०६	२३०००
१२	कुमारसेन	९०	२५४	१४४५	६५१५	१००००
१३	भलग	४८	२२२	६२६	९१६९	१००००
१४	बाघट	३६	१७८	१९५४	८३३९	८०२०
१५	धामी	२६	२१४	६८८	३३२२	८०००
१६	बलसन	५१	१५२	१२६३	५१९०	७०००
१७	तरोच	६७	४४	५३८	३११६	६०००
१८	कुथर	७	१५०	८६३	२६४८	५०००
१९	कुंधियार	८	६६	४४०	१९२३	४०००
२०	सांग्री	१६	१०५	४३५	२५९३	१०००
२१	बीजा	४	३३	२६३	११५८	१०००
२२	मांगल	१२	३३	२०९	१०६०	७००
२३	दरकोटी	५	८	९२	५९०	६००
२४	रवाई	३	२८	१३३	७५२	०
२५	ढाढी	१	१०	४४	१७०	०
जोड़	... ...	१०७४९	१२९१४	१२३५०८	७६५६४३	१३७९३००
दोनों का जोड़	... ...	३५८१७	१८५४६	६५५३९२	३८६१६८३	१०९०१८५०

पंजावके देशी राज्योंके शहर और कसवे, जिनमें सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १०००० से अधिक मनुष्य थे।

नम्बर	शहर वा कसवा	राज्य	मनुष्य-संख्या
१	पटियाला	पटियाला	५५८५६
२	मलियरकोटला	मलियरकोटला	२१७५४
३	नारनवल	पटियाला	२११५९
४	वहावलपुर	वहावलपुर	१८७७६
५	नाभा	नाभा	१७१०८
६	कपूरथला	कपूरथला	१६७४७
७	बूसी	पटियाला	१३८१०
८	पुगवाड़ा	कपूरथला	१३३२१
९	सुनाम	पटियाला	१०८६९
१०	महेन्द्रगढ़	पटियाला	१०८४७
११	समाना	पटियाला	१००३५

पंजावमें देहात वा कसवोंके वहुतेरे मकान मट्टीसे पाट दिये जाते हैं, शहर और कसवोंके वहुतेरे लोग अपने अपने मकानोंकी छतहीपर मलत्याग करते हैं स्थान स्थानमें वाग अथवा खेत पटानेके लिये कुएंमें रहट लगे हैं, जिससे थोड़े समयमें बहुत भूमि पटाई जाती है। चर्खीका रहट वनाकर उसमें सैकड़ों मटुकियोंका एक हार कूपके ऊपरसे पानीतक लगाकर वैलोंद्वारा रहटको घुमाते हैं; तव जैसे जैसे क्रमसे एक एक मटुकीका पानी ऊपर आकर गिरता है, वैसे ही नीचे एक एक मटुकीमें पानी भरा करता है। पंजावी पुरुष भारतवर्षके सव प्रदेशोंके मनुष्योंसे अधिक लड़ाके हैं। वे लोग धोती वा पायजामा कुर्ता वा कुर्तेके ऊपर अचकन पहनते हैं और सिरपर वड़े वड़ मुरेठा वांधते हैं। सिक्खलोग तो वाल कभी नहीं कटवाते। दूसरे हिन्दू लोगोंमें भी दाढी मुच्छ रखनेकी वड़ी चाल है। हिन्दू लोग अपने एक अथवा दोनों कानोंमें सोनेकी छोटी या वड़ी वाली पहनते हैं। कानमें भूषण पहननेकी रिवाज प्राचीन समयसे है, क्योंकि वाल्मीकि रामायण, वालकाण्ड, ६ वें सर्गमें लिखा है कि अयोध्यामें एसा कोई नहीं था, जो कानोंमें कुण्डल न पहिने हो। स्त्रियोंमें पायजामा पहननेकी वड़ी चाल है, वे कुर्ता पहनकर सिरसे एक साधारण चद्दर ओढ़ती हैं मोतियोंके गुच्छे लगे हुए सोनेकी वहुत वालियां कानोंमें पहनती हैं, परदेमें नहीं रहतीं और घोड़े तथा खच्चर पर सवारी करती हैं। इस समय पंजावकी लगभग २०००० लड़कियां स्कूलोंमें पढ़ती हैं। पंजावी हिन्दू स्पर्श दोष वहुत कम मानते हैं, वे अङ्गमें वस्त्र पहने हुए सिरपर साफा वांधे हुए भोजन करते हैं। भरभूजाके घर एकही तंदूर अर्थात् वड़ातावामें सव जातिके लोग एकही साथ अपनी अपनी रोटी पकाते हैं। पंजावी ब्राह्मण विशेष करके ब्राह्मणी वैश्यके घरकी बनी हुई रसोई भोजन करती हैं, परन्तु यह रिवाज अव घटता जाता है। वहुतेरे सिक्ख जाति भेद मानते हैं। हिन्दूके देवतोंको पूजते हैं। तीर्थोंमें जाते हैं, परन्तु कुछ लोग जाति भेद नहीं मानते। किसी जातिको सिक्ख बनाकर उससे सम्वन्ध कर लेते हैं।

पञ्जाबी अर्थात् गुरुमुखी वर्णमाला ।

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
ਅ	ਆ	ਇ	ਈ	ਉ	ਊ	[illegible]	ਏ	ਐ	ਓ	ਔ	ਅਂ	ਅਃ

क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण
ਕ	ਖ	ਗ	ਘ	ਙ	ਚ	ਛ	ਜ	ਝ	ਞ	ਟ	ਠ	ਡ	ਢ	ਣ

त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	व	श	स	ह
ਤ	ਥ	ਦ	ਧ	ਨ	ਪ	ਫ	ਬ	ਭ	ਮ	ਯ	ਰ	ਲ	ਵ	ਸ	ਸ	ਹ

का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः
ਕਾ	ਕਿ	ਕੀ	ਕੁ	ਕੂ	ਕੇ	ਕੈ	ਕੋ	ਕੌ	ਕਂ	ਕਃ

पंजाबमें रेलवे स्टेशनोंपर और दूसरे इश्तिहारोंमें अङ्गरेजी अक्षरके साथ गुरुमुखी अक्षरका लेख रहता है। सिक्खोंकी धर्म पुस्तक भी गुरुमुखीसे लिखी हुई हैं, इसके अतिरिक्त पंजाबमें महाजनी अक्षर भी लिखे जाते हैं। पञ्जावके पहाड़ी विभागोंमें "टाँकरी" अक्षर प्रचलित हैं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पंजाबकी जातियोंमेंसे नीचे लिखी हुई जातिके लोग इस भांति पढ़े हुए थे।

जाति	प्रति १००० में	
	पुरुष	स्त्री
भावरा	४५३	७
कायस्थ	४३४	६८
बनिया	४२९	३
सूद	४१६	८
खत्री	३९४	७
अरोरा	३८१	६
ब्राह्मण	१९१	२
कलाल	१६४	५
सैयद	११०	६

रेलवे—लाहौरमें रेलवेका कारखाना १२६ एकड़ भूमिमें फैला हुआ है जिसमें २०० से अधिक आदमी काम करते हैं। यहांसे 'नार्थवेष्टर्नरेलवे' की लाइन ३ ओर गई है जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २$\frac{1}{3}$ पाई लगता है।

(१) लाहौरसे पश्चिमोत्तर-

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

५ शाहदरा।

४२ गुजरांवाला।

६२ वजीराबाद जंक्शन।

७० गुजरात।

७५ लालामूसा जंक्शन।

१०३ झेलम।

१७८ रावलपिण्डी।

१८७ गुलरा जंक्शन।

२०८ हसन अबदाल।

२३७ अटक-पुल।

२५६ नवशहरा।

२८० पेशावर शहर।

२८३ पेशावर छावनी।[1]

वजीराबाद जंक्शनसे २६ मील पूर्व स्यालकोट और स्यालकोटसे पूर्वोत्तर २२ मील सतावरी छावनी और ३५ जम्बूके पास तावीहै।

लालामूसा जंक्शनसे पश्चिम कुछ दक्षिण २८ मील, चिलियानवाला और ५२ मील मलकवाला जंक्शन, मलकवालासे १९ मील पश्चिमोत्तर पिण्डदादनखां और

१ इसकी वर्णमाला पृष्ठ नं० ४८१ में देखो॥

पिण्डदादनखांसे ३ मील उत्तर खिवरा है।

गुलरा जंक्शनसे ७० मील पश्चिम खुसालगढ़ है।

(२) लाहौरसे पश्चिम-दक्षिणकी ओर—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

२४ रायवंद जंक्शन।

१०३ मांटगोमरी।

२०७ मुलतानशहर।

२२० शेरशाह जंक्शन।

२७२ वहावलपुर।

२७९ समस्ता।

२५५ खानपुर।

४१७ रेती।

४८७ रोहरी।

४९० सक्कर।

५०५ रूक जंक्शन।

५५८ राधन।

७१७ कोटरीवन्दर।

७३१ हैदरावाद।

८१७ करांची छावनी।

८१९ करांची शहर।

रायवंद जंकशनसे दाक्षिण-पूर्व १८ मील कसूर और ३५ मील 'वंबे वड़ोदा और सेंट्रल इण्डियन रेलवे' का जंक्शन फीरोजपुर है, जिससे दक्षिण-पूर्व २८ मील कोटकपुरा जंक्शन, ५४ मील भतींडा जंक्शन और २४१ मील रिवाड़ी जंक्शन है, जिससे ५२ मील पूर्वोत्तर दिल्ली है।

शेरशाह जंक्शनसे पश्चिम १० मील मुजफ्फरगढ़ और २६ मील महमूदकोट, महमूदकोटसे ११ मील पश्चिम डेरागाजीखां और ७२ मील उत्तर विहाल, विहालसे उत्तर कुछ पूर्व १५ मील भक्कर, २६ मील दरियाखां जंक्शन और ७८ मील कुण्डिया जंक्शन है।

रूक जंक्शनसे पश्चिमकी ओर ११ मील शिकारपुर, ३७ मील जकोवावाद, १३३ मील सीवी जंक्शन और २८० मील किला अवदाल है।

(३) लाहौरसे दक्षिण-पूर्व—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन

३२ अमृतसर जंक्शन।

५८ व्यास।

७२ कर्तारपुर।

८१ जलन्धर शहर।

८४ जलन्धर छावनी।

१०८ फिलौर।

११६ लुधियाना।

१५४ सरहिन्द।

१७० राजपुर जंक्शन।

१८२ अम्बाला शहर।

१८७ अम्बाला जंक्शन।

२१९ जगाद्री।

२३७ सहारनपुर जंक्शन।

अमृतसर जंक्शनसे पूर्वोत्तर ४४ मील गुरदासपुर और ६६ मील पठानकोट है।

राजपुर जंक्शनसे पश्चिम, दक्षिण १६ मील पटियाला, ३२ मील नाभा, ६८ मील वर्नाला और १०८ मील भतींडा जंक्शन है।

अम्बाला जंकशनसे दक्षिण कुछ पूर्व दिल्ली अम्बाला कालका रेलवे पर २६ मील थानेसर, ४७ मील कर्नाल, ६८ मील पानीपत और १२३ मील दिल्ली और ३९ मील पूर्वोत्तर कालका स्टेशन है।

पन्द्रहवां अध्याय ।

(पञ्जाबमें) गुजरांवाला, वजीरावाद, स्यालकोट, (काश्मीरमें) जम्बू, (पञ्जाब में) गुजरात, झेलम बौद्धस्तूप, रावलपिण्डी, (काश्मीरमें) श्रीनगर ।

गुजरांवाला ।

लाहौरसे ४२ मील उत्तर कुछ पश्चिम 'गुजरांवाला' का रेलवे स्टेशन है । पञ्जावके लाहौर विभागमें जिलेका सदर स्थान गुजरांवाला एक कसवा है, जिसमें पञ्जावकेशरी महाराज रणजीतसिंहका जन्म हुआ था । सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय उस कसबेमें २६७८५ मनुष्य थे; अर्थात् १४४८९ पुरुष और १२२९६ स्त्रियां । इनमें १४०४९ मुसलमान, ९९०९ हिन्दू, २०२० सिक्ख, ५२२ जैन २८४ क्रस्तान और १ दूसरा था ।

गुजरांवालामें महाराज रणजीतसिंहके वाप दादा रहते थे । रेलवे स्टेशनसे १½ मील दूर ८ पहलकी ८१ फीट ऊँची महाराज रणजीतसिंहके पिता महासिंहकी छतरी, अर्थात् सामाधि-मन्दिर है, जिसके शिरो भागपर सोनेका मुलम्मा किया हुआ है । उससे १०० गज पूर्व महासिंहका वैठक खाना एक सुन्दर इमारत है ! वाजारके समीप एक मकान है, जहां रणजीतसिंहका जन्म हुआ था । कसवेमें रणजीतसिंहके जनरल हरीसिंहकी वारहदरी स्थित है, जिसके निकटकी भूमि और वाग ४० एकड़में फैला है । वारहदरीसे थोड़ी दूर हरीसिंहकी छतरी है । देशी कसवेसे १ मील दक्षिण-पूर्व बड़ी सड़क और रेलवेके वाद दीवानी और फौजदारी कचहरियां, जेलखाना अस्पताल और गिर्जा है । प्रधान सड़कके बङ्गलोंमें सुन्दर मकान वने हुए हैं ।

इस कसवेमें देशी पैदावारकी सौदागरी होती है और वर्तन, भूषन, शाल, रेशम और रूईकी दस्तकारी होती है ।

गुजरांवाला जिला—यह लाहौर विभागके पश्चिमोत्तरका जिला है । इसके पश्चिमोत्तर चनाव नदी, वाद गुजरात और शाहपुर जिला; दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम झांग, मांटगोमरी और लाहौर जिला है और पूर्व स्यालकोट जिला है । जिलेका क्षेत्रफल २५८७ वर्गमील है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेमें ६८९५३६ और सन् १८८१में६१६८९२ मनुष्य थे; अर्थात् ४५२६४० मुसलमान, १२७३३२ हिन्दू, ३६१५९ सिक्ख, ५७७ जैन और १९४ क्रस्तान । इनमेंसे १७३९७९ जाट, जिनमें १३३७२७ मुसलमान थे; ३६४८४ राजपूत; जो प्रायः सव मुसलमान थे, ३००७९ अरोरा, २१३०१ खत्री, १८०८० ब्राह्मण, जिनमेंसे ३५ मुसलमान थे; । इस जिलेमें गुजरांवाला (जन-संख्या सन् १८९१ में २६७८५), वजीरावाद, (जन-संख्या १८९१ में १५७८६) वड़ाकसवा और रामनगर, अमीनावाद, सहद्रा, अकलगढ़, पिंडीभटियान, किलादीदारसिंह और हाफिजावाद छोटे कसबे हैं ।

इतिहास–जब महाराज रणजीतसिंहके दादा चतरसिंहने गुजरांवाला गांव पर अधिकार किया, तब वह एक अप्रसिद्ध गाँव था, पीछे वह उनके पुत्र महासिंह और पोते रणजीतसिंह का सदर मुकाम हुआ; छोटे सिक्ख प्रधान वजीरावाद, सेखपुरा और दूसरे कसबोंमें बसे। उस समय जिलेके पश्चिमी भागमें भाटी राजपूत और चट्टा स्वाधीन थे। अंतमें महाराज-रणजीतसिंहने सम्पूर्ण जिलेमें अपना अधिकार करलिया। सन् १८४९ में गुजरांवाला अङ्गरेजी अधिकारमें आया और सन् १८५२ में जिलेका सदर स्थान वना।

वजीराबाद।

गुजरांवालासे २० मील (लाहौरसे ६२ मील) उत्तर कुछ पश्चिम वजीरावाद रेलवेका जंक्शन है। पञ्जाबके गुजरांवाला जिलेमें तहसीलका सदर स्थान चनाव नदीसे लगभग १ मील दूर वजीराबाद कसबा है. जिसके उत्तर फलकू, नाला वहता है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय वजीराबादमें १५७८६ मनुष्य थे; अर्थात् ११०३८ मुसलमान, ४०८८ हिन्दू, ६२१ सिक्ख और ४९ कृस्तान।

वजीराबादमें चौड़ी सड़कके किनारोंपर सुन्दर बाजार है; ईंटोंके मकान बने हैं और तहसीली, कचहरी, सराय, अस्पताल तथा स्कूल हैं। कसबेके पास पञ्जाबके प्रसिद्ध वागोंमेंसे एक दीवान ठाकुरदास चोपराका बाग है। वजीरावादके निकट चनाव नदीपर हिन्दुस्तानके उत्तम पुलोंमेंसे एक 'अलेकजेंड्रा' पुलहै. जिसको सन् १८७६ ई० में प्रिंस आफ वेल्सने खोला। वहां चनाबकी धारा बड़ी तेजहै। वजीरावादकी शहरतली धवंकलमें एक प्रसिद्ध मजहवी मेला होताहै, जिसमें बड़ी सौदागरी होती है। वजीरावादसे पूर्वोत्तर एक रेलवे लाइन स्यालकोट और जम्बूको गई है।

इतिहास–लोग कहते हैं कि शाहजहांके राज्यके समय वजीरखांने वजीरावादको वसावा। सन् १८४९ ई० में अङ्गरेजी अधिकार होने पर वजीराबाद एक जिला बना; जिसके भीतर गुजरांवाला और स्यालकोट, लाहौर और गुरदासपुर जिलोंके हिस्से थे। सन् १८५२ में गुजरांवाला जिला नियत होने पर वजीरावाद तहसीलीका सदर बना। रेलवे खुलनेके पीछेसे वह तिजारतमें प्रसिद्ध हुआ है।

स्यालकोट।

वजीरावाद जंक्शनसे २६ मील पूर्व स्यालकोटका रेलवे स्टेशन है। पञ्जाबके अमृतसर विभागमें जिलेका सदर स्थान एक धाराके उत्तर किनारे पर स्यालकोट एक छोटा शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय स्यालकोट कसबे और छावनीमें ५५०८७ मनुष्य थे; अर्थात् ३१४५६ पुरुप और २३६३१ स्त्रियां। इनमें ३१९२० मुसलमान, १७९७८ हिंदू, ३३८३ कृस्तान, १७९७ सिक्ख, ११०५ जैन और ४ पारसी थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह पञ्जाबके अङ्गरेजी राज्यमें ९ वां और भारतवर्षमें ७० वाँ शहर है।

शहर साफ और खूबसूरत है; इसकी प्रधान सड़क चौड़ी है, जिसके बगलोंमें नाले बने हैं। प्रधान वाजार कनकमंडीमें गल्लेकी खरीद बिक्री होतीहैं। वड़े बाजारमें कपड़ा भूषण और मेवे इत्यादि वस्तुओंकी दूकान है। राजा तेजसिंहके बनवाए हुए मंदिरका वड़ा मीनार शहरके प्रति विभागसे देख पड़ता है। बाबा नानकके स्थानपर प्रति वर्ष एक प्रसिद्ध मेला होता है,

जिसमें जिलेके प्रत्येक भागसे बहुत सिक्ख आते हैं। 'दरबार वा वलीसाहब' नामक एक ढकाहुआ कूप है, जिसको बाबानानकने एक अपने क्षत्रिय चेला द्वारा बनवाया था। 'इमाम-अलीउलहक' का दरगाह पुराने बनावटका है। शहरके मध्यमें एक पुराने किलेकी निशानी खड़ीहै, जिसको लोग शालवानका किला कहतेहैं;उसी तरहके टीले शहरके बाहर हैं। सन् १८५७ के बलवेके समय कईएक अंगरेजोंने किलेमें पनाह लिया था, अब किला तोड़ दिया गयाहै, उसमें कई एक मकान हैं। इनके अलावे स्यालकोटमें तहसील, टाउनहाल, अस्पताल, १ गरीबखाना; जहां 'खाना' बनाकरके नित्य बांटाजाता है, अनेक स्कूल, जिनमें लड़कियोंके ४ हैं और २ सराय हैं। शहरसे उत्तर रेलवे स्टेशन है।

शहरसे लगभग $\frac{3}{4}$ मील पूर्वोत्तर जिलेकी सदर कचहरियां, जेलखाना और पुलिस-लाइन और १ मील उत्तर ५ मील लंबी और ३ मील चौड़ी फौजी छावनी है; जिसमें ३ गिर्जा और २७ एकड़ भूमिपर पबलिक बाग है।

स्यालकोटमें सौदागरी तेजीसे बढरही है, उसमें कई एक धनी कोठीवाल और तिजारती लोग रहते हैं। शहरतलीके ३ गांवोंमें बहुत दिनोंसे कागज बनाए जाते हैं।

स्यालकोट जिला—यह अमृतसर विभागके पश्चिमोत्तरका जिला है, इसके पश्चिमोत्तर चनाब नदी, बाद गुजरात जिला; पूर्वोत्तर काश्मीर राज्यका जंबू प्रदेश; पूर्व गुरदासपुर जिला दक्षिण-पूर्व रावी नदी, बाद अमृतसर और गुरदासपुर जिला; और पश्चिम गुजरांवाला और लाहौर जिला है। जिलेका क्षेत्र फल१९५८ वर्गमील है। उस जिलेमें स्थान स्थानपर बहुतेरी झील हैं, जिनमेंसे सतरा ४५० एकड़ क्षेत्रफलमें और मंज ६८७ एकड़ क्षेत्रफलमें फैली है। उस जिलेमें कसरूर और दसकाह छोटे कसबे हैं। स्यालकोट जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १०८०३२८ और सन् १८८१ में १०१२१४८ मनुष्य थे; अर्थात् ६६९७१२ मुसलमान, २९९३११ हिंदू, ४०१९५ सिक्ख, १५३५ कृस्तान, १३८८ जैन और ७ पारसी। जिलेकी मनुष्य-संख्याके लगभग चौथाई भाग जाटहैं; बाद चुहरा, अराइन, राजपूत, तरखान, ब्राह्मण, झिनवार, कुंभार, मेग, खत्री इत्यादि हैं, जिनमेंसे ब्राह्मण और खत्रीके अतिरिक्त सब जातियोंमें मुसलमान हैं।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि राजा पाण्डुके पुत्र नकुल और सहदेवके मामा, राजा शल्यने स्यालकोटको बसाया; जिसकी राजधानी झंग जिलेमें गुजरांवाला जिलेकी सीमाके निकट साकला थी। (झंग जिलेके इतिहासमें देखो)

सन् ६५ या ७० ई०में राजा विक्रमादित्यके पुत्र शालवानने स्यालकोटको सुधारा, जिसका नाम रसालू भी है। रसालूकी राजधानी स्यालकोट थी, उसकी सैकड़ों कहानियां पंजाबके हर विभागोंके लोग कहते हैं। राजा हुदीने रसालूको परास्त किया। रसालूके मरनेपर राजा हुदी स्यालकोटका राजा हुआ; उसके पश्चात् स्यालकोटका राज्य ३०० वर्षतक लूटपाट और अकालसे उजाड़सा रहा। सन् ई० की सातवीं सदीमें जंबूके राजपूतोंने स्यालकोटके देशपर अधिकार किया। मुगलोंके राज्यके समय वह देश लाहौरके सूबेका एक भाग और स्यालकोट एक सरकारका सदर स्थान बना। कई एक मालिकोंके पश्चात् सन् १८१० ई० में लाहौरके महाराज रणजीतसिंहने संपूर्ण स्यालकोट जिलेको ले लिया। सन् १८४९ में उसपर अंगरेजोंका अधिकार हुआ।

सन् १८५७ के बलवेके समय स्यालकोट छावनीकी देशी फौज बागी हुई थी। बलवाइयोंने यूरोपियन अफसरोंको मारडाला, दफतर बरबाद किया, खजाना लूट लिया और कैदियोंको छोड दिया। थोडे दिनोंतक वे संपूर्ण जिलेके मालिक रहे, परंतु शीघ्रही अंगरेजोंने उनको भगाकर जिलेपर फिर अधिकार कर लिया।

जम्बू।

स्यालकोटसे २५ मील पूर्वोत्तर (वजीराबाद जंक्शनसे ५१ मील) जम्बूके पास तावीका रेलवे स्टेशन है। जम्बू काश्मीर राज्यमें राज्यके दक्षिण-पश्चिमकी सीमाके पास चनाव नदीकी सहायक तावी नदीके किनारोंपर (३२ अंश, ४३ कला, ५२ विकला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश, ५४ कला, १४ विकला पूर्व देशांतरमें) काश्मीरके महाराजकी राजधानी एक सुन्दर कसबा है। कसबा और राजमहल नदीके दहिने किनारे पर और किला वांए अर्थात् पूर्व किनारे पर नदीकी धारासे १५० फीट ऊपर है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय जम्बू राजधानीमें ३४५४२ मनुष्य थे, अर्थात् २२५४५ पुरुष और ११९९७ स्त्रियां। इनमें २२३५५ हिन्दू, ११६०१ मुसलमान, ५१३ जैन, ५९ सिक्ख और १४ क्रस्तान थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह काश्मीर राज्यमें दूसरा कसबा है।

पूर्व और शहरकी दीवारके निकट जम्बूका पुराना महल है, जिसमें एक चौक होकर प्रवेश करना होता है। इसके दहिने बगल पर मेहमानोंके रहनेका एक कमरा है। भोजनके कमरेके बरंदाका मुख तावी नदीकी ओर है। कसबेके पश्चिमोत्तरके मन्दिर पर सोनेके मुलम्मा किए हुए तांबेके पत्तर जड़े हुए हैं, जिससे कुछ पूर्व नया राजमहल है, जो प्रिन्स आफवेल्सके देखनेके लिये बना। इसके समीपही पूर्व परेडकी भूमि है, जिसके दक्षिण-पूर्व कालिज अस्पताल है। गुमत फाटकसे थोड़ी दूर पर प्रधान मन्दिर और फाटकसे २ मील दूर महाराजकी उत्तम वाटिका है। नीचे ऊँचे मार्गसे जङ्गल होकर वाटिकामें जाना होता है।

जम्बूके आस पास प्रथमके स्वाधीन राजपूतोंकी गढ़ियोंकी बड़ी तबाहियां हैं, जिनका राज्य एक समय स्यालकोट आदि जिलेमें फैला हुआ था, जिसको सिक्खोंने जीत लिया।

जम्बूसे श्रीनगर और काश्मीर-घाटीके लिये सौदागरी मार्ग है, जिससे बहुत आमद-रफ्त होता है। जम्बूसे उत्तर और कांश्मीर राज्यका प्रधान शहर श्रीनगर है।

इतिहास—सन् १५८६ ई० में अकबरने जम्बूको जीता तब वह मुगल-राज्यका एक भाग बना। सन् १७५२ में अफगानके अहमदशाह दुर्रानीने इसको ले लिया। सन् १८१९ में महाराज रणजीतसिंहने इसको अफगानोंसे जीत लिया। सन् १८४६ में अङ्गरेजी सरकारने जम्बूके साथ काश्मीर प्रदेशको सिक्खोंसे छीन कर ७५ लाख रुपये पर महाराज गुलाबसिंहके हाथ बेंच दिया। (काश्मीरका वृत्तांत श्रीनगरके इतिहासमें देखो)

गुजरात।

वजीराबाद जंक्शनसे ८ मील (लाहौरसे ७० मील) पश्चिमोत्तर गुजरात का रेलवे स्टेशन है। पञ्जाबके रावलपिण्डी विभागमें जिलेका सदर स्थान, चनाव नदीके दहिने

अर्थात् ५ मील उत्तर गुजरात एक कसबा है। वजीराबाद और गुजरातके बीचमें चनाव नदी पर रेलवे-पुल है। यह नदी हिमालयके दक्षिणीय भागसे निकलकर ७६५ मील बहनेके पश्चात् मीठनकोटके नीचे सिन्ध नदीमें मिलगई है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय गुजरात कसबेमें १८०५० मनुष्य थे, अर्थात् १२८३४ मुसलमान, ४७०३ हिन्दू ४५२ सिक्ख और ७१ क्रस्तान।

रेलवे-स्टेशनसे १ मील पूर्वोत्तर गुजरात कसबा है, जिसमें ३ प्रधान सड़कें शाही हम्माम, शाही कूप, जिसमें पानीतक सीढ़ियां बनी हुई हैं। पीर साहदौलाका दरगाह ६९ मसजिद, ५२ हिन्दू मन्दिर, ११ सिक्खोंकी धर्मशालाएँ, जिला स्कूल और मिसन स्कूल हैं। देशी बस्तीसे उत्तर दीवानी फौजदारी इत्यादि कचहरियोंके मकान जेलखाना, अस्पताल, और बंगला हैं। अकबरके किलेके भीतर तहसीली और मुनसफी कचहरियां हैं।

गुजरातसे भीम्बर और पीरपंजल होकर काश्मीरकी राजधानी श्रीनगरजानेका एक मार्ग है। पैदल या टट्टू पर लोग जाते हैं। गुजरात कसबेसे २८ मील भीम्बर, ४३ मील सैदाबाद, ५६ मील नवशेरा, ७० मील चंगासराय, ८४ मील रजवरी, ९८ मील थानामंडी १०८ मील बरंगल, ११४ मील पोसियाना १२३ मील अलीमाबाद सराय १४२ मील सपियन, और १६० मील श्रीनगर है। सर्वत्र डाक बंगले बने हैं।

गुजरातमें कई एक बड़े तिजारती और कोठीवाले रहते हैं। कपड़े और शाल इत्यादि पशमीनेके काम बनते हैं। गुजरातके पीतलके बर्तन प्रसिद्ध हैं।

गुजरातजिला—यह रावलपिंडी विभागका पूर्वी जिला है; इसके पूर्वोत्तर काश्मीर राज्य; पश्चिमोत्तर झेलम नदी; पश्चिम शाहपुर जिला और दक्षिण-पूर्व तावी और चनाब नदी, बाद स्यालकोट और गुजरांवाला जिला हैं। जिलेका क्षेत्रफल १९७३ वर्ग मील है; इस जिलेका सबसे ऊंचा पहाड़ चारों ओरके देशसे ६०० फीट और समुद्रके जलसे लगभग १४०० फीट ऊँचा है। जिलेका लगभग पाँचवाँ भाग खेतीका मैदान; शेष सम्पूर्ण जिला छोटे वृक्षोंके जङ्गलोंसे भरा हुआ चराहगाह है। जिलेकी खानोंसे सोरा, चूनाका पत्थर और कङ्कड़ निकाले जाते हैं।

गुजरात जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य गणनाके समय ७६०४०५ और सन् १८८१ में ६८९११५ मनुष्य थे; अर्थात् ६०७५२५ मुसलमान. ७२४५० हिन्दू, ८८८५ सिक्ख और ३५५ क्रस्तान। जिलेमें जाट और गूजर बहुत हैं। अरोरा, खत्री और ब्राह्मण सब हिन्दू वा सिक्ख हैं। लेकिन जाट, गूजर, राजपूत और तरखानमें थोड़े हिन्दू बहुत मुसलमान हैं। इस जिलेमें गुजरात (जन संख्या सन् १८९१ में १८०५०) जलालपुर (जन-संख्या ११०६५) बड़ा कसबा और कंजाह और दीगा छोटे कसबे हैं।

इतिहास—अकबरके राज्यके समय सोलहवीं सदीमें पुराने कसबेके स्थानपर गुजरातका वर्तमान कसबा नियत हुआ। अकबरका बनवाया हुआ किला कसबेमें हीन दशामें वर्तमान है। गुजरात कसबा गूजरों द्वारा रक्षित था; इस लिये उसका नाम गुजरात पड़ा। अकबरके राज्यके समय उसका नाम गुजरातअकबराबाद था। शाहजहांके राज्यके समय गुजरातमें पीर शाहदौला फकीर रहता था, जिसने कसबेको बहुत इमारतोंसे संवारा। मुगल-राज्यकी घटतीके समय सन् १७४१ के लगभग रावलपिंडीके गक्कर प्रधान मुबारकखांने गुजरातको

लेलिया। सन् १७६५ में सरदार गूजरसिंह भांजीने उसको गक्करोंसे छीन लियां। सन् १७८८ में गूजरसिंहके मरनेपर उनका पुत्र साहबसिंह उत्तराधिकारी हुआ। सन् १७९८ में साहबसिंह महाराज रणजीतसिंहके आधीन होगया। सन् १८४६ में गुजरात अङ्गरेजी निगरानीमें आया। सन् १८४९ की तारीख २२ फरवरीको अङ्गरेजोंकी दूसरी लड़ाईमें गुजरातके पास सिक्ख लोग परास्त हुए।

झेलम।

गुजरातसे ३३ मील (लाहौरसे १०३ मील) पश्चिमोत्तर झेलमका रेलवे स्टेशन है। पञ्जाबके रावलपिंडी विभागमें झेलम नदीके उत्तर अर्थात् दहिने किनारे पर जिलेका सदर स्थान झेलम एक कसबा है।

सन् १८९१ की जन संख्याके समय झेलम कसबा और छावनीमें १३८७८ मनुष्य थे; अर्थात ७३७३ मुसलमान, ४२५० हिन्दू, १०६४ सिक्ख, १५३ कृस्तान, २८ जैन ९ पारसी और १ यहूदी।

देशी कसबोंमें कोई प्रसिद्ध मकान नहीं है; खास करके मट्टीके मकान बने हुए हैं; २ प्रधान सड़के हैं और नाव बहुत बनाई जाती हैं। क़सबेसे १ मील पूर्वोत्तर जिलेकी कचहरियोंके मामूली मकान, जेलखाना, अस्पताल, सराय और गिरजा है। झेलममें एक सुन्दर पबलिक बाग है। कसबेसे करीब १ मील दक्षिण पश्चिम फौजी छावनी है। कसबेके निकट झेलम नदी पर रेलवे पुल है। यह नदी हिमालयके दक्षिणसे निकलकर लगभग २९० मील बहनेके उपरान्त झांगसे २० मील नीचे चनाब नदीमें मिल गई है। झेलमसे पच्छ और ऊरी होकर पहाड़ी मार्ग श्रीनगरको गया है। लोग पैदल वा टट्टू पर जाते हैं। झेलमसे १२ मील सिकोरपुर, २६ मील तंगरोट, ३६ चौमुक, ४६ मील राजधानी, ५८ मील नेकीं, ६६ मील बेराली, ७४ मील कोटलो, ८९ मील सयरा, १०५ मील पच्छ, ११५ मील कहूट, १३० मील हैदराबाद; १४० मील ऊरी; १६५ मील बारामूला और १९७ श्रीनगर है। सर्वत्र डाक बंगले बने हैं।

रोतसका किला—झेलम कसबेसे ११ मील पश्चिमोत्तर झेलम जिलेमें रोतसका प्रसिद्ध किला है, जिसको सोलहवीं सदीमें शेरसाहने बनवाया था। काहन नदी तक ८ मील गाड़ीकी सड़क, उससे आगे नदीके तीर तीर २ मील बैलगाड़ीकी सड़क और विरान पहाड़ियोंके नीचे २०० फीट ऊँचा टट्टूका मार्ग है। किला एक पहाड़ी पर खड़ा है। उसकी दीवार ३० फीटसे ४० फीट तक ऊँची, तीन मील लम्बी, २६० एकड़ भूमिको घेरती है। नदीके बाएं फाटकका रास्ता है। पहाड़ीके पूर्वोत्तर खवासखां फाटक है। दक्षिण-पश्चिम सुहाली फाटकके निकट एक डाक बंगला है। किलेमें मानसिंहका महल हीन दशामें स्थित है। पश्चिमोत्तर कोनेके पास एक ऊँची बारहदरी और दक्षिण-पूर्व कोनेके निकट उससे छोटी बारहदरी है।

झेलम जिला—इसके उत्तर रावलपिण्डी ज़िला, पूर्व झेलम नदी, दक्षिण झेलम नदी और शाहपुर जिला तथा पश्चिम बन्नू और शाहपुर जिले हैं। जिलेका क्षेत्रफल ३९१० वर्ग मील है।

इस जिलेमें खूबसूरत मार्बुल, मकान बनाने योग्य पत्थर, कई एक प्रकारकी लाल मट्टी और गेरू, जो रंगनेके काममें आती है, कोयला, गन्धक, मट्टीका तेल, तांबा सीसा, लोहा इत्यादि खानिक पदार्थ होते हैं। इस जिलेमें निमकदार पहाड़ियां बहुत हैं। खेवरा, मकराच कट्ठा, जटाना इत्यादि स्थानोंमें बहुत निमक निकाला जाता है। जिलेके कटासराजमें मेला होता है।

झेलम जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ६०३८१० और सन् १८८१ में ५८९३७३ मनुष्य थे अर्थात् ५१६७४५ मुसलमान, ६०९४९ हिन्दू, ११११८८ सिक्ख, ४१६ कृस्तान, ५८ जैन १६ पारसी और १ दूसरा। हिन्दुओंमें खत्री, अरोरा और ब्राह्मण अधिक हैं। जिलेमें अएवान, जाट और राजपूत बहुत हैं। पर इनमें हिन्दू वा सिक्ख बहुत कम हैं। इस जिलेमें पिण्डदादनखां (जन-संख्या सन् १८९१ में १५०५५) झेलम (जन-संख्या सन् १८९१ में १३८७८) लावा, बलागंग और चकवाला क़सबे हैं।

इतिहास—झेलमका पुराना कसबा वर्तमान क़सबेके सामने झेलम नदीके उस पार अर्थात् बांए किनारे पर था। दिल्लीके राज्यकी घटतीके समय सन् १७६५ ई० में गूजरसिंहने गक्कर प्रधानको परास्त करके इस जिले पर अधिकार किया और जङ्गली पहाड़ी लोगोंको अपने वशमें लाया। सन् १८१० में उसका पुत्र महाराज रणजीतसिंहके आधीन हो गया। सन् १८४९ में झेलम अङ्गरेजी अधिकारमें आया। पहले झेलम कसवा बहुत अप्रसिद्ध था, परन्तु अङ्गरेजी अधिकारमें आनेपर उसकी उन्नति हुई है।

बौद्धस्तूप।

झेलमसे ५४ मील पश्चिमोत्तर लवनीका रेलवे स्टेशन है, जिससे २ मील दूर मानिकयाला के पत्थरका स्तूप स्थित है। स्तूपका गुम्बज, जिसका व्यास १२७ फीट और घेरा ५०० फीट है, अर्द्धगोलाकार है, उस पर चढ़नेके लिये १६ फीट चौड़ी चारों ओर४ सीढ़ियां हैं। वह स्तूप सन् १८३०, १८३४ और १८६४ ई० में अच्छी तरहसे तलासा गया; उसमें सन् ई० के आरम्भके और यशोवर्माके जिसने सन् ७२० ई० के पीछे राज्य किया था, सिक्के मिले और उसी समयोंके चांदीके बहुतेरे अरवियन सिक्के भी मिले थे।

वेंचुराके स्तूपसे २ मील उत्तर एक बहुत पुराना स्तूप है, जिसमें कनिश्कके समयके जो सन् ४० ई० में भारतवर्षके पश्चिमोत्तरमें राज्य करता था सिक्के मिले थे।

रावलपिंडी।

लवनीके स्टेशनसे २१ मील (लाहौरसे १७८ मील) पश्चिमोत्तर रावलपिण्डीका रेलवे स्टेशन है। पंजाबमें किस्मत और जिलेका सदर स्थान और फौजी छावनीको जगह (३३ अंश, ३७ कला उत्तर अक्षांश, ७३ अंश ६ कला पूर्व देशांतरमें) रावलपिंडी एक छोटा शहर है। लेह नदीके उत्तर किनारेपर शहर और उससे दक्षिण फौजी छावनी है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय शहर और छावनीमें ७३७९५ मनुष्य थे; अर्थात् ५१०४३ पुरुष और २२७५२ स्त्रियां। इनमें ३२७८७ मुसलमान, ३१२६४ हिन्दू, ६०७२ कृस्तान, ४७६७ सिक्ख, ८४८ जैन, ५१ पारसी, २ यहूदी और ४ दूसरे थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें ४४ वाँ और पंजाबमें ७ वाँ शहर है।

देशी शहरमें तहसीली, पुलिस स्टेशनशहर, का अस्पताल; बड़ी सराय; गिर्जा और मिसन स्कूल है। जेलखानेके समीप ४०० एकड़ भूमिपर एक सुन्दर पबलिक बाग और एक फैला हुआ पार्क है। सुबह और शामको बहुत लोग पार्कमें टहलनेके लिये जाते हैं। इसमें घने वृक्ष और छोटी झाड़ियां लगी हुई हैं और गाड़ी जानेके योग्य सड़कें बनी हैं। प्रधान बाजारके दरवाजेके पास एक सुन्दर मेहराव बना है। बाजारमें बहुतेरी अच्छी दूकानें हैं। सरदार सुजनसिंहका बनवाया हुआ एक सुन्दर बाजार है, जिसके बनवानेमें २ लाख रुपये खर्च पडे थे। इनके अलावे रावलपिंडीमें कई एक स्कूल, १ कोढ़ी खाना और पांच पहला १ किला है, जिसके प्रति-कोनोंपर एक पाया बना हुआ है। किलेमें अनेक शस्त्रागार बने हुए हैं।

सिविल लाइनोंमें कमिश्नर और डिपटी कमिश्नरकी कचहरियां, छावनीके मजिष्ट्रेटकी कचहरी इत्यादि इमारते हैं।

लेह नदीके दक्षिण ३ मील लंबी और २ मील चौड़ी भूमिपर फौजी छावनी फैली है। सन् १८८१ की मनुष्य–संख्याके समय छावनीमें २६१९० मनुष्य थे। यह पंजाबकी फौजोंके प्रधान सेनापतिका मुख्य स्टेशन और भारत वर्षके सबसे बड़ी फौजी छावनियोंमेंसे एक है। छावनीमें कई एक यूरोपिन दूकानें हैं और साधारण तरहसे यूरोपियन सवारोंका १ रेजीमेंट, पैदलके २ रेजीमेंट, देशी सवारोंका एक रेजीमेंट और पैदलके ३ रेजीमेंट और आरटिलरीके २ बैटरी रहती हैं।

गेहूँ इत्यादि गल्ले रावलपिंडीसे पंजाबके दूसरे भागोंमें भेजे जाते हैं। यहां बड़े बड़े तिजारती और कोठीवाल हैं। और सूसीनामक रंगदार कपड़ा, दूसरा कपड़ा कंबल, नस, कंघी साबुन और कूपा तैयार होते हैं। शहरमें गक्कर, कश्मीरी, अएवान, भट्टी, ब्राह्मण और खत्री अधिक हैं। ब्राह्मण और खत्री सौदागरी करते हैं।

रावलपिण्डी जिला—यह जिला रावलपिंडी विभागके चारों जिलोंमें सबसे उत्तर है, इसके उत्तर हजारा जिला; पूर्व झेलम नदी; दक्षिण झेलम जिला और पश्चिम सिंधनदी है, जिसके बाद पेशावर और कोहाट जिले हैं जिलेका क्षेत्रफल ४८६१ वर्ग मील है, जिसमें ७ तहसीलें हैं। पिंडी गेव, अटक, फतहजंग, गूजरखां रावलपिंडी, कहटा और मरी। रावलपिंडी शहरसे ३ मील पूर्व सोहन नदीपर पुल है। इस जिलेमें जंगल बहुत है, जिसमें गोन, मोम और मधु बहुत होते हैं। काबागढकी प्रहाडीमें मार्बुल होता है। रावलपिंडी शहरसे पूर्वोत्तर जोहरा गांवमें गंधककी खान है; उसी और रावलपिंडीसे १३ मील दूर और दूसरे स्थानमें भी कुएसे मट्टीका तेल निकलता है। सिंध और उसकी सहायक नदियोंकी बालू धोनेसे उसमें सोना मिलता है।

इस जिलेमें सन् १८९१ की जन–संख्याके समय ८८६१६४ और सन् १८८१ में ८२०५१२ मनुष्य थे; अर्थात् ७११५४६ मुसलमान, ८६१६२ हिंदू, १७७८० सिक्ख, ३८२३ क्रस्तान, १०३३ जैन और १६९ पारसी। हिंदुओंमें ४११३५ खत्री और १२१८१ अरोरा थे। इस जिलेमें राजपूत लगभग १५०००० और जाट ५०००० हैं, परंतु प्रायः सब मुसलमान हैं। जिलेमें केवल रावलपिंडी एक शहर और पिंडी गेव, हजारा, फतहजंग, अटक, मरवाद, मरी और केपबेलपुर छोटे कसबे हैं और हसन अवदाल एक प्रसिद्ध जगह है।

इस जिलेमें पक्की सड़क रावलपिंडीसे ३९ मील मरी तक; मरीसे ३० मील कोहाला तक और रावलपिंडीसे ६६ मील कोहाट तक है।

इतिहास—रावलपिंडीका वर्तमान शहर हालका है। पुराने शहरके स्थानपर छावनी बनी है। चौदहवीं सदीके मुगलोंके आक्रमणसे शहर बरबाद होगया था। गक्कर प्रधान झंडाखांने शहरको सुधारा और उसका नाम रावलपिण्डी रक्खा। सन् १७६५ ई० में सरदार मलिकसिंह सिक्खने रावलपिण्डीपर अधिकार किया। उन्नीसवीं शताब्दीके आरम्भमें काबुलके शाहशुजा और उसके भाई शाहजमाने कुछ समय तक रावलपिण्डीमें पनाह लिया था। सन् १८४९ में अङ्गरेजी अधिकार होने पर रावलपिण्डीमें अङ्गरेजी फौजी छावनी बनी और थोड़ेही दिनोंके पीछे यह कमिश्नरीका सदर स्थान बना। रेलवे होनेके बाद शहरकी तिजारत और आबादी तेजीसे बढ़ गई हैं।

श्रीनगर।

काश्मीरकी राजधानी श्रीनगरजानेके ५ घाटीमें ५ पहाड़ी रास्ते हैं, जिनसे अधिक आवागमन होता है,-(१) जम्बूसे, (२) गुजरात कसबेसे भींबर और पीरपञ्जर होकर १६० मील, (३) झेलम कसबेसे पञ्च होकर १९७ मील, (४) रावलपिण्डीसे मरी होकर १९२ मील और (५) हसनअबदालसे अबटाबाद होकर २०३ मील श्रीनगरका मार्ग है।

इनमेंसे रावलपिण्डीसे गाड़ीका मार्ग सब रास्ताओंसे उत्तम है। रावलपिण्डीसे बरमूला तक १६० मील पूर्व तांगा (एक प्रकारका टमटम) जाता है। वहाँसे टट्टू अथवा झेलममें नावपर सवार होकर ३२ मील श्रीनगर लोग जाते हैं। रावलपिण्डीके रेलवे स्टेशनसे बरमूला तक डाकके घोड़ोंके बदलनेके लिये १३ चौकी बनी हैं। तांगाके डाकके एक आदमीका भाड़ा ३८) रुपया लगता है। डाक रात में नहीं चलती है। ३ दिनमें आदमी श्रीनगर पहुँच जाता है। एक चौकीका भाड़ा चढ़नेके लिये टट्टूका २) असबाब लादनेके लिये टट्टूका ॥।), एक्केका एक आदमीका ॥।=) और कुलीका ।) लगता है।

रावलपिण्डीसे ३७ मील मरी, ६६ मील कोहाला, ७८मील दुलई, ८७ मील डोमल; १०० मील गढ़ी, १३५ मील ऊरी, १६० मील बरमूला और १९२ मील श्रीनगर है। सब स्थानोंमें डाकबंगले बने हैं।

मरी रावलपिण्डीसे उत्तर स्वास्थ्यकर स्थान है। गर्मीकी ऋतुओंमें रावलपिण्डीकेहाकिम और दूसरे अङ्गरेज लोग वहां रहते हैं। रावलपिण्डीसे वहां तक चढ़ावका मार्ग है (मरीसे पूर्व श्रीनगर है) सन् १८५३ ई० में मरीमें सेनाओंके लिये बारक बनाए गए। सन १८८० की मनुष्य-गणनाके समय मरीमें केवल २४८९ मनुष्यथे; परन्तु गर्मीके दिनोंमें उसकी मनुष्य-संख्या बढ़करके लगभग ८००० हो जाती है।

कोहाला, डाकगाड़ीके मार्गसे मरीसे ३९ मील, परन्तु बैलगाड़ीके रास्तेसे केवल १८ मील है। मरीसे कोहाला तक उतराईका मार्ग है। कोहालासे बरमूलातक झेलम नदीके बायें चढ़ावका मार्ग है। बरमूलासे श्रीनगर तक गाड़ीकी सड़क नहीं है। वहाँसे टट्टू वा नाव द्वारा श्रीनगर जाना होता है।

काश्मीरके पश्चिमी विभागमें (हैपीघाटीमें) समुद्रके जलसे ५२५० फीट ऊपर (३४ अंश ५ कला ३१ विकला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश, ५१ कला पूर्व देशान्तरमें) झेलम नदीके दोनों किनारोंपर २ मीलकी लम्बाई में काश्मीर राज्यकी राजधानी श्रीनगर बसा है। झेलमनदीकी औसत चौड़ाई ९० गज और गर्मीकी ऋतुओंकी औसत गहराई लगभग ६ गज है। नदीपर ७ पुल और इसमें पत्थरके कई एक सुन्दर घाट बने हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-संख्याके समय श्रीनगरमें ११८९६० मनुष्य थे; अर्थात् ६२७२० पुरुष और ५६२४० स्त्रियां। इनमें ९२५७५ मुसलमान, २६०६९ हिन्दू, १८९ सिक्ख, ११९ कृस्तान, और ८ पारसी थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें २२ वाँ और काश्मीर प्रदेशमें पहला शहर है।

शहरमें कई पानीके नाले हैं, खासकरके लकड़ीके मकान बने हैं, जिनमेंसे अनेक मकान तीन मंजिले और चौमंजिले हैं, बहुतेरों मकानोंकी ऊपरकी छत ढालुए और बहुतेरोंकी मिट्टीकी हैं, इनके अलावे अस्पताल, स्कूल, टकशालघर, अनेक देवमन्दिर, मसजिद और कबरगाह हैं। शेरगढ़ीके भीतर दृढ़ दीवारसे घेरा हुआ शहरका किला और एक सुन्दर शाहीमहल है, जिसमें गर्मीके दिनोंमें काश्मीर देशके महाराज जम्बूसे आकर रहते हैं।

सड़क साधारण तरहसे तङ्ग हैं, जिनमेंसे कई एक बड़े और नादुरुस्त पत्थरोंसे पाटे हुए हैं, शहरके बाजारोंमेंसे हालका बना हुआ महाराजगञ्ज बाजारमें शहरकी बनी हुई सम्पूर्ण वस्तु मिलती है; इसके किनारोंपर कई एक बड़े मकान हैं, जिनमें खास करके शालके बड़े सौदागर और कोठीवाल रहते हैं। शहरकी मसजिदोंमें जामामसजिद प्रधान और वहांकी सब मसजिदोंमेंसे बड़ी है इसके आंगनके चारों बगलोंमें मेहराबदार ओसारे लगे हैं जिनमें देवदारु लकड़ीके खम्भे लगे हुए हैं। नदीकी भाटाकी ओर, शेख बाग शाह हमीदन मसजिद और राममुन्शी बाग देखने योग्य है।

शहरके पूर्वोत्तर बगलपर ५ मील लम्बी और २½ मील चौड़ी; जिसकी औसत गहराई १० फीट है एक झील है, जिसमें खरबूजा ककड़ी और सिंहाराकी फसिल होती है।

शहरके निकट इससे ९८७ फीट ऊँची तख्ती सुलेमान नामक पहाड़ी है, जिसपर चढ़नेसे शहर और उसके पड़ोसका सुन्दर दृश्य देखनेमें आता है। पहाड़ीके सिरपर एक बहुत पुराना पत्थरका मन्दिर है, जिसको हिंदूलोग शंकराचार्यका कहते हैं, परन्तु वास्तवमें यह सन् ई० से २२० वर्ष पहलेका बना हुआ अशोकके पुत्र जलोकका बनवाया हुआ बौद्ध मन्दिर था, जो अब मसजिद बना है।

शहरकी उत्तरी सीमा पर २५० फीट ऊँची हरि पर्वतनामक पहाड़ी है, जिसको घेरती हुई ३ मील लम्बी और २८ फीट ऊँची दीवार है, जिसके प्रधान दर्वाजे खाटी फाटकके ऊपर पारसी लेख है। पहाड़ीके सिरपर किला खड़ा है। बादशाह अकबरने सन् १५९० ई० में दीवार और किले को बनवाया था।

श्रीनगर शाल और रेशमकी दस्तकारीके लिये प्रसिद्ध है और इसमें सोना, चांदी, तांबा, चमड़ा और बेशकीमती पत्थरका उत्तम काम बनता है।

श्रीनगरसे पूर्व लदाखकी राजधानी लेह १९ पड़ाव और उत्तर और गिलगिट २२ पड़ाव है।

अमरनाथ—श्रीनगरसे ३० (काले) कोस पूर्वोत्तर अमरनाथ शिवका गुहा मन्दिर है। गुहामें ऊपरसे नीचेको लिंगाकार (स्तंभके समान) जलकी धारा सर्वदा गिरती है, जिसको शिवलिङ्ग कहते हैं। वहां सलोनेके पर्बके समय यात्रियोंका बड़ा मेला होता है और रक्षाबन्धनके दिन यात्रीगण दर्शन करते हैं।

सूर्यका मन्दिर—कश्मीर घाटीके पूर्वी छोरके पास है। नावपर सवार होकर 'कनवल' जाना चाहिये, जहांसे १ मील इसलामास्थान वाद एक कसवा है, जो बहुतेरे चश्मे और धाराओंके लिये प्रसिद्ध है। बरमूलासे इसलामावादके पड़ोस तक करीब ६० मील झेलममें नाव चलती है, इसलामाबादसे ४½ मील पूर्वोत्तर, घाटीके ऊपर एक ऊँचे प्रेट्टू पर मार्तण्ड अर्थात् सूर्यका प्रसिद्ध पुराना स्थान है।

मन्दिर बननेका ठीक समय मालूम नहीं है। कोई सन् ३७०, कोई ५८० और कोई ७५० ई० कहता है। मन्दिर वेमरम्मत है और भूकम्पसे इसकी बहुत नुकसानी हुई है। आंगनमें ६० फीट लम्बा और ३८ फीट चौड़ा एक छोटा मन्दिर है (इस स्थानका नाम महाभारतमें लिखा है)।

काश्मीर-राज्य—यह हिन्दुस्तानके पश्चिमोत्तरमें काराकुरम पहाड़ और हिमालयसे घेरा हुआ, भारतगवर्नमेंटके आधीन एक प्रख्यात देशी राज्य है, इसके उत्तर काश्मीर राज्यके आधीन कई एक छोटे पहाड़ी प्रधान और काराकुरम पर्वत, पूर्व तिब्बत देश, दक्षिण और पश्चिम पञ्जावके जिले हैं। राज्यका क्षेत्रफल ८०९०० वर्गमील है, जिससे लगभग ८० लाख रुपये मालगुजारी आती है। यह राज्य खास काश्मीर, श्रीनगर, जम्बू, लदाख गिलगिट इत्यादि विभागोंमें विभक्त है, इनमेंसे कश्मीर और जम्बू अधिक प्रसिद्ध है।

काश्मीरके पहाड़, वन, नदी और झीलोंकी विचित्र नुमाइश है; इससे बढ़कर नुमाइश दूसरे देशोंमें देखनेमें नहीं आती है; इसलिये काश्मीर देश इस पृथ्वीका स्वर्ग कहा जाता है। पृथ्वीके ऊंचे पर्वतोंमेंसे चन्द काश्मीरमें हैं; जिनकी चोटी ८ महीनों तक वर्फकी ढेरसे छिपी रहती हैं। उत्तरके पहाड़ोंके समान दक्षिणके पहाड़ ऊंचे नहीं हैं। उत्तरीय सीमाकी औसत ऊंचाई समुद्रके जलसे २०००० फीटसे २५००० फीट तक है। काराकुरमके सिलसिलेकी एक चोटी समुद्रके जलसे २८२५० फीट ऊंची है। राज्यके पश्चिमोत्तरकी सीमापर वियाफोके वर्फका मैदान ३५ मील लंवा है। नीची घाटियोंका आवहवा गर्मीके आरंभमें स्वास्थ्यकर और खुशनुमा और प्रेट्टू गर्मीके मध्यमें सुखद रहता है। जाड़ेमें वर्फ बहुत गिरती है। काश्मीरकी घाटी ठंढे आवहवा और खूवसूरतीके लिये प्रसिद्ध है; इसमें ३ चौथाई धान और एक चौथाई गेहूँ, जव, मटर इत्यादि जिनिस उत्पन्न होती हैं। वर्फ गल कर जो पानी आता है, उसीके सिंचावसे धान होता है। वनोंमें वेशकीमती लकड़ी होती है। काश्मीर देशमें बादाम अंगूर, पिस्ता, सेव, नासपाती, गिलास, आलचा, शाहदाना, शफ़तालू, शहतूत, अखरोट इत्यादि बहुत अच्छे और कई प्रकारके होते हैं।

काश्मीर राज्यके वुनिहाल घाटीमें एक वागके अठपहले पवित्र तालावसे, जिसमें मछलियां बहुत हैं; झेलम नदी निकली है। काश्मीरकी बहुत छोटी नदियां झेलममें मिली हैं।

झेलम नदीपर देवदारुकी लकड़ीसे बने हुए आश्चर्य वनावटके १३ पुल हैं; इसके अलावे काश्मीर राज्यमें होकर सिन्ध और चनाव नदी भी गई हैं और राज्यमें बहुतेरी नहर और बड़ी बड़ी झील हैं। श्रीनगरसे पश्चिमोत्तर काश्मीरके सब झीलोंसे बड़ी ऊलर झील है। जलके मार्गसे १० घंटेमें श्रीनगरसे वहाँ आदमी पहुँचता है। दलदलको छोड़कर झीलका घेरा लगभग ३० मील इसकी औसत गहराई १२ फीट और सबसे अधिक गहराई लगभग १६ फीट है। झीलमें मिल करके झेलम नदी बहती है।

काश्मीर देशमें लोहा बहुत होता है। जंबूकी पहाड़ियोंमें सुरमा मिलता है। काश्मीरकी घाटीके बहुतेरे हिस्सोंमें गन्धकके झरने (गरम झरने) हैं। इस राज्यके सम्पूर्ण विभागोंमें अनेक रंगके भालू और वर्च वृक्षके जंगलोंमें कस्तूरीवाले हरिन; काश्मीर घाटीके चारों ओर चीता; पनसाल-रेंजमें बारासिंगा या बड़ा हरिन और काश्मीरके पहाड़ोंपर भेड़िया बहुत हैं।

शालके लिये काश्मीर प्रसिद्ध है। सब जगहोंमें ऊनी कपड़े विने जाते हैं; इस देशमें रेशम, कागज, सोना, और चांदीका काम बनता है। लदाखमें बकरीके ऊनका बड़ा व्योपार होता है। पामपुर केसर होनेके लिये प्रसिद्ध है। काश्मीरकी घाटीमें भूकंप बहुधा हुआ करता है। सन् १८८५ ई० के भूकंपसे दूर तक बहुत मकान गिर गये और हजारों मनुष्य मर गये।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय काश्मीरके राज्यमें २५४३९५२ मनुष्य थे; अर्थात् १३५३२२९ पुरुष और ११९०७२३ स्त्रियां। इनमें १७९३७१० मुसलमान, ६९१८०० हिन्दू, २९६०८ बौद्ध, १६६१५ के मजहब नहीं लिखे गये, ११३९९ सिक्ख, ५९३ जैन, २१८ कृस्तान और ९ पारसी थे।

इज्जतदार हिन्दू जातियोंमें कारकून जातिके लोग बहुत हैं; जो तिजारत खेती और लिखनेका काम करते हैं। काश्मीरके निवासी लंबे, मजबूत, परिश्रमी और बनावटमें बहुत अच्छे होते हैं। धनी और गरीब सबलोग चाह पीते हैं। काश्मीर राज्यमें भिन्न भिन्न १३ भाषा हैं। काश्मीरी भाषा, जो खास कश्मीरमें बोली जाती है; संस्कृतसे अधिक सम्बन्ध रखती है। ❀

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कश्मीर राज्यके श्रीनगर विभागके श्रीनगरमें ११८९६०, जम्बू विभागके जम्बूमें ३४५४२, पूंछमें ७४८९, मीनपुरमें ७२५३ और बटालामें ५२०६ और कश्मीर विभागके अनन्तनागमें १०२२७ सोपरमें ८४१० और बरमूलामें ५६५६ मनुष्य थे।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत (सभा पर्व, २७ वाँ अध्याय) अर्जुनने काश्मीर देशके क्षत्रिय वीरोंको परास्त किया।

(वनपर्व ८२ वाँ अध्याय) काश्मीर देशमें तक्षक नागका वन सब पापोंका नाश करनेवाला है; वहाँ वितस्ता (झेलम) नदीमें स्नान करनेसे वाजपेय यज्ञका फल मिलता है और मुक्ति मिलती है वहाँसे वड़वा तीर्थ में जाकर सायंकालमें विधिपूर्वक स्नान करना चाहिए; वहां सूर्यको नैवेद्य चढ़ानेसे लाख गोदान, सहस्र राजसूय यज्ञ और सहस्र अश्वमेध यज्ञ करनेका फल मिलता है; वहाँसे रुद्र तीर्थमें जाना चाहिए; जहां महादेवकी पूजा करनेसे अश्वमेध यज्ञ करनेका फल मिलता है। (१३० वाँ अध्याय) परम पवित्र काश्मीर देशमें महर्षिगण निवास करते हैं; उसी स्थानमें उत्तरके सम्पूर्ण ऋषिगण, राजा ययाति, काश्यप और अग्निका संवाद हुआ था।

* कश्मीरी वर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ अं अः

𑆃 𑆄 𑆅 𑆆 𑆇 𑆈 𑆉 𑆊 𑆋 𑆍 𑆎 𑆏 𑆐 𑆃𑆁 𑆃𑆂

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण

𑆑 𑆒 𑆓 𑆔 𑆕 𑆖 𑆗 𑆘 𑆙 𑆚 𑆛 𑆜 𑆝 𑆞 𑆟

𑆠 𑆡 𑆢 𑆣 𑆤 𑆥 𑆦 𑆧 𑆨 𑆩 𑆪 𑆫 𑆬 𑆮 𑆯 𑆰 𑆱 𑆲

त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह

का कि की कु कू के कै को कौ कं कः १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

𑆑𑆳 𑆑𑆴 𑆑𑆵 𑆑𑆶 𑆑𑆷 𑆑𑆼 𑆑𑆽 𑆑𑆾 𑆑𑆿 𑆑𑆁 𑆑𑆂 𑇐 𑇑 𑇒 𑇓 𑇔 𑇕 𑇖 𑇗 𑇘 𑇙

(द्रोणपर्व १० वाँ अध्याय) राजा धृतराष्ट्रने संजयसे कहा कि श्रीकृष्णने युद्धमें अंग, बंग, कलिंग, मागध, काशी, अयोध्या, उज्जैन, काश्मीर, चोल इत्यादिके बीर राजाओंको परास्त किया था, उनके समान कठिन कर्म दूसरेसे नहीं होसकेगा।

(अनुशासनपर्व २५ वाँ अध्याय) एक सप्ताह निराहार रहकर चन्द्रभागा (चनाव) और वितस्ता (झेलम) नदियोंमें स्नान करनेसे मनुष्य मुनियोंके तुल्य पवित्र होजाता है।

इतिहास—काश्मीरके अमात्य चम्पकके पुत्र कल्हन कवीने काश्मीरके राजा जयसिंहके राज्यके समय शक संवत् १०७० (सन् ११४८ ई०) में श्लोकबद्ध राजतरङ्गिणी बनाई और पाण्डवोंके समयके काश्मीरके आदि गोनर्दसे लेकर अपने समयके राजा तकका शृंखलावद्ध वृत्तान्त उसमें लिखा; जिसका बहुत संक्षिप्त वृत्तांत नीचे है। प्रथम तरङ्गमें लिखा है कि इसी वैवस्वत मनुके प्रारम्भमें कश्यपमुनिने एक दैत्यको निकालकर अपने तपोबलसे काश्मीर मण्डलका निर्माण किया; जिसमें वितस्ता अर्थात् झेलम नदी बहती है। काश्मीर मण्डलमें ऐसा कोई स्थान नहीं है; जहाँ कोई तीर्थ न हो। सूर्यदेव काश्मीर-मण्डलको अपने पिता (कश्यप) कारचा हुआ जान करके उसको संताप रहित रखनेके लिए यहां गर्मीके दिनोंमें भी तेज किरणोंको नहीं धारण करते। काश्मीरमण्डलमें रहनेवाले सर्व साधारण बड़े बड़े विद्यालयोंमें शास्त्राभ्यास करते हैं और स्वर्गवासियोंको भी दुर्लभ केसर, अंगूर आदि वस्तुओंको भोगते हैं। कलियुगके ६५३ वर्ष बीतने पर आदिगोनर्द काश्मीरका राजा हुआ; जिस समय पाण्डव और कौरव थे (पुराणोंमें कलिके आरम्भमें या द्वापरके अन्तमें कौरव पाण्डव लिखे हुए हैं) काश्मीरके राजा जयसिंहके राज्य-समयमें शक सम्वत् १०७० है। जब मगधदेशके राजा जरासन्धने मथुरापुरी पर आक्रमण किया, तब उसका मित्र काश्मीरका आदिगोनर्द भी अपनी सेना लेकर उसके साथ गया था; जो बलदेवजीके शस्त्रसे मरगया। उसके पश्चात् उसका पुत्र दामोदर काश्मीरकी राजगद्दीपर बैठा। कुछ दिनोंके उपरान्त जब उसने सुना कि सिन्धुके समीप गांधार देशके राजाकी कन्याके स्वयंवरमें यादवभी आए हैं; तब पिताके वैर साधनेके लिये बड़ी सेना लेकर चढ़ाई करदी, वहां संग्राम होने लगा; अन्तमें श्रीकृष्णने सुदर्शनचक्रसे दामोरको मारडाला; इसके पश्चात् कृष्ण भगवान्ने दामोदरकी सगर्भा रानीको ब्राह्मणों द्वारा राज्याभिषेक करवाया और अपने दीवान मंत्रियोंसे ऐसा कहा कि काश्मीरभूमि पार्वतीका स्वरूप है और इसका राजा साक्षात् सदा शिवका अंश होता है। समय आने पर रानीका पुत्र जन्मा; जिसका नामभी गोनर्द रक्खा गया; मन्त्रीवर्ग बालगोनर्दको गद्दी पर बैठाकर प्रजाका न्याय करते थे। राजा नोरे बालक था; इसलिये महाभारतके युद्धमें कौरव तथा पाण्डवोंमेंसे किसीने अपनी सहायताके लिये उसको नहीं बुलाया था; उसके बहुत काल पीछे (कलियुगके १७३४ वर्ष बीतने पर, आदिगोनर्दके पश्चात्के ४७ वाँ राजा) राजा अशोक काश्मीर मण्डलका शासक हुआ; जिसने जैनमत ग्रहण करके वितस्ता नदीके तटस्थ सम्पूर्ण मैदानको स्तूपमण्डलोंसे पूर्ण कर दिया। प्रथम धर्मरण्य विहारसे होकर वितस्ता नदी बहती थीं, उसके वेगसे बहुतेरे चैत्यस्तूप वह गये थे; इसी लिये राजा अशोकने फिर ९६ लाख लक्ष्मीसे श्रीनगर नामक नगर बसाया और श्रीविजयेशके जीर्ण मन्दिरका प्राकार फिरसे सुन्दर पत्थरोंसे बनवाया

(जिस मौर्य्यवंशी अशोकका धर्माज्ञा स्तम्भ और चट्टानोंपर खुदा हुआ मिलता है; वह अशोक यह नहीं है, यह राजा शचीनरका भतीजा है।)

कल्हन कवीने ११४८ में राजतरङ्गिणीका पहला खण्ड बनाया; उसके बाद सन् १४१२ में जोनराजने कल्हनसे लेकरके अपने समयतकके राजाओंका वर्णन किया। फिर सन् १४७७ में उनके शिष्य श्रीवरराजने तीसरा खण्ड बनाया और अकबरके राज्यके समय प्राज्यभटने इतिहासका चतुर्थ खण्ड लिखा। इस प्रकारसे श्लोकबद्ध काश्मीरका इतिहास राजतरंगिणी चार खण्डोंमें विद्यमान है। राजागोनर्दसे लेकर राजा सिंहदेव तक लगभग १५० हिन्दू राजाओंने लगभग ३७०० वर्ष तक काश्मीरका राज्य किया था, उसके उपरांत मुसलमानोंने ५०० वर्षसे कुछ अधिक इसका शासन किया था।

बहुतोंका मत है कि काश्मीर शब्द कश्यपमेरुका अपभ्रंश है। काश्मीरका इतिहास बहुत बड़ा है। पहले काश्मीरके निवासी सूर्यके उपासक थे पीछे वह बौद्धोंका प्रधान स्थान हुआ, वहांसे बौद्धमत सब दिशाओंमें फैला। ग्यारहवीं सदीके आरम्भमें गजनीके महमूदने काश्मीर पर आक्रमण किया था। चौदहवीं सदीमें, समसुद्दीनके राज्यके समय काश्मीरमें मुसलमानी मत फैला। चाक खांदानवालोंने लगभग २०० वर्ष राज्य किया। सन् १५८६ ई० में अकबरने काश्मीरको जीतकर अपने राज्यमें मिला लिया। सन् १७५२ में अफगानिस्तानके अहमदशाह दुर्रानीने काश्मीरको मुगलोंसे छीन लिया। सन् १८१९ ई० लाहौरके महाराज रणजीतसिंहके जनरल मिसरचन्दने अफगानिस्तानके गवर्नर जबरखांको परास्त करके काश्मीरको सिक्खराज्यमें मिला लिया। सन् १८४६ ई० की तारीख १६ मार्चको अङ्गरेजी सरकारने काश्मीरको महाराज रणजीतसिंहके वंशधरोंसे छीनकर महाराज गुलाबसिंहको दे दिया और उनसे ७५ लाख रुपया लिया। गुलाबसिंहने काम पड़ने पर अङ्गरेजी गवर्नमेंटकी सहायता करनेका करार किया। गुलाबसिंहने पहले महाराज रणजीतसिंहके आधीन घुड़सवारका काम किया था, परन्तु पीछे उन्होंने जम्बूका अधिकार पाया और लाहौर दरबारके आधीन रहकर लदाख और बलूचिस्तान तक अपना अधिकार फैलाया था।

सन् १८५७ के बलवेके समय महाराजने अङ्गरेजोंकी सहायताके लिये अपनी सेना भेजी थी। सन् १८५७ के अगस्तमें महाराज गुलाबसिंह मर गये, तब उनके बड़े पुत्र महाराज रणवीरसिंह उत्तराधिकारी हुए, जिनका जन्म सन् १८३२ ई० के लगभग था। सन् १८६१ में उनको जी. सी. एस. आई का पद मिला था। सन् १८८५ ई० के १२ सितम्बरको महाराज रणवीरसिंहका देहान्त हो गया, तब उनके बड़े पुत्र महाराज प्रतापसिंह राजा बने, जिनकी अवस्था ४० वर्ष की है। सन् १८८९ में अङ्गरेजी गवर्नमेंटने महाराज प्रतापसिंहसे काश्मीर राज्यकी स्वतन्त्रता छीन ली। अब कौंसल द्वारा, जिसके सभापति महाराज हैं, राज्यशासन होता है। काश्मीरके राजाओंको २१ तोपोंकी सलामी मिलती है।

काश्मीरके वर्तमान महाराज कछवाहे क्षत्रिय हैं। पूर्व समयमें जयपुर प्रान्तसे सूर्यदेव नामक एक राजकुमारने जम्बमें आकर राज्य कायम किया, उनके वंशमें क्रमसे भुजदेव, अवतारदेव, यशदेव, कृपालुदेव, चक्रदेव, विजयदेव, नृसिंहदेव, अजेनदेव, जयदेव, मालदेव, हमीरदेव, अजेय्यदेव, वीरदेव, घोगड़देव, कर्पूरदेव, सुमहलदेव और संग्रामदेव हुए। बाहशाह

आलमगीरने संग्रामदेवके पराक्रमसे प्रसन्न होकर उनको महाराजका पद दिया, परन्तु वह दक्षिणके संग्राममें मारे गये। संग्रामदेवके पुत्र हरिदेव, हरिदेवके गजसिंह; गजसिंहके ध्रुवदेव और ध्रुवदेवके रणजीतदेव और सूरतसिंह दो पुत्र थे।

रणजीतदेवके पुत्र व्रजराजदेव, व्रजराजदेवके सम्पूर्णदेव हुए। सम्पूर्णदेवके संतति न होनेके कारण रणजीतदेवके पुत्र दलेलसिंहके पुत्र जैतसिंह राजा हुए। लाहौरके महाराज रणजीतसिंहके राज्यके समय जैतसिंहको पिंशिन मिली। जम्बूका राज्य लाहौर राज्यमें मिल गया। जैतसिंहके पुत्र रघुवीरदेवके पुत्र पौत्र अब अम्बालेमें रहते हैं और अङ्गरेजी सरकारसे पिंशिन पाते हैं।

ध्रुवदेवके दूसरे पुत्र सूरतसिंहके जोरावलसिंह और मियां मोटासिंह दो पुत्र थे। मियां-मोटासिंहके पुत्र विभूतिसिंह और विभूतिसिंहके पुत्र व्रजदेवसिंह हुए और जोरावलसिंहके पुत्र किशोरसिंह, किशोरसिंहके पुत्र गुलावसिंह, सुचितसिंह और ध्यानसिंह थे, इनमेंसे सुचितसिंहका वंश नहीं चला; ध्यानसिंहके हीरासिंह, जवाहिरसिंह और मोतीसिंह ३ पुत्र हुए; जिनमें मोतीसिंहकी संतान हैं। महाराज गुलावसिंहके उद्धवसिंह, रणधीरसिंह और रणवीरसिंह ३ पुत्र थे; जिनमेंसे उद्धवसिंह नौनिहालसिंहके साथ और रणधीरसिंह राजा हीरासिंहके साथ मर गये; इसलिये महाराज रणवीरसिंह जम्बू और काश्मीरके राजा हुए; रणवीरसिंहके पुत्र महाराज प्रतापसिंह मियां रामसिंह और मियां अमरसिंह हैं, जिनमें महाराज प्रतापसिंहको राज्य मिला है।

सोलहवां अध्याय।
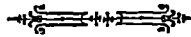
(पञ्जावमें) हसनअबदाल, ऐबटाबाद, अटक, नौशहरा, पेशावर और कोहाट।

हसनअबदाल।

रावलपिण्डीसे पश्चिमोत्तर ९ मील गुलरा जंक्शन और ३० मील हसन अवदालका रेलवे स्टेशन है। गुलरा जंक्शनसे एक लाइन ७० मील पश्चिम सिन्ध नदीके किनारे खुसियालगढ़को गई है, जहाँसे लगभग ४० मील पश्चिम कोहाट है। हसनअवदाल पञ्जावके रावलपिण्डी जिलेके अटक तहसीलमें एक प्रसिद्ध गावँ है, जहाँ पुराने शहरकी तवाहियां देखनेमें आती हैं। गाँवके निकट एक खड़ी पहाड़ीकी चोटीपर पञ्जासाहव फकीरका दरगाह स्थित है। गाँवसे लगभग १ मील पूर्व पहाड़ीके पादमूलके पास मछलियोंसे भरा हुआ एक पवित्र सरोवर है, जिसके किनारोंपर उजड़े पुजड़े अनेक मंदिर देख पड़ते हैं और पश्चिम बगलमें एक चट्टानसे अनेक झरने निकले हैं।

हसनअबदालसे पूर्व ऐवटाबाद होकर एक पहाड़ी मार्ग श्रीनगरको गया है। ऐवटाबाद तक ताँगाका रास्ताहै। हसन अवदालसे १२ मील देदर, २० मील हरिपुर, ४२ मील ऐबटावाद, ५८ मील मनसहरा, ७६ मील गढ़ीहवीवुला, ९८ मील डोमेल, १११ मील गढी. १४६ मील ऊरी, १७१ वरमूला और २०३ मीलश्रीनगर है। सव स्थानोंपर डाक वंगले वने हैं।

ऐबटाबाद।

हसनअबदालसे ४२ मील पूर्वोत्तर समुद्रके जलसे ४१२० फीट ऊपर श्रीनगरके मार्गमें पेशावर विभागके हजारा जिलेका सदर स्थान ऐवटावाद एक कसवा है, जिसमें सन् १८९१ की जन-संख्याके समय १०१६३ मनुष्य थे। हजाराके डिपटीकमिश्नर मैजोर जेम्सऐवटके नामसे, जो सन् १८४७ से १८५३ तक थे, इसका नाम ऐवटावाद पड़ा। ऐवटावादमें हजारा जिलेकी सदर कचहरियां, छावनी, वाजार, अस्पताल और बंगला है, वहाँ वर्षके प्रायः प्रति महिनोंमें वर्षा होती है। कभी कभी दिसम्बरसे मार्च तक वर्फ गिरती है। ऐवटावादसे ६३ मील रावलपिन्डी और ४० मील मरी है।

हजारा जिला—यह पेशावर विभागके पूर्वोत्तरका जिला है, इसके उत्तर काल पहाड़, स्वाधीन स्वात देश, कोहिस्तान और चिलास, पूर्व काश्मीर राज्य, दक्षिण रावलपिन्डी जिला और पश्चिम सिन्ध नदी है। जिलेका क्षेत्रफल ३०३९ वर्ग मील है, इसका सदर स्थान ऐव-टावादमें है। यह जिला पहाड़ी देश है, इसमें केवल २५० वर्गमीलसे ३०० वर्ग मील तक समतल भूमि है। जिलेके पूर्वी सीमापर ३० मील झेलम नदी वहती है। जिलेमें अनेक भाँतिके स्वाभाविक खुशनुमा दृश्य हैं। जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ५१५०८८ और सन् १८८१ में ४०७०७५ मनुष्य थे, अर्थात् ३८५७५९ मुसलमान, १९८४५ हिन्दू, १३८१ सिक्ख और ९० क्रस्तान, मुसलमानोंमें गूजर तंवोली और ढोर अधिक हैं। हिन्दुओंमें खत्री बहुत हैं। जिलेमें हरिपुर, ऐवटावाद, वाफा और नौशहर म्यूनीसिपल कसवे हैं।

हजारा जिलेका सदर स्थान पहिले हरिपुर था, जिसको सिक्ख सरदार हरीसिंहने वसाया था। सन् १८५४ ई० से ऐवटा सदर स्थान हुआ। इस जिलेमें मुगल, दुर्रानी, सिक्ख और अङ्गरेजोंने क्रमसे राज्य किया।

अटक।

हसनअवदालसे २९ मील और रावलपिण्डीसे ५१ मील (लाहौरसे २३७ मील) पश्चिमोत्तर अटकका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनके समीप सिन्ध नदीपर रेलवे पुल वनाहै, जो सन् १८८३ ई० में खुला था। स्टेशनसे १½ मील पूर्वोत्तर रावलपिण्डी जिलेमें तहसीलका सदर स्थान अटक एक कसवा है, जिसमें सन् १८८१ की जन-संख्याके समय ४२१० मनुष्य थे; अर्थात् २९१२ मुसलमान, १२८३ हिन्दू, २ सिक्ख और १३ अन्य। अटकमें दो सराव, बङ्गला, गिर्जा, तहसीलीमकान, सराय और स्कूल है। अटकके निकट सिन्ध नदीमें पानीकी गहराई जाड़के दिनोंमें ४० फीट और वाढ़ होने पर ७५ फीट रहती है। कसवा पहिले किलेमें था, लेकिन पीछे वाहर वसाया गया।

रेलवे पुलसे लगभग १½ मील उत्तर कावुलनदी पश्चिमसे आकर सिन्ध नदीमें मिली है। सिन्धनदीसे पूर्व, सिन्ध और कावुलनदीके संगमके सामने ८०० फीट ऊँचे चट्टान पर अटकका प्रसिद्ध किला है, जिसमें यूरोपियन सेना आरटिलरीका एक वैटरी रहती है। किलेसे उत्तर ओर वर्फसे छिपी हुई हिन्दू कुशपर्वतकी चोटियां देख पड़ती हैं।

इतिहास—सिकन्दर और उसके वादके पश्चिमोत्तरसे हिन्दुस्तानपर आक्रमण करने वाले सवलोग अटक होकर आए थे। वादशाह अकवरने सन् १५८३ ई० में अटकका किला

बनवाया। महाराज रणजीतसिंहने सन् १८१३ ई० में किलेको लेलिया। अङ्गरेजी गवर्नमेंटने सन् १८४९ में सिक्खोंसे किला छीन लिया।

नौशहरा।

अटकसे १९ मील (लाहौरसे ६५६ मील) पश्चिमोत्तर नौशहराका रेलवे स्टेशन है। पञ्जाबके पेसावर जिलेमें तहसीलीका सदर स्थान नौशहरा एक कसवा है। रेलवे स्टेशनके निकट कावुल नदीके दहिने नौशहराकी फौजी छावनी और सब डिवीजनकी कचहरियां हैं। छावनीमें अङ्गरेजी और देशी फौज रहती है और बाजार, चर्च तथा सराय है।

छावनीसे करीब २ मील दूर कावुल नदीके ऊपर बाँयें किनारेपर नौशहराका देशी कसबा है। सदर सड़कसे लगभग २ मील दूर सिक्खोंका बनवाया हुआ एक उजड़ा पुजड़ा किला है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय नौशहराके देशी कसबेमें ८०९० और छावनीमें ४८७३ सम्पूर्ण १२९६३ मनुष्य थे; अर्थात् ९०३२ मुसलमान, २८२० हिन्दू, ९३ सिक्ख और १०१८ अन्य।

पेशावर।

नौशहरासे २४ मील (लाहौरसे २८० मील) पश्चिमोत्तर पेशावर शहरका रेलवे स्टेशन और उससे ३ मील और आगे पेशावरकी छावनीका रेलवे स्टेशन है। हिन्दुस्तानके पश्चिमोत्तरकी सीमाके पास (३४ अंश १ कला ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ७१ अंश ३६ कला ४० विकला पूर्व देशान्तरमें) पञ्जाबमें किस्मत और जिलेका सदरस्थान बारा नदीके बाँयें किनारेके समीप मैदानमें पेशावर एक प्रसिद्ध शहर है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय पेशावर शहर और फौजी छावनीमें ८४१९१ मनुष्य थे; अर्थात् ५१२६४ पुरुष और ३२९२७ स्त्रियां। इनमें ६०२६९ मुसलमान, १५५०१ हिन्दू; ४७५५ सिक्ख, ३६२९ क्रस्तान, ३३ पारसी और ४ यहूदी थे। मनुष्य गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ३३ वाँ और पञ्जाबमें ४ था शहर है।

पेशावर शहर मट्टीकी दीवारसे घेरा हुआ है, जो सिक्खोंके राज्यके समय बना था, उसमें १६ फाटक हैं, जो नित्य रातमें तोपकी आवाज होने पर बन्द किए जाते हैं। शहरके मकान खास करके छोटे ईटोंसे अथवा मट्टीसे बने हैं।

कावुल फाटकसे शहरमें प्रवेश करनेपर ५० फीट चौड़ी नई प्रधान सड़क मिलती है, जिसके दोनों बगलोंपर दुकानोंकी पंक्तियां हैं। पक्का नाला, जिससे सड़कें सींची जाती हैं, शहरके बीच होकर गया है। बारानदीसे पेशावरमें नलद्वारा उत्तम जल आता है। शहरमें कईएक खूबसूरत मसजिद और पंचतीर्थीनामक एक सुन्दर सरोवर है, जिसके किनारोंपर कई एक मंदिर बने हुए हैं।

शहरकी दीवारके बाहर पश्चिमोत्तर बगलके एक टीलेपर बालाहिसारनामक किला खड़ा है, जिसकी ईटोंकी दीवारें सरजमीनसे ९२ फीट ऊंची हैं। शहरमें सब डिविजनल आफिसें और कचहरियां; गिर्जा, स्कूल, अस्पताल और पुलिस स्टेशनके आगे घड़ीका बुर्ज है। शहरके

चारों ओर बहुतेरे कबरगाह देख पड़ते हैं। शहर और छावनीके बीचमें बाजार है पेशावरके निकट बहुत बौद्ध रिमेंश हैं।

शहरसे ३ मील दूर चाँदमारीकी छावनीके निकट गोरखनाथका तालाव है; जहाँ चैत्र बदी १४ और मेषकी संक्रांतिको मेला होता है और प्रति रविवारको बहुत लोग जाकर तालावमें स्नान करते हैं। दूसरे स्थानपर एक मीलके घेरेमें गोरखनाथकी गद्दी है, जिसमें अब तहसीली कचहरी होती है, बाग लगा है और स्कूल बना है।

शहरसे २ मील पश्चिम बड़ी छावनी है, इसमें कमिश्नर और डिपुटी कमिश्नरकी कचहरियां और जिलेके सदर आफिसें, दो मंजिले बारक, अर्थात् सैनिकगृह; सेंटजनका चर्च और पबलिक बाग हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय छावनीमें २०६९० मनुष्य थे; अर्थात् १७२३३ पुरुष और ३४५७ स्त्रियां सन् १८८५ ई० में छावनीमें शाही आर्टिलरीका १ बैटरी, यूरोपियन पैदलका १ रेजीमेंट, बङ्गाल सवारका १ रेजीमेंट और देशी पैदलके ३ रेजीमेंट थे। नौशहरां, जमरूद और चेरातकी छावनियाँ पेशावरके आधीन हैं।

पेशावर सौदागरीका प्रसिद्ध बाजार है। मध्य एशिया, अफगानिस्तान और आस पासके स्वाधीन राज्योंके साथ इसमें सौदागरी होती है। पेशावरमें कोहाटसे गेहूँ और निमक, स्वाटसे चावल और घी, यूसफजाईसे तेलके बीज और पञ्जाब और पश्चिमोत्तर देशसे चीनी और तेल आते हैं और ये सब बोखारा, काबुल तथा बजावरमें भेजे जाते हैं। बोखारासे सोनाका सिक्का, चाँदी और सोना, सोना चाँदीका तार और लैस और चमड़े और काबुलसे घोड़े, खच्चर, मेवा, भेड़ीके चमड़े कारचोबी किया हुआ ऊनी कोट इत्यादि वस्तु पेशावरमें आती हैं। पेशावरसे अंगरेजी असबाव और हिंदुस्तानी चाय काबुल भेजा जाता है। पेशावरका बाजार देखने लायक है, यहाँकी वस्तुओंमेंसे अनेक वस्तु भारतवर्षके दूसरे भागोंमें नहीं देखनेमें आती हैं; यहाँ अफगानिस्तान, आस पासके जिलों और मध्य एशियाके डीलडौल वाले बहुत लोग खूबसूरत पोशाक पहने हुए देख पड़ते हैं।

यहाँके पुरुष बड़े घेरेका अथवा साधारण पायजामा और कुर्ता पहनते हैं और सिरपर मुरेठा बांधते हैं। स्त्रियां बड़े घेरेका पायजामा और कुर्ती पहनती हैं, छोटी चादर वा ओढ़नी ओढ़ती हैं, दोनों कानोंके समीप एक एक चोटी गुँथकर लटकाती हैं और नाकमें सोनेकी छुंछी और कानोंमें मोती लगे हुए बहुतेरे बडे बडे बाले पहनती हैं यहाँके पायजामा २० फीट तक घेरेके होते हैं।

पेशावर शहरसे १९० मील अफगानिस्तानकी राजधानी काबुल, १३½ मील पश्चिमोत्तर स्वात और काबुल नदीका संगम, १०½ मील पश्चिम खैबर पासके दरवाजेके निकट जमरूदका किला और १६ मील खैबर पास है। घाटीसे १०० फीट ऊपर ३ दीवारोंसे घेरा हुआ जमरूदका किला है, जिसको महाराज रणजीतसिंहके जनरल हरीसिंहने मरम्मत किया था। १८३७ ई० में हरीसिंह काबुलके दोस्तमहम्मदकी फौजसे लड़कर मारा गया, तब किला अफगानोंके हस्तगत हुआ।

पेशावरसे अलीमसजिद तक गाड़ीका उससे आगे घोड़का मार्ग है। अलीमसजिद और लण्डीकोत्तलके किले समुद्रके जलसे १७०० फीटकी ऊँचाई पर हैं। जमरूदसे घाटी देख पड़ती है। ६०० फीटसे १००० फीट तब ऊँची खड़ी पहाड़ियोंके बीचमें तंग और घुमाव खैबर घाटी है, जिसके उत्तर दरवाजेमें सन् १८४१ ई० में अङ्गरेजी फौजके लगभग १२

हजार मनुष्य, सबके सब मारे गये थे। मङ्गल या शुक्रके दिन कारबानोंके फायदेके लिये घाटी खुलती है। बोझा लादे हुए ऊँट, खच्चर और बैल झुण्डके झुण्ड जाते आते हैं।

पेशावर जिला—इसके उत्तर सफेडकोहसे हिन्दूकुशको जानेवाले पहाड़ियोंके सिलसिले; पश्चिम और दक्षिण इन्हीं पहाड़ोंका सिलसिला; दक्षिण-पूर्व सिन्ध नदी और पूर्वोत्तर बोनर और स्वात पहाड़ियां हैं। यह जिला प्रायः स्वाधीन पहाड़ी पठानोंसे घिरा हुआ है। जिलेका क्षेत्रफल २५०४ वर्ग मील है। जिलेमें ६ तहसील हैं, तीन स्वात और काबुल नदीके पश्चिम और तीन पूर्व। काबुल नदी इस जिलेमें बहती हुई अटकके निकट सिन्धमें मिल गई है। सिन्ध, काबुल और स्वात ये तीनों नदियां सब ऋतुओंमें घाटियोंमें नाव चलनेके लायक रहती हैं, परन्तु पहाड़ियोंके भीतर कई एक जगहोंके अतिरिक्त, जहांघाट हैं इनकी धारा इतनी तेज है कि इनमें नाव नहीं चल सकती। जिलेमें कोई झील नहीं है, जङ्गल बहुत हैं। अटकसे ऊपर सिन्ध और काबुल नदीमें सोना मिलता है। लगभग ३०० मलाह चैत्र, वैशाख, आश्विन और अगहनमें वालू धोकर सोना निकालनेका काम करते हैं। चारों ओरकी पहाड़ियोंमें लोहाका ओर निकलता है। कुन्दखारमें पत्थर भाठ होता है। खटक पहाड़ियोंपर बहुत सुअर और थोड़े जङ्गली भेड रहती हैं। पहाड़ियोंपर जङ्गली बकरियां होती हैं, जिनकी संख्या प्रति वर्ष घटती जाती है।

पेशावर जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ७०३१७२ और सन् १८८१ में ५९२६७४ मनुष्य थे; अर्थात् ५४६११७ मुसलमान, ३९३२१ हिन्दू, ४०८८ कृस्तान, ३१०३ सिक्ख, ३९ पारसी, ३ जैन और ३ दूसरे। मुसलमानोंमें २७६७५६ पठान, १३०८२ काश्मीरी, ९५७६ शेख, ४५३८ मुगल, ४५१५ सैयद और (जो हिन्दूसे मुसलमान होगये थे) ९७४४५ अएवान, २१२४० बागवान, जिनसे कम संख्याके गूजर; तरखान, कुंभार, राजपूत, सोनार, लोहार, तेली इत्यादि और हिन्दू जातियोंमे अबतक अपने पूर्व पुरुषोंके मतपर हैं, १३३३३ अरोरा, ९५७८ खत्री और ३७४५ ब्राह्मण थे; ये तीनों जातिके लोग पेशावर या दूसरे शहरोंमें तिजारत और व्योहार करते हैं।

जिलेमें ५ कसबे हैं—पेशावर (जन-संख्या सन् १८९१ में ८४१९१), प्रांग (जन-संख्या १२३२७), चरसद (जन-संख्या १०६१९), नौशहरा और टांजी।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि अतिप्राचीन कालमें एक चन्द्रवंशी राजाके आधीन गान्धारदेशमें पेशावरकी घाटी थी, जिसकी राजधानी पेशावर शहरसे २५ मील दूर स्वात नदीके वांयें किनारेपर हस्त नगरके आसपास पिकलस (या पुस्कलावती) करके प्रसिद्ध थी; वहां अबतक पुराने मकानोंकी बड़ी तबाहियां देख पड़ती हैं। सन् ई० की पाँचवीं सदीमें चीनके फाहियान और सातवीं सदीमें हुएंत्संगने लिखा था; कि पुस्कलावतीमें बहुत प्रसिद्ध बौद्धस्तूप है; उस समय गान्धारकी राजधानी पेशावर था। महाभारत—(आदि पर्व ११० वां अध्याय) भीष्मने सुना कि गान्धारराज राजा सुबलकी पुत्री गान्धारीने १०० पुत्र पानेका बर लाभ किया है, तब कन्याके लिये गान्धार राजके पास दूत भेजा। गान्धारका राजकुमार शकुनी अपनी बहनको लेकर हस्तिनापुर आया। गान्धारीसे धृतराष्ट्रका व्याह हुआ। (शल्य पर्व २८ वां अध्याय) सहदेवने (कुरुक्षेत्रके संग्राममें) शकुनीके पुत्र उलूकको और उसके पीछे शकुनीको मारडाला और शकुनीके संगके घुड़सवारोंको मारकर पृथ्वीमें गिरा दिया।

दसवीं सदीके अन्तमें गजनीके सुबुकतगीने लाहौरके राजा जयपालको परास्त करनेके उपरान्त पेशावरपर अधिकार करके १० हजार सवार रक्खे थे। सुबुकतगींके मरनेपर उसके बेटे महमूदने पेशावरकी घाटीमें अनेक बड़ी लड़ाइयां लड़ी थीं। ग्यारहवीं सदीमें जब गजनीका राज्य लाहौर तक पहुँचा, तब पेशावर मध्य रास्तेका प्रसिद्ध टिकान हुआ। सन् १२०६ में शहाबुद्दीनके मरनेके पीछे पेशावरकी घाटी खैबरकी पहाड़ियोंके पठानोंके आधीन हुई। पंदरहवीं सदीके अन्तमें बहुतेरे अफगान जिलेमें आ बसे और कुछ दिनोंके पीछे उन्होंने हमले करके पठानोंको पड़ोसके हजारा जिलेमें खदेर दिया; वे स्थान स्थानमें बसगये। सोलहवीं सदीमें अकबरके राज्यके समय पेशावर घाटी मुगलोंके आधीन हुई। सन् १७३८ में पेशावर जिला नादिरशाह दुर्रानीके हस्तगत हुआ। सन् १८१८ में सिक्खोंने पेशावरकी घाटीमें जाकर पहाड़ियोंके कंदम तक सम्पूर्ण देशमें लूट पाट की। सन् १८२३ में लाहौरके महाराज रणजीतसिंहने काबुलके आजिमखांकी सेनाको पूरे तौरसे परास्त करके जिलेपर अधिकार किया; पीछे एक दूसरी लड़ाई होनेपर सिक्खों का अधिकार देशपर मजबूत होगया। सन् १८४८ में पेशावर जिला अङ्गरेजोंके आधीन हुआ; उसके थोडेही दिन पीछे अङ्गरेजी छावनी पेशावरमें बनी।

सन् १८५७ के बलवेके समय मई महीनेमें पेशावरके देशी रेजीमेंटके हथियार छीन लिये गय; परन्तु नवशहरा और होतीमरदानके ५२ वाँ देशी पैदल बागी होगए, अङ्गरेजी सेना आने पर वे भागे, उनमेंसे १२० मारे गये, १५० कैदी हुए और शेष पहाड़ियोंमें भागे, जिनमेंसे बहुतेरे मारे गये और शेष कैदी हुए।

कोहाट।

पेशावरसे फोर्टमेकसन और कोहाटघाटी होकर ३७½ मील दक्षिण कुछ पश्चिम समुद्रके जलसे १७६७ फीट ऊपर अफरीदी पहाड़ियोंके दक्षिणी नेवसे २ मील दूर टोई नदीके उत्तर पेशावर विभागमें जिलेका सदर स्थान कोहाट एक कसबा है। पेशावरसे पैदल या टट्टूपर कोहाट लोग जाते हैं। बाला और जवाकी पास होकर पेशावरसे कोहाट ६६ मील है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कोहाट कसबे और छावनीमें २७००३ मनुष्य थे; अर्थात् २००४२ पुरुष और ६९६१ स्त्रियां। इनमें १७५२९ मुसलमान, ५१४९ हिन्दू; ४१३१ सिक्ख, १९२ कृस्तान और २ दूसरे थे।

वर्तमान कसबा पुरानी जगहसे कुछ दूर नीची ऊँची भूमि पर बना हुआ है इसके चारों ओर १२ फीट ऊंची दीवार है। कसबेमें एक चौड़ी सड़क और शेष सब घुमावकी गलियां हैं; इसमें जेलखाना और एक गवर्नमेंट स्कूल है और थोड़ी सौदागरी होती है।

देशी कसबेके पूर्व और पूर्वोत्तर ऊँची भूमिपर सिविल स्टेशन और फौजी छावनी है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ४६८९ मनुष्य थे। छावनी और कसबेके उत्तर अङ्गरेजी सरकारका बनवाया हुआ किला है।

कोहाट कसबेसे दक्षिण-पश्चिम ८४ मील बन्नू कसबा और पूर्व लगभग ४० मील सिंध नदीके किनारेपर रेलवेका स्टेशन खुसियालगढ़ और ११० मील गुलरा जंक्शन है।

कोहाट जिला—यह पेशावर विभागके दक्षिण-पश्चिमका जिला है। इसके उत्तर पेशावर जिला और अफरीदी पहाड़ियां; पश्चिमोत्तर अरकजाई देश; दक्षिण बन्नू जिला; पूर्व सिंध नदी और पश्चिम जायमुक्त पहाड़ियां, कुर्रम नदी और वजीरी पहाड़ियां हैं। जिलेका क्षेत्रफल २८३८ वर्गमील हैं। इस जिलेमें खास करके पहाड़ी देश है।

जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय २०३९४६ और सन् १८८१ में १८१५४० मनुष्य थे; अर्थात् १६९२१९ मुसलमान, ९८२८ हिन्दू, २३४० सिक्ख, २१३ कृस्तान और ४१ जैन मुसलमानोंमें पठान अधिक हैं; हिन्दुओंमें अरोरा बहुत हैं; इनके बाद खत्री, ब्राह्मण और कुछ कुछ राजपूत, जाट और अहीर हैं। कोहाट जिलेमें कोहाट कसबेके अतिरिक्त ५ हजारसे अधिक आबादीका कोई कसबा नहीं है।

इतिहास—उन्नीसवीं सदीके आरंभमें कोहाट और हंगूसमदखां वर्कजाईके आधीन हुआ, जिसका मुखिया दोस्तमहम्मदने अफगानिस्तानका तख्त छीन लिया। लगभग सन् १८२८ ई०में पेशावरके सरदारोंने, जिनका मुखिया सरदार सुलतानमहम्मद था, समदखाँके लड़के को खदेर दिया। सन् १८३४ में जब महाराज रणजीतसिंहने पेशावरपर अधिकार किया, तब सुलतानमहम्मदखाँ काबुल चला गया, परंतु दूसरे वर्षमें महाराजने महम्मदखाँको पेशावरमें एक ऊंचे पदपर नियुक्त किया और कोहाट और हंगू दे दिया। सिखोंकी दूसरी लड़ाईके पीछे पञ्जाबके अन्य जिलोंके साथ कोहाट जिला अङ्गरेजी गवर्नमेंटके आधीन हुआ।

सत्रहवां अध्याय।

(पञ्जाब) लालामूसा जंक्शन, पिंडदादनखाँ, कटासराज, शाहपुर, झंग और मगियाना, बन्नू, डेराइस्माइलखाँ, डेरागाजीखाँ और मुजफ्फरगढ़।

लालामूसा जंक्शन।

लाहौरसे ७५ मील पश्चिमोत्तर (गुजरात कसबेसे ५ मील) लालामूसा रेलवेका जंकशन है जहाँसे रेलवे लाइन ३ ओर गई है।

(१) लालामूसासे पश्चिम।

मील-प्रसिद्ध स्टेशन।

५२ मलिकवाला जंक्शन।

६४ पिन्डदादनखाँ।

९७ शाहपुर।

१११ खुसाव।

१६४ कुण्डियान जंक्शन जिससे ९ मील उत्तर मियांवाली है।

मलिकवाला जंक्शनसे १५ मील उत्तर खेवरा और १८ मील दक्षिण-पश्चिम भीरा है।

कुण्डियान जंक्शनसे दक्षिण कुछ पश्चिम

मील-प्रसिद्ध स्टेशन।

५२ दरियाखाँ जंक्शन।

६३ भक्कर,

७८ बिहाल जंक्शन।

९७ लिया।

१४१ सनावन।

१५० महमूदकोट जंक्शन।

महमूदकोट जंक्शनसे ११ मील पश्चिम-दक्षिण देरा

गाजीखाँ और पूर्व १६ मील मोजफ्फरगढ़ और २६ मील शेरशाह जंक्शन है।

(२) लालामूसाजंक्शनसे पश्चिमोत्तर मील-प्रसिद्ध स्टेशन।

२८ झेलम।
१०३ रावलपिन्डी।
११२ गुलरा जंक्शन।
१३३ हसन अबदाल।
१६२ अटक पुल।
१८१ नौशहरा।
२०५ पेशावर शहर।
२०८ पेशावर छावनी।

(३) लालामूसा जंक्शनसे दक्षिण-पूर्व मील-प्रसिद्ध स्टेशन।

५ गुजरात।
१३ वजीराबाद जंक्शन।
३३ गुजरांवाला।
७० शाहदरा।
७५ लाहौर जंक्शन।

वजीराबादसे पूर्वकी ओर २६ मील स्यालकोट, ४८ मील सतावरी छावनी और ५१ मील जम्बूके पास तावी है।

पिंडदादनखाँ।

लालामूसा जंक्शनसे पश्चिम ५२ मील मालिकवाला जङ्क्शन और ६४ मील पिन्डदादनखाँका रेलवे स्टेशन है। पञ्जावके झेलम जिलेमें तहसीलीका सदर स्थान झेलम नदीके उत्तर किनारे से एक मील दूर जिलेमें सबसे बड़ा कसबा पिन्डदादनखाँ है, जिसको सन् १६२३ ई० में दादनखाँने वसाया; जिनके वंशधर अवतक कसवेमें हैं।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय पिन्डदादनखाँमें १५०५५ मनुष्य थे; अर्थात् ९४६५ मुसलमान, ५२८८ हिन्दू; २८८ सिक्ख और १४ कृस्तान।

पिण्डदादनखांमें सब डिवीजनकी कचहरियां, मिशनहौस और अस्पताल है। कारचोवी की हुई लुंगियां सुन्दर वनती हैं। निमक, कपड़ा, रेशम, पीतल और तांवेका वर्तन, गल्ला, घी और तेल वहांसे अन्य स्थानोंमें जाते हैं और अङ्गरेजी चीज, जस्ता, कच्चा रेशम, ऊनी चीजें, मेवा इत्यादि वस्तु दूसरे स्थानोंसे आती हैं।

खेवरा—मलिकवाला जंक्शनसे १५ मील उत्तर और पिण्डदादनखांसे (रेलवे द्वारा) २७ मील पूर्वोत्तर खेवराका रेलवे स्टेशन है। पिण्डदादनखांकी तहसीलमें खेवरा बस्तीके निकट सेंधा निमककी प्रसिद्ध खान है, जहां पहाड़ियोंसे प्राति वर्ष लगभग २० लाख मन निमक काटा जाता है, जिससे अङ्गरेजी सरकारको लगभग ५० लाख रुपयेकी वचत होती है। निमक ढोनेके लिये खेवरामें रेलवे गई है और खेवराकी खानोंसे झेलम नदी तक धूएँकी ट्रामगाड़ी चलती हैं। खेवरासे नरसिंह फव्वारा तीर्थको लोग जाते हैं।

कटासराज।

खेवरासे ५ कोस और पिण्डदादनखांसे १६ मील कटासराज रेंजके उत्तर वगलपर झेलम जिलेके पिण्डदादनखांकी तहसीलमें कटासराज एक तीर्थ है, जिसको अमरकुण्ठ भी कहते हैं। सवारीके लिये खेवरामें एक्के और खच्चर मिलते हैं। पञ्जावमें कुरुक्षेत्र और ज्वालामुखीके वाद इसमें सब स्थानोंसे अधिक यात्री आते हैं। कटासकुण्ड बहुत वड़ा मुरव्वा शकलसा सरोवर है, इसका भाग कुछ स्वाभाविक और कुछ बनाया हुआ जानपड़ता

है, इसके किनारोंके ऊपर पुरानी दिवार है; परन्तु दरारोंसे और टूटे हुए बांधोंसे अब पानी निकल जाता है। सरोवरके निकट कई एक देवमन्दिर बने हुए हैं। पड़ोसकी एक छोटी पहाड़ी पर एक किलेकी निशानी है, जिसके नीचे एक घेरेमें सातघरा नामसे प्रसिद्ध ७ मन्दिर हीन दशामें वर्तमान हैं, जिनके आसपास दो चार दूसरे मन्दिर भी उसी दशामें हैं। लोग कहते हैं कि पांडवलोग अपने १२ वर्षके वनवासके समय, जब कुछ दिनों तक कटासमें रहे थे, तबके उन्हींके ये सातो मन्दिर हैं, जिनको जम्बूके गुलाबसिंहने सुधरवाया था, परन्तु अङ्गरेजोंके मतसे ये मन्दिर सन् ई० के आठवीं वा नवीं शताब्दीके बने हुए हैं। कटासकुण्डके चारों ओर ब्राह्मण (पण्डे) और साधुओं की छोटी छोटी वस्तियां हैं। वैशाख मासमें कटासराजका मेला होता है, जिसमें ३० हजारसे अधिक मनुष्य इकट्ठे होते हैं। यात्री-गण पवित्र कटासराज सरोवरमें स्नान करते हैं, यहांके लोग कटास तालाबको पुष्कर तालाबका भाई कहते हैं।

शाहपुर।

पिण्डदादनखांसे ३३ मील (लालामूसा जंक्शनसे ९७ मील) पश्चिम शाहपुरका रेलवे स्टेशन है। झेलम नदीके बांये किनारेसे २ मील दूर पञ्जाबके रावलपिण्डी विभागमें जिलेका सदर स्थान शाहपुर एक छोटा कसवा है। लाहौरसे शाहपुर होकर डेराइस्माइलखांको एक सड़क गई है।

सन् १८८१ की जन-संख्याके समय शाहपुर कसबे और सिविल स्टेशनमें ७७५२ मनुष्य थे; अर्थात् ५२५३ मुसलमान, २४०८ हिन्दू, ७४ सिक्ख और १७ दूसरे।

शाहसाम्सके नामसे कसबेका नाम शाहपुर पड़ा था जिसका मकवरा कसवेके पूर्व है, जिसके पास वर्षमें एक मेला होता है, जिसमें लगभग २० हजार आदमी आते हैं। कसबेसे ३ मील पूर्व सिविल कचहरियां हैं, जहां सराय, बंगला और टौनहाल देखनेमें आते हैं। कसबे होकर नहर गई है। शाहपुरमें ३ पवलिक वाग और २ स्कूल हैं। सिविल स्टेशनके निकट वर्षमें एक वार मवेशी और घोड़ोंका एक मेला होता है।

शाहपुर जिला—यह रावलपिण्डी विभागके दक्षिण भागमें झेलम नदीके दोनों ओर स्थित है। इसके उत्तर झेलम जिला; पूर्व गुजरात और गुजरांवाला जिले; दक्षिण झांग जिला और पश्चिम डेराइस्माइलखां और बन्नू जिले हैं। जिलेमें भेरा, शाहपुर और खुसाव ३ तहसील हैं, इसके केवल छठवें भागमें खेती होती है; वाकी पहाड़, जंगल और गैर आबादी देश है। पहाड़ियोंसे निमक निकाला जाता है और कुछ कुछ लोहा, सोरा और सीसा मिलते हैं।

जिलेमें सन् १८९१ की जन-संख्याके समय ४९३४८६ और सन् १८८१ में ४२१५०८ मनुष्य थे; अर्थात् ३५७७४२ मुसलमान, ५९०२६ हिन्दू, ४७०२ सिक्ख, २९ क्रस्तान और ९ जैन। मुसलमानोंमें राजपूत, अम्वान, जाट इत्यादि भी हैं। हिन्दू और सिक्खोंमें अरोरा, खत्री और ब्राह्मण वहुत हैं। जिलेमें भीरा बड़ा कसबा है। जन-संख्या सन् १८९१ में १७४२८ और खुसाव, शाहवाल, मियांनी और शाहपुर छोटे कसबे हैं।

भीरा—मलिकवाल जंक्शनसे १८ मील दक्षिण-पश्चिम भीरा तक रेलवेकी शाखा गई है। झेलम नदीके वांयें किनारे पर शाहपुर जिलेमें तहसीलका सदर स्थान और प्रधान कसबा,

भीरा है जो सन् १५४० ई० में एक मुसलमानी फकीरकी कबर और एक सुन्दर मसजिद की चारोंओर बस गया। अब मसजिद्की मरम्मत हुई है। अङ्गरेजी अधिकार होनेके पश्चात् कसबेकी अधिक तरक्की हुई है। भीरामें तहसील, कचहरी, स्कूल, अस्पताल और टाउनहाल हैं। साबुन, पंखा, लोहा और पीतलकी चीजें, तलवार, छूरीके बेंट और कपड़े वहां तय्यार होते हैं। पुराना कसवा झेलमके बायें किनारे पर पूर्व समयमें प्रसिद्ध था, जिसको पहाड़ियोंने बरबाद कर दिया था।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय भीरामें १७४२८ मनुष्य थे; अर्थात् ११०३५ मुसलमान, ६११३ हिन्दू, २६१ सिक्ख और १९ कृस्तान।

इतिहास—सन् १७६३ ई० में महाराज रणजीतसिंहके दादा चतुरसिंहने अहमदशाहके विरुद्ध सेल्टरेंजमें लूटपाट किया। भांजी प्रधानोंने पहाड़ियां और चनावके बीचके देशको आपसमें बांटा। सन् १७८३ में रणजीतसिंहका पिता महासिंह मियानीका मालिक बना। सन् १८०३ में रणजीतसिंहने भीराको मियानीमें जोड़ा और सन् १८१० में शाहीवाल, खुशाव और शाहपुरको भी जीतकर अपने अधिकारमें कर लिया। सन् १८४९ की सिक्ख लड़ाईके पश्चात् शाहपुर जिला अङ्गरेजी अधिकारमें हुआ।

झंग और मगियाना।

शाहपुरसे ७५ मीलसे अधिक दक्षिण (३१ अंश १६ कला १६ विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश २१ कला ४५ विकला पूर्व देशांतरमें) चनाव नदीसे लगभग ३ मील पूर्व पञ्जावके मुलतान विभागमें जिलेका सदर स्थान झंग एक कसब है, जिसमें २ मील दक्षिण मँगियाना, जिसमें जिलेका सिविल स्टेशन है, स्थित है। दोनों मिलकर एक म्यूनिसिपलिटी बनी है। चनाव और झेलम नदीका संगम झंगसे १० मील और मगियानासे १३मील पश्चिम-दक्षिण है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय झंग और मगियानामें २३२९० मनुष्य थे, अर्थात् ११३५५ हिन्दू, ११३३४ मुसलमान, ५७३ सिक्ख, और २८ कृस्तान और सन् १८८१ में २१६२९ मनुष्य थे, अर्थात् ९०५५ झंगमें और १२५७४ मगियानामें।

जब जिलेकी सिविल कचहरियोंका काम झंगसे मगियानामें चला गया, तबसे तिजारत और मसहूरीमें मगियाना बढ़ गया। झंग कसबेकी प्रधान सड़क पूर्वसे पश्चिमको निकली है, जिसके किनारोंपर एकही नकशेकी पक्की दुकानें बनी हुई हैं। कसबेके निकट एक सुन्दर सरोवर, स्कूलका मकान, अस्पताल और पुलिस स्टेशन हैं। कसबेके एक बगलमें पहाड़ी और दूसरे बगलमें कई एक सुन्दर कुञ्ज और बाग देख पड़ते हैं।

मगियानामें कंधारके साथ बड़ी सौदागरी होती है और साबुन, चमड़ेका जीन और तेल, घीके कूपे, पीतलके ताला इत्यादि सुन्दर बनते हैं। इसमें कचहरीकी कोठियां, छोटा गिर्जा, जेलखाना, अस्पताल, एक सराय और एक छोटा जादूघर है।

झांग जिला—यह मुलतान विभागका उत्तरीय जिला है, इसके उत्तर शाहपुर और गुजरांवाला जिले; पश्चिम डेराइस्माइलखां जिला और दक्षिण–पूर्व मांटगोमरी, मुलतान, और मुजफ्फरगढ़ जिले हैं। जिलेका क्षेत्रफल ५७०२ वर्ग मील है; इसके दक्षिण सीमापर

चन्द्मौल रावी नदी बहती है। जिलेमें जङ्गल और पहाड़ियाँ बहुत हैं। जङ्गलोंमें जङ्गली बिल्ली, गदहे और भेड़िया मिलते हैं।

जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ४३६४३० और सन् १८८१ में ३९५२९६ मनुष्य थे; अर्थात् ३२६९१० मुसलमान, ६४८९२ हिन्दू, ३४७७ सिक्ख, ११ कृस्तान ४ जैन और २ पारसी। राजपूत, जाट, अरोरा इत्यादि जातियोंमें भी मुसलमान बहुत हैं। सन् १८९१ की जन-संख्याके समय इस जिलेके झंग और मगियानामें २३२९० और चिनि-यट कसवेमें १३०२९ मनुष्यथे।

इतिहास—झंग जिलेमें गुजरांवाला जिलेकी सीमाके समीप छोटी पहाड़ीपर महाभारत-प्रसिद्ध राजा पांडुके शाले मद्रराज राजा शल्यकी राजधानी 'साकला' की तवाहियाँ हैं; जिसके दो वगलोंमें बड़ा दलदल है; जो पहले एक गहरी झील था। साकलाको सिकंदरके इतिहासको, लिखनेवालोंने साँगला और वौद्धोंने सागल लिखा है। सिकन्दरने आक्रमण करके साँगलाको ले लिया; उस समय साँगला शहरके चारोंओर ईटोंकी दीवार और दो ओर झील थी। चीनके हुएंत्संगने सन् ६३० ई० में सागल अर्थात् साकलाको देखा था; उस समय उसका शहर पनाह उजड़ा पुजड़ा था और पुराने शहरके मध्यमें छोटा कसवा वसा था; जिसके चारोंओर पुराने शहरको निशानियाँ थीं; तब तक वहाँ १०० बौद्ध साधुओंके मठ और २ बौद्धस्तूप थे। राजा शल्यका वसाया हुआ पञ्जावमें स्यालकोट कसवा है।

महाभारत—(आदिपर्व, ११३ वाँ अध्याय) भीष्मे चतुरंगिणी सेनासहित हस्तिनापुरसे मद्र देशमें मद्रेश्वरके नगरमें गये; मद्रराज राजा शल्यने उनसे अपरिमित धन लेकर उनको अपनी भगिनी माद्रीको देदिया। भीष्मने उसे हस्तिनापुरमें लाकर उससे राजा पांडुका व्याहकर दिया। (१२४ वाँ अध्याय) माद्रीके गर्भसे नकुल और सहदेवका जन्म हुआ। (उद्योगपर्व ८ वाँ अध्याय) नकुलके मामा राजा शल्य एक अक्षौहिणी सेना साहित पाण्डवोंकी ओर लड़नेके लिये हस्तिनापुर चले; परन्तु राजा दुर्योधनने मार्गहीमें सेवासे प्रसन्न करके उनको अपनी ओर करलिया।

(शल्यपर्व ६ ठा अध्याय) अश्वत्थामाने दुर्योधनसे कहा कि हे राजन्! अव आप राजा शल्यको सेनापति बनाइए, यह बड़े कृतज्ञ हैं; क्योंकि अपने भानजोंको छोड़कर हमारी ओर लड़ते हैं; (७ वाँ अध्याय) तब दुर्योधनने राजा शल्यको सेनापति बनाया (८ वाँ अध्याय) राजा शल्य (युद्ध आरम्भके १८ वें दिन) सर्वतोभद्र व्यूह बनाकर संग्राममें गये। कौरव और पाण्डवोंकी सेना लड़ने लगी; (१७ वाँ अध्याय) अन्तमें (पाण्डवोंकी असंख्य सेनाको मारकर) मद्रराज शल्य राजा युधिष्ठिरकी शक्तिसे मरकर भूमिपर गिरपड़े; उसके उपरांत राजा युधिष्ठिरने शल्यके छोटे भाईको भी मारडाला।

पहिले झंग जिला सियालोंके, जो मुसलमानी राजपूत हैं, आधीन था। सन् १४६२ ई० में मालखाँ नामक सियाल प्रधानने झंगके पुराने कसवेको वसाया; जो वर्तमान कसवेके दक्षिण-पश्चिम बहुत काल तक मुसलमान राज्यकी राजधानी था; पीछे वह कसवा नदीकी बाढ़से बह गया। झंगके वर्तमान कसवेको औरङ्गजेवके राज्यके समय झंगके वर्तमान नाथ-साहबके पुरुषे लालनाथने वसाया। लाहौरके महाराज रणजीतसिंहने अहमदखाँको निकाल कर झंगके देश और किलेको ले लिया। सन् १८४७ के पीछे यह जिला अङ्गरेजी अधि-कारमें आया।

बन्नू।

शाहपुरसे ६७ मील पश्चिम कुण्डिया जङ्कशन और कुण्डियासे ९ मील उत्तर वन्नू जिलेमें मियाँवालीका रेलवे स्टेशन है; जिससे लगभग ७० मील पश्चिमोत्तर, कोहाट कसवेसे ८४ मील दक्षिण-पश्चिम और डेराइस्माइलखाँसे ८९ मील उत्तर कुछ पश्चिम भारतवर्षके पश्चिमोत्तरकी सीमाके निकट कुर्रम नदीके १ मील दक्षिण पञ्जावके देराजात विभागमें जिलेका सदर स्थान बन्नू कसवा है। खुसालगढ़का रेलवे स्टेशन वन्नू कसवेसे १२४ मील पूर्वोत्तर है।

सन् १८८१ की जन-संख्याके समय वन्नू कसवें (जिसको दलीपनगर भी कहते हैं) और इसकी फौजी छावनीमें ८९६० मनुष्य थे; अर्थात् ४२८४ हिन्दू, ४११० मुसलमान, ५०३ सिक्ख और ६३ दूसरे।

कसवेकी चारों ओर मट्टीकी दीवार वनी हुई है। कसवेमें सुन्दर वाजार, एक चौड़ी सड़क, तहसीलका मकान और पुलिस स्टेशन है। किलेके पश्चिम सिविल कचहरियां, जेलखाना, सराय, अस्पताल और एक छोटा गिर्जा है। किलेके आसपास फौजी छावनी वनी है। कसवेमें वन्नू घाटीकी देशी पैदावारकी वड़ी सौदागरी होती है और साप्ताहिक वड़ा बाजार लगता है, जिसमें औसत लगभग २००० मनुष्य आते हैं।

वन्नू जिला—यह देराजात विभागमें पश्चिमोत्तरका जिला है; इसके उत्तर कोहाट जिलेमें पटक पहाड़ियां; पूर्व रावलपिण्डी, झेलम और शाहपुर जिले; पश्चिम और पश्चिमोत्तर पहाड़ियां, जिनपर स्वाधीन वजीरी रहते हैं और दक्षिण डेराइस्माइलखां जिला है। वन्नू जिलेका क्षेत्रफल ३८६८ वर्गमील है। सिन्ध नदी जिलेके मध्य होकर उत्तरसे दक्षिण वहती है। जिलेमें थोड़ा सोरा और मट्टीका तेल होताहै। सिन्ध नदीकी वालूमेंसे कुछ सोना निकाला जाता है। जङ्गलमें वाघ, भालू, भेड़िया, वनविलार, वनकुत्ता इत्यादि जन्तु होते हैं और पहाड़ियोंसे निमक निकाला जाता है; इस जिलेमें १० छोटे फौजी स्टेशन हैं।

जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ३७१८९१ और सन् १८८१ में ३३२५७७ मनुष्य थे; अर्थात् ३०१००७ मुसलमान, ३०६४३ हिन्दू, ७९० सिक्ख, ८२ क्रस्तान और ६० जैन। मुसलमानोंमें अफगान, जाट और राजपूत वहुत हैं। हिंदू, और सिक्खोंमें तीन चौथाई अरोरा जातिके लोग और शेष एक चौथाईमें ब्राह्मण, खत्री, जाट, राजपूत इत्यादि हैं। वन्नू जिलेमें दलीपनगर, इशाखेल, कालावाग और लाकी कसवे हैं।

इतिहास—सन् १८३८ ई० में सिक्खोंने वन्नू घाटीको लेलिया। सिक्खप्रधान महाराज रणजीतसिंहने वन्नू जिलेके एक भाग पहिलेहीसे रावलपिण्डीके गक्करोंसे छीन लिया था। सन् १८४८ में रणजीतसिंहके पुत्र महाराज दलीपसिंहके नामसे वन्नूमें दलीपगढ़ नामक किला और दलीपनगर वाजार वना। धीरे धीरे वाजारके चारों ओर कसवा वस गया। सन् १८४९ में यह जिला अङ्गरेजी अधिकारमें आया।

डेराइस्माइलखां।

कुण्डिया जंक्शनसे ५२ मील दक्षिण-पश्चिम दरियाखां रेलवेका जंक्शन है; जिससे पश्चिम एक छोटीलाइन सिन्ध नदीके वाँयें किनारेपर गईहै। नदीके दहिने किनारेसे ४½ मील पश्चिम (३१ अंश ५० कला उत्तर अक्षांश और ७० अंश ५९ कला पूर्व देशान्तरमें) पञ्जावमें

देराजात विभाग और जिलेका सदर स्थान डेराइस्माइलखां एक कसवा है, जिससे सड़क द्वारा १२० मील पूर्व–दक्षिण मुलतान शहर और लगभग २०० मील पूर्व लाहौर शहर है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय डेराइस्माइलखांके कसवे और इसकी फौजी छावनीमें २६८८४ मनुष्य थे; अर्थात् १६३१४ पुरुष और १०५७० स्त्रियां। इनमें १५१९५ मुसलमान, १०४८३ हिन्दू, १०९३ सिक्ख, ११२ क्रस्तान और १ पारसीथे।

पुराना कसवा जो वर्तमान कसवेसे ४ मील पूर्व सिन्धके किनारेपर था, सन् १८२३ ई० की बाढ़से वह गया। वर्तमान मकान हालके वने हुए हैं, कसवा मट्टीकी दीवारसे घेरा हुआ मैदानमें खड़ाहै, जिसमें ५ फाटक वने हैं। २ प्रधान बाजार हैं, जिनमें चौड़ी सड़क बनी हैं, हिन्दू और मुसलमानोंका महल्ला अलग अलग स्थित है। मुसलमानोंमें ४ नवाव हैं। भारी वर्षा होने पर हफ्तों तक मार्ग वन्द रहते हैं, क्योंकि पानीका बहाव नहीं है। कसवेके दक्षिण कमिश्नर और डिपुटी कमीश्नरके आफिस, कचहरीके मकान, जेलखाना और अस्पताल है। कसवेमें दूसरे दर्जेकी सौदागरी होती है। कसबेके पूर्व दक्षिण ४ वर्गमीलसे अधिक क्षेत्रफलमें फौजी छावनी फैली हुई है; जिसमें १ गिर्जा और १ तैरनेका हम्माम बना है।

जिला—यह देराजात विभागके मध्यका जिला है; इसके उत्तर वन्नू जिला; दक्षिण देरा गाजीखाँ और मुजफ्फरगढ़ जिला और पश्चिम सुलेमान पर्वत है; जो अफगानिस्तानसे इस जिलेको अलग करता है। जिलेका क्षेत्रफल ९२९६ वर्गमील और इसकी औसत लम्बाई लगभग ११० वर्गमील और औसत चौड़ाई लगभग ८० वर्गमील है। जिलेके मध्य होकर सिंध नदी बहती है। जिलेमें सज्जी बहुत तय्यार होती है और पहाड़ियोंसे मकान वनानेके लिये पत्थर निकाले जाते हैं।

जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ४८६१८६ और सन् १८८१ में ४४१६४९ मनुष्य थे; अर्थात् ३८५२४४ मुसलमान, ५४४४६ हिन्दू, १६९१ सिक्ख, २५३ क्रस्तान, १३ पारसी और २ जैन। हिन्दुओंमें अरोरा जातिके लोग बहुत हैं; इसजिलेमें देराइस्माइल-खाँके अतिरिक्त कोई वड़ा कसवा नहीं है। कुचाली, लेह भक्कर, करोर, पहाड़पुर और टंक छोटे कसवे हैं।

इतिहास—सन् ई० की पन्द्रहवीं सदीमें मलिकशरावके आधीन वलूची लोग, इस जिलेमें आये। मलिकशरावके २ पुत्र थे; इस्माइलखाँ और फतहखाँ। पन्द्रहवीं सदीके अन्तमें दोनोंने अपने अपने नामसे कसवे कायम किये, जो उनके नामसे वर्तमान हैं। सन् १८४८में अङ्गरेजी अधिकार होनेपर इस्माइलखाँ एक जिलेका सदर स्थान हुआ। सन् १८६१ में इसमेंसे वन्नू जिला अलग हो गया और लेह जिलेके दक्षिणका आधा भाग डेराइस्मालखाँमें मिला दिया गया।

देरागाजीखाँ।

दरियाखाँ जंक्शनसे ९८ मील (कुण्डियां जंक्शनसे १५० मील) दक्षिण कुछ पश्चिम और सेरशाह जंक्शनसे २६ मील पश्चिम महमूदकोट रेलवेका जंक्शन है; जिससे ११ मील पश्चिम सिन्ध नदीके वाँयें किनारेपर गाजी घाटका रेलवे स्टेशन है। सिन्धनदीके दहिने किनारेसे २ मील पश्चिम पंजावके देराजात विभागमें जिलेका सदर स्थान 'देरागाजीखाँ' एक कसवा है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय कसबे और फौजी छावनीमें २७८८६ मनुष्य थे; अर्थात् १६५१८ पुरुष और ११३६८ स्त्रियाँ। इनमें १५९६९ मुसलमान; ११९२४ हिन्दू, ६८६ सिक्ख और १०७ कृस्तान थे।

कसबेके पूर्व सीमाके निकट एक नहर और कसबेके समीप एक बांध है, जो बाढ़से शहरको बचानेके लिये सन् १८५८ ई० में बाँधा गया। गाजीके बागके स्थानपर कचहरीके मकान और एक पुराने किलेकी जगहपर तहसील और पुलिस आफिस हैं; इनके अलावे देरागाजीखाँमें टाउनहाल, स्कूलका मकान, अस्पताल, सुन्दर बाजार, ४ हिन्दूमन्दिर, ३ दरगाह और बहुतेरी बड़ी मसाजिद हैं; जिनमेंसे गाजीखाँ, अबदुलजबार और चूटाखाँकी मसजिदें प्रधान हैं। गर्मीके दिनोंमें नहरके किनारेपर साप्ताहिक मेला होता है। कसबेसे १ मील पश्चिम सिविल स्टेशन और फौजी छावनी है।

देरागाजीखाँ जिला—यह देराजात विभागके दक्षिणका जिला है, इसके उत्तर देराइस्मालखाँ जिला; पश्चिम सुलेमान पहाड़ियाँ; दक्षिण सिन्ध प्रदेशमें अपरसिन्ध फ्रण्टियर जिला और पूर्व सिन्ध नदी है। जिलेकी लम्बाई लगभग १९८ मील और औसत चौड़ाई २५ मील और इसका क्षेत्रफल ४५१७ वर्ग मील है। पश्चिमकी पहाड़ियोंसे इस जिलेमें कई एक छोटी नदियाँ बहती हैं; परंतु तुरतही प्यासी हुई भूमिमें सूखजाती हैं; अथवा खेतिहर लोग खेत पटानेके लिये बाँधसे रोक देते हैं। केवल काहा और संगार नदियाँ सर्वदा बहती हैं; जब गर्मीके दिनोंमें सम्पूर्ण छोटी नदियाँ सूख जाती हैं; तब जिलेके पश्चिमी आधा भाग, जो पचाड़ कहलाता है, विरान होजाता है; इसके बलूची निवासी अपने झुंडोंके सहित सरहदके पार पहाड़ियोंमें या सरहदके भीतर सिन्ध नदीके किनारों पर चले जाते हैं। पानी केवल २५०—३०० फीट गहरे कुएँसे मिल सकता है। फौजी पड़ावके लिये एक कूप खना गया है, जो ३८८ फीट गहरा है; जिलेमें दक्षिणी सीमाके निकट खानसे फिटकिरी निकाली जाती है और निमक तथा सोरा बनते हैं। पहाड़ियोंमें मुलतानी मट्टी होती है; जिससे कपड़ा साफ किया जाता है। जङ्गलोंमें बाघ, हरिन, सूअर और बनगदहा होते हैं।

जिलेमें सन् १८९१ की जन-संख्याके समय ४११२५१ और सन् १८८१ में ३६३३४६ मनुष्य थे; अर्थात् ३१५२४० मुसलमान, ४६६९७ हिन्दू, १३२६ सिक्ख, ८२ कृस्तान और १ दूसरे। मुसलमानोंमें लगभग आधा भाग जाट और आधेमें बलूची, सैयद इत्यादि हैं। इस जिलेमें ५ म्यूनिसिपलटी कसबे हैं, जिनमें देरागाजीखां बड़ा और नवसहराके साथ दाजल, जामपुर, राजनपुर और मिट्ठनकोट छोटे कसबे हैं।

इतिहास—हाजीखां बलूचीके पुत्र गाजीखां मकरानीने जो सन् १४७५ ई० में स्वाधीन बनगया था, देरागाजीखां नामक कसबा बसाया; जो सन् १४९४ ई० में मरगया सन् १८४९ की सिक्ख लड़ाईके पीछे अङ्गरेजोंने पञ्जाबके दूसरे जिलोंके साथ सिक्खोंसे इसको लेलिया।

मुजफ्फरगढ़।

महमूदकोट जंक्शनसे १६ मील पूर्व कुछ दक्षिण और शेदशाह जंक्शनसे १० मील पश्चिम मुजफ्फरगढ़का रेलवे स्टेशन है। चनाब नदीके ६ मील दहिने अर्थात् पश्चिम पञ्जाबके मुलतान विभागमें जिलेका सदर स्थान मुजफ्फरगढ़ एक छोटा कसबा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय मुजफ्फरगढ़में ७०२ मकान और २७२० मनुष्य थे; अर्थात् १५९२ हिन्दू, १०६४ मुसलमान, ३६ सिक्ख, ७ जैन और २१ दूसरे।

मुजफ्फरगढ़में नवाब मुजफ्फरखांका बनवाया हुआ किला १६० फीट व्यासका गोलाकार शकलमें है, जिसकी ईंटोंकी दीवार जिसमें १६ पाए बने हैं, ३० फीट ऊँची है। दीवारके बाहर ६ फीट चौड़ा मट्टीका बांध बना हुआ है। किलेके बगलोंमें अनेक बस्तियां हैं। लाहौरके महाराज रणजीतसिंहने सन् १८१८ ई० में इस किलेको उड़ाकर नाकाम कर दिया।

कसबेसे एक मील उत्तर जिलेकी सदर कचहरियां; सराय, गिर्जा, अस्पताल और बङ्गला हैं।

मुजफ्फरगढ़ जिला—यह मुलतान विभागके पश्चिमका जिला है; इसके उत्तर देरा-इस्माइलखां जिला और झांग जिला; पूर्व और दक्षिण-पूर्व चनाव नदी जो मुलतान जिले और बहावलपुर राज्यसे इसको अलग करती है और पश्चिम सिन्ध नदी, जो देरागाजीखां जिलेसे इसको जुदाकरती है। जिलेका क्षेत्रफल ३१३९ वर्गमील है; इसकी पश्चिमी सीमापर ११० मील सिन्ध नदी और पूर्वी सीमापर १०९ मील चनाव नदी बहती है। झेलम और रावी जिलेमें पहुँचनेसे पहलेही चनावमें मिल गई हैं और सतलज नदी, जिसमें व्यास नदी पहलेही मिली है। मुजफ्फरगढ़ जिलेसे नीचे अर्थात् दक्षिण उच्छके निकट चनावमें आमिली है, चनाव नदी दक्षिण-पश्चिम मिडनकोटके निकट जाकर सिन्ध नदीमें गिरती है। सतलजके संगमसे सिन्ध नदीके संगम तक चनाव नदी पञ्चनद करके विख्यात है।

महाभारत (वनपर्व ८२ वाँ अध्याय)—पञ्चनद तीर्थमें जानेसे ५ यज्ञ करनेका फल प्राप्त होता है।

मौसलपर्व (७ वाँ अध्याय) अर्जुनने (यदुवंशियोंका नाश होने पर) द्वारका वासियोंको लिये हुए प्रभाससे चलकर वन पर्वत तथा नदियोंके तटपर निवास करते हुए पंचनदके समीपवर्ती किसी स्थानमें निवास किया; जहाँसे आभीरोंने अर्जुनको परास्त करके वृष्णि और अंधकवंशीय स्त्रियोंको छीन लिया।

चनाव नदीके मिलजानेपर थोड़ी दूरतक सिन्ध नदी सप्तनद कहलाती है; क्योंकि उसमें काबुल नदी पहलेही मिली है और पञ्जावकी पांचों नदियां इकट्ठी होकर पंचनदके नामसे यहाँ इसमें मिलगई हैं; इस प्रकार सात नदियोंकी धारा एकत्र होजाती है। जिलेमें नहर बहुत हैं और जङ्गली मुहकमेंके आधीन लगभग ५७००० एकड़ क्षेत्रफलमें जङ्गल है। जिलेके दक्षिणी भागमें सिन्ध नदीके किनारोंपर बाघ बहुत रहते हैं।

सन् १८८१ की जन-सख्याके समय मुजफ्फरगढ़ जिलेमें ३३८६०५ मनुष्य थे; अर्थात् २९२४७६ मुसलमान, ४३२९७ हिन्दू, २७८८ सिक्ख, ३३ क्रस्तान और ११ जैन। मुसलमानोंमें १०९३५२ जाट; ५८३५६ बालुची, १३६२५ जुलाहा और शेषमें इनसे कम संख्याके चुहरा, मोची, तरखान, राजपूत, कुंभार इत्यादि और हिन्दू तथा सिक्खोंमें अरोरा बहुत और लवाना, ओड, ब्राह्मण, खत्री इत्यादि थोड़े थोड़े थे। इस जिलेमें ९ छोटे म्यूनिसपल कसबे हैं; मुजफ्फरनगर, खांगढ़, खैरपुर, अलीपुर; शहरसुलतां सीतापुर, जटोई, काट आडू और दारादीनपन्नाह।

इतिहास—लगभग सन् १७९५ ई० में मुलतानके अफगान गवर्नर मुजफ्फरखांने यहां अपने रहनेको जगह बनाई, उसके नामसे कसबेका नाम मुजफ्फरगढ़ पड़ा। जब बहावलपुरके नवाव महाराज रणजीतसिंहको नियमित खिराज नहीं दे सका; तब सन् १८३० में महाराजने यह देश उससे लेलिया; सतलज नदी दोनों राज्योंकी सीमा बनी। सन् १८४९ में अङ्गरेजी सरकारने इसको सिक्खोंसे छीन लिया। मुजफ्फरगढ़ कसबेसे ११ मील दक्षिण खांगढ़ जिलाका सदरस्थान बना; परन्तु जब जिलेकी सिविल कचहरियां मुजफ्फरगढ़में बनीं, तब सन् १८६१ ई० में जिलेका नाम खांगढ़से मुजफ्फरगढ़ पड़ा।

अठारहवां अध्याय।

(पंजाबमें) शेरशाह जंक्शन और बहावलपुर। (सिन्धमें रोड़ी, सक्कर, खैरपुर, शिकारपुर, जेकबाबाद, लरखना, सेहवन, लकी, कोटरी हैदराबाद, अमरकोट, ठट्ठा, करांची और हिंगुलाज।

शेरशाहजंक्शन।

मुजफ्फरगढ़से १० मील और महमूदकोट जंक्शनसे २६ मील पूर्व शेरशाह जंक्शन है। मार्गमें चनाव नदी पर रेलवे पुल मिलता है, शेरशाह जंक्शनसे 'नर्थवेस्टर्नरेलवे' तीन ओर गई है, जिसके तीसरे दर्जेका महसूल-प्रतिमील २½ पाई लगता है।

(१) शेरशाह जंक्शनसे दक्षिण-पश्चिमकी ओर

मील-प्रसिद्ध-स्टेशन

५२ बहावलपुर।
५९ समस्ता।
८१ अहमदपुर।
१३५ खांपुर।
१९७ रेती।
२६७ रोड़ी।
२७० सक्कर।
२८५ रूक जंक्शन।
३०७ लरखना।
३३८ राधन।
४०१ सेहवन।
४०९ लकी।
४९७ कोटरी बन्दर।
५११ हैदराबाद।
५४६ जंगशाही।
५९७ करांची छावनी
५९९ करांची शहर।

रूक जंक्शनसे उत्तर कुछ पश्चिम।

मील-प्रसिद्ध-स्टेशन।

११ शिकारपुर।
३७ जेकबाबाद।
१३३ सीबी जंक्शन।
१२१ केटा।
२४३ बोस्ता जंक्शन।
२८० किला अबदुलाह।
३१० चमन।

(२) शेरशाह जंक्शनसे पूर्वोत्तर

मील-प्रसिद्ध-स्टेशन।

१२ मुलतान छावनी।
१३ मुलतान शहर।

११७ मांटगोमरी।
१९६ रायबंद जंक्शन।
३३० लाहौर।

रायबन्द जंक्शनसे दक्षिण-पूर्व १८ मील कसूर, ३५ मील फीरोजपुर, ५५ फरीदकोट, ३३६ मील सिरसा, १८७ मील हिसार, २०२ मील हांसी और ३७६ मील खारी जंक्शन है।

(३) शेरशाह जंक्शनसे पश्चिमोत्तर मील प्रसिद्ध स्टेशन—

२६ महमूदकोट जंक्शन, देरागाजीखाँके लिये।
११३ भक्कर।
१२४ दरियाखाँ जंक्शन; देराइस्माइलखाँके लिये।
१७६ कुण्डियान जंक्शन।

कुण्डियान जंक्शनसे उत्तर ९ मील मियाँवाली और पूर्व ६७ मील शाहपुर, १०० मील पिण्डदादनखाँ और १६४ मील लालामूसा जंक्शन है।

बहावलपुर।

शेरशाह जंक्शनसे ५२ मील और मुलतान शहरसे ६५ मील दक्षिण (लाहौरसे २७२ मील दक्षिण-पश्चिम) वहावलपुरका रेलवे स्टेशन है। पञ्जावमें सतलज नदीके २ मील बाँयें अर्थात् दक्षिण (२९ अंश २४ कला उत्तर अक्षांश और ७१ अंश ४७ कला पूर्व देशान्तरम) समुद्रके जलसे ३७५ फीट ऊपर देशीराज्यकी राजधानी वहावलपुर है, जिससे ५ मील दूर सतलजनदीपर ४२२४ फीट लम्बा और पानीसे २८ फीट ऊँचा १६ खानाका एंप्रेसब्रजनामक लोहाका रेलवे पुल है (जो सन् १८७८ में खुला था।)

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय वहावलपुरमें १८७१६ मनुष्य थे; अर्थात् १११०९ मुसलमान, ७४५० हिन्दू, १४७ सिक्ख और १० क्रस्तान।

वहावलपुर कसवा ४ मील लम्बी मट्टीकी दीवारसे घेरा हुआ है; कसवेके पूर्व नवावका विशाल महल वनाहुआ है, जिसके प्रत्येक कोनेपर एक बुर्ज बना है। महलके मध्यका वड़ा कमरा ६० फीट लंवा और ५६ फीट ऊँचा है, जिसकी देवढ़ी १२० फीट ऊँची वनी है। आगे फव्वारा लगा है, कसवेसें पूर्व जेलखाना है, वहावलपुरमें रेशमी कपड़े अच्छे बुने जाते हैं और वच्चे देनेके लिये उत्तम घोड़ियाँ पाली जाती हैं।

वहावलपुरका राज्य——यह राज्य पञ्जाव गवर्नमेंटके आधीन पञ्जाव और राजपूतानेके बीचमें सिन्ध और सतलजके दक्षिण-पूर्व है। इसके पूर्वोत्तर पञ्जावमें सिरसा जिला, पूर्व-दक्षिण राजपूतानेके बीकानेर और जैसलमेरके राज्य, दक्षिण पश्चिम सिन्ध और पश्चिमोत्तर सिन्ध और सतलज नदी है। राज्यका क्षेत्रफल पञ्जावके सम्पूर्ण देशी राज्योंके क्षेत्रफलके लगभग आधा अर्थात् १७२८५ वर्ग मील है; जिसमेंसे दो तिहाई भूमि ऊसर देश है; ८ मीलसे १४ मील तक चौड़ी नदी बरार भूमि नदीके साथ दूर तक लम्बी है, जिसपर खेती होती है। राज्यके मध्यमें लगभग २० मील चौड़ी एक ऊँची भूमिका कमर बन्द है और पूर्वमें बालूदार बिरान आरम्भ होकर राजपूतानेमें जाकर फैला है। सन् १८८१—१८८२ ई० में बहावलपुर राज्यकी मालगुजारी १६ लाख रुपया अनुमान किया गया था। खेतीकी भूमिका अधिक भाग नहरसे पटाया जाता है। सतलजके १५ मील दूर उसके समानान्तरमें

११३ मील लम्बी, जिसकी २ बड़ी शाखा हैं, एक नहर खोदी गई है। नहर और दूसरे कामोंसे राज्यकी मालगुजारी दूनी होगई है। जिलेके जङ्गलोंमें जलावनकी लकड़ी बहुत और कीमती लकड़ी कमहै। राज्यमें रुई, रेशमके असबाब और नील बहुत तय्यार होते हैं। राज्यके दक्षिण भागमें सिन्धी और उत्तरमें पञ्जाबी भाषा है और दोनों मिली हुई साधारण भाषा मुलतानी कहलाती है।

राज्यमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ६४८९०० और सन् १८८१ में ५७३४९४ मनुष्य थे, अर्थात् ४८०२७४ मुसलमान, ९१२७२ हिन्दू, १६७८ सिक्ख, २५४ जैन १३ क्रूस्तान और ३ पारसी। इस राज्यमें बहावलपुरके अतिरिक्त अहमदपुर, खाँपुर, उच्छ, गढ़ी मुखियारखाँ, खैरपुर और दूसरा अहमदपुर छोटे कसबे हैं; इनमेंसे उच्छ बहुत पुराना है।

इतिहास—बहावलखाँके नवाबके पुरुषे सिन्ध प्रदेशसे आये और काबुलसे शाहशुजाके निकाले जानेपर स्वतन्त्र बन गये। महाराज रणजीतसिंहके राज्यकी बढ़तीके समय नवाब बहावलखांने अपनी रक्षाके लिये एक सेनाके वास्ते अङ्गरेजी गवर्नमेंटके पास कइ एक दरखास्त दिये, परन्तु कोई स्वीकार नहीं हुआ। सन् १८३३ ई० में अङ्गरेजी गवर्नमेंटके साथ बहावलपुरकी पहली सन्धि हुई, जिससे उसकी स्वाधीनता रह गई और दूसरी संधि सन् १८३८ में हुई, जो अबतक वर्तमान है। नवाब बहावलखांने काबुलकी लड़ाईमें और सन् १८४७+१८४८ में मुलतानकी चढ़ाईमें अङ्गरेजी सरकारकी सहायताकी, जिन कामोंकी कृतज्ञतामें सरकारने उसको २ जिले देदिये और जिंदगी तक १ लाख रुपया वार्षिक पिंशिन देनेकी आज्ञादी। बहावलखांकी मृत्यु होने पर उसकी आज्ञानुसार उसका तीसरा पुत्र उत्तराधिकारी हुआ था; परन्तु बहावलखांके बड़े पुत्र उसको गद्दीसे उतारकर आप नवाब बने। सन् १८६६ ई० में वह अचानक मर गये तब उनके ४ वर्षके बच्चा पुत्र बहावलपुरके वर्तमान नवाब सर सादिक महम्मदखां बहादुरजी. सी. एस. आई तख्तपर बैठे, जिनको सन् १८७९ में राज कार्यका पूरा अधिकार मिलगया बहावलपुरके नवावको अङ्गरेजी गवर्नमेंटसे १७ तोपोंकी सलामी मिलती है; इनको खिराज नहीं देना पडता फौजी ताकत १२ तोप ९९ गोलन्दाज, ३०० सवार और २४९३ पैदल और पुलिस हैं। पञ्जाबमें पटियालेके राजाको छोड़कर बहावलपुरके नवाब सम्पूर्ण देशी राजाओंसे बड़े हैं।

रोड़ी।

बहावलपुरसे २१५ मील (शेरशाह जंक्शनसे ३६७ मील) दक्षिण पश्चिम रोडीका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके सिन्ध प्रदेशके शिकारपुर जिलेमें सिन्ध नदीके बाँये अर्थात् पूर्व रोड़ी एक कसबा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय रोड़ीमें १०३२४ मनुष्य थे; अर्थात् ४८८२ मुसलमान, ३०९७ हिन्दू, २१७५ पहाड़ी और जङ्गली जातियां, ६९ क्रूस्तान और १ पारसी।

रोड़ी कसबा दूरसे सुन्दर देख पड़ता है, इसमें चौमहले पंचमहले बहुतेरे मकान बने हुए हैं। बहुतेरे स्थानोंमें तङ्ग गलियां हैं। मुखतियारकारकी कचहरी, म्यूनिस्पल कमिश्नरोंका आफिस, अस्पताल और स्कूल यहांके प्रधान मकान हैं। रोड़ीमें मुसलमानोंकी बहुतेरी मसजिद और दरगाह हैं, जिनमें अकबरके सेनापति फतहखांकी सन् १५७२ ई० की

बनवाई हुई जामामसजिद, जो लाल ईटोंसे बनी हुई ३ गुम्बजवाली है; मीर मूसनशाहकी सन् १५९३ की बनवाई हुई ईदगाह मसजिद और २५ फीट लम्बी और इतनीही चौड़ी बारमुबारकनामक इमारत, जिसको लगभग सन् १५४५ ई० में मीरमहम्मदने बनवाया था, हैं। बारमुबारकमें एक सोनेके डिब्बेमें महम्मदसाहबका एक बाल रक्खा हुआ है।

रोड़ीके सामने सिन्ध नदीके टापूमें जो ख्वाजाखिज्रका टापू कहलाता है; सन् ९५२ ई० का बना हुआ एक मुसलमान फकीरका दरगाह है; जिसको हिन्दू और मुसलमान दोनों मानते हैं। खिज्र-टापूसे थोड़ा दक्षिण इससे बड़ा भक्कर टापू है।

रोड़ीमें गल्ले, तेल, घी, निमक, चूना और मेवेकी सौदागरी होती है और तसरके रेशम, सोना, और चाँदीके गहने बनते हैं। एक बड़ी सड़क मुलतानसे रोड़ी होकर हैदराबाद गई है।

इतिहास—ऐसी कहावत है कि सन् १२९७ ई० में सैयद रुकनुद्दीनशाहने रोड़ीको बसाया। सन् १८४२ ई० में अङ्गरेजी सरकारने इसको लेलिया।

सक्कर।

रोड़ीके रेलवे स्टेशनसे ३ मील पश्चिमोत्तर सिन्ध नदीके दहिने अर्थात् पश्चिम किनारेपर सक्करका रेलवे स्टेशन है। रोड़ी और सक्करके बीचमें लगभग ८०० गज लंबा, ३०० गज चौड़ा और लगभग ३५ फीट ऊँचा भक्कर नामक एक टापू है, जिसमें एक किला खड़ा है; जिसका एक फाटक पूर्व रोडीकी ओर और दूसरा पश्चिम सक्करकी ओर है। रोड़ीसे भक्कर टापू तक सिन्ध नदी पर लैंसडाउन पुल बना है। पुलकी सड़क टापूको लांघ दूसरे पुल होकर सक्करको गई है, जिसपर मध्यमें रेलवे लाइन ओर दोनों और ४½ फीट चोड़े रास्ते हैं, जिनपर घोड़ और आदमी चलते हैं।

सिन्ध प्रदेशमें शिकारपुर जिले और सक्कर सब डिवीजनका सदरस्थान सक्कर एक कसबा है, जिससे सड़कसे २४ मील और रेलवेसे रूक होकर ३८ मील पश्चिमोत्तर शिकारपुर है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय सक्करमें २९३०२ मनुष्य थे; अर्थात् १८३१५ पुरुष और १०९८७ स्त्रियां। इनमें १६४१० हिन्दू, ११८६६ मुसलमान, ४२३ कृस्तान, १४८ एनिमिष्टिक, ५४ पारसी, १४ यहूदी और ३८७ दूसरे थे।

सक्करमें २ पुराने मकबरे हैं। पहला लगभग १६०७ ई० का बना हुआ महम्मदमासूमका और दूसरा सन् १७५८ का बना हुआ शेखखैरुद्दीनका। इनके अलावे यहां मामूली पबलिक आफिसें, मातहत जेल, अस्पताल, बँगला और धर्मशाला हैं। सक्करमें बड़ी सौदागरी होती है; यहांसे रेशम, देशी कपड़ा; रूई, ऊन, अफीम, सोरा, चीनी, रंग, पीतलका बर्तन धातु, शराब और देशी पैदावारकी चीजें दूसरे कसबोंमें जाती हैं। नये सक्करसे १ मील दूर पुराने सक्करके स्थानपर बहुतेरे मकबरे और मसजिदें हीन दशामें खड़ी हैं।

इतिहास—सन् १८०९ और १८२४ ई० के बीचमें खैरपुरके अमीरोंको सक्कर मिला। सन् १८३९ में, जब भक्करका किला अङ्गरेजोंको मिला, तब फौजोंके रहनेसे नया सक्कर बस गया। सन् १८४२ में करांची, ठट्टा और रोडीके साथ पुराना सक्कर अङ्गरेजी सरकारके अधिकारमें आ गया। सन् १८४५ में यहांसे सरकारी फौज उठा ली गई।

खैरपुर।

रोड़ी कसबेसे १७ मील दक्षिण-पश्चिम सिन्ध नदीसे १५ मील पूर्व सिन्ध प्रदेशमें देशी राज्यकी राजधानी खैरपुर एक छोटा कसबा है; जिसमें सन् १८७५ में ७२७५ मनुष्य, थे। प्रधान निवासी हिन्दू और मुसलमान हैं; जिनमें मुसलमानोंकी संख्या हिन्दुओंसे अधिक है।

कसबेमें कई एक अच्छे मकानोंके अतिरिक्त सब मट्टीकी झोपड़ियां हैं। बाजारके बीचमें राजमहल और कसबेके बाहर मुसलमानी फकीरोंके ३ मकबरे स्थित हैं। खैरपुरसे गल्ला नील और तेलके बीज दूसरे कसबोंमें जाते हैं। रेशम; रूई, ऊन और धातु इत्यादि चीज़ें दूसरी जगहोंसे खैरपुरमें आती हैं। सोने चांदीके भूषण तलवार इत्यादि यहां बनते हैं। खैरपुरमें गर्मी अधिक पडती है और इसके आसपास दलदल भूमि है; इसलिये यह अस्वास्थ्यकर जगह हुआ है।

खैरपुर राज्य—यह अपरसिन्धमें देशी राज्य है, इसके उत्तर शिकारपुर जिला पूर्व जैशलमेरका राज्य, दक्षिण हैदराबाद जिला और पश्चिम सिन्ध नदी है। राज्यका क्षेत्रफल ६१०९ बर्ग मील है। इसकी सबसे अधिक लम्बाई पूर्वसे पश्चिम तक ११० मील और सबसे अधिक चौडाई ७० मील है। राज्यसे ७ लाख रुपयेसे कुछ अधिक मालगुजारी आती है।

सिन्ध नदीके आसपासके खेतके मैदानको छोड करके अन्यत्रकी भूमि नहर, नाला तथा नदीसे पटाई जाती है, राज्यके सम्पूर्ण क्षेत्रफलके ३/४ भागमें पहाडियोंकी पंक्तियां है जिनपर खेती नहीं होती। देश साधारण प्रकारसे अत्यन्त सूखा ऊषर और उजाड़ है। जङ्गलोंमें बाघ, भेड़िया, सुअर इत्यादि मिलते हैं। घरऊ पशुओंमें ऊँट और खच्चर भी बहुत होते हैं। ४ मास आबहवा बहुत सुन्दर रहती है, परन्तु शेष ८ महीनोंमें बड़ी गर्मी पड़ती है। वर्षा कालमें बर्षा कम होती है। राज्यकी प्रधान फसिल नील और कपास है। यहांकी साधारण भाषा सिन्धी पारसी और बलुची है। खैरपुरके प्रधानको पैदावारका तीसरा भाग प्रजासे मिलता है।

सन् १८८१ की जन-संख्याके समय खैरपुर राज्यके ६१०९ बर्ग मीलमें १२९१५३ (प्रति बर्ग मीलमें २१) मनुष्य थे, अर्थात् १०२४२६ मुसलमान और २६७२७ हिन्दू। हिन्दुओंमें २५४१५ लोहाना, २१३ ब्राह्मण और केवल ७ राजपूत थे।

इतिहास—खैरपुरके प्रधान, जो तालपुर कहलाते हैं, बलूची मुसलमान हैं। सन् १७८३ में सिन्धके कल्होरा प्रधानकी दशा हीन होनेके समय मीरफतहअलीखाँ तालपुर, सिन्धका मालिक बन गया; पीछे उसके भतीजे मीरशहरावन, जिसके पुत्र मीररुस्तम और अलीमुराद थे; खैरपुरको कायम किया और राज्यको बढ़ाया। सन्१७८७ के पहले खैरपुरकी जगहपर बोयरानामक गाँव था।

अङ्गरेजोंकी काबुलपर चढ़ाईके समय खैरपुरके सिवाय सिन्धके किसी सरदारने उनकी सहायता न की। अङ्गरेजी सरकारने मियानीकी लड़ाईके पीछे सिन्ध देशमें केवल एक खैरपुर-राज्यको जैसेके तैसे रहने दिया। खैरपूरके वर्तमान प्रधान मीरसर अलीमुरादखाँ जी. सी. आई जिनका जन्म सन् १८१५ ई० में हुआ था, हैं; जिनको अङ्गरेजी गवर्नमेंटसे १५ तोपोंकी सलामी मिलती है। यह मीर शहरावखाँ तालपुरके छोटे पुत्र हैं।

शिकारपुर।

रूक जंक्शनसे ११ मील उत्तर (हैदराबादसे २३७ मील उत्तर कुछ पूर्व) शिकारपुरका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके सिन्ध प्रदेशमें (२७ अंश, ५७ कला, १४ विकला उत्तर अक्षांश और ६८ अंश, ४० कला, २६ विकला पूर्व देशान्तरमें) जिलेका प्रधान कसवा शिकारपुर है।

सन् १८९१ को जन-संख्याके समय शिकारपुर कसवेमें ४२००४ मनुष्य थे; अर्थात् २११५४ पुरुष और २०८५० स्त्रियाँ। इनमें २५८४६ हिन्दू, १६११२ मुसलमान, २३ कृस्तान, १३ यहूदी. ६ एनिमिष्टिक और ३ पारसी थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें ९६ वाँ, बम्बई हातेमें १० वाँ और सिन्ध प्रदेशमें तीसरा शहर है।

शिकारपुर बड़ा तिजारती कसवा है; यहाँसे तिजारती सड़क जैकबाबाद, बलूचिस्तान, कन्धार, बोलनघाटी इत्यादि जगहोंको गई हैं; कसवा नीची जमीनपर बसा है। सिन्ध नहरकी एक शाखा कसबेके दक्षिण और दूसरी कसवेके उत्तर है। आसपासकी भूमि उंपजाऊ हैं; जिसमें गल्ले और फलोंकी बड़ी फसल होती हैं। फलोंमें आम, निम्बू, खजूर और तूत बहुत उत्तम होते हैं, यहाँ गर्मीकी ऋतुओंमें बड़ी गर्मी पड़ती है, इस लिये सम्पूर्ण बाजार छाया हुआ है। पुराना बाजार, जो सिन्ध प्रदेशके सब बाजारोंसे उत्तम है, बढ़ाया गया है। कसवेके पूर्व ३ बड़े तालाब और कसवेमें एक हाईस्कूल है। जेलखानेमें पोस्तीन, कुर्सियां शतरञ्जी, खीमे, जूते इत्यादि असबाब बनाये जाते हैं।

शिकारपुर जिला—इसके उत्तर बलूचिस्तान देश अपर सिन्ध फ्रण्टियर जिला और सिन्ध नदी, पूर्व बहावलपुर और जैशलमेरके राज्य, दक्षिण खैरपुर राज्य और करांची जिला और पश्चिम खिरथर पहाड़ियाँ हैं। जिलेका क्षेत्रफल १०००१ वर्गमील है, जिसमें रोड़ी, सक्कर, लरकना और मेहरा ४ सब डिवीजन हैं। जिलेमें नीची पहाड़ियां और लगभग २०० वर्गमीलमें जङ्गल है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय शिकारपुर जिलेमें ८५२९८६ मनुष्य थे; अर्थात् ६८४२७५ मुसलमान, ९३३४१ हिन्दू, ६८६५५ सिक्ख, ५८९२ आदि निवासी, ७३६ कृस्तान, ६४ पारसी, ९ यहूदी, ८ ब्राह्मी और ६ बौद्ध। हिन्दुओंमें ७७४९१ लोहाना, ३३३६ ब्राह्मण, २७१ राजपूत थे। शिकारपुर जिलेमें शिकारपुर जन-संख्या सन् १८९१ में ४२००४) सक्कर (२९३०२), लरकना (१२०१९) रोड़ी, कम्बर और गढ़ीअसीन कसवे हैं।

इतिहास—सन् १८२४ ई० में शिकारपुर सिन्धके अमीरोंके आधीन हुआ और सन् १८४३ में अङ्गरेजी अधिकारमें आया। शिकारपुर, जेकबाबाद और बलूचिस्तान देशके सिबी इत्यादिमें भारतवर्षके सब जगहोंसे अधिक गर्मी पड़ती है। शिकारपुरके निकट सालाना औसत् वर्षा लगभग ५ इंच होती है।

जेकबाबाद।

शिकारपुरसे २६ मील और रुक जंक्शनसे ३७ मील उत्तर सिन्ध पेसिन और केटा रेलवेपर जेकबाबादका रेलवे स्टेशन ह। सिन्ध प्रदेशके अपर सिन्ध फ्रंटियर जिलेका सदर स्थान जेकबाबाद एक छोटा कसवा है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय जेकवावादमें १२३९६ मनुष्य थे; अर्थात् ६७८६ मुसलमान, ५२३१ हिन्दू, १२६ कृस्तान, ५९ एनिमिष्टिक, ७ पारसी, ४ यहूदी और १८३ अन्य।

जेकबावादमें जिलेकी कचहरियाँ, जेलखाना, बड़ा अस्पताल, जनरल जकवकी कवर और कई एक स्कूल हैं और सैनिक घोड़सवार और पैदलके लिये फौजी लाइन दो मील फैली है। जेकवावादसे २४ मीलकी उत्तम सड़क शिकारपुरको गई है। गर्मीकी ऋतुओंमें यहाँ गर्मी बहुत पड़ती है; इस लिये सड़कोंपर दूव जमाई जाती है।

अपरसिन्ध फ्रंटियर जिला—यह सिन्ध प्रदेशका उत्तरी जिला है; इसके उत्तर और पश्चिम पञ्जावके देराजात विभागके जिले और खिलातकेखाँका राज्य; दक्षिण शिकारपुर जिला और पूर्व सिन्ध नदी है। जिलेका क्षेत्रफल ३१३९ वर्ग मील है; जिसकी सबसे अधिक लम्बाई पूर्वसे पश्चिमको ११४ मील और अधिकसे अधिक चौड़ाई उत्तरसे दक्षिणको २० मील है। जिलेका सदरस्थान जेकबावाद है भूमि पटानेके लिये सिन्ध नदीसे अनेक नरह निकाली गई हैं। जिलेके जङ्गलोंमें शुअर वहुत हैं; वाघ और भेड़िये कभी कभी देख पड़ते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेमें १२४१८१ मनुष्य थे; अर्थात् १०९१८३ मुसलमान, ९८९४ हिन्दू, ३६६४ सिक्ख, ११९८ आदि निवासी, ३३० कृस्तान, ९ पारसी और ३ यहूदी। हिन्दूओंमें ६६५५ लोहाना, १३८ ब्राह्मण, ४३ राजपूत थे। जिलेमें जेकवावादके अतिरिक्त कोई दूसरा कसवा नहीं है।

इतिहास—प्रसिद्ध सरहदीअफसर और सिन्धके घोड़सवारोंका कमाँडर जनरल जेकबने खाँगढ़ गाँवके स्थानपर अपने नामसे जेकवावाद वसाया और यहाँ रेजीडेंसी वनाया, जिसमें अव लाइब्रेरी और दुकान हैं। सन् १८५८ ई० में जनरल जेकव इसी जगह मरा; जिसकी कबर यहाँ स्थित है।

केटा—जेकवावादसे ९६ मील (रूक जंक्शनसे १३३ मील) उत्तर वलूचिस्तानके अङ्गरेजी राज्यमें सीवी जंक्शन है। रेलवे जेकवावादसे वलूचिस्तानके देशी राज्य लाँघकर, अङ्गरेजी राज्यकी सीमाके निकट, नारी नदीकी घाटीमें, वोलन पासके दरवाजेके निकट, सीवीको गई है; जिसको सन् १८३९—१८४२ ई० में अङ्गरेजोंने शाहशुजाके नामसे दखल किया और सन् १८८९ में एक सन्धिके अनुसार ले लिया। सीवी जंक्शनसे ८८ मील पश्चिमोत्तर लूप लाइनपर वलूचिस्तानके अङ्गरेजी राज्यका प्रधान कसवा और कम्पूका सदर मुकाम केटा है; जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य—गणनाके समय १६९६७ मनुष्य थे। केटासे १०३ मील दक्षिण खिलात है।

लरखना।

रूक जंक्शनसे २२ मील पश्चिम (शेरशाह जंक्शनसे ३०७ मील) करांचीकी लाइनपर लरखनाका रेलवे स्टेशन है। सिन्ध प्रदेशके शिकारपुर जिलेमें गार नहरके दक्षिण किनारे पर डिवीजनका प्रधान कसवा लरखना है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय लरखनामें १२०१९ मनुष्य थे; अर्थात् ६४२१ हिन्दू ५५८० मुसलमान, ९ कृस्तान, ८ पारसी और १ एनिमिष्टिक।

लरखनामें सब डिवीजनकी कचहरियाँ, अस्पताल, बंगले, शाहबहराका मकबरा और बाजार हैं; यहाँका किला जेलखाने और अस्पतालके काममें आता है लरखना सिन्धके गल्लेके प्रसिद्ध बाजारोंमेंसे एक है; यहाँ कपड़ा धातु और बनाया हुआ चमड़ाका व्योपार बहुत होता है।

सेहवन।

लरखनासे ९४ मील (रूक जंक्शनसे ११६ मील) दक्षिण कुछ पश्चिम सेहवनका रेलवे स्टेशन है। सिन्ध नदीसे ३ मील दूर सिन्ध प्रदेशके करांची जिलेका सब डिवीजन सेहवन एक छोटा कसबा है; जिसमें सन् १८८१ की जन-संख्याके समय ४५२४ मनुष्य थे। कसबेके हिन्दू सौदागरी करते हैं और मुसलमान मछली मारते हैं।

सेहवनमें दो मकबरे, अस्पताल, धर्मशाला और डिपुटी कलक्टरका बँगला है। लगभग ६० फीट ऊँचे टीले पर टूटी हुई दीवारसे घेरा हुआ १५०० फीट लम्बा और ८०० फीट चौडा बड़े सिकन्दरका बनवाया हुआ पुराना किला हीन दशामें स्थित है, जिसमें अब डाक बँगला बना है। लालशाहबाजका मकबरा, जो सन् १३५६ ई० में बना था, यहां बहुत प्रसिद्ध है। यात्रियोंकी पूजासे बहुतेरे फकीरोंका गुजारा होता है। दूसरा बड़ा मकबरा, जो सन् १६३९ ई० में तैयार हुआ था मिर्जाजानी फकीरका है; जिसके फाटक और कटघरे पर मीर करमअलीखां नामक मुसलमानने चांदी जडवा दी है।

लकी।

सेहवनसे ८ मील (शेरशाह जंक्शनसे ४०९ मील) दक्षिण-पूर्व लकीका रेलवे स्टेशन है। करांची जिलेके सेहवन सब डिवीजनमें सिन्ध नदीके पश्चिम किनारेके निकट लकी एक बस्ती है; जिसमें धर्मशाला, पोष्टआफिस और पुलिस-स्टेशन बने हुए हैं लकीके निकट पहाड़ियोंसे कई एक गरम झरनोंसे पानी गिरता है; जो धारातीर्थ करके प्रसिद्ध है। पहाड़ियोंमें सीसा, सुर्मा और तांबा मिलत है।

कोटरी।

लकीसे ८८ मील दक्षिण कुछ पूर्व और हैदराबादसे १४ मील पश्चिम कोटरीका रेलवे स्टेशन है। सिन्ध प्रदेशके करांची जिलेमें सिन्ध नदीके दहिने अर्थात् पश्चिम किनारे पर कोटरी तालुकका सदरस्थान कोटरी एक छोटा कसबा है जहां रेलवेके दो स्टेशन बने हुए हैं; एक कस्बेके पास और दूसरा बन्दरगाहके निकट।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय खांपुर और मियानीमुलतानीके साथ कोटरीमें ८९२२ मनुष्य थे; अर्थात् ५८१३ मुसलमान, २१६० हिन्दू, ४०७ कृस्तान १७ पारसी और ५२५ दूसरे।

कोटरीमें मामूली सरकारी इमारत है। देशी बस्तीसे उत्तर और पश्चिम सिविल स्टेशन और यूरोपियन महल्ला है; नदीके किनारेपर स्टीमर और नावोंकी भीड़ रहती है।

हैदराबाद।

सिन्ध नदीके दहिने किनारे पर कोटरीका रेलवे स्टेशन और उसके सामने पूर्व अर्थात् बांयें किनारे पर जींदू बन्दर है। दोनोंके बीच सिन्ध नदीमें आगबोट चलता है। जींदू-

बन्दरसे ३½ मील पूर्व हैदरावाद तक सायदार पक्की सड़क बनी हुई है। सिन्ध प्रदेशमें सिन्ध नदीसे ३½ मील पूर्व गंजोरेंजके उत्तरीय पहाड़ियोंपर (२५ अंश, २३ कला, ५ विकला उत्तर अक्षांश और ६८ अंश, २४ कला, ५१ विकला पूर्व देशांतरमें) जिलेका सदर स्थान हैदरावाद एक छोटा शहर है जो वादशाही समयमें सिन्ध प्रदेशका सदर स्थान था।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय हैदरावाद शहर और इसकी छावनीमें ५८०४८ मनुष्य थे, अर्थात् ३०६३२ पुरुष और २७४१६ स्त्रियां इनमें ३३२३० हिन्दू, २३६८४ मुसलमान, ७३४ क्रस्तान, ३२७ एनिमिष्टिक, ३८ पारसी, ३१ यहूदी और ४ दूसरे थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ६३ वां, वम्बई हाते में ६ वां और सिन्ध प्रदेशमें दूसरा शहर है।

हैदरावादके प्रधान इमारतोंमें जेलखाना, जिसमें ६०० कैदी रहते हैं, एञ्जिनियरी मकान कचहरियोंके मकान, अस्पताल, पागलखाना, बँगला और कई एक स्कूल हैं। शहरके पश्चिमोत्तर छावनीमें बारक अर्थात् सैनिक गृह, अस्पताल, बाजार इत्यादि हैं। जींदू वन्दर रोडसे थोड़ी दूर पर सन् १८६० ई० का बना हुआ एक गिर्जा है; जिसके बनानेमें ४५००० रुपया खर्च पड़ा था; इसमें ६०० आदमी बैठ सकते हैं। पहाड़ीके उत्तरीय भागपर तालपुर मीरोंके और नये हैदरावादको बसानेवाले गुलामशाह कल्होराके पुराने मकबरे हैं; जिनमें गुलामशाहका मकबरा दूसरोंसे अच्छा है। पानी सिन्ध नदीसे नलों द्वारा शहरमें आता है।

हैदरावादका किला ३६ एकड़ भूमिपर नादुरुस्त शकलका है, इसकी दीवार १५ फीटसे ३० फीट तक ऊँची है; जिसके भीतरकी ओर मट्टी दी गई है और कोनोंके समीप वुर्ज बने हुए हैं। किले और शहरके मध्यमें खाई है, जिसपर एक पुल बना है, किलेके भीतरकी बस्ती अब नहीं है; इसमें मीर नासिरखाँका एक महल अब तक स्थित है; जिसमें हैदरावादमें आनेपर सिन्धके कमिश्नर और दूसरे बड़े अफसर लोग रहते हैं। किलेके फाटकके ऊपर एक कमरा है; जिससे प्रधान बाजार देख पड़ता है। शहरसे ६ मील पश्चिमोत्तर मियानी एक छोटा कसवा है।

कारचोबीके कामके लिये हैदरावाद प्रसिद्ध है; यहाँ रेशम, चाँदीसोनेका काम, मट्टीके बर्तन सुन्दर बनते हैं और तलवार और बन्दूक भी तय्यार होते हैं। जेलखानेमें कालीन और कई एक प्रकारके कपड़े बनाये जाते हैं।

हैदरावादकी आबहवा बहुत गर्म और अस्वास्थ्यकर है, परन्तु गर्मीकी ऋतुओंमें रातमें नदीसे ठंढी हवा आती है; यहाँ सालाना औसत वर्षा ६ इंच होती है।

हैदरावाद जिला—जिलेका क्षेत्रफल ९० ३० वर्गमील है और इसकी लम्बाई २१६ मील और चौड़ाई लगभग ४८ मील है। इसके उत्तर खैरपुरका राज्य; पूर्व 'थर और परकर' जिला, दक्षिण कोरी नदी इत्यादि और पश्चिम सिन्ध नदी और कराँची जिला है। सिन्ध नदीके आस पासकी भूमिमें जङ्गल लगा है और खेती होती है। जिलेका बड़ा हिस्सा मैदान है, इसमें कई एक नहर बनी हुई हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ११०५ बस्तियोंमें ७५४६२४ मनुष्य थे, अर्थात् ५९४४८५ मुसलमान, ८९११४ हिन्दू, ४२९४० सिक्ख, २७४६१ आदिनिवासी, ४२८ क्रस्तान, १४४ जैन, ३१ यहूदी और २१ पारसी। हिन्दुओंमें ७२७९७ लोहाना, २७३९

ब्राह्मण, ५७१ राजपूत थे। जिलेमें हैदराबाद बडा और मतारी (जन-संख्या सन् १८८१ में ५५४) छोटा कसबा है और छोटे बड़े ३३ मेले होते हैं; जो ३ दिनसे १५ दिनोंतक रहेत हैं।

इतिहास—हैदराबादके वर्तमान किलेकी जगहपर नेरनकोट कसबा था; जिसको सन् ई० की ८ वीं शताब्दीमें मुहम्मदकासिमसकीफीने जीता। सन् १७६८ ई०में गुलामशाह कल्होराने हैदराबादके वर्तमान नये शहरको बसाकर अपनी राजधानी बनाई। सन् १८४३ में अङ्गरेजोंने सियानीकी लड़ाईमें सिन्धके अमीरोंको परास्तकरके हैदराबाद और सिन्धके दूसरे जिलोंको अपने अधिकारमें कर लिया; तब तक हैदराबाद सिन्ध देशकी राजधानी था; बाद करांची राजधानी हुई।

अमरकोट।

हैदराबादसे लगभग ९० मील पूर्व अमरकोट तक तारकी सड़क है। सिन्ध प्रदेशमें 'थर और परखर' जिलेमें प्रधान कसबा और जिलेका सदरस्थान अमरकोट एक छोटा कसबा है; जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय २८२८ मनुष्य थे।

कसबेके समीप एक नहर है। अमरकोटका किला लगभग ५०० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है; जिसके भीतर अब सरकारी इमारतें स्थित हैं। कसबेमें पुलिस स्टेशन और कई एक धनी सौदागरोंके मकान हैं।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि सुम्रा जातिके प्रधान अमरने अमरकोटको बसाया। सन् १५४२ के अकतूबरमें, जब बाबर अफगानिस्तानको भागा जाता था; तब अमरकोटके किलेमें उसके पुत्र सुविख्यात अकबरका जन्म हुआ था। सन् १८१३ ई० में सिन्धके मीरोंने अमरकोटको जोधपुरके राजासे छीन लिया था; जिनसे सन् १८४३ में अङ्गरेजी सरकारने ले लिया।

थर और परखर जिला—जिलेका क्षेत्रफल १२७२९ वर्गमील है; इसके उत्तर खैरपुरका राज्य; पूर्व जैशलमेर, मलानी, जोधपुर और पालनपुरके राज्य; दक्षिण कच्छकारन और पश्चिम हैदराबाद जिला है। जिलेका सदर स्थान अमरकोट है। जिला दो भागोंमें विभक्त है, इनमें अनेक बालूदार पहाड़ियां हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेमें २०३३४४ मनुष्य थे; अर्थात् १०९१९४ मुसलमान, ४८४४० आदि निवासी, ४३७५५ हिन्दू, १०३८ जैन, ८९८ सिक्ख, १४ क्रस्तान और ५ यहूदी। हिन्दुओंमें ११११४ लोहाना, ९२९० राजपूत, ३२५५ ब्राह्मण थे।

ठट्टा

कोटरीसे ४९ मील दक्षिण-पश्चिम जंङ्गशाही रेलवेका स्टेशन है, जिससे १३ मील दक्षिण-पूर्व सिन्ध नदीके दहिने किनारेसे ७ मील पश्चिम करांची जिलेमें एक तालुकका प्रधान कसबा ठट्टा है, जिसको नगर ठट्टा भी कहते हैं। ठट्टासे पश्चिम करांची तक ५० मील की अच्छी सड़क गई है।

सन् १८८१ की जन-संख्याके समय ठट्टामें ८८३० मनुष्य थे, अर्थात् ४४७५ मुसलमान, ४०८१ हिन्दू, ७ क्रस्तान और २६७ दूसरे।

मकली पहाडीके पादमूलके समीप ठट्टा कसबा है; जिसमें अस्पताल, पोष्ट आफिस और एक मातहती जेलखाना बना हुआ है; कसबेके निकट पहाडी पर दीवानी और फौजदारी कचहरियोंके मकान और डिपुटी कलक्टरका बँगला स्थित है।

ठट्टा पूर्व समयमें एक बड़ शहर था, अब भी इसमें कपड़े और रेशमका बडा काम होता है, यहांकी जामामसजिद और किला हीन दशामें स्थित है। मसजिद ३१५ फीट लम्बी, १९० फीट चौड़ी और १०० गुम्बजवाली है। बड़े मेहराब और दो पत्थरों पर बड़े अक्षरोंका सुन्दर शिला लेख है। मसजिदके कामको सन् १६४४ ई० में शाहजहांने आरम्भ किया और औरङ्गजेबने पूरा किया था। लोग कहते हैं कि इसके बनानेमें ९ लाख रुपया खर्च पडा था; यह बहुत दिनोंसे खराब हो रही है। किलेका काम औरङ्गजेबके राज्यके समय सन् १६९९ ई० में आरम्भ हुआ था, परन्तु पूरा नहीं हुआ, अब वह उजड़ रहा है।

करांची।

जंगशाहीसे ५१ मील पश्चिम (कोटरीसे १०० मील, शेरशाह जंक्शनसे ५९७ मील और लाहौर ८१७ मील पश्चिम दक्षिण) भारतवर्षके पश्चिमी सीमापर करांची-छावनीका रेलवे स्टेशन और उसके २ मील और आगे शहरका स्टेशन है। बम्बई हातेके सिन्ध प्रदेशमें (२४ अंश, ५१ कला ९ विकला उत्तर अक्षांश और ६७ अंश ४ कला १५ विकला पूर्व देशान्तरमें) बलूचिस्तानकी पहाड़ियोंके दक्षिणी नेवके निकट सिन्ध नदीसे लगभग १० मील दूर कमिश्नरी तथा जिलेका सदर स्थान करांची एक शहर है। करांची भारतवर्षमें समुद्रका प्रसिद्ध बन्दरगाह है; जहांसे ६२८३ मील दूर इङ्गलेण्डका लन्दन शहर है। बन्दरगाहमें विलायतके जहाज और आग बोटोंका बहुत आमदरफ्त रहता है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय करांची शहर और फौजी छावनीमें १०५१९९ मनुष्य थे, अर्थात् ६२४५६ पुरुष और ४२७४३ स्त्रियां। इनसे ५२९५७ मुसलमान, ४४५०३ हिन्दू ५९८६ कृस्तान, १३७५ पारसी, १३८ यहूदी, ९९ जैन, ३२ एनिमिष्टिक और ११९ दूसरे थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें २७ वां बम्बई हातेमें ५ वां और सिन्ध प्रदेशमें पहला शहर है।

छावनीके रेलवे स्टेशनसे उत्तर छावनीके बारक एक मीलमें फैले हुए है, जिनमें १५०० यूरोपियन सेना रहसकती हैं। लाइनोंके पश्चिम आर. सी. चर्च और आम अस्पताल और लाइनके आगे रेलवे स्टेशनसे ¾ मील दूर एक अङ्गरेजी कोठीमें अङ्गरेजी नाचगृह, सभागृह, और करांचीकी आमलाइब्रेरी है। कोठोके आगे प्रति शनिवारको सन्ध्याके ६ बजेसे ८ बजे तक अङ्गरेजी बाजा बजता है। छावनीके पूर्व सिविल लाइन स्थित है।

सिन्धके कमिश्नरकी कोठीके पीछे १५० फीट ऊँचा एक गिर्जा है; जिसके पश्चिम तोपखाना और अनेक बारक बने हुए हैं।

करांचीमें टेलीग्राफ आफिसके समीप कारीगरीका कालिज है, जहां बाटिका, अजायबघर विक्टोरिया बाजार और घड़ीका बुर्ज देखनेमें आता है। बाजारके निकट एक अस्पताल और बाजारसे १ मील पश्चिम ४० एकड़ क्षेत्रफलमें गवर्नमेंट बाग स्थित है; जिसमें अङ्गरेजी बाजा बजता है और देखने योग्य उत्तम चिड़ियाखाना अर्थात् जन्तुशाला बनी हुई है।

बागसे दक्षिण लयारी नदीके किनारे किनारे एक सड़क मिसन चर्च और स्कूलको गई है। यहांसे देशी शहर आरम्भ होता है। मिशन चर्चके बाद दहिने सिविल अस्पताल, गवर्नमेंट हाईस्कूल, देशी लाइब्रेरी और खफीफा कचहरी और दक्षिण जेलखाना हैं।

एक सड़क गवर्नमेंट हौससे यूरोपियन महल्ला, जनरल पोष्ट आफिस और म्यूनिस्पल आफिस होकर समुद्र तक गई है; जिसके बाँये करांची शहरका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे थोड़ी दूरपर जुडिसियल कमिश्नर, जिला जज और शहरके मजिस्ट्रेटके आफिस और बोलटन बाजार, कष्टमहौस, यूरोपियन सौदागरोंके आफिस तथा आगबोट एजेंसी हैं।

छावनीसे ४ मील कियामारी बन्दरगाह है, जहां छावनी और देशी शहरसे रेलवे ट्रामवे, टेलीग्राफ और सड़क गई हैं। कियामारीके पास अति उत्तम बन्दरगाह आरम्भ होता है, जिसमें सबसे बड़े आगबोट आसकते हैं, वहां बहुत जहाज और आगबोट रहते हैं और घनी बस्तीका महल्ला है, जिसमें एक बड़ी सराय और एक नया मन्दिर बना हुआ है। बंदरगाहकी रक्षाके लिये ३ किले बने हैं; जिनमेंसे बन्दरगाहके निकटका किला सबसे बड़ाहै। बन्दरगाहके लाइटहाउसकी रोसनी १२० फीटकी ऊँचाईपर होती है, जो स्वच्छ स्वर्ग रहने पर १७ मील दूरसे देख पड़ती है।

करांचीमें रुई, सूत, कपड़ा, कच्चा, ऊन, ऊनी कपड़ा; कोयला, शराब, धातु, दियासलाई, चीनी, मसाला, तम्बाकू, रङ्ग, फल, कागज, शीशेकी चीजें, गल्ला, चमड़ा, दवा, सैनिक सामान, हथियार, इत्यादि वस्तु दूर दूरके देशोंसे आकर दूसरी जगहोंमें भेजे जाते हैं। करांची शहरके १६ मील पूर्वोत्तरसे नल द्वारा शहरमें पानी आता है। सन् १८८२ ई० में जल कल खुली थी। करांचीमें केवल औसत ७ इंच सालाना वर्षा होती है।

करांची जिला—इसके उत्तर शिकारपुर जिला; पूर्व सिन्ध नदी और हैदराबाद जिला, दक्षिण समुद्र और कोरी नदी और पश्चिम समुद्र और बिलोचिस्तानके खिलातकेखांका राज्यहै। जिलेका क्षेत्रफल १४११५ वर्गमील और इसकी सबसे अधिक लम्बाई उत्तरसे दक्षिणको लगभग २०० मील और सबसे अधिक चौड़ाई ११० मील है।

जिलेमें अनेक शाखोंसे सिन्ध नदी बहती है, जिसके वर्तमान समयका प्रधान मुहाना हजाम्रो शाखा है। सिन्ध नदी कैलास पर्वतके उत्तर ओरसे निकलकर तिब्बत, पञ्जाब और सिन्ध प्रदेशमें बहती हुई लगभग १८०० मील बहनेके उपरांत करांचीके आस पास अरबके समुद्रमें कई धारोंसे गिरती है। पश्चिमकी ओरसे अटक नदी और पूर्व ओरसे पञ्जाबकी पांचों नदियां आपसमें एक दूसरीसे मिलती हुई पंचनदके नामसे सिन्धमें आ मिली हैं। करांची शहरसे लगभग ७ मील उत्तर खजूर वृक्षके कुञ्जसे कई एक झरनोंका गर्म पानी गिरता है, जिसको देखनेके लिये बहुत लोग जाते हैं। जिलेके वनोंमें तेंदुआ, भेड़िया, भालू, जङ्गली भेड़, इत्यादि वनजन्तु होते हैं।

जिलेमें सन् १८८१ की जन-संख्याके समय ४७८६८८ मनुष्य थे; अर्थात् ३९००६७ मुसलमान, ६८९७५ हिन्दू, १०८१९ सिक्ख, ४६७४ क्रुस्तान, ३०५० आदि निवासी, ९६९ पारसी १०६ यहूदी, १६ ब्राह्म, ९ जैन और ३ बौद्ध। हिन्दुओंमें ४३८६९ लोहाना, ३८८३ ब्राह्मण, ३५९ राजपूत थे। इस जिलेमें करांची बड़ा कसबा और कोटरी, ठट्टा, सहवन इत्यादि छोटे कसबे हैं।

इतिहास—सन् १७२५ ई० से पहले करांची शहरकी जगहपर कोई कसवा वा वस्ती नहीं थी, परन्तु समुद्र और नदीके सङ्गमके निकट हाव नदीके दूसरे वगलपर खड़क नामक तिजारती कसवा था। पीछे वर्तमान करांचीके शिरके समीप कलाची नामक वन्दरगाह कायम हुआ, जिसका अपभ्रंश करांची है। सन् १८३८ ई० में करांची कसवे और इसकी शहरतलियोंमें तालपुर नरेशोंके आधीन १४००० मनुष्य वसते थे। सन् १७२५ से सन् १८४२ ई० तक करांची केवल एक किलेकी तवर पर थी। सन् १८४२ में अङ्गरेजोंने जव तालपुर नरेशोंसे करांचीको ले लिया। तवसे इसकी उन्नति वड़ी तेजीसे होने लगी। सन् १८६१ ई० में हैदरावाद जिलेका एक भाग करांची जिलेमें मिलाया गया।

सिन्धदेश—यह देश वम्बईके गवर्नरके आधीन वम्बई हातेके उत्तर है; इसके उत्तर वलूचिस्तान और पञ्जाव, पूर्व राजपूतानेमें जैशलमेर और जोधपुरके राज्य, दक्षिण कच्छ-कारन और अरवका समुद्र और पश्चिम खिलातके खां का राज्य है।

सिन्धदेशमें करांची, हैदरावाद, थर और परखर, शिकारपुर और अपरसिन्ध-फ्रण्टियर ५ जिले और खैरपुर एक देशी राज्य है, जिनमें अङ्गरेजी राज्यका क्षेत्रफल ४७७८९ वर्ग-मील और खैरपुरके देशी राज्यका ६१०९ वर्ग-मील है। देशका वर्तमान सदरस्थान करांची है; परन्तु पुरानी राजधानी हैदरावाद है। सिन्ध नदी देश होकर वहती हुई करांची जिलेमें अरवके समुद्रमें गिरती है। एक पहाड़ जो कई जगह समुद्रके जलसे ७००० फीटसे अधिक ऊँचा है, सिन्ध देशको वलूचिस्तानसे जुदा करता है। करांची जिलेके पश्चिमी भागमें कोहीस्तानका जङ्गली और चट्टानी देश है। शिकारपुर और लरखनाके पड़ोसमें देश वहुत उपजाऊ है, जहां एक लम्वा पतला टापू उत्तरसे दक्षिणको १०० मील फैलता है, जिसके एक वगलमें सिन्ध नदी और दूसरे वगलमें पश्चिमी नारा है। पूर्वी सीमाके समीप वहुत वालूदार पहाड़ियां हैं। सिन्धके वहुतेरे भागोंमें वड़े वडे देशोंमें सिंचाईके अभावसे खेती नहीं होती। सेहवन सव डिवीजनमें मञ्चा झील है, जो वाढ़के समयमें २० मील लम्बी होजाती है और १८० वर्ग मील भूमिको छिपाती है। खैरपुर राज्यके जङ्गलोंके सहित सिन्धप्रदेशमें केवल ६२५ वर्ग-मील जङ्गल है। पश्चिमी पहाड़ियोंमें गुरखर (जङ्गली गदहा) वनैले सुअर, अनेक प्रकारके हरिन इत्यादि वनजन्तु रहते हैं। सिन्धके घोड़े यद्यपि छोटे होते हैं, परन्तु वे तेज, दृढ़ और वड़े परिश्रमी हैं। अङ्गरेजी सरकार और ऊपरी सिन्धके वलूची लोग वच्चोंके लिये घोड़ियां पालते हैं।

सिन्ध प्रदेशके अङ्गरेजी राज्यमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय २८७१७७४ मनुष्य थे, अर्थात् १५६८५९० पुरुष और १३०३१८४ स्त्रियां। इनमें २३१५१४७ मुसलमान, ५६७५३९ हिन्दू, ७७९३५ जङ्गली जाति इत्यादि, ७७६४ क्रूस्तान, १५३४ पारसी, ९२३ जैन, ७२० सिक्ख, २१० यहूदी और २ वौद्ध थे, जिनमेंसे २९६३९ पुरुष और २४८९ स्त्रियां पढ़ती हुई और १०२९७० पुरुष और ४३६२ स्त्रियां पहलेकी पढ़ी हुई थीं। खैरपुरके राज्यमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय १२९१५३ मनुष्य थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सिन्ध प्रदेशके ६ कसवोंमें १००० से अधिक मनुष्य थे,—करांची जिलेके करांचीमें १०५१९९, हैदरावाद जिलेके हैदरावादमें ५८०४८,

शिकारपुर जिलेके शिकारपुरमें ४२००४ और सक्करमें २९३०२ अपरसिंध फ्रेंटियर जिलेके जेकबाबादमें १२३९६ और शिकारपुर जिलेके लरखनामें १२०१९ । इस प्रदेशमें उस समय सैकड़े पीछे सिन्धी भाषावाले ८३, बलोच ६ मारवाड़ी भाषावाले ४½ और अन्य भाषावाले ६ मनुष्य थे।

सिन्धकी संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत-(वनपर्व ८२ वां अध्याय) सिन्ध और समुद्रके संगममें जाकर समुद्रमें स्नान और पितर देवता तथा ऋषियोंका तर्पण करना चाहिये वहां स्नान करनेसे वरुण लोक और वहांके शंकुकर्णेश्वर महादेवकी पूजा करनेसे १० अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है।

(उद्योग पर्व १९ वां अध्याय) सिन्धु और सौवीरके राजा जयद्रथ (कुरुक्षेत्रकी लड़ाईके समय) एक अक्षौहिणी सेना लेकर राजा दुर्योधनकी ओर आये (द्रोणपर्व ११४ वां अध्याय) अर्जुनने रणभूमिमें जयद्रथको मार डाला।

(अनुशासन पर्व २५ वाँ अध्याय) महानद सिन्धुमें स्नान करनेसे स्वर्ग प्राप्त होता है।

सिन्धका इतिहास—सिन्धु नदीके नामसे इस देशका सिन्धु वा सिन्ध नाम पड़ा है। सन् १५९२ ई० में बादशाह अकबरने सिन्ध प्रदेशको अपने राज्यमें मिला लिया। सन् १७३९ में पारसका नादिरशाह आया; जिसने सिन्ध नदीके पश्चिमका सम्पूर्ण देश पारसके राज्यमें मिला लिया। नादिरशाहके मरनेपर सन् १७४८ से कन्धारके अहमदशाह दुर्रानी सिन्धसे कर लेने लगा, इसने नूरमहम्मदखाँको वहाँका हाकिम बनाया, परन्तु सन् १७५७ में प्रजाओंने उसको तख्तसे उतारकर उसके भाई गुलामशाहको बैठाया। गुलामशाहने सन् १७६८ में नीरनकोट कसबेके स्थानपर हैदराबाद बसाकर उसको अपनी राजधानी बनाया। सन् १७८३ में तालपुर खान्दानके नियत करनेवाले मीर फतहअलीखाँने कन्धारके शाह जवानसे सिन्धका अधिकार पाया। सन् १८३६ में तालपुर खान्दानकी हुकूमतका अन्त हुआ। सन् १८४३ में सिन्धके सम्पूर्ण जिले अङ्गरेजोंके अधिकारमें होगये।

हिंगुलाज।

बलूचिस्तानके दक्षिण करांचीसे पारसकी खाड़ी तक जाते हुए मेकरान तटमें हिंगुलाज है। यात्रीगण करांची शहरसे ७ मुकाममें चन्द्रकूप और १३ मुकाममें हिंगुलाज पहुँचते हैं। भोजनका सामान करांचीसे ऊँटपर ले जाना होता है। हिंगुलाजकी गुहामें देवीका स्थान है, जहाँ दिनमें भी दीप जलाया जाता है और एक वा दो पुजारी रहते हैं।

हिंगुलाजसे ७ कोस और आगे अलीलकुण्डनामक एक स्वाभाविक कुआँ है, जिसमें तैरनेवाला मनुष्य कूदकर फिर बाहर निकलता है। हिंगुलाज और अलीलकुण्डके बीचमें रामझरोखा नामक पत्थरका एक बैठक है। यात्री गण अलीलकुण्डसे हिंगुलाजहोकर फिर लौटते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—देवीभागवत-(७ वाँ स्कन्ध; ३८ वाँ अध्याय) हिंगुलाजमें महास्थान है।

ब्रह्मवैवर्तपुराण—(कृष्णजन्मखण्ड ७६ वाँ अध्याय) आश्विनशुक्ल ८ को हिंगुलाज तीर्थमें श्रीदुर्गाजीके दर्शन करनेसे फिर जन्म नहीं होता है, अर्थात् मोक्ष हो जाता है।

उन्नीसवां अध्याय।

(पञ्जाबमें) मुलतान, मॉटगोमरी, रायबन्दजंक्शन, कसूर, फीरोजपुर, सिरसा, हिसार, हाँसी, रुहतक, जीन्द, भिवानी, रेवारी और गुरगाँवा।

मुलतान।

शेरशाह जंक्शनसे १३ मील पूर्वोत्तर वहावलपुरसे ६५ मील उत्तर और लाहौर शहरसे २०७ मील पश्चिम-दक्षिण मुलतान शहरका रेलवे स्टेशन है। छावनीका स्टेशन उससे १ मील पहले मिलता है। पञ्जावमें चनाव नदीके वायें उसके ४ मील पूर्व आस पासके देशसे ५० फीट ऊँचे टीलेपर पञ्जावमें किस्मत और जिलेका सदरस्थान मुलतान एक शहर है। यह (३० अंश १२ कला उत्तर अक्षांश और ७१ अंश ३० कला ४५ विकला पूर्व देशान्तरमें) स्थित है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय मुलतान शहर और इसकी छावनीमें ७४५६२मनुष्य थे; अर्थात् ४१९५३ पुरुष और ३२६०९ स्त्रियाँ। इनमें ३९७६५ मुसलमान,३२१३०हिन्दू, १६७२ कृस्तान, ९६१ सिक्ख, २४ जैन, ९ पारसी और १ दूसरे थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ४२ वाँ और पञ्जावमें ६ ठा शहर है।

शहरके ३ वगलोंमें १० फीटसे २० फीटतक ऊँची दीवार है और दक्षिण वगल खुला हुआ है। शहरमें एक चौड़ा बाजार वसाहै। चौक हुसेनफाटकसे वलीमहम्मद फाटकतक चौथाई मील लम्बा है, जिससे ३ चौड़ी सड़कें शहरके कई एक फाटकों तक गई हैं। अन्य सड़कें तङ्ग हैं शहरमें आर्यसमाजकी एक शाखा है, जिसमें १०० से अधिक मेंवर वर्तमान हैं।

शहरके पूर्व मुलतानके हिन्दू गवर्नरोंके वागका मकान है, जिसमें अब तहसील, कचहरी होती है, उसके उत्तर मुलतानके दीवान सोनमलकी छतरी (अर्थात् समाधि मन्दिर) और यूरोपियन कवरगाह हैं। शहरके पश्चिम उत्तम सरकारी वाग लगा हुआ है और फौजी छावनी फैली हुई है।

सिविल स्टेशन खास करके शहरके उत्तर और पश्चिम है; जिसमें कचहरियां, कमिश्नरके आफिस, जेलखाना, गिर्जा, अस्पताल बङ्गला और म्युनिसिपल हाल इत्यादि इमारतें हैं।

किलेकी किलावन्दी सन् १८५४ ई० में तोड़ दी गई, तिसपर भी किला मजबूत है; अब उसमें एक यूरोपियन सेना रहती है। पश्चिमके फाटकसे किलेमें प्रवेश करनेपर वाँई ओर वहावलहकके पोते रुकनुद्दीनका मकवरा देख पड़ता है; जिसके ऊपर गुम्बज है और भीतर सीसमकी लकड़ीके सहतीर लगे हैं। मकवरेकी ऊँचाई १०० फीटसे अधिक नहीं है; परन्तु ऊँची भूमिपर खड़े रहनेके कारण चारोंओर दूरसे देख पड़ता है। सन् १३४०-१३५० ई० में बादशाह तुगलकने अपने लिये उस मकवरेको बनवाया था; परन्तु उसके

पुत्र महम्मदतुगलकने रुकनुद्दीनको दे दिया, इसके अलावे किलेमें २ अङ्गरेजी अफसरोंकी यादगारमें जो सन् १८४८ की बगावतमें मारे गये थे; ७० फीट ऊँचा एक लाट अर्थात् बुर्ज है। किलेके पश्चिमी फाटकके निकट सूर्यका पुराना बड़ा मन्दिर था, जिसको औरंगजेबने तोड़वा करके उसके स्थानपर जामामसजिद बनवाई; जिसको सिक्खोंने अपना मेगजीन बनवाया था। किलेके प्रह्लादपुरीमें जिसका भाग सन् १८४८–१८४९ इ० के मुलतानके आक्रमणके समय बारूदसे उड़ा दिया गया; नृसिंहजीके पुराने मन्दिरकी निशानियाँ हैं।

किलेसे १¼ मील पूर्व शाहजहाँके समयका बना हुआ एक फकीरका ६२ फीट ऊँचा गुम्बजदार मकबरा है; जिससे लगे हुए चारों ओर सात सात मेहराबियोंके बरामदे बने हुए हैं।

मुलतानके एक बड़े मन्दिरमें हिरण्यकशिपुके उदर विदारते हुए नृसिंहजी स्थित हैं। यहां नृसिंहचौदस अर्थात् वैशाख सुदी १४ को दर्शनका मेला होता है। शहरसे ४ मील दूर सूर्यकुण्ड है; जहाँ भादों सुदी ६ और माघ सुदी ७ को स्नानका मेला लगता है; इनके-अलावे मुलतानमें कार्तिक सुदी ८ को गोचारणका सुन्दर मेला होताहै।

मुलतानमें उत्तम दरजेकी सौदागरी होती है और पञ्जाबके सम्पूर्ण शहरोंके बड़े कोठीवालोंकी कोठियां नियत हैं। यहाँ अनेक प्रकारकी पैदावार, दस्तकारीकी चीज और देशके खर्चकी वस्तु दूसरे देशोंसे आती हैं और चीनी, नील और रुई यहाँसे दूसरे देशोंमें भेजी जाती हैं। रुई, गेहूँ, ऊन, नील और तेलके बीज चारों तरफके देशसे मुलतानमें जमा करके दक्षिण भेजे जाते हैं, जहाँसे व्यापारी लोग मेवा, कच्चा रेशम, मसाला इत्यादि चीज लाकरके पूर्व भेजते हैं। मुलतानमें रेशमी और सूतके कपड़े, कालीन और देशी जूते बहुत बनते हैं और यहाँके मट्टीके बर्तन प्रसिद्ध हैं।

मुलतानमें बड़ी गरमी पड़ती है और सालाना औसत वर्षा ७ इंचसे कुछ अधिक होती है।

मुलतान जिला—जिलेका क्षेत्रफल ५८८० वर्गमील है। इसके उत्तर झङ्ग जिला, पूर्व मांटगोमरी जिला, दक्षिण सतलज नदी, बाद बहावलपुर राज्य और पश्चिम चनाबनदी बाद मुजफ्फरगढ़ जिला है। जिलेके दक्षिण-पश्चिम सीमाके निकट सतलज और चनाब नदीका संगम है। जिलेके उत्तरीय कोनेको काटती हुई रा[illegible] नदी बहती है। तीनों नदियोंके आसपासकी भूमि जो ३ मीलसे २० मील तक चौड़ी है, जोती जाती है, परन्तु भीतरकी भूमि पञ्जाबकी ऊँची भूमिके समान वीरानहै। बहुतेरी नहर चारोंओरके देशमें सतलजसे पानी पहुँचाती हैं। जङ्गली जानवरोंमें भेड़िया बहुत हैं।

जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ६३०८९० और सन् १८८१ में५५१९६४ मनुष्य थे; अर्थात् ४३५९०१ मुसलमान, ११२००१ हिन्दू, २०८५ सिक्ख, १८६१ क्रुस्तान, ६३ पारसी, ४७ जैन और ६ दूसरे। इनमें १०२९५२ जाट और ६९६२७ राजपूत जो प्रायः सब मुसलमान हैं; ७६८४२ अरोरा, ९७९८ खत्री और ४१८३ ब्राह्मण, जो प्रायः सब हिन्दू हैं; थे। इनके अतिरिक्त चूहरा, अराइन, कुम्भार, तरखान इत्यादि जातियोंमें हिन्दू और मुसलमान दोनों हैं।

मुलतान जिलेमें मुलतानके आतीरिक्त कोई बड़ा कसबा नहीं है। शुजावाद, कहरोर, जलालपुर, तलम्बा और दूम्बापुर छोटे म्युनिसिपल कसबे हैं।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि पूर्व कालमें मुलतान शहरको महर्षि कश्यपने बसाथा था और कश्यपपुर करके वह प्रसिद्ध था। उसके पश्चात् कश्यपके पुत्र हिरण्यकशिपु और पौत्र प्रह्लादकी वह राजधानी हुआ। संवत् १८७४ (सन् १८१७ ई०) का बना हुआ 'तुलसी शब्दार्थ प्रकाश' नामक पद्यका भाषा ग्रन्थ है; जिसके द्वितीय भेदमें लिखा है कि नृसिंह भगवानका अवतार मुलतानमें हुआ था।

यूनानका सिकन्दर सन् ई० से ३२७ वर्ष पहले हिन्दुस्तानमें आया और अटक शहरके पास सिन्ध नदीको लांघकर झेलमकी ओर बढ़ा; उसने झेलमके किनारेपर राजा पोरसको परास्त करनेके पश्चात् राजा माली की राजधानी मुलतानपर आक्रमण किया। मालीकी कौमसे सिकन्दरकी बड़ी लड़ाई हुई, जब शहरके लेनेके समय सिकन्दर घायल हो गया; तब उसके सैनिकोंने क्रोधमें आकर शहरके सम्पूर्ण निवासियोंको तलवारसे काट डाला; उसके पश्चात् मुलतानका देश क्रमसे मगधके गुप्तवंशी और ग्रीसवालोंके आधीन हुआ था सन् ६४१ ई० में चीनके हुएंत्संगने मुलतान शहरको देखा और सूर्यकी सुवर्णकी एक प्रतिमा पाई; पीछे महम्मद कासिमने शहर मुलतानको जीता था। सन् १००५ में महमूद गजनवीने मुलतानको ले लिया, पाछे वह मुगल राज्यका एक हिस्सा बना। सन् १७३८—१७३९ में महम्मद्शाहने एक अफगानको मुलतानका नवाब बनाया। सन् १७७९ में अफगान मुजफ्फरखाँ मुलतानका गवर्नर बना। सन् १८१८ में लाहौरके महाराज रणजीतसिंहकी सेनाओंने मुजफ्फरखाँ और उसके ५ पुत्रोंको मारकर मुलतानको ले लिया।

सन् १८२९ में सिक्खोंने सावनमलको दूसरे जिलोंके साथ मुलतान जिलेका गवर्नर बनाया। महाराज रणजीतसिंहकी मृत्यु होनेपर काश्मीरके गवर्नरसे दीवान सोनमलकी लड़ाई हुई, सन् १८४४ की तारीख ११ सितंबरको सोनमल मारा गया, तब उसका पुत्र मूलराज गवर्नर बना। सन् १८४९ ई० की २ जनवरीको अङ्गरेजी सरकारने सिक्खोंसे मुलतान लेलिया। मूलराज बगावतके अपराधसे कालापानी भेजा गया, जो रास्तेमें मृत्युको प्राप्त हुआ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—मत्स्यपुराण—(१६० वाँ अध्याय) सतयुगमें हिरण्यकशिपु दैत्य महा बलवान हुआ, जब उसके घोर तप करनेपर ब्रह्माजी प्रकट हुए, तब उसने ऐसा वरदान माँगा कि मुझको देवता, असुर, गन्धर्व, यक्ष उरग, राक्षस, मनुष्य और पिशाच कोई नहीं मार सके, ऋषियोंके शाप भी मुझको न लगे, शस्त्रसे मैं नहीं मरूँ और दिन रातमें भी मेरी मृत्यु न होवे। ऐसे वर प्राप्तकर उसने देवताओंको जीतकर तीनों लोकको अपने वशमें कर लिया और जगत् तथा मुनियोंको दुःख देने लगा; तब देवगण और महर्षिगण मिलकर विष्णु भगवानके शरणमें गये। भगवानने हिरण्यकशिपुके वधकी प्रतिज्ञा करके ॐकारको अपना सहायक बनाया और आधे मनुष्य और आधे सिंहका रूप धारण करके हिरण्यकशिपुकी सभामें प्रवेश किया।

(१६१ वाँ अध्याय) सम्पूर्ण दानव नृसिंहजीका विचित्र रूप देखकर विस्मयको प्राप्त हुए। प्रह्लादने अपने पिता हिरण्यकशिपुसे कहा कि महाराज! हमने नृसिंहका शरीर न कभी देखा न सुना; मुझको यह रूप दैत्योंको नाश करनेवाला देख पड़ता है; इसके शरीरमें

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड स्थित है। हिरण्यकशिपुने दानवोंसे कहा कि इस अपूर्व सिंहको पकड़ो; परन्तु पकड़े जानेमें सन्देह हो तो मारडालो, जब दानव नृसिंहजीको त्रास देने लगे; तब उन्होंने उस सभाको तोड़ फोड़ कर नष्ट कर दिया, इसके पश्चात् हिरण्यकशिपुने नृसिंहजी पर अनेक शस्त्र छोड़े। (१६२ वां अध्याय) दानवगण भी उन पर प्रहार करने लगे; अन्तमें जब हिरण्यकशिपु गदा और त्रिशूल लेकर नृसिंहजीके सम्मुख दौड़ा, नृसिंहजीने ॐकारकी सहायतासे अपने नखोंसे उसके शरीरको फाड़कर उसको मारडाला। (श्रीमद्भागवतके सप्तम स्कंधके ८ वें अध्यायसे १० वें अध्याय तक नृसिंहजी और प्रह्लादकी कथा विस्तारसे है)।

मांटगोमरी।

मुलतानसे १०४ मील (शेरशाह जंक्शनसे ११७ मील) पूर्व कुछ उत्तर और लाहौरसे १०१ मील दक्षिण-पश्चिम मांटगोमरीका रेलवे स्टेशन है। पञ्जावके मुलतान विभागमें जिलेका सदरस्थान मांटगोमरी एक बहुत छोटा कसवा है, जो पहले गोगेरा करके पसिद्ध था, लेकिन सन् १८६५ में पञ्जावके उस समयके लेफ्टिनेंट गवर्नर सर आर मांटगोमरीके नामके अनुसार उसका यह नाम पडा।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय मांटगोमरीमें ३१७८ मनुष्य थे, अर्थात् १९४३ मुसलमान, ९३६ हिन्दू ,२६५ सिक्ख और ३४ दूसरे।

मांटगोमरीमें सरकारी कचहरियां, जेलखाना, अस्पताल, स्कूल, सराय, गिर्जा और पुलिस स्टेशन मैदानमें बने हैं। कसबेसे बाहर पड़ावकी जगह है।

मांटगोमरी जिला—जिलेका क्षेत्रफल ५५७४ वर्गमील है। इसके पूर्वोत्तर लाहौर जिला, दक्षिण-पूर्व सतलज नदी, जो बहावलपुर राज्यसे इसको अलग करती है; दक्षिण-पश्चिम मुलतान जिला और पश्चिमोत्तर झंग जिला है। जिलेमें सतलज और रावी नदी बहती है। जंगलोंमें भेड़िया और वनैले विलार बहुत हैं।

जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ४९८६६५ और सन् १८८१ में ४२६५२९ मनुष्य थे अर्थात् ३३०४९५ मुसलमान, ८३९७४ हिन्दू ११९६४ सिक्ख ९३ कृस्तान, २ पारसी और १ जैन। मुसलमानोंमें ५५४७६ राजपूत, ४१३८१ जाट और हिन्दू तथा सिक्खोंमें ५११५६ अरोरा, ४४९१ खत्री, ३११६ ब्राह्मण, २४२५ राजपूत और जाट थे।

जिलेमें कमालिया सबसे बड़ा कसबा है जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ७५९४ मनुष्य थे और मांटगोमरी कसबेसे ३० मील दक्षिण गारा नदीके निकट पाकपट्टन एक पुराना कसबा है, जिसमें ५५९३ मनुष्य थे, वहां चिस्ती खान्दानके फरीदउद्दीनका मकबरा है; जहां मुहर्रमके समय बहुत मुसलमान यात्री जाते हैं।

इतिहास—सन् १८४९ ई० में अङ्गरेजी सरकारने इस जिलेको सिक्खोंसे लेलिया। पहले जिलेका सदरस्थान मांटगोमरीसे १६ मील उत्तर गोगेरामें था, परन्तु रेलवे खुलने पर सन् १६६४ में रेलवेके निकट सिविल स्टेशनके लिये शाहीवाल गांव चुना गया, जो दूसरे सालमें उस समयके पञ्जावके लेफ्टिनेंट गवर्नर सर आर मांटगोमरीके नामसे उसका नाम मांटगोमरी होगया।

रायबन्द जंक्शन।

रायवन्द जंक्शनसे रेलवे लाइन ३ ओर गई है।

(१) रायवन्दसे दक्षिण-पूर्व फीरोजपुर तक 'नर्थवेस्टर्न रेलवे' उससे आगे 'वम्बे वरोधा और सेन्ट्रल इंडियन रेलवे' की रिवाड़ी फीरोजपुर शाखा है; जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ पाई लगता है।

मील-प्रसिद्ध-स्टेशन—

१८ कसूर।
३५ फीरोजपुर।
५५ फरीदकोट।
६३ कोटकपुरा जंक्शन।
८९ भटिंडा जंक्शन।
१३६ सिरसा।
१८७ हिसार।
२०२ हांसी।
२२४ भिवानी।
२४१ चर्खी दादरी।
२७६ रेवारी जंक्शन।

कोटकपुरा जंक्शनसे पश्चिम ५० मील फजिलका; भटिंडा जंक्शनसे पूर्व ४० मील वर्नाला १६ मील नाभा, ९२ मील पटियाला और १०८ मील राजपुर जंक्शन; और रेवारी जंक्शनसे पूर्वोत्तर ५० मील दिल्ली और दक्षिण ४६ अलवर और ८३ मील बा[illegible] जंक्शन है।

(२) रायवंदसे पूर्वोत्तर 'नर्थवेष्टर्न रेलवे है, जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २½ पाई लगता है। मील-प्रसिद्ध स्टेशन २४ लाहौर।

(३) रायवंदसे दक्षिण-पश्चिम 'नर्थवेष्टर्न रेलवे'।

मील-प्रसिद्ध स्टेशन।

७९ मांटगोमरी।
१८३ मुलतान शहर।
१८४ मुलतान छावनी।
१९६ शेरशाह जंक्शन।
२४८ वहावलपुर।
२५५ समस्ता।
२७७ अहमदपुर।
३३१ खांपुर।
३९३ रेती।
४६३ रोड़ी।
४६६ सक्कर।
४८१ रूक जंक्शन।
५०३ लरखना।
५३४ राधन।
५९७ सेहवन।
६०५ लकी।
६९३ कोटरी।
७०७ हैदराबाद।
७४२ जंगशाही।
७९३ करांची छावनी।
७९५ करांची शहर।

शेरशाह जंक्शनसे पश्चिमोत्तर २६ मील महमूदकोट जंक्शन, १२४ मील दरियाखां जंक्शन और १७६ मील कुण्डियान जंक्शन और रूक जंक्शनसे उत्तर कुछ पश्चिम ११ मील शिकारपुर, ३७ मील जेकबाबाद और २३१ मील क्वेटा है।

कसूर।

रायबन्द जंक्शनसे ९८ मील दक्षिण-पूर्व (लाहौरसे ४३ मील) कसूरका रेलवे स्टेशन है। पञ्जावके लाहौर जिलेमें व्यासके पुराने भागरके बाँये एक तहसीलका सदर स्थान कसूर कसवा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कसूरमें २०२९० मनुष्य थे; अर्थात् १५४०६ मुसलमान, ४४१३ हिन्दू, ३८२ सिक्ख और ८९ जैन। १२ गाँव मिलकर कसूरकी म्यूनिसिपल्टी वनी है; जिनमेंसे ४ गांव मिल करके प्रधान कसवा हुआ है। शेष ८ गाँव आस पासमें वसे हैं।

कसूरमें तहसील, असिस्टन्ट कमिश्नरकी कचहरी, स्कूल, अस्पताल, डाक वङ्गला इत्यादि सरकारी मकान हैं। देशी पैदावारकी सौदागरी होती है और घोड़ेकी साज वननके लिये कसूर प्रसिद्ध है।

इतिहास—ऐसी कहावत है कि श्रीरामचन्द्रके पुत्र लवने लाहौरको और कुशने कसूरको वसाया। मुसलमानोंके आक्रमणसे प्रथम एक हिन्दू राजा कसूरके स्थानपर राज्य करता था। बाबर या अकवरके राज्यके समय पठानोंने कसूरमें प्रवेश किया। सन् १८१७ में महाराज रणजीतसिंहने पठानोंको निकालकर कसूरको लाहौर जिलेमें मिला लिया; जिसको अङ्गरेजी गवर्नमेंटने रणजीतसिंहके वंशधरोंसे लेलिया।

फीरोजपुर।

कसूरसे १७ मील (रायबन्द जंक्शनसे ३५ मील) दक्षिण-पूर्व फीरोजपुरका रेलवे स्टेशन है। पञ्जावके लाहौर विभागमें सतलज नदीके ३ मील वाँये अर्थात् दक्षिण जिलेका सदर स्थान फीरोजपुर एक कसवा है। सतलज नदीपर रेलवे पुल वना हुआ है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय फीरोजपुर कसवे और इसकी छावनीमें ५०४३७ मनुष्य थे, अर्थात् ३०६२२ पुरुष और १९८१५ स्त्रियां। इनमें ३३०४७ हिन्दू, २२०१८ मुसलमान, ३३८७ सिक्ख, १५६१ कृस्तान, ४०७ जैन, १५ पारसी और २ दूसरे थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारत वर्षमें ७६ वां और पञ्जावके अङ्गरेजी राज्यमें १० वां शहर है

कसवेकी प्रधान सड़कें चौड़ी और पक्की हैं। सर्कुलर रोडके निकट फीरोजपुरके धनियोंके अनेक वाग लगे हुए हैं। सरकारी मकानोंमें जिलेको कचहरियां, पुलिस स्टेशन, जेलखाना, टाउनहाल, अस्पताल, स्कूल, मेमोरियल चर्च इत्यादि हैं। किला, जिसमें पञ्जावका प्रधान तोपखाना है। सन् १८५८ ई० में सुधारा गया और सन् १८८७ में अच्छी तरहसे मजवूत किया गया। कसवेमें गल्ले आदि खेतीकी पैदावारकी तिजारत होतीहै।

कसबेसे २ मील दक्षिण फौजी छावनी है, जिसमें सन् १८८१ में १८७०० मनुष्य थे, इसमें अङ्गरेजी पैदलकी एक रेजीमेंट, देशी पैदलकी एक रेजीमेंट और आरटिलरीकी २ वैटरी रहती हैं।

फीरोजपुर जिला—जिलेका क्षेत्रफल २७५२ वर्गमील है, उसके पूर्वोत्तर सतलज नदी, जो जलन्धर जिलेसे उसको अलग करती है; पश्चिमोत्तर सतलज नदी, जो लाहौर जिलेसे

उसको जुदा करती है; पूर्व और दक्षिण-पूर्व लुधियाना जिला और फरीदकोट, पटियाला और नाभाके राज्य और दक्षिण-पश्चिम सिरसा जिला है।

जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ८८६३४९ और सन् १८८१ में ६५०५१९ मनुष्य थे, अर्थात् ३१०५५२ मुसलमान, १६८८१६ सिक्ख, १६८६४५ हिन्दू, १६८६ कृस्तान, ८११ जैन और ९ पारसी। हिन्दू और सिक्खोंमें १६९९४१ जाट१३३०६ अरोरा, १२०७६ ब्राह्मण, ११३३५ बनिया, ९१७४ खत्री थे। मुसलमानोंमें ३५९४३ राजपूत, ३६६३५ जाट ११९७५ गूजर भी थे; इस जिलेमें फीरोजपुर कसबेके अलावे धर्मकोट, मुक्तसर, जीरा और मक्खू छोटे म्युनिसिपल कसबे हैं।

इतिहास—कहावतके अनुसार दिल्लीके बादशाह फीरोजशाहके समय, जिसका राज्य सन् १३५१ से १३८७ ई० तक था, फीरोजपुर बसा। सन् १८३५ ई० में फीरोजपुर एक उजाड़ गांव था। सन् १८४१ में उसमें लगभग ५००० निवासी थे। जिलेपर अङ्गरेजी अधिकार होनेके समय फीरोजपुर घटती पर था, परन्तु उसके पश्चात् उसकी बढ़ती तेजीसे होने लगी।

सन् १८४५ ई० के १६ दिसम्बरको सिक्खोंने सतलज पार होकर जिले पर हमला किया था, जो अन्तमें परास्त हुए। फीरोजपुर जिलेके फीरोजपुर मुदकी और सुब्रांवमें अङ्गरेजों और सिक्खोंमें भारी लड़ाई हुई थी। सन् १८५७ के बलवेके समय फीरोजपुरमें सिपाहियोंकी २ रेजीमेंट थीं; जिनमेंसे एकने बागी होकर छावनीको लूटा और बरबाद किया।

सिरसा।

फीरोजपुरसे १०१ मील (रायबन्द जंक्शनसे १३६ मील) दक्षिण-पूर्व सिरसाका रेलवे स्टेशन है। पञ्जाबके हिसार विभागमें जिलेका सदर स्थान सिरसा एक कसबा है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय सिरसामें १६४१५ मनुष्य थे; अर्थात् ११२२८ हिन्दू, ४६६७ मुसलमान, ३०६ जैन, १५१ कृस्तान ५७ सिक्ख और ६ पारसी।

सिरसाका नया कसबा, जो सन् १८३७ ई० में बसा; ८ फीट ऊँची दीवारके भीतर चौकोना है; जिसमें एक दूसरेको काटती हुई चौड़ी सड़कें निकली हैं। कोई सड़क तंग वा टेढ़ी नहीं है। सिरसामें जिलेकी कचहरियोंके मकान, पुलिस स्टेशन, गिर्जा, तहसील, जेलखाना, सराय, बँगला, खैराती अस्पताल और स्कूल बने हुए हैं, हर किस्मके गल्ले पञ्जाबके अनेक शहरोंसे लाकर दूसरे देशोंमें भेजे जाते हैं और मोटे कपड़े और मट्टीके बर्तन तैयार होते हैं। आश्विन मासमें वहां मवेसीका मेला होता है, जिसमें लगभग१५०००० मवेसी इकट्ठी होती हैं।

नये सिविल स्टेशनके दक्षिण-पश्चिमके कोनेके समीप सिरसाके पुराने कसबेकी निशानियां हैं; जिससे असबाब उजाड़कर नये कसबेके मकानोंमें लगाये गये हैं।

सिरसा जिला—जिलेका क्षेत्रफल ३००४ वर्ग मील है इसके पूर्वोत्तर फीरोजपुर जिला और पटियालका राज्य, पश्चिम सतलज नदी, दक्षिण-पश्चिम बहावलपुर और बीकानेरके राज्य और पूर्व हिसार जिला है। जिलेमें सतलज और गागरा नदियोंके किनारोंके देशमें सुन्दर फसिल होती है और उत्तम चराहगाह है।

गागरा, जो महाभारत और पुराणोंमें दृषद्वतीके नामसे प्रसिद्ध है; हिमालय पर्वतसे निकलती है। सरस्वती नदी पटियालक राज्यमें आनेपर गागरामें मिल गई है। गागरा रोरीके दक्षिण सिरसा जिलेमें प्रवेश करती है; सिरसा कसबेके ४ मील दक्षिण होकर जाती है और अपने निकाससे लगभग २९० मील बहनेके उपरान्त बीकानेरके वीरानमें अदृश्य हो गई है।

जिलेमें सन् १८८१ की जन-संख्याके समय २५३२७५ मनुष्य थे; अर्थात् १३०५८३ हिन्दू ९३२८९ मुसलमान, २८३०३ सिक्ख, १०८४ जैन और १७ कृस्तान। जाट और राजपूतमें हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख तीनों मजहबके लोग हैं; परन्तु बनिया, ब्राह्मण और अरोरामें कोई मुसलमान नहीं है।

सिरसा जिलामें सिरसा कसबेके अलावे फजिलका, रानिया, एलेनाबाद और रोरी छोटे म्यूनिसिपल कसबे हैं

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि सन् ईस्वीकी छठी शताब्दीमें राजा सिरसने सिरसाको बसाया और वहाँ किला बनवाया। वर्तमान सिविल स्टेशनके आसपास पुराने कसबेके अनेक उजड़े हुए टीले देखनेमें आते हैं। सन् १७२६ के अकालसे सिरसा कसबा उजड़ गयाथा। सन् १८०३ से १८१८ ई० तक यह जिले अङ्गरेजी गवर्नमेंटके आधीन भट्टी लोगोंके अधिकारमें था। सन् १८२० में यह हिसार जिलेका एक भाग बना। सन् १८३७ में जब इस जिलेमें अङ्गरेजी गवर्नमेन्टका पूरा अधिकार होगया, तब गागराकी घाटी सहित देश एक जिला बनाकर पश्चिमोत्तर देशके आधीनकर दिया गयाथा, परन्तु सन् १८५८ में पञ्जाबके आधीन बनाया गया।

हिसार।

सिरसासे ५१ मील (रायवन्द जंक्शनसे १८७ मील) दक्षिण, पूर्व हिसारका रेलवे स्टेशन है। पञ्जाबमें फीरोजशाहकी बनवाई हुई पश्चिमीयमुना नहरके निकट (दिल्लीसे १०२ मील दूर) किस्मत और जिलेका सदर स्थान हिसार एक कसबा है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय हिसारमें १६८५४ मनुष्य थे; अर्थात् १००३२ हिन्दू ६३२८ मुसलमान, ३९१ जैन, ६० कृस्तान, ३३ सिक्ख और १० पारसी।

हिसारकी प्रधान सड़कें चौड़ी हैं। कसबेके दक्षिण नहरके उसपार सिविल स्टेशन और कसबेके समीप एक यूरोपियन सुपरिंटेन्डेन्टके आधीन चराईके लिये २३२८७ एकड़की मिलकियत है, जिसमें गवर्नमेन्टकी बच्चे देनेवाली बहुत मवेसियाँ रक्खी जाती हैं।

हिसारमें प्रतिवर्ष चैत्रमें मवेसियोंका मेला और भादोंवदी ९ को गूंगानवमीका मेला होता है। लोग कहते हैं कि दिल्लीके पृथ्वीराजके मित्र गूंगानामक चौहान राजपूत था, जो गरा नदीके किनारेपर मुसलमानोंके संग्राममें अपन ४५ पुत्र और ६० भतीजोंके सहित मारा गया था। गूँगा नवमीके दिन स्त्रीगण हिसारमें गूँगाकी मृत्युके स्थानको पूआ आदि सामग्रीसे पूजती हैं।

हिसार जिला—जिलेका क्षेत्रफल ३५४० वर्गमील है। इसके उत्तर और पश्चिमोत्तर पटियालाराज्य और सिरसा जिलेका छोटा भाग, पूर्व और दक्षिण जीन्दराज्य और रुहतक जिला और पश्चिम बीकाराज्यके चराहगाहकी भूमि है।

यह जिला बीकानेरके बड़ा बीरानके पूर्वी सीमापर है, इसमें प्रायः बालूदार मैदान देख पड़ते हैं, जिनमें किसी किसी स्थानमें झाड़ीके जङ्गल और दक्षिण ओर ऊँची नीची बालूदार पहाड़ियाँ हैं। गागरा नदी दो शाखा होकर पूर्वोत्तरसे जिलेमें प्रवेश करके जिलेके पश्चिमोत्तर सिरसा जिलेमें जाती है, फीरोजशाह तुगलककी नहर हिसार जिलेके लगभग ५० गाँवोंको पटाती हुई पूर्वसे पश्चिम जाती है।

जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ७७६०६६ और सन् १८८१ में ५०४१८३ मनुष्य थे, अर्थात् ३८४३६६ हिन्दू, ११३५१७ मुसलमान, ३१४३ सिक्ख, ३१०२ जैन और ५५ क्रस्तान। जिलेमें वनिया, धानुक, माली, अहीर इत्यादि जाति सबके सब हिन्दू हैं; पर जाट, राजपूत, ब्राह्मण, गूजर, चुहरा, तरखान, कुम्भार इत्यादि जातियोंमें बहुतेरे हिन्दू और बहुतेरे मुसलमान हैं। सन् १८९१ में इस जिलेके भिवानी कसबेमें ३५४८७, हिसारमें १६८५४, हांसीमें १५१९० मनुष्य थे। हिसार कमिश्नरी और जिलेका सदरस्थात है; पर भिवानी इस जिलेमें सबसे बड़ा और प्रधान तिजारती कसबा है।

इतिहास—सन् १३५४ ई० में फीरोजशाह तुगलकने हिसारको बसाया और इसमें पानी पहुँचानेके लिये नहर बनवाया; इसके रहनेका यह प्रियस्थान था। सन् १८१० में यह जिले अङ्गरेजी गवर्नमेंटके आधीन हुआ। सन् १८५७ के बलवेके समय हाँसीके समान हिसारमें भी देशी फौज बागी हुई थी, परन्तु दिल्ली ले लेनेसे पहलेही पटियाले और बीकानेर की सहायतासे अङ्गरेजी सरकारने उसको परास्त किया। बलवेके पीछे हिसार जिला पश्चिमोत्तर देशसे पञ्जाबमें कर दिया गया।

हांसी।

हिसारसे १५ मील (रायवन्द जंक्शनसे २०२ मील) दक्षिण-पूर्व हाँसीका रेलवे स्टेशन है। पश्चिमी यमुना-नहरके समीप हिसार जिलेमें तहसीलका सदरस्थान हाँसी एक कसबा है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय हांसीमें १५१९० मनुष्य थे; अर्थात् ७८४८ हिन्दू, ६६०० मुसलमान, ६५१ जैन, ८७ सिक्ख और ४ क्रस्तान।

हाँसीके चारों ओर ईटोंकी ऊँची दीवार बनी हुई है। नहरके किनारोंपर सुन्दर वृक्ष लगे हैं; एक उजड़ा हुआ बड़ा किला कसबेसे देख पड़ता है। कसबेकी सड़कें चौडी हैं, इसमें तहसील, पुलिस स्टेशन, सराय और स्कूल बने हुए हैं।

हांसीसे २३ मील दक्षिण-पश्चिम टोसनके समीप एक तालाबके निकट चट्टानमें काटे हुए कई एक पुराने लेख हैं, वहां वर्षमें एक बार मेला होता है, जिसमें दूर दूरसे बहुत यात्री आते हैं।

इतिहास—ऐसी कहावत है कि दिल्लीके तोमर राजपूत राजा अनंगपालने हांसीको बसाया था। यह बहुत दिनोंतक हरियाना प्रदेशकी राजधानी थी; जो सन् १७८३ ई० के अकालमें उजाड़ होकर बहुतेरे वर्षों तक उजड़ी हुई पड़ी रही, परन्तु सन् १७९५ में जार्जथामसने हरियानेके बड़े भागपर अधिकार करके हांसीमें अपना सदरस्थान बनाया, तबसे कसबेकी फिर उन्नति होने लगी। सन् १८०२ में अङ्गरेजी अधिकार होनेपर यहां फौजी छावनी

बनी। सन् १८५७ के बलबेके समय हांसीकी फौज बागी हो गई; बलवाइयोंने यूरोपियनोंको मारडाला और देशको लूटा। बलवे शान्त होनेपर हांसीकी छावनी छोड़ दी गई।

रुहतक।

हांसीसे लगभग ५० मील दक्षिण-पूर्व भिवानीसे ३५ मील पूर्वोत्तर और दिल्लीसे ४२ मील पश्चिमोत्तर दिल्लीसे सिहार जाने वाली सड़कपर पश्चिमी यमुना-नहरके निकट पञ्जाबके हिसार विभागमें जिलेका सदरस्थान रुहतक एक कसवा है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय रुहतक कसबेमें १६७०२ मनुष्य थे, अर्थात् ८०२९ हिन्दू, ७९७७ मुसलमान, ५६७ जैन, ९८ सिक्ख और ३१ कृस्तान।

रुहतकमें जिलेकी कचहरियोंके मकान, तहसील, पुलिसस्टेशन, गिर्जा, डांकबङ्गला, स्कूल, अस्पताल और वाटिका हैं, गल्लेकी तिजारत होती है, सुन्दर पगड़ियां बनती हैं और कार्त्तिकमें घोड़ोंकी नुमाइश होती है।

रुहतक जिला—जिलेका क्षेत्रफल १८११ बर्गमील है, इसके उत्तर जींदका राज्य और कर्नाल जिला, पूर्व दिल्ली और कर्नाल जिला, दक्षिण गुरगाँव जिला और दो छोटे देशी राज्य और पश्चिम हिसार जिला और जींदका राज्य है।

जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ५८८०४२ और सन् १८८१ में ५५३६०९मनुष्य थे, अर्थात् ४६८९०५ हिन्दू, ७९५१० मुसलमान,५००० जैन, १५९सिक्ख और ३५ कृस्तान इत्यादि। हिन्दुओंमें १८०७७८ जाट, ५८२११ ब्राह्मण, ७३५४ राजपूत और मुसलमानोंमें२२६२०राजपूत, १९९८ जाट थे। रुहतक जिलेमें (जन-संख्या सन्१८९१ में १६७०२) झंझर (जन-संख्या सन् १८९१ में ११८८१), बुटाना, गोरना, कलांबर महीम, बीरी, बहादुरगढ़, बरोदा, मण्डलाना कन्हौर और सिंही कसबे हैं।

झंझर कसबा रुहतकसे २१ मील दक्षिण और दिल्लीसे ३५ मील पश्चिम है, जिसमें सन १८९१ में ४१८८१ मनुष्य थे; अर्थात् ६८६२ हिन्दू, ४९५४ मुसलमान; ६२ जैन और ३ सिक्ख झंझरमें तहसीली कचहरी, पुलिसस्टेशन, और डाक बँगला हैं और मिट्टीके बर्तन बहुत सुन्दर बनते हैं। कसबेके चारों ओर उजडे पुजडे तालाव और मकबरे देख पड़ते हैं।

इतिहास—रुहतक बहुत पुराना कसवा है, नये कसबेसे उत्तर पुराने कसबेकी जगह है। १९ वीं सदीके प्रारम्भमें रुहतकके उत्तरीय परगने जींद और कैथलके सिक्ख प्रधानोंके अधिकारमें थे। दक्षिणीय भाग झंझरके नवाबको, पश्चिमके भाग उसके भाई दादरी और बहादुरगढके नवाबको और मध्यभाग दुजानाके नवाबको मिला। सन् १८२० में जिला क्रम क्रम अङ्गरेजी अधिकारमें आ गया तब हिसार और सिरसा रुहतकसे अलग कर दिये गये। सन् १८२४ में पानीपत जिला भी अलग होगया और रुहतक कसवा जिलेका सदर स्थान बना। सन् १८३२ में यह जिला पश्चिमोत्तर देशमें शामिल किया गया। सन् १८५७ के बलवेके समय मुसलमानोंने झंझर, बहादुरगढ़के नवाब और सिरसा तथा हिसारके भट्टी प्रधानोंके आधीन होकर रुहतकके सिविल स्टेशनको लूटा और दफ्तरोंको बरबाद किया। कुछ दिनोंके पीछे पञ्जाबसे एक फौजने आकर बागियोंको जिलेसे खदेर दिया। अङ्गरेजी सरकारने बागियोंकी मिलकियतें छीनकर उनमेंसे एक भाग कुछ दिनके लिये

झंझरका नया जिला बनाया और दूसरा भाग वलवेकी सहायताके वदलेमें जींद, पटियाला और नाभाके राजाओंको दे दिया। रुहतक जिला पश्चिमोत्तर देशसे निकाल कर पञ्जावके आधीन कर दिया गया।

जींद।

रुहतक कसवेसे लगभग ३० मील उत्तर पञ्जावमें एक देशी राज्यकी राजधानी जींद है, जहां अभी रेलवे नहीं गई है; पर वननेका सामान हो रहा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय जींद कसवेमें १६१९ मकान और ७१३६ मनुष्य थे; अर्थात् ४०९२ हिन्दू, २८२३ मुसलमान, १५५ जैन ६५ सिक्ख और १ दूसरा।

जींद राजधानीमें सुन्दर राजमहल और राजाकी कचहरियां वनी हैं। सुन्दर वाटिका लगी है और छोटा वाजार है।

जींद कसवेसे ६४ मील पूर्वोत्तर कुरुक्षेत्रका प्रधान शहर थानेसर है। जींद तक कुरुक्षेत्रकी सीमा कही जाती है।

जींदका राज्य—राज्यका क्षेत्रफल १२६८ वर्ग मील है; राज्य अलग अलग ४ खण्डोंमें वँटा है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय जींद राज्यमें ८ छोटे कसवे, ४१५ गांव ५१३५४ मकान और २४९८६२ मनुष्य थे; अर्थात् २१०६२७ हिन्दू, ३४२४७ मुसलमान ४३३५ सिक्ख, ६४९ जैन, ३ कृस्तान और १ दूसरा। (सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय राज्यमें २८४३०० मनुष्य थे), जींदके राजाकी आमदनी ६ लाख रुपयेसे अधिक और इनका सैनिक वल १२ तोप, २३४ गोलन्दाज, ३९२ सवार और १६०० पैदल हैं।

इतिहास—जींदका राजवंश सिक्ख सम्प्रदायका सिद्धू जाट है। पटियाला जींद और नाभा ये तीनों राजा फूलकियन वंश कहलाते हैं; क्योंकि फूल नामक एक जाट सरदारसे हैं। जींद और नाभाके राजा फूलके वड़े पुत्र तिलोकसे और पटियालेका राजा छोटे पुत्र रामसे हैं। फूलने सत्रहवीं सदीके मध्य भागमें अपने नामसे एक गांव जो नाभाके राज्यमें है, वसाया था।

सन् १७६३ ई० में जींदका राज्य नियत हुआ। सन् १७६८ में दिल्लीके वादशाहने जींदके प्रधानको राजाकी पदवी दी। जींदके राजा लोग सर्वदा अङ्गरेजी सरकारके पक्षपाती वने रहे। जींदके राजा वाघसिंह दिल्लीके वादशाह और सिंधियाँके अधीन राजा थे। अङ्गरेजी अफसर लार्डलेकने वाघसिंहके प्रवन्धसे प्रसन्न होकर उनके अधिकारको दृढ़ किया। सन् १८५७ के वलवेके समय जीन्दके राजा स्वरूपसिंहने दिल्लीसे वाँगियोंको निकालनेके लिये सव राजाओंसे पहले प्रस्थान किया, उसकी कृतज्ञतामें अङ्गरेजी सरकारने राजाका राज्य वढ़ाया। जीन्दके राजा रघुवीरसिंहजी. सी. एस. आई. के पश्चात् वर्तमान नरेश राजा रणवीरसिंह वहादुर, जिनकी अवस्था ७ वर्षकी है, उत्तराधिकारी हुए। जीन्दके राजाओंको अङ्गरेजी सरकारसे ११ तोपोंकी सलामी मिलती है।

भिवानी।

हाँसीके रेलवे स्टेशनसे २२मील दक्षिण-पूर्व भिवानीका रेलवे स्टेशन है। पञ्जावके हिसार जिलेमें सवसे वड़ा तिजारती कसवा और तहसीलका सदर स्थान भिवानी है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय भिवानीमें ३५४८७ मनुष्य थे, अर्थात् १८०२०२ पुरुष और १७२८५ स्त्रियां। इनमें ३१०२४ हिन्दू, ४२१३ मुसलमान, २०७ जैन, ३८ सिक्ख और १४ कृस्तान थे।

भिवानी कसवा बिना जोता हुआ मैदानमें स्थित है। कसवेमें वड़ी सड़क वनी हुई हैं और तहसील, पुलिस-स्टेशन, अस्पताल और स्कूल बने हैं। यह जिलेमें सौदागरीका केन्द्र है। इसमें चीनी, मसाले, धातु और निमककी सौदागरी वढ़तीपर है।

भिवानी पहले एक छोटा गाँव था, जो सन् १८१७ ई० में वाजारके लिये चुना गया, उसके पश्चात् यह प्रसिद्ध हुई और वीकानेर,जैशलमेर और जयपुरके साथ सौदागरी होने लगी।

रेवारी।

भिवानीसे ५२ मील (रायवन्द जंक्शनसे २१६ मील) दक्षिण–पूर्व और दिल्लीसे ५२ मील दक्षिण-पश्चिम रेवारीका रेलवे जंक्शन है। जहाँ रेवारी फीरोजपुर रेलवे और राजपूताना रेलवे मिली है। पञ्जाबके गुरगाँवा जिलेमें तहसीलका सदर स्थान रेवारी एक तिजारती कसवा है। रेलवे स्टेशनके निकट एक सुन्दर तालाव वनाहुआ है, जिसके निकट कई एक सुन्दर मकवरे देख पड़ते हैं। सन् १८९१ की जन-संख्याके समय रेवारीमें २७९६४ मनुष्य थे, अर्थात् १४४३२ पुरुष और १३५०२ स्त्रियां। इनमें १६३९४ हिन्दू, १०६६० मुसलमान, ८०५ जैन, ६२ कृस्तान, १२ सिक्ख और १ पारसी थे। गुरगाँव जिलेमें रेवारी प्रधान कसबा है।

कसवेमें सन् १८६४ ई० में पूर्वसे पश्चिम तक दुकानोंके सहित एक अच्छी सड़क वनाई गई। उत्तरसे दक्षिण तक कई एक अच्छी सड़क वनी हुई हैं, जिनेक छोरोंपर सुन्दर फाटक बने हैं। प्रधान सड़कोंके किनारोंपर पत्थर और ईटोंके मकान और दुकान वनी हुई हैं, जिनमेंसे अनेक उत्तम हैं। गलियोंके प्रायः सव मकान मट्टीके हैं। प्रधान सड़कोंपर रात्रिमें रोशनी होती है। कसवेके चारों ओर एक गोलाकार पक्की सड़क वनी हुई है, जिसके किनारोंपर वृक्ष लगे हैं। दक्षिण-पश्चिम राव तेजसिंहका बनाया हुआ एक सुन्दर तालाव है, जिसके चारों ओर पत्थरकी सीढ़ियाँ, पुरुष और स्त्रियोंके स्नानके लिये अलग अलग घाट और अनेक मन्दिर वने हुए हैं। तालावके निकट साधारण लोगोंके लिये एक वड़ा वाग लगा है, इनके अलावे रेवारीमें सरकारी कचहरी ओर आफिसें, पुलिस स्टेशन, सरकारी वड़ा स्कूल, अस्पताल, सराय और एक उत्तम टौनहाल है।

रेवारीके पीतल और कांसेके वर्तन प्रसिद्ध हैं। रेलवेका जंक्शन होनेसे यह प्रसिद्ध तिजारती स्थान हुआ है। यहाँ चीनी, गेहूँ जव, चनाकी वड़ी तिजारत होती है। लोहा और निमकका वड़ा व्यापार होता है और कई एक कोठीवाल और वड़े वड़े तिजराती महाजन रहते हैं। रेवारी जंक्शनसे ९ मील दक्षिण-पश्चिम वावलका रेलवे स्टेशन है, जिससे १० कोश दूर प्रति वर्ष चैत्र सुदी ११ को भैरवजीका मेला होता है और ३ दिन तक रहता है, वहाँ दर्शनके लिये वहुत लोग जाते हैं, उस देशके मलाह अपनी एक क्वांरी कन्या भैरवको अर्पण करते हैं, उस कन्याका विवाह नहीं होता, उनको विश्वास है कि भैरवकी अर्पी हुई कन्याके प्रभावसे नाव नहीं डूबेगी।

इतिहास—रेवारी पुराना-कसवा है, जिसको लगभग १००० ई० में राजा रेवतने वसाया और अपनी पुत्री रेवारीके नामसे इसका नाम रक्खा । कसवेकी दीवारके पूर्व पुराने कसवेकी तवाहियां देखनेमें आती हैं । रेवारीके राजाने मुगलोंके आधीन कसवेके निकट गोकुलगढ़ नामक किला वनवाया था, जो अव उजड़ रहा है । मुगलराज्यकी घटतीके समय रेवारी प्रथम महाराष्ट्रोंके, पीछे भरतपुरके राजाके हाथमें आई । सन् १८०५ में यह परगना अङ्गरेजी अधिकारमें आया और कुछ दिनोंके लिये रेवारी कसवा जिलेका सदरस्थान हुआ । सन् १८०५ में रेवारी मिलकियत भरतपुरके राजासे लेकर तेजसिंहको दी गई । सन् १८५७ के वलवेमें तेजसिंहका पोता राव तुलाराम स्वाधीन वनकर वागी हुआ, उस अपराधसे उसकी मिलकियत जप्तकरली गई ।

गुरगांवा ।

रेवारीसे ३२ मील पूर्वोत्तर और दिल्लीसे २० मील दक्षिण-पश्चिम गुरगांवाका रेलवे स्टेशन है । पञ्जावके दिल्ली दिभागमें जिलेका सदर स्थान गुरगावां एक छोटा कसवाहै ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय गुरगावाँमें ३९९० मनुष्य थे; अर्थात् २३८२ हिन्दू १४४९ मुसलमान १०० जैन, ३४ सिक्ख और २५ दूसरे ।

प्रधान वाजारमें सड़कके किनारोंपर ईंटोंकी दुकानें वनी हुई हैं। सरकारी इमारतोंमें जिलेकी कचहरीके मकान, तहसील, पुलिस स्टेशन, अस्पताल, वंगला, सराय और सुन्दर वाटिका हैं । चैत्र महीनेमें देवीकी पूजाके लिये गुरगावाँमें वहुत यात्री आते हैं ।

गुरगावाँ जिला—जिलेका क्षेत्रफल १९३८ वर्ग मील है; इसके उत्तर रुहतक और दिल्ली जिला; पश्चिम और पश्चिम-दक्षिण अलवरके राज्यका भाग, जयपुर, नाभा और दुजानाके राज्य, दक्षिण भरतपुरका राज्य और पश्चिमोत्तर देशमें मथुरा जिला, पूर्व यमुना नदी और पूर्वोत्तर दिल्ली जिला है । जिलेका सदरस्थान गुरगांवा कसवेमें है; परन्तु आवादी और तिजारतके विषयमें रेवारी प्रधान है । पहाड़ियोंके दक्षिणी भागमें लोहेके ओर (जिससे लोहा वनता है) वहुत होते हैं । जिलेमें जङ्गल नहीं है ।

जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ६६८६९७ और सन् १८८१ में ६४१८४८ मनुष्य थे; अर्थात् ४३९२६४ हिन्दू, १९८६१० मुसलमान, ३७७७ जैन, १२७ सिक्ख और ७० क्रस्तान । हिन्दू और जैनोंमें जाट, अहीर, ब्राह्मण और वनियां वहुत हैं इनके पश्चात् राजपूत और गूजरका नम्वर है । गुरगाँवा जिलेमें रेवारी (जन-संख्या सन् १८९१ में २७९३४), पलवाला (जन-संख्या सन् १८९१ में ११२३७), फर्रुक्ख नगर, सोहना, फीरोजपुर, झिरका, होडल, नूह और गुरगांवा कसवे हैं ।

इतिहास—सन् १८०३ ई० में गुरगांवा अङ्गरेजी अधिकारमें आया । जिलेके भाग क्रम क्रमसे अङ्गरेजी अधिकारमें आये, सवसे पीछे सन् १८५८ में फर्रुखनगर और झझरके नवावोंकी मिलकियत जप्तकर ली गई । पहले जिलेका सदर स्थान भरवासमें था । सन् १८२१ में गुरगाँवामें हुआ गुरगावाँ जिला सन् १८३२ में पश्चिमोत्तर देशमें मिलाया गया था; परन्तु सन् १८५८ में पञ्जावमें कर दिया गया ।

बीसवां अध्याय।

दिल्ली।
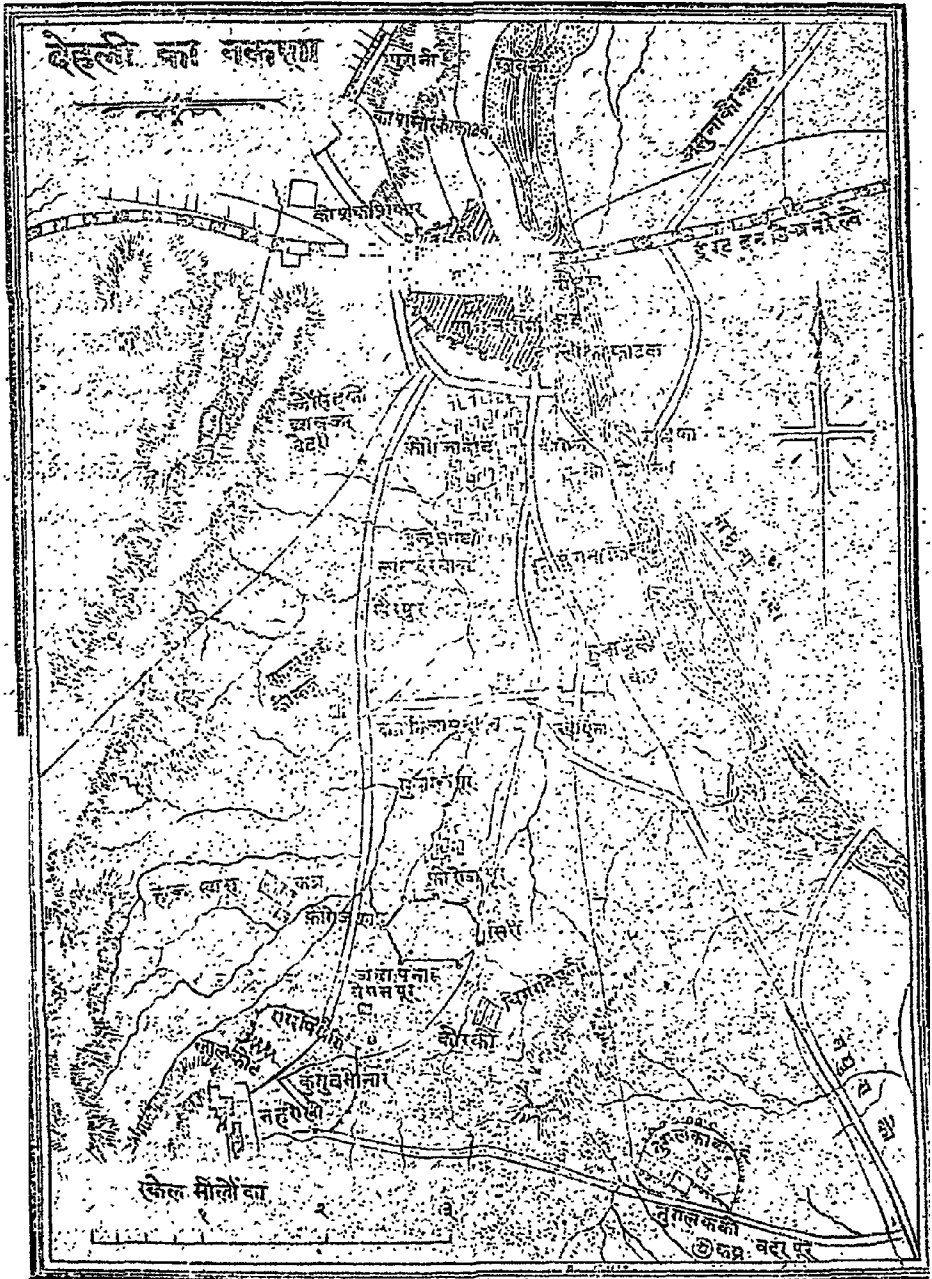
गुरगांवासे २० मील (रेंवारी जंक्शनसे ५२ मील) पूर्वोत्तर दिल्लीका रेलवे स्टेशन है, जिससे टुँडला होकर १४३ मील दक्षिण आगरा शहर; गाजियाबाद और सहारनपुर

होकर ३४९ मील और रेवारी और फीरोजपुर होकर ३५२ मील उत्तर कुछ पश्चिम लाहार शहर; कानपुर होकर ३९० मील पूर्व दक्षिण इलाहाबाद; रेवारी जंक्शन और अहमदाबाद होकर ८८८ मील दक्षिण कुछ पश्चिम बम्बई शहर और कानपुर और पटना हाकर ९५४ मील पूर्व दक्षिण कलकत्ता है। दिल्लीका समय मद्रास और रेलवेके समयसे १३ मिन्ट और कलकत्तेके समयसे ४६ मिनट कम और बम्बईके समयसे १७ मिनट अधिक ह।

पञ्जाबमें यमुना नदीके पश्चिम अर्थात् दहिने किनारेपर (२८ अंश ३८ कला ५८ विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश १६ कला ३० विकला पूर्व देशान्तरमें)

किस्मत और जिलेका सदर स्थान पञ्जाबमें सबसे बड़ा शहर दिल्ली है जिसको शाहजहानाबाद भी कहते हैं। क्योंकि वर्तमान शहरको बादशाह शाहजहांने सन् १६४० ई० में बनाकर इसका नाम शाहजहांनाबाद रक्खा।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय दिल्ली शहर और छावनीमें १९२५७९ मनुष्य थे; अर्थात् १०५६७७ पुरुष और ८६९०२ स्त्रियां। इनमें १०८०५८ हिन्दू, ७९२३८ मुसलमान, ३२५६ जैन, १७०० क्रस्तान, २८९ सिक्ख, ३१ पारसी, ६ यहूदी और १ दूसरा था। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ७ वां और पञ्जाबमें पहला शहर है।

नई दिल्लीके ३ बगलोंमें शाहजहांकी बनवाई हुई ६३३३ गज अर्थात् ३½ मीलसे अधिक लम्बी, ४ गज चौड़ी और ९ गज ऊँची दृढ़ दीवार बनी हुई है जो अब स्थान स्थानमें उजड़ रही है, है, दीवारके बाहर खाई है; शहरके पूर्व बगलमें यमुनाकी ओर नीचेसे भूमिके सतह तक पक्की दीवार बनी हुई है। पहले शहर पनाहमें १३ फाटक और १६ खिड़कियां थीं, जिनमेंसे अब १० फाटक हैं। इनमेंसे उत्तरके काश्मीर दरवाजा और मोरी दरवाजा पश्चिमके काबुल दरवाजा और लाहौर दरवाजा; दक्षिण पश्चिम फरासखाना दरवाजा और अजमेर दरवाजा और दक्षिणके रूम दरवाजा, जिसको तुरुकमाल दरवाजा भी कहते हैं; और दिल्ली दरवाजा प्रधान है। इसके अलावे पूर्व यमुनाकी ओर राजघाट दरवाजा और पूर्वोत्तर कलकत्ता दरवाजा है। दिल्लीकी प्रधान सड़क चांदनी चौक है, जो किलेके पश्चिमके लाहौर फाटकसे शहरके पश्चिमके लाहौर फाटक तक पूर्वसे सीधी पश्चिम चली गई है; सड़कके दोनों किनारोंपर वृक्ष लगे हैं, और बीचमें सड़कके नीचे पानीकी नहर बहती है। सड़क पूर्व ओर ¾ मील लम्बी और ७४ फीट चौड़ी है। चांदनी चौककी सड़क पर दिल्लीकी सबसे उत्तम दूकानें देखनेमें आती हैं, जिनमें देशी दस्तकारीकी प्रधान वस्तुएँ, जवाहिरात कारचोबीके कामके असबाब इत्यादि चीजें रहती हैं।

दिल्लीमें १० अत्युत्तम प्रधान सड़कें हैं, जिनके किनारोंपर रातमें रोशनी होती है। दूसरी तंग और टेढ़ी अनेक सड़कें बनीं हुई हैं। दिल्लीके देशी शहरके मकान ईंटोंके सुन्दर बने हुए हैं। यहांके बाजारोंमें चाँदनी चौक; दरीबा, लालकुआँ, जवहरी बाजार और चावड़ी प्रसिद्ध हैं।

दिल्लीमें पानीकी नल सर्वत्र लगी है और यमुनाकी नहर शहरकी सड़कोंमें बहती है। इस नहरको चौदहवीं सदीमें फिरोजशाह तुगलकदिल्लीसे लगभग ३० कोस दूर हरियानेके सफीदो परगने तक लाया था और पीछे सत्रहवीं सदीमें शाहजहां सफीदोंसे

दिल्लीमें लाया; परन्तु पीछे यह सूख गई थी; सरकारने इसको फिर सुधार कर पूर्ववत् कर दिया है ।

रेलवे स्टेशनसे थोड़ी दूर पर एक सराय और एक नई धर्मशाला और दरीबा बाजारमें शमरूकी बेगमकी कोठीके सामने दिल्ली पुस्तकालय है, जिसमें सर्व साधारण लोग अपने अपने मतकी पुस्तकें और अखबार पढ़ सकते हैं । लखनऊवालेके बागके निकट कलद्वारा अन्न भूजा जाता है । इसके आस पास सूत कातने, कपड़ा बुनने और आटा पीसनेके लिये कई एक कल कारखाने बने हैं । शहरके दक्षिण-पश्चिमके भागमें घनी दूकानें और देशी लोगों की बस्ती है । किलेके दक्षिण दरियागञ्जमें फौजी छावनी फैली है ।

दिल्लीकी सरकारी इमारतोंमें कमिश्नरकी कचहरी, जिलेकी कचहरियोंके आफिस, तहसील, पुलिश स्टेशन, जिला जेल, पागलखाना, अस्पताल, दवाखाना है । चन्दे और म्यूनिसिपलिटीके खर्चसे एक गरीबखाना नियत हुआ है । दिल्लीमें चार गिर्जे हैं । काश्मीर दरवाजेके पास छोटी कचहरी, सेंटजर्जका चर्च गवर्नमेंट कालिज और लाइब्रेरी और काश्मीर दरवाजेसे पश्चिमोत्तर सिविल स्टेशन और फौजी बारक है । जामामसजिदसे उत्तर सुन्दर सिविल अस्पताल बना है ।

शहरसे पूर्व यमुना नदीपर १२ दरवाजेका २६४० फीट लम्बा रेलवे पुल है, जिसके पाये पानीकी सतहसे ३३ फीट नीचे तक हैं, पुलपर नीचे बैल गाड़ी और ऊपर रेलगाड़ी चलती है । यह पुल सन् १८६७ ई० की पहली जनवरीको खुला । इसके बननेमें १६६०३५५ रुपये खर्च हुए ।

यमुनाके पश्चिम किनारेपर रेलवे पुलके निकट सोलहवीं सदीमें सलीमशाहका बनवाया हुआ सलीमगढ़का उजड़ा किलाहै ।

दिल्लीमें बड़ी सौदागरी होती है, नील, रुई, रेशम, अन्न अनेक प्रकारके तेलके बीज, घी, धातु, निमक, चमड़े, अङ्गरेजी चीजें इत्यादि वस्तु दूसरी जगहोंसे दिल्लीमें आती हैं और पूर्वोक्त वस्तुएँ तथा तम्बाकू, चीनी, तेल, जवाहरात और सोना या चांदीके लैसके बने हुए सरंजाम दिल्लीसे अन्य शहरोंमें भेजे जाते हैं । काबुल, जींद, बीकानेर, अलवर, जयपुर, और पञ्जाबके सम्पूर्ण शहरोंके महाजनोंकी कोठियां और दूकानें दिल्लीमें विद्यमानहैं ।

वर्तमान दिल्ली शाहजहानाबादसे दक्षिण राय पिथौराके किले और तुगलकाबाद तक लगभग ९ मील की लम्बाईमें ४५ वर्गमीलके क्षेत्रफलमें पुराने शहर, किले और इमारतोंकी तबाहियाँ फैली हुई हैं, इनमें ७ शहरोंकी निशानियां, जिनको समय समयपर दिल्लीके ७ बादशाहोंने बनवाया था, देखनेमें आती हैं ।

कम्पनी बाग—शहरकेमध्यमें चांदनी चौक सड़कके पासही उत्तर और रेलवेके दक्षिण कम्पनीबाग, जिसको रानीबाग और विक्टोरिया बाग कहते हैं, फैला हुआ है, बागमें विविध प्रकारके वृक्ष और पौधे तथा फूलोंके बेल लगाये गये हैं । बागके किनारेपर सड़कके निकट पत्थरका एक बड़ा हाथी खड़ा है; हाथीके नीचे खोदकर लिखा हुआ है कि बादशाह शाहजहांने इस हाथीको सन् १६४५ ई० में ग्वालियरसे लाकर अपने नये महलके दक्षिण फाटकके बाहर रक्खा

बागके दक्षिणीय भागमें चाँदनी चौक, सड़कके समीप एक बड़ी इमारतमें अजायब खाना, दरबार; हाल, लाइब्रेरी और पढ़नेका कमरा हैं। अजायब खाना, छोटा है इसमें थोड़ी मामूली वस्तुओंके अलावे मरे हुए ३ आश्चर्यप्रद जानवर देखनेमें आये थे,—(१) बकरीके एक बच्चेका १ सिर, ८ पैर और २ पूँछ, (२) भैंसके एक बच्चे के एकही धड़के ऊपर २ गले और २ शिर और (३) एक भैंसके बच्चेके एकही गलेके ऊपर २ सिर।

बागके दक्षिण चाँदनी चौक सड़कपर १२८ फीट ऊँचा सुर्ख पत्थरका बना हुआ घड़ीका बुर्ज है, जिससे चारोंओरसें घड़ीका समय देख पड़ता है और घण्टेका शब्द दूरतक जाता है बागके निकट घंटेश्वर महादेवका प्रसिद्ध मन्दिर है।

फतहपुरी मसजिद—चाँदनी चौकके पश्चिम छोरके पास फतहपुरी मसजिद है। बादशाह शाहजहाँकी स्त्री फतहपुरी बेगमने सन् १६५० ई० में सुर्ख पत्थरसे इसको बनवाया, इसके २ बुर्ज १०५ फीट ऊँचे हैं।

जामामसजिद, दिल्ली।
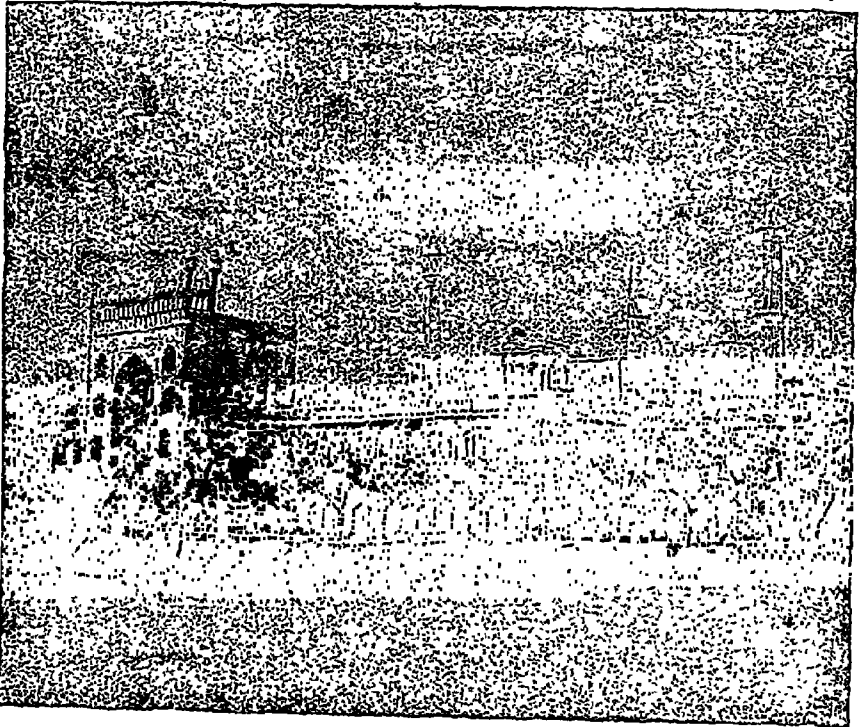
जामा मसजिद—चाँदनी चौकसे थोड़े दक्षिण किलेके दक्षिण दीवारसे पश्चिम ऊँची भूमिपर दिल्लीकी प्रसिद्ध जामा मसजिद है, इस प्रकारकी मसजिदोंमें इसके समान दूसरी मसजिद नहीं है, इसका ढाचा आगरेकी मोतीमसजिदके समान है; परन्तु मोतीमस-जिदमें खालिस मार्बुलका काम है और इसमें सुर्ख पत्थरके काममें मार्बुलका मिलावट है;

तिसपर भी यह मसजिद भारतवर्ष या दूसरी जगहोंके अति उत्तम मसाजिदोंमेंसे एक है। दिल्लीके बादशाह शाहजहाँने सन् १६३२ ई०से सन् १६३८ तक इसको बनवाया था; ऐसा प्रसिद्ध है कि ५ हजार आदमियोंने ६ वर्षमें इसको तय्यार किया था।

जामामसाजिदका घेरा ४५० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है। ३६ सीढ़ियोंके ऊपर मसजिदका प्रधान फाटक है। पश्चिमको छोड़कर तीन ओर फाटक लगे हैं, जिनके ऊपरके कमरोंके सिरपर मार्बुलके सुन्दर गुंबज और मीनार बने हुए हैं। गुंबजोंपर सुनहले कलश लगे हैं आंगनके पश्चिम बगलमें खास मसाजिद और ३ बगलोंमें पत्थरके १५ फीट चौड़े मेहराबदार ओसारे और मकान बने हुए हैं; घेरेके चारों कोनोंके ऊपर मार्बुलकी गुंबजदार एक एक छोटी बारहदरी बनी हैं। मसजिदके आंगनमें पानीसे भरा हुआ एक हौज और पूर्वोत्तर के कोनेके निकट एक सायवानमें ३ पुराने कुरान रक्खे हुए हैं; एक अलीके समयका अर्थात् सातवीं सदीका कुफिक्रका लिखा, दूसरा इमाम हुसेनका लिखा और तीसरा भी इमाम हुसेनहीका लिखा हुआ है।

खास मसजिद लगभग २६०. फीट लम्बी और ९५ फीट चौड़ी सुर्ख पत्थरसे बनी हुई है; इसकी दीवारोंमें जगह जगह उजले और काले मार्बुलके काम हैं और काले मार्बुलके अक्षर जड़कर अरबी लेख बने हैं। मसाजिदके फर्शपर निमाज पढ़नेके लिये उजले और काले मार्बुलके टुकड़ोंसे ९१३ जानिमाज अर्थात् क्यारियाँ बनाई हुई हैं। मसजिदके शिरोभाग पर ३ बड़े और बहुतेरे छोटे मार्बुलके गुंबज और आगेके दोनों कोनोंके पास तीन मंजिले १३० फीट ऊँचे सुर्ख पत्थरके एक एक बुर्ज हैं; इनमें चारों ओर सफेद मार्बुलकी बहुतेरी खड़ी लकीर हैं। बुर्जोंके भीतर चक्करदार सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। बुर्जोंके ऊपर चढ़नेसे सारा शहर देख पड़ता है।

कई एक वर्षोंसे मसाजिद देखनेवाले हिन्दुओंको मुसलमान कमेटीके कर्मचारीसे पास, जो सहजमें मिल जाता है; लेना पड़ता है। मैं भी पास लेकर मसाजिद देखने गया था।

जैनमन्दिर—जामा मसाजिदके पश्चिमोत्तर अनारकी गलीमें हरसुखराय कागजीका बनवाया हुआ जैनमन्दिर है। मन्दिरके आगे मार्बुलके छोटे आंगनके बगलोंमें सुन्दर ओसारे बने हैं। खास मन्दिरके ऊपर गुंबज और भीतरकी छत और दीवारोंपर सुनहला मुलम्मा है। मन्दिरमें मार्बुलके छोटे खम्भोंकी २ पंक्तियाँ और इसके मध्यमें एक चबूतरेपर हाथीदाँतकी बनी हुई चांदनीके नीचे एक छोटी जैनमूर्ति बैठी है।

काला मसाजिद—जामा मसजिदसे ¾ मीलसे अधिक दक्षिण शहरके दक्षिणके तुर्कमान दरवाजेके समीप फीरोजशाह तुगलकके समय (सन् १३८६ ई०) की बनी हुई काला मसजिद है, काले रंगसे रंगे जानेके कारण इसका नाम काला मसजिद पड़ा है। मसजिद ६६ फीट ऊँची दो मंजिली है, इसके नीचेवाली मंजिल २८ फीट ऊँची है।

किला—किलेके देखनेके लिये दरियागंजमें ब्रिगेडियर साहबसे पास लेना होता है। पास सहजमें मिल जाता है। शहरके पूर्व यमुनाके दहिने किनारेपर उत्तरसे दक्षिण तक ३२०० फीट लम्बा और पूर्वसे पश्चिम तक १६०० फीट चौड़ा दिल्लीका प्रसिद्ध किला, जो मुगल बादशाहोंका शाही महल था, स्थित है। किलेके तीन ओर गोलाकार पायोंके साथ सुर्ख पत्थरकी कंगूरेदार ऊँची दीवार खड़ी है और पूर्व ओर यमुनाकी छोड़ी हुई धाराके पास

नीचेसे पृथ्वीकी सतह तक दृढ़ दीवार बनी है। चांदनी चौककी सड़क शहरसे पूर्व किलेके लाहौर फाटक तक गई है। किलेके पश्चिमकी दीवारमें लाहौर फाटक, जो किलेका प्रधान दरवाजा है और दक्षिणकी दीवारमें दिल्ली फाटक है। दोनों फाटकोंकी बनावट और अग-वास प्रायः एकही तरहकी हैं। लाहौर फाटकके भीतर उससे सीधा पूर्व ३७५ फीट लम्बी महराबदार दो मंजिली इमारत है इसके भीतर दोनों बगलोंमें दुकानें बनी हुई हैं।

शाहजहांने किले और इसके भीतरकी इमारतोंको सन् १६३८ से लगभग १६४८ ई० तक बनवाया था। उसके समयसे महम्मद बहादुरशाहके समय सन् १८५७ तक यह किला शाही महल था। किलेके भीतर बादशाहके महलका बड़ा विस्तार था। उसमें बागकी ३ और दूसरी १३ कचहरियां थीं. अब महल विभागमें केवल नौबतखाना, दीवान आम, दीवान-खास, मोती मसजिद और दो चार छोटी इमारतें खड़ी हैं। सन् १८५७ के बलवेके पश्चात् किलेके महलका बड़ा भाग अङ्गरेजी बारकोंके लिये क्रम क्रमसे तोड़ दिया गया, अब उस जगह बारक अर्थात् सैनिकगृह और मेगजीन अर्थात् शस्त्रागारकी पंक्तियां देखनेमें आती हैं।

दीवानआम—दुकानोंकी इमारतसे पूर्व नकारखाना और नकारखानेसे पूर्व १८० फीट लम्बा और १५० फीट चौड़ा सुर्ख पत्थरसे बना हुआ दीवानआम है। यह तीन ओरसे खुला हुआ ४६ खम्भोंपर बना है। पूर्व ओर दीवारके निकट मध्यमें भूमिसे १० फीट ऊँचा पत्थरका तख्त है; जिसके ४ खम्भे और चाँदनी चमकीले मार्बुलसे बनी हुई है। तख्तकी चाँदनी, दीवार और खम्भोंमें विविध रंगके बहुमूल्य पत्थरकी बारीक पच्चीकारीसे फूल, फल, चिड़िये और छोटे छोटे जानवर बनाये गये हैं। तख्तके पीछे एक दरवाजा है, जिससे बादशाह पीछेवाले खानगी कमरोंमें प्रवेश करता था। इस समय सायवानके पीछे कमरोंमें दफ्तरका काम होता है। कमरोंमें जानेके लिये पीछेसे दरवाजा है।

दीवानखास—यह दीवानआमसे पूर्वोत्तर किलेके पूर्व किनारे पर लगभग १५० फीट लम्बा और १०० फीट चौड़ा उजले चमकीले मार्बुलका अत्युत्तम सायवान है; इसकी छतके चारों कोनोंपर मार्बुलका एक एक छोटा गुम्बज बना है। सायवानके २ बगलोंमें खम्भे लगे हैं और पूर्व यमुनाकी ओर मार्बुलकी जालीदार सुन्दर टट्टियां बनी हैं। सायवानमें ३८ खम्भे चौखूटे, जिनका प्रत्येक बगल ३¾ फीट चौड़ा है और ४ चौड़े, जिनकी चौड़ाई ३¾ फीट और मोटाई २ फीटसे कुछ कम है, लगे हैं। खम्भोंके निचले भागमें प्रत्येक रंगके बहुमूल्य पत्थरोंकी पच्चीकारी करके फूल और लतियां बनाई हुई हैं और ऊपरी भागमें तथा सायवानके नीचेकी छतमें सोनेके तबकसे फूल, लता और क्यारियां बनी हैं। दीवानखासकी नफीस पच्चीकारी और उत्तम कारीगरी देखकर यूरोपियन लोग विस्मित होजाते हैं। लोग कहते हैं कि इसकी छतमें चांदी जड़ी थी; जिसको सन् १७६० ई० में महाराष्ट्रोंने उजाड़ लिया। सायवानका फर्श मार्बुलका है; पूर्व ओर दीवारके समीप मार्बु-लकी बड़ी चौकी रक्खी हुई है; इसी पर बादशाह; शाहजहांका ताउसतख्त अर्थात् मयूरा-सन रहता था। जिसको सन् १७३९ ई० में पारसके नादिरशाह लेगये। वह अबतक पारसकी राजधानी तेहरानके शाहीमहलमें रक्खा है। शाहजहांके समय तख्तके पीछे दो नकली मयूर, जिनके पंखोंके रंग नीलमणि, लाल, पन्ना, मोती और दूसरे मूल्यवान् पत्थर

जड़कर वने थे, पांख फैलाये हुए खड़े थे। दोनों मोरोंके मध्यमें मामूली कद्का एक नकली सूगा, जो एकही पन्ना काटकर बना था, खड़ा था। ६ फीट लम्बा और ४ फीट चौड़ा जिसमें ६ पांव लगे थे, सोनेका तख्त था। तख्त पर लाल, हीरा और जमुर्रद वहुत जड़े हुए थे और उसके ऊपर १२ चोबों पर सोनेकी चांदनी थी। चांदनी और चोबों पर मूल्यवान् पत्थर जड़े हुए थे। चाँदनीके किनारोंपर मोतियोंकी झालरें लगी हुई थीं। तख्तके दोनों ओर मखमलपर उत्तम कराचोवीके काम किये हुए दो छत्ता खड़े किये हुए थे; जिनमें मोतियोंकी झालरें लगी थीं। छाताओंके डाट सोनेके, जिनपर हीरे जड़े थे; ८ फीट ऊँचे थे। टवरनियर जौहरीने ताउसतख्तका दाम साढ़े छह किरोड़ तजवीज किया था। सायबानकी छतके चारों ओर प्रसिद्ध लेख है, जिसका अर्थ यह है कि यदि पृथ्वी पर स्वर्ग है तो यही है। इसका भावार्थ यह है कि इस समय पृथ्वी पर इसके समान सुन्दर महल दूसरा नहीं है।

समन वुर्ज—दीवानखाससे ५० फीट दक्षिण यमुनाके किनारे पर एक मुरव्वा इमारत है; इसकी दीवारमें वाहर सुर्ख पत्थरके टुकड़े और भीतर मार्वुलका काम है। भीतर दीवारमें सोनहले-काम और अनेक रंगके मूल्यवान् पत्थरकी पच्चीकारीसे वेल बूटे वनेहैं और नफीस काम की अनेक मार्वुलकी जालीदार टट्टियां लगी हैं। समन वुर्जसे दक्षिण और दीवानआमसे पूर्व यमुनाके निकट रंगमहलमें, स्त्रियोंकी कोठरियाँ, जो सोनहुले तवकसे भूषित कीहुई हैं, मार्वुलकी वनी हैं। पहिले रंगमहलके चारोंओर वाग और फव्वारे थे, अव सव सामान उठा दिया गया है और मकान तोड़ दिये गये हैं। वचे हुए मकानोंमें अङ्गरेजी सिपाही रहते हैं।

स्नानघर—दीवानखाससे उत्तर १३५ फीट लम्बा और ६० फीट चौड़ा स्नानघर है; इसमें ३ कमरे वने हुए हैं; तीनोंके ऊपर मार्वुलके तीन गुंवज और भीतर सफेद मार्वुलका फर्श, एक एक हौज और जगह जगह अनेक रंगके पत्थरोंकी पच्चीकारीके काम हैं। एक कमरेकी दीवारमें मार्वुलका एक छोटा हौज वना हुआ है।

मोती मसजिद—स्नानघरके पश्चिम लगभग ७५ फीट लम्बी और इतनीही चौड़ी मोती-मसजिद है; इसके भीतर मार्वुल और वाहरकी ओर सुर्ख पत्थर लगे हैं, खास मसजिदके ऊपर मार्वुलके ३ गुम्वज और आगे छोटा आंगन है। औरङ्गजेवने सन् १६३५ ई० में इसको वनवाया।

स्नानघरसे उत्तर ओर यमुनाके समीप मार्वुलके १६ खम्भोंपर चारोंओरसे खुला हुआ एक सुन्दर वंगला है और पश्चिम ओर सुर्ख पत्थरके वने हुए कई एक सायवान हैं।

सोनहुली मसजिद—किलेसे दक्षिण रोशनद्दौलाकी एक छोटी मसजिद है; इसके ३ गुम्वजोंपर सोनेका मुलम्मा किया हुआ है, इसलिये इसको सुनहुली मसजिद भी कहते हैं। वादशाह महम्मद शाहके राज्यके समय सन् १७२१ ई० में रोशनद्दौलाने इसको वनवाया।

अशोकस्तम्भ—शहरके पश्चिमवाले कावुल दरवाजेसे लगभग १ मील उत्तर कुछ पश्चिम हिन्दूरावके मकानसे, जो अव फौजी अस्पताल वना है; २०० गज दक्षिण अशोक स्तम्भ है। स्तम्भके नीचेके भागके लेखसे जान पड़ता है कि सन् ईस्वीके पहले तीसरी शदीमें बौद्ध राजा अशोकने मेरठके पास इसको खड़ा किया। वादशाह फीरोजशाहने सन् १३५६ ई० में इसको लाकर कुश्कशिकार महलमें खड़ा करवाया। सन् १७१३-१७१९ ई०. में वारू-

दके मेगजीन उड़नेसे स्तम्भ ५ टुकड़ा हो गया। सन् १८६७में अङ्गरेजी सरकारने स्तम्भको इस स्थानमें खड़ा किया।

फतहगढ़—अशोक स्तम्भसे लगभग ½ मील दक्षिण भैरवजीके पास सन् १८५७ ई०के वलवेके विजयकी यादगारके लिये अङ्गरेज महाराजका वनवाया हुआ आठपहला ऊँचा बुर्ज है। जो अफसर वलवेके समय यहाँ मारे गये और यहाँ लड़े; उनके नामके यादगारके लिये यह बुर्ज बना है, इसके सिरपर चढ़नेसे चारोंओरका सुन्दर दृश्य देखनेमें आता है।

इसके निकटके मैदानमें महारानी इंग्लैंडेश्वरी विक्टोरियाको सन् १८७७ ई० की पहली जनवरीको भारतवर्षके एम्प्रेसका खिताव मिला। उसदिन हिन्दुस्तानके गवर्नरजनरल लार्ड लिटन और सम्पूर्ण हिन्दुस्तानके महाराजे, रईस और अङ्गरेज अफसर इकट्ठे हुए और लगभग ५०००० अङ्गरेजी और हिन्दुस्तानी फौज एकत्र हुई थी।

फीरोजावादका किला और अशोकस्तम्भ—शहरके दिल्ली फाटकसे ¾ मील दक्षिण जेलखाना है जिसमें कागज, चटाई, गलीचा आदि असवाव वनाये जाते हैं। जेलखानेसे लगभग ३५० गज पूर्व फीरोजावादका किला उजाड़ पड़ा है, जिसको सन् १३५४ ई० में दिल्लीके वादशाह फीरोजशाह तुगलकने वनवाया था। किलेमें यमुनासे ½ मील पश्चिम फीरोजशाहके उजड़े हुए महलकी इमारतकी छतपर पत्थरका एक वहुत पुराना अशोक स्तम्भ खड़ा है। सन् १३५६ ई० में दिल्लीके वादशाह फीरोजशाह तुगलकने इसको शिवालिक पहाड़ीके पादमूलके निकट टोफरसे, जहाँ यमुना मैदानमें प्रवेश करती है, मंगवाकर अपने मकानके सिरपर खड़ा करवाया था। तबसे यह फीरोजशाहके स्तम्भ करके प्रसिद्ध है। स्तम्भकी लम्बाई गचके भीतर ४ फीट और ऊपर ३८½ फीट और गचके पास इसकी जड़का घेरा १०¾ फीट है। स्तम्भपर १० फीटके ऊपर खोदे हुए कई एक नागरी लेख हैं, जिनमेंसे एकमें संवत् १५८१ (सन् १५२४ ई०) लिखा है, जो दिल्लीमें ले आनेके पीछे लिखा गया। नागरी लेखके ऊपर सन् ईस्वीके लगभग ३०० वर्ष पहलेका पाली अक्षरका लेख विद्यमान है। लेखमें राजा अशोककी धर्माज्ञा लिखी हुई है कि हिंसा मत करो। स्तम्भके एक दूसरे लेखमें अजमेरके चौहान राजा विसलदेवके, जिसका प्रताप हिमालयसे विंध्यतक फैलाथा; विजयका वृत्तांत देख पड़ता है। यह लेख दो भागमें है। एक छोटा लेख राजा अशोककी धर्माज्ञाके ऊपर और दूसरा वड़ा लेख उसके नीचे; दोनोंमें सम्वत १२२०(सन ११६३ ई०) लिखा है। एक छोटे लेखमें सम्वत् १३६९ (सन् १३१२ ई०) और सम्वत् १४१६ (सन् १३५९ ई०) है।

इन्द्रप्रस्थ—इन्द्रप्रस्थका अपभ्रंश इन्द्रपाथ है। इसको पुराना किलाभी कहते हैं। शहरके दिल्ली फाटकसे २ मील दक्षिण राजा युधिष्ठिरके पुराने शहर इन्द्रप्रस्थके स्थानपर पुराना किला है। सोलहवीं शदीमें वादशाह हुमायूँने इसकिलेकी मरम्मत करवा करके इसका नाम दीनपनाह रक्खा था। इसकिलेकी दीवार वहुतेरे स्थानोंमें टुकड़े टुकड़े हो गई हैं। सम्पूर्ण फाटक वन्द हैं, केवल दक्षिण-पश्चिम एक फाटक खुला रहता है।

किलाकोना मसजिद—शेरशाहनें सन् ९४८ हिजरी (सन १५४१ ई०) में इसको वनवाया। मसजिद सुर्ख पत्थरकी जिसमें मार्वुल और स्लेट जड़े हुए हैं, बनी है। इसका अगवास १५० फीट लम्बा है। मसजिदमें कुरानका वहुत शिलालेख विद्यमान है। मस-

जिद्के दक्षिण सुर्ख पत्थरकी बनी हुई ७० फीट ऊँची शेरशाह मण्डलनामक अठपहली इमारत है। सन् ९६२ हिजरी (सन् १५५५ ई०) में हुमायूंने इसको अपनी लाईब्रेरी बनाया। वह उसी रातको सीढ़ीसे गिर गया और चन्दरोज बाद उसकी चोटसे मरगया।

निजामुद्दीन अउलियाका मकबरा—यह इन्द्रपाथसे लगभग १ मील दक्षिण एक घेरेमें स्थित है। इसके चारोंओर अनेक कबरें और पाक इमारतें हैं। बाहरके मेहराबदार फाटकसे ३० गज भीतर सफेद मार्बुलकी बनी हुई चौंसठ खम्भानामक इमारत है, जिसके पश्चिम एक घेरेमें १८ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा मार्बुलसे बना हुआ निजामुद्दीन चिस्तीका मकबरा खड़ा है। इसका बरंदा ८ फीट चौड़ा है। मकबरेको मीरसीरनके पुत्रने बनवाया। इसके शिलालेखमें सन् १०६३ हिजरी (सन् १६५३ ई०) लिखी हुई है।

घेरेके भीतर अमीर खुसरू कवीका चौखूटा मकबरा है। यह कवियोंमें इतना प्रसिद्ध हुआ कि पारसका कवी सादी इसको देखनेके निमित्त हिन्दुस्तानमें आया। खुसरूका दादा, जो तुरुकी था, हिन्दुस्तानमें आया और दिल्लीमें मरा। सन् १३१५ में खुसरू कवि दिल्लीमें दफन किया गया। खुसरूके मकबरेके उत्तर और दरवाजेके दहिने दूसरे अकबरके पुत्र मिर्जा जहांगीरकी और दरवाजेके बाँये महम्मदशाह की; जो सन् १७२० से १७४८ तक दिल्लीका बादशाह था और उसके दक्षिण शाहजहांकी पुत्री जहानआराकी कबर है। जहानआराकी कबरके बाँये शाह आलमके पुत्र अलीगौहर मिर्जाकी और दहिने दूसरे अकबरकी लड़की जमीलुन्नीसाकी कबरहै।

हुमायूंका मकबरा—शहरसे लगभग ३ मील और इन्द्रपाथसे १ मील दक्षिण और निजामुद्दीनके मकबरेसे पश्चिम ११ एकड़के बड़े बागमें जिसके चारोंओर दीवार है। दिल्लीके बादशाह हुमायूंका मकबरा खड़ा है। प्रथम सुर्ख पत्थरका ऊँचा फाटक मिलता है, उसके भीतर दूसरा दरवाजा है, जिसकी बगलपर लिखा है कि बादशाह हुमायूँकी विधवा, नवाब हमीदाबानू बेगमने, जिसका दूसरा नाम हाजी बेगम है अपने पतिकी मृत्युके पश्चात् इस मकबरेको बनवाया। सन् १५५५ ई० में हुमायूं मरा। मकबरा १५ लाख रुपयके खर्चसे १६ वर्षमें तैयार हुआ। हमीदाबानू बेगम और शाही खान्दानके दूसरे लोगभी यहां दफन किये गये हैं। घेरेके मध्यमें, जिसमें ४ फाटक लगे हुए हैं, लगभग २० फीट ऊँचा २०० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा चबूतरा है। चबूतरेके बगलोंमें मेहराबियां बनी हैं और उसके ऊपर चढ़नेके लिये ४ बड़ी सीढ़ियां हैं। चबूतरेके मध्यमें सुर्ख पत्थरका, जिसमें जगह जगह मार्बुल लगा है, अठपहला मकबरा खड़ा है, जिसके ऊपर मध्यमें मार्बुलका बड़ा गुम्बज है। मकबरेके प्रत्येक कोनोंपर छोटा गुम्बजवाला एक कमरा और प्रत्येक दिशाओंके मध्यमें ४० फीट ऊँचा मेहराबदार एक पेशगाह है। बगलके दरवाजेसे एक कमरेमें जाना होता है। उसमें सफेद मार्बुलकी ३ कबर हैं;—दूसरे आलमगीर, फर्रुखसियर और जहाँदारशाहकी। मध्यके गुंबजके नीचे उजले मार्बुलकी बिना लेखकी सादी हुमायूंकी नकली कबर है। मकबरेके बागमें पानीका हौज और कई एक इमारतें हैं।

हुमायूंके मकबरेसे लगभग १ मील पश्चिम एक कबरगाहमें अनेक मकबरे और छोटी मसजिदें हैं। सबसे अधिक प्रसिद्ध मुसलमानी फकीर निजामुद्दीनका दरगाह है। दरगाहके निकट हालके सन् १८५७ के पहलेके शाही घरानेके लोग गाड़े गये हैं।

अवजरवेटरी—शहरके अजमेर फाटकसे २ मील दक्षिण प्रधान सड़कके २५० गज बायें, अवजरवेटरी अर्थात् ग्रहादि दर्शन स्थान है, जिसमें ज्योतिष विद्यावालोंके उपयोगी यन्त्र रक्खे हुए हैं। दिल्लीके बादशाह महम्मदशाहके राज्यके समय आंबेरके राजा सवाई जयसिंहने, जिन्होंने सन् १७२८ में जयपुर बसाया सन् ११३७ हिजरी (सन् १७२४ ई०) में इसको बनवाया।

सफदरजङ्गका मकबरा—अवजर वेटरीसे ३ मील दक्षिण सड़कके दहिने दिल्लीके बाद-शाह अहमदशाहके वजीर सफदरजङ्गका मकबरा है। सफदरजङ्ग सन् १७५३ ई० में मर-गया, उसके पश्चात् उसके पुत्र लखनऊके प्रसिद्ध नव्वाब शुजाउद्दौलाने ३ लाख रुपयेके खर्चसे इस मकबरेको बनवाया; एक घेरेके भीतर ९० फीट लम्बा और इतनाहीं चौड़ा सुर्ख पत्थर और गचके कामसे बना हुआ तीन मंजिला मकबरा खड़ा है; मध्यके कमरेमें सफदर-जङ्ग और उसकी बीबी खुजिस्तां बानू बेगमकी कबर है। दरवाजेके बायें एक सराय और दहिने ३ गुंबजकी एक मसजिद है।

कुतबमीनार, दिल्ली।
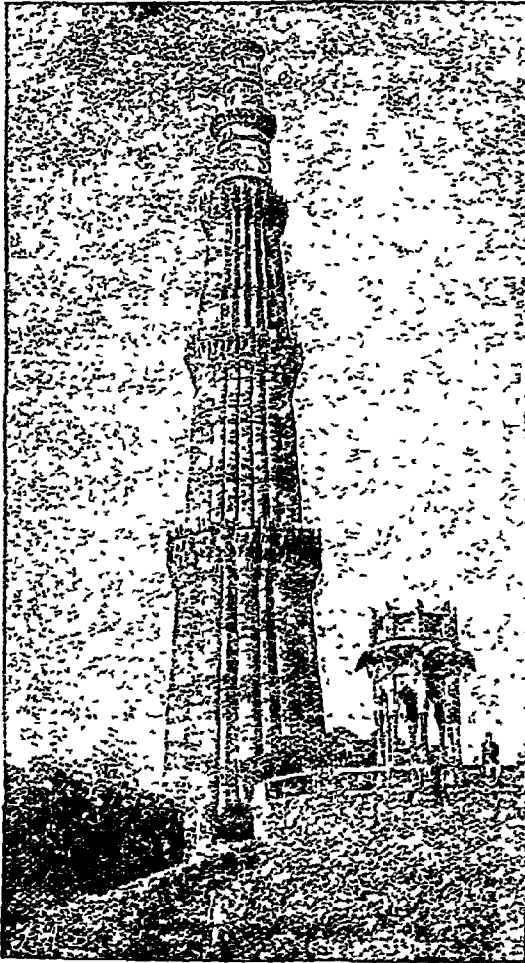
कुतबमीनार—दिल्लीके अजमेर फाटकसे लग भग १० मील और सफदरजङ्गके मकबरेसे ५ मील दक्षिण कुछ पश्चिम कुतबइसलाम मसजिदके आंगनके दक्षिण पूर्वके कोनेमें कुतबमीनार खड़ा है, जिसको कुतबकी लाट भी कहते हैं। भारतवर्षमें इतनी ऊँची कोई इमारत नहीं है। मीनारकी नेंव किसने दी; अब तक ठीक नहीं जाना गया। बहुतेरोंको विश्वास है, कि दिल्लीके राजा पृथ्वीराजने इसको बनवाया था; किन्तु शिला लेखसे जान पड़ता है कि दिल्लीके मुसलमान बादशाह कुतबुद्दीन ऐबकने सन् १२०६ ई० में इसके बनानेका काम आरम्भ किया। फीरोजशाह तुगलकने सन् १३६८ ई० में मीनारको अच्छी तरहसे फिर बनवाया। सन् १८०३ ई० में पहली अगस्तको भूकम्पसे इसका सिरो भाग गिर गया था, जो सन् १८२९ में फिर बनाया गया। यह मीनार पहले २५० फीट ऊँचा था, किन्तु अब २३८ फीट है। यह गावदुम शकलका पञ्च मंजिला मीनार है। पहला मंजिल ९७ फीट, दूसरा १५० फीट, तीसरा १९० फीट, चौथा २१४ फीट और पांचवाँ २४० फीट भूमितलसे ऊँचा है। नीचेके तीन मंजिल सुर्ख पत्थरके और ऊपरके २ उजले मार्बुलकी हैं। मीनारकी नेंवका व्यास ४७ फीट और सिरका केवल ९ फीट है। ऊपर चढ़नेके लिये इसके भीतर ३७६ चक्करदार सीढ़ियां बनी हैं। मीनारके बगलोंमें कुरानकी आयतें और कई बादशाहोंकी प्रशंसा पच्चीकारीके कामसे अरबी अक्षरोंमें लिखी हुई है। मीनारके चारोंओर प्रत्येक विभागमें तबाहियोंकी ढेर हैं, जिनमेंसे सबसे अधिक हृदयग्राही अलाउद्दीनका मीनार, जो पूरा नहीं हुआ है, खड़ा है।

कुतब इसलाम मसजिद—इस मसजिदके घेरके भीतर कुतब मीनार खड़ा है मसजिदके दरवाजेकी मेहराबीमें लम्बा शिलालेख है; जिससे जान पड़ता है कि सहाबुद्दीनके कर्मचारी कुतुबुद्दीन ऐबकने, जिसने सन् १२०६ से १२१० तक राज्य किया था, सन् ५८७ हिजरी (सन् ११९३ ई०) में इस मसजिदका काम आरम्भ किया। यह हीन दशामें रहनेपर भी देखने लायक है। ऐसा प्रसिद्ध है कि जिस चबूतरेपर राय पिथोरा अर्थात् पृथ्वीराजका बड़ा देव मंदिर था, उसीपर यह मसजिद है। बादशाह अल्तमशने, जिसका राज्य सन् १२११ से १२३६ ई० तक था, मसजिदको बड़े आंगनसे घेरा, उसीके दक्षिण-पूर्वके कोनेमें कुतब मीनार खड़ा है। उसके पश्चात् बादशाह अलाउद्दीनने सन् १३०० ई० में उसके पूर्व एक दूसरा आँगन जोड़ा, जिसके दक्षिणके बड़े दरवाजेका नाम अलाई दरवाजा है। घेरेके बाहरीका द्वार दक्षिण ओर और खास मसजिदका मेहराबदार प्रधान दरवाजा, जो ३१ फीट चौड़ा और ५३ फीट ऊँचा है, घेरेके भीतर पूर्व ओर है। खास मसजिदकी लम्बाई पूर्वसे पश्चिम तक २५५ फीट और चौड़ाई १५० फीट और इसके आंगनकी लंबाई १४२ फीट और चौड़ाई १०८ फीट है। आंगनके पश्चिम बगलमें मसजिद और ३ और मेहराबदार ओसारे तथा तीन दरवाजे बने हैं, घेरेके भीतर लगभग १००० स्तम्भ लगे हैं।

लोहेका स्तम्भ—कुतब इसलाम मसजिदके आंगनमें प्रसिद्ध लोहेका निसन स्तम्भ जिसको सन् ईस्वीकी तीसरी या चौथी सदीमें राजा धवने स्थापित किया था, स्थित है; यह २८ फीट पृथ्वीमें गड़ा हुआ और २२ फीट भूमिके ऊपर खड़ा है। इसका व्यास १६ इंच है। स्तम्भके पश्चिम बगलपर ६ शतरमें खोद करके लिखा हुआ संस्कृत लेख है। लेखमें राजा धवका प्रताप वर्णन है। ऐसा प्रसिद्ध है कि राजा धवने सिन्धपर लोगोंको

परास्त करके बहुत दिनों तक अकेले राज्य किया था। स्तम्भपर एक दूसरा लेख है, जिसमें संवत् ११०९ (सन् १०५२ ई०) के साथ दूसरे अनंगपालका और आठवीं सदीके पहला अनङ्गपालका नाम लिखा है, इससे बहुतेरोंका विश्वास है कि आठवीं सदीमें पहले अनङ्गपालने इसको खड़ा किया था।

अल्तमशका मकबरा—कुतब इसलाम् मसजिदके बड़े घेरेके पश्चिमोत्तरके कोनेके बाहर सुर्ख पत्थरका बना हुआ अल्तमशका मकबरा है। इसका प्रधान दरवाजा पूर्व है। भीतर कुरानकी इबारतें लिखी हुई हैं। मकबरा बहुत पुराना होनेके कारण जर्जर होगया है। दिल्लीका बादशाह अल्तमश सन् १२३६ में मरा और इस स्थानमें दफन किया गया।

अलाई मीनार—कुतब मीनारसे ४३५ फीट (मसजिदके घेरेसे लगभग १०० फीट) उत्तर ४½ फीट ऊँचे चबूतरेपर ८३ फीट ऊँचा गोलाकार मीनार खड़ा है। इसका घेरा २५९ फीट है। भीतर प्रवेश करनेके लिये ८ फीटके ऊपर रास्ता है। पूर्व ओर बाहरका दरवाजा और उत्तर एक खिड़की है। यह मीनार तैयार होनेपर ५०० फीट ऊँचा होता, किन्तु काम आरम्भ होनेके ४ वर्षके पश्चात् सन् १३१५ ई० में अलाउद्दीनके मरनेपर इसका काम बन्द होगया।

लालकोट किला—कुतब इसलाम मसजिदके घेरेके पासही पूर्व मटिया पत्थरसे बना हुआ लालकोट किला उजाड़ पड़ा है; किलेके बाहर २½ मील घेरेमें मट्टीकी दीवार है। दिल्लीके बादशाह दूसरे अनङ्गपालने सन् १०५२ ई० में पुरानी दिल्लीको यमुनाके किनारेसे हटा कर इसस्थानपर बसाया और सन् १०६० में यहाँ लालकोट किला बनवाया। तीसरे अनङ्गपालके उत्तराधिकारी महाराज पृथ्वीराजने सन् ११८० ई० में लालकोटके चारोंओर एक दूसरी दीवार बनवाकर जो ५ मील लम्बी होगी किलेका नाम राय पिथोरा रक्खा। पहले इस किलेमें ९ फाटक थे, किन्तु अब केवल ४ देख पड़ते हैं, किलेका बड़ा भाग नष्टभ्रष्ट हो गयाहै। इस स्थानको पुरानी दिल्ली कहते हैं।

इससे दक्षिण-पश्चिम महरवली गाँवके निकट कुतबुद्दीनकी दरगाह है। यहाँ झीलका बांध बांध करके उससे अनेक झरने, नहर और फव्वारे निकाले गये हैं। जहां बरसातमें सैरका मेला होताहै।

योगमायाका मन्दिर—कुतबुद्दीनकी दरगाहसे ¾ मील दूर और दिल्लीके अजमेर दरवाजेसे ८ कोस दक्षिण-पश्चिम योगमायाका शिखरदार मन्दिर स्थित है। सन् १८२७ ई० में पुराने स्थानपर देवीका वर्तमान मन्दिर बना था। प्रत्येक सप्ताहमें यहां देवीके दर्शनका मेला होता है। मन्दिरके एक तरफ बादशाह अल्तमशका उजड़ा हुआ महल और दूसरी ओर बादशाहके बागका फाटक है।

तुगलकाबादका किला—कुतब मीनारसे ४ मील पूर्व कुछ दक्षिण प्रधान सड़कके बाँये, जो कुतब मीनारसे गई है, तुगलकाबादका किला है दिल्लीके बादशाह गयासुद्दीन तुगलकने सन् १३२१ ई० से १३२३ तक इसको बनवाया था, यह १५ फीटसे ३० फीट तक ऊँचे चट्टान पर ४ मीलके घेरेमें बना हुआ है। किलेकी दीवार पत्थरके बड़े बड़े ढोकोंसे बनी है, इसके ३ ओर खाई और पश्चिम ओर गहरी भूमि; जिसमें वर्षा कालमें पानी रहता है, देखनेमें आती है। किलेके दक्षिण-पश्चिमके कोनक

भीतर इसके क्षेत्रफलके छठवें भागमें गढ़की तवाहियां फैली हुई हैं, यहां सैनिक लोगोंके रहनेके लिये गुम्बजदार कोठरियोंकी पंक्तियां देखनेमें आती हैं। किलेकी दीवारोंमें १३ और गढ़में ३ फाटक वने हुए हैं। किलेमें ७ तालाव और कई एक वड़ी इमारतोंकी तवाहियां हैं।

गयासुद्दीनका मकवरा—तुगलकाबादके किलेके दक्षिण एक झीलके वीचमें गयासुद्दीन तुगलकका सुन्दर मकवरा स्थित है। किले और मकवरेके वीचमें २७ मेहरावियोंका ६०० फीट लम्बा पुल वना हुआ है मकवरेके वाहर सुर्ख पत्थरसे सफेद मार्वुल लगे हैं और ऊपर मार्वुलका गुम्बज है; तीन ओर ऊँचे दरवाजे वने हैं। मकवरेके भीतर गयासुद्दीन तुगलक, गयासुद्दीनकी स्त्री और उसके पुत्र जूनाखांकी, जो पीछे महम्मदशाहके नामसे वादशाह हुआ कवरें हैं।

एक दूसरा पुल आदिलावादको गया है; आदिलावादमें गयासुद्दीनके पुत्र जूनाखांका (सन् १३२५ ई०) बनवाया हुआ किला है। जूनाखां सन् १३२५ से १३५१ ई० तक महम्मदशाह तुगलकके नामसे दिल्लीका वादशाह था।

कुतव मीनारसे तुगलकावाद जाकर वहाँसे मथुरा वाली सड़क द्वारा जो तुगलकावादसे उत्तर कुछ पश्चिम गई है, दिल्ली लौट जाना चाहिये।

रेलवे—दिल्लीसे रेलवे लाइन ३ ओर गई है।

(१) दिल्लीसे पूर्व-दक्षिण 'ईष्ट इण्डियन रेलवे' जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २$\frac{1}{2}$ पाई है।

मील—प्रसिद्ध—स्टेशन।
१३ गाजियावाद जंक्शन।
३४ सिकन्दरावाद।
४३ वुलन्दशहर रोड।
५२ खुर्जा।
७९ अलीगढ़ जंक्शन।
९७ हाथरस जंक्शन।
१२७ तुण्डला जंक्शन।
१३७ फिरोजावाद।
१५० शिकोहावाद।
१७४ यशवन्त नगर।
१८४ इटावा।
२१९ फफुण्डा।
२७१ कानपुर जंक्शन।
३१८ फतहपुर।
३९० इलाहावाद।
३९४ नैनी जंक्शन।
४४१ बिन्ध्याचल।
४४६ मिर्जापुर।
४६५ चुनार।
४८५ मुगलसराय जंक्शन।
५२१ दिलदारनगर जंक्शन।
५४३ वक्सर।
५७३ विहिया।
५८६ आरा।
५९४ कोयल वर।
६११ दानापुर।
६१७ वांकीपुर जंक्शन।

गाजियावाद जंक्शनसे उत्तर 'नर्थ वेष्टर्न रेलवे' पर २८ मील मेरठ शहर; ६३ मील मुजफ्फर नगर, और ९९ मील सहारनपुर जंक्शन।

अलीगढ़ जंक्शनसे पूर्वोत्तर 'अवध रुहेलखण्ड रेलवे' पर १८ मील

अतरौली रोड, ३० मील राजघाट और ६१ मील चँदौसी जंक्शन। हाथरस जंक्शनसे 'वम्बे बड़ोदा और सेंट्रल इण्डियन रेलवे' पर पश्चिम कुछ दक्षिण २९ मील मथुरा छावनीका स्टेशन और पूर्व-दक्षिण ३४ मील कासगञ्ज, ४३ मील सोरों, १०१ मील फर्रुखाबाद, १३८ मील कन्नौज, १७६ मील मन्धना और १८८ मील कानपुर जंक्शन।

तुण्डला जंक्शनसे पश्चिम १६ मील आगरा किला, ३३ मील अछनेरा जंकशन (जिससे २३ मील उत्तर मथुरा है,) ५० मील भरतपुर और १११ मील वादीकुई जंक्शन।

कानपूर जंक्सनसे आगेका विशेष वृत्तांत आगे कानपुरमें देखो।

(२) दिल्लीसे उत्तर कुछ पश्चिम; 'दिल्ली अम्वाला कालका रेलवे' है जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील दिल्लीसे अम्वाला तक २½ पाई और अम्वालेसे कालका तक ५ पाई लगता है।

मील—प्रसिद्ध—स्टेशन।
२७ सुनपत।
५५ पानीपत।
७६ कर्नाल।
९७ थानेसर।
१२३ अम्वाला जंक्शन।
१६२ कालका (शिमलाके लिये)।

अम्वाला छावनीसे पूर्व-दक्षिण ५० मील 'अवध रुहेल खण्ड रेलवे' का जंक्शन शहारनपुर, ७१ मील रुड़की, ८३ मील लक्सर जंक्शन, जिससे १६ मील हरिद्वार है और १०८ मील नजीवावाद है। अम्वाला जंक्शनसे पश्चिमोत्तर 'नर्थ वेस्टर्न रेलवे' पर १७ मील राजपुर जंक्शन, ७१ मील लुधियाना, १०६ मील जलन्धर, १५५ मील अमृतसर जंक्शन और १८७ मील लाहौर जंक्शन है।

(३) दिल्लीसे दक्षिण—पश्चिम 'वम्बे बड़ोदा और सेंट्रल इण्डिया रेलवे' जिसको तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ पाई लगता है।

मील—प्रसिद्ध—स्टेशन।
३० गुरगांवा।
३३ फर्रुखनगर।
५२ रेवारी जंक्शन।
९८ अलवर।
१३५ वादीकुंई जंकशन।

रेवारी जंक्शनसे पश्चिमोत्तर ३५ मील चर्खी दादरी, ५२ मील भिवानी, ७४ मील हांसी, ८९, मील हिसार, १४० मील सिरसा, १८७ मील भतीण्डा जंकशन १२३ मील कोटकपुरा जंक्शन २२१ मील फरीदकोट, २४१ मील फिरोजपुर और २७६ मील रायवन्द जंक्शन है, जिससे २४ मील उत्तर लाहौर है।

वादीकुंई जंक्शनसे पूर्व ६१ मील भरतपुर, ७८ मील अछनेरा जंक्शन, जिससे २३ मील उत्तर मथुरा है और ९५ मील आगरा किलाका स्टेशन और वादींकुंईसे पश्चिम ५६ मील जयपुर, ९१ मील फलेरा जंक्शन, ९७ मील निराना, १२२ मील किसुनगढ़ और १४० मील अजमेर जंक्शन है।

दिल्ली जिला—यह दिल्ली विभागके मध्यका जिला है। जिसका क्षेत्रफल १२७७ वर्ग-मील है। इसके उत्तर कर्नाल जिला; पश्चिम रुहतक जिला दक्षिण गुरगांवाँ जिला और पूर्व यमुना नदी, जो पश्चिमोत्तर देशके मेरठ और बुलन्द शहर जिलोंसे इसको अलग करती है, है। दिल्लीमें पहुँचनेसे पहलेही यमुनाका पानी दो पुरानी नहरोंमें जाता है इस कारणसे यमुनाकी चौड़ाई बहुत कम हो गई है। वर्षाकालके अतिरिक्त सब ऋतुओंमें यमुना थाह रहती है; अर्थात् विना नावके आदमी पार होजाता है।

जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य-संख्याके समय ६३९७९२ और सन् १८८१ में ६४३५१५ मनुष्य थे; अर्थात् ४८३३३२ हिन्दू, १४९८३० मुसलमान, ७३३६ जैन, २०१७ कृस्तान, ९७० सिक्ख, २७ पारसी और ३ दूसरे। इनमेंसे जाटमें १०३९८४ हिन्दू २३१८ मुसलमान और ७६५ सिक्ख, राजपूतमें २३२८२ हिन्दू, १०५११ मुसलमान और ११ सिक्ख, ब्राह्मणमें ५९६४० हिन्दू और २३३३ मुसलमान, वनिया सम्पूर्ण हिन्दू और गूजर चुहरा, नाई, लोहार, सुनार धोबी, प्रायः सब मुसलमान थे। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय दिल्ली जिलेके दिल्लीमें १९२५७९ सुनपतमें १२६११, और फरीदाबाद तथा बल्लभगढ़में दस हजारसे कम मनुष्य थे।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत–(आदिपर्व २०८ वां अध्याय) जब युधिष्ठिर आदि पांडवगण द्रौपदीको लेकर द्रुपदपुरीसे हस्तिनापुर आये; तब उनके चचा राजा धृतराष्ट्रने युधिष्ठिरसे कहा कि तुम राज्यका आधा भाग लेकर अपने भाइयों सहित खाण्डवप्रस्थमें जा बसो, जिससे तुम लोगोंसे हमारा फिर विगाड़ न होय। युधिष्ठिर आदि पाण्डवोंने हस्तिनापुरके राज्यका आधा भाग पाकर खाण्डवप्रस्थके पुण्यस्थानमें शांतिकार्य करवा कर एक नगर वसाया, जो भांति भांतिके सुन्दर भवनोंकी पंक्तियोंसे दीप्यमान हो कर इन्द्रपुरीके समान शोभायमान होनेके कारण इन्द्रप्रस्थ नामसे विख्यात हुआ। (२२२ वां अध्याय) श्रीकृष्ण और अर्जुन इन्द्रप्रस्थमें यमुना नदीके तटपर आखेटका आनन्द लेने लगे, (सभापर्व) महाराज युधिष्ठिरने चारों दिशाओंके राजाओंको जीतकर इन्द्रप्रस्थमें राजसूय यज्ञ किया।

(शांतिपर्व ४० वां अध्याय) उसके पश्चात् (कुरुक्षेत्रके संग्राममें राजा धृतराष्ट्रके दुर्योधन आदि पुत्रोंके विनाश होनेपर) राजा युधिष्ठिर कौरवोंकी राजधानी हस्तिनापुरमें राज-सिंहासनपर बैठे और राज्य शासन करने लगे।

(मौसलपर्व पहला अध्याय) राजा युधिष्ठिरके हस्तिनापुरमें राजतिलक होनेके छत्तीसवें वर्ष प्रभास क्षेत्रमें यदुवंशियोंका नाश होगया। (७ वां अध्याय) तब अर्जुन बचे हुए बालक वृद्ध और स्त्रियोंको द्वारका और प्रभाससे ले आए, उन्होंने उनमेंसे बहुतेरोंको, कुरुक्षेत्रमें बहुतेरोंको मार्तिकावत नगरमें और बहुतेरोंको सरस्वतीके तटपर बसा करके अनिरुद्धके पुत्र तथा कृष्णके प्रपौत्र वज्रको इन्द्रप्रस्थका राज्य प्रदान किया और विभाग क्रमसे बहुतेरे द्वारकावासियोंको वज्रके समीप इन्द्रप्रस्थमें स्थापित कर दिया। (आदि ब्रह्मपुराणके ९९ वें अध्यायमें देवी भागवतके दूसरे स्कंधके ८ वें अध्यायमें और श्रीमद्भागवतके ११ वें स्कंधके ३१ वें अध्यायमें भी लिखा है कि अर्जुनने वज्रको इन्द्रप्रस्थका राज्य दिया)।

(महा प्रस्थानिक पर्व पहला अध्याय) राजा युधिष्ठिरने धृतराष्ट्रके पुत्र (वैश्या स्त्रीसे उत्पन्न) युयुत्सुको राज्य भार देकरके अर्जुनके पौत्र परीक्षितको हस्तिनापुरके राजसिंहासन

गर बैठाया और भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव और द्रौपदीके साहित महाप्रस्थानके लिये प्रस्थान किया। (महाभारतका संक्षिप्त वृत्तान्त भारत-भ्रमणके दसवें अध्यायमें देखो)।

मत्स्यपुराण—(५० वाँ अध्याय) राजा परीक्षितके पश्चात् इसक्रमसे पांडुवंशी राजा होंगे, (१) जनमेजय, (२) शतानीक, (३) अधिसोम कृष्ण, (४) विवक्षु, (५) भूरि,(६) चित्ररथ, (७) सुचिद्रव, (८) वृष्णिमान, (९) सुषेण, (१०) सुनीथ, (११)नृचक्षु, (१२) सुखीवल, (१३) परिष्णव, (१४) सुतपा, (१५) मेधावी, (१६) पुरंजय, (१७) ऊर्व, (१८) तिग्मात्मा, (१९) बृहद्रथ, (२०) वसुदामा, (२१) शातानीक, (२२) दयन, (२३) वहीनर, (२४) दण्डपाणि (२५) निरमित्र और (२६) क्षेमक। राजा क्षेमकके पश्चात् यह वंश नष्ट हो जायगा।

श्रीमद्भागवत (९ वाँ स्कन्ध २२ वाँ अध्याय)—राजा परीक्षितके पश्चात् इस प्रकार पांडुवंशीय राजा होंगे;—(१) जनमेजय, (२) शतानीक, (३) सहस्रानीक, (४) अश्वध्वज, (५) असीमकृष्ण, (६) नमीचक्र, (७) उग्र, (८) चित्ररथ, (९) कविरथ, (१० वृष्णिमान, (११) सुषेण, (१२) सुनीथ, (१३) नृचक्षु, (१४) सुखीनल, (१५) परिप्लव, (१६) सुनय (१७) मेधावी, (१८) नृपञ्जय, (१९) उर्व, (२०) तिमि, (२१) बृहद्रथ, (२२) सुदास, (२३ शातानीक (२४) दुर्मन, (२५) वहीनर, (२६) दण्डपाणि, (२७) दुनेमि और (२८) क्षेमक। छठवाँ राजा नेमीचक्रके राज्यके समय जब हस्तिनापुर गङ्गामें डूब जायगा, तब वह राजा कौशांबी नगरीमें निवास करेगा। राजा क्षेमकके पश्चात् यह वंश समाप्त हो जायगा।

इतिहास—वर्तमान दिल्लीके आसपास दूरतक बहुतेरी राजधानी हो चुकी हैं। वर्तमान शहरके चारोंओर खास करके दक्षिणसे रायपिथौरा और तुगलकाबादके छोड़ दिये हुए किलेंतक १० मीलके अन्तरमें बरबादियां फैली हुई हैं ४५ वर्गमीलके क्षेत्रफलमें पुराने शहरों तथा राजा और बादशाहोंकी इमारत आदि वस्तुओंके चिह्न फैले हुए देख पड़ते हैं। वर्तमान दिल्लीसे २ मील दक्षिण पांडवोंका बसाया हुआ इन्द्रप्रस्थके स्थानपर इन्द्रपाथका पुराना किला जर्जर हो रहा है।

पाण्डुवंशी राजाओंके पश्चात् तक्षक वंशी १४ राजाओंने इन्द्रप्रस्थमें ५०० वर्ष राज्य किया;-(१) विसर्व, (२) सुषेण, (३) शौर्य्य, (४) अहंशाल, (५) वर्जित, (६) दुर्वार, (७) सदापाल, (८) सूरसेन, (९) सिंहराज, (१०) अमर्वाद, (११) अमरपाल, (१२) सर्वाह, (१३) पदराट्र और (१४ वाँ) मदपाल। राजा मदपाल अपने मन्त्रीके हाथसे मारागया, उसके पीछे गौतमवंशीय १५ राजाओंने इन्द्रप्रस्थका शासन किया;-(१) महाराजि (२) श्रीसेन, (३) महीपाल, (४) महाबली, (५) श्रुतवर्ती, (६) नेत्रसेन, (७) सुमुख, (८) जितपाल (९) कलंक, (१०) कुलमान, (११) श्रीमर्दन, (१२) जयवङ्ग, (१३) हरगुज, (१४) हर्षसेन और (१५) अस्तिन। गौतमवंशके अन्तिम राजा अस्तिन अपने मंत्रीको राज्यकार्य सौंपकर आप विरक्त होगया, उसके पश्चात् इन्द्रप्रस्थमें मौर्यवंशी ९राजा हुए;-(१)दुधसेन, (२)सिद्धराज, (३) महागङ्ग, (४) नंद (५)जीवन, (६)उदय, (७)जिहवल, (८)आनंद और (९)राजपाल। राजपालने, जिसका दूसरा नाम दिल्लू था! सन् ईस्वीसे लगभग ५० वर्ष पहले इन्द्रप्रस्थके पड़ोसमें कई मील दूर एक

नगर बसा कर अपने नामके अनुसार उसका नाम दिल्ली रक्खा; तभीसे दिल्ली नाम प्रसिद्ध हुआ। राजा राजपालने कमाऊँके राजा सुखवन्तके राज्य पर, जिसका नाम शकादित्य भी था, आक्रमण किया, राजपाल युद्धमें मारा गया। सुखवन्त इन्द्रप्रस्थका राजा हुआ। उसके पश्चात् उज्जैनके राजा विक्रमादित्यने सुखवन्तको मारकर उसका राज्य ले लिया। विक्रमादित्यके समयसे भारतवर्षकी राजधानी उज्जैन हो गयी और दिल्लीकी अवनति होने लगी। कुतवमीनारके निकट सन् ई० के तीसरी या चौथी सदीका लोहेका स्तम्भ है, जिसपर उस समयके प्रतापी राजा धावका यश खोदकर लिखा हुआ है।

सन् ७३५ ई० (संवत् ७९२) में तोमरवंशी राजा अनङ्गपालने, जिसका दूसरा नाम वलवानदेव था, दिल्लीको, जो बहुत कालसे उजाड़ हो गई थी; फिरसे वसाया और उसको अपनी राजधानी बनाया। तोमर वंशका १४ वां राजा कुमारपाल और १५ वां राजा दूसरा अनङ्गपाल हुआ। कन्नौजके राठौर राजपूतोंके प्रतापसे दूसरे अनङ्गपालसे पाहिले दिल्लीकी दशा हीन होगई थी; किन्तु उसके राज्यके समयसे दिल्लीकी उन्नति होने लगी। उसने शहरको सुधारा और चारों ओर किलाबन्दी की, जिसकी निशानियां कुतवमीनारके चारों ओर अबतक देखनेमें आती हैं। कुतवमीनारके निकट राजा धावके स्तम्भके दूसरे लेखसे जान पड़ता है कि संवत् ११०९ (सन् १०५२ ई०) में (दूसरे) अनङ्गपालने दिल्लीको वसाया।

सन् ई० की बारहवीं सदीमें दिल्लीका तोमरवंशी १९ वां राजा तीसरा अनङ्गपाल हुआ। अजमेरके चौहान राजा सोमेश्वरने, जिसको विशलदेव भी कहते हैं; अनङ्गपालको परास्त करके अपने आधीनका राजा बना लिया। विशलदेवके बनाए हुए हरकेलि नामक नाटकका कुछ हिस्सा शिलाके तख्तोंपर खोदा हुआ अजमेरके ढाई दिनके झोंपडेमें अबतक रक्षित है। लेख वर्तमान नागरीसे मिलता है। उसमें विक्रमी संवत् १२१० (सन् ११५३ ई०) लिखा हुआ है। राजा अनङ्गपालका कोई पुत्र नहीं था। केवल २ पुत्री थीं। जिनमेंसे एक कन्नौजके राठौर राजासे और दूसरी अजमेरके राजा सोमेश्वरसे ब्याही गई। अनङ्गपालकी बड़ी पुत्रीसे कन्नौजके राजा जयचन्दका और छोटीसे सन् ११४९ ई०में अजमेरके पृथ्वीराजका जन्म हुआ।

पृथ्वीराज सन् ११५५ ई० में अपने नाना अनङ्गपालके पास चला गया और उनकी मृत्यु होनेपर ११६३ में उनका उत्तराधिकारी बना। इस भांति पृथ्वीराज अजमेर और दिल्लीका राजा हुआ। पृथ्वीराजने रायपिथोरा नामक किला और एक बाहरीकी दीवार जो अनङ्गपालके किला बंदियोंके चारों ओर दौड़ती है, बनवा कर दिल्लीको अधिक मजबूत किया। सन् ११८५ ई० में कन्नौजके राजा जयचन्दने राजसूय यज्ञका अनुष्ठान और अपनी कन्याका स्वयंवर आरम्भ किया; उसने पृथ्वीराजको छोड़ करके दूसरे राजाओंको निमन्त्रित किया और पृथ्वीराजकी स्वर्णमूर्ति बनवा करके उसको द्वारपालके स्थान दरवाजे पर खड़ा कर दिया। राजकुमारीने स्वयंवरमें स्वर्ण मूर्तिके गलेमें जयमालको डाल दिया। उसी समय पृथ्वीराजने सभामें अकस्मात् आकर राजकुमारीको घोड़े पर बैठा अपनी राजधानीको चल दिया; इससे राजा जयचन्दका बड़ा अपमान हुआ।

सन् ११९१ ई० में अफगानिस्तानके गोर शहरके रहनेवाले शहाबुद्दीनने, जो महम्मद गोरी करके प्रसिद्ध है, भारतवर्ष पर आक्रमण किया। पृथ्वीराजने उसको थानेसरमें परास्त

करके ४० मील तक उसकी सेनाका पीछा किया था, परन्तु सन् ११९३ में शहावुद्दीनने भारी सेना लेकर फिर आक्रमण किया। लोग कहते हैं कि कन्नौजके राजा जयचन्द उसको चढ़ा लाया। शहावुद्दीन और पृथ्वीराजसे दृषद्वती अर्थात् गागरा नदीके किनारे वड़ा संग्राम हुआ, उस समय हिन्दुस्तानके राजाओंमें परस्पर एकता नहीं थी इस लिये वे लोग एकत्र होकर लड़ नहीं सके, अन्तमें पृथ्वीराज परास्त होकर मारागया। दिल्ली मुसलमानोंके अधीन हुई। पृथ्वीराजके साथही हिन्दुओंकी स्वाधीनता चली गई। भारतवर्ष मुसलमानोंके हस्तगत हुआ। शहावुद्दीनने एक वर्षके भीतरही जयचन्दको संग्राममें मारकर कन्नौजका राज्य भी लेलिया; उसने हिन्दुस्तानमें रहकर कभी राज्य नहीं किया। वह कभी हिन्दुस्तानमें कभी अपने देशमें लड़ता था।

गुलाम खान्दानके १० वादशाह;—(१) कुतवुद्दीन—यह शहावुद्दीन गोरीका सूवेदार था, जो उसके मरनेपर सन् १२०६ में स्वतन्त्र दिल्लीका वादशाह वन गया; इसीने दिल्लीके निकट कुतवइसलाम मसजिद वनवाई और शिलालेखसे जान पड़ता है कि इसीने कुतव मीनारका काम आरम्भ किया था। (२) आरामशाह—कुतवुद्दीनके मरनेपर उसका पुत्र आरामशाह सन् १२१० में वादशाह हुआ। (३) अल्तमश—कुतवुद्दीनका दामाद अल्तमश सन् १२११ में आरामशाहको तख्तसे उतारकर दिल्लीका वादशाह वन गया। यह गुलाम खान्दानके वादशाहोंमें सबसे अधिक प्रतापी हुआ और इसने सबसे अधिक राज्य किया। (४) रुकनुद्दीन फीरोजशाह—अल्तमशकी मृत्यु होनेपर उसका पुत्र रुकनुद्दीन फीरोजशाह सन् १२३६ में तख्तपर वैठा। (५) रजियावेगम—रुकनुद्दीन फीरोजशाहके केवल ७ महीने राज्य करनेके पश्चात् सन् १२३६ में सरदारोंने उसको तख्तसे उतारकर अल्तमशकी पुत्री रजिया वेगमको वैठाया। यह वड़ी होशियारीसे राज्य करती थी, परन्तु लगभग ४ वर्ष राज्य करनेके पश्चात् एक हवसी गुलामसे प्रेम होनेके कारण सरदारोंने उसको मारडाला। (६) वहरामशाह—रजियावेगमके मारे जानेपर अल्तमशका पुत्र वहरामशाह सन् १२४० में वादशाह हुआ। (७) मसाउदशाह—यह रुकुनुद्दीन फीरोजशाहका वेटा और वहरामशाह-का भतीजा था; राज्यके सरदारोंने सन् १२४२ में वहरामशाहको कैद करके मसाउदशाह को तख़्तपर वैठाया। (८) नासिरुद्दीन महमूद—सन १२४६ में लोगोंने मसाउदशाहको मारकर उसके चचा नासिरुद्दीन महमूदको तख्तपर वैठाया। वहरामशाहसे लेकरके नासि-रुद्दीन तक ३ वादशाह राजपूत और मुगलोंके आक्रमणसे निर्वल रहे। (९) गयासुद्दीन वलवननासिरुद्दीन महमूदके पश्चात् सन् १२६६ में उसका वहनोई गयासुद्दीन वलवन वादशाह वना। इसने मेवातके १ लाख राजपूतोंके सिर काट डाले और दुश्मनोंको दवा दिया। (१०) कैकूवाद—गयासुद्दीनके मरनेपर सन् १२८७ में उसका पोता (कुराखांका पुत्र) कैकूवाद तख्तपर वैठा, जिसको सन् १२९० में दुश्मनोंने जहर देकर मारडाला।

खिलजी खान्दानके ४ वादशाह;—(१) जलालुद्दीन फीरोजशाह—गुलाम खान्दानके अन्त होने पर सन् १२९० ई० में जलालुद्दीन दिल्लीके तख्तपर वैठा; इसका स्वभाव सीधा था। (२) अलाउद्दीन—सन् १२९६ में जलालुद्दीनका भतीजा दुष्ट अलाउद्दीन अपने चचा को दगासे मारकर वादशाह वन गया। इसने गुजरात देश और देवगढ़को लूटा; वड़ी सख्तीसे अपना राज्य वढ़ाया, दिल्लीमें कुतवमीनारके निकट आलाईमीनारका काम आरम्भ

किया; जो पूरा नहीं हो सका और सहस्र स्तम्भोंका महल बनवाया, जिसकी निशानियां शाहपुरके उजड़े हुए किलेमें अब तक देख पड़ती हैं। (३) मुबारकशाह–सन् १३१६ में अलाउद्दीनके मरनेपर उसका पुत्र मुबारकशाह बादशाह बना। (४) खुसराखां–यह नीच जातिके हिन्दूसे मुसलमान होगया था, जो सन् १३२१ में अपने मालिक मुबारकशाह को मारकर तख्तपर बैठा।

तुगलक खान्दानके ११ बादशाह;–(१) गयासुद्दीन तुगलक–खिलजी खान्दानके अन्त होने पर सन् १३२१ सें गयासुद्दीन तुगलक दिल्लीका बादशाह हुआ, जिसने तुगलकाबादका किला बनवाया; वह अन्तमें मकानके नीचे दबकर मरगया। (२) महम्मद आदिल तुगलक–गयासुद्दीनकी मृत्युके पश्चात् उसका पुत्र महम्मद आदिल तुगलक सन् १३२५ में गद्दीपर बैठा। इसने आदिलाबाद बसाकर उसमें एक किला बनवाया और दिल्लीके निवासियोंको दक्षिणके दौलताबादमें बसानेका और रुपएके दाममें तांबेका सिक्का चलानेका बड़ा उद्योग किया था, परन्तु अन्तमें उसका मनोरथ सफल नहीं हुआ। (३) फीरोजशाह तुगलक–महम्मद आदिलके मरनेपर सन् १३५१ में उसका पुत्र फीरोजशाह बादशाह हुआ। इसने फीरोजाबाद शहर बसाया और अनेक परमार्थिक काम किये, जिनमें प्रधान यमुना नहर है, जिसको वह यमुनासे फीरोजाबादमें लाया। (४) गयासुद्दीन तुगलक (दूसरा) फीरोजशाहकी मृत्युके उपरांत उसका पुत्र गयासुद्दीन तुगलक सन् १३८८ में तख्तपर बैठा। यह ५ महीने राज्य करनेके पश्चात् मारागया। (५) अबूबकरशाह—गयासुद्दीनके पीछे उसका भतीजा अबूबकरशाह सन् १३८९ में बादशाह बना; जो कैदखानेमें मरा। (६) नासिरुद्दीन महम्मद—सन् १३९० में गयासुद्दीनका दूसरा भतीजा नासिरुद्दीन तख्तपर बैठा। (७) हुमायूंसिकन्दर—सन् १३९३ में नासिरुद्दीनका पुत्र हुमायूंसिकन्दर बादशाह बना, जिसने केवल ४५ दिन राज्य किया था। (८) महमूदशाह—सन् १३९३ में हुमायूंसिकन्दरका बेटा महमूदशाहको गद्दी मिली। (९) नसरतशाह—सन् १३९५ में बरामदखाँका पुत्र नशरतशाह दिल्लीका बादशाह हुआ। सन् १३९८ में तैमूर तातारीने, जिसको तिमिरलिङ्ग भी कहते हैं; बड़ी सेना लेकर दिल्लीपर आक्रमण किया और बादशाहको परास्त करके ५ दिनों तक दिल्लीमें आम कतल करवाया। लाशोंके ढेरोंसे सड़कें बन्द होगईं, उसकी फौज दास बनानेके लिये बहुतेरी स्त्रियों और पुरुषोंको लेगई, दो महीने तक दिल्लीमें बादशाहत नहीं थी। (१०) महमूदशाह दूसरी बार—सन् १४०० में हुमायूं सिकन्दरका बेटा महमूदशाह फिर तख्तपर बैठा। (११) दौलतखाँ—महमूदशाहके मरनेपर उसका पुत्र दौलतखाँ सन् १४१३ में बादशाह हुआ।

सैयद खान्दानके ४ बादशाह,–(१) खिज्रशाह—तुगलक खान्दानके पीछे सैयद मलिक सुभानका पुत्र खिज्रखाँ सन् १४१४ में दिल्लीका बादशाह हुआ, जो दिल्लीमें मरगया। (२) मुबारकशाह (दूसरा)—खिज्रशाहके मरनेपर उसका पुत्र मुबारकशाह सन् १४२१ में तख्तपर बैठा। (३) महम्मदशाह—मुबारकशाहके मारे जानेपर उसका भतीजा महम्मद शाह सन् १४३४ में तख्तपर बैठा, जो मरनेपर दिल्लीमें दफन किया गया। (४) आलमशाह—महम्मदशाहके मरनेपर उसका पुत्र आलमशाह सन् १४४५ में उत्तराधिकारी हुआ। सैयदोंके राज्यके समय दिल्ली निर्बल रही। आलमशाहके राज्यके समय दिल्लीका राज्य

नाम मात्र रहगया था। आलमशाह बहलोल लोदीको अपना राज्य देकर कमाऊँ चला गया. और वहांही मरा।

लोदी खान्दानके ३ बादशाह;—इस खान्दानके बादशाह अफगान थे। (१) बहलोल लोदी—सन् १४५१ में कलांवहादुरका पुत्र बहलोल लोदी दिल्लीका बादशाह बना। इसने दिल्ली राज्यको बहुत बढ़ाया। मरनेपर दिल्लीमें दफन किया गया। (२) सिकन्दर लोदी—बहलोल लोदीके मरनेपर सन् १४८९ में उसका पुत्र सिकन्दर लोदी तख्तपर बैठा, जो मरनेपर दिल्लीमें दफन किया गया। (३) इब्राहिम लोदी—सिकन्दर लोदीकी मृत्युके पीछे उसका पुत्र इब्राहिम लोदी सन् १५१७ में बादशाह हुआ। यह: आगरेमें रहता था; लोदी खान्दानके बादशाह निर्बल थे। सन् १५२६ में मुगल खान्दानके बाबरने इब्राहिम लोदीको पानीपतकी लड़ाईमें परास्त करके मारडाला। वह वहाँही गाड़ा गया।

मुगल खान्दानके १६ बादशाह;—(१) बाबर—यह तैमूर तातारीके छठवीं पुश्तमें उमरसेखमिर्जाका पुत्र था, जो सन् १५२६ ई० में इब्राहिमलोदीको, जो आगरेमें रहता था, पानीपतकी लड़ाईमें परास्त करके दिल्लीका बादशाह बनगया और आगरेमें, जहाँ खास करके रहता था, सन् १५३० में ४८ वर्षकी उमरमें मरगया।

(२) हुमायूं—बाबरके मरनेपर उसका पुत्र हुमायूं दिल्लीका बादशाह हुआ। इसने सन् १५३३ में इन्द्रप्रस्थके पुराने किलेको सुधारकर उसका नाम दीनपनाह रक्खा था, परन्तु पीछे वह नाम प्रसिद्ध नहीं हुआ।

बङ्गालेका हाकिम शेरशाह, जो अफगान जातिका था; सन् १५४० में हुमायूंको खदेर कर दिल्लीका बादशाह बनगया। उसने पुराने किलेको अपने नये शहरका किला बनाकर उसका नाम शेरगढ़ रक्खा, परन्तु साधारण तरहसे वह पुराना किला कहलाता रहा। सन् १५४१ में उसने किलाकोह नामक मसजिद और आठपहलवाली एक ऊँची इमारत, जो अबतक शेरमण्डल करके प्रसिद्ध है; बनवाई थी। शेरशाह सन् १५४५ ई० में कालिंजरके किलेपर आक्रमण करनेपर ७२ वर्षकी अवस्थामें मारागया; जिसका मकबरा सहसराममें स्थित है; तब उसका पुत्र इसलामशाह, जिसको सलीमशाह भी कहते हैं, बादशाह हुआ। उसने सन् १५४६ में सलीमगढ़का किला बनवाया। इसलामशाह सन् १५५३ में मरगया और सहसराममें दफन किया गया। उसके पीछे उसका पुत्र फीरोजशाह उत्तराधिकारी हुआ, परन्तु कई महीनोंके बाद उसके मामाने उसको मारडाला। उसके पश्चात् निजामखांका पुत्र महम्मद आदिलशाह दिल्लीके तख्त पर बैठा। उसके पश्चात् शेरशाहका एक चचेरा भाई सुलतान इब्राहिम सन् १५५४ में और दूसरा चचेरा भाई सिकन्दरशाह सन् १५५५ में दिल्लीके बादशाह हुए।

हुमायूँ सन् १५५५ में हिन्दको लौट आया; उसने भारी लड़ाईमें अफगानोंको परास्त करके दिल्लीको फिर ले लिया। वह आगरेमें तख्तपर बैठा और ६ महीने राज्य करनेके पश्चात् सन् १८५६ की जनवरीमें ४८ वर्षकी उमरमें सीढ़ीसे गिरकर दिल्लीमें मरगया। उसका सुन्दर मकबरा दिल्लीमें बना हुआ है।

(३) अकबर—हुमायूँ जब हिन्दुस्तानसे फारसको भागा जाता था, तब सिंध प्रदेशके अमरकोटके छोटे किलेमें (सन् १५४२ ई० में) उसके पुत्र अकबरका जन्म हुआ। सन्

१५५६ में हुमायूंके मरनेपर अकबर दिल्लीका बादशाह बना। हुमायूँ एक छोटा राज्य, जो आगरे और दिल्लीके आसपासके जिलोंसे आगे नहीं था, छोड़गया था, परन्तु अकबरने हिन्दुस्तानमें मुगलोंका बड़ा राज्य नियत कर दिया। उसने सन् १५६० ई० में बहरामखां सेनापतिसे राज्यका प्रबन्ध अपने हाथमें लिया। सन् १५६१ से १५६८ तक राजपूत रियासतोंको अपने राज्यके आधीन करनेमें लगा रहा। सन् १५७२-१५७३ में गुजरातको फिर अपने राज्यमें मिला लिया। सन् १५७६ में बंगालेको दूसरी बार जीतकर मुगल राज्यमें शामिल कर लिया। सन् १५८६ में काश्मीरको अपने राज्यमें मिलाया और उसके अन्तकी बगावतको सन् १५९२ में दबाया। सन् १५९२ में सिन्धको जीता। १५९४ में कन्धारको अपने आधीन बनाया। मुगलोंका राज्य विंध्याचल पहाड़के उत्तरके सम्पूर्ण हिन्दुस्तानमें काबुल और कन्धार तक दृढ़ होगया। सन् १५९९ में अकबर खुद अहमदनगरकी रियासतपर आक्रमण करके शहरको ले लिया परन्तु वह वहां मुगलोंका राज्य कायम न कर सका। सन् १६०१ में खां देश दिल्लीके राज्यमें मिल गया। अकबर उत्तरी हिन्दुस्तानकी ओर लौटा और सन् १६०५ में ६३ वर्षका होकर आगरेमें मरगया। इसका बड़ा मकबरा आगरेकी शहरतली सिकन्दरामें स्थित है।

अकबरके राज्यके समय प्रजा सुखी थी, इसके समान न्यायवान और बहुविज्ञ पुरुष भारतवर्षके मुसलमान बादशाहोंमें दूसरा नहीं हुआ। जिस समय सन् १५५६ ई०में यह गद्दी पर बैठा, उस समय भारतवर्ष बहुतसे छोटे छोटे राज्योंमें बँटा था और बहुतसे फसादके तत्त्व मौजूद थे, परन्तु इसने किसी कदर बलसे और किसी कदर मेल जोलसे हिन्दू मुसलमान दोनोंको अपने अधीन कर लिया, उसने जयपुरके राजा मानसिंह और दूसरे राजपूत राजाओंको बड़े बड़े पद पर नियुक्त किया और हिन्दू राजा तोड़रमलको अपना मन्त्री और मालके मुहकमेंका अफसर बनाया। राजा तोड़रमलने पहले पहले एराजीका प्रबन्ध किया और राज्यका नाप करवाया था। अकबरके ४१५ मनसबदारोंमेंसे ५१ हिन्दू थे। यह राज्यकाजमें अपनी सब प्रजाओंको एक दृष्टिसे देखता था इसने हिन्दुओंके बहुतेरे संस्कृत ग्रन्थोंका फारसीमें अनुवाद करवाया था।

इसने दिल्लीको छोड़कर आगरेको राजधानी बनाया और सन् १५६६ में आगरेका किला और सन् १५७५ में इलाहाबादका किला बनाया।

(४) जहांगीर—अकबरकी मृत्युके पश्चात् सन् १६०५ में उसका पुत्र सलीम जहांगीरके नामसे गद्दीपर बैठा। इसके राज्यके समय मुगल राज्यकी कुछ बढ़ती नहीं हुई, इसने अपने राज्यके २२ वर्षका समय अपने पुत्रोंके बगावतोंको दबाने, अपनी स्त्रीके अख्तियारात बढ़ाने और ऐश करनेमें बिताया, अन्तमें जहांगीरका पुत्र शाहजहां बागी होकर दक्षिण चला गया और वहां मलिक अम्बरसे मिलकर मुगलोंकी सेनाके विरुद्ध हुआ। सन् १६२६ में जहांगीरकी बीबी नूरजहांके सिपहसालार महाबतखांने लाचार होकर अपनेको बचानेके लिये जहांगीरको कैद करलिया। नूरजहांभी ६ महीनोंतक कैद रही। सन् १६२७ में जब कि शाहजहां और बड़ा सरदार महाबतखां उससे बागी हो रहे थे, ५७ वर्ष की उमरमें जहांगीर मरगया और लाहौरके समीप शाहदरेमें दफन किया गया।

(५) शाहजहां—शाहजहां अपने बापके मरनेका समाचार सुनतेही दक्षिणसे आया और सन् १८२८ की जनवरीमें आगरेमें राजगद्दीपर बैठा। इसके पश्चात् इसने नूरजहांको पिंशिन मुकर्रर करके राज्यके कामोंसे अलगकर दिया और अपने भाई शहरयारको और अकबरके खान्दानके सम्पूर्ण मरदोंको जिनसे झगड़ेका भय था, मरवाडाला। इसने दक्षिणमें राज्य बढ़ाया और उत्तरी भारतके आगरेमें ताज महल और मोती मसजिद; दिल्लीमें जामा मसजिद, सुर्ख पत्थरका किला और किलेके भीतर दीवानआम, दीवानखास इत्यादि इमारत और दिल्लीका शहरपनाह इत्यादि बेजोड़ इमारतें बनवाई, जो इसकी उत्तम यादगार हैं। शाहजहांके राज्यके समय कन्धारका सूबा सर्वदाके लिये मुगलोंके राज्यसे निकल गया। जिस प्रकार जहांगीर अपने बाप अकबरका दुश्मन होगया था और शाहजहांने जहांगीरसे बगावतकी, उसी प्रकार शाहजहांको भी अपनी सन्तानकी शाजिश और सरकशीसे दुःख पहुँचा। सन् १६५७ में जब बूढ़ा बादशाह शाहजहां बीमार पड़ा, तब औरङ्गजेब इत्यादि उसके पुत्रोंमें तख्तके लिये झगड़ा हुआ। अन्तमें औरङ्गजेब जीत गया और सन् १६५८ में शाहजहांको कैदकरके तख्तपर बैठा। शाहजहां ७ वर्ष आगरेके किलेमें कैदरहकर सन् १६६६ में ७४ वर्षकी उमरमें मरगया और ताजमहलमें अपनी स्त्री मुमताजमहलकी कबरके समीप दफन किया गया।

(६) औरङ्गजेब—यह सन् १६५८ में अपने बाप शाहजहांको कैदकरके आलमगीरकी पदवीसे बादशाह हुआ। इसने सन् १६५९ में अपने बड़े भाई दाराको; जोआली मिजाजका था, परास्त करके मरवाडाला और सन् १६६० में एक वर्षकी लड़ाई झगड़ेके बाद अपने दूसरे भाई शुजाको, जो एक ऐयाश पुरुष था, हिन्दुस्तानके बाहर निकाल दिया। वह अराकानके हवसियों द्वारा बडी बेरहमीसे मारागया। उसके पीछे उसने अपने भाई मुरादको जो सबसे छोटा था, कैदखानेमें कतल करवा डाला।

इसके राज्यके समय मुगलोंके राज्यकी बढ़ती सबसे अधिक हुई। सन् १६५८से१६८३ तक औरङ्गजेबके सिपहसालार दक्षिणमें लड़ते रहे। इसी अर्सेमें महाराष्ट्रोंकी नई हुकूमत दक्षिणमें जाहिर हुई। सन् १६८३ तक बीजापुर और गोलकुण्डाके राज्यजीते नहीं गये। सन् १६८० १६८१ में औरङ्गजेबका पुत्र शाहजहां अकबर अपने बापसे बागी होकर महाराष्ट्रोंमें जा मिला, जिससे उनका रोबदाब अधिक बढ़ गया। तब सन् १६८३ में औरङ्गजेब बड़ी फौजलेकर आपही दक्षिणमें पहुँचा। बहुत दिनोंकी लड़ाईके पश्चात् सन् १६८८ में गोलकुण्डा और बीजापुर दोनों राज्य जीते गये। दक्षिणके ५ मुसलमानी राज्योंमेंसे बीदर, अहमदनगर और एलिचपुरके राज्य औरङ्गजेबके गद्दीपर बैठनेसे पहलेही मुगलोंके आधीन हो चुके थे।

औरङ्गजेबके मजहबी हठके कारण उत्तर भारतकी सम्पूर्ण प्रजा और देशी राजालोग इसके शत्रु हो गये। इसने सन् १६७७ ई० में जिजिया नामक 'कर' जारी किया, अर्थात् जो मुसलमान नहीं हैं, उन सबसे एक नियत 'कर' लेने लगा और हिन्दुओंको अपनी नौकरी से छोडा दिया। राजपूत राजालोग उसके शत्रु हो गये और बहुत दिनों तक उससे लड़ते रहे। इससे कभी कभी वह राजपुतानेको बरबाद और वीरान करदेता था। सन् १६८० ई० में औरंगजेबका बागीबेटा अकबर मुगलोंके लश्करका हिस्सा, जो उसके अख्तियारमें

था, अपने साथ लेकर राजपूतोंसे जामिला औरंगजेब जयपुर, जोधपुर और मारवाड़के राजपूतोंकी रियासतोंमें इस सिरेसे उस सिरे तक लूटपाट और कतल करता था और राजपूत लोग इसके बदलेमें मालवेके मुसलमानी सूबोंको लूटते थे। मसजिदोंको गिरा देते थे, मुल्लाओंको बेइज्जत करते थे और कोरानको जलाते थे। सन् १६८१ में औरंगजेबने इस लिये जैसे बना. वैसे राजपूतोंसे सुलह करली कि दक्षिणकी लड़ाईमें जानेका सावकाश मिले। सन् १६८३ में वह फौजके साथ दक्षिण गया और २४ वर्ष तक वहां लड़तारहा। सन् १७०६ में औरंगजेबके बड़े लश्करमें ऐसी बद इंतजामी फैली कि उसको लाचार होकर महाराष्ट्रोंसे सुलह करनेकी जरूरत पड़ी, परन्तु महाराष्ट्रोंकी शेखीके कारण सुलह नहीं हो सका। तब उसने अहमदनगरमें पनाह ली। दूसरे साल सन् १७०७ की फरवरीमें ८९ वर्षकी उमरमें वहांही वह मर गया और औरङ्गाबादमें गाड़ा गया।

(७) आजमशाह—औरङ्गजेबके मरनेपर उसका पुत्र आजमशाह सन् १६०७ में गद्दीपर बैठा, परन्तु उसी साल आजम और मुआजिम औरङ्गजेबके दोनों पुत्र धौलपुरके निकट लड़े। आजम परास्त होकर मारा गया।

(८) बहादुरशाह—औरङ्गजेबका दूसरा पुत्र मुअजिम अपने भाई आजमको रणभूमिमें मारकर सन् १७०७ में बहादुरशाहके नामसे गद्दीपर बैठा, जो शाह आलम भी कहलाता था। यह ६९ वर्षकी अवस्थामें मरगया।

(९) जहाँदारशाह—बहादुरशाहकी मृत्यु होनेपर उसका पुत्र जहाँदारशाह सन् १७१२ में दिल्लीका बादशाह हुआ। उसी साल उसके भतीजे फर्रुखसियरने बगावतकी, ५२ वर्षकी अवस्थामें जहाँदारशाह मारा गया।

(१०) फर्रुखसियर—यह बहादुरशाहके बेटे अजिमुलशाहका पुत्र था; सन् १७१२ में अपने चचा जहाँदारशाहको मारकर तख्तपर बैठ गया औरङ्गजेबके मरतेही सिक्ख, राजपूत और महाराष्ट्रोंने दिल्लीके राज्यको चारोंओरसे दबाना आरम्भ किया था। उसके पीछेके बादशाह, जिनको, फौजके सरदार और राज्यके बड़े कर्मचारियोंने गद्दीपर बैठाया था, परतन्त्र थे। सन् १७१५ में सम्पूर्ण राजपूताना पूरे तौरसे स्वतन्त्र बनगया। सन् १७१९ में मुगल राज्यके प्रधान कर्मचारी दो सैयदोंने फर्रुखसियरको, जो ३४ वर्षका जुवा था मारडाला।

(११) महम्मदशाह—फर्रुखसियरके मारे जानेपर १ वर्षमें ४ बादशाह हो चुके थे। उसके बाद सन् १७२० में जहाँदारशाहका पुत्र महम्मदशाहको राज गद्दी मिली। उस समयसे मुगल राज्यकी घटती औरभी अधिक होने लगी। महाराष्ट्रोंने दक्षिणी भारतमें जोर डालकर चौथ तहसील किया, मालवापर अपना अधिकार कर लिया और विंध्याचल पार होकर उत्तरीय भारतपर छापा मारा। दक्षिणके हाकिम निजामुलमुल्कने दक्षिणी भारतका बड़ा भाग दिल्ली-राज्यसे ले लिया। अवधका हाकिम स्वतन्त्र बनगया। सन् १७३८ में अफगानिस्तानका काबुल दिल्लीके राज्यसे अलग हो गया। सन् १७३९ में पारसके नादिरशाहने कर्नालके समीप महम्मद शाहको परास्त किया और ११ मार्चको दिल्लीमें आम कतलका हुक्म दिया। सूर्योदयसे दोपहर तक सम्पूर्ण शहरमें कतल जारी रहा। नादिरशाहने ५८ दिनों तक दिल्लीको लूटा। उसके पश्चात् ३२ करोड़की लूटकी। सम्पत्ति लेकर (प्रसिद्ध कोहनूर हीरा और तावुस तख्त भी थे) वह अपने देशको लौट गया। सन् १७४७ में अहमदशाह दुर्रानीने हिन्दपर आक्रमण किया। महम्मदशाह ४६ वर्षकी अवस्थामें मर गया।

(१२) अहमदशाह—महम्मदशाहके मरनेपर सन् १७४८ में उसका पुत्र अहमदशाह दिल्लीका बादशाह हुआ। इसके राज्यके समय सन् १७५१ में महाराष्ट्रोंने सूबे उडीसा और बङ्गाल देशको ले लिया। सन् १७५१–५२ में पारसके अहमदशाहने अपने दूसरे आक्रमणमें पञ्जाबको मुगलोंसे छीन लिया। सन् १७५४ में अहमदशाह गद्दीसे उतार दिया गया।

(१३) आलमगीर—अहमदशाहके तख्तसे उतार दिये जानेपर मगरुद्दीन जहाँदारशाहका पुत्र दूसरा आलमगीर सन् १७५४ में दिल्लीके तख्तपर बैठा। इसके राज्यके समय सन् १७५६ में अहमदशाहके तीसरे आक्रमणसे दिल्ली गारत होगई। सन् १७५९ में अहमदशाहका चौथा आक्रमण हुआ। आलमगीरको उसके वजीर गयासुद्दीनने मारडाला। महाराष्ट्रोंका उत्तरी भारतपर विजय और दिल्लीपर अधिकार हुआ।

(१४) शाह आलम (दूसरा)—आलमगीरके मारे जानेपर सन् १७५९ में उसका पुत्र जलालुद्दीन शाह आलमके नामसे केवल नामके लिये दिल्लीका बादशाह हुआ, जो सन् १७७१ ई० तक इलाहाबादमें अङ्गरेजोंकी पेंशिन खानेवाला बना रहा। सन् १७७१ई० में महाराष्ट्रोंने शाह आलमके बाप दादाओंके राज्यका थोड़ा भाग उसको लौटा दिया, परन्तु बागियोंने बादशाहकी आँख फोड़कर उसको कैदकर लिया। महाराष्ट्रोंने उसको कैदसे छुड़ाया। सन् १७८९ में महादाजी सिन्धियाने दिल्लीको अपने अधिकारमें कर लिया। अङ्गरेज महाराजने महाराष्ट्रोंको परास्त करनेके पश्चात् सन् १८०३के सितम्बरमें दिल्ली और शाह आलमको सिन्धियासे ले लिया। सन् १८०४के अकतूबरमें यशवन्तराव हुलकरने दिल्लीपर घेरा डाला था, परन्तु अङ्गरेजी गवर्नमेण्टने उसको बचाया। उस समयसे दिल्ली अङ्गरेजोंके आधीन हुई, मुगल बादशाह नामके लिये सन् १८५७ तक बादशाह बने रहे। शाह आलम ७८ वर्षकी अवस्थामें मर गया।

(१५) अकबर (दूसरा)—शाह आलमके मरने पर उसका पुत्र अकबर सन् १८०६ में अङ्गरेज महाराजके आधीन दिल्लीकी गद्दी पर बैठा। अकबर ७७ वर्षकी उमरमें मर गया।

(१६) महम्मद बहादुरशाह—अकबरकी मृत्यु होनेपर उसका बेटा महम्मद बहादुरशाह सन् १८३७ में अङ्गरेजोंके आधीन दिल्लीके तख्तपर बैठा जो अङ्गरेजीगवर्नमेण्टसे ८० हजार रुपया मासिक पेंशन पाता था।

सन् १८५७ की मईमें मेरटकी फौज बागी होकर दिल्लीमें पहुँची, उनके आनेपर दिल्लीकी हिन्दुस्तानी सेना उनमें मिलगई। उन्होंने गिर्जाओंका विनाश किया, प्रायः सम्पूर्ण कृस्तानोंको मार डाला और दिल्लीके महम्मदबहादुर शाहको अपना सरदार बनाया। अङ्गरेजोंसे इतनेही बन पड़ी कि उन्होंने मेगजीन उड़ा दिया। बगावत पश्चिमोत्तर देश और अवधमें बँगालेके जिलों तक फैल गई। दिल्ली एक प्रसिद्ध राजधानी थी, इस लिये चारोंओरसे बागी वहां पहुँचने लगे। अङ्गरेजी सरकारने तारीख आठवीं जूनको दिल्लीका घेरा आरम्भ किया। अगस्त महीनेमें जनरल निकलसन पञ्जाबसे मदद लेकर आया। तारीख १४ सितम्बरको अङ्गरेजी सेनाने शहर पर आक्रमण किया। ६ दिनोंतक शहरकी गलियोंमें सख्त लड़ाई होती रही। अङ्गरेजी सेना किसी समय ८ हजारसे अधिक

न थी और शहर पनाहके भीतर १४४ बड़ी तोपोंके साथ ३० हजारसे अधिक हथियार बन्द बागी थे, परन्तु बागी परास्त होगये और दिल्ली पर फिर अङ्गरेजोंका अधिकार हो गया। बे कायदे रिसालेके अफसर मेजर हाउसनने बूढ़े बादशाह महम्मद बहादुरशाह और उसके २ लड़कोंको हुमायूँके मकबरेमें जहां वे छिपे थे, जाकर पकड़ लिया। हाउसनने दोनों शाहजादोंको अपने हाथकी गोलिओंसे मार दिया। बादशाह कैद करके रंगून भेजा गया और सन् १६६२ में ८७ वर्षकी अवस्थामें वहांही मरगया। यद्यपि १८ महीनों तक बराबर जगह जगह लड़ाई होती रही, परन्तु दिल्लीकी जीत और लखनऊके घेरे हुए लोगोंके छुटकारा होनेपर बगावत निर्बल होगई। क्रम क्रमसे सम्पूर्ण शहर जीते गए। सन् १८५९ की जनवरी तक सम्पूर्ण बागी सरकारी राज्यसे बाहर भगा दिये गये।

बलबेसे पहले दिल्ली जिला पश्चिमोत्तर देशके आधीन था, परन्तु पीछे सन् १८५८ में पञ्जाब गवर्नमेंटके आधीन कर दिया गया।

सन् १८७७ की पहली जनवरीको भारतेश्वरी महारानी कीन विकटोरियाको एम्प्रेस अर्थात् राजराजेश्वरी पद प्राप्त करनेका महान् दरबार बड़े धूमधामसे दिल्लीमें हुआ।

इक्कीसवां अध्याय।
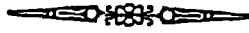
(पश्चिमोत्तर देशमें) सिकन्दराबाद, बुलन्दशहर खुर्जा, अलीगढ़, हाथरस, कासगंज, सोरों, बादाऊँ, एटा, मैनपुरी, फर्रुखाबाद, कन्नौज और बिठूर।

सिकन्दराबाद।

दिल्लीसे पूर्व-दक्षिण १३ मील गाजियाबाद जंक्शन और ३४ मील सिकन्दराबादका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे ४ मील उत्तर पश्चिमोत्तर देशके बुलन्दशहर जिलेमें तहसीलका सदर स्थान सिकन्दराबाद एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सिकन्दराबादमें १५२३१ मनुष्य थे; अर्थात् ९०५४ हिन्दू, ५८७६ मुसलमान २९१ जैन, ८ कृस्तान और २ सिक्ख।

सिकन्दराबादमें तहसील, कचहरी, पुलिस स्टेशन, खैराती अस्पताल, कई एक देवमन्दिर अनेक छोटी मसजिद और एक बड़ा जिमीदारका मकान है। पगड़ी, डुपट्टा और देशी पोशाक बनाई जाती है। चीन और गल्लेकी सौदागरी होती है।

इतिहास—दिल्लीके बादशाह सिकन्दर लोदीने सन् १४९८ ई० में सिकन्दराबादको बसाया। अकबरके राज्यके समय यह एक महालका सदर स्थान था; अवधके सूबेदार सयादतखाने सन् १७३६ ई० में यहाँ महाराष्ट्रोंको परास्त किया था। सन् १८५७ के बलवे के समय गूजर, राजपूत और मुसलमानोंने सिकन्दराबादपर आक्रमण करके इसको लूटा; किन्तु २७ सितम्बरको सरकारी सेनाने आकर बागियोंको खदेर दिया।

बुलन्दशहर

सिकन्दराबादसे ९ मील (दिल्लीसे ४३ मील) पूर्व-दक्षिण बुलन्दशहर रोडका रेलवे स्टेशन है, जिसको चोलाका स्टेशन भी कहते हैं। स्टेशनसे लगभग १० मील पूर्व पश्चिमोत्तर देशके मेरठ विभागमें काली नदीके पश्चिम बगलमें जिलेका सदर स्थान बुलन्दशहर एक कसबा है, जिसको बारनभी कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बुलन्दशहरमें १६९३१ मनुष्य थे; अर्थात् ८७२६ हिन्दू, ८०६८ मुसलमान, ८३ कृस्तान; ४६ जैन और ९ सिक्ख।

कसबा दो भागमें बटा है; पुराना कसबा ऊँची भूमिपर और नया कसबा पश्चिम ओर नीची भूमिपर है। बुलन्दशहरमें सरकारी कचहरियोंके विविध मकान, अस्पताल, जेलखाना इत्यादि और पहाड़ीके सिरपर तहसीली कचहरी है। सन् १८८० में चन्देके १६ हजार रुपयेके खर्चसे काली नदीके तीर एक उत्तम स्नानघाट बनाया गया। १ लाख रुपयेके खर्चसे एक बाजार बना है, जिसके निचले मञ्जिलकी दूकानोंकी दोहरी पंक्तियां नदीकी बाढ़के समय बांधका काम देती हैं। २२ हजार रुपयेके खर्चसे टाउनहाल बना है; यह कसबा बहुत शीघ्रतासे उन्नत हुआ है। सन् १८७८ में यह मट्टीकी दीवारोंका एक गांव था, किन्तु अब ईटों और पत्थरोंका बना हुआ कसबा होगया है; यहां अकबरके एक अफसर बहलोलखांकी पुरानी कबर और एक बहुत सादी जामा मसजिद है और ऊनी कपड़े अच्छे बनते हैं।

बुलन्दशहर जिला—जिलेका क्षेत्रफल १९४१ वर्गमील है। इसके उत्तर मेरठ जिला, पश्चिम यमुना नदी, दक्षिण अलीगढ़ जिला और पूर्व गङ्गा है। गङ्गाकी नहर जिलेकी सम्पूर्ण लम्बाईमें उत्तरसे दक्षिण गई है; इसकी ३ बड़ी शाखा हैं। जिलेमें पूर्वोत्तरकी सीमापर ४५ मील गङ्गा और दक्षिण-पश्चिमकी सीमाके साथ ५० मील यमुना बहती है। काली नामक एकछोटी नदी उत्तर मेरठ जिलेसे इस जिलेमें प्रवेश करके जिलेको दो भागोंमें विभक्त करती हुई अलीगढ़ जिलेमें गई है।

इस जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ९५०३७६ मनुष्य थे; अर्थात ५०१८१९ पुरुष और ४४८५५७ स्त्रियां और सन् १८८१ में ९२४८२२ थे; अर्थात् ७४८२५६ हिन्दू, १७५४५८ मुसलमान, ९६७ जैन, ११५ कृस्तान, २४ सिक्ख और २ पारसी। जातिकी संख्यामें १५१५४१ चमार, ९३२६५ ब्राह्मण, ७७३३ राजपूत, ५३३८० जाट, ५०७१० गूजर, ५०१५० लोधी थे। राजपूत और गूजरोंमें मुसलमान भी बहुत हैं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बुलन्दशहर जिलेके कसबे खुर्जामें २६३४९, बुलन्दशहरमें १६९३१, सिकन्दराबादमें १५२३१, शिकारपुरमें ११५९६ और जहांगिराबाद, अनूपशहर, दीवाई, सेयाना, जेवरा, में इनसे कम मनुष्य थे। पहले इस जिलेके बहुतेरे लोग अपने बच्चे लड़कियोंको मार देते थे; अङ्गरेज महाराजने जोरडाल कर इस रिवाजको बन्द कर दिया।

शिकारपुर—बुलन्दशहर कसबेसे १३ मील दक्षिण-पूर्व इस जिलेका शिकारपुर उन्नति करता हुआ कसबा है, जिसको लगभग १५०० ई० में सिकन्दर लोदीने बसाया। शिकारपुर

में अनेक अच्छे मकान, मन्दिर मसजिद, एक पुरानी सराय और कसवेसे लगभग ५०० गज उत्तर एक पुराना किला है।

अनूपशहर–शिकारपुरसे लगभग १० मील दक्षिण काली नदीके पश्चिम वगलमें वुलन्दशहर जिलेमें तहसीलका सदर स्थान अनूपशहर कसवा है, जिसको सत्रहवीं सदीमें जहाँगीरके राज्यके समय अनूपरायने वसाया था। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इस कसवेमें ८२३४ मनुष्य थे। यहाँ तहसील कचहरी, अस्पताल, एक सराय, मसजिद और कई एक छोटे मन्दिर हैं। कपड़ा, कम्वल, जूता, वैलगाड़ी और सावुन तैयार होते हैं। कसवेकी आवादी घटरही है।

इतिहास—ऐसी कहावत है कि वुलंदशहरका जिला हस्तिनापुरके पांडवोंके राज्यका एक भाग था; जव हस्तिनापुरको गङ्गा वहाले गई; तव अहर नामक पुराने गांवका रहने वाला एक राज्य कर्मचारी इस देशका शासन करता था। वुलन्दशहर, जिसको वारन भी कहते हैं वहुत पुराना कसवा है। अव तक वड़े सिकन्दरके सिक्के कसवेमें और इसके चारोंओर मिलते हैं। लेखोंसे यह निश्चय होता है कि सन् ईस्वीकी तीसरी सदीमें गुप्तवंशके राजा इस जिलेपर हुकूमत करते थे। सन् १००८ ई० में गजनीके महमूदने वारनपर चढ़ाईकी; उस समय वारनका हरदत्त नामक डोर राजा भय खाकर मुसलमान होगया। सन् ११९३ में कुतवुद्दीनने वारनके राजा चन्द्रसेनको परास्त करके कसवेको ले लिया। चौदहवीं सदीमें वहुतर राजपूत यहाँके मेओ जातियोंको खेदरकर वस गये। अठारहवीं सदीमें महाराष्ट्रोंने कोइलमें रहकर वारनपर हुकूमत की थी। अङ्गरेजी गवर्नमेंटने सन् १८०३ में जव कोइलको ले लिया, तव वुलन्दशहर और चारोंओरको जगह नया जिला वना। सन् १८२३ में अलीगढ़के उत्तरीय परगने और मेरठके दक्षिणी परगने मिलकर वुलंदशहर जिला वना। सन् १८५७ क वलवेके समय २१ वीं मईको नवीं देशीपैदलकी सेना वागी हुई। अङ्गरेजी अफसर मेरठ भाग गये। वागी गूजरोंने वुलन्दशहर कसवेको लूटा। मालागढ़का वलीदादखाँ वागियोंका सरदार वना। जुलाईके आरम्भसे सितम्वरके अन्त तक वुलन्दशहर वलीदादखाँके अधिकारमें था। पश्चात् जव गाजियावादसे अङ्गरेजी फौज आई; तव वलीदादखाँ एक वड़ी लड़ाई करनेके वाद गङ्गा पार भाग गया। चौथी अकतूवरको जिलेपर अङ्गरेजी अधिकार फिर होगया।

खुर्जा।

वुलन्दशहर रोडके स्टेशनसे ९ मील (दिल्लीसे ५२ मील) पूर्व-दक्षिण खुर्जाका रेलवे स्टेशन है। पश्चिमोत्तर देशके वुलन्दशहर जिलेमें रेलवे स्टेशनसे ३½ मील उत्तर तहसीलका सदर स्थान और जिलेमें सबसे बड़ा कसबा खुर्जा है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय खुर्जामें २६३४९ मनुष्य थे; अर्थात् १३५९४ पुरुष और १२७५५ स्त्रियां। इनमें १४७८२ हिन्दू, ११३२९ मुसलमान, २३० जैन और ८ कृस्तान थे।

खुर्जा इस जिलेमें प्रसिद्ध सौदागरीका स्थान है। कसवेके प्रधान निवासी चूरूवाल वनिया जिनमें वहुतेरे धनी कोठीवाल हैं और पठान हैं। कसवेमें एक सुन्दर नया जैन मन्दिर और १२ हजार रुपयेके खर्चसे बना हुआ २०० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा एक तालाब,

जिसमें गङ्गाकी नहरसे पानी आता है, देखनेमें आते हैं। हालमें १ लाख रुपयेके खर्चसे एक बाजार बनवाया गया है। इनके अलावे खुर्जामें तहसील, पुलिसस्टेशन, स्कूल, अस्पताल और टाउनहाल है। खुर्जामें अङ्गरेजी चीज, धातु, देशी कपड़ा, और पीतलके वर्तन दूसरे स्थानोंसे आते हैं और नील, चीनी, गल्ले, घी इत्यादिकी यहाँ सौदागरी होती है।

अलीगढ़।

खुर्जासे २७ मील (दिल्लीसे ७९ मील) पूर्व-दक्षिण अलीगढ़का रेलवे जंक्शन है। पश्चिमोत्तर देशके मेरठ विभागमें (२७ अंश ५५ कला ४१ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश ६ कला ८५ विकला पूर्व देशान्तरमें) जिलेका सदर स्थान अलीगढ़ एक छोटा शहर है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय कोइल कसबेके साथ अलीगढ़में ६१४८५ मनुष्य थे; अर्थात् ३२८४३ पुरुप और २८६४२ स्त्रियाँ। इनमें ३७८५५ हिन्दू, ३२६०९ मुसलमान, ६९२ जैन, २६३ क्रुस्तान, ५४ सिक्ख, १२ पारसी थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारत वर्पमें ५९ वाँ और पश्चिमोत्तर देशमें १३ वाँ शहर है।

अलीगढ़की शहरतली कोइलमें डोर राजपूतोंके पुराने गढ़के ऊँचे टीले पर सन् १७२८ की बनी हुई सावितखांकी मसजिद है। मसजिदके सिरपर ५ गुम्बज और ४ मीनार बने हुए हैं। इसके दक्षिण-पूर्व मोती मसजिद खड़ी है। शहरमें लगभग १०० इमाम बाड़े, ईदगाहके निकट ओसूखाँका सुन्दर मकबरा, सावितखाँकी मसजिदसे $\frac{1}{4}$ मील पश्चिम कवरोंका वडा झुण्ड, ईष्टइण्डियन रेलवेके उत्तर वगल पर सिविल कचहरियां किलेसे $1\frac{1}{2}$ मील दक्षिण जेलखाना और शहरमें एक उत्तम सरोवरके किनारोंपर कई एक छोटे मन्दिर हैं। इनके अलावे अलीगढ़में गिर्जा और कई एक अस्पताल हैं। इस शहरमें गल्ले सोरा, सतरंजी, कपड़ा, दाल, घी और रूईकी वड़ी तिजारत होती है।

कालिज—रेलवे स्टेशनसे लगभग १ मील दूर बड़े दरजेके मुसलमानोंके पढ़नेके लिये मुसलमानोंका प्रसिद्ध कालिज बना है, यह अलीगढ़के प्रसिद्ध सर शैयद अहमदखाँ क० सी० एस० आईके उद्योगसे नियत हुआ और सन् १८७५ ई० में खुला। कालिजकी इमारत 'कैम्ब्रिज' कालिजके ढाचेकी बनी है। इसके चारोंओर १०० एकड़ भूमि है। इसमें कालिज और स्कूल दोनों हैं। एक प्रिन्सिपल और बहुतेरे प्रोफेसर तथा माष्टरोंके आधीन कालिज डिपार्टमेंटमें लगभग २०० और स्कूल डिपार्टमेंटमें प्रायः ३५० भारतवर्पके सम्पूर्ण विभागोंके लड़के पढ़ते हैं। इसमें अङ्गरेजी, संस्कृत, अरवी, फारसी, इत्यादिकी शिक्षा दी जाती है और खेलका अभ्यास भी कराया जाता है। अङ्गरेजी गवर्नमेंटसे इस कालिजका कोई सम्बन्ध नहीं है। इसके प्रबन्धके लिये मुसलमान 'मेंबरों' का एक दल है। गवर्नमेंटके कालिजोंकी चालके विरुद्ध इसमें मुसलमानी मजहबकी शिक्षा भी दी जाती है।

किला—शहरसे २ मील उत्तर अलीगढ़का पुराना किला है, जिसको रामगढ़का किला भी कहते हैं। यह किला सन् १५२४ में बना और अठारहवीं सदीमें फ्रेंच इञ्जिनियरों द्वारा फिरसे सुधारा गया। किलेके भीतरकी भूमि २० एकड़ है; जिसके चारोंओर १८ फीट गहरी और ८० फीटसे १०० तक चौड़ी खाई बनी हुई है। किलेके उत्तर वगलमें प्रधान दरवाजा खड़ा है। किलेके एक लेखसे जान पड़ता है कि इब्राहीम लोदीके

राज्यके समय सन् १५२४ ई० में यह किला बना था; इसके बारक गिरा दिये गये हैं अब इसमें फौज नहीं रहती है।

मेला—माघी पूर्णिमाके लगभग अलीगढ़में एक मेला होता है। मैलेके समय घांसका एक छोटा नगर बनाया जाता है; उसके चारोंओर सैकड़ों खीमे खड़े होते हैं। दुकानदार लोग हिन्दुस्तानी कारीगरीके वर्तन इत्यादि सुन्दर सामान बेंचने तथा दिखलानेके लिये ले आते हैं; उस समय घोड़ोंका मेला, खेतीका सामान और पैदावारकी नुमाइश, घोड़दौड़, कसरत और दूसरे अनेक तमाशे, जिसमें अङ्गरेज और देशी लोग शामिल रहते हैं, होते हैं।

अलीगढ़ जिला—इस जिलेका क्षेत्रफल १९५५ वर्ग मील है। यह मेरठ विभागके दक्षिणका जिला है। इसके उत्तर बुलन्दशहर जिला पूर्व एटा जिला दक्षिण मथुरा जिला और पश्चिम यमुना नदी और मथुरा जिला है। गंगाकी नहर जिलेमें होकर उत्तरसे दक्षिणको बहती हैं, अङ्गरेजी अधिकारसे पहले इस जिलेमें वड़ा वन था, जो अव तेजीसे घट रहाहै। जिलेमें आम इत्यादि फलोंके वृक्ष कम हैं। वृक्षोंकी बढ़ती होनेके लिये गवर्नमेंटने बागोंकी मालगुजारी घटादी है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय अलीगढ़ जिलेमें १०४२००६ मनुष्य थे; अर्थात् ५५७३३२ पुरुष और ४८४६७४ स्त्रियां और सन् १८८१में १०२११८७ मनुष्य थे; अर्थात् ९०११४४ हिन्दू, ११७३३९ मुसलमान, २३७७ जैन; २८९ कृस्तान, २८ सिक्ख और १० पारसी। जातियोंके खानेमें १७२४५१ चमार, १३६६६४ ब्राह्मण, ८३६०५ जाट, ७५८४१ राजपूत, ५०८१७ बनिया, ३७३३१ लोधी, ३१९०६ गडरिया, २९५२१ कोली थे। सन् १८९१ में इस जिलेके कसबे अलीगढ़में ६१४८५, हाथरसमें ३९१८१ अतरवलीमें १५४०८ और सिकन्दराराऊमें १३०२४ मनुष्य थे, इनके अलावे इस जिलेमें जलाली, टपाल और हरदोआगञ्ज छोटे कसबे हैं।

इतिहास—कोइल बहुत पुराना कसबा है, एक किस्सेसे जान पड़ता है कि एक चन्द्रवंशी राजपूतने कोइलको बसाया। पहले यह जिला डोर राजपूतोंके अधिकारमें था। कोइलमें अवतक डोर राजपूतोंकी गढ़ीकी निशानी, जिसपर सावितखाँकी मसजिद बनी है, विद्यमान है। सन् ११९४ ई० में कुतबुद्दीनने दिल्लीसे चलकर कोइलके हिन्दू राजाको परास्त करके कसबेको लूटा। सन् १२५२में कोइलके गवर्नर गयासुद्दीन बलबनने एक बड़ा मीनार बनवाया, था, जो सन् १८६२ में गिरगया। पन्द्रहवीं सदीमें दिल्ली और जौनपुरकी सेना कोइलमें लड़ी थी। बाबरने एक मुसलमानको कोइलका गवर्नर बनाया था। मुगल बादशाहोंके राज्यके समय कोइलमें बहुतेरी मसजिदें और मकबरे बने थे, जो अवतक विद्यमान हैं। औरंगजेबके मरनेपर जिला महाराष्ट्रोंका शिकार हुआ। उसके पश्चात् सन् १७५७ ई० के लगभग जाटोंके प्रधान सूर्यमलने कोइलपर अधिकार किया। सन् १७५९ में अहमदशाह अफगानने कोइलसे जाटोंको निकाला। सन् १७७६ में नाजफखाँने रामगढ़के पुराने किलेकी मरम्मत करवाई और कसबेका नाम अलीगढ़ रक्खा। सन् १७८५ के लगभग सिन्धियाने अलीगढ़को ले लिया और इससे नकद तथा जवाहिरात लगभग १ किरोड़ रुपयेका पाया। सन् १८०३ में अङ्गरेजी गवर्नमेन्टने अलीगढ़के जिलेपर अपना अधिकार करलिया। जब

सन् १८५७ में मेरठके बलवेकी खबर अलीगढ़में पहुँची; तब तारीख १२ वीं मईको पल्टनके ३०० सिपाही हिफाजतके लिये तैनात किये गये, किन्तु वे तारीख १९ को वागी हो गये. उन्होंने पड़ोसके गावोंके मेवाटी लोग और अन्य वागियोंमें मिलकर शहरको लूटा। पीछे अङ्गरेजी फौजने आकर जिलेसे वागियोंको निकाल दिया।

अलीगढ़ जंक्शनसे ३० मील पूर्वोत्तर 'अवध रुहेलखण्ड रेलवे' की शाखापर गङ्गाके दहिने किनारे राजघाटका रेलवे स्टेशन है; यहाँ गङ्गापर रेलवेका पुल बना है और प्रतिवर्ष कार्त्तिकी पूर्णिमाको गङ्गास्नानका मेला होता है।

हाथरस।

अलीगढ़से १८ मील दक्षिण (दिल्लीसे ९७ मील पूर्व-दक्षिण) हाथरसमें रेलवेका जंक्शन है। जंक्शनके स्टेशनसे ५ मील दूर शहरका स्टेशन बना है। जंक्शनके निकट राजाकी धर्मशाला है। हाथरससे सड़क द्वारा २१ मील उत्तर अलीगढ़ और २९ मील दक्षिण आगरा है। पश्चिमोत्तर देशके अलीगढ़ जिलेमें तहसीलका सदर स्थान हाथरस एक कसबा है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय हाथरसमें ३९१८१ मनुष्य थे; अर्थात् २१०६६ पुरुष और १८११५ स्त्रियां। इनमें ३३७०९ हिन्दू, ५०३२ मुसल्मान, ४३४ जैन, १३ क्रस्तान, २ पारसी और एक सिक्ख थे।

हाथरस तिजारती कसबा है, इसमें पत्थर और ईंटोके बहुतेरे मकान बने हैं। कसबेके चारोंओर चौड़ी पक्की सड़क और इसके मध्यमें १ सड़क पूर्वसे पश्चिमको और २ सड़कें उसको काटती हुई उत्तर दक्षिणको गई हैं, इसभांति कसबेके ६ महल्ले बनते हैं। एक नये तलावके किनारेपर म्युनिसिपल आफिस और स्कूलका मकान बना है। कसबेमें एक खैराती अस्पताल और पोष्टआफिस है। लकड़ी और पत्थरकी नकाशीके कामके लिये हाथरस प्रसिद्ध है; यहाँसे चीनी, गल्ले, घी और तेलके बीज दूसरे कसबोंमें भेजे जाते हैं। लोहा, धातके वर्तन, कपड़ा, मसाला इत्यादि चीजें दूसरे स्थानोंसे यहाँ आती हैं।

हाथरससे रेलवे लाईन ४ ओर गई है;—पूर्व थोड़ा दक्षिण कासगंज, फर्रुखावाद, कन्नौज कानपुर; पूर्व-दक्षिण तुण्डला, इटावा, कानपुर, पश्चिम कुछ दक्षिण मथुरा, और और पश्चिमोत्तर अलीगढ़, गाजियाबाद और दिल्ली।

इतिहास—अठारहवीं सदीके अन्तमें हाथरस ठाकुर दयाराम जाटके अधिकारमें था, उसका उजड़ा हुआ किला कसबेके पूर्व अब तक खड़ा है। सन् १८१७ में अङ्गरेजोंने हाथरसके किलेको दयारामसे छीन लिया। अङ्गरेजी अधिकार होनेके पीछे हाथरसकी तिजारत बड़ी तेजीसे बढ़ गई। तुलसीसाहब सन्तभी यहींपर रहते थे; जिनके घटरामायण इत्यादिक ग्रन्थ बनाये हुए हैं।

कासगंज।

हाथरस जंक्शनसे ३४ मील पूर्व कासगंजका रेलवे जंक्शन है। पश्चिमोत्तर देशके एटा जिलेमें काली नदीसे ½ मील पश्चिमोत्तर एटा जिलेमें प्रधान तिजारती स्थान कासगंज है। काली नदीपर, जिसको कालिन्दी भी कहते हैं, रेलवेका पुल बना है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय कासगंजमें १६०५० मनुष्य थे; अर्थात् १०९३३ हिन्दू, ४९४६ मुसलमान, ८४ जैन, ६५ कृस्तान, ३२ सिक्ख और १ पारसी ।

प्रधान सड़क कसबे होकर उत्तरसे दक्षिण और दूसरी सड़क इसको काटती हुई पूर्वसे पश्चिम गई है । सड़कोंपर सुन्दर दुकानें बनी हैं । कसबेमें ईटोंके बहुत मकान हैं । प्रधान बाजार हालमें बना है । मुसलमानी महल्लेमें बहुतेरे मीनारों और अजीब छतके साथ एक सुन्दर मसजिद है; इनके अलावे कासगंजमें मुनसफी कचहरी, पुलिस स्टेशन, अस्पताल, तहसील और स्कूल हैं और चीनी, घी, तेलके बीज और देशी पैदावारकी तिजारत, जो बढ़तीपर है, होती है ।

इतिहास—अवधके वजीरके आधीन बहादुरखाँने अठारहवीं सदीमें कासगंजको बसाया; पीछे उसके उत्तराधिकारीने कर्नल जेम्स गार्डनके हाथ इसको बेचदिया, उसके पश्चात् यह उसके एजेंट मृतराजा दिलसुखरायके हस्तगत हुआ ।

सोरों ।

कासगंजसे ९ मील पूर्वोत्तर सोरों तक रेलवेकी शाखा गई है । एटा जिलेमें गङ्गासे ५ मील दहिने सोरों एक तीर्थ है । सन् १८९१ की जन-संख्याके समय सोरों कसबेमें ११२६५ मनुष्य थे; अर्थात् ९६१६ हिन्दू, १६१२ मुसलमान, और ३७ कृस्तान । गङ्गाकी छोड़ी हुई धाराके किनारेपर, जो वर्षाकालमें गङ्गासे मिलती है, दूरतक बहुतेरे पक्के घाट बने हैं । घाटोंके समीप अनेक देवमन्दिर स्थित हैं, इनमें बाराहजीका मन्दिर प्रधान है । शिखरदार मन्दिरमें शुक्ल वर्ण बाराहजीकी चतुर्भुज प्रतिमाका दर्शन होता है; इनके मुखपर पृथ्वीका आकार और वाम भागमें लक्ष्मीजी स्थित हैं । दूसरे स्थानोंके एक मंदिरमें गङ्गाजी, भगीरथ और शिवकी प्रतिमायें एक मन्दिरमें द्वारकाधीश और एक मन्दिरमें राम और जानकी हैं । सोरों तीर्थकी परिक्रमा ३ कोसकी है; यहाँके बाजारमें सब आवश्यकीय वस्तुएँ मिलती हैं । पण्डे विशेष करके सनाढ्य ब्राह्मण हैं । प्रतिवर्ष अगहन सुदी एकादशीको यहाँ स्नान दर्शनका मेला होता है ।

सोरोंको बाराहतीर्थ भी कहते हैं । भारतभ्रमणके तीसरे खण्डमें तिरहुतके उत्तरके बाराहक्षेत्रका वृतान्त लिखा गया है ।

बदाऊँ ।

सोरोंके रेलवे स्टेशनसे लगभग २५ मील पूर्वोत्तर स्वात नदीके बायें किनारेसे एक मील दूर पश्चिमोत्तर देशके रुहेलखण्डमें जिलेका सदरस्थान बदाऊं कसबा है । वहाँ अभी रेल नहीं गई है ।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय बदाऊँमें ३५३७२ मनुष्य थे; अर्थात् १७१८७ पुरुष और १८१८५ स्त्रियां । इनमें २०७७० मुसलमान, १४४६२ हिन्दू, १३९ कृस्तान और १ सिक्ख थे ।

बदाऊँमें एक पुराना और दूसरा नया कसबा है । पुराना कसबा ऊँची भूमिपर स्थित है; इसमें एक उजड़ा पुजड़ा पुराना किला और पत्थरकी एक खूबसूरत मसजिद, जो पूर्व समयमें हिन्दुओंका मन्दिर थी, देखनेमें आती है । बदाऊँमें मामूली जिलेकी कचहरियोंके

अलावे जेलखाना, स्कूल, अस्पताल, म्युनिसिपल मकान और एक गिर्जा है । कसबेकी सड़कें पक्की बनी हुई हैं ।

बदाऊँ जिला—बदाऊँ जिलेका क्षेत्रफल २००१ वर्गमील है । यह रुहेलखण्ड विभागके दक्षिण-पश्चिममें स्थित है । इसके पूर्वोत्तर बरैली जिला और रामपुरका राज्य, पश्चिमोत्तर मुरादाबाद जिला, दक्षिण-पश्चिम गंगा नदी और पूर्व शाहजहांपुर जिला है । स्वात नदी इस जिलेको दो भागोंमें विभक्त करती है । जिलेमें जङ्गल और बिना जोती हुई भूमि बहुत है और गंगा, रामगंगा और स्वात नदी बहती है; इनके अतिरिक्त कई छोटी नदियां हैं ।

सन् १८९१ की मनुष्य गणनाके समय बदाऊँ जिलेमें ९२४३११ मनुष्य थे, अर्थात् ४९७५८१ पुरुष और ४२६७४० स्त्रियां और सन् १८८१ में ९०६४५१ मनुष्य थे; अर्थात् ७६७२५५ हिन्दू, १३८६८७ मुसलमान, १६० जैन, ४० सिक्ख और ३०९ कृस्तान तथा दूसरे । जातियोंके खानेमें १३३०८५ अहर, १२२०८५ चमार, १०७२३० काछी, ६३५६२ राजपूत, ६०८६३ ब्राह्मण, ३७१४६ कहार, ३२४८० बनिया । इस जिलेमें नीचे लिखे हुए कसबे हैं,—बदाऊँ (जन-संख्या सन् १८९१ में ३५३७२); सहसवान (जन-संख्या सन् १८९१ में १५६०१); उझनी, बिलासी, इसलामनगर, आलापुर, ककराला और बिसवली । बिसवलीमें एक सुन्दर मसजिद और दूसरी कई एक पठानोंकी इमारतें हैं ।

इतिहास—अहर राजा बुद्धने सन् ९०५ ई० के लगभग बदाऊँ कसबेको बसाया; उसीके नामसे बदाऊँ नामकी सृष्टि है; इस जिलेके सम्पूर्ण जङ्गली देशोंमें अबतक अहर जातिके लोग बहुत बसते हैं । सन् १०२८ में गजनीके महमूदके कर्मचारी सैयद सालार मसाउदगाजीने राजा बुद्धकी सन्तानोंको देशसे बेदखल करके कुछ दिनों तक बदाऊँमें रहा; परन्तु पीछे हिन्दुओंके झगड़ेसे विवश होकर उसको यह देश छोड़ देना पड़ा । सन् ११९६ में कुतबुद्दीन ऐबकने राजाको मारकर बदाऊँ कसबेको लूटा और किलेको ले लिया इसके उपरान्त कई बादशाहोंके आधीन होनेके पीछे सन् १५५६ में यह देश अकबरके अधिकारमें आया । पठान और मुगल बादशाहोंके राज्यके समय यह कसबा एक सूबेका सदर स्थान था । सन् १५७१ में आग लगनेसे प्रायः सम्पूर्ण कसबा बरबाद हो गया । शाहजहांके राज्यके समय सूबेका सदर स्थान बरेली बनी । सन् १७१९ के पीछे फर्रुखाबादके नव्वावने बदाऊँको लेलिया, परन्तु ३० वर्षके पीछे हाफिजरहमत रोहिलाने उसके पुत्रसे इसको छीन लिया; उसके बाद यह सन् १७७४ में अवधके नव्वावके और सन् १८०१ में अङ्गरेजोंके आधीन हुआ । लगभग सन् १८३८ में बदाऊँ कसबा जिलेका सदर स्थान बना । सन् १८५७ की मईके अन्तमें खजानेके रक्षक सिपाही बागी हो गये; बागियोंने खजाना लूट लिया, सिविल स्टेशनको जलाया और कैदियोंको छोड़ दिया । जिलेमें बगावत फैली । जिलेके मुखिया लोग परस्पर लड़ने लगे । सन् १८५८ की ता० १७ अपरैलको अङ्गरेजी सेनाने ककरालाके निकट बागियोंको परास्त किया । तारीख १३ वीं मईको बदाऊँ पर फिर अंङ्गरेजी अधिकार हो गया ।

एटा।

कासगञ्जके रेलवे स्टेशनसे १९ मील दक्षिण काली नदीके ९ मील पश्चिम आगरा विभागमें जिलेका सदर स्थान एटा एक कसबा है।

सन् १८८१ की जन-संख्याके समय एटा कसबेमें ८०५४ मनुष्य थे; अर्थात् ५२११ हिन्दू, २३११ मुसलमान ४९२ जैन, ३१ क्रस्तान और ९ दूसरे।

एटाका प्रधान बाजार एटाके कलक्टर मिष्टर एफ० ओ० मैनीके नामसे मैनीगञ्ज कहा जाता है। पश्चिम ओर एटाके नए कसबेमें दलसुखरायका एक सुन्दर शिखरदार मन्दिर और एक स्कूल है। इनके अतिरिक्त एटामें एक सुन्दर सरोवर, जिसमें पक्की सीढ़ियां बनी हैं, तहसील कचहरी, म्युनिसिपल हाल, अस्पताल और जिलेकी कचहरियां हैं। कसबेके उत्तर पांचसौ वर्षका बना हुआ संग्रामसिंहनामक चौहान ठाकुरका मट्टीका किला स्थित है; यहाँ सप्ताहमें सोमवार और वृहस्पतिवारको बाजार लगता है और किरमिजी, नीलके बीज और चीनीकी खास तिजारत होती है।

एटा जिला—जिलेका क्षेत्रफल १७३८ वर्ग मील है; इसके उत्तर गंगा नदी, बाद बदाऊँ जिला, पश्चिम अलीगढ़ जिला और आगरा जिला, दक्षिण मैनपुरी जिला और पूर्व फर्रुखाबाद जिला हैं। जिलेका सदर स्थान एटा कसबेमें है किन्तु आबादी और तिजारतमें कासगञ्ज प्रधान है; इस जिलेमें वृक्ष बहुत कम हैं। जिलेके क्षेत्रफलके $\frac{1}{3}$ भाग बिना जोता हुआ पड़ा है।

एटा जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ७०१९३३ मनुष्य बसते थे; अर्थात् ३८२९२४ पुरुष और ३१९००९ स्त्रियां और सन् १८८१ में ७५६५२३ मनुष्य थे; अर्थात् ६७४४६३ हिन्दू, ७६७७४ मुसलमान, ५१५२ जैन, ११७ क्रस्तान, १६ सिक्ख और १ यहूदी। जातियोंके खानेमें ७७८१९ अहीर, ७२५४९ लोधी, ७२२५८ काछी, ६७३७१ राजपूत, ६२०६५ ब्राह्मण, ५७१२० चमार, २८६६० गड़ेरिया, २७६३२ बनिया थे। इस जिलेमें ये कसबे हैं;—कासगंज (जन-संख्या सन् १८९१ में १६०५०), जलेशर (जन-संख्या १८९१ में १३४२०) सोरों (जन-संख्या १८९१ में ११२६५), मरहरा, एटा, अलीगंज और आवा।

इतिहास—सन् ई० के पांचवीं और सातवीं सदीमें चीनके बौद्ध यात्रियोंने इस जिलेमें बहुत मन्दिर और मठ देखे थे। छठवीं सदीसे दसवीं सदी तक एटा अहीर और भरोंके अधिकारमें था। पीछे राजपूतोंने इसपर अधिकार किया। सन्१०१७ से एटा मुसलमानोंके आधीन हुआ। सोलहवीं सदीमें यह अकबरके और अठारहवींमें अवधके वजीरके हस्तगत हुआ। सन् १८०१—१८०२ में अङ्गरेजोंने इसपर अधिकार कर लिया। सन् १८५६ में एटा कसवा जिलेका सदर स्थान बना। सन् १८५७ के बलवेके समय एटाके हाकिम भाग गये। संग्रामसिंहके वंशधर एटाका राजा डामरसिंह जिलेके दक्षिण भागमें स्वाधीन हुकूमत करनेवाला बना और दूसरे कई आदमियोंने भी जगह २ अपना अधिकार नियत किया। जुलाईके अन्तमें फर्रुखाबादके नवाबने साधारण प्रकारसे कई महीनोंके लिये देशको अपने अधिकारमें किया पीछे सरकारी सेना आनेपर बागी लोग चलेगये। एटा और अलीगढ़के लिये एक खास कमिश्नर नियत किया गया, किन्तु सरकारी सेना कम रहनेके कारण बागियोंने

कासगंजको नहीं छोड़ा; उसके पीछे ता० १५ वीं दिसम्बरको सरकारी सेनाने गङ्गीरीमें बागियोंको परास्त करके कासगंजपर अधिकार कर लिया।

मैनपुरी।

एटा कसबेसे लगभग १० मील दक्षिण-पूर्व पश्चिमोत्तर देशके आगरा विभागमें जिलेका सदर स्थान मैनपुरी एक कसबा है। वहाँ अभी रेल नहीं गई है। 'ईष्टइण्डियन रेलवे' के शिकोहाबाद स्टेशनसे पक्की सड़क द्वारा ३४ मील पूर्व मैनपुरी कसबा है। सड़कपर डाकगाड़ी चलती है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय मैनपुरीमें १८५५१ मनुष्य थे; अर्थात् १३९१०हिन्दू, ४००० मुसलमान, ४९२ जैन, ७८ सिक्ख और ७१ कृस्तान।

शिकोहाबादवाली सड़कके दोनों बगलोंमें प्रधान बाजारको दुकानें बनी हुई हैं। दरवाजेके पास तहसीली कचहरी और पुलिस स्टेशन; सड़कसे थोड़ी दूर अस्पताल, रायकसगंजमें एक बड़ी सराय और गल्लेका बाजार है, कसबा दो भागोंमें बंटा है। खास मैनपुरीमें ईंटोंके बहुत मकान हैं। लेनगंजमें बहुतेरी दुकान, एक बाजार, एक तालाब और स्कूल बने हुए हैं। सिविल स्टेशन एक नदीके दूसरे पार बना है। नदीपर एक सुन्दर पुल बना हुआ है, इनके अलावे मैनपुरीमें अफीमका गोदाम, जेलखाना, एक मिशन, एक गिर्जा, दो स्कूल और २ सरकारी बाग हैं। कसबेमें नीलके बीज, लोहे और देशी पैदावारकी बड़ी सौदागरी होती है और लकड़ीके अच्छे काम बनते हैं।

मैनपुरी जिला—जिलेका क्षेत्रफल १६९७ वर्गमील है। इसके उत्तर एटा जिला, पूर्व फर्रुखाबाद जिला, दक्षिण इटावा जिला और यमुना नदी और पश्चिम आगरा जिला और मथुरा जिला है। जिलेमें काली नदी और इसना नदी बहती है और गङ्गा नहरकी कई एक शाखा खेतोंको पटाती हैं।

जिलेमें सन् १८९१ की जन-संख्याके समय ७६००६९ मनुष्य थे; अर्थात् ४१५७६६ पुरुष और ३४४३०३ स्त्रियां और सन् १८८१ में ८०१२१६ थे; अर्थात् ७४९१३९ हिन्दू ४५०६८ मुसलमान; ६८६७ जैन, १४० कृस्तान और २ सिक्ख। जातियोंके खानेमें १३६५६३ अहीर, १०६७७० चमार, ७४६४३ काछी, ६४८०३ ब्राह्मण, ६३१४१ राजपूत ५६५०१ लोधी, २९७८७ गड़ेरिया थे। इस जिलेमें मैनपुरी साधारण कसबा (जन-संख्या सन् १८९१ में १८५५१) और शिकोहाबाद, कढला, भौगान और कुरवली छोटे कसबे हैं।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि हस्तिनापुरके पाण्डवोंके समय मैनपुरी कसबा विद्यमान था। मैनदेवके नामसे, जिसकी प्रतिमा शहरतली बस्तीमें देखी जाती है, इसका नाम मैनपुरी पड़ा था। बौद्ध रिमेंस टीलोंमें मिलते हैं। सन् १३६३ में चौहान राजपूतोंने असवलीसे मैनपुरी में आकर एक किला बनाया, जिसके चारोंओर एक नगर बस गया। सन् १५२६ में बाबरने मैनपुरी और इटावेको अपने अधिकारमें किया, उसके पश्चात् शेरशाहके पुत्र कुतबखांने मैनपुरीपर अधिकार करके इसमें बहुत उत्तम इमारतें बनवाईं, जिनकी निशानियां अबतक विद्यमान हैं। अकबरने कन्नौज और आगरेके सरकारोंमें इसको मिला लिया। अठारहवीं शताब्दीमें मैनपुरी महाराष्ट्रोंके हस्तगत हुई। सन् १८०१ में मैनपुरीपर अङ्गरेजी अधिकार हुआ। सन् १८०३ में राजा यशवन्तसिंहने मैनपुरीके बड़े

भाग मुखमगञ्जको बसाया । सन् १८५७ की मईमें मैनपुरीकी नवी देशी पैदल फौज बागी हो गई । ता० २९ वीं को झाँसीके बागी भी पहुँचे, तब हाकिम लोग भागकर आगरेमें चले गये । दूसरे दिन जब झांसीकी फौजने कसबेपर हमला किया, तब कसबेके निवासियोंने उनको मार भगाया । मैनपुरीके राजाने जिलेपर अपना अधिकार जमाया और बगावत शान्त होनेपर अङ्गरेजोंको सौंप दिया ।

फर्रुखाबाद ।

कासगञ्जसे ६७ मील (हाथरस जंक्शनसे १०१ मील) पूर्व-दक्षिण और कानपुर जंक्शनसे ८७ मील पश्चिमोत्तर फर्रुखाबादका रेलवे स्टेशन है । पश्चिमोत्तर देशके आगरा विभागमें गङ्गाके दहिने किनारेसे लगभग २ मील दूर फर्रुखाबाद एक छोटा शहर है ।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय फर्रुखाबादमें, जो फतहगढ़के साथ एक म्युनिसिपलटी बनता है, ७८०३२ मनुष्य थे; अर्थात् ४११४० पुरुष और ३६८९२ स्त्रियां । इनमें ५६०४१ हिन्दू, २०८६९ मुसलमान, ५३५ कृस्तान, ३३१ जैन, २३२ बौद्ध, १६ सिक्ख और ८ पारसी थे । मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें ४० वाँ और पश्चिमोत्तर प्रदेशमें ९ वाँ शहर है।

फर्रुखाबादमें अनेक सड़कोंके किनारोंपर वृक्ष लगे हैं, एक जिला स्कूल, एक अस्पताल और एक मट्टीका किला, जिसमें फर्रुखाबादके नव्वाब रहते थे, देखनेमें आए । शहर सुन्दर है, इसमें पीतलके वर्तन अच्छे बनते हैं ।

फतहगढ़—फर्रुखाबादके रेलवे स्टेशनसे ४ मील पूर्व-दक्षिण फतहगढ़का रेलवे स्टेशन है । फतहगढ़, जो फर्रुखाबाद शहरके साथ एक म्युनिसिपलटी बना है, फर्रुखाबाद जिलेका सदर स्थान एक कसबा है । सन् १८८१ की जन-संख्याके समय फर्रुखाबादमें ६२४३७ और फतहगढ़में १२४३५ मनुष्य थे और सन् १८९१ में दोनोंकी मनुष्य-संख्या ७८०३२ थी । सन् १८५७ के बलवेके समय बागियोंने फतहगढ़में २०० युरोपियनोंको मारडाला । यहाँकी छावनीमें मामूली तरहसे यूरोपियन सेनाकी ३ कम्पनी और देशी पैदलकी २ कम्पनी रहती हैं और यहाँ मामूली जिलेकी कचहरियां, सेंट्रल जेलखाना, जिला जेल, गवर्नमेन्ट स्कूल, पुलिस स्टेशन, मिशन हाइ स्कूल, मिशन चर्च और २ सराय हैं ।

फर्रुखाबाद जिला—जिलेका क्षेत्रफल १७१९ वर्गमील है । इसके उत्तर बदाऊं और शाहजहांपुर जिले, पूर्व अवधका हरदोई जिला, दक्षिण कानपुर और इटावां जिले और पश्चिम मैनपुरी और एटा जिले हैं । जिलेका सदर स्थान फतहगढ़ है, किन्तु फर्रुखाबाद सबसे अधिक आबादीका हिस्सा है ।

इस जिलेमें सन् १८९१ की जन-संख्याके समय ८५८३७६ मनुष्य थे; अर्थात् ४६३३७४ पुरुष और ३९४००२ स्त्रियां और सन् १८८१ में ९०७६०८ थे, अर्थात् ८०४६२४ हिन्दू, १०१२८४ मुसलमान, ८२६ कृस्तान, ८१४ जैन और ६० सिक्ख । जातियोंके खानेमें ९५९४९ चमार, ९३९८३ कुर्मी, ८७०८० अहीर, ७४५५२ काछी, ६३३९६ ब्राह्मण, ६२९९१ राजपूत, (जिनमेंसे १२१३ मुसलमान थे), ३३०२७ लोधी, ३११७३ कहार थे । जिलेमें ये कसबे हैं,—फर्रुखाबाद (जन-संख्या ७८०३२), कन्नौज (जन-संख्या १७६४६), कायमगञ्ज, शमशाबाद, छपरामऊ, और तिरुआ शमशादाब शमसुद्दीन अल्तमशका बसाया हुआ है ।

इतिहास—नवाब महम्मदखाँने सन् १७१४ ई० में फर्रुखाबादको बसाया और उस समयके दिल्लीके बादशाह फर्रुखसियरके नामसे शहरका नाम फर्रुखाबाद रक्खा। सन् १८०१ में यह जिला अङ्गरेजी अधिकारमें आया। सन् १८५७ के बलवेके समय जूनके अन्तमें बागियोंने फर्रुखाबादके नवावको तख्त पर बैठाया। नवाव जिलेपर हुकूमत करने लगा। तारीख २३ अकतूबरको अङ्गरेजोंने कन्नौजमें नवाबको परास्त किया। सन् १८५८ की मईमें बुन्देलखण्डके ३००० बागियोंने जिलेमें आकर कायमगञ्ज पर आक्रमण किया, किन्तु अङ्गरेजी सेनाने शीघ्रही उनको भगा दिया, उसके पश्चात् जिलेमें कुछ बलवा नहीं हुआ।

कन्नौज।

फर्रुखाबादसे ३७ मील (हाथरस जंक्शनसे १३८ मील) पूर्व-दक्षिण और कानपुरसे ५० मील पश्चिमोत्तर कन्नौजका रेलवे स्टेशन है। पश्चिमोत्तर देशके फर्रुखाबाद जिलेमें काली नदीके बॉये किनारे पर गंगा और काली नदीके संगमसे ५ मील ऊपर कन्नौज एक पुराना कसवा है, जो प्राचीन कालमें बड़ा शहर था। गंगा एक समय कन्नौजके नीचे बहती थी किन्तु इस समय लगभग ४ मील पूर्वोत्तर है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय कन्नौजमें १७६४८ मनुष्य थे; अर्थात् १०४०७ हिन्दू, ६८८७ मुसलमान, और ३५४ जैन।

नया कसबा ढालू भूमि और अनेक टीलों पर बसा है तंग गलियोंमें ईटके मकान बने हुए हैं। पुराने शहरके उजड़े पुजड़े स्थानोंमें बहुतेरे नये मकान बने हैं। बड़ा बाजारमें अधिक व्यापार होता है, तुराबली बाजारमें गल्लेकी तिजारत होती है। सप्ताहमें ४ दिन बाजार लगता है। इस कसबेमें अनेक प्रकारके कपड़े गुलाबका अतर, कागज, लाह और तेल अच्छे बनते हैं। कसबेके पश्चिमोत्तर लगभग १६५० ई० की बनी हुई बालापीर और उसके लड़के सेख महदीके पुराने मकबरे खड़े हैं। आसपासके मैदानोंमें बहुतेरी कबरें देखनेमें आती हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(अनुशासन पर्व ४ था अध्याय) ऋचीक मुनिने राजा गाधिसे कन्याके लिये प्रार्थनाकी; राजाने कहा कि हे मुनीश्वर! तुम मुझको एक सहस्र श्यामकर्ण घोड़े दो, तो मैं तुमको अपनी कन्या दूँगा, तब मुनिने वरुण देवसे कहा कि हे देवसत्तम! तुम मुझको एक सहस्र श्यामकर्ण घोड़े दो। वरुणने कहा कि बहुत अच्छा तुम जिस स्थानपर चाहोगे, उसही स्थानमें घोड़े प्रकट हो जायँगे उसके पश्चात् ऋचीक मुनिके ध्यान करते ही एक सहस्र शुक्ल वर्णके श्यामकर्ण घोड़े गंगा जलसे प्रकट हो गये। कान्यकुब्ज अर्थात् कन्नौजदेशके समीप जिस स्थानमें घोडे प्रकट हुए थे; उसको अश्वतीर्थ कहते हैं। राजा गाधिने मुनिसे घोडोंको लेकर उनको सत्यवती नामक अपनी कन्या प्रदान करदी।

इतिहास—पूर्व कालमें कन्नौज बड़ा हिन्दू राज्यकी राजधानी था और गुप्तवंशी राजाओंने सन् ई० के आरम्भसे ३१५ वर्ष पहलेसे २७५ वर्ष पीछे तक ऊपरी भारतके एक बड़े भाग पर अपना राज्य फैलाया था। कन्नौज शहर ऐतिहासिक समयके पहलेसे है। सन् १०१८ ई० में गजनीके महमूदने इसको जीत लिया। बारहवीं सदीमें प्रसिद्ध राठौर राजा जयचन्द

कन्नौजका सम्राट था जिसने सन् ११८५ ई० में राजसूय यज्ञका अनुष्ठान किया था (दिल्लीके इतिहासमें देखो) जयचन्दके राज्यके समय कन्नौजकी बड़ी उन्नति थी। शहावुद्दीन गोरीने दिल्ली जीतनेके पश्चात् सन् ११९४ में जयचन्दको लड़ाईमें मारकर कन्नौजको ले लिया। सन् १५४० में शेरशाहने कन्नौजके निकट हुमायूँको परास्त किया। हुमायूँ कुछ दिनोंके लिये हिन्दुस्तानसे भाग गया।

कन्नौजके पुराने शहरकी तवाहियां ५ गावों तक और एक अर्धवृत्ताकार भूमि पर जिसका व्यास ४ मील है फैली हुई हैं। उनमेंकी प्रधान इमारतोंकी अव केवल ईंटोंकी नेव देखनेमें आती हैं। मकानोंके ईंटे उजाड़कर नये मकानोंके लगायी जाती हैं। पुराने शहरकी निशानियां दिनपर दिन घटती जाती हैं।पुराने चिह्नोंमें राजाअजयपालका स्थान सवसे अधिक दिलचस्प है। जामा मसजिद भी वहुत पुरानी है। पंचगौड़ ब्राह्मणोंमेंसे एक, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, जिसका अपभ्रंश कन्नौजिया है, कहलाते हैं और अहीर, कहार, गोंड़, दुसाध इत्यादि कई एक जातियोंमें भी कन्नौजिया जाति होती है।

खेरेश्वर महादेव—कन्नौजसे २८ मील पूर्व दक्षिण और मन्धनाके स्टेशनसे १० मील पश्चिमोत्तर वरराजपुरका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे लगभग २ मील दूर एक सुन्दर पुराने मन्दिरमें खेरेश्वर महादेव हैं। जिनको घेरेश्वर भी कोई कोई कहते हैं, वहाँसे ५०० कदम दक्षिण-पश्चिम अश्वत्थामाका स्थान है। वहांपर नाना प्रकारकी पुरानी मूर्त्तियां कई सौ खङ्ग स्फुट ढेरीसे रक्खी हैं और एक चतुर्वक्त्र श्वेत शिवलिङ्गभी स्थापित है कुछ २ प्राचीन जङ्गलका चिह्नभी देखनेमें आता है खेरेश्वरको लोग कहते चले आये हैं कि यह शिवलिङ्ग अश्वत्थामांहीका स्थापित है यह सव वृत्तान्त गोपीचन्द नाटकके छठे अङ्कमें लिखाहै एक घेरेमें खेरेश्वरका विशाल शिखरदार मन्दिर और मन्दिरके आगे जगमोहन बना हुआ है। खास हातेके भीतर ३ वारहदरी और पूर्वतरफ वाहर १ वड़ी वारहदरी वनी है उत्तर तरफ खेरकुण्डनामक १ कच्चा सरोवर कमलोंसे सुशोभित है। पूर्व तरफ फाटकके वाहर कई एक इमारतें हीन दशामें वर्तमान हैं। फाल्गुनकी शिवरात्रको यहाँ मेला होताहै और सावनके प्रत्येक सोमवारको वहुत लोग दर्शनको जाते हैं। मन्दिरके चारोंओर १४ मीलके घेरेमें गड़े हुए वहुतेरे पुराने कङ्करके पत्थर निकलते हैं किन्तु लोग डर करके उन ईंटों पत्थरोंको अपने काममें नहीं लगाते हैं।

बिठूर।

कन्नौजसे ३८ मील (हाथरससे १७६ मील) पूर्व-दक्षिण और कानपुर जंक्शनसे १३ मील पश्चिमोत्तर मन्धनाका रेलवे स्टेशन है। मन्धनासे पूर्वोत्तर ५ मील की रेलवे शाखा बिठूरको गई है। पश्चिमोत्तर देशके कानपुर जिलेमें रेलवे स्टेशनसे एक मील दूर गङ्गाके दाहिने किनारेपर बिठूर एक छोटा कसवाँ और तीर्थ स्थान है, जिसको ब्रह्मावर्तभी कहते हैं।

सन् १८८१ की जन-संख्याके समय बिठूरमें ६६८५ मनुष्य थे; अर्थात् ५९७० हिन्दू और ७१५ मुसलमान।

रेलवे स्टेशनसे चलनेपर पहले गङ्गाके निकटही नया बिठूर तव पुराना बिठूर मिलता है। पुराने बिठूरमें ब्रह्माघाट, जिसको अवधके नव्वाव गाजिउद्दीन हैदरके मन्त्री राजा टिकैतरायने पत्थरसे बंधवा दिया था, प्रधान है। इसके अतिरिक्त अहिल्यावाई और बाजी-

राव पेशवाके वनवाये हुए, यहाँ कई एक घाट हैं। घाटोंके ऊपर अनेक देवमन्दिर बने हुए हैं; इनमें वाल्मीकेश्वर शिवका मन्दिर प्रधान है। काशीके सुप्रसिद्ध स्वामी विशुद्धानन्दजीने मन्दिरका घेरा वनवाकर इस मन्दिरका जीर्णोद्धार करवाया है और यहाँ एक शिखर, जिसपर सैकडों दीप जलाये जाते हैं, वाजीराव पेशवाका वनवाया है उसकी भी मरम्मत करवा दी है। इस मन्दिरके अतिरिक्त गङ्गाके निकट ब्रह्मेश्वर, कपिलेश्वर, भूतेश्वर, क्षीरेश्वर, इत्यादि देवताओंके मन्दिर अलग अलग वने हुए हैं। गङ्गाके खास घाटकी सीढ़ियोंपर लगभग १ फुट ऊँची लोहेकी कील खड़ी है। इसको पण्डा लोग ब्रह्माकी खूँटी कहते हैं और इसपर पूजा चढ़वाते हैं। घाटके ऊपर दक्षिणी ब्राह्मणोंकी वस्ती है। कसवेमें पण्डे ब्राह्मण बहुत वसते हैं और सदावर्त लगा हुआ है। गङ्गाकी नहरकी एक शाखा विठूरतक बनी है।

विठूरमें प्रतिवर्ष कार्त्तिकी पूर्णिमाको गङ्गास्नानका बड़ा मेला १५ रोज होता है। बहुतेरे यात्री विशेष करके दक्षिणी लोग विठूरमें आते हैं। मेलेमें दूर २ से हर एक माल विकने आते हैं। स्मृतियोंमें सरस्वती और दृषद्वती नदियोंके मध्यके देशको, जो अम्बाले जिलेमें है, ब्रह्मावर्त देश लिखा है, किन्तु ब्रह्मावर्त तीर्थ करके विठूरही प्रसिद्ध है। संवत् १७८४ का बना हुआ 'तुलसी शब्दार्थ प्रकाश' नामक पद्यमें भाषा ग्रन्थ है, इसके द्वितीय भेदमें लिखा है कि राजा मनु और ध्रुवजीका जन्म विठूरमें हुआ था।

ब्रह्मावर्त घाटसे करीव २ मील दक्षिण वार्हिष्मती पुरी है, जिसमें मनुकी उत्पत्ति और किला था। जिसको लोग वरहट भी कहते हैं और ब्रह्मावर्त घाटसे ½ मील उत्तर ध्रुव किला नामक ध्रुवका स्थान क टीला है।

वाल्मीकि मुनिका स्थान—विठूरसे ६ मील पश्चिम गंगाजीसे १॥ मील दक्षिण वैलारुद्रपुर एक वस्ती है, जिसको पूर्व कालमें द्वैलव कहते थे। द्वैलवका अपभ्रंश वैलव और वैलवसे वैला हो गया है। लोग कहते हैं कि वैलारुद्रपुर महर्षिवाल्मीकि की जन्म भूमि है, यहाँ एक पुराना कूप है; ऐसा प्रसिद्ध है कि वाल्मीकि जव वधिकका काम करते थे, तव इसी कूपमें छिपकर रहते थे, यहाँ पत्थरके २ टुकड़े और नीमके कई एक वृक्ष हैं इससे थोड़ी दूरपर १ छोटा शिव मन्दिर और १ पक्का कूप और कूपसे कुछ दूर नीमके वृक्षोंके नीचे अहरानी देवीकी मूर्ति है और वहाँसे ३ मील दक्षिण तमसा नदी है, जिसको लोन नदी भी कहते हैं।

लोग कहते हैं कि जव लक्ष्मण गङ्गाके तीर सीताको छोड़कर अयोध्या चले गये, तव महर्षि वाल्मीकिके शिष्योंने वैलारुद्रपुरसे १॥ मील दूर वर्तमान वरुआ गाँवके निकट गङ्गाके तीरमें सीताको देखा और यह समाचार मुनिसे जा सुनाया। मुनिने वरुआके निकट जाकर जव सीताको नहीं पाया, तव उनको खोजते हुए वह गङ्गाके तीर तीर पश्चिमको चले, उन्होंने वहाँसे १ मील दूर, जहाँ, खोजकीपुर, गाँव है, गङ्गाके किनारे सीताको पाया; इसी लिये उस गाँवका नाम खोजकीपुर पड़ा है। उस स्थानपर गङ्गाका करारा ऊँचा था, इस लिये मुनिने गर्भवंती जानकीको वहाँ ऊपर नहीं चढ़ाया, किन्तु उससे एक मील आगे, तरी गाँवके समीप वह उनको ऊपर चढ़ाकर वैलारुद्रपुरके अपने आश्रममें लाये, जव जानकीके यमल पुत्र जन्मे; तभी महर्षि वाल्मीकेने इस गाँवको उत्पलवनका जंगल जानकर मन्त्रसे कील दिया था, इस कारणसे अव तक सम्पूर्ण निवासी निर्भय रहकर अपने मकानोंमें

किवाड़ नहीं लगाते हैं। किवाड़ लगानेवाला सुखी नहीं रहता, चोर गाँवमें चोरी भी नहीं कर सकता है। वहाँही महर्षि वाल्मीकिजीने आदिकाव्य वाल्मीकि रामायणको बनाया था। इससे अब तक उस स्थानपर दर्शन यात्रा करने अच्छे २ लोग जाते हैं।

इतिहास—सन् १८१८ ई० में जब अङ्गरेजी सरकारने पूनेके बाजीराव पेशवाका राज्य छीनकर उनको ८ लाख रुपयेकी वार्षिक पेन्शन नियतकी, तब वह बिठूरमें आकर रहने लगे। बिठूरमें पेशवाका जूनावाड़ा नामक महल बना हुआ था। सन् १८५३ में उनका यहाँहीं देहान्त हुआ। पेशवाके दत्तक पुत्र नाना धुँधूपन्तने, जो नानासाहब नामसे प्रसिद्ध हुए, सन् १८५७ के बलवेके समय कानपुरमें बहुतेरे अङ्गरेजोंको दगासे मार डाला और पीछे कुछ मुकाबला करनेके पश्चात् वह भाग गये, तब अङ्गरेजी सरकारने बिठूरके नाना साहबके महलको अच्छी तरहसे विनाशकर दिया। बिठूरकी कचहरी उठ जानेके कारण यहाँकी जनसंख्या बहुत घट गई है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(वनपर्व ८३ वाँ अध्याय) ब्रह्मावर्त तीर्थमें स्नान करनेसे ब्रह्मलोक प्राप्त होता है। (८४ वाँ अध्याय) ब्रह्मावर्तमें जानेसे अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है और चन्द्रलोकमें निवास होता है।

वामनपुराण—(३५ वाँ अध्याय) ब्रह्मावर्तमें जाकर स्नान करनेसे मनुष्यको ब्रह्मलोक प्राप्त होता है।

मत्स्यपुराण—(१८९ वाँ अध्याय) ब्रह्मावर्त तीर्थमें ब्रह्माजी प्रतिदिन निवास करते हैं। जो पुरुष वहाँ स्नान करता है; उसको ब्रह्मलोक मिलता है।

श्रीमद्भागवत—(तीसरा स्कन्ध, २१ वाँ अध्याय) भगवान् विष्णुने कर्दम मुनिसे कहा कि ब्रह्माका पुत्र राजा मनु ब्रह्मावर्तमें बसता है और सात द्वीप नव खण्डका पालन पोषण करता है; वह परसों दिन यहाँ आकर तुमको अपनी पुत्री दे जायगा। नियत दिनपर राजा मनुने बिन्दु सरोवरके निकट जाकर कर्दम मुनिको अपनी पुत्री देदी। जब स्वायम्भुव मनु अपने देश ब्रह्मावर्तमें लौट आये; तब प्रजागण उनको आदरपूर्वक बर्हिष्मती पुरीमें ले गये। वहांहीं यज्ञरूप वाराहजीके अङ्गझाड़नेसे उनके रोम गिरे थे, जिनसे हरे रङ्गके कुश और काश हो गये। राजा मनु बर्हिष्मतीपुरीमें निवास करने लगे (चौथा स्कंध, १९ वां अध्याय) राजा पृथुने मनुके क्षेत्र ब्रह्मावर्तमें जहां प्राची सरस्वती (पूर्ववाहिनी गंगा) हैं १०० अश्वमेध यज्ञ करनेका सङ्कल्प किया (२१ वां अध्याय) गंगा और यमुनाके मध्यके क्षेत्रमें राजा पृथु निवास करता था (५ स्कन्ध, ५ वां अध्याय) ऋषभदेवजी संन्यास धारण करनेके लिये ब्रह्मावर्तसे चले।

वाल्मीकि रामायण—(उत्तर काण्ड, ५२ वां सर्ग) एक समय रामचन्द्रजीने सीतासे कहा कि हे देवी तुममें गर्भवतीका चिह्न देख पड़ताहै तुम क्या चाहती हो। सीताने कहा कि हे राघव! तपोवन देखने और गंगा तट निवासी ऋषियोंके दर्शन करनेकी मेरी इच्छा होती है। रामचन्द्रजीने कहा कि हे वैदेही! मैं तपोवनमें अवश्य तुझे भेजूँगा।

(५३ वां सर्ग) इसके पश्चात् रामचन्द्रने अपनी सभामें भद्र नामक दूतसे पूछा कि आज कल पुरवासी लोग भाइयों सहित मेरे और सीताके विषयमें क्या कहते हैं, तुम निःशंक होकर कहो। भद्र बोला कि हे प्रभो सर्वत्र यही बात फैल रही है कि राघव राव-

णको मारकर सीताको फिर अपने गृह लाए यह बात अच्छी नहीं है जिस सीताको रावण उठा ले गया और वह राक्षसोंके घरमें इतने दिन रही; उसको लाना उचित नहीं है। ऐसा सुन श्रीरामचन्द्र सभामें अपने तीनों भाइयोंको बुलाकर कहने लगे कि देखो अग्नि, वायु, चन्द्र, और सूर्यने साक्षी दी कि जानकी निर्दोष है और मेरा अन्तरात्माभी यही कहता है कि सीता शुद्ध है; किन्तु पुरजन और देशवासियोंका अपवाद मेरे हृदयको क्षोभ दे रहा है, इस लिये हे लक्ष्मण ! तुम कल प्रातःकाल सीताको रथपर चढ़ा कर गंगा उस पार, जहां महर्षि वाल्मीकिका आश्रम है और तमसा नदी वहती है । निर्जन, देशमें छोड़ आवो । सीताने मुझसे कहा भी है कि मैं गंगा तीरके आश्रमोंको देखना चाहती हूँ।

(५६ वां सर्ग) लक्ष्मणने प्रातःकाल होनेपर सीतासे कहा कि हे वैदेही ! तुमने गंगा तटके ऋषियोंके आश्रममें जानेके लिये महाराजसे कहा था; इस लिये मैं तुमको वहाँ ले चलता हूँ; ऐसा वचन सुन सीता अति हर्षित हो अपने साथमें नाना प्रकारके सुन्दर वस्त्र और धन लेकर रथमें वैठी। सुमन्त्रने रथ चलाया। वे लोग पहली रात गोमतीके किनारेके आश्रमसें निवास करके दूसरे दिन मध्याह्न समयमें भागीरथीके तीर पहुँचे । (५७ वां सर्ग) लक्ष्मण सुमन्त्रको रथके सहित इसी पार छोड़कर सीता सहित नौका द्वारा गंगा पार हुए और अत्यन्त दीन हो नीचे मुख करके बोले कि हे वैदेही ! महाराजने पुरवासियोंके अपवादके डरसे तुमको त्याग दिया। यहाँ गंगा तीर पर ब्रह्मर्षियोंका तपोवन है और यहाँ वाल्मीकि मुनि; जो मेरे पिताके मित्र हैं, रहते हैं, तुम इन्हींकें चरणकी छायामें रह कर निवास करो; इसके पश्चात् लक्ष्मण सीताको छोड़कर गंगा पार हो सुमन्त्रके सहित अयोध्याको चले गये। (५९ वाँ सर्ग) इधर मुनियोंके बालकोंने जाकर वाल्मीकि मुनिसे कहा कि किसी महात्माकी पत्नी गंगा तीर पर रो रही है। मुनिने शिष्योंके सहित वहाँ पहुँच कर जानकीसे कहा कि हे भद्रे ! जगतमें जो कुछ है, वह सब मैं जानता हूँ। तुम रामचन्द्रकी प्यारी पटरानी, राजा जनककी पुत्री और पापसे रहित हो; अब तुम्हारा भार हमारे ऊपर हुआ ऐसा कह महर्षिने सीताको अपने आश्रममें लाकर उनको मुनियोंकी पत्नियोंको सौंप दिया। (६२ वां सर्ग) उधर लक्ष्मण रातमें केशिनी नगरीमें टिककर दूसरे दिन मध्याह्न समयमें अयोध्या पहुँच गये। (७९ वाँ सर्ग) कुछ दिनोंके पश्चात् जिस रातमें शत्रुघ्नने मधुवन जाते हुए वाल्मीकि मुनि की पर्णशालेमें निवास किया था उसी रातमें सीताके २ पुत्र उत्पन्न हुए। मुनिने कुशमुष्टि अर्थात् कुशके अग्रभाग और लव अर्थात् कुशके अधो भागसे दोनों बालकोंकी रक्षा, वृद्ध मुनि पत्नियोंसे करवाई; इस लिये यथाक्रम कुश और लव दोनोंके नाम हुए। यह समाचार पाकर शत्रुघ्न सीताकी पर्णशालेमें जाकर बोले कि हे मातः, यह बड़े ही आनन्दकी बात हुई। प्रातःकाल होने पर शत्रुघ्नने मथुराका मार्ग लिया (यह जानकीके परित्यागकी कथा पद्मपुराणमें पाताल खण्डके ५५ वें अध्यायसे ५९ वें अध्याय तक है; किन्तु उसमें लिखा है कि केवल एक धोवीने सीताकी निन्दाकी थी, जिसको दूतके मुखसे सुनकर श्रीरामचन्द्रने सीताका परित्याग किया । गर्भधारण करनेके ५ महीनेके पश्चात् जानकीको वनवास हुआ था।

(१०५ वाँ सर्ग) कुछ कालके उपरान्त रामचन्द्रने अश्वमेध यज्ञके लिये घोड़ा छोड़ा। नैमिषारण्यमें बड़ी धूम धामसे यज्ञ प्रारम्भ हुआ। (१०६ वाँ सर्ग) महर्षि वाल्मीकि कुश, लव और अपने शिष्योंके सहित यज्ञशालेमें आये (१०७) ऋषिकी आज्ञासे कुश और लव महर्षि वाल्मीकिका बनाया हुआ रामायण गान करने लगे। गानकी प्रशंसा सुनकर श्रीरामचन्द्र दोनों बालकोंको बुलाकर रामायणके गान सुननेमें प्रवृत्त हुए। (१०८) सङ्गीत सुनते सुनते उन्होंने जाना कि ये दोनों सीताहीके पुत्र हैं; तब दूतोंको आज्ञा दी कि तुम वाल्मीकिमुनिसे कहो कि यदि सीता शुद्ध चरित्रा है, तो कल प्रातःकाल सभामें अपनी शुद्धिके लिये शपथ करै। (१०९) रामचन्द्रके संवाद सुनकर वाल्मीकि मुनि सीताके सहित सभामें आकर रघुनन्दनसे बोले कि सीता अपनी शुद्धताका परिचय देना चाहती है और ये दोनों बालक सीताहीके हैं; उस समय सीता सभा मण्डलीके बीचमें काषाय वस्त्र पहनी हुई बोली कि यदि मैं राघवके अतिरिक्त अन्य पुरुषको मनसे भी न चिन्तन करती होऊँ, तो पृथ्वी देवी अपने भीतर पैठनेके लिये मुझको बिबर देवें; इतने समयमें पृथ्वी फट गई उसमेंसे एक अद्भुत सिंहासन प्रगट हुआ। उसपर मूर्त्तिमती पृथ्वीदेवी बैठी थी; उन्होंने सीताको सिंहासनपर बैठा लिया। सिंहासन रसातलमें चला गया।

(यह कथा अध्यात्म रामायणमें भी उत्तरकाण्डके चौथे अध्यायसे सातवें अध्याय तक है)।

पद्मपुराण—(पातालखण्ड, ११ वाँ अध्याय) श्रीरामचन्द्रजीने अश्वमेध यज्ञका विधान किया। पृथ्वी विजयके अर्थसे घोड़ा छोड़ा गया। घोड़ेकी रक्षाके लिये चतुरंगिणी सेनाओंसे युक्त हो शत्रुघ्न चले; उनके साथ भरतके पुत्र पुष्कल, वानरश्रेष्ठ हनूमान, ऋक्षपति जाम्बवान और सुग्रीव, अङ्गद, नील, नल, दधिमुख आदि वानरोंने प्रस्थान किया। (५३ वाँ अध्याय) रामचन्द्रका घोड़ा शत्रुघ्नके साथ नाना देशोंमें भ्रमण करता हुआ गङ्गा तीर वाल्मीकि मुनिके आश्रममें पहुँचा। (५४ वाँ अध्याय) रामचन्द्रके पुत्र लवने उस घोड़ेको पकड़ लिया। (६० वाँ अध्याय शत्रुघ्नकी सेना लवसे युद्ध करने लगी, (६२ वाँ अध्याय जब लवने हनूमानको मूर्च्छितकर दिया; तब शत्रुघ्नने जाना कि यह जानकीका पुत्र है;इसके पश्चात् जब लवके बाणोंसे शत्रुघ्न भी मूर्च्छित हो गये; तब सुरथ आदि राजा गण लवसे लड़ने लगे; इसके उपरान्त शत्रुघ्न सचेत होकर फिर लवके साथ युद्ध कार्यमें प्रवृत्त हुए। (६३ वाँ अध्याय) शत्रुघ्नके अस्त्रोंसे लव मूर्च्छित होगये यह समाचार सुनकर जानकीजी विलाप करने लगीं; उसी समय सीताजीके बड़े पुत्र कुश, महाकाल जी की पूजा करके उज्जैनसे आगये और जानकीके मुखसे लवकी मूर्च्छित होनेकी खबर सुनकर रणभूमिमें जा पहुँचे। लवकी मूर्च्छा छूट गई। (६४ वाँ अध्याय) कुश और लव दोनों भाई शत्रुघ्न आदिक सब सैनिकोंको मूर्च्छित करके सुग्रीव और हनुमानकी पूंछ पकड़ घसीटते हुए उनको अपने आश्रममें ले गये। जानकीजीने पहचानकर दोनों वानर और घोड़ा छुड़वा दिया और श्रीरामचन्द्रजीका ध्यान करके अपनी पतिव्रता धर्मके प्रभावसे शत्रुघ्नके सहित सब सेनाओंको जिला दिया(६५ वाँ अध्याय)शत्रुघ्नजीने अश्व और अपनी सेना सहित अयोध्यामें आकर श्रीरामचन्द्रजीसे सब वृत्तान्त कह सुनाया। (६६ वाँ अध्याय) रामचन्द्रजीने यज्ञमें आये हुए वाल्मीकि मुनिसे कुश और लवका वृत्तान्त पूछा। मुनिने सब यथार्थ हाल कह सुनाया; तब रामचन्द्रकी आज्ञासे लक्ष्मणजी वाल्मीकि मुनिके आश्रममें जाकर कुश और लव दोनों राज—

कुमारोंको और (६७) फिर दूसरी वार जाकर श्रीजानकी महारानीको रथपर बैठाकर अयोध्यामें ले आये । सीताजी रामचन्द्रजीके साथ यज्ञशालामें बैठीं और यज्ञ समाप्त हुआ । (६८ वाँ अध्याय) श्रीरामचन्द्रने सीताके सहित ३ अश्वमेध यज्ञ किये ।

जैमिनिपुराण—(२९ वें अध्यायसे ३६ वें अध्यायतक) श्रीरामचन्द्रने अश्वमेध यज्ञ आरम्भ किया। यज्ञके घोड़ेके साथ चतुरङ्गिणी सेना लेकर शत्रुघ्न चले; वे अनेक राजाओंको जातत हुए जव वाल्मीकि मुनिके आश्रममें पहुँचे, तव सीताके पुत्र लवने घोड़ेको पकड़ लिया; जिस समय लवको शत्रुघ्नने मूर्च्छितकर दिया उसी समय लवके भ्राता कुश वनसे आगये। कुशने शत्रुघ्नको मारकर रथमें गिरा दिया। मरनेसे वचे हुए वीर गण अयोध्या चले गये; तव रामचन्द्रने सेना सहित लक्ष्मणको पठाया; जव लक्ष्मणभी लव कुश द्वारा परास्त हुए; तव रामचन्द्रने अयोध्यासे भरतको भेजा, जव भरतभी संग्राममें लड़कर मूर्च्छित हो गए; तव स्वयं श्रीरामचन्द्र सुग्रीव और विभीषण सहित ससैन्य वाल्मीकिके आश्रममें जापँहुचे। वड़ा संग्राम होनेके उपरान्त कुशने सम्पूर्ण वानर और सेनाओंके सहित रामचन्द्रको मूर्च्छित कर दिया और दइ रामचन्द्रके कुण्डल आदि भूषण, लक्ष्मणका मुकुट और जाम्ववान तथा हनूमानको पकड़कर सीताके पास ले गये, किन्तु पीछे सीताकी आज्ञासे लव जाम्ववान और हनूमानको रणभूमिमें छोड आये, उसी समय वाल्मीकिजी वहां आगये, जव कुशने मुनिसे सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया; तव मुनिने अमृतमय जल छिड़ककर सवको जिला दिया। रामचन्द्रजी अपनी सेना सहित अयोध्यामें लौट आये; पश्चात् महर्षि वाल्मीकि कुश और लवके सहित सीताको लेकर अयोध्यामें आये; उन्होंने रामचन्द्रसे कहा कि हे राजन्! सीता निष्पापहै और ये दोनों तुम्हारेही पुत्र हैं, तव रामचन्द्रने सीता और कुश तथा लवको ग्रहण किया ।

बाईसवां अध्याय ।

(पश्चिमोत्तर में) कानपुर, इटावा और फतहपुर ।

कानपुर ।

मन्धना जंक्शनसे १२ मील और हाथरस जंक्शनसे १८८ मील पूर्व दक्षिण और इलाहावादसे ११९ मील पश्चिमोत्तर कानपुरका रेलवे जंक्शन है। पश्चिमोत्तर प्रदेशके इलाहावाद विभागमें गङ्गाके, दाहिने किनारेपर (२६ अंश २८ कला १५ विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश २३ कला ४५ विकला पूर्व देशान्तरमें) जिलेका सदरस्थान कानपुर उन्नति करता हुआ शहर है। इसका शुद्ध नाम श्रीकृष्णके नामसे कान्हपुर है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय फौजी छावनीके सहित कानपुरमें १८८७१२ मनुष्य थे; अर्थात् १०६७१३ पुरुष और ८१९९९ स्त्रियां । इनमें १४१०३१ हिन्दू, ४४१९९ मुसलमान, २९९४ कृस्तान, ४१० जैन; ४४ सिक्ख, ३१ पारसी, और ३ यहूदी थे। म संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें ९ वां और पश्चिमोत्तर देशमें दूसरा शहर है।

देशी शहर, फौजी छावनी और सिविल स्टेशनके सहित शहरका क्षेत्रफल ६०१५ एकड़ है। मैं रेलवे स्टेशनसे १ मील दूर शहरकी ओर रामनाथ और बैजनाथकी नई धर्मशालामें जा टिका। कानपुरका सिविल स्टेशन और फौजी छावनी गङ्गाके दाहिने बगलमें और देशी शहर गङ्गासे दक्षिण-पश्चिमकी ओर फैला हुआ है। देशी लोगोंका शहर उत्तमरीतिसे नहीं बसा है, इसकी गलियां और रास्ते तंग हैं।

इससे कोठीवाल, सौदागर और वकीलोंके कई एक उत्तम मकान बने हुए हैं और कई एक देवमन्दिर अच्छे २ जैसे गुरुप्रसादका कैलास, प्रयागनारायणका वैकुण्ठ और कई जैन मन्दिर देखनेमें आते हैं। शहरसे बाहर रेलवे स्टेशनकी ओर गल्लेका बाजार बहुत भारी कलक्टरगञ्ज है। कानपुरके घाटोंमें पत्थरसे बाँधा हुआ गङ्गाका सिरसैइाघाट प्रधान है और सिद्धेश्वर महादेवका मन्दिर यहाँ विख्यात है।

मेमोरियल गार्डनसे पश्चिम सिविल स्टेशन, बङ्गालवङ्क, चर्च थिएटर और दूसरी यूरोपियन इमारतें बनी हुई हैं। नये कानपुरसे २ मील पश्चिमोत्तर गङ्गाके दाहिने किनारेपर पुराना कानपुर है। दोनोंके बीचमें बाग और खेतोंका मैदान देखनेमें आता है। कानपुरकी फौजी छावनीमें साधारण तरहसे १ यूरोपियन और १ देशी पैदलकी रेजीमेंट, १ देशी सवारकी रेजीमेंट और १ शाही आरटिलरीकी बैटरी रहती है। बड़ी सड़क कलकत्तेसे कानपुर और फौजी लाइन होकर दिल्लीको गई है। गंगाकी नहर हरिद्वारसे ६६५ मील आकर कानपुरमें फिर गंगामें मिलगई है।

चमड़ेके असबाब और नये कल कारखानेके लिये कानपुर प्रसिद्ध है और अब बढकर अव्वल दरजेका तिजारती शहर हुआ है; इसकी उन्नति साल बसाल हो रही है। बग्गी और घोड़ेका साज, बूट इत्यादि सामान बहुत तैयार होता है। बहुतेरे मिलोंमें कपड़े, ऊनी वस्त्र, दरी इत्यादि वस्तु तैयार होती हैं। आटा पीसनेके लिये भी कई एक मिल अर्थात् कलके कारखाने बने हैं। चीनीकी बड़ी तिजारत होती है, खीमें बहुत तैयार होकर बिकते हैं। चमड़ेके असबाब, कपड़े इत्यादि सूतकी चीजें और आसपासके जिलोंके पैदावार इकट्ठे करके कानपुरसे दूसरे शहरोंमें भेजे जाते हैं। यहाँकी तिजारत दिन पर दिन बढ़ रही है।

गंगाके किनारे पर मेमोरियलगार्डन अर्थात् यादगार-बाग ३० एकड़से अधिक क्षेत्रफलमें फैला है। बागके उत्तरीय भागमें कूपके ऊपर, जिसमें सन् १८५७ के बलवेके समय लगभग २०० मरे और अधमरे यूरोपियन डाल दिये गये थे। सुन्दर अठपहली दीवार बनी हुई है। घेरेके भीतर, जिसमें लोहेके फाटक लगे हैं; कुएँके ठीक ऊपर एक स्वर्गदूतकी प्रतिमा बनाई गई है कूपके चारोंओरकी दीवारपर बड़ा लेख है। इसका सारांश यह है कि बिठूरनगरके नानाधुन्धूपन्तने सन् १८५७ ई० की तारीख १५ वीं जुलाईको बहुत क्रिश्चियनोंको, जिनमें खास करके स्त्री और लड़के थे, इस कूपके पास निष्ठुर भावसे मरवा डाला और जीते लोगोंको भी मुर्दोंके सहित इस कूपमें गिरवा दिया; उन्ही क्रिश्चियनोंकी यादगार यह बना है। साधारण लोगोंको, जो कोट पतलून नहीं पहने रहता, इस स्थानको देखनेके लिये जज साहबसे पास लेना पड़ता है। बागमें खुशी मनाने या गीत गानेका हुक्म नहीं है। बलवेके पश्चात् शहरके लोगोंसे जुर्माना लेकर उस रुपयेसे यह

बाग और यादगार बनाई गइ। अङ्गरेजी सरकार बागके मामूली खर्चके निमित्त वार्षिक ५ हजार रुपये देती है। गंगाकी नहरसे बाग पटाई जाती है। कूपके दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम २ कबरगाह हैं; उनमें उन लोगोंकी यादगार हैं जो बलवेके समय कानपुरमें मरे; या मारे गये थे।

मेमोरियल चर्च सन् १८७५ ई० में लगभग २ लाख रुपयेके खर्चसे बना। सन् १८५७ में कानपुरमें मरे हुए यूरोपियन लोगोंके यादगारके लिये इसमें लेखोंके सिलसिले हैं। चर्चसे दक्षिण बाँधकी जगह है, जिसके भीतर अङ्गरेजी सेना नाना धुन्धूपन्तकी फौजसे २१ दिनों तक घेरी हुई थी। चर्चसे ¾ मील उत्तर कुछ पूर्व, वह घाट है, जहाँ यूरोपियन लोग मारे गये। गंगाके तीर ६ पहला एक पुराना शिवमन्दिर उजड़ रहाहै उससे १ मील दूर उजानकी ओर अवध रुहेल खण्ड रेलवेका पुल है।

रेलवे स्टेशनसे लगभग १४ मील दूर कानपुर जिलेमें परगनेका सदर स्थान जाजमऊ एक बड़ी बस्ती है। लोग कहते हैं कि चन्द्रवंशी राजा नहुषके पुत्र राजा ययातिके नामसे इसका नाम जाजमऊ हुआ है ययातिके गढ़के स्थान पर २ टीले उजडा हुआ मट्टीका किला भी है।

कानपुर जिला—यह इलाहाबाद विभागके पश्चिमका जिला है। जिलेका क्षेत्रफल २३७० वर्ग मील है; इसके पूर्वोत्तर गंगा नदी, पूर्व फतहपुर जिला दक्षिण-पश्चिम यमुना नदी और पश्चिम फर्रुखाबाद और इटावा जिले हैं। जिलेमें कई छोटी नदियाँ और गंगाकी नहरकी अनेक शाखायें बहती हैं।

कानपुर जिलेमें सन् १८९१ की जन-संख्याके समय १२०७६४६ मनुष्य थे; अर्थात् ६४६७०७ पुरुष और ५६०९३९ स्त्रियां और सन् १८८१ में ११८१३९६ थे अथात् १०८४९६४ हिन्दू, ९३०७३ मुसलमान; ३२०० क्रस्तान, ११४ जैन, २३ यहूदी, १६ पारसी और ६ सिक्ख जातियोंके खानेमें १८१२३४ ब्राह्मण, १२९७१३ चमार, ११७०९० अहीर, ९१७२२ राजपूत, ५५४३७ कुर्मी, ४८४७२ काछी; ३८४८९ बनिया थे। सन् १८९१ की जन-संख्याके समय इस जिलेके कानपुरमें १८८७१२, और सन् १८८१ में बिठूरमें ६६८५ बिल्हौरमें ५५८९ और अकबरपुरमें ५१३१ मनुष्य थे। इस जिलेमें बिल्होर स्टेशनसे ५ मील दक्षिण-पश्चिम कन्नौजके प्रान्त मँकनपुरमें मदारशावाके दरगाहका वसन्तपंचमीसे एक मेला (जो दश पन्द्रह दिनतक रहता है) आरम्भ होताहै। बिल्हौरसे पक्की सड़क कानपुर तक बराबर गई है मेलेमें बेसकीमती घोड़े, बैल, सांड़िये, भैंस और मवेसियोंकी खरीद बिक्री होतीहै। लोग कहते हैं कि ऋष्यशृङ्गके पिता विभाण्डकने इस स्थानको, जिसमें मेरे पुत्रका ब्रह्मचर्य नष्ट न हो, मन्त्रसे कील दिया था कि जो स्त्री यहाँ आवेगी वह भस्म हो जायगी, (जहांसे दशरथकी भेजी हुई अप्सरा ऋष्यशृङ्गको मोहकर नौकोंसे अयोध्यामें हर ले गई थीं पश्चात् दशरथकी कन्या शान्ता नामकके साथ विवाह हुआ था) यह वही स्थान है इससे अबतकभी दरगाहमें स्त्रियां कोई भी नहा जाती हैं।

इतिहास—अङ्गरेजी अधिकार होनेपर कानपुर जिला नियत हुआ। मुसलमानोंके राज्यके समय इसके बहुतेरे परगने इलाहाबाद और आगरेके इलाकेमें थे। इसके पहलेका इतिहास

पासके जिलोंके साथ है। मुगलोंके राज्यकी घटतीके समय सन् १७३६ ई० में महाराष्ट्रोंने कानपुरके निकट वर्ती देशको लूटा। सन् १७४७ में अवधके नव्वाव सफदरजङ्गने उसको महाराष्ट्रोंसे लेलिया।

अङ्गरेजी सरकारने अवधके नव्वाब शुजाउद्दौलाको सन् १७६४ में वक्सरके निकट और सन् १७६५ ई० में कोराके समीप परास्त किया। उस समय तक कानपुरका वर्तमान शहर नहीं बसा था। नव्वावने परास्त होनेपर सन्धि की; उसके अनुसार अङ्गरेजी सरकारको नव्वावके राज्यमें कानपुर और फतहगढ़में अपनी फौज रखनेका अधिकार हुआ। अङ्गरेजी फौजका एक भाग प्रथम बिलग्राममें रक्खा गया किन्तु सन् १७७८ में फौजी छावनी वहाँसे हटाकर कानपुरमें स्थित की गई। फौज रहनेके कारण शीघ्रही उसके निकट कानपुर शहर बस गया। वहुतेरी सुन्दर इमारतें वन गईं। सन् १८०१ ई०की सन्धिके अनुसार कानपुरके निकटवर्ती देश अङ्गरेजी अधिकारमें आया। शीघ्रही कानपुर जिलेका सदर स्थान बना। पीछे उस जिलेके कई एक परगने इटावा और फर्रुखावाद जिलेमें करदिये गये।

सन् १८५७ के वलवेके समय वगावतका सुवहा होनेपर रसद जमा करनेके लिये मैदानमें ४ फीट ऊँचा मट्टीका बांध वनाया गया, उसके भीतर २ वारक थे। ता० ४ जून की रातमें दूसरी पलटनके घोड़सवार तेजीके साथ नव्वावगञ्जमें खजानेके पास पहुँचे। पहली पलटनके पैदल सिपाही उनस जा मिले; उन्होंने खजाना लूट लिया; जेलखानेसे कैदियोंको छोड़ दिया, आफिस और दफ्तरोंको जला डाला और गोले बारूद इत्यादि सामान लेकर दिल्लीका प्रस्थान किया। ५३ वाँ और ५६ वाँ पलटनभी उनमें शामिल हो गई। केवल ८० हिन्दुस्तानी सैनिक अपनी जिन्दगी तक कृतज्ञ वने रहे॥ पूनेके बाजीराव पेशवाके गोद लिया हुआ पुत्र नाना धुन्धूपन्त, जो नानासाहव करके प्रसिद्ध है, कानपुरके समीप विठूर नगरमें रहता था। अङ्गरेजी सरकारने पेशवाकी मृत्यु होनेपर उसकी वड़ी पेंशन धुन्धूपन्तको देना स्वीकार नहीं की थी। नानाधुन्धूपन्त दिल्लीको जाते हुए वागी सिपाहियोंको फेर लाया। वागियोंने यूरोपियनोंपर आक्रमण किया। वांधके भीतर लगभग १००० मनुष्य थे। ३२ वें पलटनका कप्तान मूर यूरोपियन सेनाका अफसर वनाया गया, वागीगण वार वार आक्रमण करते थे। अङ्गरेजोंकी ओरके जितने आदमी मरते थे, वे रात्रिके समय घेरेके वाहर एक कूपमें डाल दिये जाते थे। इस भांति ३ सप्ताहमें २५० आदमीसे अधिक मारे गये। बहुतेरे हिन्दुस्तानी नौकर भाग गये। तारीख २५ वीं जूनको एक स्त्री एक कागज लेकर अङ्गरेजोंके पास आई; उसमें लिखा था कि अङ्गरेज लोग अपनी किलावन्दीकी जगह खजाने और तोपोंके सहित दे देवें और प्रत्येक आदमी ६० फायरका समान और अपने हथियारोंके साथ इलाहावाद चले जावें। नानासाहव उनको हिफाजतके साथ गङ्गातीर पहुँचावेगा और इलाहावाद जानेके लिये नाव देगा। यूरोपियन लोग, जो मरनेसे वचे थे, उनकी बात स्वीकार करके तारीख २७ जूनको सवेरे सती चौरा घाटपर पहुँचकर नावोंपर चढ़े। नाव खेवे जानेसे पहलेही उनपर चारोंओरसे गोली गिरने लगीं। नावोंके छपरामें आग लगीं। वीमार और घायल जल गये जव सिपाहियोंने पानीमें कूदकर वचे हुए लोगोंको मार डाला; तव नाना साहवने हुक्म दिया कि स्त्रियोंको मत मारो। घायल और आधी डूवी हुई लगभग १२५ स्त्रियां कानपुरमें लाई गई।

युरोपियनोंकी केवल २ नाव आगे वढ़ीं उसमेंसे १ चारोंओरकी गोलियोंसे डूब गई और दूसरी आगे चली; उसपर दोनों किनारोंसे गोलियाँ गिरती थीं । दूसरे दिन सुवहमें ११ आदमी दो अफसरोंके सहित नावसे कूद; इनमें ४ जो तैरनेमें होशियार थे. अवधके किनारे पहुँचे और कानपुरके किस्से कहनेके लिये वच गये। नाव भाटीकी ओर वह चली और पीछे पकड़ी गई ८० आदमी नानासाहवके पास लाये गये। नानासाहवने पुरुषोंको मरवा डाला और लड़कों तथा स्त्रियोंको कैदियोंमें शालिम होनेके लिये सवादा कोठीमें भेज दिया; उसके पश्चात् कैदी लोग वीवीगढ़के एक मकानमें रक्खे गये; वहाँ ७ वीं और १४ वीं जुलाईके वीचमें ३८ मरगये। अङ्गरेजी सेनापति जनरल हैवलाक १००० गोरे, १३० सिक्ख, १८ वलन्टियर और ६ तोपोंके सहित ता० १२ जुलाईको फतहपुरसे ४ मील दूर वेलिंडाके पास पहुँचे, वहाँ नानासाहवकी सेना लड़कर परास्त हुई। अङ्गरेजोंने फतहपुरको लूटा । तारीख १५ वीं जुलाईको हैवलाकने वागियोंको फिर परास्त करके खदेर दिया । नानासाहवने जव सुना कि हैवलाककी सेना आरही है; तव वीवीगढ़के कैदी युरोपियन स्त्रियों और लड़कोंको मारदेनेका हुक्मदिया। लम्बी छूरियों और तलवारोंसे वे सव मार दिये गये । सुवहमें मुर्दे और अधमरे हुए लगभग २०० मनुष्य पासके कूपमें डाल दिये गये; उसी कूपपर अव सुन्दर यादगार वना है। हैवलाकने तारीख १६ जुलाईको नानासाहवकी सेनाको परास्त करके कानपूरको ले लिया और १९ वीं को विठूरके नानासाहवके महलका विनाशकर दिया। नानासाहव भाग गये ।

कानपुरमें ४ महीने पश्चात् फिर एक वार खूनी लड़ाई हुई। तांतियाटोवीने ग्वालियरके १५ हजार वागियोंके साथ तारीख २६ वीं नवम्वरको कानपुरपर आक्रमण किया। अङ्गरेजी सेना सख्त लड़ाईके पश्चात् परास्त होकर भाग गई। वागियोंने शहरपर अपना अधिकार करके उसमें आग लगादी और सरकारी सामान सव लूट लिया। तारीख ६ ठी दिसम्वरको अङ्गरेजी फौजने वागियोंको परास्त करके उनका हथियार और सामान छीन लिया । सन् १८५८ की मईमें सम्पूर्ण जिला पूरे तौरसे अङ्गरेजी अधिकारमें फिर हो गया । अङ्गरेजी गवर्नमेंटने नानासाहवको पकड़नेवालेको ५०००० रुपये इनाम देनेका इश्तिहार जारी किया। पाछ समय समयपर कई आदमी नानासाहव होनेके सन्देहमें पकड़े गये; किन्तु असली नानासाहव कोई नहीं ठहरा ।

रेलवे—कानपुर, रलवेका वड़ा 'केन्द्र' है, यहाँसे रेलवे लाइन ५ ओर गई है ।

(१) कानपुरसे पूर्व आर 'ईष्टइन्डियन रेलव' जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रतिमील २½ पाइ ह ।

मील प्रसिद्ध स्टेशन ।

४७ फतहपुर ।
११९ इलाहावाद।
१२३ नयनी जंक्शन।
१७० विन्ध्याचल ।
१७५ मिर्जापुर ।
१९४ चुनार।
२१४ मुगलसराय जंक्शन ।
२५० दिलदारनगर जंक्शन ।
२७२ वक्सर ।
२९३ रघुनाथपुर ।
३०२ विहिया ।
३१५ आरा ।
३२४ कोयलवर ।
३४० दानापुर ।

३४६ बांकीपुर जंक्शन।

नयनी जंक्शनसे दक्षिण–पश्चिम ५८ मील मानिकपुर जंक्शन, १६७ मील कटनी जंक्शन, २२४ मील जबलपुर ३७७ इटारसी जंक्शन, ४८७ खण्डवा जंक्शन, ५६४ मील भुसावल जंक्शन, ८०७ मील कल्यान जंक्शन और ८४० मील बम्बईका विक्टोरिया स्टेशन है।

मुगलसराय जंक्शनसे उत्तर थोड़ा पश्चिम अवधरुहेलखण्ड रेलवेपर ७ मील बनारस, ४६ मील जौनपुर १२६ मील अयोध्या, १३० मील फैजाबाद १९२ मील बाराबंकी जंक्शन और २०९ मील लखनऊ जंक्शन है।

दिलदारनगर जंक्शनसे १२ मील उत्तर गाजीपुर।

बांकीपुर जंक्शनसे ६ मील पश्चिमोत्तर दीघाघाट और ५७ मील दक्षिण गया और पूर्व ओर ६ मील पटना शहर ५६ मील मोकामा जंक्शन और ७६ मील लक्खीसराय जंक्शन है।

(२) कानपुरसे पश्चिम थोड़ा उत्तर 'ईष्टइन्डियन रेलवे'।

मील प्रसिद्ध-स्टेशन।

५२ फफूण्ड।

८७ इटावा।

९७ यशवन्तनगर।

१२१ शिकोहाबाद।

१३४ फीरोजाबाद।

१४४ तुण्डला जंक्शन।

१७४ हाथरस जंक्शन।

१९२ अलीगढ़ जंक्शन।

११९ खुर्जा।

२२८ बुलन्दशहर रोड।

२३७ सिकन्दराबाद जंक्शन।

२५८ गाजियाबाद जंक्शन।

२७१ दिल्ली जंक्शन।

तुण्डला जंक्शनसे पश्चिम १६मील आगरा किला, ३३ मील अछनेरा जंक्शन, ५० मील, भरतपुर, और १११ मील बांदीकुई जंक्शन है।

हाथरस जंक्शनसे पश्चिम कुछ दक्षिण २९ मील मथुरा छावनी और पूर्व-दक्षिण ३४ मील कासगंज, ४३ मील सोरों १०१ मील फर्रुखाबाद, १३८ मील कन्नौज, १७६ मील मन्धना और १८८ मील कानपुर जंक्शन है।

अलीगढ जंक्शनसे पूर्वोत्तर १८ मील अतरौली रोड, ३० राजघाट और ६१ मील चन्दौसी जंक्शन है।

गाजियाबाद जंक्शनसे उत्तर २८ मील मेरठ शहर, ६३ मील मुजफ्फरनगर और ९९ मील सहारनपुर जंक्शन है।

(३) कानपुरसे पश्चिमोत्तर बम्बे बरोदा और सेन्ट्रल इन्डियन रेलवे, जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ पाई लगता है।

मील-प्रसिद्ध स्टेशन।

१२ मन्धना जंक्शन।

३४ बिल्हौर।

५० कन्नौज।

८३ फतहगढ़।

८७ फर्रुखाबाद।

१५४ कासगंज जंक्शन, जिससे लाइन पश्चिम गई है।

१८८ हाथरस जंक्शन, मन्धना जंक्शनसे

५ मील पूर्वोत्तर विठूर, कासगंज जंक्शनसे ९ मील पूर्वोत्तर सोरों ।

(४) कानपुरसे दक्षिण-पश्चिम 'इन्डियन मिडलेंड रेलवे' जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रतिमील २½ पाई लगता है ।

मील-प्रसिद्ध-स्टेशन ।

४५ कालपी ।

६६ उराई ।

१३७ झांसी जंक्शन ।

१९३ ललितपुर ।

२३२ बीना जंक्शन ।

२८५ भिलसा ।

२९० सांची ।

३१८ भोपाल जंक्शन ।

३६४ हुशङ्गावाद ।

३७५ इटारसी जंक्शन ।

झांसी जंक्शनसे उत्तर थोड़ा पश्चिम १५ मील दतिया, ६० मील ग्वालियर, १०१ मील धौलपुर१३५ आगरा छावनी और १३७ मील आगरा किला और झांसीसे पूर्व कुछ दक्षिण ७ मील उरछा, ३३ मील रानीपुर रोड, ४० मील मऊ रानीपुर, ८६ मील महोवा, ११९ मील वान्दा, १६२ मील करवी और १८१ मील मानिकपुर जंक्शन है ।

बीना जंक्शनसे ४६ मील पूर्व-सागर है ।

भोपाल जंक्शनसे पश्चिम २४ मील सिहोर छावनी, ११४ मील उज्जैन और १३८ मील फतहावाद जंक्शन है ।

(५) कानपुरसे पूर्वोत्तर 'अवध रुहेलखण्ड रेलवे' जिसके तीसरे दर्जेका महसुल प्रतिमील २½ पाई है ।

मील-प्रसिद्ध-स्टेशन ।

१ अवधरुहेलखण्ड रेलवेका स्टेशन ।

१२ उन्नाव ।

४६ लखनऊ जंक्शन ।

लखनऊ जंक्शनसे पश्चिमोत्तर ३१ मील सण्डीला, ६४ मील हरदोई, १०९ मील शाहजहाँपुर १३४मील फरीदपुर, और १४६ मील वरैली जंक्शन; लखनऊसे दक्षिण-पूर्व ४९ मील रायवरैली; लखनऊसे उत्तर पूर्व १७ मील वारावंकी जंक्शन, ७९ मील फैजावाद, ८३ मील अयोध्या, १६३ मील जौनपुर, २०२ मील वनारस राजघाट और २०९ मील मुगलसराय जंक्शन और लखनऊसे उत्तर कुछ पश्चिम रुहेलखण्ड कमाऊँ रेलवेपर ५५ मील सीतापुर, १६३-मील पीलीभीत १८७ मील भोजपुरा जंक्शन, जिससे १२ मील वरैली जंक्शन और दूसरी ओर ५४ मील काठगोदाम है, हैं ।

इटावा ।

कानपुर रेलवे जंक्शनसे ८७ मील पश्चिम थोड़ा उत्तर इटावाका रेलवे स्टेशन है । पश्चिमोत्तर देशके आगरा विभागमें यमुना नदीके वायें अर्थात् उत्तर (२६ अंश ४५ कला ३१ विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश ३ कला १८ विकला पूर्व देशान्तरमें) जिलेका सदर स्थान इटावा एक कसवा है ।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय इटावेमें ३८६९३ मनुष्य थे, अर्थात् २०३३७ पुरुष और १७४५६ स्त्रियां। इनमें २६०११ हिन्दू, ११७८८ मुसलमान, ५६३ जैन, ११३क्रुस्तान १७ सिक्ख और २ पारसी थे।

इटावेके पुराने और नये दो कसबे हैं। अब दोनों कसबोंके बीचके नालाओं पर पुल बनाये गये हैं। और दोनोंके बीचमें पक्की सड़कें बनी हैं। नये कसबेके प्रधान बाजारकी सड़कोंके वगलोंमें सुन्दर मकान और दुकानें बनी हुई हैं। कसबेसे कई सड़क निकलकर ग्वालियर, फर्रुखाबाद, आगरा और मैनपुरी गई हैं। कसबेसे बीचमें ह्यूमगञ्ज, जो मृत कलक्टर ह्यूमके नामसे कहाजाता है; एक सुन्दर महल्ला है। इसमें गल्ले और रुईका बाजार, तहसीली कचहरी, मजिस्ट्रेटकी कचहरी, पुलिस स्टेशन, अस्पताल, ह्यूमका हाई-स्कूल और एक सराय है।

कसबेके लगभग १/२ मील उत्तर सिविल स्टेशन सिविल स्टेशनके पासही पूर्व रेलवेकी इमारतें; उसके बाद जेलखाना, जेलखानेसे लगभग ३/४ मील पश्चिम कलेक्टर और मजि-स्ट्रेटके आफिसें और उनके बाद पश्चिमोत्तर गिर्जा पब्लिग बाग, और पोष्ट आफिस हैं।

कसबेके पश्चिम एक कुञ्जमें नृसिंहजीका प्रसिद्ध मन्दिर है। इसको लगभग १८०० ई० में गोपालदासनामक ब्राह्मणने बनवाया था। कसबे और यमुनाके बीचमें महा-देवका मन्दिर है यमुनाके किनारे अनेक घाट और स्थान बने हुए हैं। एक सड़क यमुनाकी ओर गई है, उसके दहिने बगलमें ऊँची भूमि पर जुमा मसाजिद खड़ी है पूर्वकालमें मुसलमानोंने इसको बौद्ध मन्दिरसे मसजिद बनाली इनके अलावे जैनोंका एक नया मन्दिर है।

मसजिदसे १ मील दूर ऊँची भूमि पर लगभग सन् ११२० ई० का बना हुआ एक उजड़ा हुआ किला है, जिसको अवधके नव्वाब शुजाउद्दौलाने तोड़वा दिया था। इसकी दक्षिणकी दीवार अभीतक खड़ी है, जिसका एक पाया ३३ फीट और दूसरा २३ फीट ऊँचा है। किलेमें १२० फीट गहरा एक कूप है। किलेके नीचे यमुनाके किनारे सुन्दर घाट बना हुआ है।

इटावेमें गल्ला, घी, नील, तेलके बीज और रुईकी तिजारत होती है। खास करके कुर्मी सौदागर हैं और कार्त्तिकमें घोड़े और मवेशियोंका एक मेला होता है।

इटावा जिला—जिलेका क्षेत्रफल १६६३ वर्गमील है। इसके उत्तर मैनपुरी और फर्रुखाबाद जिले, पश्चिम यमुना नदी, आगरा जिला और ग्वालियरका राज्य; दक्षिण यमुना नदी और पूर्व कानपुर जिला है यमुना नदी जिलेके भीतर और सीमापर ११५ मील और चम्बल नदी यमुनाके प्रायः समानांतर रेखामें बहती है; इनके अतिरिक्त इस जिलेमें अनेक छोटी नदियां हैं।

जिलेमें सन् १८९१ की जन-संख्याके समय ७३३८१३ मनुष्य थे। अर्थात् ३९९७८० पुरुष और ३३४०३३ स्त्रियां और सन् १८८१ में ७२२३७१ थे। अर्थात् ६७९२४७ हिन्दू, ४१४३७ मुसलमान, १२२६ जैन, १५८ क्रुस्तान ३ सिक्ख और १ पारसी। जातियोंके खानेमें १०६७४९ चमार, ८६८७२ ब्राह्मण, ३५६९५ अहीर, ५५७९२ राजपूत, ५३६०७ काछी, ३८०६० लोधी, ३१०७६ बनिया थे। जिलेके कसबोंमेंसे इटावेमें ३४७२१,

फफूँदमें ७७९६ और औरइयामें ७२९९ मनुष्य थे फफूँद पुराना कसवा है; इसमें पुराना मकवरा और मसाजिद देखनेमें आती है; इस जिलेमें कन्दरकोटनामक पुराने स्थानमें भूमिके नीचे एक भूवेधरा है। कि यह भूमिके नीचे कन्नौज तक चला गया है।

इतिहास—इटावा ईटके नामसे प्रसिद्ध है। जिलेमें कई एक टीलोंके देखनेसे इतिहासिक समयके किलोंके स्थान ज्ञात होते हैं। ग्यारहवीं सदीके आरम्भमें गजनीके महमूदनें और वारहवीं सदीके अन्तमें महम्मदगोरीने इटावे कसवेको लूटा सन् १५२८ ई० में दिल्लीके वादशाह वावरने इसका अपने राज्यमें मिला लिया। उसके पश्चात् अकवरने इसको आगरेके सूवेके आधीन किया। चौदहवीं सदीके अन्तमें दिल्लीके पृथ्वीराजके वंशके चौहान राजपूत संग्रामसिंहने इटावेको वचाया। चौहानोंने यहां एक किला वनवाया। सत्रहवीं सदीमें इटावा प्रसिद्ध तिजारती कसवा हुआ, मुगलराज्यकी घटतीके समय इटावा महाराष्ट्रोंके आधीन हुआ, उसके पश्चात् यह अवधके वजीरके अधिकारमें आया। सन् १८०१ ई० में अङ्गरेजोंने इसको लेलिया। सन् १८५६ में इटावा कसवा जिलेका सदर स्थान वना। सन् १८५७-५८ ई० के वलवेके समय कसवेको वहुत कष्ट उठाना पड़ा था, किन्तु कसवेके निवासी और जिलेके जिमीदार अपनी कृतज्ञतासे मुख नहीं मोड़े। इटावेमें पहले फौजी छावनी थी; पर सन् १८६१ में फौज उठाली गई और पुरानी छावनी की इमारतें लुप्त हो गईं।

फतहपुर।

कानपुरसे ४७ मील पूर्व और इलाहावादसे ७२ मील पश्चिम कुछ उत्तर फतहपुरका रेलवे स्टेशन है। पश्चिमोत्तर प्रदेशके इलाहावाद विभागमें जिलेका सदर स्थान फतहपुर एक कसवा है।

सन् १८९१ की जन-संख्याके समय फतहपुरमें २०१७९ मनुष्य थे; अर्थात् १०९९५ हिन्दू, ९१७० मुसलमान, १३ कृस्तान और १ जैन।

प्रधान सड़कपर अवधके नवावके प्रधान कर्मचारी नवाव वाकरअलीखाँका मकवरा है। इसके अतिरिक्त फतहपुरमें सुन्दर जामा मसजिद और कोराके हाकिम अव्दुल हसनकी मसजिद सिविल कचहरियां, जिला जेल खैराती अस्पताल और स्कूल हैं। गल्ले, सावुन और चमड़ेकी तिजारत होती है। यहाँ कोड़े वहुत सुन्दर वनते हैं।

फतहपुर जिला—जिलेका क्षेत्रफल १६३९ वर्गमील है; इसके उत्तर गङ्गा जो इसको अवधके रायवरेली जिलेसे अलग करती है; पश्चिम कानपुर जिला दक्षिण यमुना; जो इसको हमीरपुर और वांदा जिलोंसे जुदा करती है और पूर्व इलाहावाद जिला है। यह जिला गङ्गा और यमुनाके वीचके दो आवका एक भाग है। जिलेमें खेतीकी भूमि और वाग वहुत हैं।

जिलेमें सन् १८९१ की जन-संख्याके समय ६९७३६३ मनुष्य थे। अर्थात् ३५८८६७ पुरुष और ३३८४९६ स्त्रियां और सन् १८८१ में ६८३७४५ थे अर्थात् ६०९३८० हिन्दू, ७४२१८ मुसलमान, ८८ कृस्तान, ५८ जैन और १ सिक्ख। जातियोंके खानेमें ७०४२७ ब्राह्मण, ५९३९९ अहीर, ४६६०९ लोधी. ४४७१५ राजपूत, ३९८०६ कुर्मी, २९४५१

पासी, २८२२९ काछी २१५८६ वनियां थे । जिलेसे कसबे फतहपुरमें २१२२८, विंदुकीमें ६६९८ और जहानावादमें ६२४४ मनुष्य थे ।

इतिहास–सन् ११९४ ई० महम्मदगोरीने इस जिलेको लूटा था, तब यह दिल्ली राज्यका एक भाग हुआ । सन् १५२९ ई० के लगभग बाबरने जिलेको जीता । दिल्लीके राज्यकी घटतीके समय फतहपुर अवधके गवर्नरके आधीन था । सन् १७३६ में महाराष्ट्रोंने इसको लूटा । सन् १७५० तक यह जिला उनके आधीन रहा; उसी साल फतहपुरके पठानोंने महाराष्ट्रोंसे इसको लेलिया । उसके ३ वर्षके पश्चात् अवधके वजीर सफदरजंगने इसको फिर जीता । सन १७६५ में अङ्गरेजोंने अवधके वजीरको राजा बनाया; उस समयके सन्धि द्वारा शाह आलमको फतहपुर दिया गया किन्तु जब सन् १७७४में शाह आलम महाराष्ट्रोंके आधीन हो गया तब अङ्गरेजोंने उसके राज्यको ५० लाख रुपयेमें अवधके नवाबके हाथमें वेंचदिया । सन् १८०१ के बन्दोवस्तके अनुसार नव्वाबने इलाहाबाद और कोड़ेको अङ्गरेजों को देदिया । फतहपुर पहले इलाहाबाद और कानपुर जिलेमें बटा था, परन्तु सन् १८१४ में गङ्गाके निकट बिठूर जिलाका सदर स्थान बना उसके ११ वर्ष पीछे फतहपुर जिलेका सदर हुआ ।

सन् १८५७ की छठवीं जूनको कानपुरके बलवेका समाचार फतहपुर पहुँचा ८ वीं को खजानाके रक्षक बागी हुए । ९ वीं को बागियोंने मिलकर मकानोंको जलाया और यूरोपियन लोगोंके असबाबोंको लूटलिया । सिविलियन लोग बांदाको भाग गये । जज साहब मारे गये ता० १२ जुलाईको अङ्गरेजी फौजोंने आकर फतहपुरपर अधिकार कर लिया ।

मैं फतहपुरसे चलकर इलाहाबाद और मुगल सराय होकर बिहियाके स्टेशनपर पहुँचा और वहाँ रेल गाड़ीसे उतर स्टेशनसे १२ मील उत्तर अपने गृह चरजपुरा चला आया । मेरी दूसरी यात्रा समाप्त हुई ।

॥ भारत भ्रमण, दूसरा खण्ड समाप्त ॥
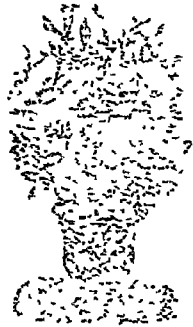
पुस्तक मिलनेका पता—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस–बम्बई.